Printed and Published by Vaidya D S Garg at the Dhanwantari Press, Bijaigarh

गुप्त-सिद्ध-प्रयोगांक [द्वितीय भाग] के

माननीय लेखकों की सूची

(अकारादि क्रम से)

[नीचे दी जाने वाली सूची में स्थानाभाव के कारण माननीय लेखकों के केवल नाम एवं स्थान ही दे सके हैं, उपाधि आदि देने से सूची अधिक विस्तृत होजाती अतएव प्रार्थना है, कि इस धृष्टता के लिये पाठक एवं लेखक क्षमा करें।

—सम्पादक ।]

गुप्त-सिद्ध-प्रयोगांक

[द्वितीय भाग की]

रोगानुसार प्रयोग-सूची

(अकारादि क्रम से)

[नम्बर पृष्ठ संख्या सूचक हैं ।]

निघण्टु और रस शास्त्र

आयुर्वेद का आधार है। अतएव कहा गया है —

निघण्टुना बिना वैद्यो विद्वान् व्याकरणं विना।
विनाभ्यासेन धातुष्को त्रयो हास्यस्य भाजनम् ॥

निघण्टु ज्ञान के बिना वैद्य हास्य का पात्र बनता है। चिकित्सा जगत् और परीक्षा जगत् [आयुर्वेदाचार्य भिषक् विशारदादि] में सफलता प्राप्त करने के लिए कोई भी सरल संक्षिप्त सारगर्भित उपयोगी लघुपुस्तिका नहीं थी। यह अभाव अब—

लघुद्रव्य गुणादर्श— मूल्य २॥) डाक व्यय ।=)

ने दूर कर दिया है। स्वयं अपनी प्रशंसा न करके आयुर्वेद के धुरन्धर आचार्यों की कुछ सम्मतियों का उल्लेख यहां किया जाता है। जिनसे पाठकों को पुस्तक की उपयोगिता का पता स्वयं चल जायगा।

"इस छोटे से निघण्टु में आपने गागर में सागर भर दिया है. निस्सन्देह विद्यार्थियों के लिये ही नहीं, विद्वान वैद्यों के लिये भी पुस्तक बडे काम की है।"

—(श्री) गोवर्धन शर्मा छांगाणी (नागपुर)

"पुस्तक परमसंग्राह्य उपादेय और पठनीय है इसके सहारे विद्यार्थी शीघ्रता से द्रव्य-गुण का अत्यावश्यक ज्ञान प्राप्त कर सकता है।"

—कविराज प्रतापसिंह (बनारस)

प्राप्तिस्थान

१-प्रबन्धक—आयुर्वेदनिकेतन (१०)

३५, हास्पिटल अवेन्यु रोड, परेल बम्बई १२

भाग २३ अङ्क ६

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक
(द्वितीय भाग)

फरवरी सन् १९४९

❀ उदय ❀

उ ❀ द ❀ य ❀

तुम जगे इस शुष्क युग में नव सुधारस धार आया,
थिरकती ऊषा चली, सौरभ बिछे अलि मुस्कराया।
हरित दुर्वादल बिखेरे मोतियों की मञ्जुमाला,
नव प्रकृति लेकर चली, आरोग्य, शान्ति अपूर्ण प्याला।

कामना है स्वास्थ्य सरिता, बह चले मधुगान गाती।
एकता, सद्भावना, सुविचार की धारा बहाती।
मुक्त भारतवर्ष में आदर्श जीवन तत्व भर दो।
स्वास्थ्य के उपयोग का आलोक 'धन्वन्तरि' प्रखर दो।

—पं० श्रीपति प्रसाद पाठक 'श्रीश' आयुर्वेदाचार्य।

प्रस्तुत विशेषांक के विषय में।

गुप्तसिद्ध प्रयोग का प्रथम भाग धन्वन्तरि के विशेषांक के रूप में गत वर्ष आपकी सेवा मे समर्पित किया गया था उसी में इस दूसरे भाग को प्रकाशित करने की सूचना दी गई थी। उस समय यही विचार था कि दूसरा भाग पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाय, इसमें ही हमारा आर्थिक लाभ भी था किंतु धन्वन्तरि के ग्राहकों के विशेष आग्रह से हमें अपना विचार बदलना पड़ा। वास्तव में प्रथक पुस्तक प्रकाशित करने से हमारे ग्राहकों को अतिरिक्त व्यय करना पड़ता और शायद सभी ग्राहक एसा न कर सकते। गुप्तसिद्ध प्रयोग के पहिले भाग का पाठकों ने आशा से अधिक आदर किया, सैकड़ों ही ग्राहकों ने इसके प्रयोगों की परीक्षा करके जो परि णाम प्रकाशनार्थ हमारे पास भेजे हैं उनसे यह ज्ञा होता है कि इसके बहुत से प्रयोग आशुफलप्रद है कई प्रयोग ऐसे हैं जो देखने में बहुत साधारण प्रती होते हैं अल्प व्यय साध्य भी है किंतु आशु-लाभप्र हैं। प्रथम भाग के प्रयोगों के विषय में हमे जो फल फल प्राप्त हुये हैं वह आगामी संस्करण में प्रकाशि किये जांयगे।

इस दूसरे भाग के संकलन में पहिले भाग से भी अधिक सावधानी रखी गई है। अधिकां प्रयोगों की हमने परीक्षा भी की है। हमार

विश्वास है कि इस भाग के प्रयोगों से भी पाठकों का उचित लाभ होगा।

यों तो प्रयोगों पर अवश्य सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं किंतु १ ही लेखक के सैकड़ों प्रयोगों की अपेक्षा भिन्न २ वैद्यराजों के चुने हुये प्रयोगों का संग्रह १ विशेष महत्व रखता है। इस प्रकार प्राय: सभी रोगों पर प्रयोग भी मिल जाते हैं और उन्हीं सज्जनों के मिलते हैं जिनका उन पर विशेष अनुभव है।

किसी प्रयोग के औषधि-द्रव्यों को देखकर उसकी उत्तमता का अनुमान लगाना उचित नहीं है। कई औषधियों के मिश्रण से जो विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है उसकी कल्पना नहीं की जा सकती।

बहुत से विद्वान वैद्यराज परीक्षित प्रयोगों से अश्रद्धा रखते हैं, उनकी सम्मति है कि दोष-दूष्य का ज्ञान रखते हुये विधिवत् शास्त्रीय प्रयोगों द्वारा की गई चिकित्सा ही लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। उनका यह मत निर्विवाद सत्य है, किन्तु दोष दूष्यों का सम्यक् ज्ञान होना और उसके अनुसार चिकित्सा करना सभी वैद्यों के बश की बात नहीं है। आजकल के कालेजों से उत्तीर्ण छात्रों में से भी बहुत कम ऐसी चिकित्सा कर सकते हैं। नवीन और साधारण शिक्षित वैद्यराजों के लिये अनुभवी वैद्यराजों के प्रयोग बहुत ही लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

मेरा विश्वास है कि ऐसे प्रयोग-संग्रहों से वैद्य-समाज का बहुत उपकार होता है, इसीलिये गुप्तसिद्ध प्रयोग का तीसरा भाग प्रकाशित करने का भी निश्चय किया गया है। तीसरा भाग पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जायगा या विशेषांक के रूप में इसकी सूचना समय पर दी जायगी, तीसरे भाग के लिये कुछ सज्जनों के प्रयोग संग्रहीत हैं थोड़े से वैद्यराजों के ही प्रयोग और संग्रह करने हैं। इस भाग में जो सज्जन प्रयोग छपवाना चाहें शीघ्र ही अपने चित्र प्रयोग और परिचय भेज दें। प्रयोग वही भेजें जो आपकी परीक्षा में पूर्ण लाभकारी सिद्ध हों। इधर-उधर से नकल करके भेजे हुये प्रयोग प्रकाशित नहीं किये जांयगे।

—वैद्य देवीशरण गर्ग
सम्पादक।

मेरे प्रयोग

मित्रों के आग्रह से गुप्तसिद्ध प्रयोगांक के प्रथम भाग में मैंने जो प्रयोग प्रकाशित किये थे उनसे पाठकों ने बहुत अधिक लाभ उठाया, उसी से प्रभावित होकर इस अंक में भी दो प्रयोग प्रकाशित कर रहा हूं। यह प्रयोग भी मेरे परीक्षित हैं। आशा है कि इनसे भी पाठक लाभ उठावेंगे।

त्रिपुष्पटिक वलेह—

इलायची छोटी	१० ग्राम	६ माशे
लौंग	चन्दनसफेद ५	४ा।-४ा। माशे
नरकचूर	उस्तखद्दूस	कतीरा
गोला	चिलगोजा	मिश्री
गुलगाजवां	—प्रत्येक	१३ा।-१३ा। माशे
आंवला	१५	मुनक्का
छोटी हर्ड	—तीनों	२३ा।-२३ा। माशे
कुचला	२५	२७ माशे ३०

—सबको कपड़-छन करले। दवाओं में तिगुने शहद की चासनी कर दवा डाल पाक की तरह चकती जमाले।

मात्रा—२ रत्ती से १ माशा तक; रास्नादि क्वाथ, एरंड क्वाथ, दशमूल अर्क, रास्नादि अर्क, दशमूलासव या दूध में।

गुण—यह प्रयोग वात-रोगों के लिये बहुत ही लाभप्रद है। जब रोगी दर्द से बेचैन हो रहा हो सूजन हो रही हो इसके प्रयोग से लाभ होता है। जिन रोगियों को व० वातचिन्तामणि रस, रसराजरस आदि मूल्यवान औषधियों से लाभ नहीं हुआ था इस औषधि से लाभ हुआ है।

खाज की १ शर्तिया मलहम —

आमलासार गन्धक पाव भर लेकर २ तोले घृत में गरम करके पिघलालें और उसे १ सेर दुग्ध में डालदें। गन्धक फौरन जम जायगा। इसे निकालकर जलांश पोंछ कर पुन. घृत में गरम करके उसी दूध में डाल दें। इसी प्रकार ६ बार गन्धक को शुद्ध करें। गन्धक को तो अपने अन्य कामों में लेलें और दुग्ध को जमादें। जम जाने पर इसकी लौनी (नवनीत) निकाल ले। इस लौनी को नीम के पत्तों क गरम किये पानी से २५-३० बार धोलें और इसमें निम्न वस्तु मिलाकर मलहम तैयार करले।

उक्त लौनी	१० तोला
पारद गन्धक की कज्जली	२ तोला

तूतिया आंबा हल्दी राई —प्रत्येक १-१ तोला

विधि—तूतिया राई और आंबा हल्दी कपड़ छन चूर्ण करले और कज्जली सहित उक्त घृत में अच्छी तरह मिलालें, बस मलहम तैयार है।

गुण—यह मलहम खाज के लिए अत्युत्तम है। मुझे विश्वास है कि खाज की इससे उत्तम औषधि पाठकों को नहीं मिलेगी।

वैद्य देवीशरण गर्ग
सम्पादक—"धन्वन्तरि"

श्री० पं० सीताबर पंत आयुर्वेद शास्त्राचार्य

सभापति युक्तप्रान्तीय वैद्य सम्मेलन एवं चेयरमैन-जिला विकास समिति, नैनीताल।

पिता का नाम— पं० केशव दत्त जी पंत शास्त्री

आयु—५६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय—१ वेदनानिग्रह रस

२—वृक्काश्मरी निर्मूलन रस

—लेखक—

"आपने सन् १९२६ में आयुर्वेदिक कालेज हिन्दू विश्वविद्यालय [बना]रस से आयुर्वेद शास्त्राचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण कर नैनीताल व [हल]द्वानी में कार्य प्रारम्भ किया। आयुर्वेद सेवा के साथ-साथ आपने देश-[सेव]ा का भी कार्य लगन के साथ किया, जिसके फलस्वरूप आपको कई बार [जेल]-यातना भी सहन करनी पड़ी। आप सन १९४५ एव ४६ में युक्त-[प्रान्]तीय वैद्य-सम्मेलन के उपसभापति रहे हैं तथा सन १९४७ से [सभ]ापति पद से आयुर्वेद समाज की सेवा कर रहे हैं। सन १९४८ में [प्रान्]तीय सरकार द्वारा आयोजित विकास सघ नैनीताल के आप चेयरमैन [नियु]क्त हुये। आप वयोवृद्ध एव अनुभवी विद्वान चिकित्सक हैं तथा [आ]पके निम्न दोनों प्रयोग परीक्षित हैं, पाठक लाभ उठावें।

—सम्पादक।

[वेद]ना निग्रह रस—

अफीम	रससिंदूर	अजवाइन
शुद्ध कर्पूर	शंख भस्म	टंकण क्षार
शुक्ति भस्म	—प्रत्येक १-१ तोला।	

[निर्मा]ण—इन सबको एक साथ मिलाकर विजया (भांग) के द्रव मे घोटकर दो रत्ती की गोली बनावें। (विजया १ तोला पानी में भिगो कर बाद में पीस कर फिर बारीक कपडे में छान कर उसका रस बनाना चाहिए।)

[सेवन] विधि—किसी भी तरह के शूल में इसका सेवन तात्कालिक लाभ देने वाला होता है जैसे अन्त्रशूल, आन्त्र पिच्छ शूल, वृक्काश्मरीय शूल, पित्ताश्मरी शूल आदि उदर शूलों मे इसका प्रयोग कराना चाहिए। यह रोगों के कारण को दूर नहीं करता है परन्तु तात्कालिक शूल को शीघ्र ही लाभ करता है। इसके प्रयोग से मार्फिया के इन्जेक्शन की पूर्ती हो जाती है, एक गोली प्रत्येक चार घण्टे के बाद गरम पानी के साथ शूल रोग में आराम होने तक देना चाहिये।

अनुभव—जब मुझे चिकित्सा करने में शूल रोग के रोगी मिले तो शीघ्र तात्कालिक अन्य औषधि के प्राप्त न होने से इस दवा के प्रयोग से शीघ्र रोगी को आराम हुआ।

(शेषांश पृष्ठ ६२९ पर)

कविराज पं० हरिबक्ष जी जोशी काव्य-सांख्य-स्मृतितीर्थ

मैनेजिंग डाइरेक्टर-भारत आयुर्वेदिक फार्मेसी ५० कौटन स्ट्रीट, कलकत्ता।

पिता का नाम— श्री० पं० रामेश्वर जी जोशी

आयु—५५ वर्ष जाति—गौड़ ब्राह्मण

प्रयोग विषय— १- श्वास पर २ प्रदर पर

"श्री. कविराज जी आयुर्वेद के प्रकाड विद्वान और ख्याति प्राप्त चिकित्सक हैं। भारत के प्रसिद्ध-तम शत-वैद्यों मे आपकी गणना की जाती है, कलकत्ते के सुप्रसिद्ध विशुद्धानन्द मारवाडी अस्पताल में आपने २५ वर्ष तक चिकित्सा-कार्य करके अच्छी ख्याति प्राप्त की है। जिस समय आप विशुद्धानन्द मारवाड़ी अस्पताल के चिकित्सा-विभाग के प्रधान चिकित्सक थे १५० सीटें इन-डोर में हर समय रोगियों से भरी रहती थीं, चिकित्सा कौशल का इससे उत्तम प्रमाण और क्या हो सकता है। सर्वथा अनावकाश होते हुये भी हमारे आग्रह से आपने दो प्रयोग भेजने की कृपा की है, आशा है इससे पाठकों को उचित लाभ होगा।"

—सम्पादक।

तमक श्वास—

पिपल्यादि लोह	३ रत्ती
प्रवाल भस्म	२ रत्ती

—अगस्त्य हरीतकी मधु के साथ।

मध्याह्न, रात्रौ—सोमरसायन १ औंस जल में मिलाकर।

सोमरसायन—

सोम पुनर्नवा

कूठ धतूर मूल

—ये सब समान भाग लेकर आसव-विधि से आसव सिद्ध कर लेवें।

पिप्पल्यादि लोह—

"पिप्पल्यामलकीद्राक्षाकोलाऽस्थिमधुशर्करा—
बिडङ्गपुष्करैर्युक्त लौह हंति सुदारुणम्
हिक्का छर्दिमहाश्वासे त्रिरात्रेण न सशयः॥

पीपल आंवला

मुनक्का बेर की मिंगी

शहद मिश्री बिडंग

पोहकर मूल लोह भस्म

—प्रत्येक १-१ तोला, सबको कूट-पीस छान जल के साथ २॥-२॥ रत्ती की गोली बनावें।

गुण— यह श्वास नली के शोथ को उतारता है,

के दौरे को कम करता है तथा इसको निरन्तर सेवन करने से प्रायः श्वास निमू ल होजाती है यह शतशोनुभत योग है।

दर पर

काटा चुलाई को अरिष्ट विधि से सींच कर न में दो या तीन बार जल मिलाकर दे।

ण—स्त्रियों के सर्व प्रकार के प्रदर में विशेष करके रक्तप्रदर में तथा प्रसव काल में होने वाले अति रक्त-स्राव में, मक्कलशूल में तथा वायुगोला में मद्योलाभ पहुँचाने वाला शतशोनुभत योग है।

ोट—दोनों योगों के पथ्यापथ्य वैद्य शास्त्रीय विधि से निर्दिष्ट प्रणाली के अनुसार रोगी को बतला देवें।

(पृष्ठ ६३७ का शेषांश)

ृकाश्मरी निर्मूलन रस—

जब वृक्कों में पथरी पैदा हो जाती है तब गुर्दे से कर पेडू तक शूल पैदा होता है, ऐसे समय में लोपैथी में औपरेशन के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है। मैंने वृक्काश्मरी पर निम्नलिखित प्रयोग किया।

पाषाण भेद चूर्ण	टंकण	अर्जुन चूर्ण
यवक्षार	—प्रत्येक १-१ तोला	
तिलक्षार		२ तोला
सूर्य क्षार (शोरक)		३ तोला

विधि—इन सब चीजों को बारीक चूर्ण करके मिलाना चाहिए। फिर २ माशा की मात्रा बनानी चाहिये।

सेवन विधि—एक मात्रा प्रातःकाल, एक दिन में १ शाम को जौ के क्वाथ के साथ सेवन करना चाहिए। इसके प्रयोग से आवश्यकतानुसार वृक्काश्मरी धीरे-धीरे गलकर मूत्र द्वारा बाहर निकल आती है। इसका सेवन कम से कम ४० दिन तक करना चाहिए।

मैंने इसके प्रयोग से बहुत सी पथरियां मूत्र द्वारा गलाकर निकाल दी हैं, जिससे औपरेशन के कष्ट से लोग बच गए। यह अनुभूत-पूर्ण योग है वैद्य गणों को इसकी परीक्षा करनी चाहिये।
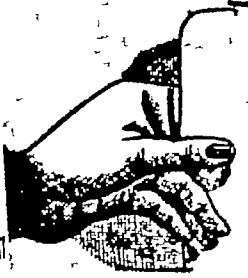
आचार्य महेन्द्रकुमार शास्त्री बी ए. वैद्यवाचस्पति आयुर्वेदाचार्य

श्री० रा० भा० पोहार आयुर्वेदिक कालेज, बम्बई ।

"श्री० आचार्य जी अंग्रेजी, संस्कृत एवं आयुर्वेद के उच्च विद्वान हैं। आप योग्य शिक्षक, प्रतिभाशाली लेखक एवं सफल चिकित्सक भी हैं। कल्पित प्रयोगों की अपेक्षा शास्त्रीय प्रयोगों में आपकी विशेष निष्ठा है। 'धन्वन्तरि' पर आपको बहुत स्नेह है अतएव हमारी प्रार्थना पर आपने निम्न लेख भेज कर आभारी किया है। आशा है आपके प्रेषित प्रयोगों से पाठक लाभ उठावेंगे।"

सम्पादक ।

"अनुभूत योग" बडा ही आकर्षक शब्द है इसको सुनते ही चिकित्सक महानुभाव विशेष कर नवीन चिकित्सकों के हृदय मे हर्ष का ज्वार-भाटा उठ आता है मानों कुबेर की निधि उन्हें मिल गई हो। अनुभूत योगों का अपने पास संग्रह होना अच्छा है। उनकी उपयोगिता भी है किंतु उन्हीं पर आश्रित होजाना और उनका अन्धानुकरण करना उचित नहीं है एवं आयुर्वेद के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। आयुर्वेद रोग तथा रोगी की दशा भेद से औषधियों का निर्णय किया जाता है, दोषदूष्य देश काल आयु सत्त्व सात्म्य बल-व्यायाम शक्ति, अग्नि आदि को देख कर विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न औषधिया दी जाती हैं। एक ही योग का सर्वत्र प्रयोग नहीं किया जाता और वह सर्वत्र सफल भी नहीं होता है। आयुर्वेदिक चिकित्सक को युक्तिज्ञ (Rational) होना चाहिए। अतएव भगवान चरक ने कहा है तिष्ठत्युपरि युक्तिज्ञो द्रव्यज्ञान वता सदा"।

एक दूसरी वात की ओर भी चिकित्सक बन्धुओं का ध्यान दिलाना चाहता हूं। आजकल प्राय अधिकांश चिकित्सक बड़े योगों की ओर विशेष कर रस योगों की ओर अधिक ध्यान देते हैं और चिकित्सा-क्रम का ध्यान तो बहुत ही कम रखते है। चिकित्सा-क्रम का ध्यान रखकर चिकित्सा की जाय तो सामान्य योग भी अति लाभप्रद सिद्ध होते हैं। वैद्यों को भगवान चरक द्वारा प्रतिपादित चिकित्सा क्रम का और उनके सरल किंतु लाभप्रद योगों का अनुसरण करना चाहिए। एक वार ही नहीं अपितु अनेकों बार चरक का चिकित्सा क्रम और छोटे २ दीखने वाले योग ही वैद्य को यशस्वी बना देते हैं। ऐसा हम एक उदाहरण पाठकों के सामने रखते हैं।

अस्थिगत ज्वर–

दो साल का एक बालक अस्थिगत जीर्ण ज्वर रोग से पीडित था। क्षुधानाश, पाण्डु कृशता, ल्पता, क्रमशः विबन्ध और अतीसार उसके ल... थे। ज्वर कभी उतरता ही न था एलोपैथी की चिकित्सा समाप्त हो चुकी थी। उस रोगी को ... लिखित चरकोक्त योग का सेवन कराया ... और सात दिन मे रोगी सर्वथा स्वस्थ होगया।

गुडूची आमलकी हरीतकी

—तीन १-१ भाग

—क्वाथ बनाकर इसका प्रयोग दिन में चार बा[र] कराया गया। मात्रा–१ तोला रक्खी गई। इस[के] प्रयोग से शिशु को वायुमय दुर्गन्धयुक्त म[ल] निकलना शुरू हुआ और वह भी बहुत अधि[क] मात्रा में। बच्चे के माता–पिता हैरान थे

इतना मल कहा से आता था। खाता पीता तो कुछ नहीं। ३-४ दिन तक मल इसी प्रकार निकलता रहा। पुनः धीरे २ कम हुआ। इस मल द्वारा शरीरस्थ दोष भी बाहर निकल गए और रोगी का ज्वर शान्त होगया, अग्नि दीप्त होगई। अब रोगी धीरे २ पुष्ट होता जारहा है। पाठक इसे अवश्य प्रयोग करें।

खाज कण्डू

आजकल जिधर देखो उधर खाज का ही साम्राज्य है। इसका कारण दुष्ट अन्न और वायु है। पौष्टिक अन्न के अभाव में दोषों की समता नष्ट होजाती है और रोगी की रोग प्रतिकारक शक्ति का ह्रास होता जारहा है। फलतः रोगों का बाहुल्य दृष्टिगोचर होरहा है। यह खाज नगरों में अधिक घनी बस्ती में जहां उग्र धूप और स्वच्छ वायु का अभाव रहता है अधिक होती है। उग्र एलोपैथिक औषधियों से दब जाती है किन्तु पुनः उभर आती है। समूल नष्ट नहीं होती। निम्न-लिखित चिकित्सा इसका समूल नाश कर देती है।

शु० गन्धक	२ रत्ती
रसमाणिक्य	१ रत्ती
त्रिफला चूर्ण	१ माशा

मात्रा—ऐसी दो मात्रा दिन में प्रातःसायं जल से लेवें। इसके साथ घृत का प्रयोग अवश्य करें अन्यथा उष्णता उत्पन्न हो जाने का भय है।

आम्रगन्धि हरिद्रा (आंबाहल्दी)	१ भाग
बावची बीज	शुद्ध गन्धक

दोनों १-१ भाग सबको पीसकर चूर्ण बनाले और रातभर पानी में भिगोकर रखदें। प्रातः जल को तो शीतकषाय के समान पीने के काम में लावें। उत्तम तो यह होगा कि उपर्युक्त प्रयोग के अनुपान रूप में काम लावें। अधःस्थित चूर्ण को कटु तैल में या करंज तैल में मिलाकर उबटन के (उत्सादन) समान मालिश करे। यह मालिश प्रातःकाल की धूप में करनी चाहिए। पुनः गोबर मल कर गरम जल से स्नान करे।

पथ्य—केवल चने की रोटी, घी।

अपथ्य—नमक, लाल मिर्च, अचार, तैल, गुड़ादि उष्ण और तीक्ष्ण चीजें।

आजकल विशेष प्रकार की कण्डू के रोगी बहुत देखे जाते हैं। कण्डू के स्थान में छोटी २ सी फुंसियां होजाती है और वे शीघ्र ही पककर सफेद पूयमय (श्वेत) वर्ण की हो जाती हैं। कभी २ ये सब मिल जाती हैं और एक ही व्रण बन जाता है। उसके लिए अन्तः प्रयोग तो उपर्युक्त योग का ही रक्खें, किंतु बाह्य प्रयोग में निम्न लिखित योग का प्रयोग करे।

हिंगुलामृत मलहम—

यह योग रसतरंगिनी के हिंगुल प्रकरण का है पाठकों की जानकारी के लिये नीचे लिखा जाता है।

सिक्थ तैल (तैल तथा मोम का मिश्रण) १२ भाग

शु० हिंगुल	६ माशे
मुदार श्रृङ्ग [मुर्दासङ्ग]	टंकण
कर्पूर	रसपुष्प
स्फटिका	सिंदूर

—हरेक १-१ भाग लेकर मलहम बनावें, इस मलहम से व्रणों का बन्धन करे। मलहम लगाने से पूर्व रुग्ण स्थान को निम्ब जल वा त्रिफलाक्वाथ या उदम्बर सत्व घोल अथवा टंकणाम्ल (कोष्ण जल) से शोधन करले। दो-चार बार लगाने से ही व्रण भर जायेंगे।

(शेषांश पृष्ठ ६४३ पर)

वैद्य वाचस्पति श्री गुलराज शर्मा मिश्र आयुर्वेदाचार्य

अध्यापक - श्री धन्वन्तरि आयुर्वेद महा विद्यालय, नागपुर।

पिता का नाम—श्री. प० केदारमल जी मिश्र

आयु—३६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आपने सूरजगढ, चिरावा, फतहपुर, मडेला आदि स्थानों में अध्ययन कर व्याकरण और साहित्य की परीक्षायें दीं। उसके बाद कानपुर के कल्लूराम सस्कृत महाविद्यालय से न्याय और मीमासा आदि का अध्ययन किया। साथ ही कानपुर के प्रसिद्ध विद्वान प० शम्भूराम जी से आयुर्वेद का अध्ययन किया। तत्पश्चात् आप नागपुर के भारत प्रसिद्ध प्राणाचार्य प०श्री. गोवर्धन शर्मा छांगाणी जी से आयुर्वेद का पूर्ण अध्ययन कर आयुर्वेद विशारद और आयुर्वेदाचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं।

आपने रसतन्त्र के प्रधान ग्रंथ 'आयुर्वेद-प्रकाश' पर सस्कृत और हिन्दी मे दो टीकायें लिखी हैं। आप सस्कृत और हिन्दी के सिद्धहस्त लेखक हैं और प्रत्युत्पन्नमति वैद्य एव चतुर वक्ता हैं।

नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ के आप कई साल से विशारद तथा भिषक् के परीक्षक रहते आरहे हैं। हिन्दी विश्वविद्यालय प्रयाग के भी आयुर्वेद के आप परीक्षक रह चुके हैं आप श्री धन्वन्तरि आयुर्वेद महाविद्यालय नागपुर के अध्यापक और प्रधान म त्री हैं। कई साल से आपको धन्वन्तरि से विशेष स्नेह रहता आरहा है।"

—सम्पादक।

—लेखक—

पाचनकादि वटी—

शु० सुहागा अफीम रूमी हिंगुल

विधि—तीनों समान भाग लेकर अच्छे पत्थर के खरल मे निम्बू रस के साथ दो दिन घुटाई करे, मूंग प्रमाण गोलियां बनालें और छाया में सुखाकर एक शीशी में रखें। हवा से गोलियां स्वयमेव गीली हो जाती हैं अत. मजबूत कार्क की शीशी में रखना चाहिये।

गुण—ये पाचनकादि वटी अति भयंकर अतिसार को दो दिन मे बन्द कर देती हैं। सग्रहणी में भी इसका उपयोग होता है। एक गोली प्रातः शहद के साथ और एक गोली सायकाल देना चाहिये आगे वैद्य आवश्यक समझे तो एक खुराक और रात को दे सकते हैं किंतु यह अवश्य ध्यान रखे कि दवा में अफीम है। अतः रोगी की प्रकृति आदि पर विचार कर तीसरी खुराक देना चाहिये। यों तो हम कभी २ चार गोली तक २४ घटे मे दे देते हैं किंतु बलाबल देखकर।

विट् पिष्टी-

कपोत (कबूतर) की विष्टा बीट	१० तोला
मल्लसिंदूर	२ तोला
कस्तूरी उत्तम	१ तोले
हरताल का फूला	६ माशे

विधि—पहले कबूतर की सूखी बीट को कूटकपड़-छान करले और फिर सब दवाओं को मिला कर खरल में डालकर मजबूत हाथों से तीन दिन तक घुटाई करें। इस दवा में घुटाई का अधिक होना उत्तम गुणाधानकर है। उत्तम पिष्टी होने पर शीशी में रखले।

मात्रा—एक रत्ती से लेकर चार रत्ती तक की मात्रा है। दिन में ३ बार अद्रक के रस और शहद के साथ देना चाहिये।

पथ्य—गेहूं की रोटी, मूली, दलिया, मूंग की दाल और दूध आदि दें।

गुण—यह दवा कष्टसाध्य वात विकारों को भी दूर कर देती है किंतु पक्षाघात (लकवा) और अर्दित तथा कम्पवात की तो अप्रतीम औषधि है। इसका ४० दिन का प्रयोग है। वात-विकार के होते ही इसका प्रयोग कर दिया जावे तो ५ दिन में फल प्रतीत होने लगता है। हमने इसका अनेक जगह प्रयोग किया है। हमारे अनुभव से ८७ प्रतिशत को लाभ हुआ है।

(पृष्ठ ६४१ का शेषांश)

सूचना—इसके प्रयोग के समय रोगी के कपड़े (पहनने तथा बिछाने के) और उसके परिचारक के कपड़े पानी में उबाल कर धूप में सुखाते रहें और नये उबाले हुये कपड़े पहनते रहें। अन्य किसी के वस्त्रों का रोगी और रोगी के वस्त्रों का अन्य लोग प्रयोग न करें। इस प्रकार चिकित्सा करने से अवश्य लाभ होगा।

आयुर्वेदाचार्य पं० वासुदेव जी शास्त्री प्राणाचार्य

श्री. मध्यभारत आयुर्वेद चिकित्सालय, उज्जैन।

—लेखक—
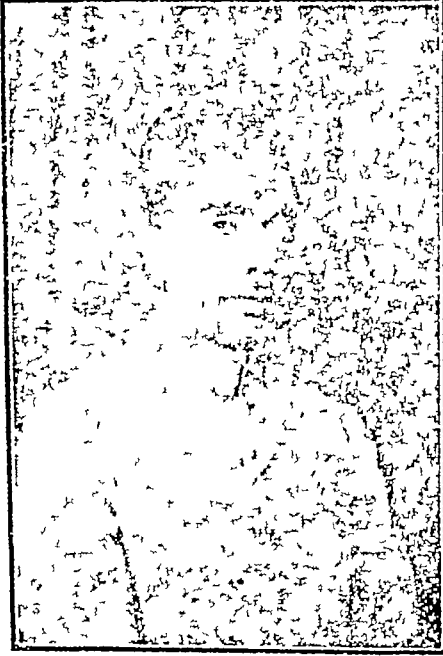
"आपने आयुर्वेद का विधिवत् अध्ययन कर राजकीय आयुर्वेद शास्त्रीय तथा विद्यापीठ की मध्यभारत प्रान्त में सर्वप्रथम आयुर्वेदाचार्य उत्तीर्ण हुये हैं। आपने उज्जैन में श्री अवन्तिका आयुर्वेद विद्यालय की स्थापना कर शास्त्रीय शिक्षण की जाग्रति की है। आप विद्यापीठ शास्त्री आचार्य आदि उच्च परीक्षाओं के परीक्षक भी प्रतिवर्ष नियुक्त होते हैं, आप मध्य भारतीय स्नातक सम्मेलन के सभापति भी रह चुके हैं आपने उज्जैन में सेठ मागीलल जी भण्डारी को प्रोत्साहन देकर एक धर्मार्थ औषधालय ४०-५० हजार रुपया लागत से खुलवाया है। इस समय आपकी ही प्रधानाध्यक्षता में औषधालय उन्नति पूर्वक चल रहा है। आपके द्वारा उज्जयनी मालव प्रान्त तथा मध्यभारत में आयुर्वेद की अधिक जाग्रति हुई है।"

—सम्पादक।

मलेरिया पर—

शुद्ध स्वर्ण गैरिक	कड़वी अतिविष
नवसादर	फिटकरी भस्म

काली मिर्च

—प्रत्येक सम भाग लेकर चूर्ण बनावें।

मात्रा—३ माशे की मात्रा में देवे।

अनुपान—३ माशा जल या मधु, कंपन देकर आने वाला ज्वर, ज्वरयुक्त खांसी, प्रतिश्याय, पार्श्वशूल, क्षयजनक ज्वर की पूर्वावस्था में अत्यन्त लाभप्रद प्रयोग है।

शिरःशूल पर-

गौदन्ती हरताल भस्म	२ रत्ती
कपर्दिका भस्म	२ रत्ती

—दोनों वस्तुओं को मिलाकर पेड़े के साथ अथवा ताजे खोये या कलाकन्द के साथ देवे, किसी प्रकार का शिरःशूल, अर्धावभेदक, सूर्यावर्त, शखक, चक्कर, उष्णताजन्य शिर-पीड़ा दूर करता है।

यह दोनों प्रयोग स्वय अनुभव युक्त हैं जनता तथा वैद्यों के लाभार्थ प्रकट किये हैं।

कवि० पं० नन्दकिशोर जी जोशी

महाराणा आयुर्वेदिक औषधालय, मांडल (उदयपुर)

पिता का नाम—श्री. पं० मोहनलाल जी आयुर्वेद शास्त्री

आयु—३५ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय-१ व्रणरोपण मलहम २-कमेंड़ा वटी

"श्री. कविराज जी सरस कवि एवं साहित्यज्ञ हैं। उदयपुर महाराणा साहब से कविता के पुरुष्कार में आपको शतमुद्रा प्राप्त हुई हैं। आपने सन् १९४१ में भिषगाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा अब आप सिद्धहस्त चिकित्सक एव अनुभवी वैद्य हैं। महाराणा आयुर्वेदिक औषधालय माण्डल के आप प्रधान चिकित्सक हैं।" —सम्पादक।

—लेखक—

व्रणरोपण मरहम-

तिल तेल	१। सेर
राल	१० तोले
मोंम	२० तोले
बैरोजा	१० तोले
गंधक	१० तोला
शु० मोर तुत्थ	२॥ तोले
सुहागा	१० तोला
स्वर्ण चीरी के पञ्चाग का स्वरस	२॥ सेर

विधि—इन सबको एकत्रित कर आग पर रखें और हिलाते-चलाते रहें, जब इसमें का कुल जल जल जाय तब नीचे उतार कर उसको कढ़ाही में कुछ काल तक घोटे। जब गंधक ठण्डा हो जाय और घुट कर इसमें एक जीव मिल जाय तब उसको पात्र में भर कर रखलें।

उपयोग—यह मरहम मेरा अनुभूत है इससे किसी भी व्रण को साफ कर उस पर लगाया जाये तो व्रण शीघ्र ही समूल नष्ट हो जाता है। यहां तक कि कई वार विष व्रण को इससे अच्छा लाभ पहुँचा है।

कमेंड़ा [वांयटे] पर-

कस्तूरी	८ रत्ती
गौलोचन	८ रत्ती
पीपल की जटा	४ माशे
काली मिर्च	२ माशा
सफेद जीरा	२ माशे
रसौन (लहसुन) कली	२ माशे
हींग	८ रत्ती
अफीम	४ रत्ती

(शेषांश पृष्ठ ६४७ पर)

पं० ताराशंकर जी मिश्र वैद्य आयुर्वेदाचार्य

अध्यापक — अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय, बनारस ।

—लेखक—

पिता का नाम— श्री० पं० संकठा जी मिश्र

आयु—४० वर्ष जाति—शाकद्वीपीय ब्राह्मण

प्रयोग विषय १. यकृत-प्लीहा २-श्वेत प्रदर

"आप अपने बाल्यकाल से ही उत्साही कार्यकर्त्ता रहे हैं, विद्याध्ययन करते हुए सभा-सोसाइटियों में क्रियात्मक भाग लेते रहे हैं। आपने आयुर्वेद की शिक्षा "अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय" से प्राप्त की है और अब इसी विद्यालय में अध्यापन कार्य बड़ी सफलता के साथ कर रहे हैं। आप प्रभावशाली लेखक, सरस कवि, योग्य अध्यापक, सफल चिकित्सक एवं टीकाकार हैं। आपकी लगन एवं उत्साह-पूर्ण सहयोग से ही उक्त विद्यालय ने इतनी उन्नति की है। हमारे बहुत आग्रह करने पर आपने दो सफल प्रयोग भेज कर हमको आभारी किया है। आशा है पाठक आपके प्रयोगों से अवश्य लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक ।
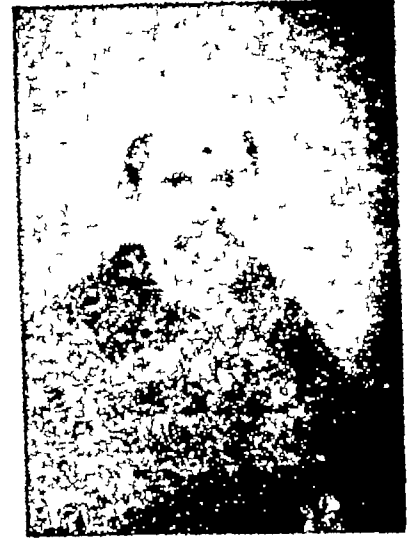
मैं त्रिदोषानुसार एवं द्रव्यों का वर्गीकरण कर चिकित्सा करने का पक्षपाती हूं। शास्त्रों ने इसी आधार पर चिकित्सा के सिद्धान्त बनाये हैं। जिनके अनुसार अनन्त प्रयोग बनाये जा सकते हैं। चिकित्सा-क्रम के विरुद्ध अमृत भी कार्यकारी नहीं हो सकता। पूर्व आदर्श-वैद्यों का आधार भी यही रहा है। केवल प्रयोग के पीछे तो व्यापारी, सिद्ध-साधक एवं अल्पज्ञ वैद्य ही पड़ा करते हैं। फिर भी आदरणीय धन्वन्तरि सम्पादक की आज्ञा से केवल दो प्रयोग श्रद्धास्पद वैद्यों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूं। मैं यह कहने का दावा नहीं कर सकता कि ये प्रयोग पूर्णतः नये और मेरे हैं, क्योंकि मैं स्वयं नया एवं अपना नहीं हूं और विश्व में कोई भी वस्तु नयी नहीं है। यह भी नहीं कह सकता कि ये प्रयोग पूर्णतः सफल सिद्ध होंगे, क्योंकि प्रत्येक रोगों की अनन्त अवस्थाओं के लिये अनन्त प्रयोगों की आवश्यकता ध्रुव है। केवल एक ही प्रयोग एक रोग की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में कैसे काम कर सकता है। हां, इतना अवश्य कह सकता हूं कि मेरे यहां ये प्रयोग उपयोगी सिद्ध हुए हैं। आदर्श वैद्य स्वयं इन प्रयोगों की परीक्षा कर औचित्य का निर्णय करलें।

यकृत और प्लीहावृद्धि पर—

नवसादर २ रत्ती
सोडा (खाने वाला) लोह भस्म
—दोनों १-१ रत्ती
त्रिफला चूर्ण १ माशा
—सब मिलाकर एक मात्रा।

अनुपान—पुनर्नवा स्वरस दो तोला प्रत्येक मात्रा में।
समय—प्रातः, दोपहर, शाम और रात्रि।

प—दूध, रोटी, पपीता, बथुआ, मोआपालक, सूरण, मूली और आंवला। आरम्भ में केवल दूध पर रक्खा जाय, कठिनाई पड़ने पर साथ में रोटी देना आरम्भ कीजिये। उसके बाद शाकों का सहयोग लीजिये। सावधान! लवण किसी भी अवस्था में न दिया जाय। पन्द्रह दिन में रोगी स्वयं प्रसन्नता पूर्वक लाभ स्वीकार करेगा।

चन।—उक्त मात्रा १४ वर्ष से लेकर ४० वर्ष तक की आयु के पुरुष के लिये हैं। इससे भिन्न आयु में न्यूनाधिक अपेक्षित है।

यदि खांसी का उपद्रव हो तो पुनर्नवा का स्व-न उष्ण कर व्यवहार करें। नवसादर को आप हैं तो शुद्ध करलें। पर मैं जैसा बाजार में मिलता वैसा ही चूर्ण कर प्रयोग करता हूं। पपड़ीदार र डोंकेदार नवसादर में भी इस विषय में कोई न्तर नहीं है।

यकृत-प्लीहा वृद्धि के साथ यदि अतिसार हो तो त प्रयोग का व्यवहार न करें।

ण—यकृत-प्लीहा वृद्धि को घटाता है। भूख बढ़ाता है। कब्जियत दूर कर दस्त साफ लाता है। रक्त में लोहकणों की वृद्धि करता है। यदि इस प्रयोग के साथ भोजनोत्तर उत्तमकोटि का कुमारी आसव एक मात्रा में डेढ़ तोले पी लिया जाय तो सोने में सुगन्ध हो जायगी।

तप्रदर पर—

बरगद की छाल	गूलर की छाल
पाकर की छाल	पीपल की छाल
पारसी पीपल अभावमे	सिरिस की छाल

—प्रत्येक १-१ छटांक

—सब मिलाकर एक मात्रा ऽ१। सवा सेर पानी में काढ़ाकर आधा सेर शेष रखिये। शीतल जाने पर कच्ची फिटकरी का चूर्ण २ माशा काढ़े में घोलकर डूश में भर लीजिये। उत्तर वस्ति द्वारा योनि प्रक्षालन कीजिये। वस्ति का नेत्र (योनि में जाने वाला भाग) योनि में प्रक्षालन के लिये विशेष ढंग का बना हुआ बाजारों में मिलता है। उसी का प्रयोग कीजिये। उक्त मात्रा केवल एक बार धोने के लिए है। इस प्रकार दिन में दो बार प्रक्षालन करना चाहिये।

भोजन में—कटु, उष्ण, अम्ल, तिक्त और गरिष्ठ चीजों का व्यवहार नहीं करना चाहिये। व्यवाय और अमिताप से दूर रहना चाहिये। कोष्ठबद्धता पर भी ध्यान देना चाहिये। तीन दिन में रोगी को अपूर्व लाभ होगा। रक्त प्रदर पर भी इसका प्रयोग कर सकते हैं पर इसमें खाने वाली औषधि भी अपेक्षित है जो वैद्य की इच्छा पर निर्भर है।

सूचना—यदि डूश या उत्तरवस्ति का नेत्र उपलब्ध न हो तो किसी भी प्रकार इस द्रव को योनि के भीतर प्रवेश कराकर प्रक्षालन करना चाहिये।

श्री पं० जनार्दन शर्मा आयुर्वेदाचार्य H. M. D. S.

प्र० चिकित्सक-श्री० किरोड़ीलाल जी दातव्य औषधालय, रामगढ़

—लेखक—
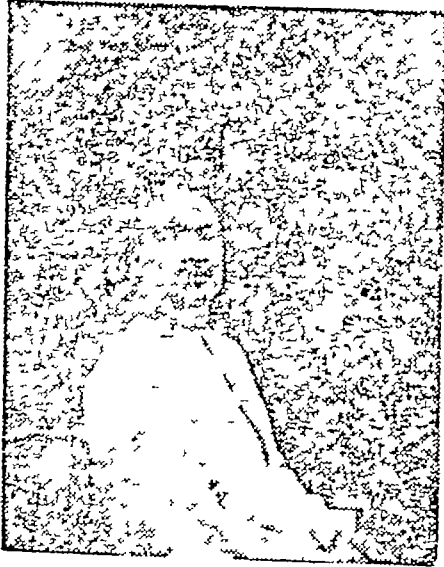
पिता का नाम— वैद्यराज पं० मुरलीधर जी मिश्र

आयु—२८ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० वैद्य जी ने हिन्दी संस्कृत एवं अंग्रेजी का अध्ययन करने के पश्चात् ऋषीकेश आयुर्वेद विद्यालय से आयुर्वेद वाचस्पति की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपने होमियोपैथी का भी अध्ययन किया है। आप महेन्द्रगढ पटियाला एवं भोपाल प्रभृति स्थानों पर चिकित्सा-कार्य करने के पश्चात् रामगढ के श्री० किरोड़ीलाल दातव्य चिकित्सालय के प्रधान चिकित्सक के पद पर गत २ वर्षों से सफलता-पूर्वक चिकित्सा कार्य कर रहे हैं, आपके निम्न दोनो प्रयोग पूर्ण परीक्षित एवं उपयोगी हैं। पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

टंकणादि पुड़ा -

कत्था जायफल

चोकिया सुहागा फूला हुआ अफीम

—प्रत्येक १-१ तोला

—सब चीजों को समभाग लेकर पहले तीनों को एक साथ खरल कर पीछे अफीम मिलाकर खरल करें और एक जीव करके शीशी में भर कर रख देवें।

सेवन-विधि—बड़े रोगी को ४ रत्ती की मात्रा अतिसार मे ठंडे जल के साथ देवें। अतिसार रक्तातिसार मे चावल के धोवन के साथ या सोंफ के अर्क के साथ दें। दो खुराक तक दें। अगर उससे कम न हो तो एक साथ भी दे सकते हैं। बच्चों को उनकी उम्र के हिसाब मे दें।

गुण—आमातिसार एवं रक्तातिसार के लिए अत्युपयोगी दवा है।

पथ्य—दही और खिचड़ी देवे।

पाण्डु कामला पर

त्रिफला, त्रिकुटा, चित्रक, वायबिडंग, नागरमोथ —समानभाग लेकर चूर्ण बना कर रखलें।

मात्रा—पूर्ण बड़े मनुष्य की खुराक ३ टंक लेकर मधु घृत में मिला अवलेह सा बनाकर लेवें, अथवा इस औषधि के चूर्ण को गौ मूत्र से या गुड से या गौ तक्र के साथ तीन समय लेवें, पाडु कामला शीघ्र शात हो जाता है।

पथ्य—गन्ना संतरा अनार आदि का रस का अधिक प्रयोग रक्खे।

—यह दोनों प्रयोग अनुभूत हैं, मैंने इनको सैकडों वार बनाकर अनेकों रोगी इन प्रयोगों से ठीक किये हैं।

—लेखक—

राजवैद्य पं० रामलाल जी जैन

आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं आनरेरी मुंसिफ

वायस-चेयरमैन-ग्राम सुधार एसोशियेशन, अलीगढ़ ।

—×—

"श्री० वैद्य जी योग्य एवं प्रभाव-शाली व्यक्ति हैं। आपका अधिकारी वर्ग एवं जनता उभयपक्ष में समान सम्मान है। आप सार्वजनिक कार्यों में बडे उत्साह से भाग लेते हैं, फल स्वरूप आप अनेकों संस्थाओं के पदाधिकारी हैं। आपका हमारे ऊपर पूर्ण स्नेह है तथा हमारे निवेदन करने पर आपने अपने पूर्ण परीक्षित दो प्रयोग धन्वन्तरि के पाठकों के लिये प्रेषित किये हैं। आशा है पाठक लाभ उठावगे।"

—सम्पादक।

पाठकों की सेवा में मैं अपने दो गुप्त सिद्ध योग प्रस्तुत कर रहा हूं। यह दोनों योग करीब १०० साल से मेरे यहां परम्परागत—परीक्षित सिद्ध होचुके हैं। सन् १६२७ मे मेरे गुरू रायसहाब हकीम कल्याणराम "राजवैद्य" ने मुझ पर प्रसन्न होकर जब अपनी थाथी 'योग करंड' सौंपा था उस समय उन्होंने मुझे बताया था कि इसमें मेरे पिता के बताये हुए सिद्ध योगों का संग्रह है, यह अचूक योग हैं। मैं तभी से अपने औषधालय मे उनका उपयोग कर रहा हूं उनमें से ही यह दो प्रयोग हैं, जिनका प्रयोग मैंने कभी निष्फल नहीं देखा व्यवस्थापक—"धन्वन्तरि" की प्रेरणा से इस अंक में प्रकाशित करने भेज रहा हूं। आशा है कि पाठक इनका चमत्कार देखेंगे।

—मोती अनविधे ३ माशे
संगजराहत २ तोला
कहरवा समई जहर मोहरा खताई
नागकेशर जीरे वाली बसलोचन
छोटी इलायची के दाने कमलगट्टा की मींग
सत्त कसेरु कमल पुष्प
कमल नाल खस पद्माख गौरीसर
नेत्र वाला रक्त चदन

—प्रत्येक १-१ तोला

अर्क गुलाब	१० तोला
अर्क केवड़ा	१० तोला
दम्मुल अखवैन	२ तोला

विधि—मोती, संग जराहत कहरवा एवं जहर मोहरा को खरल में डाल कर अर्क से घुटाई करे, जब चूर्णवत रह जाये तब रखले और बाकी नागकेशर से रक्त चदन तक की औषधियां कूट-छान कर खरल की हुई औषधि में मिलाकर रखले।

मात्रा—४ रत्ती से २ माशे तक शर्बत नीलोफर या मिश्री की चासनी मे दिनमें ४ बार दे और इसके १॥-१॥ घण्टे बाद अशोकारिष्ट और उशीरासव मिला कर १। तोला से १॥ तोला तक पानी मिला कर पिला दिया करे।

गुण—गर्भस्राव, या गर्भपात को रोकने के लिये यह अव्यर्थ योग है। इसके अतरिक्त घोर रक्त

प्रदर रक्त-पित्त पर भी अद्भुत चमत्कार दिखाता है। इस योग के बल पर अनेकों गर्भपात मैंने रोके हैं और रोकता हू।

नोट—१ अशोकारिष्ट तथा उशीरासव मैंने स्वय सेवन कराये हैं। "राय-साहब" केवल कहरवा रसायन का ही उपयोग कराते थे।

२—यदि गर्भिणी को कोष्ठ-बद्ध है तो २ तोला गुलकंद दूध के साथ देते रहना चाहिये अथवा सौंफ, मुनक्का गुलकंद पावभर गाय का दूध पाव भर पानी मिलाकर पकावें जब दूध शेष रहे तब छान कर पिलादें, दस्त साफ होकर कब्ज मिट जायगा।

३—गर्भिणी की चारपाई का पैर की ओर का भाग १-१ ईंट लगाकर ऊचा करदें और रोगिणी को शैय्या से उठने न दें। पेशाब, पाखाना भी सावधानी से लेटे २ शैय्या पर करावें।

पथ्य—गाय का दूध बराबर का पानी मिलाकर नील कमल-फूल, प्रयंगु दाख और खिरैटी से सिद्ध करके पिलादे। मोसमी का रस अंगूर अनार आदि का रस सेवन करावें। यदि ग्रीष्म-ऋतु हो तो शर्बत अनार वर्फ डालकर दें। दूध मे वर्फ डालकर पिलायें। रक्त-स्राव और शूल बन्द होने पर मूंग की दाल, दलिया, साबूदाना, लौकी, तोरई आदि दें और तभी शैय्या से उठने की आज्ञा दे। धन्वन्तरि भगवान की कृपा से अवश्य लाभ होगा।

—यदि परिचारिकों की असावधानी से अधिक रक्त-स्राव होगया हो, केवल गर्भ की पिंडी मात्र रह गई हो, गर्भाशय का मुंह पर्याप्त खुल गया हो या गर्भ की गांठ अपना स्थान छोडकर गर्भाशय की ग्रीवा में आगई हो तो उसे रोकना गलत होगा। इससे बहुत सी हानियां हो सकती है, अतः चतुर वैद्य इस दशा में औषधि का प्रयोग न करे।

—तथा रसौली, कैंसर (एक प्रकार का योनि-व्रण) से होने वाले रक्त-स्राव पर भी इस औषधि का कोई प्रभाव नहीं होता। अतः यश की इच्छा रखने वाले चिकित्सकों को उचित है कि इस चमत्कारिक योग को ऐसी दशा मे निष्फल खोकर औषधि के प्रति अपना विश्वास न हटाले। सर्व-प्रथम किसी चतुर वैद्या, नर्श, लेडी डाक्टर या धात्री से पूरी २ परीक्षा करा कर इसे प्रयोग करें।

बालापस्मार [कुमेड़ा] पर सिद्ध योग

बाल हितैषी वटी—

ऐलुआ	१ तोला
ऊदसलीब	१७ माशे
सनाय	६ माशे
कालादाना	६ माशे
कुटुरू गोंद	६ माशे
रूमी मस्तगी	१ तोला
गुलाब का फूल	१ तोला

—सबको कूट-छान कर पानी मे घोट १-१ रत्ती की गोलियां बनालें। १-१ गोली दिन में ३ बार माता के दूध या पानी के साथ दे। १ गोली देते ही दौरा शांत हो जाता है। बेहोशी दूर हो जाती है, २१ दिन के सेवन से दौरा कदापि नहीं होता, बालक हृष्ट-पुष्ट बलवान हो जाता है।

पथ्य में—बालक तथा उसकी माता को हल्का भोजन दें।

श्रीयुत पं० श्रीकृष्णचन्द्र जी त्रिपाठी वैद्य

कृष्णा फार्मेसी, कन्नौज।

पिता का नाम— पं० रामनारायण जी त्रिपाठी,

आयु—४५ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय-१-अर्धावभेदक २ अण्डवृद्धि

"श्री. त्रिपाठी जी एक योग्य वैद्य हैं आपने नेशनल मेडीकल कालेज कलकत्ता से परीक्षा उत्तीर्ण की है, २२ वर्ष से आप सफलतापूर्वक चिकित्सा कर रहे हैं, आपके उपयोगी प्रयोगों से पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

—लेखक—

आधा शीशी के दर्द के लिये—

—कमलगट्टा को तोड़ने से जो अन्दर सफेद गिरी निकले उसे चिकने पत्थर पर पानी डाल कर चन्दन-वत् घिसे। रोगी को सूर्योदय के १ घंटा पहिले सुलाले (सूर्य निकलने पर न लगावें) और उपरोक्त दवा का जहां दर्द हो उस आधे मस्तक में चन्दनवत् चुपड़ दे, रोगी को १० मिनट बैठा रहने दे जब दवा सूख जाय तो कपड़े से पोंछ कर उस जगह पर घी लगादे तो पुराने से पुराना आधा शीशी का दर्द सिर्फ एक दफा के ही लगाने से नष्ट होता है। इस योग से हमने हजारों अर्ध शिर दर्द रोगी जो वर्षों से कष्ट भोग रहे थे अच्छे किये हैं।

नोट—दवा सूर्योदय से कम से कम १ घंटा पहिले तो लगाना ही चाहिये। यह दवा सिर्फ आधा-शीशी के दर्द पर ही अचूक लाभकारी है, अन्य शिर-दर्दों पर नहीं।

अण्ड वृद्धि पर—

अण्डकोष का जल सुख पूर्वक निकालने का उपाय—मुट्ठी भर इमली की पत्ती लाकर किसी मिट्टी के पात्र में सब पत्ती डूब जावें, इतना गोमूत्र डालकर आग पर रक्खें, जब गोमूत्र कम होजाय पुनः इतना ही गोमूत्र डाल कर औटावें। इस प्रकार ३ बार गोमूत्र डालकर औटावें, बाद में गर्म २ पत्तियों को निकाल किसी बड़ या अरंडी के पत्ते पर पत्तियों को रख सुहाता २ अण्डकोष पर बांध दे, ऊपर से कपड़े की पट्टी बांध दे फिर लंगोट बांध लें। यह क्रिया रात्रि को करें। इसी तरह ७-१४ या २१ दिन बांधने से कठिन से कठिन अण्डवृद्धि का जल निकल कर पूर्ववत् नरम हो जायगा।

नोट—अण्डकोष यदि कद्दू के समान भारी हों तो उपरोक्तविधि से ही कार्य करे, सिर्फ दवा औटाते समय बफारा विधि अनुसार चारपाई पर बैठ कर उस मिट्टी के पात्र पर जिसमें पत्तियां औटती हैं एक कीप टीन की रख कर अण्ड-कोषों पर बफारा लेता रहे, बाद में पत्ती सुहाती २ बांध उपरोक्त विधि अनुसार लंगोट कस लिया जाय, इससे वृषण पर किसी प्रकार का अहित परिणाम न होगा और बगैर शस्त्र-क्रिया के आराम हो जायगा।
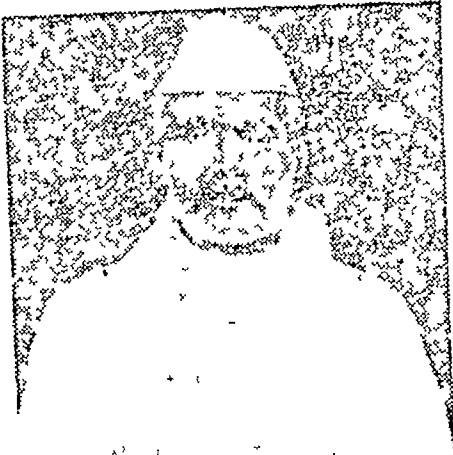
वैद्यभूषण पं० रामरीझन जी ठाकुर

श्री ठाकुर औषधालय, जनकपुर रोड

पिता का नाम— बाबूभोला ठाकुर

आयु— ४७ वर्ष जाति— ब्राह्मण भूमिहार

प्रयोग विषय १-नाशागत कृमि २-उदर रोग

"श्री० वैद्य जी योग्य और अनुभवी चिकित्सक हैं। आपने विधि-वत् व्याकरण और आयुर्वेद का अध्ययन किया है। आपके प्रयोग निस्सन्देह उपयोगी होंगे ऐसा हमारा विश्वास है, पाठक लाभ उठावगे।

—सम्पादक।

—लेखक—

बन्दालयोग

इसको बिहार में बन्दाल तथा बन चढैल कहते हैं। यह चढेल जिसको दूसरे प्रान्त वाले ककोढा भी कहते हैं तरकारी के काम आती हैं

—बन्दाल के दो फलों को लेकर उसके ऊपरी छिलकों को हटाकर भीतर के जाल को एक तोला पानी में शीशे के गिलास में संध्या-काल में भिगोकर रात भर खुला ओस में रख दें। प्रात. सूर्योदय से कुछ पूर्व ही दवा का साफ निथारा हुआ पानी लेकर दोनों नाक से नस्य की तरह सूंत लेवें ख्याल रखे कि दवा कण्ठ मे लगने पर एकाध दिन कुछ दर्द करता है जो ज्यादा-दुखद नहीं होता। दवा के नस्य लेने के एक घण्टे बाद सर्दी की तरह नाक से पीला पीला पानी पतला और गाढा निकलना आरम्भ होता है। जिसमे शिरो नासागत अगर कृमि हो तो एक एक कर निकल जाता है। इसके द्वारा शिर शूल वा आधाशीशी, उन्माद विकार और कामला एक ही बार मे दूर हो जाता है, अगर कुछ शेष रह जाय तब एक सप्ताह बाद फिर पूर्व युक्ति से एक बार नस्य लेवें। नस्य के दिनों मे हल्का पथ्य दूध या दूध-साबूदाना या पतली खिचडी सेवन करे। लाल मिर्च उस दिन बिल्कुल बन्द रखें।

उदर रोग नाशक हरीतकी प्रयोग—

प्रथम दिन १ बड़ी हरड की छाल लेकर आध पाव गोमूत्र में पीस छान कर पीवे, दूसरे दिन २ अदद, तीसरे दिन ३ अदद इसी क्रम से दस दिन तक १-१ बढ़ाते जांय। गोमुत्र भी कुछ बढाते रहें दस अदद हो जाने पर १-१ घटाते जांय इसी तरह दो बार के घटाव-चढ़ाव से रोग निर्मूल होजाता है।

पथ्य—केवल गोदुग्ध ही रखे प्यास लगने पर भी दूध ही पीना चाहिये। किन्तु जब प्यास असह्य हो तब थोड़ा उष्ण जल पीना चाहिये। जहा तक हो सके दूध पर रहना चाहिये।

श्रीयुत पं० कमलेश्वर जी शर्मा व्याकरण आयुर्वेदाचार्य

कमला आयुर्वेद सदन, नवादा पो० बहेरा पटना
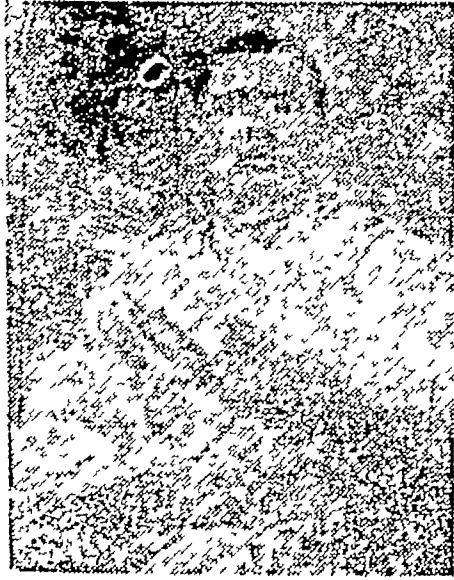
पिता का नाम— श्री० पं० उपेन्द्रनारायण झा

आयु—२६ वर्ष जाति—मैथिल ब्राह्मण

प्रयोग विषय--१कर्णमूल नाशक २-कृमिकालानल

"श्री वैद्य जी उच्च शिक्षित और अनुभवी चिकित्सक हैं। सन् ४३ से आप दामोदर संस्कृत विद्यालय नवादा में व्याकरण और आयुर्वेद का अध्यापन कर रहे हैं, श्री० वेंकटेश्वर दातव्य औषधालय में भी प्रधान चिकित्सक रह चुके हैं। आशा है आपके प्रयोग पाठकों का उचित लाभ करेंगे।" —सम्पादक।

—लेख १—

कर्णमूल पर

पुनर्नवा (विसखपरा) सरसों पीली
सेंधा नमक सहजने की छाल (भूम्यन्त:स्थित)

विधि—उपरोक्त तीनों औषधियां सम भाग लें और सेंधा नमक आधा भाग लें। स्वच्छ सिल पर सभी को भली-भांति घिसकर महीन कल्क तैयार करें. फिर इसे किसी बर्तन में आग पर गर्म करलें, बस इसी उष्ण कल्क का शोथ के स्थान पर लेप करदें।

गुण—यह लेप कर्णिक-सन्निपात मे जब कर्णमूल निकल आता है अपना अद्भुत चमत्कार दिखाता है, प्रारम्भिक अवस्था मे लेप करने से कभी भी नहीं बढने देता या पकने ही नहीं देता। अन्त में उसे सुखाकर फोड भी देता है, जिससे अनायास ही पीप निकाल कर रोगी को शान्तिप्रदान करता है, लेकिन मैं तो इसे प्रारम्भिक अवस्था में ही प्रयुक्त करता हूं, मुझे कभी भी ऐसा अवसर नहीं प्राप्त हुआ जो पकाने की आवश्यकता हो। यों तो यह प्रलेप कर्णमूल के अतिरिक्त भी सभी प्रकार के व्रण को बैठाने में अमोघ है।

नोट—इसके प्रयोग में सावधानी की आवश्यकता है, गरम २ लेप करना चाहिये। ठण्डा हो जाने से कुछ भी फायदा नहीं; किंतु ऐसा गरम न हो कि चमड़ी ही जल जाय और छाले पड़ें, रोगी जितना गरम बर्दास्त कर सके उतना ही गरम रहने दें।

कृमि कालानल

—खजूर के छोटे पेड से, उसकी परम-मृदु कोंपल

[शेषांश पृष्ठ ६५७ पर]

श्रीयुत पं० श्यामदत्त जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

चेत्रवजाजा भवन, खालसा गली, आगरा।

—लेखक—

प्रयोग विषय- १—नपुंसकता नाशक

२ वातरोग नाशक ३—तिला

"श्री वैद्य जी आगरे के प्रसिद्ध वैद्यों में से हैं। आपने जयपुर कालेज की शास्त्री और विद्यापीठ की आयुर्वेद परीक्षा उत्तीर्ण की हैं। आप 'परिवार-बन्धु' नामक आयुर्वेदीय मासिक पत्र भी प्रकाशित कर चुके हैं। स्थानीय वैद्य सभा के तो आप बहुत समय से प्रधान मत्री हैं। कई सम्मेलनों से आपको प्रमाण पत्र प्राप्त होचुके हैं। इस समय भी आप धर्मार्थ चिकित्सालय मे प्रधान वैद्य के पद पर काम कर रहे हैं। हम पर आपका बड़ा स्नेह है, इसीलिये आपने हमारे आग्रह पर ये प्रयोग भेजे हैं, आशा हैं पाठकों का इनसे पर्याप्त लाभ होगा।" —सम्पादक।
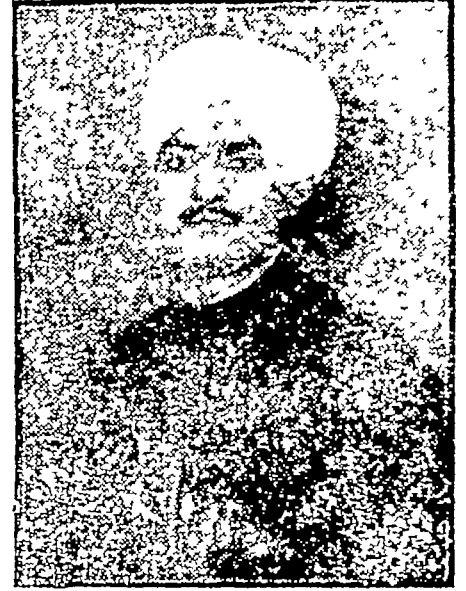
अमृत रस--

शु० लाल संखिया १० तोला की डली, अशुद्ध भिलावा ५ सेर को कूटकर एक मिट्टी के वर्तन में आधा कुटा भिलावा रख संखिया की डली रख दें; ऊपर से वाकी भिलावा रख वर्तन का मुख भली प्रकार वन्द करें। उसके नीचे १२ घन्टे की मन्द अग्नि जलावें। इस प्रकार ३ वार पान करें फिर उस मल्ल की डली को निकाल पीसकर रख ले।

मात्रा—१-२ चावल मलाई, मक्खन या मधु के साथ केवल प्रातः ही दें और घी-दूध अधिक सेवन करावे।

नोट—सन्निपात में मधु और अद्रक स्वरस के साथ देना चाहिये।

गुण—नपुंसकता, आमवात, कफरोग, सन्निपात, पक्षाघात, गृध्रसी आदि स्नायुरोग, समस्त वातव्याधि और श्वासरोग की अनुपम औषधि है।

वातमर्दन तैल --

मीठा तेलिया २ तोला
मालकांगनी ४ तोला
जायफल लौंग कूठ कडवा,
हल्दी, जावित्री, पीपल
काली मिर्च —हर-एक १-१ तोला
धतूरे के बीज भिलावा ५-५ तोला
अफीम ६ माशे केशर ६ माशे
अर्क (आक) धतूरा अरण्डी
तम्बाकू इन सब के पत्तों का रस २०-२० तो०
सत्यानासी का स्वरस आध सेर
गोमूत्र २ सेर

पानी	५ सेर
तिल तैल	अलसी का तैल
अंडी का तैल	१।-१। सेर

— तीन दिन तक शनैः २ तैल पाक विधि से पका कर सिद्ध करलें ।

—यह तैल १ सेर, तैल तारपीन १ सेर मिलाकर रख लें ।

गुण—यह तैल समस्त वातरोगों के लिए और निमोनियां के पार्श्वशूल के लिए रामवाण है ।

नवजीवन तिला -

भेड़ का दूध	शुद्ध पारद
गन्धक	हरताल तबकी
संखिया सफेद	संखिया पीला
सिंगरफ	मैनसिल
सींगिया	घुंघची सफेद
लौंग	जायफल
बीर बहूटी	उदबिलाव के पोते
शेर की चरबी	जंगली सूअर की चरबी
आक का दूध	थूहर का दूध

—प्रत्येक २-२ तोला लेकर पातालयन्त्र से तैल निकालें।

विधि—सुपारी छोड़कर इन्द्रिय पर लगावे। दो तीन दिन बाद इससे उपाड़ होगा । उपाड़ होने के बाद इसे लगाना बन्द करदें और इन्द्रिय पर मुलतानी मिट्टी और कपूर का लेप कर दें, सूख ने पर बरांडी से धोवे, बाद में मक्खन लगा दे । इस प्रकार तीन चार बार प्रयोग करने पर कैसा भी नामर्द हो मर्द होवेगा ।

नोट—ध्यान रहे कि बरांडी से धोने पर कुछ कष्ट होता है, किन्तु मक्खन लगाने से शान्ति हो जाती है ।

बिना उपाड़ का तिला—

माल कांगुनी का तैल १० तोला इन्द्रायण के बीज ५ तोला, बीजों को कूटकर तैल में डाल एक शीशी में भर दें और मुख बन्द कर १५ दिन धूप में रक्खा रहने दे । १५ दिन बाद छानकर रख ले और प्रयोग करे ।

नोट—यह योग उन्हीं के लिये विशेष लाभकारी है जिनको उतेजना तो होती है किन्तु इन्द्रिय शीघ्र शिथिल हो जाती है और नसों मे पानी आदि नहीं है । किन्तु जिनकी नसों मे दूषित पानी है और जो बिल्कुल नामर्द हैं उनके लिए तो उपाड़-का तिला उपयोगी होगा

[पृष्ठ ६५५ का शेषांश]

२ तोले लेकर ½ तोला काली मिर्च मिला स्वच्छ सिल पर अथवा खरल में अच्छी तरह घिसकर २-३ औंस जल मिला, अग्नि पर चढ़ाकर उष्ण करलें । कोष्ण जल को प्रतिदिन सबेरे सेवन करे ।

गुण—जो वर्षों एलोपैथी डाक्टरों के फेर में पड़कर अपने समय तथा रुपये को बर्बाद कर हताश होगये हों उनको यह फ़क़ीरी योग जीवन-दान देगा । यह योग उदरस्थ सभी प्रकार के कृमि को नष्ट कर पाचकाग्नि की अभिवृद्धि करता है, रुचि बढ़ाता है । यह योग सैन्टोनाइन प्रभृति विदेशी दवाइयों के जैसे तुरन्त कृमि-पातन कर जादू का चमत्कार नहीं दिखाता, किंतु पेट के अन्दर ही सभी कीड़ों का सर्वनाश कर अपूर्व ऐन्द्रिजालिक क्रिया दिखाता है । इसे केवल सुबह खाली पेट सेवन करे । यों तो एक सप्ताह में ही यह अपना चमत्कार दिखाता है किंतु पूर्ण गुण के लिये २१ दिन तक सेवन करना चाहिये ।

नोट—कोंपल (खजूर का मृदु कोंपल) प्रतिदिन ताजा लेना चाहिये ।

—लेखक—
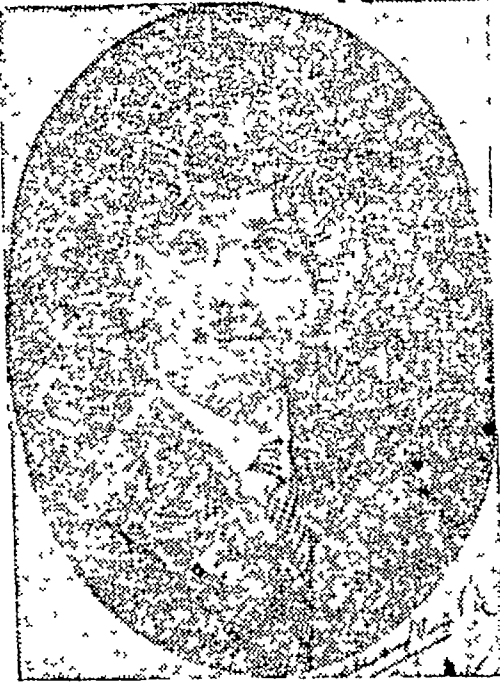
श्रीयुत कवि० मानचन्द्र जी वैद्य भिष०

क्षेत्रपाली चबूतरा, जोधपुर।

"श्री. वैद्य जी विद्वान और प्रतिष्ठित वैद्य हैं। आप जोधपुर म्यूनिसिपल बोर्ड के सदस्य हैं और जोधपुर गवर्नमेंट आयुर्वेदिक फार्मेसी के सदस्य हैं। ग्रहणी आमातिसार के आप विशेष चिकित्सक हैं। हमारे बडे आग्रह करने पर आपने कृपा करके अपने पूर्ण परीक्षित, प्रयोग भेजे हैं, आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

आ०त्र-पुच्छ प्रदाह--

इस रोग के ग्रसित रोगी प्राय: तीव्र अवस्था मे ही आते हैं। अधिकतर शल्य-चिकित्सा के लिये चले जाते हैं। मुझे १५-२० रोगियों की पर्याप्त चिकित्सा करने का अवसर मिला। इनमे से कुछ रोगी स्थानीय आतुरालय (पाश्चात्य) मे २-३ महीने तक रह कर चिकित्सा करा चुके थे। सबको मेरी चिकित्सा से लाभ हुआ।

लक्षण—पेट में दाहिनी ओर तीव्र वेदना, छूने से असह्य दर्द ज्वर वमन।

चिकित्सा—

प्रात:—शूलारि क्वाथ—दाणांमेथी अजवायन सिंधी सोया असालिया

—चारों को मिला कर २ तोला अठ-गुने पानी में औटा कर चतुर्थांश रहने पर, १ तोला पुरातन गुड़ मिला कर छान करदें।

—भोजन के पश्चात्—शंखवटी ४ रत्ती से ६ रत्ती पानी से।

सायं—पुनर्नवादि क्वाथ।

प्रलेप—शूल के स्थान पर शोथ दिखाई देता है उसी पर नालुका (तज) का गरम मोटा सा लेप प्रात काल ही कर दे, शाम को लेप न करे।

आमातिसार-

रोगी के पेट में तीव्र वेदना, थोड़ा २ बार २ दस्त, दस्त मे मल नहीं आता सिर्फ थोड़ा २ आंव और रक्त ही गिरता है। रोगी मल निकालने के लिये प्रयत्न करता है मगर नहीं निकलता। बहुत ही तीव्र कष्ट होता है, रोगी बेचैन होजाता है। ऐसी तीव्र अवस्था मे निम्न प्रयोग की ३-४ मात्रा देते ही आराम मिल जाता है। मल निकलने लगता है, आंव साफ होजाती है, पेट का दर्द बहुत कम हो जाता है। ऐसी तीव्र अवस्था में कर्पूरादि वटी जैसी

अफीम युक्त तीव्र स्तम्भक औषधि का प्रयोग भूल कर भी नहीं करना चाहिये।

शतपुष्पादि चूर्ण —

सौंफ (विराली) छोटी हरडे (छोटीहरड़)

—इन दो वस्तुओं को अलग २ तवे या कडाही में कुछ मन्द अग्नि से पकाले, सौंफ कुछ लाल हो जायगी एवं हरड़ फूल जायगी (ध्यान रहे ये जलने न पावे) इन्हें कूट छान लें। इनके बराबर मिश्री पीस कर मिलादें।

मात्रा—३ से ६ माशे तक दिन में २ या ३ बार पानी के साथ दे।

पथ्य—सिर्फ दही, छाछ और भात, अनार।

मंथर ज्वर पर क्वाथ—

गुलबनफसा	६ माशा
खूबकला	६ माशे
उन्नाव	५ दाना
अजीर	२ दाना
मुनक्का	७ दाना
मिश्री	१ तोला

—इस क्वाथ से रोगी का पेट साफ रहता है, अन्य कोई उपद्रव नहीं होता, सन्निपात की तीव्र अवस्था नहीं होने पाती। रोगी शनै २ स्वस्थ हो जाता है, यदि दस्त अधिक होने लगे तो मुनक्का और अजीर की मात्रा घटादें और दस्त साफ न हो तो कुछ मात्रा बढ़ादें। अन्य रेचक औषधि नहीं देनी चाहिये।

आमातिसार पर क्वाथ-

सौंफ	१ तोला
पोदीना	३ माशा
रूमी मस्तंगी असली	३ माशे
इलायची छोटी	५ दाना
गुलकंद	१ तोला

—कई रोगी चूर्ण लेने में कष्ट अनुभव करते हैं पीने की दवा मट्पट ले लेते हैं। वह भी मीठी होने से आसानी से पी लेते हैं। इसके लेने से पेट का दर्द १-२ मात्रा में ही कम हो जाता है आव साफ निकल कर फिर बन्द हो जाती है। मल शीघ्र ही आ जाता है। दो-तीन दिन की चिकित्सा में रोगी स्वस्थ हो जाता है।

प्रदरांतक चूर्ण-

धाय के फूल लोध्र
लाक्षा सर्ज रस (राल) मोचरस
—ये सब १-१ तोला
मिश्री ५ तोला

मात्रा—६ माशा पानी या दूध के साथ। श्वेत एवं रक्त प्रदर को बंद करता है।

रसांजनादि वटी [रक्तार्श] पर-

रसौत	५ तोला
कलमी सोरा	५ तोले

—दोनों समान भाग लेकर मूली के रस में घोट कर चने प्रमाण गोली बनाले।

मात्रा—३-४ गोली प्रातः सायं।

कर्णस्राव पर—

गौमूत्र सभी जगह आसानी से मिल जाता है। इसे एक दिन बोतल में भर ले। नितर जाने पर छान ले। शीशी में अच्छा कार्क लगा कर रखदे। रोगी का कान साफ कर ३-४ बूंद कान में टपका दें। कई दिनों का पुराना कर्णस्राव भी बंद हो जाता है। 'नवरत्न औषधालय में कई वर्षों से इसका प्रयोग किया जाता है। ७५ ०/० रोगी ठीक होजाते हैं।

श्री० राजवैद्य पं० कृष्णलाल जी शर्मा, त्रिपाठी

संस्थापक--दी कृष्ण आयुर्वेदिक फार्मेसी, प्रतापगढ़ (राजपूताना)

—लेखक—

पिता का नाम— वैद्य भैरवलाल जी त्रिपाठी

आयु— ८५ वर्ष जाति— ब्राह्मण

प्रयोग विषय— १-अर्श नाशक

२-कासारि अवलेह ३. बालकासारि चूर्ण

"श्री. वैद्य जी एक वयोवृद्ध अनुभवी-विख्यात चिकित्सक हैं। ३५ वर्ष तक आपने प्रतापगढ़ राज के आयुर्वेदिक औषधालय में प्रधान चिकित्सक पद पर कार्य करके यश प्राप्त किया है। ८५ वर्ष की आयु होने पर भी अभी आप १० मील प्रतिदिन टहलते हैं। आपको राजा महाराजों द्वारा अनेक प्रमाण-पत्र प्राप्त हुये हैं, आशा है आपके प्रयोगों से पाठकों का उचित लाभ होगा।"

—सम्पादक।

अर्शोघ्न वटी -
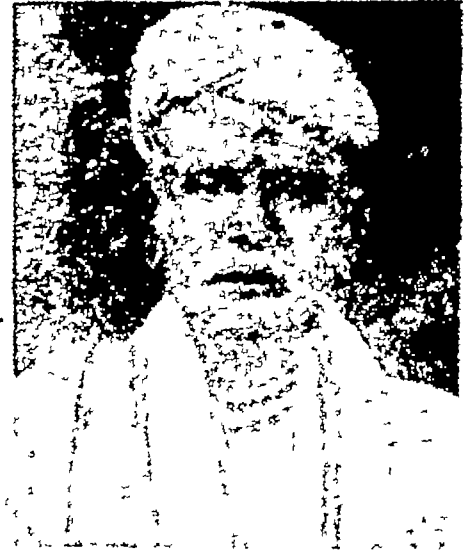
बकायन	सफेद कत्था
रसवन्ती	निबोली की गिरी

—प्रत्येक १-१ तोला

—सब औषधियों को कूट-पीस कर जल से २ रत्ती से ४ रत्ती की गुटिका बनालें।

मात्रा—२ गोली से ४ गोली।

अनुपान—जल अथवा गौ-दुग्ध से दें।

समय—प्रातः सायं और भोजन से २ घण्टे पूर्व।

गुण—रक्तार्श-अतिसार के लिये विशेष उपयोगी है।

अपथ्य—तैल गुड़, खटाई और मिर्च।

कासारि अवलेह -

काकड़ासिंगी	२ तोला
पीपल छोटी	१ तोला
कालीमिर्च	६ माशा
लौंग	१ तोला
यवक्षार	१ तोला
मुलहठी	२ तोला

—उपरोक्त औषधियों का महीन चूर्ण कर २ तो[illegible] मिश्री की चासनी में मिला कर रखलें।

सेवन-विधि—३ माशा से ६ माशे तक।

समय—प्रात. व सायंकाल।

गुण—पांचों प्रकार की कास (खांसी), कण्ठ शु[illegible] स्वर वर्धक और साधारण ज्वर में उत्तम है।

बालकासारि चूर्ण

यवक्षार	२ रत्ती
फिटकरी का फूला	२ रत्ती
शहद शुद्ध	१॥ माशा

—सबको एक साथ मिला कर बच्चों को चटावें।

गुण—बच्चों की खांसी व ज्वर नाशक है।

समय—प्रात. सायं।

अनुपान—उपरोक्त १॥ माशा शहद के साथ।

चि० चूरामणि पं० हरिप्रसाद जी चतुर्वेदी

नरही, लखनऊ।

—लेखक—

पिता का नाम— श्री० पं० द्वारिका प्रसाद जी चतुर्वेदी

जाति—ब्राह्मण आयु—५२ वर्ष

प्रयोग विषय-

१ मलेरिया नाशक २ पांडु रोग नाशक

"श्री वैद्य जी लखनऊ के प्रसिद्ध वैद्यराजों मे से हैं। लगभग २२ वर्ष से आप सफलता पूर्वक चिकित्सा कार्य कर रहे है। आन्त्रिक ज्वर, बालशोष और सग्रहणी के आप विशेषज्ञ हैं। आपके कई शिष्य भिन्न २ स्थानों में चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। लखनऊ मे हुये नि० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन को सफल बनाने में आपने बड़ा उद्योग किया था, आशा है आपके प्रयोगों से पाठकों का पर्याप्त लाभ होगा।" —सम्पादक।
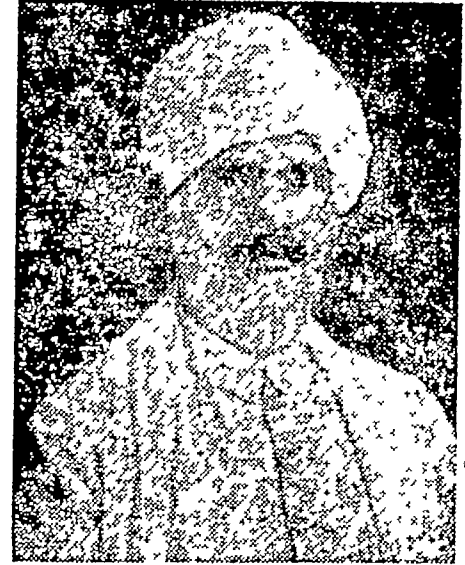
आयुर्वेद-मनीषी गुरुवर, श्री० पंडित शिवसहाय जी चतुर्वेदी के औषधालय मे शिक्षा ग्रहण करते हुए इस सिद्ध प्रयोग को प्रसाद रूप मे उपलब्ध किया था। वैद्य-समाज की सेवा मे प्रस्तुत कर रहा हूं यह प्रयोग शीत ज्वर नाशक है।

शीत-ज्वर नाशक

करञ्ज की मिंगी	५ तोला
छोटी पीपल	२॥ तोला
गूमा के फूल (द्रोणपुष्पी)	२॥ तोला
काली मिर्च	१॥ तोला
लाल फिटकरी की भस्म	२॥ तोला

—सबको मिला कर तुलसी स्वरस की ३ भावनाये देकर चने के बराबर गोली बना लेना चाहिये।

सेवन विधि—शीत-ज्वर आने से पूर्व १-१ घण्टे के अन्तर से ३ वार १-१ या २-२ गोली उष्णोदक के साथ देना चाहिये।

गुण—ज्वर पहिले ही दिन जाता रहता है। इन गोलियों से शीतज्वर (इकतरा, तिजारी, चौथिया) निश्चय जाता रहता है, इस पर मुझे पूर्ण विश्वास है।

वैद्यगण जिस समय संग्रहणी की चिकित्सा में रोगी को पांडु होते देखें उस समय पांडु (अनीमिया) को दूर करने के लिये इस प्रयोग से लाभ उठावें।

पांडु रोग नाशक--

मण्डूर भस्म	१ रत्ती
विद्रुम भस्म	२ रत्ती
अमृता सत्व	४ रत्ती

—शुद्ध मधु ३माशे में मिला कर दिन में २ वार देते रहने से यकृत सुगमता से कार्य करने लगता है शनैः २ पांडुता नष्ट होने लगती है। १ मास तक सेवन कराने से पूर्ण लाभ दिखलाई देगा।

सौ० श्रीमती अपर्णादेवी वाकणकर,

आयुर्वेद-विशारद, लश्कर ।

पति का नाम वैद्य के०एम० वाकणकर आयुर्वेदाचार्य

आयु—२२ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आरंभ में आपने अपने पिता वैद्य श्री० सदाशिवराव जी खाडिलकर, इन्दौर में सम्कृत तथा वैद्यक शिक्षा ग्रहण कर अब आपके पति श्री०के०एम० वाकणकर आयुर्वेदाचार्य ग्वालियर के कार्यों में सह-कारिणी हैं। आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से आयुर्वेद-विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, सम्कृत भाषा की ज्ञाता, समाज सेवाप्रिय, उत्तम वक्ता तथा लेखिका व सुयोग्य चिकित्सका हैं, बाल व स्त्री-रोगों पर आपने उत्तम अभ्यास किया है, आपके अनुभूत प्रयोग उपयोगी सिद्ध होंगे।" —सम्पादक।

—लेखिका—

योग नं०१

—गर्भाशय तथा प्रदर रोगों पर अनेक वार निम्न-योग बना कर अपने रोगियों पर मैंने अनुभव किया, यह अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है।

अशोकत्वक मजीठ
शतावरी —प्रत्येक २॥-२॥ तोला
लोध्र पुनर्नवा कृष्णजीरक
सौंफ नागरमोथा १-१ तोला
कमल फूल २ तोला

इनको जौ-कुट करके प्रथम २-३ घण्टे १६ गुने जल मे भिगोने रखें, पश्चात् क्वाथ करें, जब जल ४ भाग शेष रहे तब छानकर १-१॥ तोला क्वाथ थोडी मिश्री मिला कर प्रात सायं पीना चाहिये, इसी क्वाथ को धाय के फूल व गुड मिलाकर आसव पद्धति से भी निर्माण किया जा सकता है व लाभ करता है।

गुण—गर्भाशय शोथ रक्त तथा श्वेत प्रदर, मासिक स्राव में अनियमितता, रजःस्राव के समय या पूर्व हाथ, पैर व पेडू मे पीड़ाहोना, स्राव के रंग में अशुद्धता के कारण परिवर्तन, दुर्गंधि आना तथा इसी कारण वन्ध्यत्व होना या १-२ मास के पश्चात् गर्भपात होजाना आदि विकारों में सफल सिद्ध हुआ है, अत्यधिक रक्तस्राव की अवस्था मे फिट-करी मिश्रित जल की वस्तु का उपयोग करना चाहिए, अत्यधिक श्वेत प्रदर घोर निर्बलता की स्थिति में इसके साथ त्रिवंग भस्म का प्रयोग उत्तम कार्य करता है,

जीर्ण मलेरिया पर—

शेफालिका (हारसिंगार) पत्र १० तोला
जल १६० तोला

—में क्वाथ करके २० तोला शेष रहने पर १ तोला प्रमाण में शहद मिलाकर देना चाहिये।

—जीर्ण-शीतज्वर के कई रोगी केवल इस योग से इस प्रकार के ठीक हुये हैं जिन्हें ४-५ मास से

शीतज्वर मलेरिया आया करता था, किनाईन तथा किनाईन मिश्रित मल्ल के योग व इंजेक्शन नाना प्रकार के काढ़े पीकर ठीक न हो सके, वह रोगी १०-१२ दिन दोनों समय इसके पीने से स्वस्थ होगये। पित्त प्रधान लक्षणों मे यह अत्यन्त सफल कार्य करता है,

बालरोगों पर—

—लाइम वाटर (चूने का पानी) से सभी परिचित हैं तथा लाइम-वाटर के अनेक मिश्रण पेटेंट रूप में बाजार में मिलते भी हैं, परन्तु उसमे कुछ अन्तर हमारे अनुभव से किया है।

चूना	२॥ तोला
शर्करा	७॥ तोला
जल	२५ तोला

—प्रथम जल में शर्करा को घोललें घुल जाने पर चूना मिलाकर रखे। १२ घण्टे के पश्चात उत्तम वस्त्र में छान लेना चाहिए शर्करा मिश्रित जल में चूना अधिक मात्रा में घुल जाता है जब छान कर जल तैयार हो जाय तब उसमे ८० बूद कर्पूरार्क (स्प्रिट केफर) ६० बूंद सोंफ का तैल ३० बूंद, शुंठी का अर्क (टिंक्चर जिंजेबेरिस) मिलाकर काम मे लाना चाहिये। सोंफ का तैल जल मे मिलाना कठिन होता है, इस लिये थोडा सा खाने का सोडा एक खरल में लेकर उस पर सोंफ के तैल की बूंद डाल कर घोट लें और उस सोड़े को जल मे मिलादो।

मात्रा—१ वर्ष तक के बालकों को २० से ३० बूंद दो बार या तीन बार देना चाहिए, बालकों के अपचन वमन या रेचक होना, दस्त का रंग हरा पीला होना, दांत निकलते समय कष्ट होना, बालकों मे कैल्शियम की कमी से होने वाला विकार, अस्थिमार्दवता आदि ठीक होते हैं तथा बालक पुष्ट होते हैं।

बाल यकृत वृद्धि पर—

कालमेघ		२ तोला
निम्बत्वक	पुनर्नवा	१-१ तोला
ताल मखाने की जड		पर्पट
त्रिफला	पीपल	६-६ मासे
अजवायन		३ मासे

—इनमे १६ गुना जल लेकर क्वाथ करें, शेष चौथाई रहने पर काम में लाना चाहिये। अजवायन को उत्तम जौ कुट कर रखले, सब औषधियों के साथ नहीं मिलाना चाहिये, जब क्वाथ अग्नि से नीचे उतारने का समय आवे तब अजवायन डालकर ढकने से क्वाथ को ढंक कर १ मिनट अग्नि पर रखें। क्वाथ ढांककर रखे, अजवायन के अन्दर तैलांश होते हैं जो उसके प्रधान अङ्ग हैं नष्ट नहीं हो पाते, उसका तैल भाग ऊपर के ढकने मे वाष्प सा लगा हुआ रहेगा उस ढक्कन को निकाल कर पोंछ कर क्वाथ में मिला देना चाहिये, इसे एक वर्ष तक के बालक को चाय का १ चम्मच तक, दिन में दो बार देना चाहिये, १ वर्ष से अधिक दो चम्मच पूर्ण वयस्क को ६ मासे तक देना चाहिये।

गुण—बालकों के यकृत, प्लीहा वृद्धि व उसी के कारण कामला, हारिद्रक जैसे विकार, पेट का फूलना, रक्ताल्पता, अतिसार, संग्रहणी, वमन होना, अपचन, जीर्ण मलेरिया आदि में अति सफल कार्य करता है अनेक यकृत प्लीहा वृद्धि तथा कामला के बालक इससे स्वस्थ हुये हैं।

नोट उपरोक्त बनौषधियों के प्रवाही सार व टिंकचर भी आते हैं उनका मिश्रण कर रख लेने पर भी सफल कार्य होता है, हमेशा तय्यार रखने में इससे अधिक सुविधा मिलती है।

वैद्य काशिनाथ मुकुंद वाकणकर, आयुर्वेदाचार्य

वा. प्रिन्सीपल वाल्मीकि आयुर्वेद कालेज, लश्कर [ग्वालियर]

—लेखक—
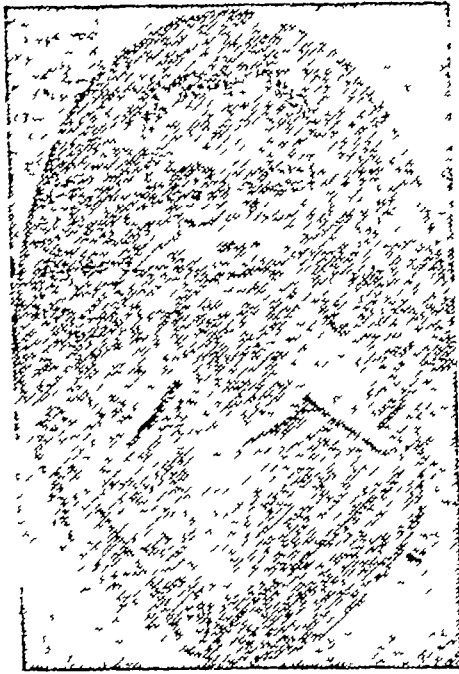
पिता का नाम— पं० मुकुन्दराव वाकणकर
आयु—२६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आप मध्य भारत के प्रसिद्ध चिकित्सक वैद्यराज गं० नी० ओरवदे शास्त्री के शिष्यों में से हैं, आयुर्वेदशास्त्र के साथ ही पाश्चात्य औषधि विज्ञान में भी सिद्धहस्त हैं, आयुर्वेद सम्बन्धी अनुसंधानात्मक लेखन सदैव करते रहते हैं, हिन्दी पाठकों के लिये आपने वैद्य पं० गंगाधर शास्त्री गुणे जी के 'औषधि गुण धर्म शास्त्र' तथा श्री. ओगले जी के 'चिकित्सा-प्रभाकर" जैसे प्रसिद्ध मराठी ग्रन्थों के भाषान्तर किये हैं।

आप वाल्मीकि आयुर्वेद कालेज, महिला आयुर्वेद विद्यालय ग्वालियर के प्रधान मंत्री एवं वाइस प्रिन्सिपल भी हैं, साथ ही ग्वालियर राज्य आयुर्वेद मंडल, आयुर्वेद मिशन संस्था के मंत्री तथा सहायक मंत्री भी हैं, नि० भा० आयुर्वेद महा मंडल की कार्यकारिणी समिति के मध्य-भारत से सदस्य चुने गये हैं भारतीय औषधियों से इंजेक्शन-निर्माण सम्बन्धी जो प्रयत्न हुये हैं, उन सबमें आपका प्रयत्न पूर्ण वैज्ञानिक ढंग का होकर आयुर्वेद व पाश्चात्य विज्ञान वादियों ने सराहना की है, तथा सफल चिकित्सक हैं, आपके कुछ अनुभूत प्रयोग नीचे दिये जाते हैं।"

—सम्पादक।

गुल्म पीड़ा तथा उदरस्थ वायु पर

नारियल के वक्कल के टुकडे करके सन्धिबंद शराव में रखकर लघु अग्नि पुट देना चाहिये। ध्यान रहे कि पूर्णतः राख न होकर केवल कोयले में रूपांतर होना चाहिये।

कोयला	२ रत्ती
अजवायन का चूर्ण	४ रत्ती
भुनी हींग	१ रत्ती

—सबको मिलाकर सेवन करना चाहिये।

गुण—उदरस्थ वायु, वातज गुल्म पीडा, अंत्र पीड़ा, तथा अन्त्रस्थ वायु का विशेष प्रकोप होकर मलोत्सारण में कष्ट, शूल तथा जी मिचलाना, घबराना, गसेस्ट्रबल कहते हैं इन रोगों को शीघ्र लाभ होता है।

अजवायन चूर्ण की जगह अजवायन सत्व १ रत्ती के प्रमाण से मिला सकते हैं, उपरोक्त पाठ में थोडा गोंद चूर्ण मिलाकर मशीन द्वारा टिकिया बनाली जांय तो अधिक लाभदायक सिद्ध होती हैं; कारण कोयला कारबन में आर्द्रता शोषण के गुण अधिक होते हैं, इसलिये टिकिया बनाकर बंद शीशियों में रखना चाहिये, जल इत्यादि मिलाकर कदापि गोलियां नहीं बनाना चाहिये।

नेत्ररोगों के लिये

बड़ी हरड़ को गुलाब जल के साथ चंदन के समान पत्थर पर घिसना चाहिये, पश्चात् लुगदी के

वजन से ८ गुना गुलाब जल लेकर इसे घोल देना चाहिये, लुगदी के ½ भाग कपूर को लुगदी में भलीभांति मिलाकर थोड़ी देर तक लुगदी के साथ भलीभांति घिसकर मिला लेना चाहिये, पश्चात् इसमें २॥ तोले गुलाबजल में १ रत्ती फिटकरी का फूला इस प्रमाण से मिलाकर बोतल में भरकर इस मिश्रण को २४ घण्टे के पश्चात् दुहेरी स्वच्छ वस्त्र मे छान लेना चाहिये, फिल्टर पेपर से छाना जाय तो उत्तम होगा, छान लेने के १५-२० दिन पश्चात् अगर गोंद नीचे बैठे तो फिर छान लेना चाहिये, २-४ बूंद नेत्र में डालना चाहिये।

गुण—आंखों की लाली, गोहों का बढ़ना, खुजली, गन्दगी अधिक आना शोथ आदि नेत्र विकारों में अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हुआ है, आर्जिराल जैसा कार्य करता है।

अतिसार-संग्रणी के लिये

कुर्चीघनसत्व जायफल
दालचीनी आम की गुठली की गिरी
—प्रत्येक २-२ रत्ती
सोंफ चूर्ण १ रत्ती
शर्करा ४ रत्ती

गोली बनाकर दिन में तीन बार लेना चाहिये, जल के साथ सेवन करें।

गुण—अतिसार, संग्रहणी में लाभप्रद है।

रक्त-चाप वृद्धि के लिये—

सर्पगंधा चूर्ण २ रत्ती
शु० शिलाजीत १ रत्ती
इलायची चूर्ण १ या ½ रत्ती

—इन सबको दूध के साथ सुबह-शाम लेना चाहिये।

गुण—रक्त चाप वृद्धि कम होती है। तथा निद्रा-नाश, उन्माद में भी लाभप्रद है, जिन रोगियों को मूत्र साफ न होता हो उनको हजरल यहूद की भस्म या पिष्टी १ रत्ती प्रमाण से इसके साथ देनी चाहिये।

० घन वीर्य वर्धक तथा नपुन्सकता नाशक—

पूर्ण चन्द्रोदय कपूर त्रिवंग भस्म
जायफल चूर्ण —प्रत्येक १-१ तोला
अभ्रक भस्म १००० पुटी ६ रत्ती
प्रवाल भस्म २ तोला
पीपल चूर्ण ६ माशे कस्तूरी ३ रत्ती

—इनको भलीभांति घोटकर रखें या २-२ रत्ती की गोली बना लेना चाहिये,

मात्रा—१ गोली सुबह १ गोली रात्रि को।

सूचना—प्रथम पूर्ण चन्द्रोदय कपूर को खरल में उत्तम घोट कर मिला लेना चाहिये।

गुण—उत्तम प्रकार वीर्य वर्धक तथा समस्त धातु की वृद्धि करके बल कान्ति व ओज-दायक है। शीतकाल मे विशेषकर सेवन योग्य है, मिश्री मिले दूध के साथ या मक्खन मिश्री के साथ सेवन कराना चाहिये अति स्त्रीसंग के कारण निर्बलता आना और उसी कारण नपुंसकत्व प्राप्त होना किसी लम्बी बीमारी के कारण शक्ति का ह्रास होना, युवावस्था प्राप्त होकर भी शरीर की पूर्णतः वृद्धि न होना, अल्प वीर्यत्व के कारण संतान न होना आदि में यशस्वी कार्य करता है। इसमे कपूर का प्रमाण चन्द्रोदय के बराबर होने से उत्तम प्रकार का वृष्य तथा कुछ अति उत्तेजक है, इसलिये नवयुवकों को विशेषतः अविवाहितों को इसका सेवन अधिक काल तक नहीं करना चाहिये, लाभ के बजाय हानि होने की सम्भावना है। उनको सेवन करना है तो कस्तूरी व कपूर दोनों को पाठ में से निकाल कर इसका प्रथक योग बना कर सेवन करना चाहिये। कोष्ठ शुद्धी करते रहना चाहिये यानी त्रिफला जैसा सौम्य रेचन लेकर उपयोग करना चाहिये। आठ दिन संतत सेवन करके ४-६ दिन बीच मे छोड़ कर पुनः सेवन करना चाहिये, इसमें किसी प्रकार के मादक तथा विषैले पदार्थ का मिश्रण नहीं है।

—लेखक—

श्री. पं० रामचन्द्र जी शर्मा साहित्यायुर्वेद शा०

कनवरीगंज रोड, अलीगढ़।

—+—

पिता का नाम— पं० सीताराम जी शर्मा
आयु—४२ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय–१-टान्सिल पर २—निद्रा कारक

'श्री. शास्त्री जी संस्कृत और आयुर्वेद के विद्वान व्यक्ति हैं। अलीगढ के प्रमुख वैद्यों मे आपकी गणना है। कई वर्ष से आप जिला वैद्य सभा के मंत्री भी हैं। हमारे बहुत आग्रह से आपने जो दो प्रयोग भेजने की कृपा की है आशा है उनसे पाठकों का उचित लाभ होगा।"
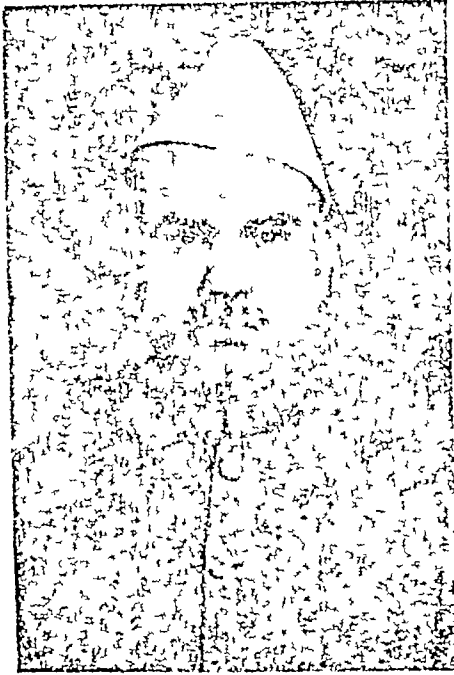
— सम्पादक।

टान्सिल बढ़ने पर

धुली हुई काली मिर्च का चूर्ण ३ माशे
रैक्टीफाइड स्प्रिट अभाव में देशी सुरा ५ तोले
—में मिलाकर कार्क बन्द कर एक अहोरात्रि (२४ घंटे) रख दें और दो तीन बार हिलादें। उसके बाद नितार कर रखलें बस पेन्ट तैयार होगया। यह एक अत्युत्तम परीक्षित योगी है।

निद्रा कारक-

आयुर्वेदीय रस शास्त्र में निद्रा लाने के जो योगों में प्रायः अहिफेन या अन्य मादक द्रव्य होने के कारण तथा मलावरोधी होने के कारण हममें से अनेक ब्रोमाइड प्रयोग में लाते हैं जिस प्रकार अफीम हृदयावसादक है उसी प्रकार यह पाश्चात्य औषधि भी है। ऐसी दशा मे एक विशुद्ध आयुर्वेदीय प्रयोग जो इन दुर्गुणों से रहित हो वांछनीय है। मैं निम्न योग इसमे प्रयोग करता हूं और उसमें कभी निराश होने का समय नहीं आया।

सर्पगंधा का सूक्ष्म चूर्ण २ तोला
ब्राह्मी का सूक्ष्म चूर्ण १ तोला
वच का सूक्ष्म चूर्ण ३ माशे
—रैक्टीफाइड स्प्रिट १० तोला में डाल, तीन दिन-रात रक्खें और बार २ हिलाते रहे। समयोपरांत छानकर मजबूत कार्क बन्द कर रखलें।

मात्रा—अधिक से अधिक २० बूंद हैं। यह औषधि किसी भी दशा में निद्रा लाने के लिये निर्भय प्रयोग की जा सकती है। सन्निपात, उन्माद, रक्त संभाराधिक्य मे अपूर्व प्रभाव दिखाती है। प्रलापक सन्निपात में मृतसंजीवनी सुरा मृगमदासव के उचित मिश्रण के साथ इसका प्रयोग वैद्य को यश मान से अलकृत करता है मेरी ऐसी मान्यता है कि प्रयोग पढ़ने के बाद सभी की समझ मे चाहे साधारण चाहे प्रतीत हों लेकिन इनका गुण असाधारण है।

श्रीयुत पं० सत्यनारायण जी मिश्र वै० शास्त्री

आयुर्वेदिक श्री दिगम्बर जैन पवित्र औषधालय बादशाही नाका कानपुर।

"श्री० मिश्र जी संस्कृत और आयुर्वेद के पूर्ण ज्ञाता हैं आपने बनारस क्विन्स कालेज से संस्कृत शास्त्री और विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा उतीर्ण की हैं। लगभग ५ वर्ष से, आप दिगम्बर जैन पवित्र औषधालय में प्रधान वैद्य के स्थान में कार्य कर रहे हैं और ३ वर्ष आयुर्वेद चिकित्सा प्रचारक संघ की युक्त प्रान्तीय शाखा के प्रधान मंत्री हैं। आशा है आप के प्रयोगों से पाठकों का उचित लाभ होगा।" —सम्पादक।

—लेखक—
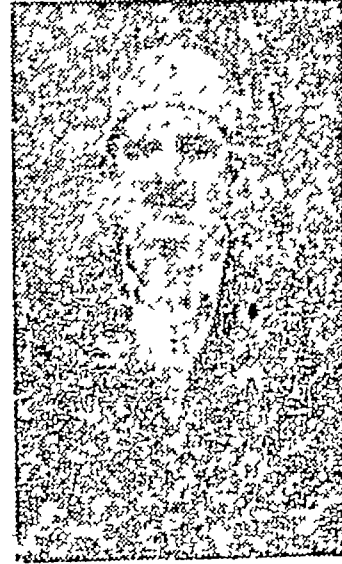
श्वास कास पर

—१॥ सेर बांसा (अडूसा) की जड़ खोद लावें और उसको अच्छी तरह पानी से धो डाले और फिर उसके छोटे १-१ अंगुल के टुकड़े करले। इसके बाद मिट्टी या पत्थर के किसी चौड़े पात्र में या लकड़ी के पात्र (कठौता) में उनको रख कर और एक पाव बकरी का दूध डालदे और धूप मे रख दें। दिन भर धूप में रखने से दूध सूख जायगा। बीच में एक दो बार लकड़ी से चला दें। इस प्रकार रोजाना ४० दिन तक नियम से पात्र भर बकरी का दूध डाल कर धूप में रख दिया करें। तात्पर्य यह कि प्रति-दिन ४० दिन तक पाव भर बकरी का दूध डाल कर सुखावें। (यदि गरमी होगी तो १ दिन मे ही दूध सूख जायगा, किन्तु जाड़े में २ दिन भी लग सकते हैं। इस हिसाब से ४० दिन से ज्यादा भी समय लग सकते हैं।)

—तत्पश्चात् एक चौड़ी हांडी में (हांडी इतनी बड़ी हो जिसमें दवा आजावे) उसे डाल देवे, हां हांडी में दवा डालने से पहिले उस हांडी मे एक छोटा सा मटर के बराबर मोटा गोल छेद कर देना चाहिये। बाद मे दवा भर कर ऊपर से एक बराबर फिट बैठने वाला ढक्कन मिट्टी का रख कर कपरौटी करदे सिर्फ ऊपर ही गले तक करना चाहिये। इसके बाद एक जमीन में १। हाथ लम्बा इतना ही चौड़ा और इतना ही गहरा गड्ढा (गर्त) खोदे (जमीन गीली न हो) और इस गढ़हे के बीच में एक छोटा सा गढ़हा करीब ६ अंगुल का जौड़ा तथा इतना ही लम्बा और ४ अंगुल गहरा खोदे इस छोटे बीच वाले

गढ़े में एक आलमोनियम या कांसे की कटोरी रखदें जो कि गढ़हे में बिल्कुल फिट आती हो। इस कटोरी की ऊंचाई गढ़े के ऊपर न होनी चाहिये, बाद में हांडी उस गढ़े मे इस तरह से रखें जिससे हांडी का छेद नीचे की कटोरी के बीचों-बीच में हो, बाद मे अगल-बगल चारों ओर खूब कंडे (अगर बिनवा हों तो ज्यादा अच्छा) भरदे और ऊपर भी कण्डे रखदें, बाद मे आग लगादें। अगर कण्डे तेजी से जलने लगें तो पानी का हल्का छींटा मारदे ऊपर से कोई चीज ढकदें ताकि आग धीरे २ सुलगे। जब सब आग अपने आप ठंडी पड़ जाय (स्वांग शीतल हो जाय) तब धीरे से पहिले सब राख निकाले और राख निकालने के बाद सहारे से हांडी अलग करें, आप देखेंगे कि उस नीचे की कटोरी में घृत जैसा पदार्थ होगा जो कि दूध का घी बन कर अडूसे के तत्व को खींच कर कटोरी में टपक जाता है। इसे आप यदि उसमें राख न मिली हो (असावधानी से कभी राख मिल जाती है तो उसे कपड़े से छान लेना चाहिये) शीशी में भर कर रखलें।

गुण—समस्त प्रकार के श्वास, कास, उर:क्षत, मुंह से खूनका आना, हिचकी तथा बच्चों की कुकर-खांसी आदि में पूरी मात्रा में एक सींक सुबह और एक सींक शाम को बंगला पान में दें; अद्भुत लाभ होता है। छोटे बच्चों को आधी सींक बङ्गलापान के रस में या मां के दूध में दें, जादू की तरह पहले ही दिन एक ही दो सींक में लाभ मालूम हो जायगा। अति वृद्ध श्वास भी ८ दिन के सेवन से बिल्कुल नष्ट हो जावेगा। बच्चों के पसली चलने पर भी तुरन्त लाभ होगा। राजयक्ष्मा मे लाभदायक है। सिर दर्द होता हो और इसका नस्य दिया जाय तब भी लाभ होता है।

कफ वाली खांसी तथा सब तरह की श्वास पर तो चमत्कार ही दिखाना है। दमा-श्वास तो एक दिन मे ही ऐसे बन्द हो जाता है जैसे कि डाक्टरी दवा—एफेड्रीन से बन्द होता है।

रक्त प्रदर पर—

—एक बढ़िया लौकी लाकर पानी से धो डाले और फिर जब सूख जाय तब एक साफ चाकू लेकर उसको बीच से चीर कर कई हिस्से करले और उसके छोटे २ टुकड़े करलें (टुकड़े करते समय उसका गूदा, छिलका या बीज कुछ न निकालें) फिर उन टुकड़ों को धूप मे सुखालें। जब दो-चार रोज में खूब सूख जावे तब खूब महीन पीसले और बराबर मिश्री मिलाकर किसी घी के बर्तन में रखले। प्रतिदिन सुबह-शाम २-२ तोला बकरी के २० तोला दूध से या कच्चे चावलों के धोवन से (धोवन जल करीब १० तोले हो) लें। कैसा ही भयानक रक्तप्रदर हो कुछ दिन में कम होजावेगा और निरन्तर ८ दिन लेने से ठीक हो जावेगा और कुछ दिन अधिक लेने से समूल नष्ट हो जावेगा।

श्वेत प्रदर पर—

—पहिले १० तोले पानी में ६ माशा ईसबगोल की भूसी घोल दे फिर जब वह घुल जाय तब

शुद्ध शिलाजीत (बढ़िया हो)	२ रत्ती
मिश्री	३ माशे

—उसी भुसी वाले जल मे घोलकर पीले, इसी तरह सुबह शाम एक हफ्ते लेने से श्वेत प्रदर पर बहुत लाभ होता है।

आयु० पंचानन पं० भवानीशङ्कर जी शर्मा
अनाथोपकारक आयुर्वेदीय औषधालय नीमच

पिता का नाम— पं० रामविलास जी गौड़

आयु—७८ वर्ष जाति—गौड़ ब्राह्मण

प्रयोग विषय- १-ज्वर नाशक २-शोथ नाशक

—लेखक—

"श्री पं० जी एक वयोवृद्ध और अनुभवी चिकित्सक हैं। नि० भारतवर्षीय प्रथम वैद्य सम्मेलन के अवसर पर आपको आयुर्वेद पंचानन की उपाधि भेंट की गई थी। आपके चिकित्सालय में नित्य-प्रति बहुत से रोगी आकर बिना मूल्य औषधि प्राप्त करते हैं। आप ज्योतिष-शास्त्र के भी उद्भट विद्वान हैं। "चण्डू पंचाङ्ग" जो निर्णय सागर प्रेस से प्रकाशित होता है आपके द्वारा ही सम्पादित होता है आपने प्रयोग भी अपनी प्रतिष्ठा के अनुकूल ही भेजने का कष्ट किया है। आशा है आपके सुदीर्घ अनुभव से पाठकों का उचित लाभ होगा।" —सम्पादक।

ज्वरारिष्ट—

नीम गिलोय नीम की छाल
दोनों ४-४ तोला
मोथा शाहतरा कुटकी धनिया
रक्त चन्दन करंज की गिरी अतीस
प्रत्येक २-२ तोला
मुनक्का ८ तोला जल ३२० तोला

—सबको कूट-पीस कर मिला लें और क्वाथ करें जब ८० तोला शेष रहे तब हाडी में डाल कर गुड ८० तोला, शहद ४० तोला, धाय के पुष्प ८ तोला फिटकरी भुनी ६ माशे, गेरू ६ माशे यह सब डाल करके ढक्कन लगा कर कपड़ मिट्टी करदें और धूप मे रख छोड़ें, जब अरिष्ट-विधि से अरिष्ट तैयार होजाय तब दूसरे पात्र में छान लें बोतल पूरी न भरें कुछ खाली रखे। उसमे मजबूत डाट लगावे, साधारण डाट गैस से निकल जायगी।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा तरुण को १ तोला, छोटे को आधा तोला, बच्चों को पाव तोला दिन में ३ बार दें।

गुण—मलेरिया, इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि समस्त विषमज्वर नष्ट होते हैं।

शोथ विनाशक -

सांठ की जड़ सौंठ पीपल
पीपला मूल चित्रक हरड़ की छाल
दारु हल्दी भारङ्गी गिलोय
दोनों निशोथ सनाय कुटकी
रेवत चीनी मकोय

—समान भाग ले। कूट कर चूर्ण बनाले।

मात्रा—३ माशे प्रात. सायं। अनुपान—गौमूत्र।

गुण—समस्त शोथ रोग नष्ट होते हैं।

पथ्यापथ्य—तैल, खटाई गुड, मिरच, नमक न खावें।

—लेखक -

वैद्य भूषण प० खेमराज जी शर्मा छांगाणी

श्री. गोवर्धन आयुर्वेदिक औषधालय,

चांदा सी. पी.

—x—

पिता का नाम— श्री. पं० रामलाल जी शर्मा छांगाणी

आयु- २४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय- १ वाजीकरण २-कास श्वास

"श्री छांगाणी जी भारत प्रसिद्ध श्री. पं० गोवर्द्धन जी शर्मा छांगाणी नागपुर निवासी के भ्रात्रज हैं। आपने उनकी सेवा में रहकर ही आयुर्वेद विशारद और वैद्य विशारद की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं और अनुभव प्राप्त किया है। आपके प्रयोगों की हमने परीक्षा नहीं की किन्तु हमारा विश्वास है कि ये अवश्य ही उचित लाभ प्रद सिद्ध होंगे। आशा है पाठक व्यवहार करके लाभ प्राप्त करेंगे।"

—सम्पादक।

–पलाण्डू पाक–
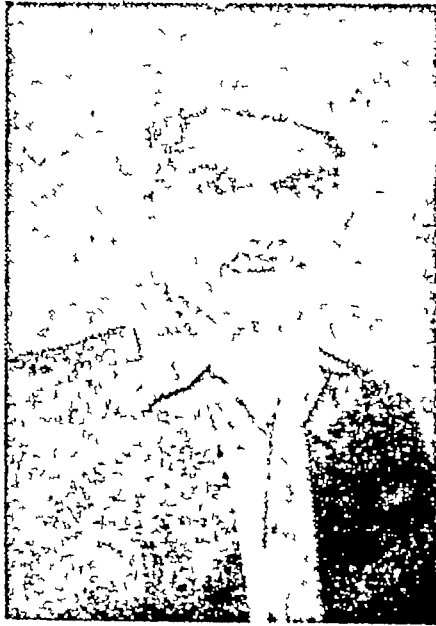
महा वाजीकरण एवं शक्तिवर्द्धक—

—४० अच्छे छोटे २ प्याज लेकर उन्हे भली भांति साफ करके उनमे एक या दो चीरे चाकू से लगादे। पश्चात् उन्हे एक वड़े अमृतवान मे भर कर उसमें छोटी मक्खी का मधु इतना भरे, कि मधु से सारे प्याज ढंक जांय और ऊपर भी वहुत कुछ जमा होजाय, अब इस में ६ माशे केशर असली एव १ तोला इलायची छोटी के चूर्ण को डालकर उसका मुख व द करके कपड़-मिट्टी करदे, एवं ऐसे स्वच्छ स्थान में गाढ़ दे, जहां सूर्य की किरणें गिरती रहें, ४० दिन पूरे हो जाने के पश्चात् उसे निकाल कर हिलाले।

सेवन-विधि—नित्यप्रति एक प्याज प्रातःकाल खाकर ऊपर से गर्म दूध एक पाव पीवें।

गुण—इनसे शरीर मे वल, उत्साह एवं कांति की वृद्धि होकर वाजीकरण शक्ति में भी लाभ होता है। यह प्रयोग साधारण होने पर भी बहुत लाभकारक है। पाठक गण प्याज के गुण-धर्म से समझ सकते हैं कि यह विशेष कामोत्तेजक तथा बलवर्धक है।

भयंकर खांसी एव श्वास पर-

—छोटे कांटोले (कटहल) जो जंगल में पैदा होते हैं। जिसकी सब्जी को भी लोग खाते हैं। इनकी जड़ को लाकर साफ करले, एवं छोटे २ टुकड़े वनाकर एक हांडी में भरकर मुंह को कपड़-मिट्टी कर वन्द करदे। पश्चात १० सेर उपलों की आंच देकर भस्म वनालें। इस भस्म को २ से ३ रत्ती तक शहद और अदरख रस में देने से भयंकर खांसी और श्वास मे तत्काल लाभ प्रतीत होता है।

—लेखक—

लाला नन्दकिशोर प्रसाद जी राजवैद्य

चूनाखारी मुहल्ला, बाढ़ (पटना)

पिता का नाम श्री० मणिधरप्रसाद जी

आयु ४५ वर्ष जाति—कायस्थ

प्रयोग विषय-

१—विषमज्वर [यकृत सीहा युक्त]

२—भयङ्कर विषमज्वर [यकृत सीहायुक्त]

"श्री लाला नन्दकिशोर प्रसाद जी अपने क्षेत्र के एक प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध वैद्य हैं। राष्ट्रीय संग्राम में आप वीरता-पूर्वक भाग लेते रहे हैं। राष्ट्र सेवा के कार्य मे निरन्तर व्यस्त रहते हुये भी आपने अपने परीक्षित प्रयोग भेजने की कृपा की है, उसके लिये हम कृतज्ञ हैं। आशा है, वैद्य वन्धु सन्मानीय वैद्य जी के प्रयोगों से लाभ उठावेंगे और हमें अपने अनुभवों से सूचित करेंगे।" —सम्पादक।

विषमज्वर तथा यकृत सीहा पर अनुभूत-

करंज (कठकरंजा) मिंगी, पीपल, जवाखार

—यह तीनों समभाग लेकर चूर्ण वना कपड़-छन कर शीशी में रखलें। ६-६ माशे प्रात:सायकाल उष्ण जल द्वारा कुछ दिन सेवन करने से रोगी विषम ज्वर, यकृत, सीहा आदि से मुक्त होजाता है और धीरे २ आरोग्यता प्राप्त करता है। यह प्रयोग शतप्रतिशत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

पथ्य—अरहर की दाल; रोटी, पुराने चावल का भात, एवं उष्ण जल का प्रयोग बराबर रहे।

भयङ्कर विषमज्वर यकृत सीहा पर अनुभूत-

घृत कुमारी	६ माशे
हल्दी शोधित कपड़ छान	२ माशा
संख भस्म	१ माशा

—तीनों को कांच की प्याली में मिला कर प्रात: सायंकाल चटा दे।

पथ्य—अरहर की दाल का पानी विशेष रूप से पिलावें, भोजन चना, जौकुट की कच्ची रोटी, पुराने चावल का भात, परवर की तरकारी तथा मोल उष्ण जल का (अर्धावशिष्ट) प्रयोग बराबर रहे। यह हमारे २० वर्ष के अनुभूत प्रयोग हैं।

श्रीयुत पं० घूरा जी मिश्र वैद्य भूषण
राघोपुर पो० विहटा [पटना]

"श्री पं० जी वयोवृद्ध एव अनुभवी चिकित्सक हैं आपने वनौषधियों के विषय में वहुत अध्ययन किया और ज्ञान प्राप्त किया है। विहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन से आपने इस विषय पर प्रशसापत्र भी प्राप्त किया है। आशा है आपके सुदीर्घ अनुभव से पाठकों को भी उचित लाभ होगा।"

—सम्पादक।

सन्तान दाता प्रयोग-

शिवलिङ्गी के बीज	२१ दाने
परकरा कथ	६ माशा
गेरू	३ माशे
गाभ	६ माशे

विधि—जिस स्त्री के कोई सन्तान न हो उसे ऋतोपरांत स्नान के बाद उपरोक्त औषधियों को काली गाय के आध सेर दूध मे पीसें और उसमें १ तोला शहद मिला कर पिलावे। यह दवा स्नान कर भगवान का स्मरण करते हुये पूर्व दिशा की ओर बैठकर, २१ दिन सेवन करना चाहिये। परीक्षित है।

पिता का नाम
श्री० पं० काली जी मिश्र वैद्य।
उम्र—८२ वर्ष जाति—ब्राह्मण

—लेखक—

योषापस्मार [हिस्टेरिया] की अद्भुत दवा-

अर्जुन वृक्ष की छाल का रस, काले तिल, तीसी का लोआब, चौलाई की जड़ — चारों २-२ तोला

मिश्री २॥ तोला

विधि—इन दवाओं को अर्जुन के स्वरस मे मिला कर प्रतिदिन सेवन करने से हिस्टेरिया के दौडे शीघ्र दूर होते हैं। इस रोग में यह दवा अमृत तुल्य है।

नोट—६ माशे दवा की १ मात्रा बनानी चाहिये।

—लेखक—

श्री. कल्याणसिंह जी वैद्य विशारद

रणजीत औषधालय, सरीला स्टेट।

पिता का नाम—	श्री. वासुदेव जी वैद्य
आयु—२७ वर्ष	जाति—क्षत्री चन्द्रवंशी

प्रयोग विषय – १-बालातिसार २-नेत्र पीड़ा ३-मंजन ४-कब्ज

"श्री. वैद्य जी सरीला स्टेट के राजवैद्य हैं और हिन्दी साहित्य सम्मेलन की वैद्य विशारद परीक्षा उत्तीर्ण हैं। आपके वंश में कई पीढ़ियों से चिकित्सा-कार्य होता आरहा है। आपके प्रयोगों को बना कर हमने अपने रोगियों पर व्यवहार किया है और इसीलिये हम कह सकते हैं कि प्रयोग वास्तव में उत्तम हैं। आशा है पाठक भी लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

बच्चों के दस्तों पर—

छुहारा	१ नग
जायफल	६ माशे
केशर	१॥ माशे
अफीम	१॥ माशे

विधि—छुहारे की गुठली [illegible] कर उसमें उपर्युक्त [illegible] भर दे और बन्द [illegible] की ५-६ तह देकर [illegible] सानकर बीच में [illegible] बना कर सुखाले [illegible] लगाकर बीच में [illegible] निकाल कर उसे [illegible] के छुहारे के [illegible] बनाने लायक हो [illegible] बनावे।

[illegible] साथ एक गोली

भाग नं० ६
वार्ड नं० २
मतदाता संख्या
नाम मतदाता
पिता/पति का नाम

गुण—बच्चों को दस्त होना, उल्टी होना, दांत निकलना, खांसी, श्वास, बुखार, पसली चलना, नींद न आना, अधिक रोना और दुर्बलतादि सभी बच्चों के रोग ठीक होते हैं, हमारी हजारों बच्चों पर परीक्षित है।

आई हुई आंख पर

नर-घोड़े की लीद (विष्ठा) की तोला भर की एक गोली सी लेकर उसे तोले भर गाय के घी में भून कर साफ कपड़े की तह के बीच में रखकर कपड़े की दूसरी तह लगावे और रात को सोते समय गरम २ आई हुई आंख पर बांध दें और सोजावें। सुबह आंख अभी से ज्यादा ठीक मालूम होगी, इसी तरह दूसरी रात को करने से आंख बिलकुल ठीक हो जायेगी और नींद सुख से आयेगी। दर्द तो बिलकुल ही बन्द हो जाता है। लालामी, आंसू का आना, जाला पड़ना इत्यादि रोग ठीक हो जाते हैं। यह कई रोगियों पर परीक्षित है।

कल्याणकारी चूर्ण-

सोंठ	२ तोला
सुहागा भुना हुआ	१ तोला
काली मिर्च	२ तोला
इर्र छोटी	२ तोला
जवाखार	२ तोला
असगन्ध नागौरी	२ तोला
नौसादर खपरिया	१ तोला
सोंचर नमक	१ तोला
निसोथ भुनी	१ तोला
सौंफ	१ तोला
अमरबेल	२ तोला
जीरा सफेद	२ तोला
अमलतास का गूदा	१ तोला
लौंग	१ तोला
इलायची छोटी	१ तोला

निर्माण विधि—सब दवाओं को एकत्र करके कूट कपड़छान करलें और नीबू के रस में सब चूर्ण को मिश्रित करके ६ घण्टा लगातार घोटे बस चूर्ण तैयार है।

अनुपान—खुराक तीन माशे दो घूंट पानी के साथ लेना चाहिये।

गुण—आनाह, अफरा, अरुचि, मंदाग्नि, पेट का शूल, लोहोदर, कठोदर आदि में बहुत लाभकारी है, भूख तो इतनी तेज लगती है कि पहले भोजन से मनुष्य ड्योढ़ा-दूना भोजन करने लगता है। दस्त साफ आता है अजीर्ण को दूर करता है, अजीर्ण ज्वर मलज्वर दूर करता है। परीक्षित है।

कल्याणकारी मंजन-

रूमी मस्तंगी	सेंधा नमक
दालचीनी	सौंठ
कालीमिर्च	पपरिया कत्था
मौथा भुना हुआ	माजूफल
जीरा सफेद भुना	धनिया भुना
फिटकरी भुनी फूला करके	इलायची छोटी
अकरकरा	कपूर

उपरोक्त चीजे १-१ तोला।

केशर उत्तम	६ माशे
मिट्टी खडिया	६ तोला

निर्माण विधि—सब दवाओं को एकत्र कर कूटकर कपड़-छन करले और फिर खरल मे डालकर दो घण्टे घोटें।

गुण—इससे दांतों के सभी रोग दूर होते हैं। दांतो का हिलना, दातों से खून निकलना दूर होता है। दातों से मवाद (पीप) आना, टीस मारना, कीड़ा लगना, मसूड़े मे पुन्सी वगैरह का होना आदि ठीक होता है। दांत साफ मोती की तरह चमकने लगते हैं इसका लगातार सेवन करने से पायरिया समूल नष्ट होजाता है। परीक्षित है।
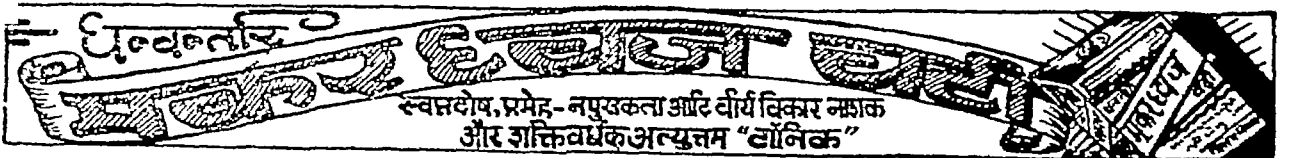
डा० रामविलास जी चौरासिया आयुर्वेदाचार्य आयु० शिरोमणि

गवर्नमेंट आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी, माहुवा (नागपुर)

पिता का नाम—स्व० पन्नमलाल जी चौरासिया

जाति—वैश्य आयु—लगभग ३० वर्ष

प्रयोग— १ मलेरिया २ नारी व्रण

—लेखक—

"श्री०चौरासिया जी अपने बाल्यकाल से ही आयुर्वेद के एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहे हैं। आपकी सम्पूर्ण शिक्षा आर्य-संस्कृति के अनुसार परिचालित गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन में हुई है। आपको स्नातक-परीक्षा में स्वर्ण-पदक प्राप्त हुआ था, जयपुर से आपने आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की है। संस्कृत, हिन्दी, मराठी, इंगलिश में आप प्रायः लिखते रहे हैं। सन् १६४० से आप सी० पी० सरकार के आयुर्वेदीय अस्पतालों मे उच्च पद पर कार्य कर रहे हैं। आप जैसे योग्य सज्जन के प्रयोग प्रकाशित करते हुये हमें प्रसन्नता है, आशा है पाठक भी पूर्ण लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।
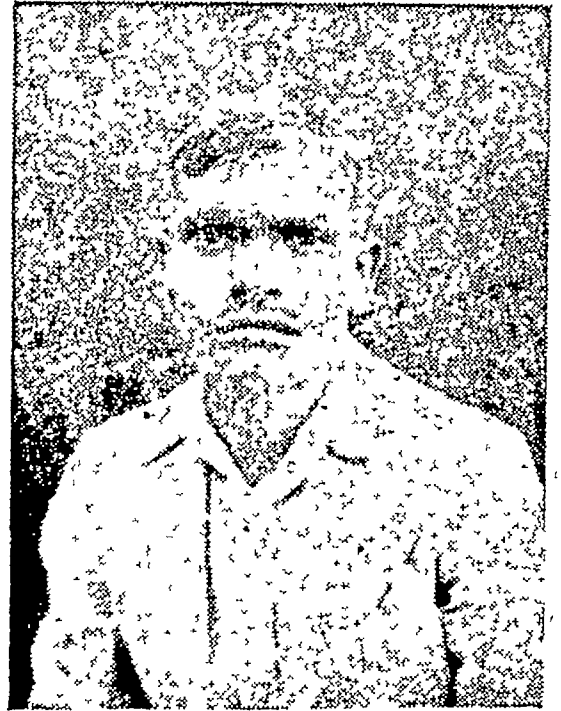
शीतज्वरारि वटी-

तुलसी के पत्ते	काली मिर्च	२-२ तोला
करेले के पत्ते ४ तोला	कुटकी	८ तोला

निर्माण-विधि—सबको कूट कपड़ छान करके तुलसी के पत्ते या करेले के पत्ते के रस किंवा कषाय में घोटकर मटर के बराबर गोली बनाले।

मात्रा—२-२ गोली दिन मे ३ बार लें।

गुण-धर्म—सब तरह के शीतज्वर, तृतीयक, चातुर्थिकादि, सादे ज्वर, प्लीहा यकृतज्वर जीर्णज्वर आदि आराम होंगे, गर्भिणी को निरापद है।

नोट—हमारी डिस्पेसरी में इसका व्यवहार होता रहता है, और किनीन का शार्टेज हमको कभी नहीं मालूम हुआ, सस्ती किन्तु उत्तम लाभकारी औषधि है।

नाड़ी व्रण पर – (नृशिरोस्थि भस्म)

मात्रा—इस भस्म को १-१ माशा की मात्रा में घी के साथ प्रातःसायं चाटना चाहिये और इसी प्रकार व्रण पर उचित मात्रा में लगाना भी चाहिये।

गुण-धर्म—नाडी व्रण अर्थात् नासूर की रामबाण महौषधि है।

पथ्य—तैल, अम्ल, लवण पदार्थ छोड़कर सब पथ्य हैं। ध्यान रहे यदि लवण आदि का पथ्य न रखेंगे तो लाभ होने की आशा कम ही है। मैंने स्वयं देखा है कि जिन्होंने उपर्युक्त पथ्य किया है उन्हें लाभ हुआ है और पथ्य न करने वालों को कुछ भी लाभ नहीं हुआ, अत. सावधान होकर पथ्य करें तब इस योग का चमत्कार देखें, ईश्वर अवश्य फायदा करेगा।

श्री० प० योगेश्वरप्रसाद जी शर्मा घिल्डयाल

श्री. राष्ट्रीय औषधालय, कोटाबाग [नैनीताल]

पिता का नाम–श्री. श्यामलाल जी शर्मा
आयु ३६ वर्ष जाति ब्राह्मण
प्रयोग विषय–उपदंशादि रोगनाशक

—लेखक—

आज नवीन विशेषाक की सूचना मुझे धन्वन्तरि सम्पादक जी ने दी, जिसके फल स्वरूप में १६ साल का अनुभूत प्रयोग ग्राहकों की भेट कर रहा हूं मुझे विश्वास है कि उद्योगी वन्धु चिकित्सा संग्राम में इसकी सत्यता प्रकट करेंगे।

रक्तोडिन

शुद्ध कुचिला	टेसू (ढाक) के फूल
ढाक के बीज	प्रत्येक १–१ तोला
पुराना गुड	१ पाव

विधि—पहिले कुचिला को पत्थरों से कूटे ताकि उसके तैल का अंश निकल जाय बाद को चारों दवाईयों का लोहे के हमाम-दस्ते में एक लाख चोट गिनके मारें। बाद को कुल दवा की १५ गोली बनालो। १ गोली बीमार के सिरहाने इष्टदेव के नाम से रखदे और १४ गोली सेवन की जाय।

सेवन विधि–१ गोली थोड़ा-थोडा निगल ले या चबाले बाद को गौ-दुग्ध चीनी युक्त पिलादे।

पथ्य—सिर्फ गौ-दुग्ध की खीर-चावल डाल कर दे, यह दवा रोगीको १-२ घण्टे में कुछ नशा करेगी घबराने की कोई बात नहीं। रोज १-२ काला सफेद दस्त निकलेगा रोगी का चेहरा घण्टे २ में सफेद लाल काला दिखाई देगा। इस क्रम से रोज १-१ गोली खिलावें, घबराने की कोई जरूरत नहीं है।

'श्री० योगेश्वर प्रसाद जी ने यह प्रयोग अपनी एक पेटन्ट औषधि का दिया है। आप का दावा है कि प्रयोग आशुफलदाता तथा परीक्षित है। वैद्य-बन्धुओं से इसकी परीक्षा प्रार्थनीय है।" —सम्पादक।

गुण—पुराने से पुराना उपदंश कुष्ठरोग, गठिया, क्षय, वात रोग में अमृत है। वैद्य-बन्धु बाजी लगा कर इस योग को तैयार करे। सिर्फ पैत्रिक कुष्ठी को छोड़ कर कमजोर क्षय वाले को यह योग न देना चाहिये, क्योंकि कमजोर के बस का योग नहीं है, शेष सभी त्याज्य व्याधिया नष्ट होती हैं।

नोट—सन् २८ में मंसूरी के प्रसिद्ध डाक्टर मैनी वोर्चर का कहना था कि जहां हमारे खून साफ के पांच इन्जेक्शन काम नहीं करते वहां वी. पी. विल्डियाल की १ गोली कमाल कर जाती है।

आयुर्वेदाचार्य रामनगीना सिंह A.M.S

मु० देवल पो० फरौंध जिला गाजीपुर।

पिता का नाम— ठा० सुखदेव सिंह जी

आयु—३१ वर्ष जाति—ठाकुर

प्रयोग विषय-१-मलेरिया २ मोतीझला (Typhoid)

'श्री वैद्य जी ने सं १६४१ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ए. एम. एस. की परीक्षा पास की है। श्री. दर्शानन्द आयुर्वेदिक कालेज मे १ वर्ष तक अध्यापन का कार्य किया है। २ वर्ष तक कौपरेटिव आयुर्वेदिक औषधालय आनन्दनगर के इञ्चार्ज पद पर आसीन रहने के पश्चात् २ वर्ष तक पब्लिक हैल्थ डिपार्टमेन्ट यू. पी. में एपीडेमिक असिस्टेन्ट रहे हैं। वर्तमान मे पुन: कौपरेटिव औषधालय आनन्द-नगर के इंचार्ज स्थान पर काम कर रहे हैं। आपका मोतीझला ज्वर पर विशेष अनुभव है, कारण कि तराई प्रदेश होने से वहां इस ज्वर के रोगियों की अधिकता रहती है। आशा है पाठक आपके परीक्षित प्रयोगों से लाभ उठावेगे।" —सम्पादक।

यहां तराई होने से विशेषत: मलेरिया का प्रकोप रहता है और इसी भांति मोतीझला भी होता है। अत: यहां औषधालय मे जिस प्रयोग से हजारों व्यक्तियों को प्रतिवर्ष लाभ होता है, उसे 'धन्वन्तरि' की सेवा में भेज रहा हू।

मलेरिया पर-

गोदन्ती हरताल भस्म	४ रत्ती
महाज्वरांकुश	२ रत्ती
कुनीन सलफ	१ रत्ती

—यह एक मात्रा है, इस प्रकार की चार मात्रा प्रति दिन ६-६ घण्टे पर द्रोणपुष्पी स्वरस १० बूंद तथा शहद ६ माशा मिलाकर देने से हर प्रकार का नया पुराना अन्तरिया, तिजारी, चौथैया किसी भी प्रकार का ज्वर हो केवल १२ खुराक में शर्तिया अच्छा हो जाता है।

विशेष वचन—

इसमें गोदन्ती को छोटे २ टुकड़े करके द्रोण-पुष्पी स्वरस में ३ घंटे तक दौलायन्त्र से पाक करने के पश्चात् भस्म बनानी चाहिये।

मोतीझला-

मुक्ता पिष्टी	½ रत्ती
अभ्रकभस्म (५०० पुटी)	१ रत्ती
वृ० कस्तूरीभैरव रस	१ रत्ती
वृ० शृंगाराभ्रक रस	१ रत्ती

विधि—इस प्रकार की १-१ मात्रा दोपहर और रात्रि को सोते समय मधु से चटावे तथा निम्न-औषधि प्रात:सायं को दे।

(शेषांश पृष्ठ ६७६ पर)
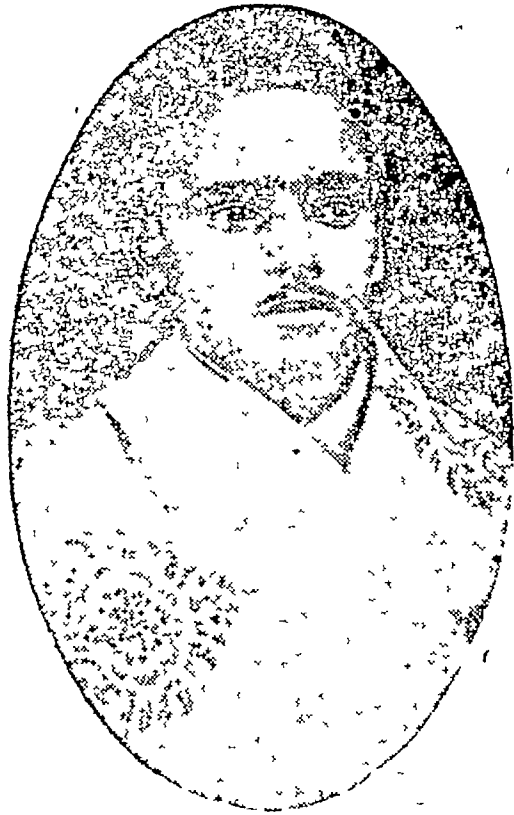
वैद्यराज पं० रामकृष्ण शर्मा आयुर्वेदाचार्य

श्रीराम आयुर्वेद भवन, भरथना [इटावा]

पिता का नाम— श्री० पं० लालचन्द्र जी शर्मा

आयु—३१ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय १-मन्दाग्नि २-व्रण

"श्री० वैद्यराज जी ने राजपूताना के प्रसिद्ध वैद्य शिरोमणि श्री० मणिराम जी शर्मा भिषगाचार्य टीकाकार रसेन्द्र चिन्तामणि प्रिन्सीपल हनुमान आयुर्वेद विद्यालय रतनगढ़ (बीकानेर) से आयुर्वेदाध्ययन कर आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा पास की है। आपको अपने प्रयोगों के सफलीभूत होने का पूर्ण विश्वास है। आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

मन्दाग्नि व अजीर्ण पर-

लौंग सोंठ कालीमिर्च
पीपल छोटी इलायची बड़ी
टाट्री (निम्बू सत) सोना गेरू
—ये सात चीजें २॥-२॥ तोले
काला नमक ७॥ तोले नवसादर १॥ तो०

निर्माण विधि—गेरू, नवसादर, नमक, टाट्री इनके अलावा बाकी सब चीजें कूटकर कपड़छन करले। गेरू आदि चीजों को अलग-अलग महीन पीसलें और सबको मिलाकर शीशी में रखले।

सेवन विधि—खाना खाने के आध घण्टे बाद पानी गरम या ताजे से अथवा किसी पाचक आसव से सुबह-शाम ३ माशा खाये। वैसे मुंह के जायके के लिये किसी भी समय इस्तेमाल कर सकते हैं।

गुण—चाहे जैसा अजीर्ण हो, जी मिचलता हो, कै आने को होरही हों, खट्टी २ डकारें आती हों १ खुराक लेने से फौरन लाभ होता है कुछ दिन सेवन करने से चाहे जैसी मन्दाग्नि हो फौरन ठीक होती है।

पेट में अफरा हो, दर्द हो गुल्म का दर्द हो या पेट में हवा रुकी हो १ खुराक गर्म पानी के साथ लेने से फौरन विकार शान्त होकर वायु अनुलोम हो जाती है। इससे पेशाब भी खुलकर होता है।

नोट—यह प्रयोग गुरू प्रसाद है तथा मैंने भी इसका काफी अनुभव किया है, बहुत ही चमत्कारिक प्रयोग है।

फोड़ा फुन्सी या व्रण पर—

सिंदूर ५ तोला तिल तैल १० तोले

—इन दोनों चीजों को किसी कलई के या लोहे के बर्तन में डालकर चुल्हे पर मन्द २ अग्नि देकर पकावे। कुछ गाढा होने पर उतारले, ठण्डा होने पर और भी गाढ़ा होजायगा, लाल रङ्ग की मरहम तैयार होगी। इसको सुरक्षित रखले।

प्रयोग विधि—फोड़ा-फुन्सी के ऊपर कपड़े के टुकड़े पर लगाकर चिपकादें। अच्छा लाभ होगा। यदि घाव कुछ गहरा हो तो नीम के उबले पानी से साफ करके कपड़ा मरहम में भिगोगकर घाव के अन्दर या ऊपर रखदे और पट्टी बांध दे। गन्दे हाथ नहीं लगने पायें। घाव जल्दी अच्छा होगा।

यदि फैलने वाली फुडियां हों तो मरहम तैयार होने पर ठण्डीकर उसमें ५ तोला शुद्ध गन्धक मिला दें, आशातीत लाभ होगा।

यह उस घाव पर भी लाभ करता है जिसके किनारे बढ़ने लगे हों और बीच में से घाव वैसा ही पड़ा हो।

[पृष्ठ ६७७ का शेषांश]

दालचीनी	अजवायन
जायफल	जावित्री
सोंठ	पीपर

—सबको समभाग लेकर कूटकपड़-छान करलें, फिर ३ माशा दवा को सिल पर पानी से चटनी बना लेवें, पश्चात् एक मिट्टी या पत्थर के बर्तन में १ छटांक पानी लेकर उसी में इस चटनी को डालकर गरम करके सवेरे और इसी भांति शाम को पिलावें।

इस औषधि के देने से सफेद २ दाने वक्ष-प्रदेश पर शीघ्र निकल आते हैं। धीरे २ ये दाने नीचे की तरफ बढते जाते हैं। जब ये दाने नाभि प्रदेश से नीचे आजावे तब रोगी को संकट-मुक्त समझना चाहिये

पथ्य—रोगी को पीने के लिये १ सेर पानी में ११ फूल लवंग डालकर पकावे, आधा रहने पर उतार कर रख लें। इसी जल को जब २ रोगी पानी मागे थोड़ी २ मात्रा में पिलाते रहे। इसके अतरिक्त अनार तथा मुसम्बी का रस जरा गरम करके दे। अन्न वर्ज्य है।

श्री. पं. छाजूराम जी शर्मा वैद्यराज

दुर्गा शक्ति औषधालय, बगसरा (बुलन्दशहर)

पिता का नाम— झम्मनलाल जी शर्मा

जाति–ब्राह्मण आयु— २७ वर्ष

प्रयोग– १–प्रसुति रोग नाशक

२— नपुंसकता ३—कास–श्वास

"श्री. वैद्यराज जी अपने क्षेत्र के एक प्रसिद्ध वैद्य हैं। आप अपने विद्यार्थी जीवन में सदैव उत्तम श्रेणियों में उत्तीर्ण होने का गौरव प्राप्त करते रहे हैं तथा पुरुष्कृत होते रहे हैं। वैद्यक का कार्य आपके यहां अनेक पीढ़ियों से होता आया है। वैद्य जी ने जो प्रयोग दिये हैं, वे उनके अनेक बार के परीक्षित हैं।" सम्पादक।

—लेखक—
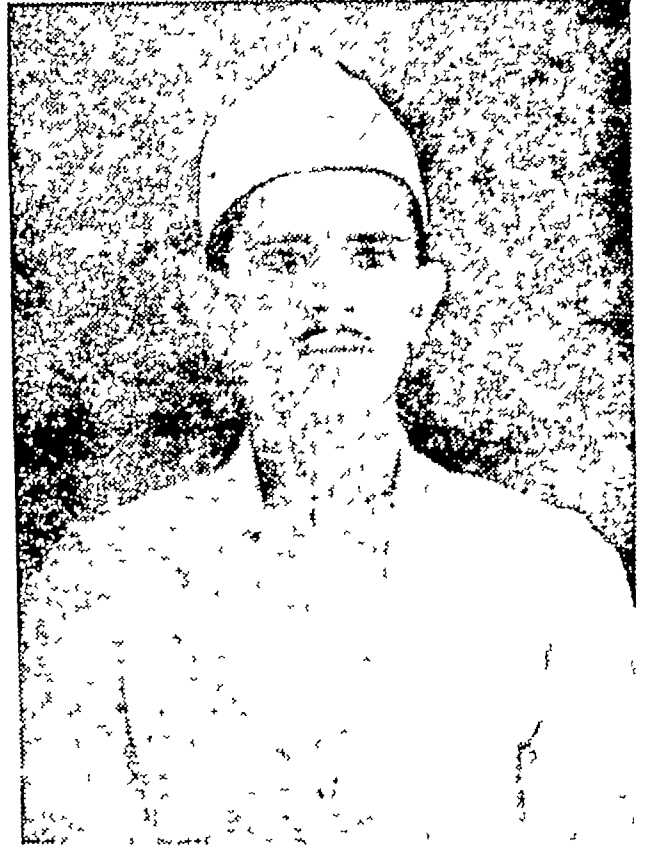
प्रसूत-रोगों पर--

श्वेत चन्दन लाल चन्दन गजपीपल
धनियां जीरा
अजमोद त्रिफला
पलास-पापडा बायविडग
साहतरा चिरायता
पीपल छोटी मरोड़फली
काकड़ासिंगी नेत्रबाला
पाठा नागकेशर
मुलहठी पोहकर मूल
अकरकरा गुजराती भारगी
कायफल सोंठ

–प्रत्येक २-२ तोला।

कुटकी ४ तोला

बनफ्शा	५ तोला
लाहौरी नमक	५ तोला
हींग	६ माशा
दशमूल	आध सेर
बत्तीसा	पाव सेर
अरण्ड की जड़	झूड़
कुशा	कास
झाड	झाऊ

बांसा जवांसा दोनों कटेरी

—इन सबकी जड़ शुद्ध जल से धुली हुई २-तोला लें।

नीम का बकल बरनेकी छाल

कचनार की छाल, वन (कपास) की हरी कांसी
प्रत्येक २-२ तोला।

विधि—प्रथम इन सब औषधियों में स्वच्छ करने योग्य औषधियों को स्वच्छ करले, पश्चात सब को दरदरा करके भवके से भली-भांति अर्क खींचें, फिर साफ कर बोतलों मे भर कर रखदे।

प्रमाण—१ तोले से २ तोले तक प्रातः सायं।

पथ्य—उष्ण तथा विबंधकारक आदि अनिष्ट पदार्थों का त्याग श्रेष्ठ होगा।

बच्चे की उत्पत्ति के समय स्त्रियों को विविध रोग होजाते हैं उस समय से लेकर यदि जब तक बच्चा कम से कम अन्न सेवन करने लगे तब तक पिलाई जाय तो किसी भी रोग का आक्रमण नहीं हो सकता तथा प्रसूताओं के उत्पन्न हुए सभी रोगों का तत्काल ही शमन करता है। प्रसूता के चित्त को प्रसन्न रखता है, इसकी सम्पूर्ण दुर्बलता को नष्ट करता है। यह मेरा एक ही योग है यह प्रयोग मुझे कालीचरन बालब्रह्मचारी जी छौलस से प्राप्त हुआ है और तभी से गुप्त है। वैद्यबन्धु इसका निशक प्रयोग करे तथा लाभालाभ से सूचित करे।

नपुंसकता पर—

सिंगरफ	२॥ तोला
श्वेत संखिया	६ माशा
अण्डे की पीतता	२० नग

निर्माण विधि—प्रथम सिंगरफ और संखिया को खरल करके एक जान करले। पुन. अण्डों की पीतता मिलादे। उन्हे किसी लोहे की स्वच्छ कढ़ाई में डाल कर कोयलों की तीव्र अग्नि पर रखदे और कर्छली से शीघ्र २ चलाते रहें। देखते ही देखते अण्डों का गन्दा मल जल कर वीरबहूटी (इन्द्र-गोप) के रङ्ग जैसा तैल का रङ्ग हो जावेगा। जब तैल अच्छी तरह निकल आवे तथा तैल में से कुछ धूआं निकलता प्रतीत हो तो तुरन्त ही अग्नि से नीचे उतार ले, पश्चात् नितार छानकर उसे सावधानी से शीशी में भरलें। इसमें से एक सींक भर पान पर लगा नपुन्सक को सेवन करावे। इसके ३-४ दिन ही सेवन कराने से इतनी उत्तेजना आती है कि उसे रोकना दुष्कर हो जाता है, रोगी को इस समय पौष्टिक पदार्थ घृत-दुग्ध आदि खूब खाना चाहिये। पथ्यापथ्य का निर्णय वैद्य-बन्धु स्वयं कर सकते हैं। यह औषधि कफ प्रकृति के रोगियों पर विशेष प्रभाव दिखाती है। इन्द्री की सींवन बचाकर यदि मालिश की जाय तो इन्द्री की शिथिलता दूर कर नसों में नव-शक्ति का संचार करती है तथा रगों और पट्ठों को मजबूत करती है। यह अपूर्व अनुभूत तिला है, इसे व्यभिचारी (केवल गुंडे दुष्ट) पुरुषों को न खिलाये।

श्वासकुठार रस -

पारा शुद्ध	गंधक आंवलासार
सींगिया	शु० सुहागा
मनसिल	कालीमिर्चें
सोंठ	पीपल

—प्रत्येक ६-६ माशे

निर्माण विधि—प्रथम पारे गन्धक की कज्जली करे, फिर अन्य औषधियों को कूट-छान कज्जली के साथ धतूरे के अर्क में खूब घोटें, सूख जाने पर फिर आर्द्रक (अदरक) के रस में भली-भाति मर्दन करके गुञ्जा प्रमाण की बटी बनालें।

मात्रा—१ गोली शहद के अनुपान से। यदि शुष्क कास हो तो मलाई से देदें, यह रस श्वास व कठोर खासी के लिये अव्यर्थ है।

श्री वासुदेव जी हकीम यदुवंशी

सरीला स्टेट (बुन्देलखण्ड)।

पिता का नाम—श्री. मरदनसिंह जी

आयु—५० वर्ष जाति—यदुवशी

प्रयोग विषय १ मूत्रावरोधनाशक २ मलेरिया आदि ज्वर नाशक ३-रक्त प्रमेह नाशक

"श्री यदुवंशी जी प्राचीन काल के उन चिकित्सों की स्मृति हैं, जो निर्दोष भाव से रोगीजनों की सेवा करके आयुर्वेद की सम्मानवृद्धि करते रहते थे। आप अब तीस वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं और आपने इस सम्बन्ध मे पर्याप्त यश प्राप्त किया है। भक्ति प्रधान साहित्य से भी आपको अनुराग है और आपने 'सुरभि दान लीला' नामक एक पुस्तक की भी रचना की है। आशा है आपके प्रयोगों से चिकित्सक एवं जन सेवकों को पर्याप्त लाभ होगा।" सम्पादक।

मूत्रावरोध पर-

अंडा पुराने की जड़ को पानी के साथ साफ पत्थर पर घिस कर उसमे कलमी सोरा डेढ़ माशे मिलाकर पिलावे और कुछ नाभी पर लेप कर दे इस से रुका हुआ पेशाव, जिससे पेट फूल गया हो, मरीज की श्वास तक बढ़ गई हो फौरन पेशाव कर देगा और सब मूत्र निकल पड़ेगा।

मलेरिया पर-

नीम की आंतिरिक छाल का काढ़ा

सौंठ १ तोला धनिया १ तोला

—दोनों दवाओं के चूर्ण को काढ़े में मिलाकर चना प्रमाण गोली बनावे। दिन में चार बार सेवन करे।

गुण—इससे मलेरिया, इकतरा तिजारी व चौथय्या तथा पीलिया दूर होता है यदि इसके पहिले दस्त एक दो साफ आने को कोई विरेचन वटी आदि लेने के बाद उपरोक्त गोलियां सेवन की जावें तो ज्यादा लाभप्रद सिद्ध होती हैं।

रक्त प्रमेह पर-

राल सफेद व मिश्री बराबर मिलाकर चूर्ण बना कर मात्रा में ३ माशे फांकने से पेशाव में कच्चा खून आना फौरन बन्द होता है।

ब्रह्मदण्डी की जड़ को पीस कर बराबर की मिश्री तथा आठवा भाग काली मिर्च मिला चूर्ण ३ माशे फांक कर ऊपर से बकरी का दूध पीने से १५ दिन में नामर्द भी मर्द होता है।

श्री युधिष्ठर सिंह जी सोमवंशी वैद्यराज

अध्यापक अमर पाटन [रीवां स्टेट]

जाति—क्षत्रिय आयु—४४ वर्ष

पिता का नाम— ठा० रामसिंह जी जागीरदार

प्रयोग विषय १-विशूचिका नाशक २-मलेरिया ज्वर ३— काम ज्वर ४-खाज दाद ५-अतिसार

"श्री सोमवंशी जी एक पुराने अनुभवी और दक्ष चिकित्सक हैं। आप अनेक छोटी २ रियासतों के राजवैद्य हैं। आपके प्रस्तुत प्रयोग उपयोगी एवं यश और धन देने वाले हैं। आशा है वैद्य बन्धु लाभ उठाने का प्रयास करेंगे।" सम्पादक।

विशूचिकान्तक वटी—

लाल मिरचों के छिलके	२ तोला
भुनी हींग	३ तोला
आम की गुठली	२ तोला
अफीम	१ तोला
जायफल	१ तोला
जायपत्री	१ तोला
शुद्ध शिंगरफ	१ तोला
पिपरमेण्ट का फूल	६ माशे

विधि—उपरोक्त सब औषधियों को कूट कर कपड़ छन करलें, फिर लहसुन के रस में १ दिन खरल करें और बाद में कागजी नीबू के रस में १ दिन खरल कर चना प्रमाण गोलियां बना कर छाया में सुखालें।

मात्रा—१-१ गोली जल या चीनी के साथ आध २ घण्टे पर दें।

गुण—इसके सेवन से क़ै, दस्त शीघ्र बन्द होते हैं और पेशाब खुलता है तथा शरीर में ठंड नहीं आती।

ज्वराग्निवटिका

शुद्ध जमाल गोटा	२ तोला
कुटकी का चूर्ण	४ तोला
शुद्ध काविस	२ तोला

विधि—उपरोक्त तीनों औषधियों को महीन पीस छान कर १ दिन ग्वारपाठा के रस में खरल कर चना प्रमाण गोलियां बनालें।

मात्रा—१ गोली प्रातः थोड़ा गरम जल के साथ।

पथ्य—खिचड़ी, घी।

गुण—इसके सेवन से मलेरिया तथा नवीन ज्वर शीघ्र दूर होता है।

काम हर अर्क

मदार के हरे पत्ते	१० सेर
साम्भर (नमक)	१ सेर
कलमी शोरा	२० तोला
नोसादर	१० तोला

विधि—उपरोक्त सब औषधियों को एक साफ सिल पर कुचल कर एक मिट्टी के पात्र में भर कर मुख बन्द कर पाताल यंत्र द्वारा अर्क निकाल कर साफ बोतल मे छान कर भरले फिर उसमें असली केशर १ तोला बासा चार ३ माशा और काली मिर्च, छोटी पीपल, सौंठ, प्रत्येक १-१ तोला पीस कर बोतल मे मिलाकर बोतल का मुख बन्द कर ७ दिन तक तेज धूप में रखे, फिर छान कर दूसरी बोतल में रखले।

मात्रा—प्रथम सप्ताह मे १-१ माशा दोनों समय अर्क सौफ के साथ। दूसरे सप्ताह मे तीन-तीन माशा।

पथ्य—दूध, मक्खन, घी, रोटी, तैल, खटाई से परहेज रखे।

गुण—इसके सेवन से पुरानी से पुरानी खासी और श्वास दूर होते हैं।

खाज पर तैल -

पारा	गन्धक	हरताल
सिंगिया	मैनसिल	सिंदूर
लहसुन		तांबे का चूर्ण
सरसों का तैल		२४ तोले

प्रत्येक १-१ तोला

विधि—उपरोक्त पीसने वाली औषधियों को यत्न पूर्वक पीसकर कपड छन करलें फिर सबको सरसों के तैल में मिलाकर एक साफ बोतल में भर कर ३ दिन तक तेज धूप मे रक्खें।

सेवन विधि—इस तेल को लगाकर १ घण्टे धूप में बैठ-स्नान करे।

गुण—इसके सेवन से तर व सूखी खाज-फोड़ा-फुन्सी आदि समूल नष्ट होते हैं।

नोट—मुख, आंख में न लगने पावे, इसे लगाने के पश्चात् हाथों को मिट्टी या गोबर से खूब साफ करले। गरम चीजों से परहेज रक्खें।

अतीसार गजकेशरी—

शुद्ध पारा	शु० गन्धक
इन्द्र यव	नागर मोथा
लोध	धाय के फूल
लौंग	ये ७ चीजें १-१ तोला।
जायफल	२ तोला
अफीम	३ तोला

विधि—प्रथम पारे गन्धक की कज्जली करें फिर अफीम को छोड शेष सब औषधियों को कूट-छान कर कज्जली में मिला कर अफीम सहित खरल करे, इसके बाद में पोस्त के डोड़े के रस की ४ भावना दें, फिर हरे आवलों के रस की ५ भावना देकर घोट ले। बाद को दो रत्ती प्रमाण की गोलिया बनावे।

मात्रा—१-१ गोली दोनों समय चीनी की चाशनी के साथ अथवा नीबू के रस के साथ दें।

गुण—घोर अतीसार नष्ट होता है तथा इसके सेवन से ६० प्रतिशत अतीसार के रोगी अच्छे हुये हैं।

कुंवर रणवीरसिंह जी वर्मा, खेरला, (हमीरपुर)

—लेखक—
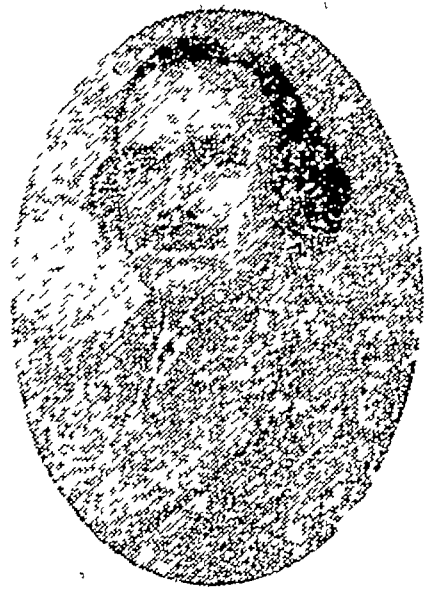
पिता का नाम— श्री. कुंवर मुकुटसिंह जी

जाति— सेंगर (राजपूत क्षत्रिय) आयु—३४ वर्ष

प्रयोग विषय— वातरक्त पीनस मृगी

"श्री० वैद्य जी के तीनों प्रयोग उत्तम हैं, हमारा विश्वास है कि यह अवश्य लाभप्रद होंगे। श्री. बाबा जनार्दन दास जी द्वारा जिन्होंने १०० वर्ष की आयु समाप्त कर इस नश्वर शरीर को छोड़ा आपको यह तीनों प्रयोग प्राप्त हुये हैं। लाभ होने पर कुछ दान इत्यादि करना चाहिये जैसा प्रायः साधु महात्माओं के प्रयोगों के पश्चात् हुआ करता है, आप परीक्षा करें और फलाफल हमें लिखें।" सम्पादक।

वातरक्त पर

इन्द्रायण मूल धतूरे की जड़
मदार की जड श्वेत कन्नेर की जड

—प्रत्येक १-१ तोला

—इन सबको कूट-पीस कर कपड़छन कर वारीक मैदा जैसा चूर्ण करले और जल के योग से ४० गोलियां बनाकर रखलें। दवा सेवन करने से प्रथम निम्न जुलाब आवश्यक है।

उसारे रेवन्द ३ माशा
शकर देशी ६ माशा

ऐसी १—१ मात्रा प्रातः फांक कर शीतल जल पीते रहें। इस प्रकार कम से कम ३ दिन तक ले, ताकि करीब-करीब ३० दस्त आजावें, अगर आवश्यकता प्रतीत हो चौथे दिन भी दें।

नोट—जुलाब के पहिले ३-४ दिन घृत मिली खिचड़ी खाना आवश्यक है। जुलाब के पश्चात् १-१ गोली प्रातः सायं गुन-गुने जल के साथ निगल जाना चाहिये।

पथ्य—बेसन की रोटी जो नीम की लकड़ी से पकाई जाये और घृत २ भाग, शहद १ भाग के साथ खावें। अधिक भूख लगने पर बीच में शहद का शर्बत पीते रहे, नमक, खटाई और तेल का परित्याग करें। नीम के वृक्ष के नीचे सोने का प्रबन्ध करें। लाभ होने पर पांच गरीबों व पांच साधुओं को भोजन अवश्य करादें, वैसे इच्छानुसार अधिक भी करादें।

पीनस और सिर दर्द पर

बनतुलसी (बबई) के बीज १ तोला
रस कपूर १ रत्ती

—दोनों को वारीक पीस कर रखले और १६ मात्रा बनाले।

दवा देने से प्रथम कचौड़ी सेंक कर खिला दो और दिन में ४ बार तक नस्य दो, नस्य देकर कपूर सुंघाते रहो, जब नाक से पानी बहना प्रारम्भ हो जाये तब रोगी को औंधे मुंह चारपाई पर लिटादो, ३-४ घण्टा में पानी का गिरना बन्द हो जायेगा और वह रोगी रोग (पीनस) से छुटकारा पा जायेगा।

मृगी और सिर दर्द--

मदार का दूध	५ तोला
पीपल छोटी	६ माशा
जायफल	६ माशा

पीपल और जायफल को खूब बारीक पीस कर रखलो, फिर एक जंगली कंडा मंगाकर उसकी तह की मिट्टी चाकू से छील कर साफ करलो, और आग लगा दो, जब समूचा कडा (उपला) जल कर अंगार वतौर होजाये और कहीं भी कच्चा न रहे तब उसे मदार के दूध से तर करो और किसी बर्तन से ढंक दो। जब मदार का दूध कंडा सोख जाये और खुश्क हो जाये, खरल मे डाल कर घोंटो और घोटते समय पिसी हुई पीपल व जायफल भी साथ मे मिला कर खरल करलो यह दवा सिर दर्द पर रामबाण का काम करती है। आधा सिर दर्द व पूरा सिर दर्द या जुकाम का सिर दर्द आदि मे लगाने से शर्तिया आराम होता है।

इसी भस्म को मृगी की दवा बनाने के लिये ४० अदद खटमल पकड़ कर चार अंगुल लम्बी और करीब अंगूठे बराबर मोटी गोल थैली में भरदो और थैली को मसलो ताकि खटमलों के रक्त से थैली तर हो जाये, तर होने पर थैली को छाया में सुखा कर खाक जला दो, इस थैली की खाक को कंडे की भस्म में जोकि खरल कर के रखली गई है मिला कर घोंट लो, मृगी के रोगी को पोली पुंगी में भरकर रोगी की अवस्थानुसार मात्रा में नाक में फूंक दो। करीब ६ ७ बार फूंकने पर मृगी का रोग आराम होगा। किसी २ रोगी को तो २-३ बार में ही आराम आगया है और अब तक कोई शिकायत दुबारा देखने में नहीं आई। परीक्षित है।

श्री० वैद्य मदनकुमार जी काला, आयुर्वेदाचार्य ए. एम. बी.

श्री. सरदार आयुर्वेदिक फार्मेसी उनियारा [जयपुर]

पिता का नाम— राजवैद्य पं० फतहलाल जी काला
जाति— दिगम्बर जैन काला आयु— ४८ वर्ष
प्रयोग - १–उदर रोग २ -प्रदर

"श्री. वैद्य जी के पिता ५० वर्ष से वैद्यक का कार्य कर रहे हैं, उनके अनुभव का लाभ उठाकर आप भी समुचित शिक्षा पाकर उत्तमता पूर्वक चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपके दोनों प्रयोग उत्तम हैं; आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।"
—सम्पादक।

—लेखक—

उदर रोग पर

हरड़ छोटी १० तोला
चित्रक की छाल अजमोद अजवायन
सेंधा नमक —चारों ४-४ तोला
कांच नमक पीपल समुद्र नमक
बिड-नमक काला नमक यवक्षार
सज्जीक्षार स्याह जीरा फूला सुहगा
हींग का फूला हरेक २-२ तोला

विधि—प्रथम काष्ठादि औषधियों को कूट-पीस कर कपड़े में छान लें, फिर शंख भस्म १ तोला, हींग का फूला २ तोला दोनों को सिल पर खूब महीन पीस कर उक्त चूर्ण थोड़ा-थोड़ा मिलादें और शीशी में भरलें।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक।

अनुपान—उष्ण जल से प्रातः सायं,भोजन के पश्चात्।

गुण—आध्मान, मलावरोध, उदरशूल, यकृत, प्लीहा, अग्निमान्द्यादि उदर रोगों को दूर करता है, शरीर में रक्त का संचार कर रक्त व बल को बढ़ाता एवं स्फूर्ति लाता है। उक्त सभी रोगों पर यह योग कई बार प्रयोग किया है, शत-प्रतिशत रोगों पर आशातीत फल पाया है।

नोट—चन्द्रमा के समान सफेद निर्मल शंख लेकर सात बार काञ्जी में स्वेदन करना, टुकड़े करके पके पीले अर्क पत्र मे लपेट कर हांडी में कपड़-मिट्टी कर गजपुट मे फूंक दें, सूक्ष्म चूर्ण कर अर्क दुग्ध व स्नुहीक्षीर की तीन-तीन भावना दे-दे कर पुट देने से उत्तम शंखभस्म तैयार हो जाती है।

प्रदर पर

लोध धाय का फूल सुपारी चिकनी
माजूफल पीपल की लाख हरेक २-२ तोला
रसौत ४ तोला

विधि—उपरोक्त सब दवाओं को यथा-विधि कूट कपड़छन कर चौलाई के रस की एक भावना देकर सूक्ष्म चूर्ण कर शीशी में भरदें।

मात्रा—६ माशे प्रातः साय।

अनुपान—चौलाई की जड़ के रस से, दाब के रस से या चावलों के धोवन से दें।

गुण—चारों प्रकार के प्रदर शर्तिया ठीक होते हैं।

श्री गौरीशंकर जी व्यायाम विशारद

सूर्य व्यायामशाला, नदबई [भरतपुर]

—लेखक—

पिता का नाम—श्री. सूरजमल जी वागपतिया

जाति—वैश्य आयु—२२ वर्ष

प्रयोग विषय- १ शक्तिवर्धक योग

२ श्वेत प्रदर नाशक ३-गुहेर नाशक।

"श्री गौरीशकर जी यद्यपि वैद्य नही हैं किंतु व्यायाम के विशेषज्ञ होने के कारण स्वास्थ्य-विज्ञान से आपका निकट-तम सम्बन्ध है, इसके अतिरिक्त आपको आयुर्वेद में अध्ययन और परीक्षण से अत्यधिक प्रेम रहा है। प्रस्तुत प्रयोग आपके परीक्षित हैं, आशा है पाठक लाभ उठावेगे।"

—सम्पादक।

नवयौवन दाता

कचूर	मोथा
देवदार	हल्दी
दारु हल्दी	वायबिडग
असगन्ध	विधारा बीज
त्रिफला	—हरेक १-१ तोला
त्रिकुटा	३ तोला
मुलहठी	३ तोला
छोटी इलायची के दाने	१ तोला
गुड़मार बूटी	३ तोला
जामुन की गुठली की मज्जा	३ तोला
शुद्ध जायफल	६ माशे
शीतलचीनी	१ तोला
पुनर्नवा	३ तोला
गिलोय सत्व	३ तोला
गोखरू	३ तोला
जवाखार	१ तोला
भीमसेनी कपूर	१ तोला
नागकेशर	१ तोला
विदारी कन्द	३ तोला
शतावरी	३ तोला
बंसलोचन	१ तोला

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक

—काष्टादिक औषधियों को कूट छान कर घनलो- चन, गिलोय सत्व, जवाखार, भीमसेनी कपूर मिलादें, पश्चात् नीचे लिखी भस्म डालदें।

स्वर्ण वङ्ग	१ तोला
रससिंदूर	१ तोला
प्रवाल भस्म	१ तोला
स्वर्ण माक्षिक भस्म	१ तोला
शुद्ध शिलाजीत	४ तोले
लोह भस्म	१ तोले
अभ्रक भस्म	१ तोले
नाग भस्म	१ तोले
वङ्ग भस्म	१ तोला
चांदी भस्म	१ तोला

—उपरोक्त औषधियों में मिलाले, पश्चात् सतावरी स्वरस में २ दिन खरल करें; सूखने पर भांगरे के रस की दो भावना देकर सुखाले फिर गिलोय स्वरस या गिलोय क्वाथ की १ भावना देकर चने प्रमाण गोली बनालें तथा ऊपर गोलियों के स्वर्ण वर्क लगे हों बस यह महौषधि तैयार है।

मात्रा—१-१ गोली प्रातः-साय गाय के अथवा बकरी के आध पाव दूध में सेवन करे, और उस में १ तोला शहद या मिश्री मिलालें।

गुण—२० प्रकार के प्रमेह, धातु गिरना, पेशाव में वीर्य आना, ध्वजभग नपुंसकता, अंड वृद्धि, श्लीपद का व्रण, गुदा के रोग, भगन्दर, खांसी, पीनस, क्षय, बवासीर, रक्त विकार, आमवात जिह्वा स्तम्भ, उदर रोग, कर्ण रोग, नासा रोग, सर्व प्रकार के शूल, लिङ्ग की स्थूलता बिना तिला के बढ़कर अत्यन्त वीर्य वृद्धि हो, बलबान हो, बहुत सी स्त्रियों के साथ रमण की शक्ति प्राप्त होती है, दृष्टि वृद्धि, अन्न हजम हो, अपान वायु खारज होकर १ पक्ष में ही शरीर में नया खून पैदा होकर चहरा गुलाब के सदृश चमकने लगता है।

श्वेत प्रदर

श्वेत सुरमा को महीन पीस कर शीशी में रखे, केवल इसी दवा को देने से घोर से घोर श्वेत प्रदर शांत होता है। यह दवा प्रदर पर गजब का फायदा करती है तथा ३-४ खुराक मे ही लाभ दिखाती है, पुराने रोग में अधिक देने की आव- श्यकता है।

मात्रा—४ रत्ती शहद के साथ सेवन करावे, युवावस्था में प्रातः सायं १-१ माशे की मात्रा मे दें।

सौभाग्य संजीवन रस

चन्द्रप्रभा वटी	१।। माशा
सत्व गिलोय	३ माशा
श्वेत सौवीर	३ माशा
प्रदरारि लोह	१ माशा
मुक्ता पिष्टी	३ माशा

विधि—इन सबको एक कर तीस मात्रा बनावे। प्रातः साय शर्बत अनार के साथ चटा कर १ पाव गाय का धारोष्ण दूध पीवें तो सर्व प्रकार के पीड़ायुक्त रक्त व प्रदर, अनियमित रक्तस्राव, रजो- दोष, अर्श, रक्तपित्त, ज्वर, पांडु, मन्दाग्नि, अजीर्ण, अरुचि आदि व्याधियां नष्ट होती हैं।

गुहेरी नाशक

छुआरे के भीतर की गुठली को साफ पत्थर पर घिस कर गुहेरी पर लेप करे। १ दिन में ही आशातीत लाभ दिखाती है।

आयुर्वेद रत्न पं० छेदीलाल जी शर्मा वैद्य विशारद

जनार्दन औषधालय झंडा बाजार कटनी [सी० पी०]

—लेखक—

पिता का नाम— पं० रामसेवक जी शर्मा

जाति—ब्राह्मण आयु २१ वर्ष

प्रयोग— मलेरिया नाशक

२–कृमि नाशक ३ दाद, खाज नाशक

'श्री छेदीलाल जी शर्मा कटनी के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्य कर्ता और वैद्य पं० यज्ञदेव जी शर्मा के भान्जे हैं। आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की आयुर्वेदरत्न तथा वैद्य विशारद परीक्षायें पास हैं और उन उदीयमान वैद्यों में से हैं जिनसे वैद्य समाज के गौरव वृद्धि की पर्याप्त आशा है।" —सम्पादक।
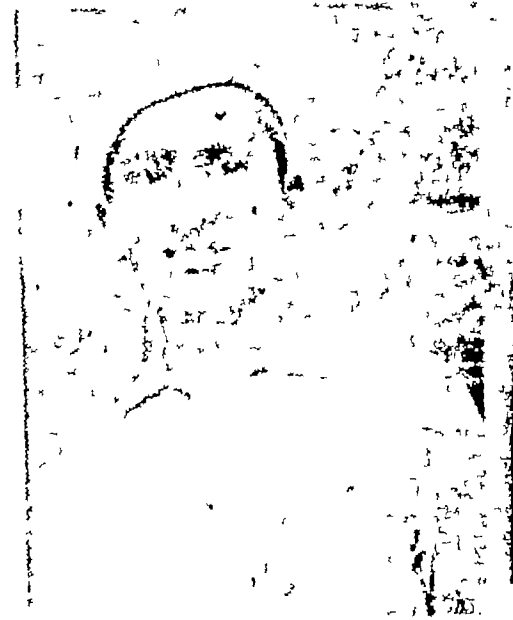
मलेरिया ज्वर पर—

चिरायता, पित्तपापड़ा, करञ्जबीज,
अमलतास का गूदा, कुटकी, छोटीहरड़
गिलोय, नीम की अन्तर छाल

इन चीजों को सम भाग (बराबर २) लेकर जौ कुट करें और सोलह गुने जल में डालकर एक दिन फूलने देवें।

गुण—२ तोला काढ़ा शहद मिलाकर सुबह शाम पीने से कैसा भी विषम ज्वर (मलेरिया) होवे अच्छा हो जावेगा। उपरोक्त दवा से राज दस्त भी साफ होवेगा।

कृमिनाशक अव्यर्थ योग—

अजवाइन, पलास पापड़ा, यवक्षार
छोटी हर्र ६-६ माशा
वायबिडंग नीम के पत्ते
नीम की गिरी (निबोली) सेंधा नमक
—प्रत्येक १-१ तोला—

लेकर कूट कपड़ छनकर लेवें। ६ माशे दवा गरम जल के साथ सेवन करने से पेट और मलद्वार में चुन्ने सब प्रकार के छोटे बड़े कृमि मर कर गिर जाते हैं। इसका सेवन १ सप्ताह तक होना चाहिये परहेज—घी, दूध और मीठे पदार्थ नहीं खाने चाहिये।

दाद, खाज, अपरस पर—

आवलासारगन्धक, मेनसिल, मुर्दासन
तूतिया, स्याह जीरा, श्वेत जीरा,
बावची पवाड़ के बीज सुहागा

इन चीजों को समभाग लेकर कूट कपड़ छान कर रखलेवें।

(शेषांश पृष्ठ ६६२ पर)

लेखक—

श्रीयुत पं० भगवानदास जी शुक्ल
कौहारी (रीवां राज्य)

पिता का नाम— पं० मंगलदीन जी शुक्ल
जाति—ब्राह्मण आयु—२७ वर्ष
प्रयोग—नं०१ सर्व ज्वरे नं०२ – व्रण शोथ
नं०३— नपुंसकत

"श्री. वैद्य महोदय ने हिन्दी साहित्यरत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की है और सम्वत् २००० मे हिन्दी विश्व विद्यालय की 'वैद्य विशारद' परीक्षा पास की है जिसके उपलक्ष में आयुर्वेद प्रचारणी सभा प्रयाग ने पदक भी प्रदान किया है। आपको अपने प्रयोगों के शतशोनुभूत होने का विश्वास है, आशा है पाठकों को उचित लाभ होगा।" —सम्पादक

किरात दि वटी:—सर्व ज्वरे

- चिरायता ५ तोला.
- पीपरा मूल कुटकी, देवदारू
- रक्तचन्दन पित्तपापडा
- नागरमोथा बटेरी (लघु) की जड का
- छिलका —प्रत्येक १-१ तोला—

—इन सब औषधियों को यवकुट कर ५ सेर जल मे औटावे जब आधा जल शेष रह जाय उतारले। अच्छी तरह मथ कर छान ले, फिर उस क्वाथ में एक छटांक (पाच तोला) त्रिफला कपड छन चूर्ण डालकर पुनः औटावे। जब गोला बनने योग्य हो जावे, चना प्रमाण गोलियां बांधले। छाया में सुखा कर रखले।

मात्रा—१ या दो गोली (अवस्थानुसार)

अनुपान—शीतल जल (१ या दो गोली चबाकर ऊपर से २-३ घूंट जल पीलेवें।)

समय—ज्वर आने से ३ घंटे पूर्व, १-१ घंटे के अन्तर से या प्रात. सायं (ज्वर हमेशा बना रहने पर)

गुण—इन गोलियों को प्रत्येक प्रकार के ज्वर में चाहे ज्वर चढ़ा हो या उतरा निःशंक प्रयोग कर सकते हैं। मैंने सैकड़ों रोगियों पर प्रयोग किया, शत प्रतिशत लाभ दिखाती है। यह प्रयोग किसी ग्रंथ का नहीं है, मेरे पूज्य पिता जी का प्रसाद है।

व्रण शोथ, फोड़े पर अजीब योग

- विष तिन्दुक (कुचिला) बीज बिना शुद्ध
- अहिफेन (अफीम) बिना शुद्ध,
- अरण्य जीरक (बन जीरा)
- मदन फल (मैनहर), सांभर
- शृंग मरोडफली (ऐंठी)

(शेषांश पृष्ठ ६६७ पर)

—लेखक—

राजगुरु डा० देवीसहाय जी शर्मा

आयुर्वेदाचार्य H. M. B. M. B. (U. S. A.)

परोपकारी औषधालय, चूरू।

पिता का नाम— वैद्य श्री० पं० वंशीधर जी राजगुरु

जाति—ब्राह्मण आयु—४० वर्ष

प्रयोग विषय १ बाल रोग नाशक २-मूत्र विरेचक

'श्री प० देवीसहाय जी शर्मा चूरू के प्रसिद्ध वैद्य हैं। आपको आयुर्वेद के अतिरिक्त अन्य चिकित्सा प्रणालियों का भी अच्छा ज्ञान है। प्रस्तुत प्रयोग आपके अनुभूत हैं। आशा है वैद्य बन्धु भी इनका उपयोग करके यश अर्जन करेंगे।"

—सम्पादक।

रस पर्पटी-

शुद्ध पारा १ तोला शु० गंधक १ तो०
—लेकर कज्जली करें।

सोंठ	मिर्च
पीपल	अतीस
काकड़ा सिंगी	नागर मोथा
मोच रस	जायफल
जावित्री	सुहागे का लावा
छोटी पीपल	—सबको १-१ तोला ले।

विधि—इन सबका कपड़-छन चूर्ण कर कज्जली मिला दें। सब चूर्ण से चतुर्थांश मृगमद (कस्तूरी) मिला जल के संयोग से मूंग प्रमाण गोली बनावें। यह गोली बच्चों के हर एक रोगों पर लाभप्रद है। जैसे बालशोष जुकाम, ज्वर हरे-पीले दस्त, कफ, कास कमजोरी आदि पर अच्छा लाभ करती है।

मूत्र विरेचन-

गांडर का जीरा ६ माशे

—लेकर सिल पर पीस के टूंडी के नीचे और इन्द्री के ऊपर लेप कर देवे, सिर्फ ५ मिनट तक प्रतीक्षा कर धो डालना चाहिये। पुरुष हो या स्त्री किसी कारण से भी रुका हुआ पेशाब फौरन उतर जाता है। यह योग मुझे दादा जी से प्राप्त हुआ है और मेरा भी कई बार का आजमायश किया हुआ अनुभूत है।

(शेषांश पृष्ठ ६६० का)

सूखी खुजली में

सरसों के तैल के साथ मिलाकर लगावे और शरीर में गोबर लगा कर स्नान करें।

पकी खाज में

१०० बार धोये हुये घृत में मिलाकर लगावें।

दाद में

तावे के पैसे से खुजाकर नीबू के रस में मिला कर लगावें। शर्तिया लाभ होगा।

बाल वैद्य श्री बालमुकुन्द जी त्रिपाठी वैद्य ारद
पुरुषोत्तम पीयूष चिकित्सालय नाथ द्वारा [मेवाड़]

नयन सुखी--

दो तोले अर्क गुलाब मे २रत्ती तुवरी का सूक्ष्म चूर्ण मिलादे फिर चौड़े मुंह के कांच के प्याले में भर कर रखदें। पश्चात् आधे तोले लोध्र के सूक्ष्म चूर्ण में एक दो रत्ती कपूर मिलादे और स्वच्छ कपड़े मे पोटली बांध कर उक्त अर्क में भिगोदें। आधा घंटे पश्चात् पोटली को निकाल लें। पोटली को दबा कर दो-दो बूंद आखों में डालदे। और पोटली को दिन भर अपने पास रक्खे और आंखों पर लगाते रहे सूखने लगे तो

पिता का नाम श्री. पुरुषोत्तम जी त्रिपाठी
जाति ब्राह्मण
प्रयोग-
१—नेत्र रोग पर २-गांठ आदि निकलने पर

—लेखक—
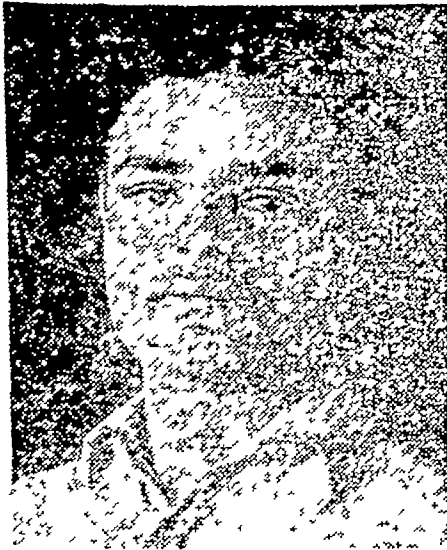
"श्री० त्रिपाठी जी आयुर्वेद जगत के उदीयमान रत्न हैं। आपके परिवार मे अनेक पीढ़ियों से चिकित्सा कार्य होता आया है। सगीत, कविता, चित्रकला आदि में भी आपकी रुचि है। आपकी उत्तरोत्तर यशवृद्धि हो, यही हमारी कामना है। पाठक आपके परीक्षित प्रयोगों से लाभ उठावेंगे। —सम्पादक

थोडा पानी लगा कर तर कर सकते हैं। हो सके तो त्रिफला के जल से आंखों कोधो डालें, दिन में एक बार तो धोना ही चाहिये। सब प्रकार से दूखती आंखे अच्छी होती हैं।

गांठ आदि निकलने पर

कनक गुग्गुल	३ तोला
शिर के बाल	३ माशे
उत्तम हींग	२ माशे
शुद्ध विष	४ रत्ती
हल्दी खाने की	१ माशे
पानी	आवश्यकतानुसार

विधि—सर्व प्रथम साफ पत्थर पर बालों को खूब पीस डालिये। पीसते समय थोड़ा २ पानी डालते रहें। पश्चात् गुग्गुल हींग आदि वस्तुयें डाल कर खूब पीसते जाइये और आवश्यकतानुसार पानी भी डालिये अच्छा सम्मिश्रण लेहवत् हो जाने के बाद लट्ठे की पट्टी पर लगावे। यह सब प्रकार की गाठों को ठीक करती है। बालकों के दांत निकलते समय होने वाली गले की गाठें तथा जिसे ननामी कहते हैं उसमें भी

शेषांश पृष्ठ ६६७ पर

श्री० पं० रामनारायण जी आयुर्वेद शास्त्री

श्री महावीर औषधालय मु० घिराणा पो० उदयपुर (शेखा वाटी] जयपुर स्टेट

पिता का नाम— पं० गंगाप्रसाद जी वैद्यराज

जाति—ब्राह्मण आयु ३५ वर्ष

प्रयोग नं० १ शक्ति वर्धक अर्क न० २ मोम का तैल

'श्री० शास्त्री जी अपने क्षेत्र के एक अनुभवी चिकित्सक हैं। आपके प्रस्तुत प्रयोगों के सम्बन्ध मे वैद्यजन अपने अनुभवों से सूचित करने की अवश्य- ही कृपा करें।" —सम्पादक।

शक्ति वर्धक अर्क

यह अर्क अमीर लोग बनाकर पी सकते हैं, अत्यन्त शक्ति और रक्त वर्धक है। आजकल पुरुषों के प्रमेह मधु मेहादि तथा स्त्रियों के रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर एवं सूतिका जन्य रोगों मे रक्ताल्पता होना स्वाभाविक हैं तथा प्लीहा एवं यकृत के बीमारों के लिये भी तथा सभी उदर रोगों में लाभदायक सिद्ध हुआ है।

अंगूर मीठे ५ सेर

सेव बीही नारंगी नासपाती

मीठा अनार दाना अनार कांधारी खट्टा

—प्रत्येक २॥-२॥ सेर

—इन सबके टुकडे करके ओस मे रखो ३ दिन बाद सबके मे अर्क खींचलो, सब पानी हो जायगा, इस अर्क में निम्न लिखित दवाइया भिगोनी चाहिये।

आंवले का गूदा जारिश्क किसमिस

मुनक्काली —प्रत्येक आध आध सेर

—तीन दिन के बाद फिर अर्क खींच कर निम्न चीजें मिलानी चाहिये।

अर्क तरबूज ४ सेर

गन्ने का रस गाजर का रस

—प्रत्येक ६-६ सेर

बूरा ८ सेर

शहद १ सेर

मिश्री ३ सेर

—सबको मिलाकर १५ दिन मुख बांध कर कपड़ मिट्टी करके रखना और सबका अर्क खींचना बाद में चीनी मिट्टी के पात्र में रख कर निम्न लिखित चीजोंमें सुवासित करना चाहिये।

कस्तूरी नेपाली (बहुत बढिया) २ तोला

केशर सूर्य छाप ५ तोला

छोटी इलायची के दाने १० तोला

भीमसैनी कपूर २ तोला

—बाद मे महीने तक बन्द रखे उसके पश्चात् २ तोला से लेकर ४ तोला तक व्यवहार करे, यह अर्क अत्यन्त शक्ति को बढ़ाता है एव भूख अच्छी लग कर खून की वृद्धि करता है, नपुंसकता मे भी लाभ दायक है।

नोट—जारिश्क यूनानी दवाई है हकीमों से लभ्य है।

(शेषांश पृष्ठ ६६७ पर)

श्रीयुत राजवैद्य पं० अश्विनीकुमार जी शर्मा

आयुर्वेद विशारद, नसीराबाद

पिता का नाम
श्री. प० हनूमानप्रसाद जी
जाति— गौड़ ब्राह्मण
आयु ४७ वर्ष
प्रयोग— १—उपदंश नाशक
२—सुजा (पूयमेह) हर
३—प्रदर नाशक

"सम्मानीय राजवैद्य जी वर्तमान समय में अति प्रचलित तीन रोगों पर हमारी दृष्टि मे उत्तम प्रयोग लिख भेजने की कृपा की है। आशा है वैद्यबन्धु इससे लाभ उठाने का प्रयास करेंगे।

—सम्पादक।

—लेखक—

उपदंश नाशक—

१ रत्ती रस कर्पूर को एक सुलगते हुये कोयले पर डालें, जब वह धूम्र देने लगे तब ही उस पर एक कांच का ग्लास औंधा मार दे। उपरोक्त कपूर का जौहर ग्लास में आ जायगा। उसे ½ छटांक मलाई से खिलादें इस प्रकार ७ रोज केवल प्रातःकाल ही सेवन करावें कैसा ही उपदंश हो लाभ होगा।

पथ्य—दूध, घी,।

विशेष गुण—मुंह नहीं आयगा मैंने एक गर्भवती स्त्री तक को दिया है इसे पर्याप्त लाभ हुआ था।

सुजाक [पूयमेह]

सफेद फिटकरी को फुला कर उसका चूर्ण करलो उसमें से १ तो० ले गुनगुने पानी मे मिला कर पिचकारी दो भीतरी जख्म भर जांयगे।

खाने की औषधि

गोखरू	६ माशा
फिटकरी	१॥ माशा
छोटी इलायची	सोना गेरू
वंशलोचन	३—३ माशा

विधि—सब चीजों को कूट पीस कर कपड़-छन कर ठंडे जल या दूध लस्सी से दिन में तीन बार सेवन करावे अवश्य लाभ होगा।

प्रदर नाशक

(कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म)

मुर्गी के अण्डों के छिलके लेकर पहिले सिरके में १ घण्टे भिगोदें उनके अन्दर से एक प्रकार की झिल्ली सी निकलेगी उसे निकाल कर फिर उस मे समभाग हिंगुल मिला निम्बू के स्वरस में ३ दिन मर्दन कर टिकिया बनालें और शकोरा मे बन्द कर आग में देकर भस्म करलें! यह भस्म आधी रत्ती से १ रत्ती तक मक्खन या मलाई के साथ दें। स्त्रियों के प्रदर को नाश करने में अद्वितीय है तथा शक्ति व पुष्टि को बढ़ाने में अचूक है।

श्री० पं० पुरुषोत्तम देव जी शर्मा शास्त्री

आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेदालंकार मोमासर [बीकानेर स्टेट]

—लेखक—

पिता का नाम— श्री प० मदनगोपाल जी शर्मा

जाति—ब्राह्मण आयु २७ वर्ष

प्रयोग नं० १— अग्निमांद्य, यक्ष्मादि नाशक

नं० २— रक्तप्रदर नाशक

"श्री० वैद्य जी अ० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ के स्नातक हैं और हनूमान आयुर्वेद कालेज मे १॥ वर्ष तक शिक्षक के पद पर भी कार्य कर चुके हैं। आप जम्मू के श्री लक्ष्मी आयुर्वेदिक औषधालय में प्रधान चिकित्सक के पद पर कार्य करके पर्याप्त यश अर्जन कर चुके हैं और आजकल मोमासर में सुधासागर आयुर्वेद चिकित्सालय, नामक अपने औषधालय द्वारा जनता की सेवा करके आयुर्वेद की मान-वृद्धि कर रहे हैं। आशा है आपके प्रयोगों से पाठकों का उचित लाभ होगा।" —सम्पादक।
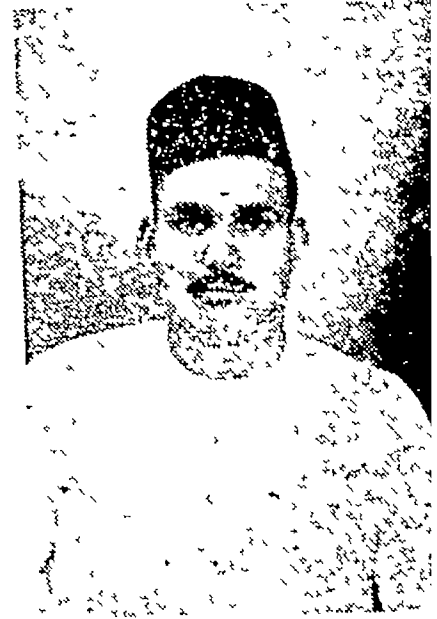
फलद्राव—

रस अंगूर, रस अनार रस सन्तरा
रस निम्बू रस पोदीना रस तुलसी
—प्रत्येक ४०-४० तोला
रस अदरक रस मूली रस टमाटर
—प्रत्येक २०-२० तोला

प्रक्षेप्य द्रव

सोंठ काली मिरच पीपल
पीपला मूल चव्य चित्रक राई
यवक्षार शंख भस्म
—प्रत्येक ४-४ तोला
सेंधव नमक २० तोला
अकरकरा ५ तोला

निर्माण विधि

—उपरोक्त ६ प्रकार के रसों को मिलाकर एक चीनी के अमृतवान मे डाल कर शुण्ठ्यादि प्रक्षेप को सूक्ष्मवस्त्रपूत करके उसमे डालकर मुख मुद्रित कर एक सप्ताह धूप में रख दे। उसके बाद फिल्टर करके शीशियो मे रखले।

मात्रा—१ से २ तक तोला समभाग जल मिलाकर भोजनोत्तर दें।

उपयोग

अग्निमांद्य, क्षयज-श्वास, कास, हृद्दौर्बल्य, अरोचक, गुल्म, रक्ताल्पत्व, यकृत, प्लीहा, आमाशयशूल, और उदावर्त्त मे महानुपकारी सिद्ध हुआ है। (शेषांश पृष्ठ ६६७ पर)

(शेषांश पृष्ठ ६९१ का)

सब चीजे समान मात्रा में ले, केवल अफीम चतुर्थांश ले।

सब औषधियों को सेहुड के पत्तों के रस से बारीक घोटकर कुछ गरम करके लेप करे।

सूजन पीड़ा, रक्तिमा (लाली) वगैरः सम्पूर्ण उपद्रव शांत ह ते है। यदि फोड़ा पक गया हो तो फूट कर बह भी जाता है।

सन्निपात के भयंकर कर्णमूल शोथ में भी रामबाण सा प्रभाव दिखाता है, कई बार परीक्षा हो चुकी है। यह प्रयोग भी मेरे पूज्य पिता जी का ही प्रसाद है।

(शेषांश पृष्ठ ६९३ का)

अच्छा काम करती है। विशेषता इसमें यह है कि जो गांठ बिना फूटे ही बैठ जाने वाली है तो वह बैठ कर अच्छी हो जाती है और फूटने वाली को फोड़ कर, व्रण को शुद्ध एव ठीक करने में देर नहीं करती। बिना फूटी गाठ पर बिना छेद वाली पट्टी और फूटी हुई पर छेद वाली बांध देनी चाहिये और पट्टी इतनी बड़ी ले जितनी गांठ हो। मेरी समझ में यह लेग की गांठों पर भी अच्छा काम करती होगी। अपची गण्डमाला की गांठ पर तो मैने कईयों को दी और आराम हुआ है। किन्तु प्लेग पर नहीं दी, क्योंकि कोई रोगी ही नहीं आया।

(शेषांश पृष्ठ ६९४ का)

मौम का तैल

मौम १ सेर
मस्तंगी लोबान कोडिया
अजवायन खुरासानी अजमोद
अजवायन अकरकरा लौंग
मालकागनी जायफल
जावित्री प्रत्येक ४-४ तोला
गगल वायविड़ंग शुद्ध नरकचूर
सोंठ कस्तूरी शुद्ध वच्छनाग
—प्रत्येक २-२ तोला—
भिलावा आंबाहल्दी कुचिला
—तीनों चीज १०-१० तोला

—पातालयन्त्र से अथवा ढेकी यन्त्र से तैल निकालना चाहिये. दोनो ही यन्त्र प्रसिद्ध हैं। इस लिये यन्त्रों का लिखना लेख को बढाना समझ कर नहीं लिखा गया है। यह तैल वायु के सम्पूर्ण दर्दों पर अक्सीर है। विशेषतः रीढ़ का दर्द, प्रसूत दर्द, न्यूमोनियां का पसली दर्द, शून्यवात, नामर्दी पर तिला से भी बढ़कर हैं।

(शेषांश पृष्ठ ६९६ का)

कदलीफलावलेह—

पके केले का गूदा शुद्ध गौघृत
मिश्री पिसी हुई —प्रत्येक १-१ पाव

—इन तीनों को एक चीनी के खरल में मिलाकर मंथन करले। अच्छी प्रकार मिल जाने पर निम्न-लिखित औषधियों का सूक्ष्म वस्त्रपूत चूर्ण डालदें।

दालचीनी १॥ तोला
पठानीलोध सोंठ १-१ तोला
धाय के फूल बड़ी इलायची ६-६ माशा
माजूफल ३ माशा

इनको (उपरोक्त) केले के गूदे में मिलाकर २० चादी वर्क डालकर २ तोला मात्रा से प्रातः सायं निम्न-लिखित पुड़िया मिलाकर दे।

पुडियों की औषधि—

सितोफलादि चूर्ण १ तोला
शु० रसौत प्रवाल भस्म ६-६ माशा
वंग भस्म १॥ माशा

—एकत्र कर खरल में मिलालें।

मात्रा—४-४ रत्ती की प्रति पुड़िया।

श्री० पं० सीताराम जी शास्त्री

H. L. M. S. ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेद महामहोपाध्याय
ग्राम-पवञ्जई पो० हेलेगाडी (दक्षिण-भारत)
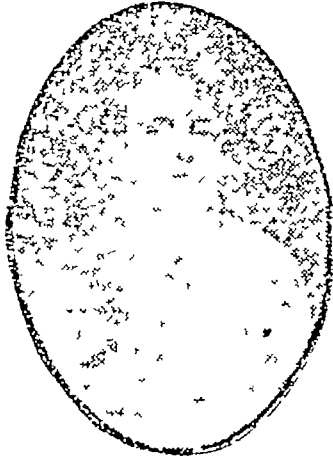
—लेखक—

पिता का नाम— श्रीमान् पं० सुब्रम्हन्य जी शास्त्री

जाति—ब्राह्मण आयु—३४ वर्ष

प्रयोग विषय - १-अपस्मार २-गंडमाला रोग

"श्री० सीताराम जी शास्त्री आयुर्वेद के उत्कृष्ट विद्वान और यश प्राप्त चिकित्सक हैं। आप संस्कृत, हिन्दी, तामिल, कन्नडी, इंगलिश आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता हैं और अनेक आयुर्वेदीय संस्थाओं के परीक्षक-निरीक्षक हैं, आपके अनुभूत प्रयोगों से लाभ उठाना वैद्य बन्धुओं का कर्तव्य है।"

—सम्पादक।

अपस्मारादि पर [इन्द्रवारुणादि घृत]—

इन्द्रायण की जड हरड़ वहेडा
हल्दी आंवला
दारु हल्दी रेनुका
अनन्तमूल सफेद अनन्तमूल काला
फूलप्रियगु शालपर्णी
पृष्टपर्णी देवदारू
एलुआ तगर दन्ती
अनार की छाल नागकेशर
इलायची संजीठ
नीलोफर वायविडंग
पद्माख कूठ
चमेली के फूल चन्दन
तालीस पत्र कटेरी

—यह सब प्रत्येक १-१ तोला लेकर कल्क करें। औषधियों से चौगुना जल कल्क में डाले और गाय का घी ६४ तोले सबको एकत्र कर, मन्दाग्नि से पकावे। जब पानी जल जाय और घृत मात्र शेप रहे तब उतारले।

इसमें से १ तोला सुबह ,१ तोला शाम को अनुपान विशेष से खांय तो अपस्मार, ज्वर, क्षय, उन्माद वातरक्त, कास, मन्दाग्नि, पीनस, कमर का शूल और चातुर्थिकज्वर, मूत्रकृच्छ, विसर्प, खुजली, पाडु रोग, सर्पादिक जगमविप, वत्छनागादिक स्थावर विष और प्रमेह ये सब रोग दूर होते हैं वध्या स्त्रियों को संतान सुख होता है।

गंडमाला रोग

इन्द्रायण के मूल का चूर्ण मोमूर के साथ पान करने से थोड़े दिना मे ही गंडमाला दूर होती है।

स्तन पीड़ा में

इन्द्रायण के मूल का स्तन पर लेप करने से स्तन पीडा दूर होती है।

भिषग्रत्न ईश्वरीप्रसाद जी वर्मा

भीचले वाले हनुमानताल जब्बलपुर

पिता का नाम—
श्री चूरामन जी आयु—३७ वर्ष
जाति— क्षत्रीय

श्री० वैद्य जी यद्यपि आयुर्वेद शास्त्र के विद्वान नहीं किंतु बहुत समय का अनुभव

आपके साथ है। उस सुदीर्घ अनुभव काल में जिन प्रयोगो को आपने प्रायः सफल पाया है- धन्वन्तरि के पाठकों को भेजने की कृपा की है--आशा है आपके प्रयोग उचित लाभप्रद सिद्ध होंगे। —सम्पादक।

—लेखक—

जुकाम, खांसी पर

लहसुन भस्म अन्तर्धूम
टंकड़ भस्म (शुद्ध) —प्रत्येक १-१ तोला
हल्दी आधा तोला

—इन सब को घोट कर रखले, अनुपान शहद। छोटे बच्चों को माता के दूधसे दिन में तीन बार दे।

सिर दर्द और आधा शीशी पर

—नमक खाने का, जो बाजार में विकता है, उसको अच्छा महीन पीस कर शीशी मे रखले। सिर-दर्द में उसको नस्य समान सूंघने को कहो। १ मिनट में सिर का दर्द जाता रहेगा।

आधा शीशी पर

—कण्डों की राख छनी हुई उसमे आक (अर्क) दूध की एक भावना देकर छाया में सुखा कर शीशी में रखले, जिस तरफ सिर में दर्द हो उसी नथुने से उसे नस्य के समान सुंघाने को कहो, इससे उसके दर्द को फौरन आराम होगा।

नोट—इस नस्य से छींक बहुत आती हैं।

—सम्पादक।

श्वासरोग पर

—थूहर, नाग फली के पके फल लाकर जो लाल हों उसका रंग निकालें और उस रंग मे मिश्री डाल कर सीरा बनाले फिर उस सीरा मे कुटकी का चूर्ण ६ रत्ती मिलाकर खाने से श्वास का दौरा फौरन रुक जाता है।

मूत्रावरोध नाशक प्रयोग

शंख भस्म ३ रत्ती
तिलों का क्षार ४ रत्ती

—दोनों को मिला कर शहद में चटादे या पानी मे घोल कर पिला देने से पेशाब भली प्रकार से उतर आता है।

आठों प्रकार के ज्वरों पर

शुद्ध मीठा विष काली मिरच पीपल
जंगली जीरा शु० गन्धक सुहागा भुना
शु० हिंगुल —प्रत्येक १-१ माशा

(शेषांश पृष्ठ ७०० पर)

श्री. पं० जानकीवल्लभ शर्मा वैद्य

श्री साङ्गवेद महाविद्यालय [चिकित्सा विभाग]
नरवर पो० बेलौन (बुलन्दशहर)

—लेखक—

प्रयोग विषय—१-मलेरिया २ सन्निपात ३ संग्रहणी

"श्री वैद्य जी के प्रयोग औषधि नामावलि की दृष्टि से उत्तम प्रतीत होते हैं, आप वयोवृद्ध अनुभवी चिकित्सक हैं, हम पाठकों से अनुरोध करेंगे कि वे आपके प्रयोगों का परीक्षण करें विशेषतया सन्निपात रोग पर जब कि जहां प्राणों के जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित होता है।"

—सम्पादक।

मलेरिया (विषम ज्वर) पर—

अर्क मूलत्वक (आक की जड का बकल)
कनक (धत्तूर) मूलत्वक
कञ्जा की जड का वकल या फल की मींग
—समभाग ले चूर्ण कर तुलसी स्वरस की भावना देकर चने प्रमाण गोली बनाले।

अनुपान—दुग्ध, सौंफ का अर्क, गुलाब का अर्क, मुंडी अर्क रोगी की प्रकृति के अनुसार कुनैन-वत प्रयोग करे। आवश्यक समझे तो प्रथम इसके साथ ही या अकेला रेचन योग दे पेट शुद्ध करले।

सन्निपात [प्रलापक]—

जिसमें रोगी अधिक बकता है और उठ-उठ कर भागता है—

केशर प्रबाल भस्म अहिफैन
स्वर्ण सिंदूर या रस सिंदूर दोनों में से एक
—समभाग लेकर मटर समान वटी (जल में घोट कर) बनाले।

अनुपान—अष्टावशेष जल। मात्रा—१ गोली। प्रथम-मात्रा में ही १ घण्टे में रोगी के उपद्रव शांत हो जाते हैं कदाचित ही दूसरी तीसरी मात्रा देनी पडती है। स्मरण रहे कि उपद्रव शान्त होने पर किसी २ रोगी का शरीर ठंडा होजाता है यदि ऐसा हो तो किसी गरम औषधि की एक मात्रा देदे जैसे कस्तूरीभैरव, चन्द्रोदय अभ्रक आदि।

नं० २-

—शल्या (मेहजन्तु) की अन्तड़ी सुखा कर चूर्ण करले।

मात्रा—१ माशे से तीन माशे तक, गरम जल से देने से शीघ्र लाभ होता है। उपरोक्त योगों के परीक्षक अवश्य सन्तुष्ट होंगे।

नं० ३.

सन्निपात में जब रोगी का कफ शब्द करता है और स्वास अवरोध करता है ऐसी दशा में—

कच्छप (कछुआ) (जलजन्तु) की खोपडी की भस्म घृत या नवनीत में मिला कर गले और

...फ बाहर निकलता है और
...हो जाती है।

जिधर के नथुने में औषधि नस्य दे (सुंघादे) उधर के आधे अङ्ग का ज्वर उतर जाय ऐसा योग—

तुत्थ (तूतिया) का वस्त्रपूत चूर्ण कर ५० भावना विदाल स्वरस या क्वाथ की (उत्तम स्वरस है) ५० भावना कड़वी तोरई के स्वरस की और ५० भावना नीबू के रस की देकर रखले। हुलास सूंघने की भांति सुंघाने से एक नथुने से आधे अङ्ग का और दोनों नथुनों से सूंघने पर सर्व अङ्ग का ज्वर उतर जाता है। इस योग से वातश्लेष्म ज्वर (इन्फ्लुऐंझा) में आश्चर्य-जनक लाभ होता है। यह मेरा स्वयं अनुभूत है।

चढ़े हुये ज्वर को डाक्टर लोग एन्टीफैब्रिन .निस्टीन, एसप्रीन आदि देकर उतारते हैं उससे कहीं अच्छा योग निम्न लिखित अनुभूत है। रत्नागिरी रस (जो वैक्रांत का योग है) १ रत्ती मधु ६ माशे से देकर ऊपर से १ तो० अमृतारिष्ट ६ माशे जल मिलाकर दें ५ मिनट में ज्वर उतर जाता है और विशेषता यह है कि उपरोक्त डाक्टरी औषधियों से कभी-कभी रोगी की मृत्यु भी होती देखी सुनी गई है। परन्तु इस योग से मृत्यु का भय नहीं है।

संग्रहणी पर अनुभूत योग--

—कुड़ा की छाल का घन सत्व इतना करे कि सूखा चूर्ण हो सके, उसमें ७ भावना पाताल गुरुडी (छिलहिंटा, ग्रामीण लोग जल जमुनी भी कहते है जो मेरे यहा भी जंगल मे होती है) के स्वरस की देकर रखलें। मात्रा—२ माशे।

अनुपान—अनार का रस ढाई तोला।

पथ्य—पके बेलके गूदे को तक्र में घोल कर पियें। स्मरण रहे कि कच्चे बेल की गिरी विशेष गुण रखती है।

सोंठ	१॥ तोला
काली मिर्च	१॥ तोला
पीपल छोटी	१॥ तोला
यवक्षार	६ माशे
मदार की कली	६ माशे
सोहागा भुना	६ माशे
लौंग	६ माशे
जीरा सफेद	६ माशे
हींग शुद्ध	३ माशे
काला नमक	६ तोला
सेंधा नमक	५ तोला
सत्त निम्बू	७ तोला

विधि-सत्त निम्बू को छोड़कर बाकी सब दवा को कूट कपड़छानकर के सत्त नीबू को पानी में घोल कर जितने में दवा सन सके मिला कर मटर के बराबर गोलिया बना लें।

मात्रा—एक से दो गोली तक।

समय—आवश्यकता पर दो बार सुबह और शाम।

अनुपान—गोली को खाकर ऊपर से घूंट दो घूंट जल पी लें।

पथ्य—हलका खाना खाना चाहिये।

रक्त प्रदर रक्तार्श रक्तपित्त के लिये-

संग जराहत	५ तोला
सोना गेरू शुद्ध	५ तोला

विधि—दोनों को पीसकर कपड़-छान कर ले और साफ शीशी में रख ले।

मात्रा—२ माशा।

समय—सुबह, दोपहर और शाम।

अनुपान-शर्बत अनार या ठंडा पानी के साथ अगर खूनी दस्त हों तो दही के साथ सेवन करें। अगर खांसी आती हो तो मुलहठी का सत्त भी उतनी ही मात्रा में मिलाकर सेवन करें।

पथ्य—गेहूं की रोटी और मूंग की दाल, लौकी की तरकारी ठंडी चीजें लें।

अपथ्य—लाल मिर्च, गुड़ गर्म चीजें इत्यादि।

[शेषांश पृष्ठ ७१५]

शर्बत फौलाद

दालचीनी	१ पाव
सितावर	१ छटांक
शहद असली	१ सेर
मीठे अनार का रस	आध सेर
सेब का रस	आध सेर
अर्कबेदमुश्क	१ सेर
शु० फौलाद चूर्ण	१ तोला
तेजाब फासफोरस	१ छटांक

—दालचीनी, सितावर को अनार के रस, सेब का रस अर्कबेदमुश्क में रात को भिगोदो, सुबह औटा कर चौथाई शेष रहने पर छानलो, शहद मिलाकर शर्बत बनालो। अब फौलाद के चूर्ण को तेजाब फासफोरस में बराबर का पानी डाल कर पकाओ, जब फौलाद हल हो जाय तब उतार कर शर्बत में मिलादो।

मात्रा—युवा मनुष्य को १ तोला और बच्चों को ३ से ६ माशे तक अर्कबेदमुश्क में मिलाकर दो या वैसे ही चटा दो, अर्क में अच्छा रहता है।

गुण— यह शर्बत हर प्रकार की कमजोरी दूर करता है, पट्ठों को मजबूत करता है ज्वर के बाद की दुर्बलता दूर करता है। मेदे को ताक़त देता तथा खून पैदा करता है।

श्रीयुत पं० छाबूराम जी बाजपेयी वैद्यराज

गोपाल दातव्य औषधालय, उसरीपुरा [कानपुर]।

पिता का नाम— वैद्य पं० शिवनारायण जी बाजपेयी

आयु—३७ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय—१—नेत्र रोग पर २—मलहम

"श्री. वैद्य जी ने अपने बड़े भाई श्री. प० देवकरण जी बाजपेयी वैद्यराज से जो कि प्रसिद्ध लेखक और सफल चिकित्सक थे शिक्षा प्राप्त की है। आप भी कई वर्षों से दातव्य औषधालय में चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। आशा है आपके प्रयोगों से पर्याप्त लाभ होगा।" —सम्पादक।

सर्व नेत्रहर वटी—

शंख चूर्ण	४ भाग
काली मिर्च	१ भाग
मनसिल	२ भाग
सेंधा नमक	½ भाग

विधि—बकरी के दूध में शंख-चूर्ण तथा मंसिल गाय के दूध मे, काली मिर्च स्त्री के दूध में, तथा सेंधा नमक घोड़े की लार में ६-६ घंटे हर वस्तु को अलग २ घोटें फिर चारों औषधियों को एक में मिलाकर १२ घण्टे खरल करें। तत्पश्चात् चना प्रमाण गोली बना साया मे सुखा कर स्वच्छ शीशी में भरलें।

प्रयोग विधि—१-१ गोली प्रातःसायं बकरी के दूध में घिस कर नेत्रों में अञ्जन की भांति लगावे।

गुण—जाला, फूला, माड़ा, धुन्ध, तिमिर, मोतियाबिन्दु प्रभृति समस्त नेत्र रोग दूर होकर अन्धा भी नेत्रसुख भोगने लगता है। प्रयोग परीक्षित है।

अद्वितीय व्रण नाशक मरहम—

नीम का स्वरस	२० तोला
सेम की पत्ती का स्वरस	२० तोला
घमिरा का स्वरस	२० तोला
बबूल की पत्ती का स्वरस	३० तोले
मेंहदी की पत्ती का रस	३० तोले
असली सरसों का तैल	२ सेर

—तेल लेकर पाक विधि से अग्नि पर तैल सिद्ध करले। फिर उसमे २० तोला मोम मिलाकर घोंटकर रखले। तत्पाश्चात् घाव को नीम के पानी अथवा पोटाश (लाल दवा कुयें वाली) से धोकर सुबह शाम पट्टी पर लगाकर चिपका दें। (प्रयोग परीक्षित है)।

गुण—यह प्रयोग हर घाव की प्रत्येक दशा में लाभप्रद सिद्ध हो चुका है।

नोट—यह दोनों प्रयोग स्वानुभूत तथा परीक्षित हैं।

श्रीयुत वैद्य कविराज जयरामदास जी पाराशर आयुर्वेदाचार्य

पाराशर औषधालय, कुठेडा जसवालां [होशियारपुर ।

पिता का नाम—	नाथूराम जी पाराशर
जाति—ब्राह्मण	आयु—२३ वर्ष

प्रयोग विषय-१-मलेरिया नाशक २-काम पर ३-छर्दि नाशक ।

मलेरिया नाशक

हजारदाना बूटी १ सेर लेकर कुचल कर आठ गुने जल में क्वाथ करके चतुर्थांश शेष रहने पर उतार लें, मल कर छान लें और कढाही से घन-सत्व मन्दाग्नि पर तैयार करें। फिर इसमें २ तोला काली मिर्च पीस कर मिलादें और बेर की गुठली के समान गोली तैयार करें, कोष्ट शुद्ध होने पर ज्वर चढ़ने से पहिले ३ गोली शीतल जल से खिलादें। (१-१ करके १ घण्टे के उपरान्त) ज्वर नहीं चढ़ेगा।

> "श्री पाराशर जी लगभग १४ वर्ष से चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। आप शिक्षित एवं अनुभवी वैद्यराज हैं। समीपवर्ती ग्रामों में आपकी अच्छी ख्याति है। आशा है आपके प्रयोगों से पाठकों को लाभ होगा।"
>
> —सम्पादक।

कामहर—

—सत्यानाशी मूल जोकि नर्म ही होवे, सुखाकर चूर्ण करलें इसमें समभाग काली मिर्च मिला लहसुन के रस से खरल करके चना प्रमाण गोली बनाकर रखलें, और एक गोली पानी से खालें, अथवा मुंह में रखकर रस चूसें, तीव्र काम २ दिन में शान्त कर देती है। अनुभूत है। तीव्र काम के मुंह में रख रस भी चूस सकता है।

मलेरिया ज्वर के कारण अथवा पित्तज छर्दिहर-

वांसा पत्र	१ नग
शुष्क आमला गुठली रहित	२ नग

—घोटकर २॥ तोला जलमें छान लें और मधु ६ माशे मिला कर शंखभस्म २ से ४ रत्ती खिला कर पिलादें। बस उसी समय छर्दि बन्द होजायगी। शतशोनुभूत है।
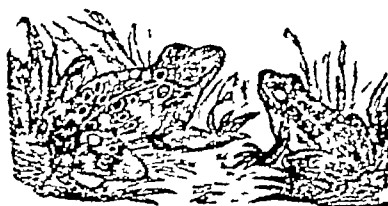
भिषग्वर पं० यमुनाप्रसाद जी

आयुर्वेद शास्त्री,

श्र नन्दविजय आयुर्वेद फार्मेसी, जबलपुर

—×—

—लेखक—

पिता का नाम — स्वर्गीय पं० देवकरण जी

आयु—३३ वर्ष जाति—नन्दवाण ब्राह्मण

प्रयोग विषय- १-विषम ज्वर २-नेत्र-रोग हर

"श्री. वैद्य जी ने जयपुर राजकीय आयुर्वेद विद्यालय से भिषग्वर परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप दस वर्ष से सफलतापूर्वक चिकित्सा कार्य कर रहे हैं तथा मोतीझला की चिकित्सा में विशेष अनुभव प्राप्त किया है। आशा है आपके निम्न प्रयोग पाठकों को उपयोगी प्रमाणित होंगे।"

—सम्पादक।

विषमज्वर तथा जीर्णज्वर पर-

क्वाथ द्रव्य—

सतौना छाल	४० तोला
चिरायता	१ सेर
गिलोय	२ सेर
नीम की छाल	२ सेर
अडूसा	१॥ सेर
क्वाथार्थ जल	३२ सेर

प्रक्षेप—

गोदन्ती भस्म	शुद्ध स्फटिक भस्म
करंज बीज	५-५ तोला
बंशलोचन	काली मिर्च
गिलोय सत्व	छोटी पीपर

—प्रत्येक २॥-२॥ तोला

—उपरोक्त क्वाथ द्रव्यों का क्वाथ करे। फिर चतुर्थांश रहने पर उसे छाने। पुनः उस क्वाथ को अग्नि पर चढ़ाकर उसका घन तैयार करना और घन तैयार होने पर तथा ठण्डा होने पर कपड़-छन प्रक्षेप द्रव्य की चीजे मिला देना और सुखा कर मटर के बराबर गोलियां बना लेना।

अनुपान—जल, ३-३ गोली दिन में ३ बार।

गुण—इससे मलेरिया, जीर्ण ज्वर, वात रक्त, रक्त-पित्त एवं हड़फूटन, चक्कर आना, नेत्र-दाहादि शीघ्र दूर होते हैं। यह सफल योग है यहां तक कि प्रारम्भिक राजयक्ष्मा तक को नष्ट करता है। रक्त-विकार तथा प्रमेह पर भी इसका अच्छा असर होता है।

नोट—यह प्रयोग विषमज्वर के लिये वस्तुतः उपयोगी है तथा हम पाठकों से आग्रह करते हैं कि वे इसे निर्माण कर प्रयोग करें। —सम्पादक।

नेत्र रोग हर काजल-

स्फटिक पुष्प (भुनी फिटकरी)	१ तोले
यशद पुष्प (सफेदा कास्तकारी)	१० तोले
निम्ब पुष्प	२ तोले
इलायची के दाने	६ माशे
नीलाथोथा भुना	३ माशे
रसौत	२ तोले
शु० अफीम	६ माशे

(शेषांश पृष्ठ ७२६ पर)

कवि० श्री. पं. कामेश्वर शुक्ल वैद्यराज
सताशी पो० सिकन्दरा [मुंगेर]

—लेखक—

पिता का नाम— श्री. प० श्रीकृष्ण जी शुक्ल

आयु—३६ जाति—शाक द्विपीय ब्राह्मण

प्रयोग विषय- १. ऋतु विकार [बाधक] २. व्रण नाशक

"श्री. वैद्यराज जी ने आयुर्वेद का अध्ययन सन्स्कृत कालेज, गया (बिहार) मे श्री हरिदेव मिश्र जी से किया है। अध्ययन काल मे आपने अपनी कुशाग्रबुद्धि के कारण सदैव छात्र वृत्ति प्राप्त की है। आपके सरल स्वभाव के कारण जनता आपसे प्रसन्न रहती है और प्रेम करती है। आप सुयोग्य चिकित्सक, संस्कृतज्ञ और आयुर्वेदज्ञ है" —सम्पादक।

बाधक हर प्रयोग—

काले तिल	१ सेर
गुड़ (शक्कर) पुरातन	१॥ सेर

—काले तिल को भून ले और शक्कर (गुड) की चाशनी में डाल कर ६१ मोदक बनाले।

—प्रात सायं १-१ मोदक धारोष्ण दुग्ध के साथ सेवन करे।

ऋतु धर्म होने के पूर्व पाच दिन निम्न प्रयोग को व्यवहार करे —

—चाय पीने का प्याला (चीनी मिट्टी की बनी) ४ तो० और कुमार कौनी (गोंद ढाक) ४ तो०

—दोनों का चूर्ण कर मिलालें और ६ माशे की मात्रा में प्रात सायं शीतल जल से सेवन करे।

ऋतु-धर्म प्रारम्भ होने पर यह औषधि बन्द करदें।

गुण—ऋतु-कष्ट, ऋतु-रोध, अनियमित ऋतुस्राव, हस्त-पाद दाह, बाधक वेदना की शतशोनुभूत अव्यर्थ महौषधि है। ऋतु-विकार को दूर कर सन्तान-हीना को पुत्र रत्न प्रदान करती है।

नोट—बाधक हर प्रयोग करने पर जिस स्त्री का ऋतु-रोध अधिक दिनों से है, उसे ऋतु आरम्भ में कुछ सुस्ती आजाती है, अत. ठंडा तैल, पंखा, शीतल जल इत्यादि का व्यवहार करना चाहिये।
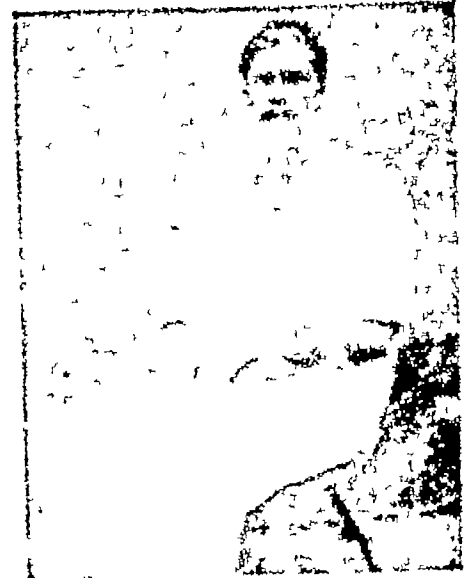
व्रणहर मलहम—

नीम का तेल	पाव भर
मोम	एक छटाक
रसकपूर (बाजार में प्राप्त होने वाला)	३ माशे

—नीम के तैल को कढाही में अग्नि पर पकावें। तैल फैन रहित होने पर और धुंआ निकलने लगे तब मोम डालदे और रस कपूर डालदें। मोम पिघल जाने के कुछ देर बाद में पीतल के बडे कटोरे (पात्र) मे बासी पानी देकर उसमें उस तैल को डालदें। तैल जम जायगा जल को फेंक कर जमा हुआ मलहम को किसी कांच पात्र में रखदें।

गुण—सभी प्रकार के व्रण नारी-व्रण, अग्निदग्ध, आघात जन्य शोथ और व्रण की अचूक दवा है यह व्रण में अकुर पैदा कर, मांस को पूरा कर देता है। मवाद निकाल कर व्रण शुद्ध करता है। यह सभी प्रकार के व्रणो की शतशोनुभूत दवा है। उपदंश-जन्य व्रण के लिये विशेष हितकर है।

श्री. डा० रामजी पाण्डेय आयुर्वेद शास्त्री

H. M. B चकिया बाजार, आरा।

—लेखक—
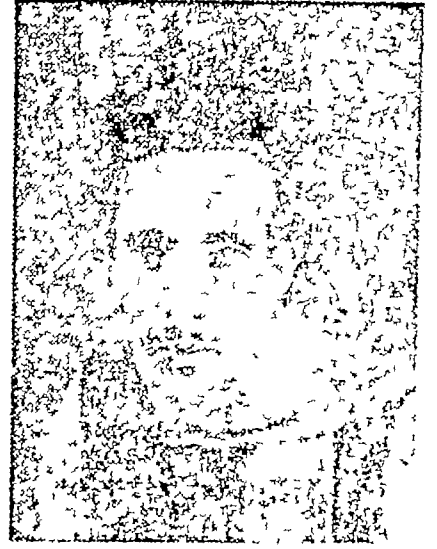
पिता का नाम— ०लक्ष्मीनारायण पाण्डेय

आयु—३५ वर्ष जाति— ब्राह्मण

प्रयोग विषय- १. बद्ध कोष्ठ २- दन्त रोग

"श्री. पाण्डेय जी ने आयुर्वेद एवं होम्योपैथी का अध्ययन किया है। तथा आप स्थानीय हाईस्कूल, संस्कृत एवं आयुर्वेद विद्यालय के वाइस प्रेसीडेण्ट एवं सदस्य हैं। चिकित्सा करते हुये २८ वर्ष होगये हैं। आपके निम्न प्रयोग उत्तम प्रमाणित होंगे एसी आशा है।" —सम्पादक।

बद्ध कोष्ठ पर--

सनाय की पत्ती	३ तोला
बडी हरड	३ तोला
काला नमक	१ तोला

—इन तीनों का महीन चूर्ण कर कपड़े मे छान लें और किसी साफ बोतल में रख कर कार्क लगा दें। रात्रि में भोजन के उपरांत १ तोला चूर्ण खा कर दो चार घूंट गर्म पानी पी लीजिये। सुबह १० बजे तक दो-एक साफ दस्त अवश्य होंगे, जिससे शरीर में हलका-पन और प्रसन्नता मालूम होगी। इसमें जुलाव की तरह परहेज करने की कोई जरूरत नहीं है; शायद किसी को १ मात्रा देने पर दस्त नहीं हों तो दूसरी मात्रा भी दे सकते हैं, पर ग्यारह घण्टे के बाद।

दन्त रोग पर

सफेद जीरा, पीपर, मोचरस, बड़ी हरड का छिलका, सेंधा नमक —प्रत्येक १-१ तोला

—इन सब औषधियों को कूट-पीस कर कपड़-छन करलें और किसी बोतल में रख कर कार्क लगा दें। जब किसी के दांत मे दर्द या सूजन हो तो इसमें से थोडा सा लेकर दांत और मसूड़े में धीरे २ मले और लार गिरे उसे गिरने दें। इस तरह दो-तीन बार लगाने के पश्चात् निश्चय ही दांत का दर्द और सूजन कम हो जायगी। यह मेरा अनेक बार का सुपरीक्षित है, मैं स्वयं दांत रोगों से पीड़ित रहता था पर आज दो वर्षों से इसी की बदौलत चङ्गा हूँ। यह दांतों को दृढ़ करने में बहुत ही उत्तम है, विशेष गुण परीक्षा से ही ज्ञात होता है।

आयुर्वेद रत्न पं० ब्रह्मदत्त जी वैद्यराज

अध्यक्ष-कल्याण औषधालय, दातारपुर (होशियारपुर)

पिता का नाम— पं० नृसिंह दास जी

आयु—४१ वर्ष जाति—सारस्वत ब्राह्मण

प्रयोग विषय— १ उदर रोग २—सन्निपात

"श्री० वैद्य जी ने आयुर्वेद का प्रारम्भिक [illegible] अपने स्वर्गीय नाना जी से [illegible] किया था। संस्कृत [illegible] दातारपुर में विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने [illegible] दातारपुर लाहौर के [illegible] औषधालय में [illegible] के उपलक्ष्य में आपको उपरोक्त सभा की ओर से आयुर्वेद रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया। आप सन्निपात, प्रमेह, प्रदर एवं बालरोगों के विशेष चिकित्सक हैं।"

—लेखक— —सम्पादक।

उदर रोग पर—

चारों अजवायन	१-१ छटांक
सत अजवायन	६ माशे
सत पोदीना	६ माशे
नवसादर	२॥ तोला
काली मिर्च	१ तोला
सेंधा नमक	५ तोला
सत निम्बू	३ माशे
गेरू	२ तोला

विधि—प्रथम चारों अजवायन स्वच्छ करलें फिर अन्य चीजें कूट-पीस कपडछन कर मिलादें। मात्रा—१ माशा से ३ माशा तक दें।

गुण—यह चूर्ण बड़ा स्वादिष्ट, रुचिकारक, उदररोग नाशक है, भूख को बढ़ा कर मनको प्रसन्न करता है।

सन्निपात पर—

शु० पारद	शु० गंधक
ताम्र भस्म	स्वर्ण माक्षिक भस्म
रस सिंदूर	शु० विष
शु० सौभाग्य	शु० जयपाल
जायफल	जावित्री
पत्रज	छोटी हरड़

—प्रत्येक १-१ तोला

केशर	६ माशे
कस्तूरी	३ माशे
अम्बर	३ माशे
फादजहर हैवानी	३ माशे

विधि—प्रथम पारद गंधक की कज्जली करें, फिर भस्में मिलादें इसके अनन्तर बाकी चीजें कूट पीस

(शेषांश पृष्ठ ७२६ पर)

डाक्टर परमानन्द सिंह जी श्रीवास्तव

शान्ती भवन, चेतगंज बनारस।

पिता का नाम— स्वर्गीय मुन्शी रघुनाथ प्रसाद जी
आयु— ४१ वर्ष जाति— श्रीवास्तव

प्रयोग विषय — १. नाडीव्रण २. बिवाई फटना ३. यकृत वृद्धि पर

"श्री० डाक्टर साहब कलकत्ता में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् १५ वर्षों से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं तथा अपनी सफल चिकित्सा की धाक उच्च वर्ग के व्यक्तियों पर भी जमा रखी है। आपके निम्न तीनों प्रयोग आशा है पाठकों के लिये उपयोगी प्रमाणित होंगे।" —सम्पादक।

नाडी व्रण [नासूर] पर मलहम—

१ तोला ईंगुर (कलकत्ते का अच्छा होता है) जिसकी बिन्दी लगाई जाती है, ८ तोला तैल अलसी का साफ। दोनों चीजे मिला कर मन्द आग से पकाइये। जब ईंगुर जल कर काला पड जाय और तैल गाढा हो जाय तब उतार कर किसी चौड़े मुंह की शीशी या कलईदार डिब्बे में रख लीजिये।

प्रयोग—साफ स्वच्छ कपड़े की पट्टी जखम से जरा बडी बना कर यह मलहम उस पर लगाइये और व्रण पर चिपका दीजिये, नासूर के अन्दर मवाद निकलता जायगा और व्रण सूखता चलेगा। पट्टी हट जाय तभी बदल लीजिये, नहीं तो मवाद जो ऊपर आए पोंछते रहिए और पट्टी यथा-स्थान लगी रहने दीजिये।

नोट—पुराने जख्म को कभी २ नीम के पानी, कार्बोलिक लोशन या अच्छे साबुन से साफ कर लेना चाहिये।

बिवाई फटने पर—

एक मोटी मूली के पत्ते अलग करके मूली को बीच से काट लीजिये, पुन. मोटे हिस्से से एक कतरा आध इञ्च मोटा और अलग कर लीजिये यह ढक्कन का काम देगा। नीचे के टुकड़े से थोडा २ गूदा निकाल कर गिलास जैसा बना लेवें। इसी गिलास में १ भाग मोम देशी और ३ भाग तैल चमेली भर कर उपरोक्त कटे हुये इसी मूली के ढक्कन को रख कर चार-पांच सींक लगा लेवें जिससे वह खुल नहीं सकेगा। इसे भौरी की आग अर्थात् घास-फूस पत्तियों को जला कर बुझा देने पर जो अग्नि बच रहे उसे उसमें सीधी गाढ देवे। ठण्डी होने पर निकाले और सूखी हुई मूली के अन्दर का मलहम किसी चौड़े मुंह की शीशी या चीनी मिट्टी के डिब्बे मे रख लीजिये।

गुण—बिवाई फटना, जाड़ों में हाथ-मुंह के फटने में तो रामबाण है और भी जहां विलायती

(शेषांश पृष्ठ ७२६ पर)

(पृष्ठ ७२१ का शेषांश)

पिपरमेंट	६ माशे
कपूर	६ माशे
गुलाब जल	मुलहठी
त्रिफला क्वाथ	निम्बत्वक क्वाथ

विधि—प्रारम्भ की पाचो औषधियो को महीन पीसकर तथा कपड़-छन करके खरल मे १ दिन घोटे। दूसरे दिन रसौत को गुलाबजल में घोलकर कपड़े से छाने फिर उसको खरल मे थोड़ा २ डालकर घुटाई करे। ३ दिन तक रसौत में घुटाई करे। इसी तरह त्रिफला क्वाथ तय्यार करे और उसके ऊपर के निथरे भाग से ३ दिन घुटाई करे, फिर मुलहठी क्वाथ से ३ दिन घुटाई करे, फिर निम्ब-त्वक क्वाथ तैयार कर ३ दिन उसमें घुटाई करें। क्वाथों की घुटाई समाप्त होजाने पर, अफीम गुलाब जल में घोलकर ३ दिन उससे घुटाई करे। अन्त मे कपूर और पिपरमेंट गुलाबजल मे डाल १ दिन घुटाई करे और सुखाकर शीशी में बन्द कर रख लेवे।

गुण—इससे नेत्रों की लाली, पानी ढलकना, नेत्र-शोथ नेत्रों की जलन, खुजली, धुन्ध और रोहे नष्ट होते हैं। नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। यह काजल हमारे यहा दीर्घकाल से व्यवहृत होता है और अनेक व्यक्ति इससे लाभ उठा चुके हैं।

(पृष्ठ ७२४ का शेषांश)

कपड़छान कर मिलावें। केशर—कस्तूरी, अम्बर, फादजहर हैवानी प्रथक २ पीस कर मिलावें। फिर अद्रक, भृङ्गराज, कण्टकारी, अपामार्ग इनके स्वरस की १-१ भावना देकर मुद्ग प्रमाण वटी बनालें।

मात्रा—१ वटी ४-४ घण्टे बाद, तापमान कम होने पर न दें।

गुण—इससे स्वेद आकर ज्वर भी उतरता है, अधिक स्वेद आने पर द्राक्षासव का सेवन करायें। बड़ा प्रभावशाली रस हैं।

अनुपान—गर्म जल, लगा हुआ पान।

नोट—सन्निपात का तो दुश्मन है, अनुपान भेद से कई रोगों पर प्रयोग कर सकते हैं। सन्निपात आठ प्रकार का ज्वर प्रतिश्याय, आदि रोगों पर अक्सीर है।

(पृष्ठ ७२५ का शेषांश)

जाम्बुक जैसी दवा काम न करे वहा लगा कर इसका चमत्कार देखिये।

यकृत बढ़ने पर -

गुग्गुल	१ तोला
सिरका	१० तोला

—गुग्गुल को किसी साफ खरल में सिरके के साथ खूब घोट कर बढ़े हुये यकृत से थोड़े बड़े आकार का कपड़ा उसमें भिगो दीजिये और पट्टी की तरह पेट पर इस प्रकार चिपका दीजिए कि बढ़ा हुआ यकृत उसके नीचे आजाए, क्रमशः सूजन कम होगी और अच्छे हो जाने पर अर्थात् यकृत के स्वाभाविक रूप मे आजाने पर पट्टी स्वयं छूट जाएगी। यदि बच्चों को पट्टी से कष्ट जान पड़े तो केवल लेप भी किया जा सकता है। यह प्रयोग यकृत में विशेष लाभप्रद है। फिर भी प्लीहा अर्थात् तिल्ली बढ़ने पर भी इसी प्रकार काम में लाया जा सकता है।

वैद्यराज श्री० स्वामी ईश्वरदास जी शास्त्री

भिषगाचार्य काव्यतीर्थ आयुर्वेद प्रधानाध्यापक जैन संस्कृत कालेज, जयपुर।

प्रयोग विषय १ क्षत [घाव] २ श्वास

क्षतारि मलहम—

कत्था	राल	नीलाथोथा
कबीला	मुरदासङ्ग	गन्धा विरोजा
मोम		—सातों १-१ तोला।
तिल तैल		२ तोला

विधि—प्रथम तैल को गर्म कर उसमें मोम, विरोजा, राल पीसकर डाल दें, सबके मिल जाने पर अन्य चीजें भी कपड़छन कर के मिला दे।

—इस मलहम को कपड़े पर लगाकर उपयोग में लेने से यह हर प्रकार के व्रण को साफ कर घाव को भर देती है।

नोट—मलहम लगाने से पूर्व व्रण को निम्ब क्वाथ मे यदि स्वच्छ कर शुष्क कर लिया जाय तो मलहम अपना असर शीघ्र करेगी। —सं०।

श्वासान्तक रस—

शु० पारद	१ तोला
शु० गन्धक	१ तोला
काले धातूरे के बीज	१ तोला

—सर्व प्रथम पारद और गन्धक की कज्जली करे, फिर इस कज्जली में धतूरे के बीजों के चूर्ण को मिलाकर अद्रक के रस मे ३ पहर घोटे, फिर इसके पश्चात् सुखा कर रख लें।

गुण—मधु और घृत के साथ १ से ३ रत्ती तक की मात्रा में देने से सभी प्रकार के श्वास व हिक्का में विशेष लाभ पहुंचाता है।

इस योग को प्रयोग करते समय ऊपर से यदि कोहला (कूष्माण्ड) बाल का काथ पिलावें तो और भी अच्छा रहेगा।

"*श्री स्वामी जी का जन्म १६१८ मे हुआ।* १ वर्ष पश्चात ही आपके माता-पिता चल बसे और आपको दादू पंथी बना लिया गया। आपने संस्कृत व साहित्य की कई परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। स्वामी लक्ष्मीराम चिकित्सालय में आपने प्रायोगिक ज्ञान भी प्राप्त किया है। स्वामी जयरामदास जी एवं राजवैद्य प० नन्दकिशोर जी के आप प्रिय शिष्यों में हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग अवश्य ही सफल प्रमाणित होंगे ऐसा विश्वास है। पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

श्रीयुत वैद्य गंगाप्रसाद जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

नागझरी पो० शेगांव [बरार]

पिता का नाम— पं० सूर्यमल जी दोसे

आयु २७ साल जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय— १. आन्त्रिक ज्वर २. उन्माद

"वाराणसीय व्याकरण शास्त्री परीक्षा, बङ्गाल संस्कृत एसोसिएसन की साहित्यतीर्थ परीक्षा, विद्यापीठीय आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। १ वर्ष से इसी विद्यालय में प्रधानाध्यापकत्व व कुर्की महाद् जी ट्रस्ट द्वारा सञ्चालित "श्री भागवत् वम आयुर्वेदिक निर्माण कार्यालय" में प्रधान रसायनाध्यक्षत्व का सेवा-भार लिया है। यहां आने के पूर्व निजी औषधालय में रुग्णों की सेवा व आयुर्वेद के सिद्ध प्रयोगों की गवेषणा करते रहे थे। आशा है आपके प्रयोग उपयोगी सिद्ध होंगे।"

—सम्पादक।

आन्त्रिक ज्वर —

अभ्रक भस्म शतपुटी
लवंग चूर्ण
—प्रत्येक १-१ रत्ती

सत्व गिलोय ४ रत्ती

मुक्तापिष्टि आध रत्ती

सोना गेरू (शुद्ध) २ रत्ती

विधि—दिन में तीन बार अर्क ब्राह्मी २ तोले के साथ देवें। यह प्रयोग गर्भवती स्त्री व सुकुमार मनुष्यों के लिये अत्युत्तम सिद्ध हुआ है।

उन्माद पर—

ब्राह्मी जवासा कमलफूल
नागरमोथा —प्रत्येक ६-६ माशे

—इन सबको १ सेर पानी में औटाकर १० तोले पानी अवशेष रहने दे। व इसके दो विभाग करके (५ तोले सुबह व ५ तोले शाम के लिये किसी सीसी रखलें)

प्रवालपिष्टि (ब्राह्मी अर्क में २१ दिन घोटी हुई)

छोटी इलायची का चूर्ण

दोनों —२-२ रत्ती

मुक्तापिष्टि १ रत्ती

—इस तरह १ पुड़िया बनाकर सुबह-शाम ५ तोले काढ़े के साथ पीने को देवे। सिर में मालिश के लिये शतधौत गाय का घी उपयोग में लें। भलीभांति प्रयोग करने से सब तरह के उन्माद २१ दिन के प्रयोग से दूर हो सकते हैं। प्रयोग के पूर्व २-४ दिन विरेचन देकर कोष्ठ शुद्धि कर लेनी चाहिये।

श्री० सियाप्रसाद अष्ठाना आयुर्वेदरत्न वैद्यभूषण

एच० एम० बी० एस० साहित्य मनीषी, अष्ठाना पूअर डिस्पेन्सरी, बसन्त पट्टी
॥ शिवहर (मुजफ्फरपुर) ॥

—लेखक—
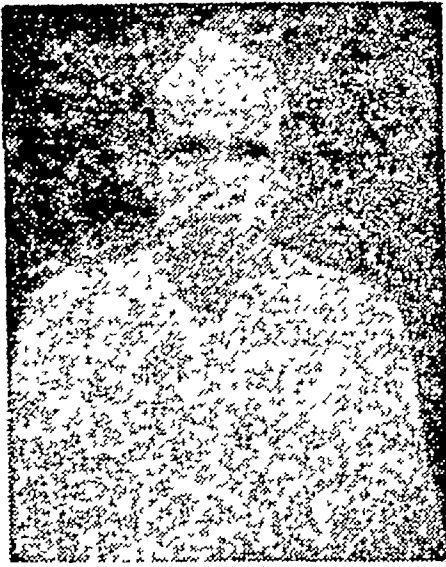
पिता का नाम— श्री मुंशी कमलाप्रसाद जी ।

जाति—अष्ठाना कायस्थ आयु—३८ वर्ष

"श्री अष्ठाना जी ने संस्कृत की मध्यमा परीक्षा देकर आयुर्वेद का ज्ञान गोरखपुर के सुप्रसिद्ध वैद्य श्री० प० रामावतार शर्मा जी से प्राप्त किया। कलकत्ता इन्स्टीट्यूट से आयुर्वेद रत्न और एच. एम बी एस. की परीक्षा पास की है। १२-१३ वर्ष से घर पर ही एक डिस्पेन्सरी (अष्ठाना पूअर डिस्पेन्सरी) खोलकर चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं।

आपकी कवितायें और लेख हिन्दी पत्रों में प्रकाशित हुआ करते हैं। हिन्दी में साहित्य-भूषण की परीक्षा पास की है। आपके निम्न प्रयोग अवश्य सफल प्रमाणित होंगे।" —सम्पादक ।

खून बन्द करने के लिये

ककरौंधा का स्वरस	१ सेर
काली मिर्च संगजराहत	२-२ ताले

विधि—कुकरौंधे के स्वरस को कलईदार बर्त्तन में रख मन्द २ अग्नि से औटावें। औटाते समय लकड़ी से बराबर चलाते रहें। जब घनसत्व की तरह गाढ़ा हो जाय तो उतार कर शीतल होने पर काली मिर्च और संगजराहत का कपड़-छन चूर्ण मिलाकर खूब घोंटे। इस तरह सात दिन घुटाई करने पर ३-३ माशे की गोलियां बनाले।

अनुपान—ताजा जल। पथ्य—रोगानुसार।

गुण—इस सरल प्रयोग से रक्तार्श, रक्तपित्त, रक्त-प्रदर, पेशाब में रक्त जाना बंद होता है किसी तरह शरीर से रक्त जाता हो, शर्तिया बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

पथ्य—खटाई मिर्च, गुड आदि गर्म पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये।

प्रदर और शुक्रमेहपर—

समसेरमाही मछली	गोखुरू
बंशलोचन	पोस्तदाना
गुलाब के फूल	हजरतजहूर
सफेद मूसली	ताल मखाना
सतगिलोय	सतबैरोजा
गोंद कतीला	कराएल
गोंद बबूल	अंजबार
संगजराहत	पंजादार सालब-मिश्री
छोटी इलायची	प्रवाल भस्म

(शेषांश पृष्ठ ७३१ पर)

है कि यह धातु क्षीण वाले की खांसी जिसके आराम करने में असुविधा होती है, उसमें भी मैं इसके द्वारा कभी असफल नहीं हुआ।

नोट—दवा भोजन के बाद मात्रा के बराबर जल मिलाकर पीनी चाहिये।

मस्तिष्क रोग पर

सफेद चन्दन		छार-छबीला
नागरमोथा		कपूर कचरी
पनड़ी		गुलाब का फूल
छोटी इलाइची		लौंग
बडी इलायची		तेजपात
कपूर	धनियां	खस
ककोल		हाहू वेर
दालचीनी		बालछड़
सुगन्ध वाला		सुगन्ध कोकिला
नरकचूर		नख

विधि—इन सब चीजों को १-१ तोला लेकर दरदरा कूट लो, बाद में एक कांच की बोतल में १। सेर काले तिल का तैल भरदो और ऊपर से यह दरदरा कुटी हुई औषधि उसमें डाल दे और बोतल में डाट लगाकर बन्द करदें जिसमें किसी ओर से हवा न प्रवेश कर सके। एक बोतल में न आवे तो दो बोतल में भर दो। फिर आठ रोज तक दिन में सूर्य की धूप में और रात्रि में चन्द्रमा की छाया में रख दे। प्रतिदिन बोतलों को दो-एक बार हिला दिया करे। आठ दस दिन के बाद तेल को छानलो और किसी साफ बोतल में भरकर कार्क लगादो, यह तेल निहायत खुशबूदार होगा, जो चित्त को प्रसन्न रखेगा।

गुण—मस्तिष्क एक दम शीतल रहेगा, मृगी, उन्माद हिस्टेरिया आदि सिर-रोगों में लगाने योग्य है। ज्वर में जहां पर खुशबूदार तैल निषेध है वहां यह लगाया जा सकता है।

(पृष्ठ ७२६ का शेषांश)

—प्रत्येक १-१ तोला

ताल मिश्री	१६ तोले

—सबको कूटकर कपड़-छन चूर्ण बनाकर बोतल में रखलें। मात्रा—६-६ माशे।

अनुपान—बकरी के दूध से सुबह-शाम।

गुण—इस प्रयोग से असाध्य प्रदर और शुक्रमेह २१ दिन सेवन करने और पथ्य से रहने पर आराम हो जाता है। यह प्रयोग परीक्षित है।

खुजली की शर्तिया दवा-

सरसों का तैल		२० तोला
मोंम		२ तोला
हरताल,	गंधक,	मंसिल
(तीनों अशुद्ध ही)		१-१ तोला

विधि—तेल और मोंम को पीतल के बड़े करछले में रखकर आग पर रखे। जब मोंम पिघल कर तेल में मिल जाय तब उतार कर पानी से भरी कांसे की थाली में धीरे २ तेल को गिरादे। थोड़ी देर बाद थाली से पानी नितार दे और हरताल गंधक, मसिल का कपड़छन चूर्ण मिलाकर खूब मथाई करें। मलहम जैसा बन जाने पर चौड़े मुंह वाली शीशी में रखलें।

गुण—किसी तरह की खुजली हो शौक से लगावें। सम्भव हो तो लगाने के दो-तीन घंटे बाद स्नान भी करले। इस दवा से सैकडों रोगियों को आराम हुआ है। तीन-चार बार के लगाने से ही खुजली नष्ट हो जाती है, परीक्षित है।

प्लीहा पर-

शुद्ध कसीस	१ तोला
शु० हींग	२ तोला
मूली का चूर्ण	४ तोले

—मूली के स्वरस में १-१ माशे की गोलियां बनालें।

अनुपान—उष्णोदक, प्लीहा ज्वर की अचूक दवा है।

वैद्य कृष्ण शशिकान्त मूलाभाई पण्ड्या

श्री० नारायण आयुर्वेद चिकित्सालय, पांजरापोल, अहमदाबाद।

—लेखक—

"आपका जन्म संवत् १९६९ में हुआ, आपको आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध स्वर्गीय पं० नारायण शङ्कर, देवशङ्कर जी अहमदाबाद का सहयोग प्राप्त हुआ और आपने सन् १९३६ से पहिले विद्यापीठ की और बड़ौदाराज की आयुर्वेद परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। आपने अहमदाबाद वैद्य सभा के मन्त्री पद पर रह कर १९३७-३८-३९ तक तथा १९४३ से १९४७ तक वैद्य समाज की सेवा की है। आपने "अर्शरोग चिकित्सा पद्धति" नामक गुजराती भाषा में पुस्तक प्रकाशित की है और "योगशतक" का अनुवाद भी किया है, अहमदाबाद में "आयुर्वेद सेवा संघ" के आप वर्तमान प्रमुख हैं। गत तीन साल से आप नि० भा० व० आयुर्वेद विद्यापीठ के अहमदाबाद के केन्द्राध्यक्ष हैं और गत वर्ष से विद्यापीठ की कार्यकारिणी के सदस्य भी हैं।

—सम्पादक।

अर्शाङ्कुर हर योग

पूर्ण चन्द्रोदय	लवंग चूर्ण
स्वर्ण वर्क	तीनों १-१ तोला
लोहभस्म	अभ्रक
दोनों २-२ तोला	
त्रिकटु चूर्ण	३ तोला

—सर्व औषधि को खरल में ६ घण्टे तक पीसना फिर उसमें प्रमाणानुसार नागरवेल के पान के रस की एक दिन-भावना देना और मटर के बराबर गोली बना लेना। गोली के सेवन करने से पहिले पेट को साफ कर लेना यह गोली प्रातः छः बजे और शाम को खाने के दो घण्टा बाद चार गोली पान के साथ लेने से बहुत अच्छी तरह से पाचन होता है, अशक्ति दूर होजाती है और वजन बढ़ता है, स्वानुभव पूर्ण योग है।

विशूचिका पर—

मल्लचन्द्रोदय	१ रत्ती
पीपल चौंसठ पहरी	२ रत्ती

—जब हैजा हो जाय तब इस प्रमाण से आध-आध घण्टे बाद देते रहें। कलेजा में प्यास बढ़ने लगती है इसके लिये केवल प्याज (डुंगली) का रस दी दें, जब तक कि घबराहट बेचैनी दर्द दूर न हो जाय, अन्य कुछ भी न दें। घबराये नहीं, इस प्रयोग से आध घण्टा में हैजा में बहुत लाभ होजाता है और रोगी को शांति मिलती है।

श्री. स्वामी लक्ष्मानन्द जी वैद्यराज

मु० वाखासर पो० सांचोर [जोधपुर स्टेट]

—+—

"श्री. स्वामी जी ने हरिद्वार के प० धर्मदास जी वर्मा की सेवा मे रह कर आयुर्वेद का अध्ययन किया है तथा गत १२-१३ वर्षों से चिकित्सा-कार्य कर रहे है। प्रथम प्रयोग साधारण होते हुये भी लाभकारक हैं, हम भी इसे प्रायः बनाकर प्रयोग मे लाते हैं। क्षय रोग के लिये जो प्रयोग वैद्य जी ने लिखा है वह भी देखने में साधारण सा लगता है किन्तु वैद्य जी का इस पर अधिक विश्वास है, वैद्यजन परीक्षा करके लाभ उठावें।" —सम्पादक।

—लेखक—

नेत्र रोग पर-

फिटकरी मिश्री सैंधा नमक

—प्रत्येक १-१ तोला, गुलाब जल १ बोतल मे भरदे, ३ दिन बाद उपयोग में लावें। प्रातः २-२ बूंद आंख में डालें।

गुण—पानी गिरना लालिमा, आंख दुखना इत्यादि पर अच्छा काम करता है।

क्षय केसरी-

स्वेत मिर्च	फूली हुई फिटकरी
शुद्ध नौसादर	—हरेक १-१ तोला
बच्छनाग	६ माशा

—इनको खरल में घोट शीशी मे भरदें

मात्रा—१ माशे मिश्री के चूर्ण में दें तो क्षय, खांसी, श्लेष्मा, शरदी तथा बालकों की कुकर-खांसी जाती रहती है।

ता० १-३-४८ को एक क्षय रोगी मेरे पास आया जिसकी आयु ३०-३५ वर्ष की थी। श्वास भी था स्वर भंग होरहा था, अरुचि और सतत ज्वर रहता था कफ के साथ खून भी आता था। शरीर तमाम कृश होगया था।

मैंने सुबह को २ रत्ती क्षयकेसरी मिश्री में देकर ऊपर से बकरी का दूध १ पाव से आधसेर रुचि अनुसार पिलाया था। दोपहर को शहद के साथ १०-१२ रत्ती सितोफलादि चूर्ण देता था शाम को १०-१२ रत्ती सितोफलादि चूर्ण मे १०० पुटी अभ्रक भस्म २ रत्ती मिलाकर शहद मे देता था, दोनों समय ऊपर से द्राक्षासव पिलाता था। शरीर पर चन्दनादि तेल की मालिश कराता था। खुराक दूध, घी, गेहू, नाश्ते मे फल—अनार अंगूर आदि। ब्रह्मचर्य का पालन। ऐसे ४२ दिन का उपचार किया। वह रोगी निरोग हो पूर्ववत पुष्ट बन गया।

(शेषांश पृष्ठ ७३५ पर)

कवीन्द्र कौशल श्री० पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र आयुर्वेदाचार्य

रोगहरण औषधालय सांठन, पो० भल्लिया (खीरी)

पिता का नाम- श्री. पं० ललितकिशोर जी मिश्र
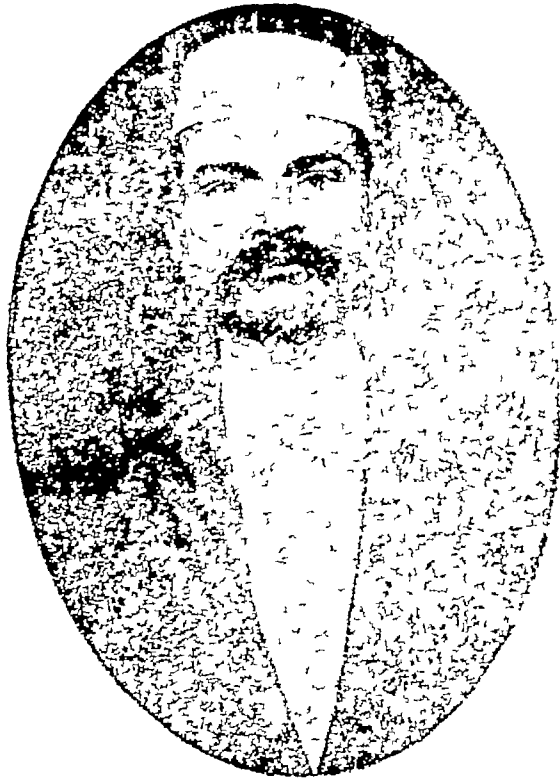
—लेखक—

नेत्र रोगों पर सुरमा-

काले सुरमा की डली १ तोला बाजार से लीजिये, नीम वृक्ष को जड में छिद्रकर अन्दर रख दीजिये, ऊपर से नीम ही की लकड़ी की डाट लगा दीजिये, २१ दिन के बाद उसी डली को केलाकन्द मे बन्द कर रख दीजिये, पुन. २१ दिन बाद एक गिद्ध के अंडे मे लवङ्ग सफेद इलाइची दानों से भर ४० दिन रख दीजिये, बाद में—

आंवा हल्दी	१ तोला
समुद्रफेन	१ तोला
कलमी शोरा	१ तोला
नवसादर	१ तोला
सफेद फिटकरी	१ तोला
काले शिरस के बीज	१ तोला
हरी कांच की चूडी	१ तोला
गुलाब जल	२० तोला

विधि—गुलाब जल में सब डली लौंग इलाइची दाना और अण्डे की सफेदी सहित ४० घंटे मे खरल करके शुष्क होने पर भीमसैनी कपूर पीसकर मिला दें। शीशी मे मजबूत डाट लगाकर रक्खे। प्रात. सलाई से लगाने से आख के कुल रोगों पर जादू का सा काम करता है।

गोक्षुरादि चूर्ण

गोक्षुरक. क्षुरक' शतमूली
वानरिनागबलातिबला च।
चूर्णमिदपयसानिनिशिपेयं
यस्यगृहेप्रमदाशतमस्ति ॥

गोखुरू	तालमखाना
शतावरी	कौंचबीज
गगेरन	कंघीबीज

विधि—प्रत्येक समभाग लेकर बारीक पीसकर चूर्ण

> "आपने सस्कृत मध्यमा तथा आयुर्वेद की वैद्य-भूषण वैद्य शास्त्री एव आयुर्वेदाचार्य की परीक्षाए उत्तीर्ण की हैं। २५ वर्षों से सफलतापूर्वक चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। गरीबों को दवा नि शुल्क देते है। आप बडे उदार एव सुन्दर कवि भी हैं।"
>
> —सम्पादक।

कर दूनी मिश्री या चीनी मिला गोदूध से प्रातः-सायं खाव ।

पथ्य—मिर्च, मिठाई, मूली, मछली, खटाई, स्त्री आदि से पथ्य रखे ।

नोट—यह योग चक्रदत्त ग्रन्थ का है, स्त्रियों के मद को भंजन करने वाला है । अनेक बार का अनुभूत है ।

सर्व ज्वर नाशक अनुभूत काढ़ा-

गिलोय	नीम की छाल
हाऊबेर	पद्मकाष्ठ
रक्त चन्दन	धनियां
चिरायता	रुसपत्र पीले
करंजपत्र	तुलसीपत्र
कुटकी	सोंठ
निशाथ	लघु पीपल
मिर्चस्याह	आलू बुखारा

—प्रत्येक ६-६ माशे। मिश्री ४ तोला

विधि—सब चीजें जौ-कुट करके इसकी २ खुराक २ दिन के लिये करना, आध सेर पानी में पकाकर ५ तोला रहने पर प्रातः पीना।

गुण—जिस तरह रसेन्द्रसार ग्रन्थ का वृहत्सर्वज्वर-हर लौह सर्वज्वरनाशक है, उसी तरह यह सर्व-ज्वर निर्मूल करने के लिये अमोघास्त्र है। इसके पीने का समय ७ दिन से २१ दिन तक है।

सर्व प्रदर नाशक परीक्षित दवा-

शास्त्रोक्त वर्णित ताजा अशोकारिष्ट प्रातः सायं नियम पूर्वक परहेज के साथ सेवन करें और साथ ही यह गुटिका सेवन करे।

चूहे की बीट	४ तोला
पुराना गुड़	१ तोला

—दोनों को खरलकर बेर के बराबर गोली बनालें, प्रातः सायं एक-दो गोली कच्चे दूध के साथ खावे तो सब तरह का प्रदर पुराने से पुराना तीन दिन में आराम होता है। २१ दिन सेवन करने से सदा के लिये इस रोग से छुट्टी मिल जायगी।

सुजाक की अचूक दवा -

बिरोजा तैल	७ बूंद
इत्र सन्दल	५ बूंद

—बतासा या चीनी ३ माशे में मिलाकर प्रातः सायं खाइये। ऊपर से कच्चा दूध पीना या जल पीना और नीचे लिखी दवा से पिचकारी भी देना।

नीला तूतिया २ रत्ती पीसकर आधी छटांक दही में मिला एक हा मे मथकर प्रातः सायं मूत्र नली में पिचकारी से दवा पहुचाकर ४ मिनट तक नली का मुख बन्द रखे और फिर दवा निकल जाने दें।

अण्ड कोष फूल गये हों तो—

जोंक लगवा कर रक्त निकलवा देना चाहिए, यह सब तरह के सुजाक की अव्यर्थ अचूक औषधि है।

(पृष्ठ ७३३ का शेषांश)

कृमिघ्न गुटिका—

शु० कुचला	५ तोला
वायबिडंग	१ तोला
अजमोद	५ तोला
शु० विष	१ तोला
पीपल	१ तोला
इन्द्रयव	१ तोला
नागरमोथा	१ तोला

—सबको ग्वार पाठे के रस में खरल कर मूंग प्रमाण गोली बनावें।

समय—प्रातःसायं, २-२ गोली पानी के साथ, फिर ऊपर से शु०एरण्ड तेल का जुलाब लें तो पेट के सर्व प्रकार के कृमि नष्ट होते हैं।

श्री० पं० जगदीशचंद्र शर्मा 'जौहर'

पानीपत [करनाल]

—लेखक—

पिता का नाम— श्री० प० लक्ष्मणदत्त जी ज्योतिषी

आयु—२४ वर्ष जाति—सारस्वत ब्राह्मण

प्रयोग विषय १. वाजीकरण २ उदर रोग ३. दद्रु

"आपने अंग्रेजी मैट्रिक आयुर्वेद की भूषण, शास्त्री तथा आचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। उर्दू के कवि आपकी कविता का आदर करते हैं, आपको यूनानी, एलोपैथिक होम्योपेथिक का भी थोड़ा-थोड़ा ज्ञान है, आप यत्र मे स्थानीय जयनारायण धर्मार्थ औषधालय मे चिकित्सा कार्य कर रहे हैं।" —सम्पादक।
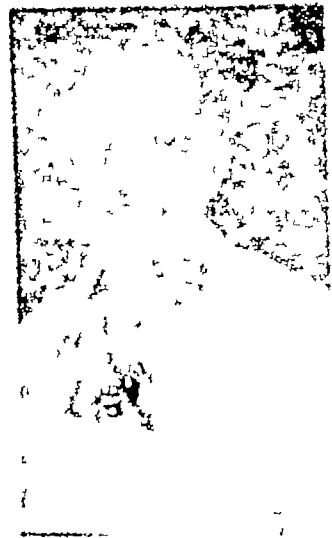
अमृत मोती—०

—शुद्ध हिंगुल १ तोला ले और इसको धतूरे के कच्चे फलों से कूटकर निकाले हुये ४ तोले रस में खरल करे, जब खरल करते २ सब रस सूख जाय तो इसको तोल ले जितना यह हो उससे तीन गुनी उत्तम लोह भस्म इसमें मिला ले और २४ घण्टे खरल करने के पश्चात काच की शीशी में भर कर रख ले।

मात्रा—दो रत्ती प्रात. दो रत्ती सायं।

अनुपान—मक्खन मलाई या १ तोला हलवा बादाम के साथ खाकर ऊपर से पाव सेर या यथा-शक्ति मिश्री मिला दूध पीले।

गुण—यह शक्ति-वर्द्धक अत्युत्तम तथा अनुपम योग है। जितने गुण वाजीकरण औषधियों मे होने चाहिये वह सब इसमें विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त विशेषत इससे जठराग्नि तीव्र होती है और भारी भोज्य पदार्थ भी पचकर रसादि धातुओं मे शीघ्र ही परिवर्तित होजाते हैं। कोष्ठ-बद्धता नहीं होने पाती, नवीन तथा शुद्ध रक्त उत्पन्न होकर शरीर में स्फूर्ति, हृदय में उमग और मुख पर कान्ति आजाती है। शरीर स्वस्थ शक्ति-शाली तथा सुडौल हो जाता है। मस्तिष्क की थकावट दूर हो जाती है लगातार की हुई यह औषधि शरीर के हर भाग पर रसायन जैसा प्रभाव डालती है। पुंसत्व को उभारने के साथ २ यह औषधि मनोविचार पर कोई बुरा प्रभाव नहीं डालती।

पथ्य—औषध सेवन-काल में प्रात साय हल्की व्यायाम और थोड़ा सैर अवश्य करें तथा गुड़, मिर्च, तैल खटाई इत्यादि तथा क्रोध आदि से बच कर रहे। किसी प्रकार की चिन्ता पास न आने दें और प्रसन्न रहे।

नोट—लोह भस्म जितनी उत्तम होगी उतना ही गुण विशेष होगा। इस योग को शरद ऋतु मे ही प्रयोग करावे, यह योग श्री० डा० सिद्धपाल जी राजपुरा का है।

०अर्क जौहर हाजमा—

हींग उत्तम १ माशा

नवसादर	१ तोला
नमक सैंधा	१ तोला
उत्तम अर्क सौंफ	१ बोतल (२४ औंस)

—प्रथम हींग को थोड़े से अर्क सौंफ में डालकर खरल करें पश्चात् नवसादर तथा सैंधा नमक भी बारीक पीस कर मिला दें। तथा सबको अर्क की बोतल में उलट लें, बोतल को दो-तीन बार उलटी-सीधी करके हिलाले जिमसे सब वस्तु भली प्रकार मिल जांय। बस औषध बन गई।

गुण—उदर विकारों यथा उदरशूल, अजीर्ण, आध्मान, मन्दाग्नि अरुचि यकृत दोष आदि के लिये कुछ क्षणों में ही श्वेत दूधिया रङ्ग का स्वादिष्ट अर्क तैयार होजायेगा।

यह योग १९४७ में मुझे वयोवृद्ध राजवैद्य पं० कुन्दनलाल जी जीन्द निवासी से प्राप्त हुआ था, तब से लगातार इसका प्रयोग करता आरहा हू, बहुत उत्तम सरल सस्ता शीघ्र ही बन जाने वाला तथा आशु-फल योग है।

मात्रा—प्रातः सायं २॥-२॥ तोला भोजनोपरान्त दें। बच्चों को इससे आधी और बहुत छोटे बच्चों को उनकी आयु बलाबल का विचार कर चौथाई या इससे भी कम दे सकते हैं।

रस शिखरी—

(श्री० लोलिम्बराज कृत वैद्य जीवनस्य)

पारद	गन्धक	जीरा सफेद
जीरा काला	हल्दी	दारु हल्दी
सिन्दूर	मैनशिल	काली मिर्च

—प्रत्येक सम भाग

विधि—प्रथम सम भाग पारद गन्धक लेकर यथा-विधि कज्जली करें। पश्चात् अन्य द्रव्य बारीक कपड़-छन चूर्ण कर इसमें मिलादे और सबको खूब खरल करे। २४ घण्टे खरल करने के पश्चात् इनको शीशी में भरकर रखलें।

प्रयोगविधि—इसमें से ६ माशा प्रमाण लेकर २ तोले गौ के १०१ बार धुले हुए मक्खन में मिला कर मलहम बनालें और जिस स्थान पर लगाना हो उसे भली प्रकार नीम के पत्तों के क्वाथ में जो बहुत ज्यादा गर्म न हो धोलें अथवा कारबोलिक साबुन मलकर गर्म जल से धो ले, फिर साफ धुले हुए खुरदरी तोलिया से पूछ लें। स्थान अच्छी प्रकार सूख जाने पर (खुश्क होने पर) इसमें से थोड़ा-थोड़ा मलहम चुपड़ दो परन्तु सफाई का विशेष ध्यान दें।

गुण—कैसा ही दाद चम्बल खारिश इत्यादि त्वचा रोग हो इसके कुछ दिन लगाने से अवश्य ही दूर हो जाते हैं, मेरा सैंकड़ों बार का तथा नित्य काम आने वाला योग है।

—लेखक—

पं० रामप्रसाद जी शर्मा वैद्य भिषक् शास्त्री

खेतड़ी (जयपुर)

—:—

पिता का नाम— श्री पं० रघुनाथ जी शास्त्री

आयु—३८ वर्ष

जाति—ब्राह्मण

"आपने अपने पिता [illegible] पर ही संस्कृत का अध्ययन किया और [illegible] जी से आयुर्वेद का अध्ययन [illegible] आयुर्वेद [illegible] संस्कृत विश्वविद्यालय से आयुर्वेद की परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। आप [illegible] चिकित्सक हैं तथा स्त्री पुरुषों के गुप्त रोगों की चिकित्सा में विशेष ख्याति प्राप्त है। आशा है आपके निम्नप्रयोग अवश्य [illegible] प्रमाणित होंगे।"

—सम्पादक।

नपुंसकता नाशक—

कस्तूरी	६ माशे
अनविधे मोती	१ तोला
सोने के वर्क	१॥ माशे
चादी के वर्क	६ माशे
वंशलोचन	१॥ तोला
छोटी इलायची के दाने	१। तोला
जायफल	१॥ तोला
जावित्री	२ तोला

निर्माण विधि—सर्व प्रथम मोतियों को गुलाब जल में १२ घंटे खरल करे। फिर चांदी सोने के वर्क डालकर इसी गुलाब जल मे ३ घटे खरल करे, फिर बाकी दवाओं को कपड-छान कर मिलाकर नागरपान का स्वरस देकर ३ दिन तक खरल करे। फिर इसकी दो-दो रत्ती की गोलियां बनाले और यह गोली एक या दो सुबह या सुबह साम रोगी के बलाबल के अनुसार देते रहो। धातु की कमी के कारण हुई नपुंसकता अवश्य दूर होती है, गोली के साथ आध २ सेर दूध भी पिलाना चाहिये, दो मास मे पूर्ण लाभ होता है।

पथ्य—दवा सेवन करते समय स्त्री से परहेज रखना अत्यावश्यक है।

शु० पारद	१॥ माशे
शु० गंधक	१॥ माशे
उत्तम वङ्ग भस्म	३ माशे

निर्माण विधि—उपरोक्त तीनों दवाओं को एक साथ मिलाकर खरल कर शीशी में रखलें। उत्तम मुरब्बा का आवला बड़ा एक धोकर कलियां अलग २ करलें और फिर १ रत्ती दवा इन कलियों से लगाकर सेवन करावे।

परहेज—गुड, तेल, लाल मिर्च, खटाई तथा स्त्री-प्रसग से परहेज रखना चाहिये।

गुण—नपुंसकता व प्रमेह रोगों का नाश करने में यह योग अच्छा काम करता है तथा एक मास में पूर्ण लाभ दिखला देता है।

जमजूं रोग के लक्षण व चिकित्सा—

जमजूं नाम का कृमि मनुष्य के शरीर में ही पैदा होता है और एक मनुष्य के शरीर से भी दूसरे मनुष्य के शरीर पर लग जाता है। यह कृमि छोटी जूं जो मनुष्यों के शरीर में होती हैं उसी के बराबर होता है। छोटे २ सफेद पंजे होते हैं, पोस्त के दाने के बराबर लाल, सफेद व काले रंग के यह कृमि होते हैं। मनुष्य के रोम-कूपों में इस प्रकार फिट होते हैं कि हाथ फेरने से कुछ भी मालूम नहीं हो सकता है। यह कृमि मनुष्य शरीर का रक्त-पान करते रहते हैं और मनुष्य कमजोर होता जाता है। यदि इन कृमियों को नाखूनों से निकाला भी जाता है तो कुछ चर्म भी साथ निकल आती है, बहुत मुश्किल से शरीर से यह अलग होता है। किसी प्रकार अलग कर भी लिया जाय और पृथ्वी पर छोड़ा जाय तो चलने लगता है। यह कृमि अधिकतर कांख (कक्ष) और गुप्तेन्द्री के पास जहां बाल होते हैं यानी नाभी के नीचे रान व फोतों पर अधिकतर रहता है।

चिकित्सा—

सफेद फिनाईल की गोली जो गरम कपड़ों में रखने के लिये होती हैं १ तोला लेकर ४ तोले सरसों के तेल में खरल करके मिलादे। इस तेल की मालिश करके ठंडे जल से स्नान करें।

एक सप्ताह के अन्दर ये सब कृमि मर २ कर गिर जावेंगे, शरीर हल्का हो जावेगा और फिर बहुत जल्द शरीर ताजा व पुष्ट व कान्तिमान होने लगता है।

योनि-कंडू के लक्षण व चिकित्सा—

योनि में मिथ्याहार विहारादि से कंडू (खुजली) होने लगती है, इस कंडू का भी कारण एक प्रकार के अदृश्य कृमि होते हैं। यह कंडू ज्यों २ चलती है कितना ही मन को वश में रखा जावे खुजाये बिना रहा ही नहीं जाता। खुजाने से स्थान लाल व लोहू-लुहान हो जाता है। स्थान नाजुक होने से फिर बड़ी पीडा होने लगती है।

योनि कंडू हो जाने पर जहां तक हो सके नहीं खुजलाना चाहिये।

चिकित्सा—

छोटी झाड़ी (झरबेरी) की जड़ का छिलका १ सेर और गुड़ आध सेर दोनों को लेकर पांच सेर जल में डालकर मिट्टी के पात्र में भर कर कूड़े के ढेर यानी गन्दगी के ढेर में गाढ़ देना चाहिये। एक महीने के बाद निकाल कर सराव निकालने की विधि से सराव निकाल कर रखे, और फिर निकाली हुई सराब से फिर दुबारा सराव निकालें। योनि में जहां कंडू चलती है वहीं इस शराब का एक फाहा रखदे, योनि कंडू-खुजली, आराम हो जावेगी। मामूली शराब भी इस काम में लाभकारी है, किंतु रोग निर्मूल नहीं होता, उपरोक्त बनाई हुई दवा इस रोग की अव्यर्थ औषधि है।

वैद्य भूषण पं० एन० पंडित V. M. S. A.
आयुर्वेद विशारद, झांसी।

पिता का नाम— श्री पं० रामप्रसाद जी वैद्य

आयु—३४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० पंडित जी के यहां चिकित्सा-व्यवसाय परम्परागत होता रहा है। आपने अंग्रेजी मैट्रिक उत्तीर्ण करने के पश्चात् आयुर्वेद का विधिवत् अध्ययन बुंदेलखण्ड आयुर्वेद कालेज झांसी में किया और आयुर्वेद विशारद एवं वैद्यभूषण की परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। सन् १९३८ से डिस्ट्रिक्ट कौंसिल आयुर्वेद डिस्पेंसरी दमोह में प्रधान चिकित्सक के पद पर सफलता के साथ कार्य कर रहे हैं।"

—सम्पादक।

दद्रुहर मल्हम—

वैसलीन पीली	आध सेर
गोआपावडर	२ औंस
एसिड क्राइसोफेनिक	१ औंस
कार्बोलिक एसिड	६ माशा
बोरिक एसिड	१ औंस
जिंकआक्साइड	१ औंस

—सब दवाओं को वैसलीन में मिलाकर शीशी में रखें, दाद वाले स्थान को खुजाकर फिर उसे साफ कर मल्हम लगावें तो कैसा भी दाद हो ठीक हो जायगा।

दद्रुहर मर्दन—

पुटास परमेंगनेट	१ औंस
टिं० आयोडिन	१ औंस
बोरिक एसिड	१ औंस
पानी	३ पाव

—सबको पानी में मिलाकर शीशी में रखले। फुरेरी से दद्रु स्थान को खुजा कर लगावें, ठीक हो जायगा।

पीड़ा नाशक तैल

कुचला	३ माशा
सिंगीया विष	३ माशा
धतूरा का रस	२॥ तोला
अफीम	२ माशा
नारायण तैल	१ तोला
महाविषगर्भ तैल	१ तोला
कपूर	६ माशा
तिली का तैल	१ पाव

विधि—कुचला सिंगिया को बारीक पीसकर धतूरे का रस व अफीम को तिलीके तैल में डालकर गर्म करें। जब ये सब चीज जल जांय तब छानकर उसमें कपूर तथा नारायण और विषगर्भ तैल को मिलाकर रखदें, तीन दिन के बाद काम में लावें।

गुण—पसली, गठिया तथा हर तरह के वायु-रोग को मलते २ दूर कर देता है।

नोट—दर्द वाले स्थान पर तेल रगड़ते २ सूख जाना चाहिये। फिर कुछ कपड़े से उस स्थान को सेंक देना चाहिए।

श्री. वैद्य सीताराम जी

मु० नेक पो० रोहड़ा (मेरठ)

पिता का नाम—
हकीम रिसालसिंह जी जमदग्न
प्रयोग विषय –
१-सूखी खांसी
२-सुजाक।

"श्री० वैद्य जी की माता एवं पिता दोनों चिकित्सा कार्य करते हैं। आप भी १९३८ से केन-डेवलपमेंट के औषधालय में चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। आशा है आपके निम्न प्रयोगों से पाठकों का उचित लाभ होगा।"

—सम्पादक।

सूखी खांसी पर—

वंशलोचन — मुलहठी
गोंद कतीरा — गोंद कीकर
कद्दू के बीज की गिरी —प्रत्येक ६-६ माशा
सत उन्नाव — ३ माशा
इलायची छोटी — ३ माशा
बादाम की गिरी — ५ दाने
लसोड़ा — ११ दाने
काली मिर्च — २ माशा
दालचीनी — ४ माशा

विधि—इस सबको कूटकर छानकर १० तोला शहद मिला लें। यह चटनी खांसी पर बहुत लाभदायक है।

मात्रा—२ माशा।

समय—दिन रात में ५-६ बार।

पथ्य—दूध, खटाई, छाछ, दही आदि।

सुजाक—

चन्दन — दालचीनी
कबाबचीनी — बिरोजा

—प्रत्येक का सत ३-३ माशा मिला कर। एक शीशी में रख लें। प्रातः सायं दो बार ५-५ बूंद बतासे में डालकर खावें।

पथ्य—खटाई, लालमिर्च, इत्यादि।

गुण—सुजाक को लाभप्रद है।

कविराज श्री० केशवराव चौधरी आयुर्वेदरत्न

श्री. कल्पतरु आयुर्वेदक औषधालय, रोंढ़ा [बैतूल सी. पी.]

पिता का नाम— स्वर्गीय श्री० मोतीलाल जी चौधरी

आयु—२५ वर्ष जाति—अग्निवंशी पवांर क्षत्रिय

प्रयोग विषय-देशी एस्प्रीन २-कुकुर काम

३-पथरी नाशक ३-देशी कुनाइन

"आपका जन्म मध्य प्रान्त मे बैतूल जिले के रोढा नामक ग्राम मे पवार (परमार) कुल में हुआ है। कुछ अङ्गरेजी पढने के बाद आपने आयुर्वेद शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया और हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से आयुर्वेद की वैद्य विशारद और आयुर्वेदरत्न परीक्षा उत्तीर्ण की तथा बुन्देलखण्ड आयुर्वेदिक कालेज झांसी से सर्जरी ट्रेनिङ्ग और दंतविज्ञान (डेंटिस्ट) का ज्ञान प्राप्त किया; साथ में गुरुकुल विद्यालय कांगड़ी मे मध्यमा आयुर्वेद की भी परीक्षा उत्तीर्ण की है।" —सम्पादक।

—लेखक—

देशी एस्प्रीन—

एक पाव रीठे का चूर्ण, एक सेर पानी में भिगो देवें। १ दिन रखकर दूसरे दिन मिट्टी की कढ़ाही में ढालकर पकावे। जब एक पाव पानी बाकी रहे तब उतार कर छान लें और १ तोला भुनी हुई फिटकरी डाल कर फिर इसे पकावें जब सब पानी पक या जल जावे तब नीचे बचा हुआ क्षार खुरच कर रख लें।

मात्रा—१ रत्ती से ४ रत्ती तक।

अनुपान—गर्म जल।

गुण—शरीर के किसी भी भाग में दर्द हो, एस्प्रीन के समान ही १५ मिनट मे बन्द कर देती है। इसमें पसीना भी आता है और आने वाले ज्वर को रोकती है। तथा चढ़े हुये ज्वर को उतारती है। यह मेरा अनुभूत प्रयोग है।

कुकुर खांसी पर—

पांचों नमक नवसादर
जवाखार सज्जी क्षार

—सब समान भाग लेकर मदार के (आक के) दूध के साथ घोट कर गोला सा बनाकर कपड-मिट्टी कर लघुपुट मे फूंक दे। बाद में निकाल कर १ रत्ती शहद के साथ सुबह शाम दे या हल्दी पीसकर तवे पर भून लें, जब वह कुछ काली हो जावे तो उतार लेवे। १ रत्ती हल्दी चूर्ण और १ रत्ती ऊपर का क्षार मिलाकर देने से सब प्रकार की खांसी शर्तिया दूर हो जाती है।

पथरी नाशक योग

मूलीक्षार गुलदावली क्षार
(अभाव में पाषाणभेद चूर्ण) खरबूजे के

(शेषांश पृष्ठ ७४५)

आयुर्वेद धुरीण पं० ताराचरण शर्मा

श्री माहेश्वरी औषधालय, मैलाना [मध्यभारत]

—+—

पिता का नाम— वैद्य पं० कुन्दनलाल जी शर्मा

आयु—६२ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग — १ महिलामृत मोदक — २ पुरुषामृत चूर्ण

"आपके यहां पीढ़ी-दरपीढ़ी से आयुर्वेद का कार्य चला आरहा है आपने अपने पिता जी से आयुर्वेद की शिक्षा पाई और स्वर्गीय राजवैद्य पं० मुरलीधर शर्मा फरुखनगर के पास रह कर आयुर्वेद का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया। धनिकों से औषधि का मूल्य लेना और असमर्थ रोगियों की नि:शुल्क सेवा करना ही आपका ध्येय है। चिकित्सा प्रेमियों के लिये आपने वही अनुभूत योग भेंट किये हैं जो आपके अनुभव में शत-प्रतिशत लाभकारी सिद्ध हुये हैं।"

—लेखक—

महिलामृत मोदक

इमली के बीजों का आटा	३० तोला
गोंद बबूल का	४ तोला
आंवले सूखे बीज रहित	५ तोला
गूलर के कच्चे फल छाया शुष्क	४ तोला
चोबचीनी	फूल मखाना
चरौंली (चिरौंजी)	—प्रत्येक २ २ तोला
नागकेशर	१ तोला
मगज बादाम	४ तोला
इलायची	१ तोला
शक्कर	६० तोला
गौ घृत	३० तोला

—उपरोक्त औषधियों में से कूटे जाने वाली दवाओं को कूटकर कपड़-छन कर लेना। मगज बादाम को छिलके साफ कर बारीक पीस कतर लेना। घृत को अलग गरम कर छान लेना चाहिये। सबको एकत्र कर घृत शक्कर मिलाकर ४-४ तोला के लड्डू बना लेवें। १-१ लड्डू सायं प्रातः लेवें। पाचन शक्ति कम हो तो एक लड्डू प्रातः-काल में लेवे।

गुण—स्त्रियों के गुप्त रोग, वात सम्बन्धी रोग, योनि रोग, श्वेत-रक्त प्रदर, पीड़ा आदि रोगों में अद्वितीय लाभकारी है। शरीर को स्वस्थ-कर गर्भाशय को बलवान बनाता है।

पथ्य—सात्विक भोजन, गरम वात-कारक वस्तु तैल खटाई का त्याग। जितने दिन दवाई लें उसके दुगने दिन तक पथ्य से रहें।

नोट—इमली के बीजों को चीये भी कहते हैं, इन्हे दो दिन पानी में डाल कर भाड़ में भुनवा लें। कूट कर छिलका साफ करलें व पीसकर आटा बनालें।

पुरुषामृत चूर्ण —

कौंच के बीज छिलके रहित कुटे छने २० तोला

(शेषांश पृष्ठ ७४५)

(पृष्ठ ७४२ का शेषांश)

छिलके का क्षार अपामार्ग क्षार
पलास क्षार यवक्षार

विधि—इन सबको समान भाग लेकर रखलें।

मात्रा—१ माशा दिन में ३ बार।

अनुपान—मूली के रस के साथ दे।

गुण—पथरी को तोड़कर बाहर निकालने के लिये अमोघ औषधि है।

देशी कुनाइन-

सप्तपर्ण (सतौने) की छाल २० तोले
चिरायता २० तोला

—दोनों औषधियों का काथ करें, फिर इस काथ में करज गिरी; फिटकरी, छोटी पीपल, हरड़ बड़ी समान भाग लेकर चूर्ण बनाकर उपरोक्त काथ में डालकर पकावें, जब कुछ अवलेह जैसा गाढ़ा हो जावे तब उतार कर शीतल होने पर मटर के बराबर गोलिया बनावें।

विधि—ज्वर आने के ३ घंटा पूर्व १ गोली गरम दूध के साथ देवे।

गुण—इससे शीतज्वर, तिजारी, चौथैया दूर होते हैं। यह योग किनाइन की तरह बहिरापन दृष्टि-दोष कर्ण पीड़ा, नींद न आना, शिर मे चक्कर आना आदि उपद्रव नहीं करता और गुणों मे किनाइन के तुल्य है।

(पृष्ठ ७४३ का शेषांश)

तोरई अध-कुटी २॥ तोला
ताल मखाना-साफ किये अध-कुटे २॥ तो.
वंशलोचन असली पिसा छना २॥ तोला
मिश्री पिसी छनी २७॥ तोला

—सबको मिला कर चूर्ण तैयार कर लेना।

सेवन विधि—६-६ माशा चूर्ण १० तोला गौ-दुग्ध के साथ प्रातः सायं लेवे, २१ या ४१ दिन।

गुण—धातु सम्बन्धी समस्त विकारों को दूर कर अत्यन्त वीर्य वृद्धि कर महा बलवान शक्तिशाली बना देता है।

पथ्य—सात्विक भोजन तैल खटाई गर्म वस्तु का त्याग, जब तक दवा सेवन करे।

(पृष्ठ ७४४ का शेषांश)

मालूम होने लगे तब ताप को कम कर दें। उस रात को भोजन न करे, दूसरे दिन साबुन लगाकर स्नान करे और कडुआ तेल बदन में लगावें। भोजन में मूंग की खिचड़ी ले, कण्डू खाज आराम हो जायेगा। पक्व कण्डू एक बार मे शुष्क कण्डू दो बार मे।

नोट—दवा सेवन के पहले रेचक दवा द्वारा कोठे को साफ कर लें।

अतिसार--

मोचरस रूमीमस्तंगी
शुद्ध हींग सोंठ
अहिफेन —पाचों-१-१ तोला
सिन्दूर १॥ तोला

—सभी दवा एक मे मिला कर बरियार (बला) के रस में एक पहर घोंटकर उर्द प्रमाण या १ रत्ती की गोली बनालें और छाया में सुखाकर शीशी में रख ले। आवश्यकता पड़ने पर ताजे जल के साथ तीन खुराक के नियम से लें। प्रथम खुराक मे ही फायदा होगा और तीन रोज मे आराम हो जायगा। किसी प्रकार के अतिसार के लिये अनुभूत है।

पथ्य मे—नमक न दे, केवल बकरी का दूध या दही भात हो।

डा० विष्णुप्रसाद जी मिश्रा

वैद्य वाचस्पति H. L. M. S. (होमियो०)
धन्वन्तरि औषधालय, बुरहानपुर सी० पी०

—लेखक—

पिता का नाम— पं० बालाप्रसाद जी मिश्रा

प्रयोग-विषय-- १-गर्मी आतशक

२--देशी एक्स्ट्रैक्ट वैलाडोना

"श्री० मिश्रा जी बहुत समय से आयुर्वेद पद्धति अनुसार चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। अब आयुर्वेद के साथ-साथ पाश्चात्य चिकित्सा (इन्जेक्शन आदि) का सहारा भी लेते हैं, क्योंकि आपकी धारणा है कि आयुर्वेद चिकित्सा ज्ञान को आधुनिक ढंग का बनाना परमावश्यक है। आपके औषधालय में हरिजनों को औषधि निःशुल्क दी जाती है।"
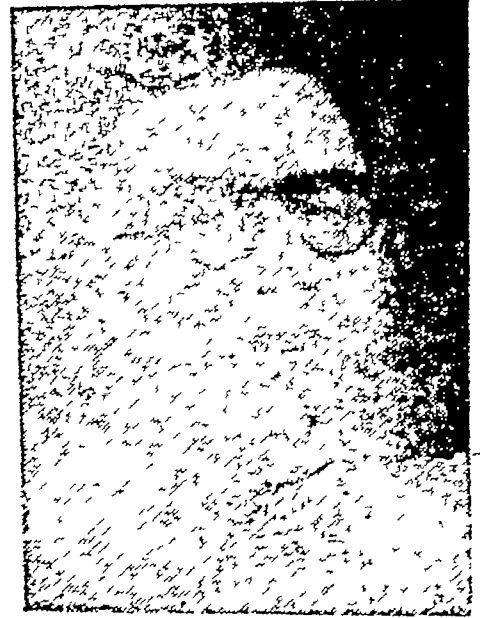
—सम्पादक।

योग नं० १

मकोय के पत्ते	३ पाव
मुनक्का	१० तोला
मिश्री	१० तोला
४ वर्ष का पुराना गुड़	२० तोला

निर्माण-विधि—मिश्री व मकोय के पत्ते बारीक पीस कर कपड़-छान कर लेवें। बाद में उन्हें एक खरल में डाल कर मुनक्का बीज रहित कर उसमें मिलाने के लिये खूब कूटें व साथ में थोड़ा २ गुड़ डालते जांय। इसकी घुटाई इस प्रकार ४ या ५ घंटे तक जारी रखें। जिससे सब चीज आपस में मिलाकर लुगदी के रूप में गोली बनने लायक होजावे। इसकी बेर के बराबर गोलियां बना कर प्रति दिन चार गोली का सेवन कराइये। पन्द्रह दिन में गर्मी (आतशक) (syphilis) नष्ट हो जावेगा। लोग इस बीमारी के लिये हजारों रुपये के इंजेक्शन ले लेते हैं परन्तु यह बीमारी समूल नष्ट नहीं होती। पिता जी इससे कई खराब से खराब रोगियों को अच्छा कर चुके हैं जिन्हें सिविल सर्जन ने इन्द्री तक काटने का हुक्म दिया था मैं भी इससे कई रोगियों को अच्छा किया हूं।

पथ्य—इस दवा पर घी जितना खाया जावे अच्छा है तैल, खटाई, मिरच व बादी की चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए। यह योग रक्त-दोष, मन्दाग्नि पर भी रामबाण है।

देशी बालाडोना एक्स्ट्रैक्ट-

कलमी सोरा	२॥ तोला
कपूर	२ तोला
नौसादर	२॥ तोला
असली सिंदूर	२ तोला

विधि—कलमी सोरा व नौसादर तथा कपूर को बारीक पीस कर मिलालें व उसमें सिंदूर मिला लें। इस पाउडर को वैसलीन में मिलाकर किसी गाठ, उठाव, फोडा आदि पर लगा देवे व बेण्डेज करदें, फौरन आराम होगा। मवाद वगैर. निकाल कर साफ कर देगा। यदि वह मलहम को लगाकर ऊपर से खाने का पान बांध दें तो और भी आश्चर्यजनक फायदा होता है।

मूल्य—

१ बोतल (२२ औंस)	६)
१ पौंड	५)
४ औंस	१॥)

शीतल सुगन्धित

कर्पूरादि तैल

यह शिर में लगाने का सुगन्धित शीतल तैल है। इसके लगाने से शिर का दर्द, शिर का घूमना, भारीपन बालों का असमय में पकना, पढ़ते २ चक्कर आजाना तथा अन्य सभी प्रकार की दिमागी कमजोरी दूर होकर चित्त प्रसन्न होजाता है। शरीर के किसी भाग में दर्द हो इसके लगाने से शान्त हो जाता है। कान में दर्द हो तो ७ बूंद कान में डालने से वह भी बन्द होजाता है।

अधिक गर्मियों में शरीर पर पसीने से मरोरी (छोटी २ फुंसियां) । निकल आती हैं जो बहुत परेशान करती हैं। उन पर इस तैल को लगाइये, चैन पड़ेगा तथा मरोरी नष्ट हो जायगी।

स्नान करते समय इसे शिर में डाल कर तथा ३-४ बूंद शरीर से लगाकर पानी डालिये, गर्मियों में आपको ठंड मालूम होने लगेगी और आपका शरीर तरोताजा हो जायगा।

निर्माता—धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ (अलीगढ़)
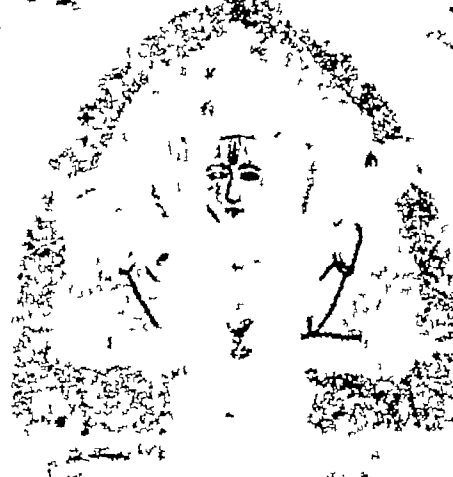
गुलकन्द और गुलावजल

विजयगढ़ के पास ही गुलाब बड़े परिमाण में पैदा होता है तथा यहां से हजारों मन गुलाव जल और गुलकन्द निर्माण होकर बाहर को जाता है। हमारे कतिपय ग्राहकों के आग्रह के कारण हमने भी गुलावजल और गुलकन्द थोड़े परिमाण में अत्युत्तम तैयार किया है। आप अपनी आवश्यकतानुसार अभी मंगालें। समाप्त होने पर नहीं भेज सकेंगे

गुलकन्द—गुलाब पुष्प से दुगुनी सर्वोत्तम मिश्री मिलाकर बनाया गया है

मूल्य—१ सेर टीन का डिब्बा ३), आधा सेर शीशी १॥), तथा एक पाव शीशी १)

गुलाव जल—एक मन फूल तथा एक मन जल डाल कर २० सेर अर्क निकाला गया है। मूल्य—१ बोतल ३) १२ बोतल ३२)

नोट—ये थोक व नेट भाव हैं। एजेंट आदि को किसी भी प्रकार का कमीशन नहीं दिया जायगा सभी प्रकार का खर्चा प्रथक होगा।

असली वस्तु यदि कुछ अधिक पैसे देकर भी मिले तब भी चिकित्सक को असली ही लेना चाहिये।

पता—

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)
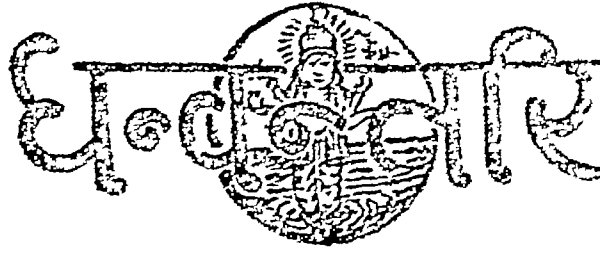
गुप्त-सिद्ध-प्रयोगांक [तृतीय भाग] के

माननीय लेखकों की सूची

(अकारादि क्रम से)

[नीचे दी जाने वाली सूची में स्थानाभाव के कारण माननीय लेखकों के केवल नाम एवं स्थान ही दे सके हैं, उपाधि आदि देने से सूची अधिक विस्तृत होजाती अतएव प्रार्थना है, कि इस धृष्टता के लिये पाठक एवं लेखक क्षमा करें। —सम्पादक।]

रोगानुसार प्रयोग–सूची

(अकरादि क्रम से)

[नम्बर पृष्ठ संख्या सूचक हैं।]

—०—

भाग २४ | गुप्त सिद्ध प्रयोगांक (तृतीय भाग) | अप्रैल
अङ्क ६ | | सन् १९५०

श्री धन्वन्तरि स्तवनम्

भृसञ्च धन्वन्तरि मुज्ज्वलैगुणैः।
समर्चयन्ना विधिनाच श्रद्धया॥
भ्रुवं समाप्नोति परं निरामयम्।
सुखञ्च शारीरिक मत्र मानसम्॥
सहस्र सूर्योज्ज्वल ज्योति रुल्लसन्।
श्रिया च शान्त्या हरिणा समस्सम.॥
विनाश काले स्मरतां नृणामयं।
तनोतिचायूंषि हुनोति वेदनाम्॥

रचयिता—श्री. सियावरशरण राजवैद्य, टीकमगढ़।

सम्पादकीय निवेदन

गत वर्ष के द्वितीय भाग की भांति ही 'गुप्त सिद्ध प्रयोग' का यह तृतीय भाग भी पाठकों की सेवा में प्रेषित है। गत दो भागों का पाठकों द्वारा पूर्ण स्वागत हुआ है और पाठकों के पत्रों से स्पष्ट होगया है कि वे इन अंकों के प्रयोगों को अपने रोगियों को व्यवहार करा कर उचित लाभ उठा रहे हैं। इसी प्रोत्साहन से प्रभावित होकर हमने यह तीसरा भाग प्रकाशित किया है। इसके प्रयोग प्रेषक अधिक प्रसिद्धि प्राप्त विद्वान नहीं किन्तु अनुभवी चिकित्सक हैं उनके ये गुप्त-प्रयोग अवश्य ही सफल प्रमाणित होंगे। इस भाग के कतिपय प्रयोग तो आश्चर्यप्रद लाभ देने वाले हैं।

प्रथम भाग समाप्त होगया है। उसका नवीन संस्करण शीघ्र ही प्रकाशित करना है। इस नवीन संस्करण में, पहिले संस्करण में प्रकाशित प्रयोगों का परीक्षाफल भी देने का विचार है। अतः पाठकों से निवेदन है कि उन्होंने जिन प्रयोगों को व्यवहार कर जो फल (भला या बुरा) प्राप्त किया हो लिख भेजने की कृपा करें। यह परीक्षाफल प्रकाशित हो जाने से सफल प्रयोगों को पाठक अधिक विश्वास के साथ प्रयोग कर सकेंगे तथा असफल प्रयोगों को बनाने में बेकार समय व द्रव्य बरबाद न करेंगे।

गुप्तसिद्धप्रयोगांक चतुर्थ भाग के लिये हमने यह निर्णय किया है कि इसमें केवल स्त्री रोगों तथा बालरोगों पर ही सफल-प्रयोगों का संकलन किया जाय। चिकित्सक समुदाय से निवेदन है कि वे अपने-अपने सफल प्रयोगों को अपने फोटो एवं परिचय के साथ अवश्य भेजें। जिनके प्रयोग पहिले भागों में प्रकाशित हो चुके हैं वे चिकित्सक भी चतुर्थ भाग के लिये अपने प्रयोग सहर्ष भेज सकते हैं। यह चतुर्थ भाग स्त्रियों के एवं बालकों के विशेष रोगों पर सफल प्रयोगों का अभूत-पूर्व संग्रह होगा, ऐसी हमारी आशा है और इससे आयुर्वेद समाज पर्याप्त लाभान्वित हो सकेगा।

यह अभी निश्चय नहीं कि यह चतुर्थ भाग आगामी वर्ष विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जायगा या पृथक पुस्तक के रूप में; क्यों कि अनेकों पाठकों का सुझाव है कि आगामी छोटा विशेषांक "इन्जैक्सन-चिकित्सांक" प्रकाशित किया जाय। इन्जैक्सन का आजकल बोल-बाला है। कोई भी रोगी जिसका रोग थोड़ा भी परेशान करने वाला हुआ कि उसने इन्जैक्सन की अभिलाषा प्रगट की। वैद्य डाक्टर या हकीम कोई भी हो जो इन्जैक्सन से अनभिज्ञ है जनता की निगाह में वह पूर्ण-चिकित्सक नहीं है। ऐसी दशा में इन्जक्सन पर एक सार-पूर्ण विशेषांक प्रकाशित करना सर्वथा आवश्यक प्रतीत होता है।

विभिन्न लेखकों के फुटकर लेखों द्वारा यह साहित्य उचित रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकेगा, अतएव हमारी इच्छा है कि किसी एक लेखक द्वारा उपयोगी सामिग्री क्रम-बद्ध लिखवा कर प्रस्तुत की जाय। इस सम्बन्ध में कई लेखकों से पत्र-व्यवहार किया जारहा है। यदि कोई विद्वान लेखक धन्वन्तरि साइज के २०० पृष्ठों तक का इन्जैक्सन विषयक सर्वांग पूर्ण निबंध लिख सके तो कृपया सूचित करें हम उनको उचित पारिश्रमिक देंगे। लेखक निश्चित होजाने पर ही पाठकों को यह सूचित किया जायगा कि आगामी छोटा विशेषांक इन्जैक्सन चिकित्सांक होगा अथवा गुप्त-सिद्धप्रयोगांक का चतुर्थभाग।

आगामी विशाल विशेषांक "सिद्ध-चिकित्सांक" होगा इसके विषय में विस्तृत सूचना इस अंक के अन्त में पढ़ियेगा।

श्री. शुक्ल जी को बधाई

झांसी आयुर्वेद यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति (वाइस चांसलर) श्री. प० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल आयुर्वेद पचानन निर्वाचित हुए है। आप इस सम्मान एव उत्तरदायित्वपूर्ण पद के लिये सर्वथा उपयुक्त है तथा आशा है कि आपके सहयोग से यूनिवर्सिटी अवश्य उन्नत हो सकेगी। आपको धन्वन्तरि परिवार की ओर से हार्दिक बधाई है।

शिक्षित वर्ग की नासमझी—

शिक्षित वर्ग बहुत समय से ऐलोपैथिक चकाचौंध से प्रभावित है तथा यह चिकित्सा क्षेत्र मे ऐलोपैथी को ही सर्वोपरि समझता आया है, एलोपैथी भी विदेशी सरकार की पक्षपात-पूर्ण सहायता के कारण अन्य पैथियो को रौंदती हुई उक्त आसन पर आसीन रही है। स्वतन्त्र एवं जनतंत्र भारत मे ६० प्रतिशत जनता को चिकित्सा-सहायता देने वाला आयुर्वेद अब आगे बढ़ रहा है एवं विविध प्रान्तीय सरकारें आयुर्वेद को अधिकाधिक प्रोत्साहन दे रही हैं। ऐसे समय में स्वभावत. एलोपैथी से प्रभावित शिक्षित वर्ग यह समझ सकता है कि सरकारें आयुर्वेद पर बेकार रुपया बरबाद कर रही हैं। अभी अलीगढ़ के श्री. मोहनलाल जी (सम्भवतः डा० मोहन लाल नेत्ररोग-विशेषज्ञ)-ने हिन्दुस्तान टाइम्स मे एक लेख प्रकाशित कराया है। इसमे आपने लिखा है कि इसमे शक नहीं कि देशी पद्धतियों में कुछ अच्छी चीजें हैं और इन जडी-बूटियों पर जो कि अनादि काल से व्यवहृत होती रही हैं, और अत्यधिक अन्वेषण करने पर उनमें से कुछ उपयोगी प्रमाणित हो सकती है। किन्तु आपने अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान के मान्य सिद्धान्तों की अवहेलना करना भी हानिकर बतलाया है। अन्त मे आपने सुझाव दिया है कि आयुर्वेद के लिये प्रथक शिक्षा एवं चिकित्सा संस्थाओं को चालू करने के स्थान पर मौजूदा शिक्षा संस्थाओं और चिकित्सालयों मे ही आयुर्वेद मे अन्वेषण करने की सुविधा दी जाय, इस प्रकार आपने लिखा है कि क्रमशः यह पैथी भी प्रचलित फार्माकोपिया मे शामिल करली जा सकती है।

मान्य मोहनलाल जी से मैं निवेदन करूंगा कि वे कृपया आयुर्वेद के मूल-सिद्धान्तो का मनन करे। आयुर्वेद-विज्ञान को पढ़ने पर आपको ज्ञात हो जायगा कि आयुर्वेद एवं ऐलोपैथी के मूल सिद्धान्तो मे जमीन आसमान जैसा अन्तर है। वास्तविक मर्म से अनभिज्ञ व्यक्तिको जिस प्रकार क्षितिज पर जमीन और आसमान मिले हुए दृष्टि-गोचर होते हैं किन्तु ऐसा होता नहीं है, आयुर्वेद को ऐलोपैथी द्वारा हजम करने की चर्चा भी मेरी सम्मति मे इसी प्रकार की है। आयुर्वेद त्रिदोष, पच-महाभूत आदि सुदृढ़ सिद्धान्तों पर अवलम्बित है, ये सिद्धान्त अपरिवर्तनशील हैं तथा इनका क्षेत्र विस्तृत है। जो व्यक्ति इन सिद्धान्तों को भली प्रकार समझ कर आयुर्वेद सागर की थाह लेना चाहता है वह इसके गुणों से परिचित होकर इसका भक्त बन जाता है और नदी का तैरने वाला व्यक्ति इस सागर की थाह लेने की कुचेष्टा करता है वह अकारण ही परेशान होता तथा अपनी अनभिज्ञता प्रदर्शित करता है।

ऐलोपैथी कीटाणुवाद को लेकर आगे बढ़ी है और आयुर्वेद कीटाणु को गौण समझता है, ऐसी दशा में ऐलोपैथी आयुर्वेद को हजम नहीं कर सकती। आयुर्वेद को कुछ समय स्वतन्त्र रूप से सरकारी सहायता मिलने पर जनता एव शिक्षित वर्ग बड़े आश्चर्य से देखेगा कि आयुर्वेद क्या है, इसने जनता की क्या सेवा की है और यह भविष्य में अपना क्या रूप धारण कर सकता है।

यदि श्री. मोहनलाल जी के सुझाव के अनुसार कार्य किया जाय तो इसका सीधा-साधा परिणाम यह होगा कि ऐलोपैथी १०-२० जडी बूटियां तथा १०-२० आयुर्वेदीय औषधालयों को अपने मे शामिल कर जनता मे प्रचार करेगी कि आयुर्वेद की उपयोगी

चीजों को उभरने तो लिया है और फिर आयुर्वेद एवं यूनानी के लिये एक-दो-तीन। इस प्रकार देशी पद्धतियों को नष्ट करने के उपायों को जनता तथा आयुर्वेद के सहायक भली प्रकार समझते हैं।

आयुर्वेद सस्ता एवं उपयोगी है। भारत की गरीब जनता के लिये उपयुक्त एवं हर व्यक्ति की पहुंच के अन्दर इसके अतिरिक्त कोई पथी नहीं है। इस लिये हमारी सरकार को आयुर्वेद को अधिकाधिक प्रोत्साहन देकर इस देशी विज्ञान को उठाना उचित ही नहीं सर्व प्रथम कर्त्तव्य है। यदि वह ऐसा नहीं करती तो हम कहेंगे कि वह साधारण जनता की आवाज़ की क़दर नहीं करती और प्रभावशाली कुछ व्यक्तियों के प्रभाव में आ गई है।

सरकार के साथ-साथ आयुर्वेद चिकित्सकों का भी कर्त्तव्य है कि वे तन-मन से जनता की सहानुभूति-पूर्ण सेवा करें तथा अन्य पैथियों की उपयोगी वस्तुओं को समझें तथा उपयोग करें जिससे वे अन्य पैथियों के उपयोगी तत्वों को हजम करने में समर्थ होसकें। समय ऐसा आयेगा कि आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति होगी तथा उस समय सरकार अन्य पैथियों की उपयोगी बातों को अपने में शामिल करने के लिये हमसे कह सकती है। उसके लिये हमको अभी से प्रयत्न करना चाहिये।

वनस्पति घृत –

वनस्पति घृत के निमार्ण पर उचित प्रतिबंध लगाने के लिये केन्द्रीय संसद एवं बम्बई धारा सभा में प्रस्ताव पेश किये गये। उन प्रस्तावों का जोरदार समर्थन भी हुआ। बम्बई धारासभा में डा० गिल्डर महोदय ने सुझाया कि वनस्पति घृत में कोई दुर्गुण नहीं, प्रत्युत असली घी से अधिक पौष्टिक व गुणप्रद है। कुछ समय पूर्व किसी वैज्ञानिक ने घोषित किया था कि वनप्सा मे जुकाम नष्ट करने वाले तत्व नहीं हैं। उस समय स्वर्गीय पं० शालिग्राम जी शास्त्री लखनऊ वालों ने लिखा था कि जो वनप्सा हजारों लाखों जुकाम के रोगियों को लाभ पहुंचता है उसके विषय में वैज्ञानिक की उक्त घोषणा वैज्ञानिक की अनभिज्ञता को ही प्रमाणित कर सकती है न कि वनप्सा के गुण-अवगुणों को। उसी प्रकार का प्रसंग यहाँ उपस्थित होरहा है। वनस्पति घृत के सेवन से (उन मनुष्यों को जो नित्य प्रति शुद्ध असली घृत सेवन करते हैं) गले में खराश, हृदय में जलन, पिपासाधिक्य, क्षय आदि प्रत्यक्ष में होते हैं, बड़े-बड़े नेता एव समझदार व्यक्ति भी जिसके अवगुणों को प्रत्यक्ष देखते है उसे निर्दोष एवं गुणप्रद बताना कहा तक युक्ति-युक्त है यह पाठक ही अनुमान लगालें।

मान लीजिये वनस्पति घृत अत्यधिक उपयोगी है, सस्ता है, विटामिन से लबालब है तथा भारत की आर्थिक उन्नति में भी सहायक है, फिर भी जैसा कि संसद में प्रस्तावक श्री. भार्गव जी ने अपने वक्तव्य में कहा है, वनस्पति तैल को घृत के रूप-रङ्ग में लाकर जनता को देना पाप ही माना जायगा। उसे यदि उस रूपमें निर्माण किया जाय जिससे कि हम उसे असली घी से प्रथक पहिचान सकें तब उसके निर्माण करने के विषय में किसी को एतराज नहीं हो सकता।

कहा जाता है कि जनतंत्र भारत में व्यक्तियों को व्यक्तिगत धार्मिक स्वतन्त्रता है। एक व्यक्ति बड़े-बड़े मीलों में बने वनस्पति को खाना खिलाना अपनी धार्मिक भावना के प्रतिकूल समझता है किन्तु इस समय असली घृत का विश्वस्त मिलना कठिन ही नहीं किन्तु असम्भव होगया है ऐसी दशा में उक्त व्यक्ति के लिये दो ही मार्ग रह जाते हैं कि या तो वह घृत का सेवन करना ही छोड़ दे या अपनी धार्मिक भावनाओं को दबाकर उनको नष्ट करदे। क्या आप इसे स्वतंत्रता कहेंगे ?

प्रान्तीय सरकारें, केन्द्रीय सरकारें अनेकों बार वनस्पति घृत में असली घृत से अन्तर डालने के लिये किसी प्रकार का रग मिलाने का निर्णय कर चुकी हैं किन्तु वह निर्णय कभी अमल मे नहीं

आसका। यह क्यों हुआ यह भगवान जाने या जो इस विषय के अधिकारी है वे ही जानें।

यह समस्या कब हल होगी। इस अस्वास्थ्य-कर वनस्पति से कब छुटकारा मिलेगा यह अभी नहीं कहीं जासकता, किन्तु यह सरकार का कर्तव्य है कि वह जनता की आवाज को पहिचाने और उसके अनुसार कार्य करे। महात्मा गांधी में जनता की भावना को समझने की शक्ति थी किन्तु भगवान ने भारत को स्वतंत्र कराने के लिये ही उनको भारत मे पैदा किया था, रामराज्य निर्माण करने के लिये नहीं।

लेखकों से

आगामी विशेषांक "सिद्ध-चिकित्सांक" के लिये किसी भी रोग पर विस्तृत एवं अनुभवपूर्ण चिकित्सा विधि लिखकर शीघ्र भेजने की कृपा करें।

लेख शीघ्र प्राप्त

हो जाने पर हम उसके हैडिंग का सुन्दर दुरंगा ब्लोक तैयार करा सकेंगे तथा आपके लेख से सम्बधित कुछ चित्र जुटाने का भी प्रयत्न कर सकेंगे। आशा है विद्वान अनुभवी लेखक इस बार पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करेंगे।

—सम्पादक।

(पृष्ठ ६७८ का शेषांश)

गुण—गर्भाशय, गर्भाशयग्रीवा, योनि इनके शोथ के कारण, रक्ताल्पता के कारण उदर में वायु अधिक रहने के कारण, वातिक प्रकृती से, मेदो वृद्धि से तथा अन्य कारणों से जब मासिकधर्म बहुत दिन चढ़कर, अल्प मात्रा में छछड़े २ और अत्यन्त पीड़ा से आता हो इसके १-२ दिन के मासिकधर्म के दिनों में प्रयोग से आशातीत लाभ होता है। बढ़ी हुई व्याधी में लगातार १-२ मास सेवन कराना चाहिये।

अपथ्य—इसके सेवन काल में दही, आलू और चाँवल नहीं देने चाहिए।

इसके प्रयोग काल में कब्ज नहीं होने देना चाहिए।

उरःक्षत जन्य यक्ष्मा में सफल प्रयोग

लाक्षा (पीपल की) का सूक्ष्म चूर्ण	४ रत्ती
विडङ्ग चूर्ण	४ रत्ती
क्षीर काकोली चूर्ण	१ माशा

विधि—ऐसी २ मात्रा प्रातः सांय बला स्वरस से अभाव में बला क्वाथ से निरन्तर ३ माह तक देने से तथा पथ्य में पौष्टिक एवं मांस रस देने से अत्यन्त लाभ होता है। इस प्रयोग के प्रारम्भ करने से पूर्व एक्सरे कर लेना चाहिए, तथा ३ माह पश्चात् पुनः एक्सरे कराने से इसके गुणों का प्रत्यक्ष अनुभव होजाता है।

इस प्रयोग के साथ यक्ष्मा की अन्य लाक्षणिक चिकित्सा चालू रखने में कोई आपत्ती नहीं है।

सम्पादकीय प्रयोग

मित्रों के विशेष आग्रह से मैंने गुप्तसिद्ध प्रयोगांक में अपने दो प्रयोग प्रकाशित किये थे, यह प्रयोग मेरे बहुत बार के परीक्षित थे और मुझे विश्वास था कि यह अवश्य ही पाठकों को लाभप्रद सिद्ध होंगे। भगवान धन्वन्तरि की कृपा से पाठकों ने इन प्रयोगों को बहुत अधिक पसन्द किया। शोथ शार्दूल वटी के विषय में तो मेरे पास पचासों पत्र आये हैं। अकराबाद के पं० शिवस्वरूप शर्मा ने सूचित किया है कि वातज गुल्म से १ रोगिणी १ सप्ताह से परेशान थी। डाक्टर इन्जेक्शन और औषधि देकर निराश हो रहे थे; इस अवस्था में इस वटी की धूनी से आधे मिनट में दर्द बन्द होगया। एक सज्जन ने लिखा है कि एक रोगिणी की ग्रीवा में दर्द था, सम्पूर्ण पृष्ठ वंश जकड़ गया था, रोगिणी मस्तक को चला नहीं सकती थी, बहुत सी औषधियां दी गईं, इन्जेक्शन लगाये गये किन्तु पीड़ा शान्त नहीं हुई उस अवस्था में इस औषधि की धूनी देने से ही आश्चर्य-प्रद लाभ किया, एक बार धूनी देने से ही आधी पीड़ा रह गई और शाम तक पूर्ण लाभ होगया यह दो साधारण उदाहरण हैं और इसलिये लिखे गये हैं कि इस दिव्य प्रयोग की तरफ उन पाठकों का ध्यान भी आकर्षित हो जिन्होंने इसे अभी तक बनाकर व्यवहार नहीं किया है। प्रयोग बेहद सस्ता है और आश्चर्यप्रद लाभदायक है। धर्मार्थ औषधालयों के वैद्यराजों को तो इसे अवश्य ही बनाकर व्यवहार में लाना चाहिये।

बहुत से मित्रों के आग्रह से इस बार भी मैं अपना एक प्रयोग प्रकाशित कर रहा हूं। मुझे आशा है कि यह भी उचित लाभप्रद सिद्ध होगा।

विषमुष्टिकावलेह —

लौंग	४॥ माशा
चन्दन सफेद	४॥ माशे
इलायची छोटी	६ माशे
गुल गाजवां	१३॥ माशे
नरकचूर	१३॥ माशे
उस्त खद्दूस	१३॥ माशे
सकाकोल मिश्री	१३॥ माशे
आंवला	२२॥ माशे
मुनक्का	[illegible]॥ माशे
हरड़ छोटी	२२॥ माशे
शु० कुचला	२। तोला

विधि—सब चीजों को कूट कर कपड़े में छान लें और आधा सेर शहद की चाशनी करके उसमें ऊपर की चीजों को मिला कर चकती की तरह जमा लेवें।

मात्रा—१ रत्ती से चार रत्ती तक है-प्रातः सायं या आवश्यकता के समय महारास्नादि क्वाथ या दुग्ध या जल से व्यवहार कराना चाहिये।

गुण—यह समस्त वात-रोगों की महौषधि है जिन रोगियों को रसराज रस, बृ० वातचिन्तामणि रस आदि बहुमूल्य औषधियां लाभ नहीं पहुँचा सकीं थीं, इसके प्रयोग से स्वस्थ हुये हैं। तीव्र से तीव्र पीड़ा को बहुत शीघ्र लाभ पहुंचाता है। आमवात के लिये भी उपयोगी है।

देवीशरण गर्ग वैद्य।

श्री. वैद्य कविराज पं० नित्यानन्द जी शर्मा वैद्यवाचस्पति

डिस्ट्रिक्ट आयुर्वेदिक आफीसर, बूंदी

पिता का नाम श्री. पं० मांगीलाल जी शर्मा राजवैद्य

आयु—३६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

आप अपने योग्य पिता के योग्य एवं होनहार पुत्र हैं। जन्म स्थान बूंदी में मैट्रिक तक अंग्रेजी तथा संस्कृत का अध्ययन कर लाहौर के दयानन्द आयुर्वेद कालेज से वैद्य कविराज एवं वैद्य वाचस्पति की परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण की, तदनन्तर आप कालेज हास्पीटल में हाउस फिजीसियन तथा विद्यालय में चरकाध्यापक रहे। "भारतीय चिकित्सा" मासिक पत्र का सम्पादन किया तथा विभिन्न सार्वजनिक एवं आयुर्वेदिक संस्थाओं मे क्रियात्मक सहयोग दिया। सन् ४७ के भारत विभाजन के अवसर पर साम्प्रदायिक उत्पात के परिणाम स्वरूप आप जन्म-स्थान वापस आगये। यहां बूंदी राज्य सरकार ने ४००००) वार्षिक व्यय से आयुर्वेद विभाग स्थापित किया तथा उसकी सारी व्यवस्था आपके हाथों सौंप दी। इस विभाग द्वारा अब बूंदी में एक आतुरालय एवं ६ ग्रामों में ६ चिकित्सालय कार्य कर रहे है। गत अक्टूबर में बूंदी में होने वाले राजपूताना प्रान्तीय सम्मेलन के आप प्रधानमन्त्री रहे हैं, आप विद्वान आयुर्वेदज्ञ हैं तथा 'धन्वन्तरि' से आपको विशेष स्नेह है। पाठक आपके निम्न सफल प्रयोगों से अवश्य लाभ उठावें।

—सम्पादक।

रजः कृच्छ्रान्तक वटी—

शुद्ध कृष्ण धत्तूर बीज चूर्ण	१ भाग
जटामांसी चूर्ण	१ भाग
कासीस भस्म	२ भाग
हीरा बोल	४ भाग

विधि—प्रथम हीरा बोल का श्लक्ष्ण चूर्ण करें। तदनन्तर धत्तूर बीज एवं जटामांसी का चूर्ण मिलावें, अन्त में कासीस भस्म। पीपलामूल के क्वाथ की भावना देकर ४-४ रत्ती की वटी बनालें। मात्रा दिन भर में ४ वटी एक समय में १-२ वटी जल से।

[शेषांश पृष्ठ ६७७ पर]

—लेखक—

श्री. पन्नालाल जैन 'सरल' विशारद, वैद्यशास्त्री

नारखी (आगरा)

—०—

—लेखक—

पिता का नाम— स्व० ला० बाबूलाल जी जैन

आयु—३१ साल जाति—पद्मावति पुरवाल जैन

प्रयोग विषय १.बालरोग २—शक्तिक्षय और मूत्ररोग

"आपको वैद्यक कार्य पैतृक व्यवसाय के रूप मे मिला, अपने बाबा स्व० ला० छेदालाल जी से व्यवहारिक शिक्षा प्राप्त की। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से विशारद, पायोनियर मेडीकल कालेज लाहौर से वैद्य-शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। अपने क्षेत्र के परिचित जनसेवी और देशभक्त हैं। 'वीर भारत' और 'ग्राम्य जीवन' के संचालक व संपादक राष्ट्रीय सामाजिक और आयुर्वेद विषयों पर भिन्नाभिन्न पत्र पत्रिकाओं मे लेख प्रकाशित होते रहते है। स्व-स्थापित भारतीय चिकित्सालय नारखी के अध्यक्ष हैं और 'कल्प-चिकित्साश्रम' द्वारा प्राचीन विधियों को नवीन रूप से चिकित्सा पद्धति मे प्रयोग करने के लिये उद्योगशील है।" —सम्पादक।

बाल संजीवन—

शुद्ध पारा शु० गंधक
अभ्रक भस्म उत्तम जायफल
जावित्री लौंग

—समभाग लें। पहले कज्जली करे फिर शेष औषधियों को मिला खरल करके रखें।

मात्रा—आध से १ रत्ती मां का दूध, शहद या पान के रस में दे।

गुण—इससे बालकों का ज्वर, कफ, खांसी, दस्त, वमन, जुकाम, अपचन, मन्दाग्नि आदि रोग ठीक होते हैं। जाड़ों के दिनों में पान का रस और गर्मियों में शर्बत बनफसा या उन्नाव का अनुपान विशेष लाभप्रद होता है।

शक्तिक्षय और मूत्ररोग—

लोह भस्म उत्तम-वारितर १ तोला
शिलाजीत सर्यतापी २ तोला

—मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बनालें।

अनुपान १—सुजाक— शर्बत बजूरी या दधि की लस्सी
२—प्रमेह, मधुमेह— गोदुग्ध और मिश्री
३—मूत्राघात— गोखुरू, काली मिर्च का क्वाथ
४—जीर्ण रोगो मे— दुग्ध मिश्री

यह औषधि हर प्रकृति के रोगियों को अनुकूल रहती है। जीर्ण सुजाक के विकारों को मिटाती है, प्रमेह मधुमेह की शिकायत को दूर करके शक्ति बढ़ाती है। मूत्राघात का एक रोगी जिसे कैथीटर से पेशाव कराया जाता था और एम. बी. ७६० की गोलियां खिलाते हुये महीनों मे डा० साहब लाभ न कर सके, जिसके पेशाब में खून भी आता था, इस औषधि से शीघ्र लाभ हुआ।

किसी कारण से आई हुई कमजोरी को दूर करना, विष को मूत्र द्वारा बाहर निकालना और खून बढ़ाना इस औषधि के मुख्य गुण हैं।

कविराज माधवप्रसाद जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य

जूनीधान मण्डी, जोधपुर ।

पिता का नाम— श्री. प. गोकुलप्रसाद जी शर्मा
जाति—गौड़ ब्राह्मण आयु—२२ वर्ष
प्रयोग विषय—१-स्वप्नदोष २-उदरशूल ।

"श्री. कविराज जी उत्साही एवं योग्य होनहार नवयुवक हैं। आपने गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस की साहित्य मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण कर अ० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ दिल्ली की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा इसके अतिरिक्त अन्य कई परीक्षाऐं भी उत्तीर्ण की हैं। इस समय आप आयुर्वेद विद्यालय जोधपुर के मुख्याध्यापक हैं तथा साहित्यक लेखक, कवि होने के नाते आपके लेख एवं कवितायें प्रमुख साप्ताहिक एवं दैनिक पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं, आपके निम्न दोनों प्रयोग परीक्षित हैं। पाठक उपयोग में लाकर लाभ उठावें।"

—सम्पादक ।

लेखक

बचपन के दूषित कृत्यों के कारण हमारे नवयुवकों में प्राय. निन्यानवे प्रतिशत 'स्वप्न-दोष' के रोगी मिलते हैं। इस भयङ्कर रोग के कारण विशेषत: शिक्षित वर्ग अपने को हेय की दृष्टि से देखता है। यही नहीं कितने ही शिक्षित युवकों को तो आत्महत्या तक करने का दुस्साहस करना पड़ता है। रोग के परिवर्धन काल में वैद्य और डाक्टरों का द्वार खटखटाना उनके लिये आवश्यक होजाता है, क्योंकि मरता क्या न करता! इस प्रकार चिकित्सकों की सेवा में रहते हुये भी उसको वास्तविक संतोष प्राप्त नहीं होता। क्योंकि चिकित्सक महोदय उस रोग की प्रमुता की ओर न निहारते हुए रोगी के प्रति उपेक्षा वृत्ति ही रखते हैं।

मैंने इस रोग का निवारण करने के निमित्त निम्नोक्त प्रयोग तैयार किया है, तथा जिसकी सफलता का प्रमाण भी मैं कई वर्षों से प्रत्यक्ष देख रहा हूं। आशा है विज्ञ वैद्य इस सरल प्रयोग को सविधि कार्य रूप में परिणित कर देश के उन उदीयमान नवयुवकों के स्वास्थ्य की रक्षा करने का प्रयास करेंगे जिन पर हमारी भावी स्वतन्त्रता का कार्य-भार अवलम्बित है। प्रयोग निम्न प्रकार ज्ञात करें।

स्वप्नदोष हर चूर्ण—

सितावर सालम मिश्री
सफेद मूसली बीज बंद
—प्रत्येक २-२ तोला
कहरवा १ तोला
ईसबगोल ४ तोला
विदारीकंद १ तोला
गोक्षुर ३ तोला
ताल मखाना बहमन स्वेत
वंशलोचन —प्रत्येक १-१ तोला
इलायची छोटी २ तोला
पीपल दालचीनी

चांदी पत्र (वर्क)	—प्रत्येक १-१ तोला
प्रवाल पिष्टी	२ तोला
मिश्री	६ तोला

निर्माण विधि—प्रथम मिश्री एवं रजत-पत्रों को खरल कर फिर सभी औषधियों को कूट कपड़-छन करले, पश्चात् प्रवालपिष्टी युक्त सभी औषधियों को एकत्र कर एक शीशी मे बन्द कर रखले।

सेवन विधि—उक्त निर्मित चूर्ण आधा तोला प्रातः एवं आधा तोला साय एक तोला मधु से सेवन करा ऊपर से आधा सेर "धारोष्ण-दुग्ध" पिलावे। "स्वप्नदोष" कितना भी पुराना क्यों न हो अवश्य नष्ट होगा।

विशेष द्रष्टव्य—औषधि सेवन से पूर्व यदि मृदु विरेचन २-३ दिन दे दिये जांय तो अपूर्व लाभ दृष्टिगत होगा। हां, औषधि सेवन के समय भी कोष्ठ-बद्धता न होने दें। एवं प्रकृत्यानुसार पथ्य का पूरा ध्यान रखें। तथा रोगी को मानसिक दूषित वातावरण से सदा दूर रखने का प्रयास करें। रात्रि को सोते समय लगोट आदि कठिन स्पर्श वस्त्रों का प्रयोग अत्यन्त हानिकर हैं। रोगी को साधारण स्वच्छ धोती आदि वस्त्रों का प्रयोग रात्रि में अवश्य करना चाहिये, एवं किसी भी प्रकार की मल-मूत्र आदि शंकाओं का प्रतिरोध इस रोग-वृद्धि में सहायक होता है। अतः विज्ञ वैद्य उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुये प्रयोग को उपयोग में लावें। साधारण औषधियों के होते हुये भी यह रोग "स्वप्नदोष" में अत्यन्त लाभकारी है।

—उदर-शूलहर वटी

अर्क पुष्प	१० तोला
सैन्धव नमक	नवसादर
	—दोनों ४-४ तोला
टंकणक्षार	कृष्ण मरिच
लवङ्ग	पीपल
सुण्ठी	हींग (भुनी हुई)
	—प्रत्येक २-२ तोला
अकरकरा	१ तोला

निर्माण विधि—उपरोक्त सभी औषधियों को एकत्र कर कूट कपड़-छन कर "लघु बदरी फल" के आकार की गुटिका बनालें।

सेवन विधि—प्रतिदिन २ से ५ गुटिका तक रोगावस्थानुसार अधिक भी, भयकर 'उदर शूल' एवं उदर विकारों मे प्रयुक्त करे।

विशेष द्रष्टव्य—उपरोक्त शूल हर वटी को प्रयोग में लाते हुये मुझे कई वर्ष होगये हैं, तत्क्षण २ मात्रा मे ही अपना प्रभाव प्रकट करती है। जोधपुर के प्रसिद्ध महात्मा स्व० श्री. देवीदान जी की विशेष कृपा से उक्त वटी प्राप्त की गई है। आशा है वैद्य-समाज भी इससे पूर्ण लाभ उठायेगा।

आयुर्वेदाचार्य पं० कालीशंकर वाजपेयी व्या० शास्त्री

श्री० मार्तण्ड कार्यालय, गांधीनगर, कानपुर।
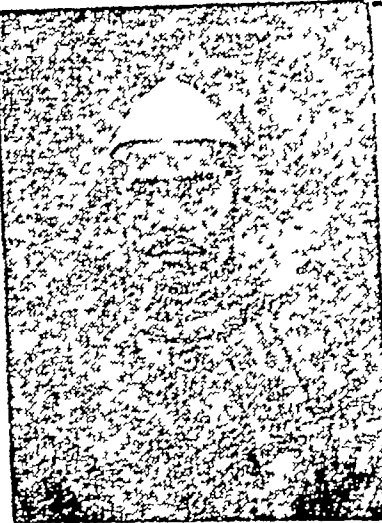
पिता का नाम— पं० गंगाचरण जी वाजपेयी

आयु—३५ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आपने व्याकरण तथा वेद की शिक्षा ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम ब्रह्मावर्त में तथा आयुर्वेद-शिक्षा श्री० आयुर्वेद विद्यालय कानपुर में प्राप्त की है। आप गत तीन वर्षों से जे. के. सेन्ट्रल आयुर्वेदिक औषधालय के प्रधान चिकित्सक हैं तथा ४ मिलों में आपको १-१ घंटे का समय चिकित्सार्थ देना होता है। आप गत १३ वर्षों से चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। आपके निम्न प्रयोग अनेक रोगियों पर सुपीक्षित हैं। पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

१-मार्तण्ड सुखा तेल—

काले तिल का तेल १ सेर
काली मकोय की पत्ती काले धतूरे की पत्ती
सभालू की पत्ती तालाब की काई
सफेद दूब असगन्ध नागोरी

—ये सब ५-५ तोला,

सींगिया (वच्छनाग) १ तोला

विधि—जो दवाएँ रस निकालने की हैं, उनका रस निकाल कर, दूब तथा काई का कल्क करलें और असगन्ध का क्वाथ कर तेल विधि से पाक करलें और सींगिया डालकर पीस लें और इसे छान कर प्रयोग में लावें। ५ तोले की पहिली ही शीशी में लाभ दिखाई देता है। और २-३ शीशी में पूर्ण लाभ हो जाता है।

२-गठिया नाशक तेल—

अफीम हींग तालाब
सफेद गुञ्जा कौड़िया लोवान

—ये चारों ३-३ माशे,

सिंगिया (वच्छनाग) ६ माशे,
सोंठ कलिहारी कुचिला
एरण्ड की जड़ की छाल २॥-२॥ तोला
बढ़िया खाना तम्बाकू मदारके पत्तोंका रस
धतूरे का रस —ये सब चीजें १०-१० तोले,
असगन्ध ऽ— का क्वाथ आधा सेर जल का ऽ=
काले तिल का तेल ऽ॥= गो-मूत्र ऽ॥=

—इन सबको तैल-विधि से पकाकर काम में लावे।

यदि साथ में महारास्नादि क्वाथ के साथ धातु गर्भित वृहत् योगराज गुगल का सेवन सुबह शाम करावें तो विशेष लाभ होता है। मैंने इस तेल से असाध्य गठिया के रोगियों पर भी लाभ प्राप्त किया है। तैल को कटोरी में डाल कर कुछ गरम कर प्रभावित स्थान पर धीरे-धीरे मालिश करें, और कुछ सेक करदें, तथा साथ में वादी की चीजों का खाना व शीतल जल से स्नान बचा देवें।

श्री पं० मूलचन्द जी द्विवेदी वैद्य
पछार (ग्वालियर)

—o—

पिता का नाम— श्री. पं० जगन्नाथ प्रसाद शांडिल्य द्विवेदी

"श्री. द्विवेदी जी ने हिन्दी साहित्य-रत्न, वैद्य-भूषण आदि परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। आप निःशुल्क औषधि एवं शिक्षा से देश-सेवा करते रहते है। सात भाइयों मे आप ज्येष्ठ हैं। आप योग्य चिकित्सक हैं तथा आपको हिन्दी साहित्य से विशेष प्रेम है। हमारे से आप विशेष स्नेह रखते हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग विशेष प्रभावशाली हैं। पाठक निर्माण कर प्रयोग करे और लाभ उठावे।" —सम्पादक।

—लेखक—

शुक्रतारल्य-निरोधक रस

कज्जली (पारद-गंधक समभाग)	३ माशे
लोहभस्म (सर्वोत्कृष्ट)	३ माशे
स्वर्ण भस्म	१ माशे
मुक्ता-पिष्टी	३ माशे
अम्बर	३ माशे
बंशलोचन	६ माशे
केशर	३ माशे

—इन सबको काले भृगंराज के रस मे घोट कर १ रत्ती से २ रत्ती तक कनकसुन्दरासव, अश्वगंधारिष्ट या देवदार्व्यारिष्ट के साथ प्रातः सायं सेवन करें।

गुण—यह शुक्र के पतलेपन को दूर करने के लिये उपयोगी प्रयोग है।

स्तम्भन प्रयोग—

स्वर्ण भस्म ३ माशे,	कस्तूरी १ माशे
अम्बर ३ माशे,	वंशलोचन १ तोला
छोटी इलायची ६ माशे	केशर २ माशे
जायफल १ तोला	जावित्री ६ माशे
चांदी के वर्क	२४ नग

—इनको पान के रस मे घोट कर १ रत्ती से ४ रत्ती तक सेवन करे।

सेवन-विधि—धातु-क्षीणता में १ तोले मलाई के साथ ले, तथा स्तम्भन के लिये पानी या शहद के साथ लेकर ऊपर से दूध सेवन करे।
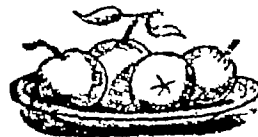
वैद्य शरदकुमार मिश्रा 'शरद'

सम्पादक—"वैद्य वाणी", सहारनपुर।

—:::—

—लेखक—

पिता का नाम— कविराज पं० जगदीशचन्द्र जी मिश्र

जाति—ब्राह्मण

आयु—३० वर्ष

"आपने अङ्गरेजी तथा हिन्दी भाषा की परीक्षायें उत्तीर्ण कर सन् १६३६ मे जोधपुर स्टेट मे सब-इन्सपेक्टर पुलिस का पद सम्भाला था, किन्तु महात्मा गांधी जी के आन्दोलन के कारण आपने उक्त नौकरी से त्याग पत्र देकर, आयुर्वेद-चिकित्सा-विज्ञान का अध्ययन किया तथा १६३६ मे वैद्य भूषण की उपाधि प्राप्त की। अब आप अपने पिता जी के साथ ही चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। आप 'वैद्य-वाणी' के सम्पादक हैं तथा जिला वैद्य सम्मेलन और जिला पत्रकार सम्मेलन के प्रधान मन्त्री हैं। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी प्रमाणित होंगे।" —सम्पादक।

पौष्टिक वटी—

लोह भस्म (दरद-योगेन)	४ तोला
स्वर्ण वङ्ग	१ तोला
शुद्ध कुचला	६ माशा
भङ्ग शुद्ध	१॥ माशा

—सब दवाओं को सतावर, विदारी-कन्द, आंवला व देशी पान के स्वरसों की अलग-अलग भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियां बनालें।

सेवन विधि—१-१ वटी भोजन के बाद नवनीत से या घी मिले दूध के साथ लें।

गुण—इन गोलियों से अर्श, प्रमेह, नामर्दी, वीर्य का पतलापन, रुकावट का न होना, शरीर के किसी भाग में वायु का दर्द और अन्य वायु सम्बन्धित रोग तत्काल नष्ट होजाते हैं।

नवजीवन तिला—

पिस्ते की गिरी	१ सेर
चिलगोजे की गिरी	२ पाव
जायफल	३ तोला
लौंग	३ तोला
संखिया	१ छटांक
कुचला	१ छटांक
मीठा तेलिया	१ छटांक

बनावट—सब चीजों को कूट कर १ पाव जंगली सूअर की चरबी में घोट कर कपड़-मिट्टी की हुई शीशी में भर कर पाताल यन्त्र से तेल निकाल लें। तेल निकल आने पर उसमें १ छटांक चमेली के तेल में ६ माशा केशर व १ माशा मुश्क घोट कर मिला दें और काम में लावें।

सेवन विधि—इस तेल की ५ बूंद इन्द्री पर धीरे २ मालिश करें, सींवन और सुपारी पर मालिश नहीं करनी चाहिये। यह तिला उत्तेजक, स्तम्भक कठोरता तथा स्थूलता पैदा करता है, नसों को बलवान व नामर्द से मर्द बना देता है।

बिच्छू के काटे की दवा—

बिच्छू के काटे की दवा और दन्त मञ्जन यह दो दवायें मुझे एक महात्मा जी से लगभग १५ वर्ष हुए प्राप्त हुई थी। जब मैं ८ वीं कक्षा मे पढ़ता था तो एक महात्मा हमारे घर खाना खाने आये। चलते समय मैंने उनसे कहा कि देवबन्द में बिच्छू अधिक होते हैं इसकी कोई अच्छी दवा बता दें तो बड़ी कृपा होगी। तब उन्होंने बिना कुछ लिये उपयोग करने का वचन लेकर बताया कि तुम "चिरचिटा" जिसे औंधा-कांटा भी कहते हैं जड़ समेत अपने पास लाकर रखलो। पर ध्यान रहे उससे लोहे की कोई चीज न लगे। और जब किसी को बिच्छू काटे तो इसमें से थोड़ा सा पञ्चाग सिल पर पानी डाल कर पीस कर अपने दोनों हाथों पर मलो और जहां तक पीड़ा चढ़ गई हो वहां से एक फूल बराबर जगह छोड़कर नीचे को शरीर से रगड़ते हुए अपने हाथों को खींचते चले आओ। बस पीडा एक बार में एक जोड़ से दूसरे जोड़ तक आजायेगी। इसी प्रकार दो तीन बार लगातार नीचे को खींचने से पीड़ा बिल्कुल नहीं रहेगी। गोद के बच्चों तक को हमने इसका आश्चर्य-जनक प्रभाव होता देखा है। मैं जब तक देवबन्द में रहा हजारों रोगियों पर इसे लगाया, कभी फेल नहीं हुआ।

चिरचिटे में दर्द को खींचने की शक्ति है ऐसा मेरा अनुभव हुआ है। यह प्रसव को भी नीचे को खींचता है। इसीलिये १ फूल नीचे से खींचने को लिखा है, क्योंकि ऊपर हाथ लगने से यह दर्द ऊपर को चढ़ जाता है।

आरोग्य दन्त मञ्जन—

इन्हीं स्वामी जी ने पायरिया पर एक दन्त मञ्जन भी मुझे बताया था। यह भी बड़ी लाभदायक वस्तु है। भारत मे योगों को गुप्त रखने की प्रथा है पर मैं यह ठीक नहीं समझता। इसीसे यह दोनों बहु-मूल्य योग आपकी सेवा मे प्रकाशनार्थ भेज रहा हूं।

लाल फिटकरी	१ सेर

आक का दुग्ध जिसमे यह फिटकरी डूब जावे।

बनावट—एक आक के पत्ते के दोने में फिटकरी को कूट कर भर दो और ऊपर से आक का दुग्ध इतना डालो कि वह इसके ऊपर तैरने लगे फिर दोने को बन्द करके आटे के गोले मे बन्द कर गजपुट में फूंक दो। अब—

यह भस्म	२ पाव
माजूफल	१ तोला
लौंग	१ तोला
अजवाइन	१ तोला
कपूर	१ तोला
दमूल अखवायन	६ माशा
नमक	मन चाहा

—सबको कूट कपड़छन करके शीशी मे रक्खे। सुबह सायंकाल दांतों पर मञ्जन करें। यह मञ्जन दांतों से खून व पीप के जाने को रोकता, दांतों को चमकीले व मजबूत बनाता है।

यह हमारे नित्य व्यवहार में आने वाले पेटेन्ट प्रयोग हैं। वैद्य बन्धु इनसे लाभ उठायें और अपने परीक्षण परिणाम हमें भी भेज दें तो बड़ी कृपा होगी।

श्री पं. रामप्रसाद शर्मा वैद्य भिषक् शास्त्री,

खेतड़ी (जयपुर)

—:※:—

पिताका नाम— श्री. पं० रघुनाथ जी शास्त्री

आयु—६० वर्ष जाति-ब्राह्मण
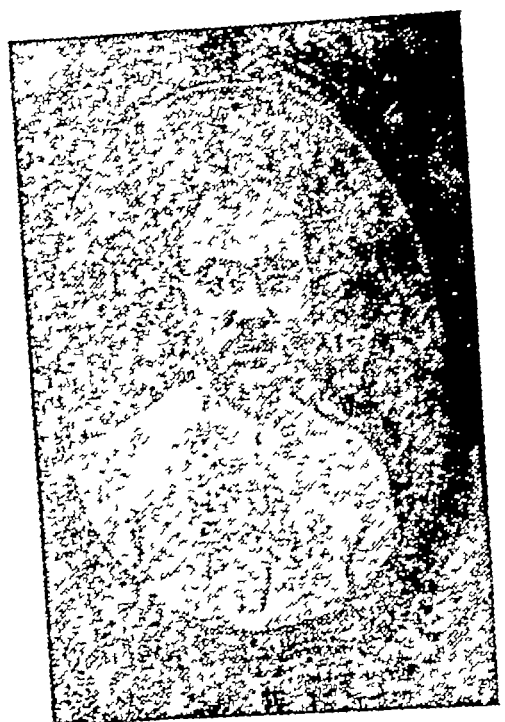
"आपने अपने पिता एवं पितामह से घर पर ही संस्कृत का अध्ययन कर नारनौल निवासी गौस्वामी प्यारेलाल जी से आयुर्वेद का अध्ययन किया। आप सफल चिकित्सक हैं तथा स्त्री-पुरुषों के गुप्त-रोगों की चिकित्सा में आपने विशेष रूप से सफलता प्राप्त की है। आपके निम्न प्रयोगों से पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

प्रदरनाशक—

पमार की जड़ (चक्रमर्द की जड)	२ तोला
चावल अच्छे	१० तोला
जल	३० तोला
चीनी मिट्टी का पात्र	एक

विधि—अच्छे चावल १० तोला लेकर उसमें जल ३० तोला डाल कर चावलों को भिगोदे, एक घण्टा बाद चावलों पर जो पानी है वह उतारकर अलग चीनी या मिट्टी के वर्तन में रखलें। इस पानी में पमार की जड़ को साफ पत्थर पर खूब बारीक चन्दन की तरह पीस या घिस लें और फिर बचे हुये उसी चावलों के पानी के साथ रोगी को पिलादें।

यह दवा सूर्योदय से पहले पिलाई जावे। लाभ तो दो-तीन दिन में ही दिखलाई देता है। किन्तु लगातार कई दिनों तक देने से स्त्रियों के हर एक प्रकार के प्रदर नष्ट हो जाते हैं।

योनि सम्बन्धी अनेकों बीमारियों के लिये रांगजड़ (छोटी मकोरी की जड की छाल) अत्युपयोगी है। योनि-कण्डू पर इसका एक प्रयोग गुप्त सिद्ध प्रयोगाङ्क द्वितीय भाग में दिया जा चुका है, दूसरा प्रयोग निम्न लिखित है।

प्रसव होते समय दाई आदि की असावधानी के कारण या पैत्तिक गर्मी इत्यादि किन्ही कारणों से यदि योनि बाहर आने लगी हो या बाहर निकल आई हो तो यह रांगजड़ ५ तोला को जौकुट करके १ सेर पानी में औटाया जावे और ६० तोला पानी शेष रहने पर उतार लिया जावे, इसमें एक छटांक पानी की एक खुराक रोगी को सुबह खाली पेट पिलादे। अच्छा गुनगुना पानी लगभग २० सेर किसी बड़े टप या बड़े वर्तन में डालकर उसमें वह रांगजड का शेष क्वाथ मिलादे। यह सब ऐसे वर्तन में भरा जावे जिसमें रोगिणी भली प्रकार बैठ सके और पानी नाभि से ऊपर आजावे। रोगिणी को इस प्रकार बैठावें कि उसके पाव बाहर रहें और गुप्त अग में उस पानी का सुहाता २ सेंक होता रहे। सब गुप्त अंग उस जल में टिक जाना चाहिये। दो-तीन दिन में ही लाभ होने लगता है। दो हफ्ते में रोगी पूर्ण लाभ प्राप्त करते है।

सर्वरोग नाशक पौष्टिक योग—

सोंठ	मिर्च	पीपल	हरड़
बहेड़ा	आंवला	—१५-१५ तोला	
गिलोय	बायबिडंग	पीपरामूल	
गठोना		लाल चित्रक की छाल	

प्रत्येक १०-१० तोला

गुड़ बढ़िया २०० तोला

विधि—पन्द्रह-पन्द्रह तोला व दस-दस तोला वाली तमाम दवाओं को कूट-पीस कपड़-छान करलें। फिर गुड़ उत्तम दो सौ तोला और पानी मिला कर ३६० गोली बनाले। बारह महीने प्रत्येक दिन १ गोली दूध से या पानी से खायें या खिलायें।

गुण—बड़ा ही उत्तम प्रयोग है। काष्ठादिक दवाओं का इससे उत्तम प्रयोग नहीं देखा। बल-वीर्य बढ़ाता है, शरीर का वर्ण निखारता है, यदि इच्छानुसार अच्छा भोजन करे और स्त्री से परहेज करके इस प्रयोग को काम मे लिया जावे तो उत्तम फल दिखलाता है। मगर इच्छा अधिक होती है, रुकना संभव नहीं।

प्रमेह रोग नाशक

निर्मली के बीज एक तोला को पांच तोला गाय की छाछ मे पीस कर उसमे शहद डालकर पीने से प्रमेह अवश्य जाता रहता है, रोग थोड़े दिन का हो तो २१ या ४१ दिन सेवन करावें यदि रोग बहुत पुराना होवे तो तीन माह तक प्रयोग करावे। अवश्य लाभ होता है।

श्री० पं० जनार्दन शर्मा आयुर्वेदाचार्य H. M. D. S.

प्रधान चिकित्सक—श्री. किरोड़मल दातव्य औषधालय,

रायगढ़ सी० पी०

—लेखक—
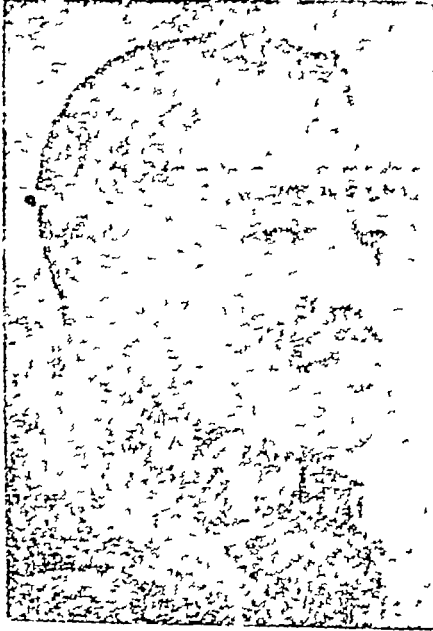
पिता का नाम— वैद्यराज पं० मुरलीधर जी मिश्र

आयु—२६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय— १-वात व्याधि २-प्रवाहिका ३-गर्भस्राव-गर्भपात

"श्री०वैद्य जी ने हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी का अध्ययन कर ऋषीकेश आयुर्वेद विद्यालय से आयुर्वेद-वाचस्पति की तथा विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। आपने होमियोपैथी का भी अध्ययन किया है। आप महेन्द्रगढ़ पटियाला एवं भोपाल प्रभृति स्थानों पर चिकित्सा कार्य करने के पश्चात गत ३ वर्षों से श्री. किरोडीमल दातव्य औषधालय के प्रधान चिकित्सक के पद पर सफलता के साथ चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपके निम्न प्रयोग अवश्य सफल प्रमाणित होंगे।"

—सम्पादक।

वातारि रस -

कुचला	४ तोला
मीठा तेलिया	३ तोला
हिंगुल	२ तोला

विधि—इन तीनों की एक पोटली बनाकर दौला-यन्त्र में भैंस के गोबर में शुद्ध करें। निकाल कर ऊपर का छिलका उतार दूध मे पकावे, फिर घृत में पकावें, कुचला लाल होने पर उतारलें, फिर कुचला व वच्छनाग को गरम पानी से धो डालें, फिर जायफल चूर्ण ४ तोला मिलाकर घी कुवार (ग्वारपाठे) के रस में खरल करके उड़द की दाल प्रमाण गोली बनावें। यह तीन गोलियां गरम पानी से प्रातः काल खिलावें, सायंकाल सुरजानमीठा, सोंठ-असगंध, सनाय यह सब समान भाग लेकर इनकी ६ माशा की फंकी पाव भर दूध के साथ देवे, और दिन में भज-कठिया (कंटकारी) के छोटे छोटे टुकड़े काटकर पानी में उबाल रोगी को कम्बल उढ़ाकर उसकी चारपाई के नीचे वह बर्तन रख देवे और उसकी भाफ निर्वात स्थान में देवे। ऐसी भाफ दो-पहर के समय में देवे। पथ्य से रखें। ईश्वर की कृपा से एक सप्ताह में ही रोगी आरोग्य होजाता है।

प्रवाहिकारिपु—

पोस्ट डोडा सौंफ सोंठ
छुहारे गुठली रहित —ये ५-५ तोला

विधि—सब चीज समान भाग लेकर कूट कपड़ छानकर घी में भून लेवे, फिर लड्डू सा बनाकर एरंड के पत्तों में लपेट कर कपड़-मिट्टी करके आरणों यानी

(शेषांश पृष्ठ ६६३ पर)

श्री. पं० केदारनाथ जी पाठक वैद्य

आबूगेड।

"श्री० पाठक जी सन् १६०५ में मुक्तसर (फीरोजपुर) स्टेशन पर रेलवे में नौकर थे। वहां एक ग्रामीण वैद्य एवं एक निरमले साधु जो चिकित्सा करते थे उनके सम्पर्क में आये और आपको आयुर्वेद-ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा हुई। फलस्वरूप १६१० में नौकरी छोड़ कर काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय पं० केशव देव शास्त्री महामहोपाध्याय एवं स्वर्गीय श्री. श्यामसुन्दराचार्य वैश्य से आयुर्वेद का एवं औषधि-निर्माण का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया। काशी से विदा होते समय एक निर्मले साधु ने प्रसन्न हो आपको विशूचिका के लिये एक सफल प्रयोग भेंट किया। आपने कई एक उदाहरण देते हुए लिखा है कि यह प्रयोग कभी फेल न होने वाला है। पाठक परीक्षा कर सूचित करें जिससे वैद्य-समाज लाभ उठा सकें।" —सम्पादक।

विशूचिकांतक वटी

कुचला को सात दिन तक गौ-मूत्र में भिगो ले। फिर सात दिन तक दही में भिगोवे। बाद में सात दिन तक शहद में भिगोवे। रोजाना पुराने मूत्र, दही व शहद निकाल कर ताजा डाल दिया करें, जितने में कुचले डूब जांय। फिर धोकर छिलका हटा कर जीभ निकाल कर छोटे-छोटे टुकड़े कर सुखा कर रख लें।

शुद्ध कुचला	आध सेर
कालीमिर्च	पाव भर
लौंग	आध पाव
जायफल	२॥ तोला
जावित्री	१ तोला
केशर	६ माशा

—चूर्ण कर जल से घोट एक रत्ती की गोली बनालें।

मात्रा—एक गोली लौंग के जल के साथ दे। यदि फौरन उल्टी होजाय तो पुनः एक गोली दे अथवा तीसरी, चौथी यहां तक कि एक गोली ५ मिनट ठहर जाय तब वैद्य वहां से हटे। उल्टी-दस्त बन्द होंगे, इसके बाद गोली १-१ घण्टे बाद और फिर ३-३ घण्टे बाद देते रहे।

पथ्य—उस दिन सिवा लौंग डाल कर औटाए पानी के कुछ न देकर दूसरे दिन ताजा मांड अथवा साबूदाना दे।

शेषांश पृष्ठ ६६३ पर

पिता का नाम पं० शम्भूनाथ पाठक
आयु—६४ वर्ष जाति—ब्राह्मण
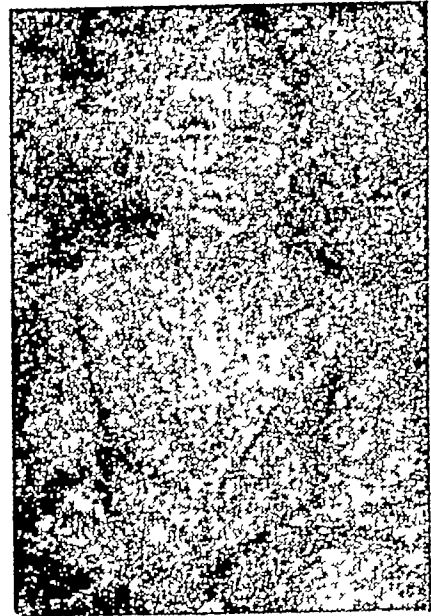
—लेखक—

श्री. वैद्य हरीराम जी वराटे

श्री. शंकर आयुर्वेद सेवाश्रम, मुसारल ।

पिताका नाम— श्रीमान् रामजी वराटे
आयु-५२ वर्ष जाति—लेवा ब्राह्मण

प्रयोग विषय—१-जूड़ी ताप २ हैजा

"श्री. वराटे जी आयुर्वेद के विद्वान, वयोवृद्ध एवं अनुभवी चिकित्सक है। आपको आयुर्वेद विद्यादान का शौक है, फलतः ४-६ विद्यार्थी आपसे आयुर्वेद ज्ञान प्राप्त करते रहते हैं। आपने आंग्ल 'मिश्र आयुर्वेद विद्यालय सतारा' तथा अ० भा० विद्यापीठ से आयुर्वेद विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपके निम्न दोनों प्रयोग उपयोगी हैं।"

—सम्पादक ।

हिमताप संहारवटी—

सतौने की ताजी छाल नीम की अंतर छाल
गिलोय ताजी कुटकी सुदर्शन चूर्ण
हिरडादल (हरड़ का वक्कल) नाय ताजी
प्रत्येक १-१ सेर

—इनको कूटकर आठ-गुने जल मे उबाल अर्धावशेष क्वाथ करे। फिर नीचे उतार मसल-छानकर कलईदार वर्तन मे पका कर घन बनावे। कुडछी को लगने लगे तव उतार कर सूर्य के ताप में सुखाले। रवड़ी जैसा बनने पर ६० तोला लेवें। एवं—

शुद्ध करंज बीजों का चूर्ण	१५ तोला
कुटकी अतीस	१०-१० तोला
शुद्ध कुचला	५ तोला
कालमेघ	१० तोला
दालचीनी	५ तोला
शुद्ध रक्त स्फटिका	१५ तोला

—सब मिलाकर हार-शृंगार के रस मे खरल करे। २-२ रत्ती गोलियां बना लेवे।

मात्रा-१ या २ गोली। जाड़ा आने से १२ घंटा पूर्व या आवश्यकतानुसार ४ घण्टे पूर्व १ घण्टे के अन्तर से प्रयोग करना चहिये।

अनुपान—ताजा जल या दूध

उपयोग—हर प्रकार के विषम ज्वरों से यह औषधि पहले से देने पर ज्वर के आगमन को रोक देती है। यकृत-प्लीहा-वृद्धी में भी लाभ पहुचाती है। कुनैन की तरह इमसे भी शीघ्र ज्वर रुक जाता है, किन्तु कोई उपद्रव जैसे कान से न सुनाई देना, आख से न दिखाई देना, बाल गिर जाना इत्यादि नहीं होते। आधी गोली की मात्रा में यह दूध के साथ प्रयोग करने पर ज्वर की निर्वलता को दूर करती है। जाड़े के बुखार के दिनों में नित्य एक गोली सेवन करने से मलेरिया होने का भय नहीं रहता।

प्राण संजीवनी [हैजे पर]

सौंफ	शुष्क पोदीना
गुलाब के फूल	बड़ी इलायची दाने
कालीमिर्च	अजवायन
लौंग	धनियां
दालचीनी	सौंठ

प्रत्येक १०-१० तोला

जायफल	६ तोला
जवित्री	६ तोला

विधि—इन सब चीजों को कुचल कर भवके में भर-कर ८ गुना शुद्ध जल डालकर रातभर भीगने देवें। सुबह को आग पर चढ़ा कर १० बोतल अर्क निकाल लें। यह अर्क ४० तोला, संजीवनी सुरा ८० तोला, सत पोदीना, सत लोहवान, सत देशी कपूर इनका मिश्रण १० तोला असली काश्मीरी केशर १ तोला एक चार रत्तल वाली बोतल में सबको मिला दे। १०-१५ दिन धूप में रखकर हिलाते रहें। फिर छान ले।

मात्रा—३० से ६० बूंद तक।

अनुपान—प्याज का ताजा रस १ तोला, उबाला हुआ पानी १० तोला, प्राणसंजीवनी ६० बूंद सबको मिला कर इसकी ४ मात्रा बनाले। रोग का वेग प्रबल हो तो आधा-आधा घन्टे में एक मात्रा दें। जैसे-जैसे उपद्रव कम होते जावें, औषधि भी देर से दें।

हैजा एक भयंकर रोग है। इस रोग पर प्राण-संजीवनी अमृत के समान गुणप्रद है। खाने-पीने को कुछ नहीं देना चाहिये। अधिक प्यास लगने की अवस्था में षडंग पानी या उबला हुआ पानी १-१ तोला पिलाये। पिशाब बंद हो तो कलमी शोरा के पानी में कपड़ा भिगो कर नाभी के नीचे रखें। जोर की भूख लगने पर निम्न लिखित चाय पिलायें।

देशी चाय

सौंठ १ तोला	कालीमिर्च आध तोला
छोटीपीपल ३ माशे	दालचीनी १ तोला
लौंग आधा तोला	चोबचीनी २ तोला
तुलसी की मंजरी	२ तोला
तुलसी के पत्ता ५ तोला,	चाय १० तोला

—इन सबको एकत्र जौकुट करके रखले।

इसमें से आधा तोला चाय एक रत्तल पानी में डाल कर उबालें।

(शेषांश पृष्ठ ६६१)

गुण—यह प्रयोग कभी फेल नहीं होगा। इसने मुझे बड़ा यश दिलाया है। इस जैसा रामबाण प्रयोग इस रोग पर और नहीं है, यह मेरा दावा है। जो बना कर प्रयोग करेंगे वह हमेशा मुझे याद रक्खेंगे जैसे मैं उन महात्मा जी को स्मरण करता हू।

आतशक पर अनुभूत योग

—१ तोला रस कपूर को एक सेर भेड़ के दूध में खरल करे, जब गाढ़ा होजाय जङ्गली बेर प्रमाण गोली बनाले। एक गोली पानी के साथ निगलवा दे दूसरे दिन दो और तीसरे दिन तीन और चौथे दिन चार तथा पांचवे दिन पांच गोली, फिर छठे दिन से घटाना शुरू करे ४ गोली दे, फिर सातवे दिन ३, आठवे दिन दो, नवे दिन एक देकर बन्द करदे। इससे बिना मुंह आये सड़ा-गला भी रोगी ठीक हो जायगा।

पथ्य—घी तथा अलौने बेसन की रोटी खाय।

नोट—यह प्रयोग किसी योग्य चिकित्सक की देख-रेख में व्यवहार करें।

(शेषांश पृष्ठ ६६०) ६९०

बनके कंडों में फूंक दे, बाद में निकालकर बराबर की मिश्री मिलाकर शीशी में भर कर रखलो।

—३ माशा सुबह, ३ माशा मध्याह्न, ३ माशा शाम को पानी से देवे। पथ्य—खिचड़ी, दही।

गुण—प्रवाहिका के लिये अत्युपोगी है।

गर्भपौष्टिक—

प्रातः काल—धनियां बड़ी इलायची का दाना ईसबगोल की भूसी सोंफ —४-४ तोला
मिश्री १६ तोला

बिधि—सबको कूट-पीस कर रखले। १-१ तोला दवाई प्रातःकाल गाय के धारोष्ण (कच्चे) दूध से देवें।

सायंकाल—राल गेरु —१-१ तोला

—पीसकर रखले, १ माशा की खुराक शाम को सोते समय पानी से देवे, जब मालूम होवे कि एक महीने का गर्भ है तभी से देना शुरू करें, जब तक बच्चा न होवे तब तक बराबर देते रहे।

श्री कविराज प्रेमलाल श्रेष्ठ भिषगाचार्य्य धन्वन्तरि

प्र० चि० नैपाल गवनमेण्ट श्री. त्री० चंद्र आयुर्वेदीय औषधालय,
पाल्या तासेन, असंटोल।

पिता का नाम— वैद्यराज पूर्णलाल श्रेष्ठ
आयु २७ वर्ष जाति-नेवार (क्षत्रिय)

प्रयोग विषय—१ ज्वरान्तकरस २ हाज़मे की गुटिका

"आपके घराने में ७-८ पीढ़ियों से वैद्यक कार्य चला आरहा है, आपने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर कलकत्ता एल० एम० पी के लिये प्रवेश हुये; लेकिन भाग्य-वस आपको कालेज छोड़ना पड़ा। अन्त मे आपने आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज देहली से भिषगाचार्य धन्वन्तरि की परीक्षा उत्तीर्ण कर आजकल आयुर्वेदीय नैपाल गवर्नमेण्ट श्री. त्रि० चन्द आ० औ० या० ता० के दातव्य चिकित्सालय में प्रधान चिकित्सक के स्थान पर कार्य कर रहे हैं।"

—सम्पादक।

—लेखक—

ज्वरान्तकरस-

श्री. मृत्युञ्जय रस, हरिताल भस्म,
कड़वी अतीस का चूर्ण

विधी—उपरोक्त तीनों औषधियों को १ दिन ग्वारपाठा के रस मे खरल कर मटर के बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा—१-१ गोली प्रात' सांय मधु के साथ दें।

गुण—सर्वज्वर की रामबाण दवा है, विषम ज्वर में जब कि यकृत, प्लीहा-वृद्धि होती है, उसमे कुनैन इत्यादि से बढ़ कर सिद्ध हुआ है।

हाजमे की गुटिका-

शु० हींग ४। माशा सेधानमक ७। तोला
सौंठ स्याह जीरा जीरा
काली मकोय -प्रत्येक २-२ तोला
टाटरिक एसिड १। तोला

विधि—उपरोक्त प्रथम दो द्रव्यों को कूट-पीस कर अलग रखलें, सौंठ से लेकर काली मकोय तक को कूट कपड़-छान करे। उसके बाद दोनों चूर्णों को तथा टाटरिक एसिड को भी मिलाकर कार्क बन्द बोतल मे रक्खें।

मात्रा—४ से ६ माशा। अनुपान—गरम जल।

कविराज श्री. विष्णु प्रकाश जी आत्रेय

इञ्चार्ज ढिकौली औषधालय, ढिकौली (मेरठ)

पिता का नाम— महात्मा श्री. रामचन्द्र सहाय जी वैद्य
जाति—ब्राह्मण
आयु—२२ वर्ष

"आपने संस्कृत-प्रथमा, मध्यमा, आयुर्वेद विशारद, आयुर्वेद शास्त्री परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। साथ ही डी० आई० एम० एस० परीक्षा ऋषिकुल कालेज से उत्तीर्ण की है। आपने प्रतिवर्ष 'प्रथम-श्रेणी' में उत्तीर्ण होकर उपहार प्राप्त किये हैं। तदुपरान्त आपने २ वर्ष 'जनरल हास्पिटल हरिद्वार' से क्रियात्मक सर्जरी ज्ञान तथा सर्व मान्य श्री. ज्ञानेन्द्र नाथ सैन द्वारा चिकित्सा ज्ञान प्राप्त किया। अपने पूज्य पिता जी तथा उनके गुरु श्री. महात्मा नारायणदास जी साधू के अनुभव ज्ञान एवं शिक्षा द्वारा 'होमियोपैथी' का विशिष्ट ज्ञान तथा आयुर्वेद ज्ञान पाकर अपने प्रान्त में लब्ध प्रतिष्ठ हैं। आप समाज-प्रिय तथा आयुर्वेद के विशेष पोषक हैं।"
—सम्पादक।

—लेखक—

अर्शहर चूर्ण—

नीम मद	१ सेर
छोटी हरड़	१। तोला
बडी हरड़	१। तोला

निर्माण विधि—कूटकर नीम मद में भिगो एक मिट्टी के पात्र में ढक कर ७ दिन धूप में रखकर सुखाले, ओस न लगे। फिर कपड-छानकर शीशी में भर कर रखले।

सेवन—दोनों समय ३-३ माशा गरम जल से दे, यदि रोगी को कब्ज हो जाये तो ६-६ माशा दे। रोग बलानुसार कुछ दिन देने से रोग नष्ट हो जाता है।

उपचार विधि—रीठे के छिलके १० तोला एक मिट्टी के घड़े जिसमें १० सेर पानी हो भिगोदे। दिन में ३ बार लकडी से हिलादे जब टट्टी जावे तब मस्सों पर तुत्थ लगाकर इसी जल से आंबदस्त (शौच-क्रिया) करे। पहिले कुछ दर्द होगा, बाद मे शान्त हो जायगा। महात्मा का प्रसाद है।

अपथ्य—लालमिरच, खटाई, भारी पदार्थ।

शीतपित्तपर—

दालचीनी	पीपल
छोटी इलायची के बीज —तीनों	१-१ तोला
मिश्री	३ तोला

निर्माण विधि—उपरोक्त तीनों औषधियों को कूट कर कपड़-छन करले। पश्चात् मिश्री पीस कर मिला शीशी में भरकर रक्खें।

उपयोग—रोगी को १-१ तोला औषधि मक्खन (नवनीत घृत) में मिलाकर दिन मे ३ बार दे

(शेषांश पृष्ठ ७०० पर देखे)

पं० रामावतार जी पाण्डे वैद्य आयुर्वेदाचार्य

अध्यापक—अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय, बनारस ।

—लेखक—

पिता का नाम— श्री. पं० राधाकृष्ण जी पाण्डेय

आयु—२६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोगविषय—१कष्टार्तव २ उत्फुल्लिका

"श्री. पाण्डेय जी ने हिन्दी एव संस्कृत साहित्य का सम्यक् ज्ञान उपलब्ध करने के बाद अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय काशी में आयुर्वेद का अध्ययन किया और आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् ३ वर्ष संस्कृत विद्यालय रामपुर (गाजीपुर) के आयुर्वेद विभाग के प्रधान के पद से अध्यापन-कार्य किया। अब काशी के उक्त विद्यालय में ही अध्यापन कार्य कर रहे हैं।" —सम्पादक ।

कष्टार्तव—

गाजर के बीजों का कपड़छन चूर्ण १ भाग
मूली के बीजों का कपड़छन चूर्ण १ भाग
सुहागे की खील का चूर्ण आधा भाग

—इन सबको एकत्र मिश्रित कर शीशी में बन्द कर रखें।

मात्रा—१ माशे से २ माशे तक।

अनुपान—पुराने गुड का शर्बत।

गुण—कष्टार्तव, बाधकार्तव में गुणप्रद है।

उपयोग—ऋतु-काल के एक सप्ताह पूर्व से एक सप्ताह पश्चात् तक प्रातः-काल एवं आवश्यकतानुसार साय भी उपर्युक्त औषधि को खिलाकर ऊपर से शर्बत पीना चाहिए। शर्बत १ पाव से आध सेर तक लेना चाहिए।

कष्टार्तव—रुक-रुक कर होने वाले मासिक-धर्म की विकृति में सामान्यतः ३-४ ऋतुकाल पर्यन्त सेवन करने से आशातीत लाभ होते देखा गया है।

पथ्य-पालन भी आवश्क है।

उत्फुल्लिका पर

(हव्वा-डव्बा-बालकों की पसली चलना)

गोरोचन, रेवन्दसार और सुहागे की खील

—सबको समभाग ले चूर्ण कर शीशी में रखें।

मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती तक।

अनुपान—गोमूत्र ५ तोले में हल्दी का चूर्ण ६ माशे, सैंधानमक का चूर्ण ४ माशे, और सालममिश्री का चूर्ण ६ मासे मिलाकर मोटे दोहरे कपड़े से २-३ बार छान कर शीशी में रख कर शीशी का मुँह बन्द कर रखें। इस प्रकार प्रस्तुत यह अनुपान ८ घंटे तक काम दे सकता है। इसके बाद नया बना कर ही प्रयोग करना चाहिए।

गुण—उत्फुल्लिका (बच्चों के श्वास या पसली) चलना या डव्बा नाम से विख्यात रोग के लिये अत्युपयोगी है।

आयुर्वेदरत्न पं० बालकृष्ण दवे हिन्दी विशारद

श्री. अवान्तिका आयुर्वेद–विद्यालय, उज्जैन ।

पिता का नाम	पं० वासुदेव जी दवे
आयु—२६ वर्ष	जाति–नागर ब्राह्मण
प्रयोग विषय–१–उदर–रोग	२–कास

"श्री. वैद्य जी ने आयुर्वेद का प्राथमिक ज्ञान पं० वासुदेव जी मेहता के घर पर ही किया और हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयुर्वेद-रत्न परीक्षा उत्तीर्ण की। साथ ही साथ आपने मेट्रिक्युलेशन परीक्षा भी उत्तीर्ण की और वर्तमान समय में श्रीमती कुंमारबाई–भंडारी आयुर्वेद औषधालय में कार्य कर रहे हैं। आप सफल चिकित्सक हैं, उदर रोग के विशेष चिकित्सक हैं तथा साहित्यक भी हैं। आपने सम्मेलन की साहित्य मध्यमा (विशारद) परीक्षा उत्तीर्ण की है और आपके लेख भ साहित्यिक पत्रिकाओं में निकलते रहते हैं।" —सम्पादक ।

उदर शूलांतक चूर्ण —

निर्माण विधि—

सैंधा नमक	५ तोला
सोंठ	१॥ तोला
मिर्च	१॥ तोला
पीपल	१॥ तोला
नींबू का रस	१ माशा

प्रथम— सैंधा नमक को सफेद आक के पत्तों में लपेट कर उपले कण्डों में जलावे, ठण्डा होने पर निकाल बारीक पीस कर बाकी औषधियों के चूर्ण को सैंधव नमक के चूर्ण में मिलाकर शूलान्तक चूर्ण बनाले। अवस्थानुसार २ माशा प्रमाण, उष्ण जल से लेवे।

गुण—यह सर्व प्रकार के गुल्म, पेट का फूलना, आमशूल, परिणामशूल, अफरा, भूख का न लगना, पेट से वायु का न सरना, यकृत, आमवात इत्यादि पर अकसीर प्रयोग है।

कासरोग पर—

कासहरवटी—

मुलहठी	२ तोला
कतीरा गोंद	२ तोला
लवंग	२ तोला
कीकर गोंद	२ तोला
बहेड़ा की छाल	२ तोला
सफेद कत्था	२ तोला

इन—सबका चूर्ण बना कर बबूल की पत्तियों का क्वाथ बनाकर उसकी भावना देकर चने के समान गोली बनाले, हर प्रकार की कास पर परीक्षित प्रयोग है।

पं० रामावतार जी पाण्डे वैद्य आयुर्वेदाचार्य

अध्यापक—अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय, बनारस ।

—लेखक—

पिता का नाम— श्री. पं० राधाकृष्ण जी पाण्डेय

आयु—२६ वर्ष जाति–ब्राह्मण

प्रयोगविषय– १ कष्टार्तव २ उत्फुल्लिका

"श्री. पाण्डेय जी ने हिन्दी एव संस्कृत साहित्य का सम्यक् ज्ञान उपलब्ध करने के बाद अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय काशी में आयुर्वेद का अध्ययन किया और आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् ३ वर्ष सस्कृत विद्यालय रामपुर (गाजीपुर) के आयुर्वेद विभाग के प्रधान के पद से अध्यापन-कार्य किया। अब काशी के उक्त विद्यालय मे ही अध्यापन कार्य कर रहे है।" —सम्पादक।

कष्टार्तव—

गाजर के बीजों का कपडछन चूर्ण १ भाग
मूली के बीजों का कपड़छन चूर्ण १ भाग
सुहागे की खील का चूर्ण आधा भाग

—इन सबको एकत्र मिश्रित कर शीशी में बन्द कर रखें।

मात्रा—१ मारो से २ मारो तक।

अनुपान—पुराने गुड़ का शर्वत।

गुण—कष्टार्तव, बाधकार्तव मे गुणप्रद है।

उपयोग—ऋतु-काल के एक सप्ताह पूर्व से एक सप्ताह पश्चात् तक प्रातःकाल एव आवश्यकतानुसार सांय भी उपर्युक्त औषधि को खिलाकर ऊपर से शर्वत पीना चाहिए। शर्वत १ पाव से आध सेर तक लेना चाहिए।

कष्टार्तव—रुक-रुक कर होने वाले मासिक-धर्म की विकृति मे सामान्यतः ३–४ ऋतुकाल पर्यन्त सेवन करने से आशातीत लाभ होते देखा गया है।

पथ्य-पालन भी आवश्क है।

उत्फुल्लिका पर

(हव्वा–डव्वा–बालकों की पसली चलना)

गोरोचन, रेवन्दसार और सुहागे की खील

—सबको समभाग ले चूर्ण कर शीशी मे रखें।

मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती तक।

अनुपान—गोमूत्र ५ तोले में हल्दी का चूर्ण ६ मारो, सैंधानमक का चूर्ण ४ मारो, और सालममिश्री का चूर्ण ६ मासे मिलाकर मोटे दोहरे कपड़े से २–३ बार छान कर शीशी में रख कर शीशी का मुँह वन्द कर रखे। इस प्रकार प्रस्तुत यह अनुपान ८ घटे तक काम दे सकता है। इसके बाद नया बना कर ही प्रयोग करना चाहिए।

गुण—उत्फुल्लिका (बच्चों के श्वास या पसली) चलना या डव्वा नाम से विख्यात रोग के लिये अत्युपयोगी है।

उपयोग—उक्त अनुपान अवस्थानुसार ४ माशे से १ तोले तक परिमाण में लें। उसमें उपर्युक्त औषधि की एक मात्रा मिश्रित कर कालादि अवस्थानुसार उष्ण एवं शीत रूप में व्यवहृत करें। दिन में आवश्यकतानुसार ३-४ बार प्रयोग कर सकते हैं। इस औषधि से वमन द्वारा श्वास नलिका में अवरुद्ध कफ निकल कर एवं विरेचन द्वारा वातानुलोमन होकर रोग शान्त होजाता है।

विशेष-

उपर्युक्त औषधि का अनुपान 'गुप्त सिद्ध प्रयोगांक' नामक धन्वन्तरि के विशेषांक में मुख्यौषध के रूप में प्रकाशित है। इसके पूर्व मैं प्रस्तुत योग को केवल गोमूत्र के अनुपान से प्रयोग कर सफल होता रहा। किन्तु उक्त विशेषांक में प्रकाशित योग के साथ प्रयोग करने से अधिक लाभ होता है। एतदरिक्त छाती पर गोघृत, सैंधव श्लक्ष्ण चूर्ण एवं मोम पिघलाकर सुहाता-सुहाता सवधानी से मालिश करना चाहिए।

चिकित्सक का कर्तव्य—

प्रायः देखा जाता है कि बहुत सफल-योग भी कभी २ असफल होजाते हैं और साधारण चिकित्सक व्यामोह में पड़ जाते हैं। अतएव रोगी के दोष, बल एवं कालावस्था का विचार करना चिकित्सक का परम कर्त्तव्य है। तदनुसार औषधि में परिवर्तन एवं परिवर्धन के अपने अधिकार का प्रयोग भी आवश्यक है।

(पृष्ठ ६६४ का शेषांश)

श्वेत प्रदर में—

विदारीकंद	कौंच बीज	संखचूर
लोध्र	मांजूफल	मोचरस
धाय के फूल	लाक्षा	सोनागेरू
	चिकनी सुपारी	

—प्रत्येक समभाग लेकर चूर्ण कर लें।

उपरोक्त चूर्ण	२४ तोला
सितोपलादि चूर्ण	८ तोला
गुडूची सत्व	१ तोला
त्रिवंग भस्म	२ तोला
कुक्कुटाण्डत्वक भस्म	१ तोला

निर्माण विधि—सबको मिलाकर शीशी में भरलें।

मात्रा—एक से डेढ़ तोला तक।

सेवन विधि—भोजन के पूर्व गाय के एक पाव भर धारोष्ण दूध के साथ प्रातः एवं सायं फकावें। इस प्रयोग के सेवन काल में ही (अधिक लाभ के इच्छुक) रोगिणी को प्रातः एवं साय भोजन के पश्चात् एक से दो तोला तक अशोकारिष्ट शीतल जल में मिश्रित कर पिलावें।

पथ्य—वैश्वानर स्वयं निश्चित करें।

[पृष्ठ ६६७ का शेषांश]

तथा कोष्ठ-बद्धता हो तो उसे स्निग्ध विरेचन देकर शुद्ध करा दे।

पथ्यापथ्य—गेहूं की पूड़ी घी से दे, तथा वायु-कारक, शीत पदार्थ, शीतल जल से बचा रहे। शतशोऽनुभूत है।

आघात पर—

तज	मैदा लकड़ी	—समभाग।
तिल तैल		दूध

उपयोग—दोनों औषधियों को कपड़ छन कर तिल्ली तैल में भिगोये, आवश्यकतानुसार फिर गरम २ दूध डालदे, तुरन्त हलवे की तरह का तैयार हो जायेगा। उसे गरम सुहाता-सुहाता चोट स्थान पर बाँध दे। ठंडा होने पर तेल डाल गरम कर बाँधे। प्रति दिन नया तैयार करें। यह योग भी कभी असफल नहीं होता।

साहित्यमनीषी श्री. सियाप्रसाद जी अष्ठाना आयु.रत्न

अष्ठाना यूअर डिस्पेंसरी, वसन्त पट्टी
पो० अदौरी (मुजफ्फरपुर)

-लेखक -

पिता का नाम— श्री. मुशी कामताप्रसाद जो

आयु–३६ वर्ष जाति–अष्ठाना कायस्थ

"श्री. अष्ठाना जी ने संस्कृत की मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण कर आयुर्वेद का अध्ययन किया। आप हिन्दी साहित्य के अच्छे लेखक हैं तथा आपकी कविता व लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। आपके निम्नप्रयोग अवश्य सफल प्रमाणित होंगे, पाठक निर्माण कर व्यवहार करें।" —सम्पादक।
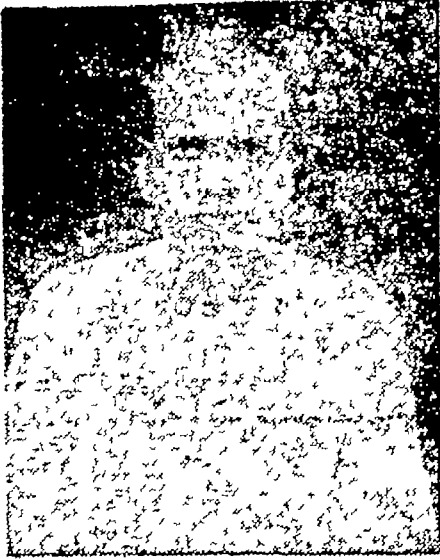
कर्णश्राव पर अक्सीर प्रयोग—

—पान, कत्था, चूना और कसैली का बीड़ा लगाकर स्वच्छ सिल पर अच्छी तरह बिना जल डाले ही पीसें और स्वच्छ कपड़े मे डाल रस निकाल लें। थोड़ा गर्म कर सुवह और दोपहर को दो-तीन बूंद कान मे टपका दें। दवा डालने के पूर्व रूई से कान को साफ कर दें। तीन-चार दिनों मे ही कान का बहना बिल्कुल बन्द हो जायगा। अगर नासूर भी हो गया हो तो इससे लाभ होगा। अनुभूत है।

उपदंश पर परीक्षित योग —

—माजूफल और पपरा खैर को वकरी के दूध मे घिसकर उपदंश के घाव पर लगाने से जनेन्द्रिय का घाव बहुत जल्द अच्छा हो जाता है। सैकड़ों रोगियों पर परीक्षित है।

छोटी इलायची, लौंग, शुद्ध रस कपूर को पान के स्वरस में घोटकर मटर के बराबर गोलियां बना ले। गोली दांत से नहीं चबाएं। सिर्फ निगल जांय और दो-तीन घूंट जल पी लें, इस प्रयोग से उपदंश के घाव जल्दी अच्छे हो जाते हैं। परीक्षित है।

पेट के क्रमि पर

रसोन (लहसन) और गुड़ को सम मात्रा मे दोनों द्रव्य मिलाकर गोली बनाले। बच्चे को ३ माशे और युवा को एक तोले की गोली सुवह खाली पेट खिला दे। जरूरत समझे तो थोड़ा जल पिला दे अन्यथा नहीं। इस तरह लगातार तीन दिनों तक खिलाने से पेट के क्रिमि निकल जांयगे। प्रयोग परीक्षित है।

स्वर्गीय श्रीयुत वैद्य मोहनलाल जी, आयुर्वेद केसरी,

जोधपुर [राजस्थान]

"माननीय वैद्यराज जी का जन्म १८८७ में हुआ था। आपके सुयोग्य पिता वैद्य वैणीराम जी ने श्री० प० ब्रजलाल जी के गुरु-चरणों में संस्कृत का अध्ययन कराया। गुजराती, मराठी, अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू में भी आपने अध्ययन किया। माननीय अदरजी अस्पताल में सुयोग्य सर्जन के पास आपने शल्य क्रिया सीखी। अंग्रेजी औषधियों का प्रयोग छोड़ कर आयुर्वेद की ओर आकर्षित होकर आपने पितृ चरण में आयुर्वेद का अध्ययन किया और आयुर्वेद का व्यवसाय प्रारम्भ किया। आपको चिकित्सा तथा लेखन पद्धति से प्रसन्न होकर श्री० मारवाड़ आयुर्वेद प्रचारिणी सभा जोधपुर ने 'वैद्य भूषण' तथा भारतीय विद्वत्परिषद ने "आयुर्वेदकेशरी" की उपाधि से आपको विभूषित किया। आपने अपने चिकित्सा-काल में अत्यन्त ही लोक-प्रियता हासिल की। अन्त में २३ दिसम्बर १९४० को आपने परलोक-गमन किया। आपके ये दो सफल प्रयोग प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए हैं।"

—सम्पादक।

ग्रहणी गजेन्द्र वटी -

कुटजत्वक १ सेर को ४ सेर पानी में जवकुट कर २४ घण्टे पानी में भीगने पर उबालना। आधा पानी शेष रहने पर उतार कर छान लेना। छने हुए पानी को फिर आग पर चढा कर घन बना लेना। उक्त घन में—

माक्षिक भस्म	अति-विष	४–४ तोला
मोचरस	धात्री पुष्प	आम की मज्जा
बेलगिरी	सुण्ठी	इन्द्रयव
नागर मोथा	—ये सब २–२ तोला	
जायफल	जावित्री	१–१ तोला
चित्रक		४ तोला

—इनका वस्त्रपूत चूर्ण मिला कर मर्दन कर अनार के स्वरस की दो भावना देकर वटी (बेर प्रमाण) बनाना।

मात्रा—२ वटी पानी के साथ देनी चाहिये।

गुण—ग्रहणी, आमातिसार आदि रोगों में उचित अनुपान से लाभ होगी।

कफ कुठार रस-

ज्वाखार		सामा खार
अपामार्ग खार		—प्रत्येक ३-३ माशा
कलमी शोरा	नवसादर	यवक्षार
सुहागा	कनक खार	स्फटिक
शंख भस्म		—प्रत्येक ३-३ माशा
पुटास आयोडाइड		३ माशा

—सबको बारीक पीस कर शीशी में भर लें।

—उपरोक्त कफकुठार रस की मात्रा १ से ४ रत्ती की है।

अनुपान—शहद अथवा अवस्थानुसार।

गुण—किसी भी प्रकार का गाढ़ा कफ अटका हो इस औषधि से पतला होकर निकलने लगेगा। उत्क्लिष्टिका, कुकर कास, श्वास तथा अन्य कफ सम्बन्धी रोगों को मिटाता है। बाल कास पर तो रामबाणवत् है।

श्री पं० चन्दनप्रसाद मिश्र० आयुर्वेदाचार्य

राष्ट्रीय आयुर्वेदीय औषधालय, अमरपुर (भागलपुर)

पिता का नाम— प० श्री. अयोध्याप्रसाद जी मिश्र राजवैद्य

जाति—शाक द्वितीय ब्राह्मण आयु–३० वर्ष

प्रयोग विषय— १-पामा २ वमन

"श्री. मिश्रा जी के वंश मे बहुत समय से वैद्यक व्यवसाय होता आरहा है। आपने बालानन्द संस्कृत कालेज वैद्यनाथधाम के आयुर्वेद विभाग में अध्ययन व प्रैक्टिस करते हुये मध्यमा, शास्त्री व आचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। झासी से सर्जरी ट्रेनिङ्ग की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप योग्य चिकित्सक व लेखक हैं।"

—सम्पादक।

पामा पर योग—

सूखा अलकतरा (ढेला) टकणक्षाराम्ल

—दोनों को समान भाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण करले। इस चूर्ण को पामा पर छिड़के और ऊपर से केले का कोमल पत्ता लपेट कर स्वच्छ वस्त्र से बांध दें। इस तरह से ७ दिनों में पुराने मे पुराना पामा नष्ट हो जायगा।

नोट—जहां पत्र बांधने का स्थान न हो वहां पर नारियल तैल मे चूर्ण देकर गाढ़ा मलहम बना कर दिन में तीन-चार वार लगावें।

व्रण वाले स्थान पर जल-स्पर्श न होने दें। खुजलाना भी मना है।

वमन पर—

प्रवाल भस्म १ रत्ती
लवग १० नग

—लवग को साफ पत्थर पर १ तोले जल डालकर घिस लें और प्रवाल मिलाकर पिलादे।

मात्रा—१-१ घण्टा के अन्तर से दे। वमन की परीक्षित औषधि है।

नोट—मात्रा और समय मे फेरफार रोगी की अवस्थानुसार कर सकते है।

—लेखक—

लेखक—श्री. हकीम शोभासिंह जी

सदरभट्टी, आगरा।

—❀—

प्रयोग-विषय— वातरोग २-परिवालरोग

"श्रीयुत हकीम जी की आयु ४५ वर्ष की है, आपके वंशज अमृतसर के निवासी थे, आपके खान-दान मे कई पुस्त से हिकमत होती आई है, आपके पिता जी का नाम हकीम मुन्सीराम सिंह जी वैश्य था, वर्तमान समय मे हकीम जी बड़ी योग्यता एवं संलग्नता से आगरे में स्वतन्त्र रूप से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं, आपने तिब्बिया कालेज देहली से प्रमाण पत्र प्राप्त किया है और अरबी फारसी के प्रकाण्ड पण्डित हैं। आपने अपने उपयोगी प्रयोगों को जनता के लाभार्थ प्रकाशनार्थ प्रेषित किया है। पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।
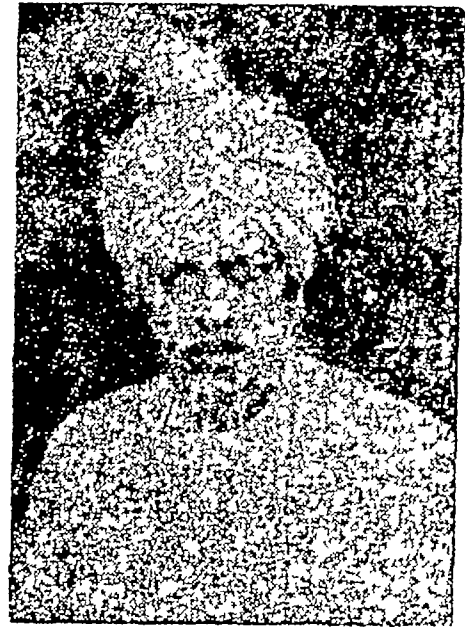
—लेखक—

शोभा संजीवन तैल

(समस्त वातरोगों के लिये अचूक)

ताजी झींगां मछली (छोटी मछली) १ सेर
ताजे केचुए आधा सेर
शुद्ध तैल मीठा २ सेर

निर्माण विधि—उक्त दोनों चीजों को बारीक कुचल कर मीठे तेल मे धीमी २ आच से पकावें, जब चोर जल जाय तब उतार कर ठण्डा होने पर निचोड़ लें। इस तेल को किसी साफ शीशी मे पक्की डाट लगा कर रक्खें।

सेवन विधि—अङ्ग प्रत्यङ्ग का दर्द, गठिया, फालिज, वृद्धत्व जनित पीडा, निर्वलता से उत्पन्न हाथ-पैरों तथा कमर का दर्द, स्नायुशूल आदि अस्सी प्रकार के वातरोगों के लिए रामबाण है। इसका प्रयोग वाह्यरूप से मर्दन आदि द्वारा किया जाता है तथा १ बूंद से लेकर ५ बूंद तक पान में डाल कर आन्तरिक सेवन भी किया जाता है। इन दोनों विधियों से यह तेल आशातीत गुण करता है।

विशेष गुण—लिङ्ग शैथिल्य में नपुंसकता में मैथुन शक्ति में भी पूर्ण चमत्कारिक गुण दिखाता है। लिङ्ग पर इस तैल का मर्दन करके पका पान बांधना चाहिए तथा खाने के लिए पान मे भी पूर्ववत् प्रयोग करना चाहिए।

शोभा सिद्धेश्वर तैल

(परवालों पर सिद्ध योग)

एक छटांक शुद्ध कडुआ तेल साफ मंजी हुई कढ़ाई मे डाल कर गर्म करें। जब बहुत गर्म हो जाय तब उसमें ५ जोंक (जालोंका) डालदें, जोंक के जलने पर उतार कर ठण्डा करलें, फिर तीन दिन तक खरल (पत्थर) मे घोट छान कर शीशी में बन्द करके रखदें। यह सिद्ध योग प्रस्तुत है।

प्रयोग विधि—परवालों को स्वच्छ चीमटी से उखाड़ कर साफ सलाई से उक्त तेल को उस स्थान पर लगावें, इस प्रकार सात दिन तक निरन्तर लगाने से परवाल रोग जीवन पर्यन्त मनुष्य को कष्ट

[शेषांश पृष्ठ ७१० पर देखें]

वैद्य पं० दामोदरलाल शर्मा आयुर्वेद भिषक्

प्रधान चिकित्सक—श्री. बांठिया आयुर्वेदिक औषधालय, भीनासर (बीकानेर)।

पिता का नाम— स्वर्गीय कविराज पं० विश्वनाथ शर्मा

आयु—३६ वर्ष जाति—माली ब्राह्मण

प्रयोग विषय—१-विशूचिका २-कण्डू (खुजली)

३-व्रण ४-वातरोग

"आपने सन् १९३४ में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ की भिषक् परीक्षा पास की है। तीन वर्ष बीकानेर मोहता दातव्य चिकित्सालय में कम्पाउण्डर के स्थान पर कार्य किया तत्पश्चात् हैदराबाद (सिंध) में एक कस्बे में दस वर्ष चिकित्सा कार्य किया। पाकिस्तान बन जाने पर भीनासर के दातव्य औषधालय में प्रधान चिकित्सक के पद पर कार्य कर रहे हैं। आप अनुभवी चिकित्सक हैं अत आपके निम्न प्रयोग अवश्य सफल प्रमाणित होंगे।"

—सम्पादक।

—लेखक—

विशूचिकाहर वटी—

अफीम हींग
कर्पूर लाल मिरच के तेज बीज
काली मिरच —हरेक ३-३ माशे

विधि—सबको महीन पीसकर जल से २-२ रत्ती की गोली बनावें। १-१ घण्टे के बाद देता रहे। ऊपर से निम्नलिखित पच रस पिलावे।

सेवन विधि—घोर दुःसाध्य विशूचिका नाश होती है। परीक्षित प्रयोग है।

पञ्चरस—प्याज, पोदीना, नागर बेल का पान, तुलसी और अदरक के सब रस समभाग मिला कर पिलाता रहे।

कण्डूहर तैल—

क्राथ द्रव्य—

लाल चन्दन मजीठ ४०-४० तोले
पानी ८ सेर शेष २ सेर

कल्क द्रव्य— काली मिरच बावची
आमलासार गन्धक अशुद्ध—तीनों १०-१० तोले
कडुआ तैल ५ सेर

विधि—क्वाथ के द्रव्यों का क्वाथ करके और कल्क डाल कर तैल को सिद्ध किया जाय।

गुण—रक्त-विकार, कण्डू, विसर्प आदि रोगों पर सर्वोफल दायक सिद्ध हुआ है।

लाल व्रणारि मलहम

तैल कडुआ ।। सेर

[शेषांश पृष्ठ ७१० पर देखें]

श्री० पं० नाथूराम जी शर्मा वैद्य

खेतड़ी (जयपुर)

पिता का नाम— श्री. प० नन्दराम जी शर्मा

आयु—५३ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय–१-प्रदर २— बहुमूत्र पर

"आप खेतड़ी राज्य के उच्चतम न्यायालय के इजलास-खास मे प्रधान अधिकारी के पास शरिस्तेदारी (Reader) के पद पर काम कर रहे हैं। आपके पिता तथा नाना दोनों के आयुर्वेद-चिकित्सक होने के कारण आपको आयुर्वेद का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त है तथा फलस्वरूप आप चिकित्सा कार्य करते रहते हैं। धन्वन्तरि के आप विशेष प्रेमी ग्राहकों मे से हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग उपयोगी हैं। पाठक लाभ उठावे।" —सम्पादक।
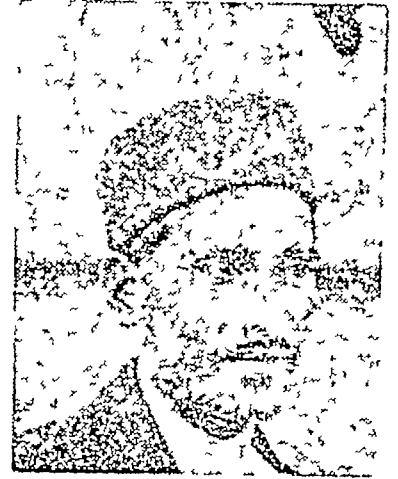
प्रदरान्तक—

चूहे की बीठ	१ तोला
उत्तम वशलोचन	१ तोला
छोटी इलायची के दाने	६ माशे
मिश्री	२॥ तोला

—रक्तप्रदर में चावलों के धोवन के पानी से या इसबगोल के हिम से सुबह-शाम देनी चाहिये।

गुण—कैसा ही रक्त प्रदर हो अवश्य नष्ट होगा। श्वेत प्रदर प्रवाल पचामृत के साथ शहद और केले से देने से अवश्य लाभ होता है। मगर सयम रखना जरूरी है। फल दूध का सेवन करना चाहिये।

[लेखक ने इस औषधि की मात्रा नहीं लिखी है। हमारी सम्मति मे १ माशे से ३ माशे तक रोगानुसार दे सकते हैं। —सम्पादक।]

बहुमूत्र पर–

काले तिल या श्वेत	४० तोला
गोंद कीकर	४० तोला
हल्दी	१० तोला
गुड	५० तोला

विधि—तिलों को कड़ाई मे डाल अगारों की आच पर सेकलें। घी मे हल्दी को भून ले तथा गोंद को घी मे तललें या सेकलें। फिर इनमे गुड़ मिलाकर १-१ छटांक के लड्डू बनावें। रात को सोते समय १ लड्डू खाकर कुल्ला करे। जो लोग सर्दी में रात २ भर बैठे रहते हैं उनके लिये अक्सीर है।

बालको के अजीर्ण को पचाकर दस्त लाने वाला योग—

जीरा सफेद, बड़ी इलायची के दाने, सुहागे की खील

—सबको बारीक पीस शरबत अनार या नीबू मे मिलाकर बालक को चटा दे। लाभ होगा।

कविराज श्री० गङ्गाराम जी बहुखण्डी, वैद्य-चक्रवर्ती,

अध्यक्ष— श्री बहुखण्डी आयुर्वेदिक औषधालय पोखड़ा, गढ़वाल।

पिता का नाम—पं० बैजराम बहुखण्डी वैद्यराज। आयु—४५ वर्ष।

"शर्मा जी के वंश परम्परागत से वैद्यक-कार्य होता आरहा है। आप आयुर्वेद विद्यापीठ के स्नातक हैं। सन् १९२५ ई० से आप आयुर्वेद पद्धति से जनता की सेवा कर रहे हैं यक्ष्मा के आप सफल चिकित्सक माने जाते हैं। आपकी गणना सिद्ध वैद्यों में है। केवल मुखाकृति देख कर रोग निर्णय करना आपकी शैली है। काल-ज्ञान के भी आप माने हुए पण्डित हैं। आपके निम्न दो प्रयोग प्रकाशित किये जा रहे हैं आशा है कि जनता का पर्याप्त कल्याण होगा।"

—सम्पादक।

विशूचिका—

के रोगी को अक्सर चिकित्सक लोग जब तक वेग शांत नहीं होजाता पानी नहीं देते। जो जीवन (पानी) जीवधारियों का जीवन है, ऐसी दयनीय दशा में रोगी कारुणिक पुकार से जीवन (पानी) मांगता रहता है, किन्तु चिकित्सक के मना करने पर रोगी के प्रिय परिजन नहीं देते और रोगी पानी-पानी चिल्लाता हुआ परलोक गामी होजाता है और छोड़ जाता है परिजनों के दिलों को ठेस पहुँचाने वाली एक मात्र वही कारुणिक पुकार। ऐसी दशा में जबकि रोगी को मरणासन्नावस्था या मूत्राघातादि उपद्रव भी हो रहे हों।

१२ अदद ततैया मिर्च न मिल सके तो लाल मिर्च ही सही, मुखदूषक (प्याज) ५ अदद लेकर ठण्डे पानी के योग से सिलवटे पर इतना रगड़ें कि कपड़-छन करने पर कुछ भी शेष न रहे। १। सेर ठंडा पानी छानते समय मिला लें, बस दवा तैयार होगई। यह एक मात्रा है। इसे पाव-पाव भर पिलाते रहिए। दवा गले से उतरते ही बेचैनी दूर होने लगेगी। एक मात्रा समाप्त होने पर दूसरी मात्रा भी बनाई जा सकती है। अधिकांश रोगी दो ही मात्रा में आरोग्य लाभ कर लेते हैं। तीसरी मात्रा बना कर पिलाने से शतशः लाभ होता है। रोगी या रोगी के परिजन व चिकित्सक मिर्च के प्रयोग से न घबराएँ चाहे रोगी प्रमेहादि रोगों[से आक्रान्त ही क्यों न हो, निःसङ्कोच सेवन करावें। विशूचिका का वेग शांत होजाने के बाद जब तक आठ घण्टे न बीत जांय दवा के पानी के अतिरिक्त कुछ न दिया जाय।

श्वेत प्रदर

वाली रोगिणी को गुलकन्द या त्रिफला मधु मिश्रित हफ्ते में दो बार देकर कोष्ठ शुद्धि करवाते रहना चाहिए।

सत्व गिलोय	२ तोला
सत्व शतावर	२ तोला
माजूफल	३ तोला
मुल्तानी मिट्टी	२ तोला
आंवले की गुठली की गिरी	३ तोला

(शेषांश पृष्ठ ७१२ पर)
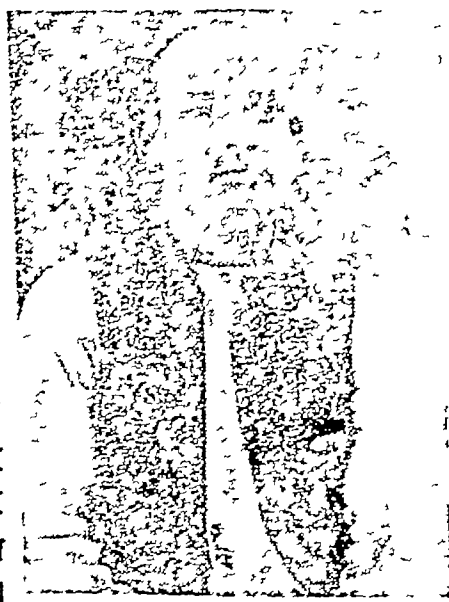
भिषग्रत्न वैद्य पं० रामचरणलाल पाठक आयुर्वेदाचार्य

आयुर्वेदिक औषधालय, वगयठा पो० शाहगढ़ (सागर)।

पिता का नाम— श्री. पं० शिवप्रसाद जी पाठक

आयु—२५ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री. पाठक जी की जन्म-भूमि "खुलरी" है। आपने संस्कृत में काशी की मध्यमा, विद्यापीठ की 'आयुर्वेद विशारद' तथा काव्य-तीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण की है। इस समय आप उक्त आयुर्वेदीय औषधालय में प्रधान वैद्य के पद पर कार्य कर रहे है। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी प्रतीत होते हैं। पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

बिच्छू के काटे पर—

सेंधव लवण ६ माशे

जल १॥ तोला

विधि—जल में पीसकर नमक घोल लीजिये और जिस तरफ काटा हो उसके विपरीत नेत्र मे अर्थात् बायें तरफ के अङ्ग में काटा हो तो दक्षिण नेत्र में रुई भिगोकर दो-तीन बूंद डालो और काटे हुये व्यक्ति को २०-२५ गज दौड़ाओ और फिर उसी नेत्र मे डालकर दौड़ाओ, इस प्रकार ३ बार दवा डालनी चाहिये। पहिली दौड़ मे बिच्छू का विष डक पर आने लगेगा, २-३ दौड़ मे ठीक दश स्थान पर आजावेगा।

दूसरी दवा—

सर्व प्रथम जब आम्रमंजरी देखें तभी मंजरी को उसी समय दोनों हथेलियों व अंगुलियों में खूब मल लीजिये। बस १ साल तक जिसको बिच्छू काटे उस पर अपने हाथ फेरने से बिच्छू उतर जावेगा। इस प्रयोग से शतप्रतिशत बिच्छू का जहर उतर जाता है।

कफावरोध पर

गले मे कफ अटक गया हो, कोई गर्भिणी स्त्री है, रस दे नहीं सकते अथवा कोई ऐसा रोगी है जो दवा भी नहीं

—लेखक—

पीता हो, और न इंजेक्शन योग्य शरीर रहा हो तो उस समय यह औषध रत्न जादू का काम करती है। यह प्रयोग मेरे पूज्य ससुर जी ने दिया है, शत प्रतिशत सफलता मिल है—

पुराने एरड मूल का स्वरस	१ तोला
धतूरे के पत्तों का स्वरस	१ तोला
हींग	१ माशा
अफीम	आधा माशा

विधि—दोनों स्वरसों का मिश्रण कर अफीम घोलकर पुन हींग घोलकर गले पर लेपकर कडे की आंच से सेको। उसी समय कफ नीचे उतर जावेगा।

पार्श्वशूल, कास कफ पर—

मोथा	भारंगी
कायफल	धनिया
चिरायता	पित्तपापड़ा
वच	हरड
काकडासिंगी	देवदारू

मात्रा—सबको सम भाग ले, २ तोला क्वाथ की दवा को १ पाव जल में निचोड़ अष्टावशेष या अवस्थानुसार चतुर्थांशावशेष रहने पर प्रात सायंकाल पिलावें।

गुण—सगर्भा स्त्री या अन्य रोगी की छाती में दर्द, शुष्क कास, खांसने में बहुत पीड़ा, ज्वर, श्वास, मन्दाग्नि, अरुचि, शिर.शूल को प्रथम दिन में ही आशातीत लाभ होगा।

२-३ दिन लगातार देते रहिये। ज्वर (प्रायश. कफज्वर) आदि सब दूर हो जावेंगे।

[पृष्ठ ७०५ का शेषांश]

नहीं देता, और न कभी इसकी पुनः उत्पत्ति होती है।

यह प्रयोग अनेकों बार का अनुभूत है। मेरी कुल-परम्परा से इसको सफलता-पूर्वक प्रयोग करते आये हैं। वैद्य समाज भी अनुभव कर यश लाभ करे।

[पृष्ठ ७०६ का शेषांश]

मोम	आध सेर
कबीला	२० तोला
मुर्दाशंग,	१० तोला
सुहागा	५ तोला
तुत्थ	३ तोला
सिंदूर	५ तोला

विधि—प्रथम कूटने की चीजों को कूटकर महीन चूर्ण बनाले फिर मोम को पिघलाकर तैल कडुआ डाल दे और कूटा हुआ द्रव्य भी डाल दे और अग्नि से उतार कर ठंडा अर्थात् जमने तक हिलाते जांय। मलहम के रूप में होने पर व्यवहार में लावे।

गुण—यह मलहम हर एक फोड़े को चाहे कैसा ही दुष्ट व्रण क्यों न हो शीघ्र ही नष्ट कर देता है, अग्नि का जला हुआ भी ठीक हो जाता है। वैद्य बन्धु बनाकर व्यवहार करें।

वातकुठार तैल

माल कांगनी तैल	२० तोला
तेल सरसों का	५ सेर

कल्क—

रूमी मस्तगी	कूठ
फूल प्रियंगू	शृङ्गी विष
रास्ना पत्र	जटामांसी
वच	देवदारू
एरण्ड जड	त्रिफला
दारुहल्दी	–प्रत्येक ४-४ तोला

विधि—कल्क में तैल सिद्ध करके बनाया जाय।

गुण—सर्व प्रकार के वात-विकार में मालिश की जाय, तेल गर्म करके व्यवहार किया जाय तो अच्छा लाभ देता है।

श्री० लादूराम जी "विरक्त" शास्त्री

गाँधी सार्वजनिक औषधालय, कैरू-जोधपुर

—:❀:—

पिता का नाम— चौधरी वीरमाराम ज

आयु—२४ वर्ष जाति—जाट राजपूत

प्रयोग-विषय – १-वात व्याधि पर २-नासूर पर–
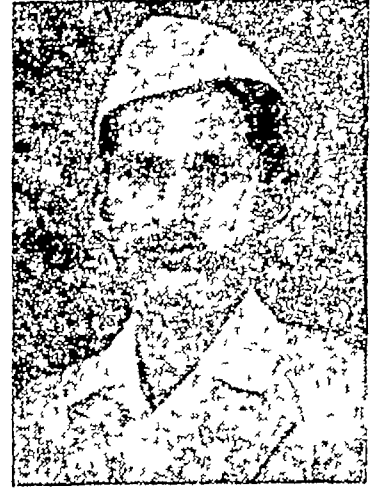
"आपने संस्कृत कालेज बनारस की मध्यमा, तथा अन्य विविध सस्थाओं से आयुर्वेद की विविध उपाधियां प्राप्त की हैं। आप केवल गत द वर्षों से चिकित्सा-कार्य भी कर रहे हैं। आपके लेख पत्रों मे प्रकाशित होते रहते हैं। आपको सार्वजनिक कार्य करने मे अधिक अभिरुचि है।"

—सम्पादक।

वातव्याधि पर–

चोवचीनी	आधसेर
दालचीनी	वंशलोचन
अकलकरा	लवग
जावित्री	पीपर
सोंठ	श्वेत मूसली
सतावर	जायफल

—प्रत्येक ६–६ माशे

विधि—चोवचीनी के साथ कूट कपड़-छन करके उसमे बराबर मिश्री मिलाकर रखलें।

सेवन-विधि—१-१ तोला प्रात.सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करें, अवश्य लाभ होगा।

गुण—इससे सभी वात रोग नष्ट होते हैं। हाथ-पैरों की सधियों की वाई, पैरों मे शर चलना, सम्पूर्ण शरीर के हाड़-हाड़ दुखना आदि सब वात के रोग नष्ट होजाते हैं।

नोट—औषधि सेवन काल मे पथ्य से रहना अत्यावश्यक है। वातरोग मे निषिद्ध संपूर्ण पदार्थों का परित्याग कर देना चाहिये। लहसन का सर्वदा के लिये परित्याग करना अत्यावश्यक है।

नासूर पर–

सर्प की कांचली २ तोला लेकर गाय के घृत में डालकर तल लेवे, पश्चात् निम्न लिखित औषधियां उस घृत मे डाले।

पारद	३ माशे
आमला सार गधक	३ माशा
मंहदी	३ माशा
भुनी फिटकरी	६ माशे
नीलाथोथा	६ माशा

निर्माण-विधि—नीलाथोथा को महीन कर अग्नि पर गरम करले। पारद और गंधक की पृथक कज्जली बनाकर बाद मे मंहदी आदि सम्पूर्ण औषधियां महीन पीसकर घृत मे मिला दें। यदि घृत कम पड़े तो फिर डालकर मलहम जैसा बना कर रखदें।

इस मरहम के लगाने से नासूर भगंदर गंभीर शर्तिया नष्ट होते हैं। वैद्य महानुभाव प्रयोग मे लाकर लाभ उठावे।

श्री. पं० विश्वनाथ जी त्रिपाठी वैद्य

पो० सिधावे (रामकोला) जिला देवरिया

—०:※:०—

पिताका नाम— श्री० पं० भृगुरासन त्रिपाठी

आयु–३८ वर्ष जाति–ब्राह्मण

प्रयोग विषय १–श्वास–कास २ आमातिसार

"आपने संस्कृत की मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण कर आयुर्वेद की कविराज एवं आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की है। आप ग्रामीण सभा के प्रधान सभापति हैं। आप इञ्जेक्शन देने में भी अभ्यस्त हैं तथा सफल चिकित्सक हैं।"

—सम्पादक।

—लेखक—

लशुनासव—

लहशुन का रस प्याज का रस

घीकुमारी का रस आर्द्री (अद्रक) का रस

मरिच का रस मधु

हरेक २०–२० तोला

विधि—सब दवा एक मे मिलाकर जमीन मे एक मास तक गढ़ा रहने देवे। बाद मे निकालकर छानें और बोतल में भर कर रख दें, कार्क मजबूत होना चाहिये।

मात्रा—६ माशे से १। तोला तक बराबर पानी मिलाकर। भोजन के बाद देवें अथवा सुबह–शाम भी दे सकते हैं।

गुण—इस दवा के सेवन से श्वास-कास, क्षय, दस्त, शूल, मन्दाग्नि, सग्रहणी आदि दूर होजाते हैं।

उपली भस्म योग—

उपली (कण्डे की राख) १ पाव

सोडाबाई कार्ब अथवा मीठा सोडा १ पाव

पिपरमेंट सत्व १ तोला

विधि—तीनो दवाओं को एक में खरल कर बोतल मे रखदें, जरूरत पड़ने पर व्यवहार करें।

गुण—दस्त आंव में बहुत गुणकारी सिद्ध होचुका है।

मात्रा–६ माशे से १ तोला तक, ठण्डे पानी से पीवें।

(पृष्ठ ७०८ का शेषांश)

—सब द्रव्यों को आवले के स्वरस की ५ भावना देकर मटर के दाने बराबर वटी बनाकर छाया मे सुखा शीशी मे रखदें।

मात्रा—एक-एक गोली ताजे मधु एक तोला से सुबह-शाम ले, तीन सप्ताह में रोग समूल शांत होकर कमर दर्द, हाथ-पैरों की जलन उपद्रव भी शात हो जायगे।

वर्जनीय पदार्थ—अधिक नमक, मिर्च, अम्ल पदार्थ तैल की वस्तुये दिन का शयन व रात्रि का जागरण।

पं० शिवबालकराम जी शुक्ला वैद्य आयुर्वेद विशारद

शुक्ला आयुर्वेदिक फार्मेसी, नजरलालपारा (विलासपुर)

पिता का नाम— पं० गदाधरप्रसाद जी शुक्ल

आयु—२६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय— १-आमवात २-बालातिसार

"श्री शुक्ला जी ने १६३५ ई० में आयुर्वेद-अध्ययन प्रारम्भ किया था, १६४० में आयुर्वेद-विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण कर चिकित्सा प्रारम्भ की, किन्तु बाद में कांग्रेस-आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण आपको जेल जाना पड़ा तथा आपका कार्य बन्द होगया। सन् १६४५ ई० से विलासपुर में आप चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आप उद्योगी नवयुवक हैं।" —सम्पादक।

आमवात, शोथ-नाशक योग—

—कसीस बढ़िया २० तोला लेकर एक हांडी में भर दीजिये, और उसमें ऽ= नीम के पत्तों का स्वरस डाल दीजिये। हांडी का मुंह एक सरवा से बन्द कर दीजिये, फिर कपड़-मिट्टी करके ५ सेर उपलों में रख फूंक दीजिये। उत्तम लाल रङ्ग की भस्म तैयार होजायगी। भस्म को खुरच लीजिये और शीशी में भरकर रख दीजिये।

सेवन-विधि—आमवात, शोथ वाले रोगी को २ रत्ती से १ माशा तक अवस्थानुसार, ताजे ऽ— मक्खन में या ऽ— साढ़ी में मिलाकरके सुबह शाम खिलाइये। इसके पहिले रोगी को उत्तम जुलाब देना परमावश्यक है। खाने के लिये चना की रोटी, शहद के साथ या पपीता के साग के साथ खाना चाहिये।

बालातिसार नाशक—

—एक अनार का कच्चा फल वजन २॥ तोले का लेकर उसके बीच में चाकू से गढ्ढा कीजिये और उसमें—

अफीम जावित्री लौंग ३-३ माशे

—ले बारीक करके उसी गढ्ढे में भर दीजिये और गढ्ढे के ऊपर का टुकड़ा छेद पर ढाक दीजिये और सूत के तागे से इस तरह से लपेटिये कि अनार का रङ्ग बिलकुल न दीखे। फिर उसे २॥ तोले घी में तल लीजिये, जब अनार का रङ्ग थोडा लाल हो जाय तो निकाल लीजिये और सूत निकाल करके, उस फल को बढ़िया खरल में घोटिये और मूङ्ग प्रमाण गोलियां बना लीजिये। छोटे २ बच्चों को १ गोली सुबह शाम ताजे तक्र में मिला कर पिलाइये। इससे हमने अनेक बच्चों को आराम किया है।

गुण—यह बालकों के हरे-पीले दस्तो के लिये उत्तम है।

आयुर्वेद विशारद डा॰ पुरषोत्तमदास "शैलार" शास्त्री

H. M. B. B S. दमोह सी॰ पी॰

पिता का नाम—
श्री. गिरजा चरण जी नेमा
आयु–२८ वर्ष जाति–नेमा

"आपने इंटर की परीक्षा पास कर आयुर्वेद का अध्ययन किया। तत्पश्चात् विश्वनाथ आयुर्वेद विद्यालय दमोह में २ वर्ष तक आयुर्वेद तथा होमियो के अध्यापक पद पर रहे। अब आप जयहिंद अस्पताल दमोह में चिकित्सक हैं। आपको एलोपैथिक, होमियो, क्रोमोपैथिक, तथा प्राणचिकित्सा का भी ज्ञान है। आप आयुर्वेद महामंडल के सदस्य भी हैं।" –सम्पादक।

—लेखक—

सफेद दागों पर

कड़वी तोंबी का स्वरस तुलसी का स्वरस
बावची चित्रक (चीते की जड़)
मीठा तेल –प्रत्येक २॥–२॥ तोला

विधि—प्रथम चीते की जड़ तथा बावची को कूट छान कर उपरोक्त तेल तथा सरसों में मिला कर खूब घोटें। पश्चात् ईख के सिरके मे मिलाकर सफेद दागों मे लगाने से दाग नष्ट होजाते हैं। इसके साथ महामजिष्टादि क्वाथ भी पीना अच्छा है।

सिर दर्द नाशक—

सेंधानमक	१ रत्ती
पीपल	१ रत्ती

—पानी मे घिसकर २–३ बूंद नाक में डालने से सिर दर्द फौरन मिट जायगा।

दाद नाशक—

लेमन जूस	१४ ड्राम
गोवा पाउडर	२ ड्राम

विधि—दोनों को मिलाकर इसे मलकर लगावे कुछ लगती है, मगर दाद का खास दुश्मन है।

श्वास कास कफ नाशक—

बहेड़ा	२ तोला
मुलहठी	पीपल छोटी
कुलंजन	वंसलोचन
कत्था	सेंधानमक
जवाखार	—सातों १–१ तोला
छोटी इलायची दाना	६ माशे
कालीमिर्च	६ माशे

विधि—सबको कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर अदरक के रस मे गोली बनाकर चूसना चाहिये। इससे कफ निकल कर बाहर हो जाता है। और श्वास कास कफ नष्ट हो जाते हैं। गोली २–२ रत्ती की बनानी चाहिये।

भिषग्भूषण पं० रामस्वरूप जी वैद्यशास्त्री

अछल्दा (इटावा)

—लेखक—

पिता का नाम— स्वर्गीय प० कन्हैयालाल जी त्रिपाठी वैद्य

आयु—३३ वर्ष जाति–ब्राह्मण

प्रयोग विषय- १ पक्षाघात पर २–अर्कादि वटी

"आपके पिता जी योग्य एवं सफल चिकित्सक थे। आपने भी आयुर्वेद अध्ययन कर भिषग्-भूषण एवं वैद्यशास्त्री की परीक्षाऐं उत्तीर्ण कर चिकित्सा कार्य मे प्रवेश किया है। आप सफल चिकित्सक हैं। आशा है आपके निम्न प्रयोग सफल प्रमाणित होंगे।" —सम्पा ।
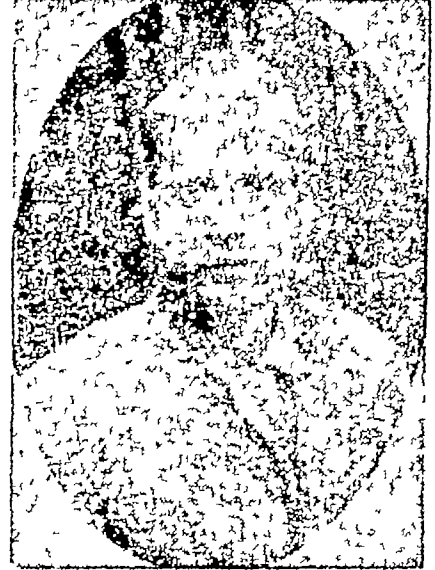
पक्षाघात पर

(वात व्याधि से होने वाली पीड़ा व शोथ पर)

सफेद संखिया	२ तोला
पीली सरसों	२० तोला
कुचिला के टुकड़े	२० तोला
श्राक की जड़	४० तोला
धतूरे के फल (पके और सूखे)	८ नग

विधि—सबको कुचल कर एक बोतल मे भरदें। बोतल का मुंह छोडकर कपरौटी करदे। सुखाकर पाताल यन्त्र से तैल निकाल लें।

मात्रा—जिन्हें उग्र व्याधि हो, वे केवल इस तैल को ही व्याधि स्थान पर मर्दन करे। साधारण वात-व्याधि पर तिगुना तिल का तेल मिलाकर मर्दन करें। दिन मे दो बार लगाना चाहिये।

नोट–इस तेल मे सँखिया पड़ता है, अतएव निर्माण करते समय तथा प्रयोग करते समय सावधानी रखनी चाहिये।

अर्कादि वटी

सेंधा नमक	ताजी लाख पीपल
लौंग	काली मिरच
बहेड़े का छिलका	—पांचों १-१ तोला
आक के सूखे फूल	२ तोला
खैरसार (कत्था)	४ तोला
यवक्षार	३ माशा
अनार का छिलका, अफीम	६–६ माशा

विधि—सब औषधियों को ले, कूट-छानकर बबूल की छाल के काढ़े या खैर (कत्था के) काढ़े मे घोट चने बराबर गोली बनालें।

मात्रा—१ से २ गोली तक।

समय-सुबह शाम जिस समय ज्यादा खांसी हो।

अनुपान—लगे हुये पान बंगला या मुंह मे गोली रखकर चूसना चाहिये।

गुण—सब प्रकार की खांसी, कफ से गले की रुकावट जुकाम, बालकों की कुकर खांसी आदि के लिये उपयोगी है।

श्री. जगन्नाथप्रसाद केशरी वै०शास्त्री

देशबन्धु औषधालय, झाझा (मुंगेर)

पिता का नाम— श्री. शिवटहल शाह केशरी

आयु—५७ वर्ष जाति—केशरवानी वैश्य

प्रयोग विषय १ यक्ष्मा २ उपदंश ३ कायाकल्प

"आप स्वाध्याय से आयुर्वेद ज्ञान प्राप्त कर चिकित्सा कार्य मे प्रवृत्त हुए। सफल चिकित्सा-पद्धति के एवं परोपकार वृत्ति के कारण आपको अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। जमालपुर (केशोपुर) मे १७ वर्ष चिकित्सा कार्य करने के वाद अव आप उक्त स्थान पर सफलता पूर्वक चिकित्सा कर रहे हैं। हिन्दी पद्य मे आपने रामचरितावली और शिवभजनावली दो पुस्तकें भी लिखी है। आपके निम्न प्रयोग आपके चिरकालीन अनुभव का फल है।"

—सम्पादक।

—लेखक—
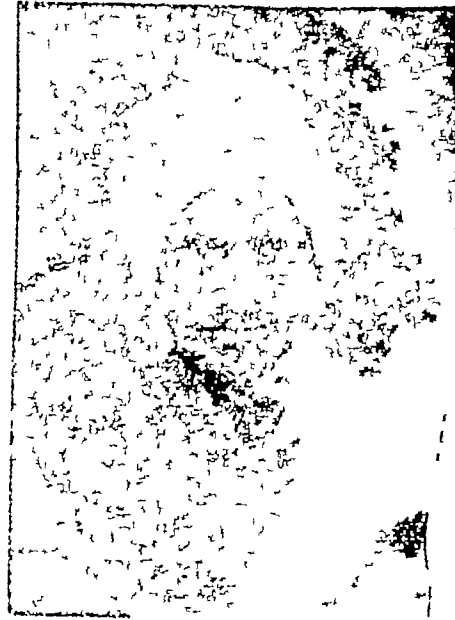
राजयक्ष्मागजसिंह क्वाथ —

अनार की छाल	बांसामूल
गूलर की छाल	गूलर का फल
परवल मूल	नीम की सींको की छाल
पित्तपापड़ा	मोथा
ईख (गन्ना) मूल	हल्दी
पानमूल	अमरूद की छाल
गुलाब फूल वृक्ष की छाल	दालचीनी
आक (मदार) फूल	अमरलती
लसौड़ा फल	वडी इलायची
छोटी इलायची	चिरायते की डंडी
चिरायते की पत्ती	लौंग

—प्रत्येक १-१ तोला।

विधि—इन सवको कूटकर ४॥ सेर जल मे मंगल के दिन औटावे, शेष आध सेर रहने पर उतार छानकर बोतल मे रखलें, इसमे मृतसजीवनी सुरा आध औस मिलावें।

मात्रा—आध औस। सुवह, दोपहर (१२ वजे) दिन, शाम और रात सोने के समय इस प्रकार दिन मे ४ वार पिलावें। दवा सेवन के ५ मिनट वाद, थोडा अदरख सेंधा नमक के साथ खाकर वायें करवट से थोडी देर आराम करें। भूख लगने पर वकरी के दूध से भात वना कर दें। अथवा चूट या मकई की रोटी खाय।

गुण—इसके सेवन से उपद्रव सहित यक्ष्मा रोग दूर होता है।

नोट—अच्छा हो जाने पर ११ साधुओं को श्री. महावीर जी के स्थान पर भोजन कराना चाहिये।

उपदंशगजसिंह भस्म—

शखिया	दालचिकना
रस कपूर	गोदती हरिताल

—समभाग ले चूर्ण कर, मदिरा नं० १ की १ बोतल लेकर नीम की लकडी से खरल करे। थोडी

मदिरा डालते जांय और खरल करते जांय। इसी प्रकार १ बोतल मदिरा सूख जाने पर, छोटी २ टिकियां बना सुखा कर, विद्याधर (ऊर्ध्व-पातन) यंत्र में देकर चूल्हे पर चढ़ावे, ऊपर वाली हांडी का पानी गरम होने से बदल दें। लगभग ३ घण्टे में उतार लें, ठंडा होने पर ऊपर वाली हांडी की पैंदी में जो दवा उड़कर लग गई हो, उसको निकाल कर शीशी में रखलें।

मात्रा—१ चावल दवा मक्खन १ तोला के साथ प्रति-दिन सुबह ११ दिन सेवन करने से आतशक उपदंश उपद्रव सहित दूर होता है।

उत्तम सिद्ध प्रयोग—

यह योग मैंने पूज्यपाद परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री. १००८ स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी महाराज हिमालय से बहुत परिश्रम तथा बहुत सेवा से प्राप्त किये हैं। वह आज देश हित देश सेवा के लिये तथा वैद्य-बन्धुओं के यश और बूटी के चमत्कारिक गुण जगत में प्रकाश करने के लिये भेज रहा हूं। प्रयोग निम्न लिखित है :—

अमर संजीवनी बूटी छाया में सुखाई हुई २ भाग

श्वेत चन्दन	स्याह मूसली
सफेद मूसली	सेमर के फूल
कौंच बीज शुद्ध	नैपाली शतावर

—१-१ भाग लेकर शुभ दिन तिथि नक्षत्र में चूर्ण कपड़छनकर शीशी में रखें।

सेवन-विधि—विरेचनादि से शरीर को शुद्धकर शुभ दिन तिथि नक्षत्र से दवा सेवन करना शुरू करना चाहिये।

मात्रा—३ माशे सुबह यह महौषधि खाकर ताजा जल थोड़ा पीना चाहिये। इसी प्रकार ३-३ माशे रोज यह महौषधि सेवन करे। सेवन करने के समय ब्रह्मचर्य से रहें। यह कायाकल्प करने वाला उत्तम रसायन और आयु वर्द्धक है।

नोट—अमर संजीवनी बूटी की उत्पत्ति बरफ के नीचे हरद्वार और हिमालयादि पर्वत पर होती है। चैत, वैशाख और ज्येष्ठ के महीनों में मिलती है। इसकी बेल छोटी, जमीन में पसरी रहती है, पत्ता रूखा, फूल काला रंग का, पत्ता पीला और शाखा लाल होती है।
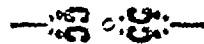
वै० भूपाल सिंह जी

मुकाम कुम्हौर (फर्रुखाबाद)

पिता का नाम— श्री. योधिचन्द्र सिंह जी

जाति—पमार ठाकुर आयु—५१ वर्ष

प्रयोग विषय- १ आधाशीशी २ पसली का दर्द

३ उदररोग ४ अतिसार

"श्री. वैद्य जी एक अनुभवी चिकित्सक हैं तथा आपने २५ वर्ष निरंतर निःशुल्क चिकित्सा करके अनुभव प्राप्त किया है। आपके चिकित्सा काल में जो प्रयोग सफल प्रमाणित होते हैं उनको 'धन्वन्तरि' मे प्रकाशनार्थ आप यदा-कदा भेजते रहते हैं। आपके निम्न प्रयोग भी आशा है वैद्य समाज के लिये उपयोगी प्रमाणित होंगे।" —सम्पादक।

—लेखक—

आधाशीशी पर

असली केशर	१ माशा
कपूर देशी	१ माशा
गाय का घी	६ माशा

—केशर को बारीक पीस कर कपूर और घी गर्म करके मिला कर केशर डाल कर जिस तरफ दर्द होता हो उसी तरफ नाक मे सूंघने से दर्द फौरन बंद होता है। पथ्य मे दूध और चावल की खीर शक्कर डाल कर खाना चाहिये।

पसली के दर्द पर

गोदन्ती हरताल	६ माशा
मैदा लकड़ी	६ माशा

—दोनों दवा पीस कर २ तोले शुद्ध घी मे गर्म कर मालिश करने से दर्द बंद होता है, ऊपर से अरंड के पत्ते गर्म करके बांधना चाहिये।

डब्बा (पसली) चलने पर—

मस्तगी	३ माशे
कपूर देशी	३ माशे
नमक सैंधा	३ माशे
अफीम	१ माशा
मोम	६ माशा
गाय का घी	२॥ तोला

—पहले मस्तगी पीस कर फिर और दवा पीस कर रखले। फिर मोम और घी गर्म करलें और दवा मिला कर रखलें। दिन और रात में दो-तीन बार मालिश करे और ऊपर से घी चुपड़ कर बॉधने से अवश्य लाभ होता है। प्रयोग परीक्षित है।

[शेषांश पृष्ठ ७१९ पर]

डाक्टर श्री० गंगाचन्द्र जी अग्रवाल वैद्यशास्त्री ज्योतिर्विद

प्राणेश औषधि मन्दिर, मिर्जापुर

—:०:※:०:—

-लेखक-

पिता का नाम— लाला मूलचन्द अग्रवाल

आयु—४२ वर्ष जाति—अग्रवाल वैश्य

"आपको अपने विद्यार्थी जीवन से ही चिकित्सा करने का शौक था। आप होमियोपैथी, एलोपैथी, यूनानी एव आयुर्वेद चिकित्सा-पद्धतियों का ज्ञान रखते हैं किन्तु विशेषत: आयुर्वेद चिकित्सा-पद्धति से आप चिकित्सा करते हैं। सफल चिकित्सक के साथ-साथ आपको कविता से भी प्रेम है। आपके पितामह योग्य एवं अनुभवी चिकित्सक थे, उनकी फारसी भाषा में लिखी पुस्तक के निम्न प्रयोग आपने प्रकाशनार्थ प्रेषित किये हैं। ये दन्त-रोगों के लिये अत्युपयोगी प्रमाणित होंगे।" —सम्पादक।

दन्त मंजन नं० १—

रूमी मस्तङ्गी पीपल बड़ी
फिटकिरी —तीनों १-१ तोला
अकरकरा माजूफल २-२ तोला
मिर्च स्याह सुपारी भुनी
बादाम (भुना) भिलावा (भुना)
तूतिया (भुना) —हरेक ३-३ तोला
तेजबल २० तोला
सोंठ सफेद नमक स्याह ५-५ तोला
संगजराहत त्रिफला भुना ८-८ तोला

—बारीक कपड़छन कर व्यवहार में लावें।

दन्त-मंजन नं० २—

सोंठ मिर्च मोथा कत्था
लौंग दालचीनी गेरू
नेपाली धनिया —हरेक ५-५ तोला
पीपल कपूर १-१ तोला
चिती सुपारी २॥ तोला
चाक-खड़िया ऽ॥=

—बारीक कपड़छन कर व्यवहार करें।

[पृष्ठ ४१८ का शेषांश]

अतिसार नाशक

केला की कच्ची फली एक नग
हींग अफीम ३-३ माशे

—केला की फली चीर कर अफीम और हींग अन्दर भरकर ऊपर से कपड़-मिट्टी मे सना हुआ लपेट दे और दो उपलों में रखकर जलालें। मात्रा आधा माशा दिन में ३ मतवा शहद में चटाने से पुराने से पुराने दस्त बंद होते हैं। अगर आँव हो तो ३ माशे सोंठ का चूर्ण मिला लेना चाहिये।

पथ्य—में मसूर की दाल, बैंगन का भत्ता, काकुन और साठी चावल देना चाहिये। बच्चों के लिये उक्त खुराक का चौथाई भाग देना चाहिये।

श्री. वैद्य आत्माराम जी श्रीवास्तव

श्रीवास्तव धर्मार्थ औषधालय, बांदा ।

—०:॰:०—

-लेखक-

पिता का नाम— श्री. तोताराम जी श्रीवास्तव

जाति—कायस्थ उम्र—४६ वर्ष

प्रयोग विषय— १ यकृत प्लीहा वृद्धि २—सुजाक आदि ।

"आपने वैद्यक की शिक्षा अपने पूज्य पिता जी से जो एक अनुभवी व विख्यात वैद्य थे, प्राप्त की थी। आपके यहाँ वैद्यक-कार्य परम्परा से चला आरहा है। आप वैद्य सभा बांदा के मन्त्री व चिकित्सा प्रचारक संघ बाराबंकी के सदस्य हैं। निम्न-लिखित प्रयोग आपके औषधालय में बहुत समय से सेवन कराये जारहे हैं और उनसे लाभ होता है। वैद्य-समाज तथा जनता के लाभार्थ ये प्रयोग प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए हैं। पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

यकृत व प्लीहा पर—
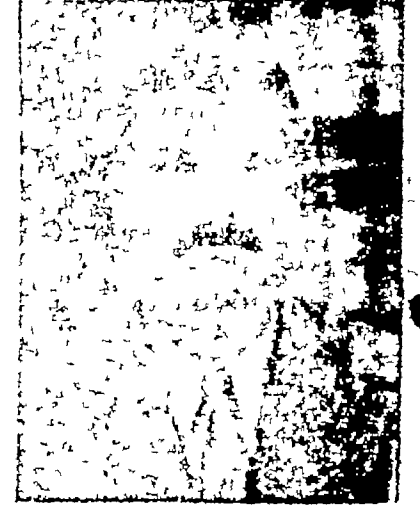
सौंठ	२ तोला
जवाखार	सज्जीखार
शोराकल्मी	नौसादर
सत्वगुर्च	सुहागा चौकिया(भुना)

हरेक १—१ तोला

विधि—सबका चूर्ण बनावें तथा दो समय भोजनोपरांत १॥ मासे की मात्रा में जल से दें। कुछ दिन के प्रयोग से यकृत-प्लीहा वृद्धि रोग नष्ट होजायगा।

सुजाक आदि पर—

शिंगरफ	कबीला
मुर्दासंग	कत्थासफेद
दाना इलायची	हीराकसीस (हरादाना)

प्रत्येक १—१ तोला

गाय का घी	१० तोला

विधि—ताँबे की डेगची में डाल कर नीचे से कण्डे की आग दें और नीम के डण्डे से जिसके नीचे ताँबे का पैसा लगा हो ६ घंटे घोटे। कंठमाला में मलहम की तरह लगावें और बाकी बीमारी में सादे पान में १ रत्ती लगाकर खावें। पान में मसाला न डाला जावे।

गुण—इसके प्रयोग से सुजाक, उपदंश, पीनस, कण्ठमाला व जहरवाद रोग नष्ट होते हैं।

प्रो० वै० पं० सत्येश्वरानन्द जी शर्मा

ह.खेड़ा, देहरादून।

"धन्वन्तरि के पुराने ग्राहक श्री. पंडित जी से सुपरिचित होंगे। आप लगभग १४-१५ वर्ष पूर्व 'धन्वन्तरि' के लिये उपयोगी सामिग्री प्रकाशनार्थ भेजते रहते थे। इतने समय पारिवारिक झंझटों के कारण आपको लेखन-कार्य से विरक्त होना पड़ा। अब आप पुनः 'धन्वन्तरि' द्वारा वैद्यसमाज को अपने अनुभव प्रस्तुत करने के लिये उद्यत हुए हैं। आशा है पाठक आपके उपयोगी लेख धन्वन्तरि के आगामी अंकों में निरंतर पढ़ते रहेंगे। प्रस्तुत प्रयोगों से आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।
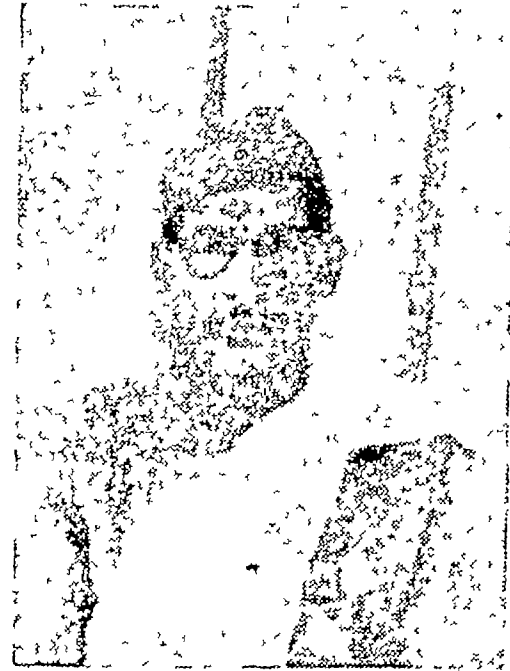
-लेखक-

पहिले धन्वन्तरि के पाठकों को "व्रण प्रक्षालन अर्क (टिंचर) और "वेदनानाशक घृत" के अपने आविष्कृत और परीक्षित प्रयोग भेंट किये थे। वैद्य महानुभावों ने उनका विशेष समादर किया था। कई सज्जनों ने मेरे से पत्र द्वारा सम्पर्क भी स्थापित किया था, आज कई वर्षों बाद अपने कुछ अनुभूत प्रयोग भेंट कर रहा हूं। आशा है वैद्यबन्धु इनका विधिपूर्वक निर्माण कर प्रयोग में लाकर जनता का हितसाधन कर यशस्वी बनेंगे। स्मरण रहे मैं जो प्रयोग सर्वसाधारण के हितार्थ प्रकट कर देता हूं। वे मेरे औषधालय में अन्य विकल्प और नाम से बनने लगते हैं। इस लिए इनको स्वयं बनाकर प्रयोग में लाना चाहिए।

किसी भी प्रयोग के विषय में विश्लेषणात्मक विवेचन कर लेने पर उसके अनेक विकल्प प्रस्तुत करना सम्भव होता है। इस लिए यह कभी न समझना चाहिए, कि जो प्रयोग यहां उद्धृत किये जा रहे हैं उनमें किसी प्रकार का लुकाव-छिपाव किया गया है। विज्ञ पाठकों से इन प्रयोगों को विश्लेषणात्मक अनुसन्धान पूर्वक स्वीकार करने का आग्रह है।

बाल संजीवन-वटी

(डब्बा या सूखिया मसान रोग के लिए)

हमने इसे इसके अतिरिक्त कई अन्य बाल-रोगों में प्रयोग में लाकर सफलता प्राप्त की है। प्रयोग करते समय औषधि में सम्मिलित द्रव्यों के गुण दोषों से पूर्ण परिचित हो लेने पर, रोगी की अवस्था के अनुकूल अनुपान व्यवस्था कर देने से सुगमतया सफलता की आशा की जाती है।

प्रयोग—

चाकसू	१ पाव
गदहे का मूत्र	२ पाव
गदहे की लीद	५ सेर
हांडी मय ढकना	१ सेर समाई की
तुलसी (यदि काली मिल सके तो सर्वोत्तम)	

के पत्तों का रस	२ पाव

निर्माण विधि—पहिले हांडी में चाकसु और मूत्र डालकर खूब मिलालें, फिर ढकना लगाकर उसे कपड़ मिट्टी से बन्द करके सुखादें। एक गड्ढा खोदकर उसमें लीदा आधा ऊपर आधा नीचे रखकर बीच में हाडी को रखकर मिट्टी डालकर गड्ढे को बन्द करदे। १५ दिन के अनन्तर निकाल कर हांडी के भीतर से चाकसु के दाने तसले मे डालकर गरम पानी से खूब मसले, यहां तक कि उसके छिलके अलग हो जावें। तब वह साफ़ की हुई चाकसू की गिरी खरल में डाल कर गीले २ ही पीस डालें। बारीक पिस जाने पर उसमें तुलसी रस मिलाकर घोट कर सुखा डालें। जब घोटते २ गोली बनाने लायक होजावे मोंठ प्रमाण गोली बनाकर छाया मे सुखाले। शीशी भरकर मजबूत कार्क लगाकर रखे, क्योंकि मजबूत कार्क बन्द शीशी मे रखने से यह औषधि १० वर्ष तक प्रभाव-हीन नहीं होती।

व्यवहार-विधि—

सौंफ	६ माशा
अजवायन	६ माशा
कालानमक	५ रत्ती
पानी	१० तोला

—डालकर पकावें, बाकी ५ तोला रहने पर उतार छानकर रखलें। रोगी और रोग की अवस्था के अनुसार १–१ गोली औषधि इस अर्क के साथ चम्मच मे घोटकर दिन में २–३ बार देना चाहिए। दिन मे सौंफ अजवायन का पानी १–२ चम्मच पिलाना चाहिए। यह मात्रा १–२ वर्ष तक के वालक के लिये है। इससे अधिक या छोटी आयु के वालकों के लिये मात्रा अधिक या कम कर लेनी चाहिए।

प्रभाव—इसके सेवन कराने से वालक की अंतड़ियों में चिपका हुआ, लेसदार चिकट मल वाला, नीला, पीला या सफेद रग की आँव की सूरत में निकलता है। रक्त व यकृत में संचित दूषित पित्त, कफ मल व स्वेद द्वारा बहिर्गत होता है। मुक्त दुग्ध आदि पथ्य से शुद्ध रस-रक्त के निर्माण में सहायता मिलती है। १५ दिन के सेवन से चेहरे की मुर्दनी, त्वचा की सिकुड़न और पीला या रक्तहीन-पना तथा पेट का तुम्बापन व पेट के ऊपर चमकने वाली नीली नसें विलीन हो जाती हैं। वालक का मुख मण्डल दमकने लगता है। कास और ज्वर भाव व चौकना दूर होजाता है। वालक के स्वभाव का चिड़चिड़ापन व रोना स्वभाव हास्यक्रीडा में परिणत हो जाता है।

जैसे २ आरोग्यता प्राप्त होती जाय, औषधि ३ वार के बदले २ बार देना चाहिये, किन्तु औषधि का सेवन तब तक जारी रखना चाहिये, जबतक वालक पूर्ण स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट न हो जाय।

औषधि सेवन कराने के साथ २ लाक्षादि, महाचन्दनादि, चन्दनादि या महानारायण तैल की मालिश करते रहना चाहिये। इससे जहां वालक के शरीर में शिथिल रक्तप्रवाह में इच्छित प्रवहण-शीलता आती है, वहा मांस-पेशियों के अवरुद्ध विकास को अपने स्वाभाविक विकास में सहायता मिलती है। शिथिल स्नायुजाल के विकसित होने में सहायता मिलती है। भूत बाधा आदि का निराकरण होता है।

कभी-कभी ऐसे रोगी के रक्त में तीव्र अम्ल क्षारत्व प्रभाव संचित रहने के कारण औषधि सेवन कराने के १०–१५ दिन के अनन्तर बाहर त्वचा पर वेदनायुक्त फोड़-फुन्सी निकलने आरम्भ हो जाते हैं। यह भीतर संचित विकार के बाहर निकलने की प्रक्रिया स्वरूप होना सम्भव होता है। इसलिये ऐसी अवस्था में घबराना न चाहिए। यह तभी होता है, जब औषधि सेवन के साथ ऊपर लिखे अनुसार तेल की मालिश आरम्भ न की जाय।

गरम जल में थोड़ा सा गोमूत्र डालकर बालक को तेल मलने के बाद स्नान कराना चाहिये। गोमूत्र के अभाव में बच और बालछड़ डालकर उबाले पानी से स्नान कराना चाहिये।

पथ्य—यदि माता का दूध पीता हो, तो माता के दूध की परीक्षा कर लेनी चाहिये। वह दूषित पाया जावे, तो जीरकाद्य-मोदक या चूर्ण माता को सेवन कराकर शुद्ध कर लेना चाहिये। बाहर का दूध पीता हो, तो दूध में अवस्था के अनुसार थोड़ा सा चूने का पानी मिलाकर पिलाना चाहिये। दूध को ऐसी अवस्था में रखने की चेष्टा रखनी चाहिये। कि वह हर समय गुनगुना गरम बना रहे। अन्नाहार करने वाले बालक को पेया, विलेपि, नरम कृशरा (खिचड़ी) सेवन कराना चाहिये।

विशूचिका शमन वटी—

तेज पीली या लाल मिर्च का कपड़छन चूर्ण	२५ माशा
बढ़िया हींग भुनी	२५ माशा
अफीम शुद्ध	१२॥ माशा
कपूर	१२॥ माशा
[illegible]तल।	२॥ तोला

निर्माण विधि—इन सबको खरल में डाल कर अच्छी तरह से खरल कर के सबको मिलाकर एक जीव कर लेना चाहिए। फिर ४-४ रत्ती प्रमाण बटी बनाकर अच्छी तरह सुखा कर रखना चाहिए। इतने प्रयोग से २०० गोली बनानी चाहिये। अधिक बनाने के लिए उसी प्रमाण में सब चीजें अधिक लेनी चाहिये।

व्यवहार-विधि—तीव्र अजीर्ण या हैजा के लक्षण मालूम होते ही यह दवा १ गोली निम्बू का रस मिले हुए चीनी के शर्बत १ छटाक में घोल कर पिला देना चाहिये। साधारण अवस्था में दिन में २-३ बार देना पर्याप्त है, किन्तु रोग के भयङ्कर आक्रमण की दशा में आधा या एक घण्टे के अन्तर से ऊपर लिखे अनुसार जब तक पूर्ण लाभ न हो जाय तब तक सेवन कराते रहना चाहिये। यदि रोगी औषधि सेवन करते ही उसको वमन (क़ै) करदे तो तत्काल उसी समय दूसरी मात्रा एक-एक घूंट करके दे देनी चाहिए। जब तक औषधि हज़म होने न लग जाय, तब तक यह क्रम जारी रखना चाहिए।

विशेष सूचना—स्मरण रहे इसमें अफीम पड़ी हुई है और प्रति मात्रा आधी रत्ती प्रमाण में है। इसलिए पूर्ण वयस्क रोगी को ऊपर बताई अवस्था में भी ६ गोली से अधिक कभी न देना चाहिए। बालक को उसकी अवस्था के अनुसार चौथाई या आधी मात्रा में चौथाई व आधी गोली से अधिक न देना चाहिए।

हमें इस औषधि के प्रयोग में विभिन्न रूप में सफलता प्राप्त हुई है। कभी भयङ्कर दशा में भी अति शीघ्र और कभी साधारण दशा में भी विलम्ब से सफलता प्राप्त हुई है। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत हुआ कि रोगी के सरक्षकों को सूचना दे दें कि अब मुझे सफलता मिलने में सन्देह है और किसी को इस रोगी का भार सोंपा जा सकता है, किन्तु धैर्य और विश्वास पूर्वक औषधि का सेवन-क्रम जारी रखने पर अन्त में सफलता मिल ही गई। ऐसे अनुभवों का विस्तृत विवरण यहां देने से लेख अधिक बढ़ने का भय है। पाठकों की इस अभिरुचि को तृप्त करने के लिए किसी स्वतन्त्र लेख में ऐसे प्रसङ्गों का विशद-वर्णन देने का प्रयास करेंगे।

बड़े नगरों और कसबों में जहां सोडा-बरफ आसानी से मिल जाता है, वहां बरफ में ठण्डे किये हुए लैमन सोडा के पानी में मिला कर यह गोली घोल कर सेवन कराना चाहिये।

अधिक प्यास लगने की अवस्था में—

१—जहां बरफ मिल सके बरफ की डली मुंह में

रख कर चूसने को देनी चाहिए।

२—अम्भोद्रावक २ तोला १ छटांक पानी में मिला कर एक घूंट पीने को देना चाहिए।

३—पोदीना, सौंफ, अजवायन और प्याज़ को पानी से उबाल कर बनाया हुआ पानी पिलाना चाहिए। पानी पिलाते समय सावधानी रखना चाहिए। जहां तक हो सके एक बार में आधी व एक छटांक से अधिक न पिलाना चाहिए। रोगी के प्यास से अधिक छटपटाते रहने व मुंह के सूख जाने पर इतनी मात्रा में बार-बार दिया जाना चाहिए।

जबड़ा बन्द होने और गले में कीड़े पड़ने पर—

(१) जबड़े के बाहर महानारायण तैल या हींग लहसुन कड़वे तैल में जलाकर या सेंधा नमक बारीक पीस कर कड़वे तैल में मिलाकर और थोड़ा सा पानी डालकर पकाये हुए तैल या घी का जबड़े के जोड़ों व मुंह पर मालिश करना चाहिए।

(२) शहद	१ तोला
पोदीने का रस	६ माशा
प्याज़ का रस	३ माशा
सत् पिपरमेंट	१ माशा

—मिलाकर अंगुलि से या रुई के फाहे से रोगी के जुड़े हुए दांतों की संधि पर लगाकर मुंह के भीतर पहुंचाने की चेष्टा करनी चाहिए, मुंह खुलने पर रुई की फुरेरी से गले में काटों की जगह पर लगाना चाहिए।

विशूचिका की प्रत्येक अवस्था में सफल प्रयोगों और चिकित्सा-विधि का वर्णन हमारे लिखित 'भारतीय वैद्यों की सफल विशूचिका चिकित्सा' पुस्तक के छपने पर पढ़ने को मिल सकेगा।

विशूचिका शमन द्रव—

तीन एक्स रस या उत्तम देशी मद्य	१२ छटांक
तेज़ सूखी लाल मिर्च (का चूर्ण)	२० नग
लहसन का रस	११ तोला
गुड़	१ पाव
सेंधा नमक	११ तोला

निर्माण विधि—ऊपर की सब चीजें मजबूत कार्क वाली शीशी में भर खूब हिलाते रहना चाहिए, और १०-१५ दिन तक तेज़ धूप में रखना चाहिए। दिन में शीशी को कई बार ऊपर नीचे करके अच्छी प्रकार से हिलाते रहना चाहिए। जब औषधियों का सब अंश मद्य में घुल मिल कर एक रस हो जाय, तब औषधि तैयार समझना चाहिए। इसको बारीक कपड़े से छानकर बन्द डाट की शीशी में भर कर रखना चाहिए।

मात्रा—छोटे बालकों को अवस्था के अनुसार २ बूंद से १ माशा तक। वयस्कों के लिए ३ माशा से १ तोला तक।

अनुपान—बरफ से ठण्डा किये हुए लेमन सोडा निम्बू का रस व टाटरी मिला हुआ चीनी का शर्बत छोटे बालकों को १ चम्मच और वयस्कों को १ छटांक प्रति मात्रा के साथ देना चाहिए। अन्य उपचार नं० २ के समान करना चाहिए।
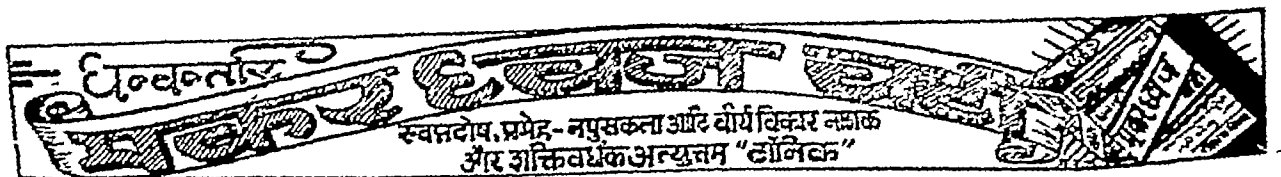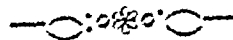
वैद्यराज कुंवर चन्द्रभानुसिंह जी आयुर्वेद विशारद

श्री. पुनीत आयुर्वेदिक भवन, सुजर्मा पो० कैलारस (ग्वालियर)

पिता का नाम—श्री. राव. पुनीतसिंह जी साहित्यायुर्वेदाचार्य

आयु–३३ वर्ष, जाति–राजपूत (शिकरवार)

प्रयोग-विषय-१-निमोनियां (फुफ्फुस प्रदाह)
२-वाल-निमोनियां (पसली-चलना)

"आपके वंश मे कई पीढ़ियों से चिकित्सा व्यवसाय होता आया है। आपने श्री० पं० प्रयागनारायण जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य से आयुर्वेद का अध्ययन कर विद्यापीठ की परीक्षा उत्तीर्ण की। आप गत १०-१२ वर्ष से स्वतन्त्र रूप से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपके परिश्रम एवं चिकित्सा-कौशल से स्थानीय जनता प्रसन्न है।" —सम्पादक।

निमोनियां [फुफ्फुस प्रदाह] नाशक प्रयोग—

श्वासकुठार रस	१ रत्ती
आनन्दभैरव रस	१ रत्ती
पार्श्वशूलारि	शुद्ध मधु
अद्रक स्वरस	—प्रत्येक ३–३ माशे

—सब औषधियों का चूर्ण लेकर अद्रक स्वरस व मधु मे मिलाकर हर ३–३ घण्टे के अन्तर से चटावे।

गुण—निमोनियां, प्लूरिसी एवं पार्श्वशूल दर्द वेचैनी, ज्वर, खांसी नष्ट होते हैं। किन्तु ध्यान रहे कि वात-कफ-ज्वर निमोनियां, पार्श्वशूल मे "पार्श्वशूलारि" सर्वदा व्यवहार करना चाहिये।

पार्श्वशूलारि—

अशुद्ध श्वेत स्फटिका (सफेद फिटकरी)
उत्तम काली मिर्च —सम भाग।

—लेकर कूट पीस वारीक वस्त्रपूत चूर्ण बनालें, और शीशी में कड़ी डाट लगाकर सुरक्षित रख दें। बस दवा तैयार है।

मात्रा—३-३ माशे तक शुद्ध मधु १ तोला के साथ सेवन करने से पार्श्वशूल (पसली का दर्द) निमोनियां दर्द १ मात्रा से बन्द होता है। कदाचित १ मात्रा से दर्द बन्द न हो तो ४० मिनट वाद दूसरी मात्रा और देदो।

फुफ्फुस प्रदाह हर तैल—

तारपीन का तैल	१ छटांक
कपूर डेली	३ माशे
तिल्ली का तैल	१ छटांक
उत्तम केशर	१ माशे

(शेषांश पृष्ठ ७२८ पर देखें)

—लेखक—

वैद्य खुशालचन्द जी वर्मा आयुर्वेद विशारद

बालाघाट (म०प्रान्त)

—लेखक—

पिता का नाम— श्री. टीकाराम वर्मा

जाति—खत्री आयु—५८ वर्ष

प्रयोग विषय १—डब्बा (निमोनिया) २ कृमि नाशक

३—सब प्रकार के फोड़े ४—रामबाण अश्वकंचुकी रस।

"आपने २१ वर्ष तक अध्यापन का कार्य किया है, आपके पिता, नाना और मामा योग्य एवं अनुभवी वैद्य थे, जिनके द्वारा आपको चिकित्सा सम्बन्धी कार्य का अनुभव हुआ, सन १९२० में शिक्षण कार्य से मुक्त होने पर आपने आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा करना प्रारम्भ किया और धीरे २ आपकी गणना प्रसिद्ध वैद्यों की श्रेणी में होने लगी।"

—सम्पादक।

बालकों के डब्बा रोग पर—

पापड़ा १ सेर
कशीस (हीरा कसीस) आध सेर

—दोनों को अलग २ पानी में घोलो और एक तांबे की हड़िया में जिसमें अन्दर से कलई हो, पहले पापड़खार को छानो फिर कसीस को छानो। तत्पश्चात् उस हड़िया में एक घड़ा पानी भरदो, शाम को पानी भरकर प्रातः निथार दो और प्रातः दूसरा पानी भरकर शाम को निथार दो। इस प्रकार २१ बार निथारने पर उसकी तली में बैठे क्षार को कांसे के पात्र में रखकर सुखालो और शीशी में भरकर रखदो। यह गेरुआ रंग की भस्म शत-प्रतिशत बच्चों को लाभ पहुंचाने वाली डब्बा रोग की अनुभूत औषधि है।

सेवन-विधि—१ माह के बच्चों को १ रत्ती दवा १ बूंद तुलसी के पत्तों का स्वरस, १ बूंद अद्रक का रस ६ माशे शहद में मिलाकर पिलादो। इसी प्रकार जितने माह का बालक हो उतनी ही रत्ती दवा उतने ही बूंद दोनों स्वरस आधा तोला शहद में मिलाकर देना चाहिये। दवा की मात्रा तीन २ घण्टे में दी जाय।

नोट—प्रथम बच्चों के दस्त और पेशाब साफ करने के लिये उशारे रेवन्द (आमारोहन) १ साल से अधिक उम्र के बच्चे को ३ रत्ती पीसकर शहद या मां के दूध में पिला दें। इसके देने से दस्त और पेशाब साफ होजाता है और बालक का ताप भी गिर जाता है पश्चात उपरोक्त औषधि की २ या ३ मात्रा देते ही बच्चे रोग मुक्त होजाते हैं।

कृमिनाशक योग—

तेलिया सुहागा डीकामाली
इन्द्र जौ वायविडंग
काला जीरा पलास के बीज
कौंच के बीज अकलकरा (अकरकरा)
श्वेत अतीस (कडुआ) करंज की मिंगी (श्वेत)

—प्रत्येक १-१ तोला।

सिंगरफ (हिंगुल) २ तोला

गौलोचन (अभाव में उशारेवन्द) २ माशा

विधि—उपरोक्त सब औषधियों को महीन पीस कपड़छान कर राजवड़ी के रंग में १ दिन खरल करे। दूसरे दिन करेली के पत्तों के रस मे खरल करके मूंग प्रमाण गोलियां बनाकर रख लें।

नोट—राजवड़ी अर्थात् घोड़े के जुड़े हुये ताजे लेंडों को अण्डी के पत्ते लपेट कर कंडों की मंदाग्नि में दवा देना। ऊपर के पत्ते जल जाने पर लेंडों को कपड़े मे रखकर निचोड़ लें। यही राजवड़ी का रंग है।

सेवन विधि—छोटे बच्चों को मां के दूध मे एक गोली थोड़ा शहद मिलाकर दें। एक साल से अधिक उम्र के बच्चों को २ गोली शहद के साथ दें। २ या ३ खुराक से अधिक न दें।

गुण—इस औषधि के सेवन से पेट के कृमि, कृमि जन्य ज्वर और तन्द्रा आदि मे विशेष लाभ होता है। बच्चों को यह औषधि अमृत तुल्य हितकर है।

फोड़ों पर अक्सीर मलहम—

२० तोला अलसी का तैल फूटे घड़े के खप्पर मे जगली कण्डों की आग पर गर्म करो और उसमे ८ तोला ऊंचा सेंदुर असली वजनदार छोड़ दो और २ चनों के बराबर मोरचून (नीलाथोथा) पीसकर डाल दो और नीम के सोंटे से घोटते रहो, जब वह गाढ़ी होने लगे और तार टूटने लगे तब उतार लो और एक डिब्बे मे रख दो। किसी भी किस्म का फोड़ा या घाव हो, कपडे पर लगाकर लगा दो, एक-दो दिन मे फोडा अच्छा हो जायगा।

रामबाण अश्वकचुकी—

रस, विप, गंधक औ' हरताल।
त्रिफला, त्रिकुटा और जमाल॥
भृंगराज रस बांधे गोली।
गोरख कहे ये घोड़ा चोली॥

हमारे अनेक वैद्य-बन्धु उपरोक्त विधि से घोड़ा चोली तैयार कर लेते हैं। परन्तु यथार्थ मे घोड़ा चोली क्या है? उसका नामकरण कैसे हुआ? उसकी रूपरेखा हम नीचे दर्शाकर अपने प्राचीन पूर्वजों की कृति का परिचय कराते हैं। यह वैद्यों को यश प्राप्त कराने वाली अनुपम औषधि है। एक ही औषधि पाकेट मे रहने पर वैद्य, वैद्यगी का पूर्ण परिचय देकर अनुपान भेद से अनेक रोगों पर विजय प्राप्त सकता है। यह प्राचीन रस किसी ग्रथ या अन्य पुस्तकों की सहायता से नहीं लिखा गया है, किन्तु सौ वर्ष पूर्व के अनुभवी वैद्यों का बतलाया हुआ अनुभूत प्रयोग है।

इसमें ऊपर लिखी हुई चालू घोड़ाचोली की सब औषधिया तो आ ही चुकी हैं, इसके अतिरिक्त और भी अन्य औषधिया सम्मिलित कर उसे (अश्वकंचुकी) घोड़े के पसीने मे खरल करने पर इसका नाम 'रामबाण घोडा चोली' रखा गया है।

श्री रामबाण घोड़ा चोली बनाने की विधि—

शुद्ध पारा	शु० गन्धक आवलासार
शु० वत्सनाभ	शुद्ध हरताल तबकी
शु० जयपाल	सोनारी सोहागा
पिपरामूल	शुद्ध संखिया श्वेत
चित्रक	अकलकरा
आमगौर	छींद के कन्दमूल का गूदा

—प्रत्येक १-१ तोला।

त्रिफला चूर्ण	३ तोला
त्रिकुटा चूर्ण	३ तोला
काली मिर्च	२ नग
कुचला	१ नग
अफीम	१ माशा

विधि—उपरोक्त सब औषधियों को कूट-कपड़छान कर अदरख के रस में २ दिन, पलाश के फूल के रस मे १ दिन, भृंगराज के रस मे २ दिन और अन्त मे घोड़े के पसीने में २ दिन तक खरल करें। लगातार कुल सात रोज खरल करने पर

मूंग या उरद के बराबर गोलियां बनाई जावें। यह रस जितना पुराना होगा उतना ही अधिक गुणकारक होगा। इस रस के बनाते समय शुद्धता एवं पवित्रता पर विशेष ध्यान रहे।

नोट—यदि घोड़े का पसीना प्राप्त न हो तो उसके अभाव में कोसों (जिनके रूओं से कपड़े बनते हैं।) को उबाल कर अष्टावशेष पानी काम में लावें। यह पानी वायु के विकारों को नष्ट करने वाला है।

सेवन-विधि और अनुपान—

१–अदरख के रस और शहद में २-२ गोली देने से वात और कफ के सब रोग नष्ट होते हैं।

२–तीव्र ज्वर और तलखी होने पर नीबू के रस में देना चाहिए।

३–जीर्णज्वर में जीरों के चावल और शक्कर में दें।

४–हड़फूटन और मलेरिया में तुलसी पत्रों के रस और शहद में २-२ गोली दें।

५–वात और कफ की खांसी में बगलापान या अडूसे के रस में शहद मिलाकर दें।

६–कृमिरोग में वायविडग के चूर्ण और शहद में दें।

७–शीतज्वर में लेंडी पीपर के चूर्ण और शहद में दें।

८–अजीर्ण में दही के साथ दें।

९–प्रदर में कांटे वाली चौलाई के रस में दें।

१०–प्रसूत रोग में दशमूल क्वाथ से दें।

इस रस के अनेक अनुपान हैं परन्तु लेख बढ़ जाने के भय से नहीं लिखे गये। वैद्यगण अपनी बुद्धि से रोगी का बलाबल विचार कर दे सकते हैं।

(पृष्ठ ७२५ का शेषांश)

अफीम　　　१॥ माशे

—तारपीन के तैल में कपूर डालकर गला लें, पश्चात् तिल्ली के तैल को भी मिलादो। केशर-अफीम का भी वस्त्रपूत चूर्ण कर तैल में मिलाकर सुरक्षित शीशी में रख छोड़ो। आवश्यकता के समय थोड़ा सा तैल दर्द स्थान पर मलकर गर्म रुई के नामे से थोड़ा सा सेक दें।

गुण—निमोनिया तथा प्लूरिसी में फुफ्फुस की रक्षा करने में अद्भुत शक्ति रखता है। पसली के कठोर दर्द को शीघ्र दूर करता है। शरीर के किसी भाग में दर्द हो मालिश मात्र से नष्ट होता है।

बाल निमोनियां—

शुद्ध सींगिया　　　शुद्ध टंकण क्षार

—समान भाग लेकर बारीक वस्त्रपूत करलें, पश्चात् अद्रक स्वरस में घोट कर सरसों के दाने प्रमाण वटी बनालें।

मात्रा—१ से २ गोली दिन में ३ बार दें।

अनुपान—माता का दूध।

गुण—इसके सेवन करने से बालकों का पार्श्वचालन ज्वर, खांसी नष्ट हो जाते हैं।

ध्यान रहे कि इसके सेवन काल में उपर्युक्त "फुफ्फुस प्रदाह हर तैल" की मालिस दर्द स्थान पर अवश्य करनी चाहिये।

नोट—निमोनियां के आक्रमण-काल में उपर्युक्त तीनों औषधियों का साथ-साथ प्रयोग करना चाहिये। यह प्रयोग शतशोनुभूत अव्यर्थ प्रमाणित हुए हैं।
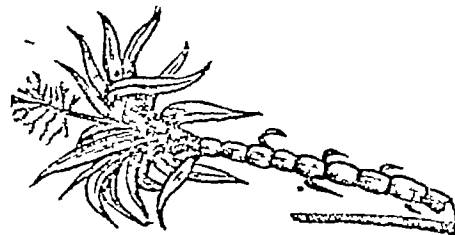
श्री पं० हरिदयाल जी पाण्डेय वैद्यरत्न

किरीतपुर पो० सिमगा (द्रुग) सी. पी.

पिता का नाम— श्री. पं० चन्दूलाल जी पाण्डेय

आयु—२६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय-१-अर्श २-दाद

—लेखक—

"श्री. पाण्डेय जी का पुत्र बीमार हुआ और अनेक उपाय करने पर भी चल बसा। इसी घटना से आपको चिकित्सा कार्य की ओर प्रवृत्ति हुई। आपने साहित्य-विशारद एवं वैद्यरत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा अब आप सफलता-पूर्वक चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। आशा है आपके निम्न प्रयोग उपयोगी प्रमाणित होंगे।"

—सम्पादक।
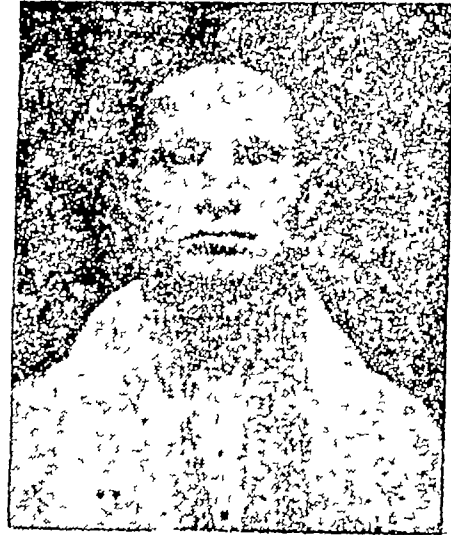
अर्श रोग नाशक—

हींग भुनी हुई सज्जीखार

लहसुन की पुती नीम की निबौली

—सबको समान भाग लेकर पुराना गुड़ चौगुना मिलाकर २-२ माशे की गोली बनावें।

मात्रा—सुबह शाम १-१ गोली सेवन करें।

बवासीर के मस्सों पर—

जंगली कंडे को जलाकर उसमें मुंडी बूटी बुरके और धुंए को मस्से पर लें। इससे मस्से झड़ जाते हैं। बाद मस्से दूर होने पर उसकी जड़ पर इसी कंडे का तेल लगावें। इससे खूनी बवासीर भी दूर होजाता है।

तेल पाताल यन्त्र से निकाल लें या नीचे लिखी विधि से निकाल ले। जंगली कंडों की आंच लगावें जब धुआं निकलना शुरू हो तो एक मिट्टी का बर्तन जो साफ व चिकना हो उस पर उल्टा रखदें, धुआं बन्द होने पर बर्तन को हटालें, जो उसमे पतली चीज लगी हो उसे निकाल ले। यही तेल है, इसे ही लगालें।

दाद का काल—

आमलासार गंधक सुहागा

हीरा कसीस नौसादर

कलमी शोरा राल नीलाथोथा

विधि—सब बराबर लेकर नीबू के रस में घोटकर मलहम बनाकर लगावे। लगाने के पहिले दाद को खुजला लें।

श्री० वैद्य परशुराम जी

सुनारों की बगीची, रातानाड़ा रोड, जोधपुर।

—※.०:※—

गुरू जी का नाम—श्री गिरवरदास जी

जाति—कबीरपन्थी साधु आयु—२६ वर्ष

प्रयोग विषय १.मलेरिया, २-दाद, ३-कर्णस्राव

"आप 'श्री मारवाड़ आयुर्वेद प्रचारिणी सभा, जोधपुर' के सदस्य हैं और 'श्री सत्यकबीर आरोग्यशाला' का सचालन (अपने खर्चे से) ७ साल से कर रहे हैं। ये प्रयोग आपके कई बार के परीक्षित हैं। पाठक व्यवहार में लाकर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

—लेखक—

मलेरिया पर—

समुद्रफल काली मिर्च ५-५ तोला
करञ्ज की मींग पलाश पापड़ा २-२ तोला
तुलसी पत्र स्वरस १० तोला

विधि—ऊपर की चारों चीजों को कूट पीसकर कपड़छान करके तुलसी पत्र स्वरस में घोटकर झरबेरी के समान गोलियां बनाकर सुरक्षित रखें।

सेवन-विधि—जिस वक्त बुखार आता हो उसके ३ घण्टे पहिले १-१ गोली अथवा २-२ गोली १-१ घण्टे के अन्तर से गर्म पानी से लेवें। अगर बुखार सर्दी लगकर नहीं आता हो तो ठण्डे जल से लेना चाहिये। इस दवा का सेवन कम से कम ३ दिन करना चाहिये।

दाद पर—

मुरदासंग तैलिया सुहागा
आमलासार गन्धक देशी खाड
प्रत्येक ५-५ तोला

रस कपूर १ तोला
राल ३ तोला
शिंगरफ २ तोला

विधि—सबको पीसकर कपड़छन करके घृत मिलाकर १०८ बार धोवे और शीशी में सुरक्षित रखे। आवश्यकता के समय दाद पर कपड़े पर लगाकर चेप दे। चन्द दिनों में आराम हो जायगा।

कर्णस्राव

—आंवलासार गन्धक ३ माशा को पीसकर ५ तोला गौ घृत को गर्म करके उपरोक्त गन्धक अन्दर डाल दें। जब घृत का रङ्ग रक्त-वर्ण हो जाय तब नीचे उतारकर कपड़े से छानकर शीशी मे सुरक्षित रखें।

सेवन-विधि—कान को नीम के पत्र डालकर औटाये हुये जल से धोकर उक्त घृत की दो-दो बून्द दिन मे दो बार डालें। चन्द दिनों मे आराम हो जायगा।

साहित्य महोपाध्याय पं० पुष्पेन्द्र जी जाला, वै० विशारद

सिद्धान्त-शास्त्री, एम० डी० एच० (कलकत्ता)
मु० पो० देवली (उदावतान) मारवाड़ ।

पिता का नाम— पं० कृष्णाराम जी जाला ।
आयु—३० साल, जाति—जांगिड़ ब्राह्मण ।
प्रयोग-विषय—सुज़ाक, बहुमूत्र, उपदंश के घाव

"श्री पंडित जी एक अच्छे वक्ता, विद्वान लेखक एवं प्रतिभाशाली शिक्षक हैं । आप सन् १६३८ से गवर्नमेंट एडेड स्कूलों में प्रधानाध्यापक का कार्य कर रहे हैं । आप मारवाड़ के कर्मठ-कांग्रेसी कार्य-कर्त्ता व नगर कांग्रेस के प्रचारमन्त्री भी हैं । वर्तमान समय में आप चण्डावल (मारवाड़) की ए० बी० पी० स्कूल में प्रधानाध्यापक हैं तथा ब्राञ्च पोस्ट मास्टर के कार्य के अलावा निःशुल्क चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा कर रहे हैं ।" —सम्पादक ।

-लेखक-

सुज़ाक पर—

—पकी भिण्डी के सूखे बीज सात तोले लेकर कूट-पीस कपड़-छानकर, सम भाग बढ़िया मिश्री व एक तोले छोटी इलायची के दाने पीसकर मिला देवे । ६-६ माशे की चौदह पुड़िया करें, फिर १-१ पुड़िया सुबह व शाम लेकर ऊपर से गाय के दूध की पाव भर लस्सी पी लें । इसी प्रकार सात दिन तक बराबर लें । नमक मामूली व मिरच बिलकुल ही नहीं खावे । साग भी यदि भिण्डी का ही खाया जाय तो अति उत्तम है । इससे पुराने सुजाक का रोगी ठीक होते देखा गया है ।

दूसरा प्रयोग—

कलमी शोरा	३ तोला
कच्ची फिटकरी	२ तोला
रेवतचीनी	२ तोला
कबाबचीनी	४ तोला

—इन सबको कूट कपड़-छनकर २-२ माशे की पुड़िया बना लेवे । फिर आधा सेर गाय के दूध में सेर भर पानी मिलाकर मिट्टी के कोरे बर्तन में रख लेवे । तीन २ घण्टे बाद १-१ पुड़िया सेवन करे । ऊपर से वही कोरे बर्तन में से लस्सी पिया करे । अवश्य लाभ होता है ।

बहुमूत्र पर—

—इमली के पके बीज १ तोले मगाकर रात को पानी में भिगो देवे । प्रातःकाल ऊपर का लाल छिलका अलग कर भीतर की सफेद गिरी को पीसकर खावें । ऊपर से गाय का १ पाव भर ताजा दूध

[शेषांश पृष्ठ ७३३ पर देखें]

श्री. पं० तुलसीराम जी त्रिवेदी वैद्य

श्री० संजीवनायुर्वेद औषधालय, मठिया पो. परसेंदरा (सीतापुर)

—लेखक—
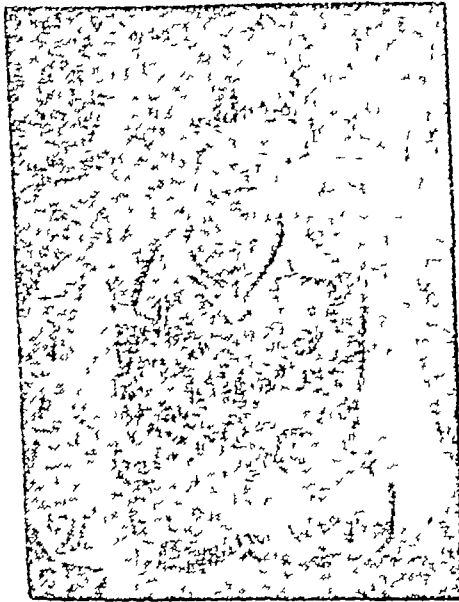
पिता का नाम— पं० रामदास जी त्रिवेदी वैद्य

आयु—७२ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय १-खाज पर २-रोग प्रतिरोधक

"श्री. त्रिवेदी वयोवृद्ध एवं अनुभवी चिकित्सक हैं। आपका औषधालय आपके पिता जी के समय से गरीबों की सेवा कर रहा है। आपकी आजीविका चिकित्सा कार्य की आय पर अवलम्बित नहीं, यह तो गरीब जनता की सेवार्थ है। आपके निम्न प्रयोग पूर्ण परीक्षित हैं। पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

खाज पर—

आंवलासार गन्धक नीलाथोथा
मुरदासंग फिटकरी चौकिया सुहागा
पांचों १-१ तोला

—लेकर पत्थर के कूंड़े में नीम के सोटे से खूब घुटाई करें। जब द्रव होने लगे तब घी (पानी से जितना धोया जाय उतना ही श्रेष्ठ है) ५ तोला डालकर घुटाई करें और व्यवहार में लावें।

व्यवहार-विधि—धूप में बैठकर इस दवा की सारे शरीर पर खूब मालिश करें और १-१॥ घण्टे धूप में बैठे रहें फिर नीम के पत्ते डालकर उबले हुए पानी से स्नान करें। इस प्रकार औषधि व्यवहार करने से पहिले ही दिन में शान्ति मिल जाती है। ७ दिन के व्यवहार से रोग समूल नष्ट होता है। इसके व्यवहार से खाज के अलावा छाजन, उकौता, दाद आदि चर्म-विकार भी नष्ट होते हैं।

खाने की दवा—

मुण्डी शाहतरा मेंहदी के बीज
नीम के फूल (बौर) —५-५ तोला

—चूर्ण कर शाम को पाव भर पानी में भिगो दें प्रातःकाल छानकर जल पी जांय, फिर उसी में १ पाव जल डाल दें और शाम को मसलकर छानें और जल पी लें। यह रक्त विकार के लिये उपयोगी दवा है।

रोग प्रतिरोधक—

नीम की पत्ती	१० तोला
दौना की पत्ती	५ तोला
तुलसी की पत्ती	१। तोला
कलौंजी	२॥ तोला
कपूर	६ माशे

—इन सबको पानी के छींटे देकर खूब पीसो, फिर १-१ रत्ती की वटी बनाकर छाया में सुखा लो।

गुण—इसको प्रातः सायं १-१ गोली लेने से रोग नहीं होते। किसी किस्म की हरारत नहीं होती। जिस समय आलस्य प्रतीत हो १ वटी खालें, आलस्य दूर होकर चित्त प्रसन्न होता है।

चित्र परिचय—

मेरे दाहिने हाथ में शंखपुष्पी (शंखाहूली) है तथा बांये हाथ में "मुण्डी" है। मैं इन दोनों को हृदय से लगाये हुये हूं। वैद्य समुदाय भी इनके गुणावगुण विचार कर व्यवहार में लायेंगे तो इन्हे इसी प्रकार हृदयस्थ रखेंगे; संक्षिप्तगुण निम्न प्रकार हैं—

शंखपुष्पी—

दस्तावर, स्मरण शक्ति वर्धक, बलकारक, मानसिक रोग नाशक रसायन। कषाय-गरम, अग्निकारक और वीर्यवर्धक है। इसके प्रयोग से त्रिदोष, मृगी, भूतादि दोष, कोढ़, कृमि और विष नष्ट होते हैं। मैं इसके स्वरस, चूर्ण तथा अवलेह द्वारा इन सब रोगों को शांति करता हू। हां, लाभ कुछ देर में होता है। चूर्ण मे शक्कर, स्वरस मे कालीमिर्च का चूर्ण और अवलेह मे शहद, दुग्ध या घी का अनुपान देता हूं।

मुण्डी—

पाक मे कड़ुई, उष्ण वीर्य, मधुर, हलकी, स्मरण-शक्ति वर्धक है। मैं मुण्डी के स्वरस, क्वाथ, फांट व हिम कालीमिर्च के अनुपान से गलग्रन्थि, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि व योनि-रोग मे, और पाण्डु, श्लीपद अरुचि, अपस्मार, प्लीहा, मेद रोग, गुदा पीड़ा इनकी चिकित्सार्थ देता हू। कुछ समय में अवश्य लाभ होता है। वैद्य समाज भी अनुभव कर देखे।

"वैद्य जी का इस प्रकार का फोटो हमको बहुत पसन्द आया। अपने चित्र के साथ २ पाठकों को दो उपयोगी बूटियों का परिचय भी दे दिया। इसी प्रकार यदि अन्य चिकित्सक बूटियों के फोटो, या रोगियों के फोटो लेकर भेजें तो हम उन्हे अवश्य प्रकाशित करेंगे। इससे वैद्य-समाज का हित होगा। आशा है विद्वान लेखक तथा चिकित्सक सभी इस ओर विशेष ध्यान देंगे।" —सम्पादक।

(पृष्ठ ७३१ का शेषांश)

पी लेवे। इसी प्रकार कुछ दिन सेवन । अवश्य लाभ होगा।

उपदंश के घावों पर—

—आधे तोला सफेद कत्थे को, खूब बारीक पीस-कपड़-छनकरें, फिर गौ-घृत को, कांसे की थाली में १०८ बार धोकर पानी निकालकर उस बार क कत्थे को मिलाकर मलहम बना लेवे। दिन में दो बार उपदंश के घावों को गर्म पानी से धोकर उस मलहम को लगावें। कैसे ही पकते घाव क्यों न हों सात दिन में अवश्य ही फायदा होगा। परीक्षित है।

श्री. के० पी० ठाकुर M. B., H. B. B. S.

सिमरा पो० ओतुर (मुजफ्फरपुर)

पिता का नाम— श्री. फतहनारायण जी ठाकुर।

आयु–५२ वर्ष जाति—ब्राह्मण भूमिहार।

प्रयोग विषय— १–मलेरिया २–हैजा

"आपने सन् १९२१ में नैरा-होमियो कालेज कलकत्ता में होमियोपैथी का अध्ययन किया। आपको बायोकैमी का भी ज्ञान है। तत्पश्चात् आपने यूनानी चिकित्सा पद्धति का अध्ययन किया तथा ढाका तिब्बी कालेज से परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९३० से चिकित्सा-व्यवसाय मे प्रविष्ट हुए। आप दीन-जनों की सेवा मे विशेष तत्पर रहते है। आपके निम्न प्रयोग सरल तथा उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

मलेरिया—

आक, मदार, मन्दार नाम का एक छोटा पेड़ मशहूर है। जिसे प्रायः हर कोई जानते हैं। इसकी दो जाति हैं, बड़ी तथा छोटी। सफेद और सुर्ख ये भी दो जाति हैं। दोनों मे गुण प्रायः बराबर हैं, मगर बडे और सुफेद में अधिक, मैं इन्हीं को इस्तेमाल करता हू। अगर ये न मिले तो किसी को काम मे लासकते हैं। पर असर कुछ देर से होगा।

विधि–मिश्री के तीन टुकड़े या पान के तीन बीड़े पर आक का दूध प्रति टुकड़े या बीड़े पर तीन-तीन बून्द (कोपल तोड़कर) टपका लें। जाड़ा आने के तीन घण्टे पहिले से १–१ घण्टे पर एक-एक खुराक खिलायें। ८५ फीसदी पहले ही दिन जाड़ा बुखार रुक जायगा। अगर पहिले दिन किसी को न रुके तो दूसरे दिन रुक ही जायगा इसमें सदेह नहीं।

अगर कोई यह ख्याल करे कि हमेशा मदार (आक) का पेड कहां ढूंढता फिरूं। यह ख्याल शहरी लोगों को हो सकता है, और होना मुनासिब भी है वह १० तोला मिश्री मे १ तोला आक का दूध डाले और खरल कर शीशी मे मजबूत डाट लगाकर रखलें।

मात्रा—आधी रत्ती से १ रत्ती तक थोड़ा गरम पानी के साथ दें, पर ताजा बना कर देना ही एक दिन में रोकता है।

पथ्य—बुखार रुकने के बाद गेहूं की रोटी और चीनी (शक्कर)। कुछ दिनों तक औटाया पानी पीना चाहिये।

नोट—वैद्य-गण इस छोटे से साधारण नुसखे को आजमाये तथा उसका फल लिखें। आगे में इसी आक द्वारा मलेरिया की सुई की दवा बनाने की विधि लिखूंगा जो नये या पुराने मलेरिया को एक सुई मे बन्द करता है।

—लेखक—
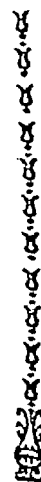
Cholera—

ज़े की बीमारी हर जगह हर प्रान्त में हुआ है, पर ईश्वर की कृपा है कि उसकी दवा भी हीं हमेशा मौजूद मिलती है। अभी मैं दो नुस्खे र रहा हूं जो आसान हैं और मेरे हजारों बार के चित हैं।

हुलहुल (जवा, गुड़हल) एक फूल होता है जो बागों में होता है। इसकी कई किस्में हैं, पर मैं जो लिखता हूं वह सुर्ख हुलहुल है। हुलहुल की कली १ छटांक को लेकर उसके ऊपर का हरा ढक्कन हटाकर किसी साफ सिल पर बारीक पीस लो। उस पिसी कली को १ बोतल पानी में छान लो और उसमें इतना शकर डालो कि वह मीठा हो जाय। उसमें ३-४ तोला नीबू का रस डाल दो। ये जायकेदार शर्बत तैयार होगया। हर कै-दस्त के बाद या जब प्यास लगे इसको दो घूंट पिला दो, कुछ ही अर्से में सारा उपद्रव शान्त हो जायगा। रोग शान्ति के बाद भी १ दिन तक इस शर्बत को ३-४ घण्टे पर एक-एक खुराक देते रहना चाहिये।

इस नुसखे को हैजे की हर हालत में हर मौसम में बेखतरे प्रयोग किया जा सकता है। अगर हुलहुल की कली न मिले तो खिला फूल ही ले सकते हैं।

प्याज (Onion)

ये चीज भी हर कहीं हमेशा मिल सकती है प्याज हैजे का बहुत बड़ा शत्रु है, देहातों में रिवाज है कि हैजे के दिनों में औरतें घरों के दरवाजे पर प्याज की गांठ लटका देती हैं। ये रिवाज उत्तम है, जिस घर में प्याज की गन्ध रहेगी उसमें हैजे के कीटाणु नष्ट हो जायगे। अस्तु—

—एक तोला उजले प्याज का स्वरस निकाल कर थोड़ा गुनगुना करलें उसमें थोड़ी शकर डालकर हर कै-दस्त के बाद पिलाया करें। ईश्वर चाहेगा तो कुछ ही खुराक के बाद कै-दस्त बन्द होकर पेशाब खुलकर होगा और मरीज को चैन आ जायगा। इसे भी बे-खटके हर हालत में व्यवहार कर सकते हैं।

पथ्य—हैजे का रुक कर फिर होना (Relapse) बहुत खतरनाक है। हैजे की चिकित्सा से भी अधिक रोगी के पथ्य में सावधानी की आवश्यकता है। प्रायः पथ्य की गड़बड़ी से ऐसा होता है।

—हैजे के जब सारे चिन्ह मिट जांय तब धान का लावा एक छटाक को आधा सेर खूब उबलते (खौलते) पानी में डालदो। १० मिनट इसी तरह चूल्हे पर खौलने दो फिर उतार कर उसे मोटे कपड़े में छानलो। छानते समय उसे हाथ से दाबो मत। जो खुद से छन कर गिरे उसे ठण्डा कर उसमें थोड़ी मिश्री और नीबू का रस डाल कर १ छटांक से दो छटाक तक पिलादो। किसी किसी को उसके पिलाने पर दो-एक कै होती हैं। इससे घबरायें नहीं। काफी अर्से तक कोई उपद्रव दिखाई न दे और मरीज को खूब भूख लगे तो पुराने चावल का मुलायम भात और गौदुग्ध का ताजे दही का तक्र या भात और कच्चे केले की तरकारी का झोल देना चाहिये।

अपथ्य—जब तक पूरी ताक़त न होजाय, हाज़मा पूरा दुरुस्त न हो तब तक गरिष्ट भोजन, मद्यपान स्त्री-प्रसङ्ग, रात में ज्यादा जागना वगैरह अत्यन्त निषेध है।

(शेषांश पृष्ट ७३७ पर देखें)

वैद्यभूषण श्री. जयकुमार जी जैन 'वत्सल'

वत्सल औषधालय, सिरोंज।

—लेखक—

पिता का नाम— वैद्यरत्न श्री. हुक्मचन्द जी जैन

आयु— २८ वर्ष

प्रयोग विषय—१-शोथ २-ज्वर ३-उदर रोग ४-चर्मरोग

"आपके पिता जी स्थानीय म्यूनिसिपल औषधालय के आनरेरी वैद्य रहे हैं तथा निःस्वार्थ रूप से चिकित्सा कर जनता की सेवा करते रहे हैं। आप भी अपने वत्सल औषधालय द्वारा जनता की उचित सेवा कर रहे हैं। आपको कविता से भी प्रेम है, तथा आप योग्य चिकित्सक हैं। आपके निम्न प्रयोग उत्तम हैं। पाठक व्यवहार में लाकर लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

शोथ नाशक वटी—

आंवा हल्दी	इन्द्रायण की जड़
छोटी हरड़	लाल बोल
बड़ी पीली हरड़	एलुआ
बालछड़	—प्रत्येक ६-६ माशे।
अजमोद	४ माशा
सुहागा फूला	४ माशे
रेमन चीनी	१ तोला
सनाय	१ तोला
सोंठ	७ माशे
निशोथ	६ माशे

विधि—कूट कपड़छन कर ग्वार पाठे के स्वरस की तीन भावना देकर रखलें।

मात्रा—प्रातः सायंकाल गर्म जल से १॥-१॥ माशे की मात्रा में दें।

पथ्य—गेहूं की रोटी, मूंग की दाल, मैंथी का शाक, मकोय का शाक।

अपथ्य—खटाई, मीठा, मांस एवं अन्य गरिष्ठ पदार्थ से परहेज रखें।

ज्वरघ्न चूर्ण या अर्क—

नीमकी छाल	पीपल छोटी
हरड़	सोंठ
नागर मोथा	महेड़ा
चन्दन सफेद	देवदार

—प्रत्येक १-१ तोला

गिलोय	२ तोला
कडुआ चिरायता	५ तोला

—चूर्ण बनाना हो तो कूट-पीसकर चूर्ण बनाले अन्यथा अठगुना जल मिला भवके द्वारा अर्क खींच लें।

मात्रा—चूर्ण को ज्वर चढ़ने के पहिले ३-३ माशे की ३ मात्रा गरम जल से दें। अर्क की मात्रा १-१ तोला की है।

गुण—यह औषधि शीतपूर्व ज्वर नाशक है।

अपथ्य—गुड़, तेल, लाल मिरच उड़द आदि से परहेज रखें।

स्वादिष्ट पाचन चूर्ण—

टाटरी		मिर्च काली
यवक्षार	सैंधा नमक	जीरा काला
	—हरेक ४-४ तोला	
पिपरमेंट		३ माशे
हींग		३ माशे

—सबको बारीक चूर्ण करलें।

गुण—यह स्वादिष्ट, रुचिकारक एवं पाचक है। भूख बढ़ाता तथा उदर-शूल व अफरा नाशक है।

चर्मरोगांतक मलहम—

कज्जली (समगंधक पारद की)		२ तोला
मंसिल		मुर्दासंख
सुहागा	राल	सिंदूर
	—पाचों १-१ तोला	
रस कपूर		६ माशे
हरताल		३ माशे
काली मिरच		३ माशे
नीला थोथा		१॥ माशे

—सबको महीन पीसकर ३२ तोला घी में मिलाकर खूब खरल कर रखलें।

गुण—यह मलहम दाद, खाज, खुजली, गंज, छाजन आदि चर्मरोग नाशक है।

विशेष—गंज के ऊपर मलहम लगाकर उर्द की रोटी बना ऊपर से बाध दें। अवश्य लाभ होगा।

(पृष्ठ ७३५ का शेषांश)

आयुर्वेदाचार्य पं० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी B.A. के 'लाल अक्सीर' पर मेरी राय—

पण्डित जी ने "गुप्तसिद्ध प्रयोगांक" के द्वितीय भाग में अपना "लाल अक्सीर" नाम का नुसखा दिया है। इस नुसखे को मैं अक्सीरे सुर्ख के नाम से बहुत दिनों से प्रयोग करता आरहा हूं। ये छोटा नुसखा कभी-कभी जादू सा काम करता है, खास कर पुरानी बीमारियों में।

मेरे और वैद्य जी के नुसखे में चीजे (Chamicals) और वज़न बराबर हैं पर मैं उसमे १ माशा (८ रत्ती) काले धतूरे के बीज और डालता हूं। इसके मिलाने से इसकी ताक़त कई गुनी बढ़ जाती है। मैं पण्डित जी से भी सिफारिश करता हूं कि वे भी इसे आजमावें।

नोट—आंख और नस्य के वास्ते बिना धतूरा बीज का ही प्रयोग तैयार करें।

वैद्यराज कुंवर युधिष्ठरसिंह सोमवंशी

अध्यापक मि० स्कूल कोटर (रीवां)

—लेखक—

पिता का नाम— ठा० रामसिंह जी जमींदार

जाति—क्षत्रीय सोमवशी आयु—४५ वर्ष

"आप २६ वर्ष से शिक्षा विभाग में कार्य करते हुए चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आप आयुर्वेद की कोई परीक्षा उत्तीर्ण न होते हुये भी अनुभवी एवं सफल चिकित्सक हैं। अनेक छोटी-छोटी जागीरें भी आपको मिली है। आपके निम्न सफल प्रयोगों से आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

पार्श्व-शूल पर—

महुआ के फूल अमलतास का गूदा
पुराना गुड़ —तीनों ६-६ माशे
अफीम ३ माशे

—सबको लेकर बकरी के दूध में पीसकर पतला लेप बनाकर आग में पकाकर गरम २ मोटा लेप करने से पार्श-शूल नष्ट होता है।

रक्तातिसार बटी—

कपूर शुद्ध बच्छनाग
शु० अफीम नागर मोथा
इन्द्रयव —प्रत्येक १-१ तोला

—सबको कूटकर महीन चूर्ण करलें फिर अदरक के रस में १ दिन घोटकर मटर बराबर गोली बनावें।

मात्रा—१-१ गोली दोनों समय जल के साथ देने से रक्तातिसार दूर होता है।

खाज पर तैल—

खैर (कत्था) सुहागा
फिटकरी तूतिया
सज्जी कबीला

—सबको पीसकर चूर्ण करलें फिर इन सबका चौगुना सरसों का तेल लेकर मिलावें और मन्द २ आग में पचाकर छान लें। इस तैल के लगाने से दोनों प्रकार की खाज दूर होती है।

बनारसी राई पुराना गुड़
महुआ के फल सोंठ

—सबको महीन पीस ले फिर बकरी के दूध में घोटकर पतला लेप बनाकर आग में पकाकर गरम कर लें। इसका गरम २ मोटा लेप करने पार्श्व-शूल दूर होता है।

नोट—लेप स्थान में पहले थोड़ा घी या तेल देना चाहिये जिससे ऊपर की चमड़ी न उवा तेज है।

श्री. अज्ञानी उदासीन बाबा

पाजरोली पो० कोसंबा।

"आपने अपना परिचय केवल इतना ही सूचित किया है कि आप गरीबों के वैद्य हैं अतः आपके प्रयोग भी गरीवाना हैं। देखने में साधारण किन्तु प्रभाव में महान हैं। पाठक इनकी परीक्षा अवश्य करें।

—सम्पादक।

पहला योग—

फुलाई हुई फिटकरी और गौदन्ती हरताल जो गुवार पाठा के रस में भस्म की हुई हो।

—दोनों बराबर लेकर धतूरे के रस में चना बराबर गोली बनाकर छाया मे सुखालें।

उपयोग—इकतरा, चौथैया आदि मलेरिया ज्वरों में ज्वर आने के चार घण्टे पहले २ गोली लेना और फिर दो घण्टे बाद दो गोली पानी के साथ निगल जाने से, दो-तीन दिन मे हरेक प्रकार का मलेरिया ज्वर रुक जाता है।

दूसरा योग—

भटकटैया (रेंगली) का पंचाग इसके बराबर समुद्र नमक लें। भटकटैया टुकड़े लेकर और नमक मिलाकर एक मिट्टी के बरतन मे भरकर उसका मुंह अच्छी तरह बंद कर गजपुट की आग से भस्म बनावें, ये भस्म १॥ माशे से ३ माशे तक की मात्रा में शहद के साथ देने से खांसी, उरःक्षत दोनों को दूर करती है। दिन मे दो-तीन बार लेना चाहिये। यह भस्म चाय में मिलाकर भी पी जा सकती है।

तीसरा योग—

आंकड़े (अर्क) के पत्ते इसके बराबर सिंध्या लून (लाहौरी नमक) लेना। पत्तों को धोकर साफ करने

(शेषांश पृष्ठ ७४३ पर)

—लेखक—

श्री पं० शिवसहाय जी द्विवेदी वैद्य व्याकरण शास्त्री हिन्दी कोविद

साहित्यायुर्वेदाचार्य, जिलाबोर्ड आयुर्वेद औषधालय, सेहगाँ (रायबरेली)।
निवास स्थान-छियौरा मोहमऊ पो० रहवां (रायबरेली)

—लेखक—

पिता का नाम— श्री. पं० रामचरणलाल जी द्विवेदी वैद्य

आयु—२६ वर्ष ज्ञाति—ब्राह्मण

वैद्यत्व परम्परागत है, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज से व्याकरण शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के पश्चात् आयुर्वेदाध्ययन प्रारम्भ हुआ। साहित्याचार्यादि उपाधियां भी इसी बीच प्राप्त की, प्रत्येक कक्षाओं में प्रतिवर्ष सर्वस्थान सर्व प्रथम उत्तीर्ण हुये। B. I. M. S. की उपाधि परीक्षा में चरक में वैशिष्ट्य (Distinction) प्राप्त किया। संस्कृत का अध्ययनाध्यापन बहुत प्रिय है। आप के निम्न प्रयोग वंशपरम्परागत सिद्ध हैं। पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।"

—सम्पा०

नाड़ी व्रण नाशक—
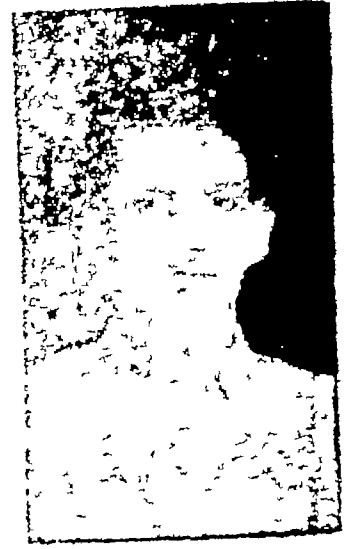
मैथी मुर्दासंख मोम
मुरा सिन्दूर हल्दी काली मिरच
—छहों १-१ तोला
कडु तेल ८ तोला

निर्माण विधि—हल्दी, मैथी एवं काली मिर्च इन तीनों को जला (भस्म) कर मुर्दासंख को यों ही बारीक पीसकर सबको मिश्रित कपड़छन चूर्ण कर लेवे।

एक कटोरी में कड़ुआ तेल रख आग पर गरम करे इसी गरम तेल में मोम छोड़दे, पिघल जाने पर दूसरे पात्र में एक साफ कपड़ा तानकर यह तेल छान लें। अब पूर्व में कपड़छान किये हुये चूर्ण को भली प्रकार मिलाकर शुद्ध कांच के पात्र में रखलें। मलहम सिद्ध होगया।

उपयोग—नाड़ी व्रण एवं अन्य गम्भीर व्रणों पर लगाने से शीघ्र लाभ होता है। नाड़ी व्रण के सूक्ष्म मुख को आवश्यकतानुसार विस्तारित कर लाभ पहुचता है।

यह योग मुझे एक स्वामी जी के द्वारा प्राप्त हुआ था, मैंने अनेकों रोगियों पर प्रयोग किया है और उपयोगी पाया।

पामारि मलहम—

कड़ुआ तेल १५ तोला राल सफेद ५ तोला
काली मिर्च २ तोला फिटकरी २ तोला
तूतिया ६ माशे

विधि—प्रथम तैल को किसी पात्र में रखकर आग पर चढ़ावें। गरम होने पर राल को बारीक पीस कर उसी तेल में छोड़ दे, राल के गल जाने पर उसे उतार कर थाली में रखे हुये पानी के ऊपर एक कपड़ा तानकर उसी कपड़े के ऊपर तेल को

[शेषांश पृष्ठ ५८२ पर]

श्री. सुदिष्ट नारायण जी झा "आयुर्वेदाचार्य"

श्री. नारायण आयुर्वेदिक फार्मेसी चम्पापुर पो० पताही (चम्पारन)

—:o:❀:o:—
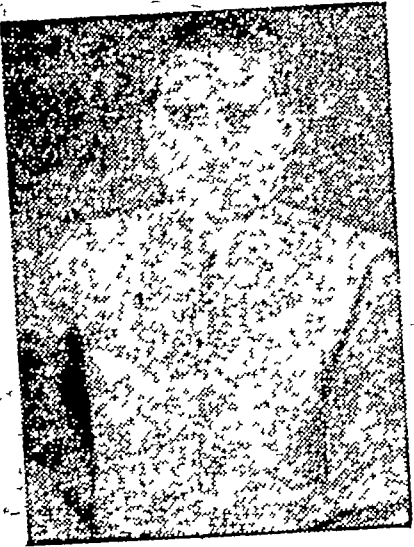
पिता का नाम— श्री० पं० रविदत्त झा राज्यवैद्य

आयु—४० वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय— १ पूयमेह २-दन्त नाड़ी ।

"आपके पिता चम्पारन जिले के सुप्रसिद्ध वैद्य थे । आपने अध्ययन के पूर्व ही अपने पिता से आयुर्वेद-चिकित्सा का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया। पुनः संस्कृत मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण कर आयुर्वेद का विधिवत् अध्ययन किया तथा आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। अध्ययनान्तर अपने पिता जी के छोटे दवाखाने को विशाल रूप दिया। आपने एक आयुर्वेद-विद्यालय तथा धर्मार्थ चिकित्सालय भी खोल रखा है। आशा है धन्वन्तरि के पाठक आपके आशुफल प्रयोगों से लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक ।

—लेखक—

पूयमेह नाशक—

बिरोजा सत्व	शिलाजीत सत्व
छोटीइलायची के दाने	नीलकण्ठी वंशलोचन
शुद्ध गेरू	सफेद कत्था
संगजराहत भस्म	उत्तम वंग भस्म
शुद्ध आंवलासार गन्धक	कलमीसोरा
	दोनों एक साथ गलाये हुए
फिटकरी भस्म	भुने हुए चने
समुद्र सीप भस्म	भीमसेनी कपूर
उत्तम नाग भस्म	—हरेक १-१ तोला

विधि—ये प्रत्येक समान भाग ले सबको खूब वारीक पीसकर मेंहदी पत्र के स्वरस में ३ दिन खरल कर तीन २ रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा—एक से दो गोली तक।

अनुपान—बबूल पत्र के स्वरस आठ आने भर शहद चार आने भर से मिलाकर खिलावें और ऊपर से धारोष्ण गो-दुग्ध पिलावे।

समय—दिन में तीन बार दें।

गुण—यह पूयमेह के सब प्रकार मे अचूक लाभकारी है। पीव का आना तथा जलन शीघ्र नष्ट करता है। मूत्रनली का सकोच, मूत्रावरोध को अतिशीघ्र दूर करता है।

पथ्य—गो-दुग्ध और भात सेवन करें।

अपथ्य—गुड़, तेल, लाल मिर्च, खटाई और मैथुन का सर्वथा त्याग करे।

दन्त नाड़ी पर—

पिपरमेंट का सत्व		३ माशा
कपूर	कालीमिर्च	कत्था
दालचीनी	नागरमोथा	लवंग
कागजी बादाम के छिलके की भस्म		

[शेषांश पृष्ठ ७४३ पर देखें]

श्रीयुत रामचन्द्रसिंह वर्मा वैद्य विशारद

ग्राम व पो० सेराजलालपुर जिला बदायूं ।

—लेखक—

पिता का नाम— श्री. छिद्दूसिंह जी वर्मा

आयु—४२ वर्ष जाति—वैस ठाकुर
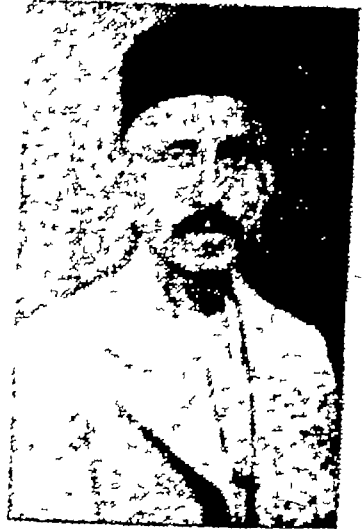
"श्री वैद्य जी ने सम्वत् २००१ वि० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से वैद्य-विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है । आप जिला बोर्ड बदायूं के सदस्य हैं तथा सयुक्त प्रान्तीय वैद्य-सम्मेलन के आजीवन सदस्य हैं । श्रीमान् रघुनाथसिंह वर्मा वैद्य (ज्येष्ठ भ्राता) द्वारा संस्थापित 'मित्रबन्धु औषधालय' लगभग २० हजार जन संख्या के क्षेत्र में आयुर्वेदीय औषधियों के प्रयोग द्वारा जनता की सेवा करके आयुर्वेदोन्नति एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि कर रहे हैं । आपने निम्नलिखित अपने गुप्त प्रयोग धन्वन्तरि के पाठकों के लिये प्रेषित किये हैं । आशा है पाठक लाभ उठावेंगे ।"

—सम्पादक ।

अग्निदग्ध व्रण पर—

नारियल का तैल	अलसी का तैल
गाय का घृत	—तीनों १-१ तोला
कपूर मोम	२-२ माशा

विधि—उपरोक्त चीजों को सुलगते हुये कोयलों पर थोड़ी देर रख कर उतार लेवें, बस मलहम तैयार हो जायगा । कैसा ही घाव क्यों न हो इसके लगाने से चन्द दिनों मे आराम हो जायगा । अन्य मलहम की शरण नहीं लेनी पड़ेगी ।

श्वसनक ज्वर (न्यूमोनियां)

पहिला प्लास्टर—

—सूखी तम्बाकू और सोंठ कपड़छन करके अलग-अलग रखलें । सीने के दर्द और पसलियों के दर्द स्थान पर प्रथम सफेद मिट्टी का तैल लगाकर ऊपर से कपड़छन की हुई तम्बाकू बुरक दें फिर दर्द से मिट्टी का तैल निचोड़ दें । इसके बाद सोंठ को भी बुरक दें और रुई का प्लास्टर गर्म करके बांध देवें । शीघ्र दर्द दूर हो जावेगा ।

दूसरा प्लास्टर—

मकरा दर्रि	१ तोला
हालों मैदा	१ तोला
तूतिया	३ माशा

विधि—उपरोक्त चीजों को बकरी के दूध में पीस गर्म करके दर्द स्थान पर मोटा २ लेप लगा देवें और कण्डे की आंच से सेंक दें, शीघ्र दर्द दूर हो जावेगा ।

नोट—वैद्य को सुविधानुसार जो प्राप्त हो सके उसे लगावे, परन्तु योग गुप्त रखना चाहिये क्योंकि ज्ञात होने पर लोगों मे औषधि पर श्रद्धा कम होने की सम्भावना है ।

खाने की औषधियों में मैं तो केवल हरिहर संहिता का ही प्रयोग काम में लाता हूं ।

मृत्युञ्जय रस १ रत्ती
मृगशृङ्ग भस्म योगराज गुग्गल २–२ रत्ती

—इन तीनों को मिलाकर उष्ण जल अथवा दशमूल के क्वाथ से यत्न-पूर्वक देवें।

दुष्ट व्रण पर मलहम—

सिंदूर दारतकारी सफेदा पपरिया कत्था
रोहिणी कंकुष्ट (मुर्दासंग)
सफेद इलायची के दाने शीतलचीनी

विधि—उपरोक्त सातों चीजों का सम भाग कपड़-छन चूर्ण सौ बार धुले हुये गाय के नवनीत में मिलाकर मलहम बना लेवे।

सेवन-विधि—मलहम लगाने से पहिले त्रिफला, नीम भांगरा, इनका काढ़ा किये हुये पानी से अथवा पोटास (लाल दवा कुयें वाली) से घावों को धो लेना चाहिये।

(पृष्ठ ७३६ का शेषांश)

के वाद एक मिट्टी के बरतन में एक पत्ता रखें, उसके ऊपर थोडा नमक छिड़क दे, वाद में पत्ता रखें और नमक छिड़के। इस तरह क्रमशः पत्ता और नमक से तीन भाग वरतन का सके वहां तक भरे। चौथा हिस्सा खाली रखें। वरतन का मुंह कपड़-मिट्टी से अच्छी तरह वन्द करके गजपुट की आग देकर भस्म करें।

उपयोग—मात्रा–१॥ माशे से ३ माशे तक। मिली (वरोल), दही का पानी अथवा छाछ में मिलाकर सुवह और शाम पीने से बड़ी से बड़ी तिल्ली का भी नाश होना है। एक-दो सप्ताह लेना चाहिए। यकृत मे काजी के साथ लेने से यकृत की सूजन का भी नाश होता है।

उदर रोग, शूल, वायुगोला, अजीर्ण आदि में शहद के साथ या कांजी के साथ मिलाकर लेने से तमाम उदर के कृमियों का नाश होता है।

[पृष्ठ ७४० का शेषांश)

डाल दे। फिर काली मिर्च और तूतिया को वारीक पीस कर उसी थाली मे डालकर हाथ से खूब फेंटे। जब तूतिया का पानी न रहे तब फिटकरी को वारीक पीसकर उसी मे डाल कर मिलालें। किसी कांच या मिट्टीपात्र मे रखले।

गुण—सब प्रकार की पामा (खाज), अधौगी, उकवत आदि मे लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

गैरिक वटी—

सोना गेरू का महीन कपड़-छान चूर्ण करके कुकुरौंदा स्वरस की ७ भावना देकर १॥ माशे की वटी वनाकर छाया में सुखाकर रखलें।

प्रयोग-विधि—तण्डुलाम्बु के अनुपान से १ गोली की मात्रा दिन मे दो-तीन वार देने से रक्तार्श, रक्तप्रदर एवं घोर रक्तातिसा मे लाभ होता है।

[पृष्ठ ७४१ का शेषांश]

सोंठ सुपारी की भस्म
बीज रहित हरड़ —हरेक १–१ तोला
सेलखड़ी १० तोला

विधि—सवको कूट कपड़-छानकर चूर्ण बना लें।

समय—प्रति-दिन दाँतों पर ३ वार मंजन करे, और पीछे गरम पानी मे थोड़ी फिटकरी का चूर्ण (पाव भर पानी मे ३ माशे फिटकरी) डालकर कुल्ली कर डाले। १० मिनट के पीछे सरसों का तेल उङ्गली से मसूढ़ों पर मले।

गुण—इस मंजन को एक मास पर्यन्त विधि-पूर्वक व्यवहार करने से मसूढ़ों से रक्त आना, पीला गाढ़ा मवाद निकलना, दुर्गन्धि, मैल जमना, इत्यादि समस्त दोष दूर हो दांत मजवूत हो जाते हैं तथा चमकते हैं।

वैद्यराज पं० पूर्णानन्द जी व्यास ए. एस. बी. आयुर्वेदाचार्य

आयुर्वेदिक चिकित्सालय, सुजलाना पो० मुलथान।

पिता का नाम— श्री. वैद्य भूषण प० श्यामलाल जी व्यास

"श्री. व्यास जी के पिता गत ४० वर्षों से आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा पीपलरावा (उज्जैन) की ग्रामीण जनता की सेवा कर रहे हैं। सुयोग्य एवं सफल चिकित्सक पिता के सत्संग के कारण आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा जनता की सेवार्थ आपकी अभिरुचि हुई। आपने विविध परीक्षायें उत्तीर्ण कर तथा अपने पिता की संरक्षता में चिकित्सा का क्रियात्मक अभ्यास कर अब आप उक्त चिकित्सालय में सफलता के साथ चिकित्सा कर रहे है। पाठक आपके निज प्रयोगों से लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

लेखक

विशूचिका नाशक—

यदि इसे विशूचिका के लिये 'एटम बम' भी कहा जावे तो अत्युक्ति न होगी। इसके सेवन करने से शीघ्र ही विशूचिका अपने उपद्रवों के सहित शांत होजाता है। इस वर्ष 'धन्वन्तरि' के सम्पादक महोदय ने जो 'संक्रामक रोगांक' प्रकाशित किया है वह सक्रामक रोगों पर विजय पाने मे अग्रसर होचुका है एतदर्थ उसकी सेवा मे विशूचिका के नाश करने के लिये एक योग प्रदान कर रहा हूं। धन्वन्तरि द्वारा प्रत्येक वैद्य के समीप पहुंच कर यह योग विशूचिका पर अपनी विजय पताका फहराकर यश प्राप्त करे और सक्रामक रोग (विशूचिका) के संहार में सहायक हो यही मेरी कामना है।

काग बीज — १० तोला
बायविडंग, कपूर, सोंठ
हींग —चारों ५-५ तोला
अफीम — ४ तोला

विधि—इन द्रव्यों को मिला कर भरवा के रस में मर्दन कर ६ घण्टे तक घोटता रहे पश्चात् २-२ रत्ती की गोली चना छाया में सुखावें।

प्रयोग-विधि—२ गोली युवा पुरुष प्याज अथवा अद्रक के रस के साथ मे १५-१५ मिनट पर देवे; दस्त, कै बन्द होने पर ३-३ घंटे मे दो गोलिया उक्त अनुपान से देते रहे।

गुण—यही वटी उदरशूल, अतिसार, बदहजमी, उबकाई-कै, दस्त एव विशूचिका पर आशुलाभ प्रद सिद्ध हुई है।

विशूचिका नाशक दूसरा योग—

भुनी हींग — ३ तोला
आम की गुठली की गिरी — २ तोला
लाल मिर्च के बीज — २ तोला
अफीम, जायफल
जावित्री, शुद्ध सिंगरफ
—हरेक १-१ तोला

पिपरमेन्ट	६ माशे

निर्माण-विधि—उपरोक्त वस्तुऐं लेकर इनका चूर्ण कर नींबू स्वरस से ६ घंटे तक मर्दन करे, पुनः लहसुन के स्वरस से ६ घण्टा तक अच्छी तरह घुटाई करें बाद में १-१ रत्ती की गोली बनालें।

सेवन-विधि—जल या शकर के साथ १-१ गोली आध आध घंटे से देवे, रोग का प्रभाव कम होने पर मात्रा कम कर दें।

यह योग भी विशूचिका के प्रभाव को शीघ्र ही शान्त कर देता है, अधिक प्रशंसा लिखना व्यर्थ है।

व्रण-हर मलहम—

यह मलहम व्रणों का बहुत ही शीघ्र लाभकर होता है। कैसा भी व्रण हो सिर्फ दो ही दिन में आराम हो जाता है।

राल	३ तोला
कत्था	३ तोला
तिलका तैल	१० तोला
नीला थोथा	१ तोला
फिटकरी	१ तोला
पानी	१० तोला

निर्माण-विधि—जब मलहम तैयार करना हो तब आधपाव जल और आध पाव तिल का तैल मिलाकर घोटें, घोटते २ जब यह घी की तरह होजावे तब शेष वस्तुओं का चूर्ण डालकर मिश्रित कर रखले और आवश्यकतानुसार काम में लावें। योग अनुभूत है।

नस्य-

कायफल	१ सेर
आरने कंडे की राख	१ सेर
परमेगनेट आफ पोटास	५ तोला

—इनको बारीक पीसकर रखले, बहुत श्रेष्ठ नस्य है। तन्द्रा, उन्माद, अपस्मार, मूर्छा, शिरःशूल आदि पर उपयोग करे, बहुत लाभकारी सिद्ध हुई है।

श्री. बाबू रामनाथ जी जयसवाल वै० भू०

सराय आकिल, इलाहाबाद ।

—०❀०—

"श्री. जयसवाल जी श्री. लाला आनन्दीलाल जी के सुपुत्र हैं। तथा आपका जन्म सन् १८९४ में हुआ। आपने चिकित्सा-कार्य में अच्छा अनुभव प्राप्त किया है तथा आपके निम्न प्रयोग सुपरीक्षित प्रतीत होते हैं। पाठक निर्माण कर व्यवहार करें।"

—सम्पादक।

—लेखक—

दद्रु हर मलहम—

गन्धक डण्डा	सुहागा	१–१ तोला
पारद		६ माशा
कालीमिर्च		३ माशा

—सब दवा को महीन पीसकर घी देसी में मिलाकर मलहम बना लें। दाद को थोड़ा सा खुजाकर लगा दें। इसके लगाने से दाद शीघ्र ही अच्छा होता है। लगाने से कोई तकलीफ नहीं होती।

मोतीझला पर—

लौंग	११ अदद
संजीवन वटी	१ गोली

—लौंग को आधा पाव पानी में काढ़ा करे, आधी छटांक शेष रहने पर छानकर एक गोली संजीवनी की खिलाकर काढ़ा पिला दें। प्रातः सायं दो बार। मोतीझला १४–१५ दिन में बिलकुल ठीक हो जायगा। इससे और कोई उपद्रव नहीं होते हैं और खूब दाने निकलकर रोगी शीघ्र अच्छा हो जाता है।

श्वेतकुष्ठहर—

सफेद गुञ्जा बाकुची गेरू
बरगद की जटा सिंगरफ जमालगोटा

हरेक १–१ तोला

—सबको महीन पीसकर रखले और ठण्डे पानी में चन्दन की तरह पीसकर लेप करदे। दिन में एक बार। पांच दिन में लाभ होगा।

छाला पड़ने पर दवा लगाना बन्द कर दें। उस जगह देशी घी लगाने से छाला व्रण आदि दूर हो जायगा। यह योग हमने उन्हीं दागों में लगाकर देखा है जो कि अठन्नी या रुपया के बराबर थे। पूरा लाभ हुआ।

नोट—सर्वाङ्ग श्वेत-कुष्ठ के लिये हमारे पास एक दूसरी दवा है जिसके खिलाने से सर्वाङ्ग श्वेत-कुष्ठ अच्छा हो जाता है। अभी हमने दो मरीजों पर अनुभव किया है। एक रोगी को फायदा हुआ है और दूसरे को नहीं। जब हम १०-

(शेषांश पृष्ठ ७४८ पर देखें)

कवि० वै० दुर्गादास शर्मा शास्त्री सूचीवेधाचार्य

कौशिक आयुर्वेद भवन, घटी पो० सपरून (पटियाला)

—:ॐ:—

—लेखक—

पिता का नाम— श्री० प० धनीराम शर्मा
आयु—३० वर्ष जाति—गौड़ ब्राह्मण

प्रयोग विषय—१ ज्वरनाशक भस्म २-प्रसव विलम्ब ३ प्रवाहिकादि

"आप गत ७ वर्षों से सफलता-पूर्वक चिकित्सा कर रहे हैं। आपके चिकित्सा कौशल से प्रभावित होकर कोहस्तान-पटियाला के डिप्टी-कमिश्नर साहब ने तीन बार प्रमाण-पत्र प्रदान किये हैं। आप अपने आस-पास के क्षेत्र में सफल चिकित्सक माने जाते हैं। आपके निम्न प्रयोग सरल किन्तु उपयोगी प्रतीत होते हैं। पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

ज्वर नाशक—

नौसादर गोदन्ती हरताल सुहागा
श्वेत फिटकरी का फूला —५-५ तोला

—उपरोक्त सब औषधें आक के दूध में खरल कर टिकियां बना लें, फिर टिकियां सुखाकर शराव सम्पुट कर गजपुट की अग्नि से भस्म तैयार करें। ३-४ रत्ती तक खाण्ड में, इसके सेवन से कैसा भी चढ़ा हुआ ज्वर हो पसीना आकर तुरंत ही उतर जाता है। ध्यान रहे कि रोगी का बला-बल विचार कर एक दिन में एक ही मात्रा दें। यह प्रयोग शतशोनुभूत है।

प्रसव विलम्ब पर—

केशर ३ माशे
कलमी सोरा ४ माशे

—दोनों को बारीक पीसकर गरम दूध से पिलावें। आधे घण्टे में ही बच्चा पैदा हो जाता है। अन्यथा एक मात्रा और देदें। इससे प्रसूति ज्वर भी दूर होकर गर्भाशय की गिलाजत फौरन बाहर निकल जाती है।

प्रवाहिकादि पर—

वच रूमीमस्तगी अनार की कली
वंशलोचन आम की गुठली
लोध मुलहठी धाय के फूल
मोचरस कुड़ा की छाल जायफल
बबूल की कली मांई

—प्रत्येक सम-भाग

—इन सब औषधियों से दुगुना सफेद कत्था लेवे, और कत्था से दुगुनी कुंमाहाड़ी के बीजों की गिरी लेवे, फिर सबको बारीक पीसकर कपड़-छन कर पोस्त दाना के पानी में चार-चार माशे की गोली बनावें। एक गोली चावल के धोवन से खावें तो हर प्रकार का अतिसार प्रवाहिका नष्ट होता है।

पथ्य—दही भात।

यह गोली अनेकों बार की परीक्षा की हुई हैं।

आयुर्वेदाचार्य पं० सेवकराम जी शर्मा

सेवक औषधालय, मिरखेड़ा पो० खतौली (मुजफ्फरनगर)

—०❀०—

पं० मुसद्दीलाल शर्मा
जाति—ब्राह्मण

पिता का नाम—
आयु—२२ वर्ष

प्रयोग विषय— १-अतिश्याय ज्वर २ रक्तपित्त।

"आपने मेरठ आयुर्वेद रामसहाय विद्यालय में अध्ययन कर आयुर्वेद विशारद और आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप दो वर्ष से अपने ग्राम में चिकित्सा कर रहे हैं। निम्न लिखित प्रयोग आपके परीक्षित हैं। पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक

—लेखक—

प्रतिश्यायज ज्वर—

प्रवाल भस्म १ रत्ती
गोदन्ती हरताल भस्म आध रत्ती
स्फटिक भस्म आध रत्ती

विधि—उपरोक्त तीनों औषधियों को शुद्ध शहद में मिलाकर तीन या चार बार चाटने से प्रतिश्याय तथा ज्वर अवश्य दूर हो जाता है। यह हमारा पूर्ण परीक्षित योग है। यह पूर्ण १ मात्रा है।

रक्तपित्त पर—

—श्वेत दूर्वा को उखाड़कर अच्छी तरह पानी में धोकर दोनों हाथों की हथेलियों के बीच मलकर दो या तीन बूंद रस निकाल प्रातः सायं दोनों नासिका पुटों में डालना चाहिये। आठ ही दिनों में कैसा ही रक्तपित्त हो रह नहीं सकता। यह हमारा पूर्ण परीक्षित योग है, इस प्रयोग से मैंने कई रोगी ठीक किये हैं।

(पृष्ठ ७४६ का शेषांश)

१५ मरीजों पर अनुभव कर लेंगे तब पाठकों के सामने रखेंगे।

खुजली पर—

बोरिक एसिड
गन्धक
मुर्दासङ्ग
कपूर
चारों १-१ तोला

—सबको महीन पीसकर देसी घी में मिलाकर लगायें तीन दिन के लगाने से भयानक से भी भयानक खुजली दूर होजायगी।

दीर्घ रोग चिकित्सक पं० शिवनारायण देव

पाण्डेय आयुर्वेदरत्न
श्री. चन्द्रमौलि औषधि मन्दिर, बरौधा (मिर्जापुर)

—लेखक—

आयु—३४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आप वंशपरम्परागत चिकित्सक हैं। आपके पूर्वजों ने चिकित्सा में अच्छी ख्याति प्राप्त की थी। इसी कारण अब तक दूर-दूर के रोगी चिकित्सार्थ आते हैं। आप भी दीर्घ (जीर्ण) रोगों के सफल चिकित्सक हैं। आपके निम्न दोनों योग पूर्वजों द्वारा परीक्षित हैं। पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

नेत्र रोग, रक्तप्रदर, रक्तश्राव पर—

शु० रसांजन	४० भाग
तुबरी लाजा	१० भाग
कपूर	५ भाग
अहिफेन शुद्ध	२॥ भाग
गुलाब जल	४८० भाग

विधि—इन सबको मिलाकर आसमानी रंग की बोतलों में भरदें। मजबूत डाट लगाकर ५-६ दिन सूर्य की किरणों मे रखें। दिन मे २-३ बार बोतलों को हिला दिया करें। तत्पश्चात् भली-भाँति छान कर (फिल्टर-पेपर से छानना अधिक उत्तम रहेगा) रखलें।

प्रयोग-विधि—

नेत्र रोगों में—दिन में आवश्यकतानुसार कई बार २-२ बूंद डालने से चमत्कारिक गुणप्रद है।

रक्तश्राव व रक्तप्रदर में—दिन मे ४ बार (या आवश्यकतानुसार कम-अधिक) १ औंस परिश्रुत जल (समय पर न मिलने पर स्वच्छ जल भी ले सकते हैं) में १ से २ ड्राम उक्त दवा मिला कर दें।

ज्वर के बाद निर्बलता निवारणार्थ—

कल्प रूप से ३० से ६० बूंद तक जल के साथ दिन मे २ बार दे।

पूयमेह पर—

१ ड्राम औषधि को पिचकारी से अन्दर डालकर मूत्र मार्ग को अगुलियों से दबाकर कुछ देर तक औषधि को अन्दर ही रोकने के बाद ३ माशे कलमी शोरा को १ औंस जल मे मिला और उसी मे १ ड्राम उक्त दवा मिलाकर दिन मे ३-४ बार व्यवहार करें।

विविध ज्वरों पर—

चिरायता	नीम की अन्तर छाल
कुटकी	मजीठ
लाल चन्दन	तुबरी लाजा
शु० नौसादर	-सातों २०-२० तोला
जल	१० सेर
श्वेत फिटकरी भस्म	६ माशे

निर्माण-विधि—फिटकरी भस्म को छोड़कर शेष वस्तुओं को यवकुट कर मिट्टी के पात्र मे भर दें। दृढ़ मुख मुद्रा कर १ माह रखा रहने दे। १ माह बाद खूब मोटे कपड़े से छानकर स्वच्छ करले।

[शेषांश पृष्ठ ७७१ पर]

श्री. वैद्य आई० आई० शेख

जिला लोकलबोर्ड आयुर्वेदिक दवाखाना,
नॉफ (अहमदाबाद)

—लेखक—

प्रयोग विषय १- पार्श्वशूल २-नेत्ररोग

३ प्रदर ४—स्वप्नदोष

"श्री. शेख जी अनुभवी तथा योग्य चिकित्सक हैं। लोकल बोर्ड के दवाखाने में आप चिकित्सक रहने के कारण आपको अनुभव प्राप्त करने का अच्छा अवसर रहता है। गुप्त सि० प्रो० द्वितीय भाग में भी आपके प्रयोग प्रकाशित कर चुके हैं, इस बार के प्रयोग भी उपयोगी जान पडे अत प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।'

—सम्पादक।

कृष्णश्रृङ्ग —

हरिण (हिरन) के सींग कलमी सोड़ा
अजवायन —तीनों १-१ सेर

विधि—कलमी सोरे तथा अजवाइन का बारीक चूर्ण करें। इस चूर्ण को पानी में मिला (सानकर) श्रृङ्ग के छोटे २ टुकड़ों पर लेप कर सुखाले। इन टुकड़ों को जलते हुये कोयलों के बीच में रख दें। जब टुकड़े जल जाय तब निकाल कर पीस कपड़े में छान शीशी में रखले।

मात्रा—४ रत्ती से ५ रत्ती तक।

अनुपान-बिना कत्था चूना लगे पान में रखकर दें।

गुण—पसली के दर्द में जादू जैसा प्रभाव करती है। निमोनियां की खांसी में भी उपयोगी है।

नेत्राञ्जन—

अहिफेन नीलाथोथा
कलमी सोरा जिंक सल्फास
मिर्च काली कपूर जीरा सफेद
—सातों १-१ माशे

फिटकरी टङ्कण समुद्र फेन
शीतल चीनी बड़ी इलायची दाना
—पाचों २-२ माशा

काला सुरमा ५ तोला
गुलाब जल उत्तम १ बोतल

निर्माण-विधि—सुरमा अहिफेन एवं कपूर के अलावा सभी वस्तुओं को कूट-छान कर खरल में डालें। सुरमा को पृथक कपड छान कर मिलावें। फिर एकत्र कर गुलाब जल मिलाते जाय और घोटते रहे। गुलाब जल समाप्त होने पर अफीम और कपूर भी उसी में मिलाकर घोटें। सूख जाने पर कपड़-छान कर शीशी में भर लें।

मात्रा—रात्रि को सोते समय सलाई से आंखों में

आंजे।

गुण—रतौंधी, धुन्ध, जाला, नाखूना, परवाल आदि नेत्र रोगों के लिये अक्सीर सुरमा है।

नेत्रामृत-

कुमारी स्वरस	४ तोला
कलमी शोरा	८ रत्ती
मुश्क काफूर	८ रत्ती
कच्ची फिटकरी	४ रत्ती
बोरिक एसिड	४ रत्ती
रीठा	२ रत्ती

विधि—कुमारी स्वरस के सिवा सबको बारीक पीस ले, १ बोतल में कुमारी स्वरस डालकर उपरोक्त पिसी हुई दवा डाल दें और कार्क लगा कर सूर्य ताप में ३ घण्टा पड़ी रहने दें, पश्चात् कपड़े मे छान कर शीशी मे भर लें।

मात्रा—२ से ४ बूंदें आंख मे डालें।

गुण—नये और पुराने खील के लिये अक्सीर है आंख की खुजली, धुन्ध, जाला को लाभ करते देखा है।

प्रदरनाशक योग

छाल बबूल	गूलरछाल
छाल बड़गुदा	छाल झरबेरी
खिरनी छाल	छाल कचनाल
छाल मौलसरी	छाल जामुन

-प्रत्येक ५-५ तोला।

विधि—सब छालों को अधकचरी कूट कर ८ सेर पानी में पकाले, २ सेर पानी रहने पर मल छान कर इसमें आध सेर साठी चावल पकावें, पानी सूख जाने पर चावलों को छाया में सुखावें। पूर्ण सूख जाने पर कूट छानकर बारीक चूर्ण करें।

निशास्ता	५ तोला
खरबूजे की मींग	मोचरस
धावड़ी के फूल (धाय)	माजू छोटी
माजु बड़ी	-प्रत्येक ४-४ तोला
सोंठ	पीपर
असगन्ध	बंशलोचन

प्रत्येक ६-६ माशे

विधि—सब चीजों को कूट छानकर चावलों के चूर्ण में मिलालें, चिकनी सुपारी ५ तोला, १ सेर गाय के दूध में खोया बनाले, इस खोया और उपरोक्त चूर्ण मधु में मिलाकर पाक तैयार करें।

मात्रा—१-२ तोला गाय के दूध के साथ।

गुण—श्वेतप्रदर और रक्तप्रदर को जड़मूल से निकालता है।

स्वप्नदोष नाशक चूर्ण

सालम मिश्री	[illegible]
मूसली सफेद	-प्रत्येक १-१ तोला
इमली के बीज (छिलका रहित)	२ तोला
तुख्मरिहा	भुसी ईसबगोल
बंग भस्म	-प्रत्येक १-१ तोला
मिश्री	५ तोला

विधि—कूट-छानकर चूर्ण बनाले।

मात्रा—४ से ६ माशा गाय के दूध के साथ।

गुण—स्वप्नदोष और धातुस्राव के लिये अमृत है।

[पृष्ठ ७४६ का शेषांश]

गाद न बैठने पावे। इसमें श्वेत फिटकरी भस्म (श्वेत फेनाश्म भस्म) मिलाकर १५ दिन तक कॉंच पात्र मे रखें (मुखमुद्रा करना आवश्यक है) दिन मे दो बार हिला दिया करें। १५ दिन बाद छानकर कार्य मे लावें।

प्रयोग-विधि—देशकालानुसार मलेरिया ज्वर रोगी को २ से ४ ड्राम तक ज्वर आने से पूर्व ३ मात्रा दें। प्राय ज्वर पहिले दिन ही रुक जाता है। ज्वर रुक जाने पर ३-४ दिन तक आधी मात्रा प्रातःसायं सेवन करें, जिससे पुन आक्रमण न हो।

नोट—यदि रोगी को कोष्ठबद्धता हो तो किसी सौम्य विरेचन मे कोष्ठ शुद्धि अवश्य करें।

कुंवर रणवीरसिंह जी वर्मा,

खरेला (हमीरपुर)।

पिता का नाम— श्री० कुंवर मुकटसिंह जी

जाति—सेंगर (राजपूत क्षत्रिय) आयु–३५ वर्ष

"श्री. वर्मा जी ने निम्न चारों प्रयोगों की परीक्षा अनेकों रोगियों पर सफलतापूर्वक कर लेने के पश्चात् ही धन्वन्तरि के पाठकों की सेवा में समर्पित किये हैं। आशा है ये प्रयोग अवश्य उपयोगी प्रमाणित होंगे। पाठक परीक्षा करें और फलाफल हमें भी लिखें।

—सम्पादक।

स्वदेशी आइडो फार्म (व्रणोद्गलन)

गुड़	१ छटॉक
इमली की छाल की श्वेत भस्म	२॥ तोला
हल्दी पिसी हुई	आध सेर
जामुन छाल स्वरस का घनसत्त्व	२ तोला
ऊमर (औदम्बर) छाल स्वरस का घनसत्त्व	२ तोला
गंधक आंवलासार	१ तोला

विधि—प्रथम गुड़ को कड़ाई में डालकर पकावें, जब गुड़ पकते २ जलने लगे और काला पड़कर कड़ा हो जाये उतार लें और खुरच कर रखलें। फिर गंधक को कड़ाई में पिघलावें, जब गंधक सुर्ख लाल रंग का होजाये और स्याही मायल होने लगे तुरन्त उतार कर ठंडा करलें। हल्दी भी मामूली तौर पर भूनलें। पश्चात् सबको अलग २ खूब खरल करें, फिर सबको एकत्रकर यहां तक घोटें कि घोटते २ इतना सूक्ष्म होजाये कि हवा लगते ही उड़ने लगे। बस दवा तैयार है। शीशी में भर कर रखलें। आइडोफार्म के स्थान पर बुरकने के काम में लें। शीघ्र ही घाव को भरकर बराबर कर देगा। अनेकों रोगियों पर अनुभूत है।

रक्तस्रो[illegible] वटी

गन्धक आमलासार शुद्ध	५ तोला
शिगुफ्तो चूर्ण सूक्ष्म	२ तोला
तुलसी पत्र चूर्ण (छाया शुष्क)	२ तोला
मेंहदी पत्र चूर्ण (छायाशुष्क)	२ तोला
निम्ब पत्र चूर्ण शुष्क	२ तोला

—लेखक—

काली मिर्चें	२ तोला
गुर्च (सूखी का) चूर्ण	२ तोला

—सबका चूर्ण एकत्र कर कपड़ छन करले और बढ़िया शहद में घोंट कर झरबेरी के बेर बराबर बटी बनालें।

मात्रा—१ से ३ गोली जल के साथ निगलें। घृत दुग्ध खूब खिलावें। सभी प्रकार के रक्त विकार (चर्मरोग) विषर्प, व्रण आदि को शीघ्र लाभ करती है। सुपरीक्षित है।

रक्तोत्पादक (वाजीकरण योग) —

लोहभस्म (जलतर बढ़िया)	१ तोला
शुद्ध कुचला चूर्ण (अति सूक्ष्म)	६ माशे
संखिया शुद्ध	३ रत्ती
वंशलोचन असली	२॥ तोला
बिधारा असली	१। तोला

—प्रथम वंशलोचन और संखिया को खरल मे डाल दिन भर बलवान् हाथों से लगातार घुटाई करें। पश्चात् कुचला चूर्ण डालकर घोटें; एक जान होने पर लोह भस्म डालकर घोटें। पीछे बिधारा चूर्ण डालकर घोटे। यहां तक कि बिल्कुल एक जान हो जाय। शीशी में रखलें।

मात्रा—पूर्ण वयस्कों को ३ रत्ती से ६ रत्ती तक शक्ति देख कर दिन मे दो बार, दवा खाने से प्रथम कुछ खा लेना ठीक है खाली पेट दवा न जाये। और घी-दूध खूब खिलाये जायें। फल, मक्खन, पौष्टिक सुपाच्य भोजन। यदि आवश्यकता समझें तो पेट साफ करके सेवन करावें, रक्त वृद्धि करने के साथ-साथ पुरुषत्व बढ़ाकर हृष्ट-पुष्ट कर देता है, चित्त प्रसन्न होता है। भोजन पचकर रक्त वृद्धि हो कर दुर्बल भी संयम पूर्वक चलकर अपने को सबल बनाने में समर्थ होगा।

विशेष सूचना—वैद्य यदि आवश्यकता समझे तो मात्रा में कमी वेशी भी कर सकता है।

कविराज श्री० दिव्यकुमार जी साहू आयुर्वेदाचार्य, सिद्धान्त शास्त्री,

नृसिंहनाथ, आयुर्वेद भवन पसना रायपुर सी० पी.

—लेखक—

पिता का नाम— वैद्य द्वारिकानाथ साहू

जाति—आर्य आयु–४२ वर्ष

प्रयोग विषय—१-वात का तेल २—जलन ३—चेचक

"कविराज महाशय उड़ीसा प्रान्त के सम्बलपुर जिले के पानसुरा ग्राम के निवासी हैं। वैद्यक व्यवसाय उनके पैत्रिक देन है। हिन्दी, बंगला, उड़िया, संस्कृत, अङ्ग्रेजी, उर्दू आदि भाषाओं में पारंगत विद्वान हैं। वैद्य महाशय नृसिंहनाथ के वन-प्रान्तों में एक सिद्ध योगी के साथ घूमकर जड़ी-बूटी विषयक बहुत से परिचय प्राप्त किये हैं। उड़िया भाषा में आपने अनेकों पुस्तकें लिखी हैं। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी प्रमाणित होंगे, ऐसी आशा है।" —सम्पादक।

वात का तेल—

सरसों का तेल	२० तोला
काला जीरा	३ माशा
धतूरे का फल	१ फल
लहसुन	१ तोला
अफीम	१॥ माशा

—लोहे की कड़ाई में तेल को फेन के निकलते समय तक। इसके बाद काला जीरा छोड़ दें उसके बाद धतूरा फल थोड़ा २ डालें। उसके बाद लहसुन, तब अफीम और कपूर ठण्डा होने के बाद छानकर बोतल में रखलें।

गुण—इस तेल को दो-तीन बार लगाने से हर प्रकार के वात के दर्द को जड़ से नाश करता है। यह औषधि परीक्षित है। तेल लगाने के पहिले पेट साफ कर देना चाहिये।

जलन—

अभ्रक भस्म	बंग भस्म
कपूर	मुस्तक (मोथा)
अनन्तमूल	लौंग
जायफल	द्राक्षा

—समभाग लेकर चूर्ण बना उसके समान बताशे मिलावें।

मात्रा—आधा तोला।

अनुपान—ठण्डे पानी के साथ।

गुण—हरएक प्रकार के वातजनित जलन ४० प्रकार के पित भ्रम, माया जलन, शरीर का जलन, पांव, नेत्र-जलन, शिर दर्द और जलन उन्माद क्षय, अरुची, मृगी रोग दूर होता है।

वसन्त (चेचक)—

पहिले नीम के पत्तों के क्वाथ को तीन-चार बार पिलावें, खाना नहीं दें; अगर देना हो तो हल्का, एक दिन में बुखार बन्द हो जायगा और वसन्त के फोड़े न निकल सकेंगे, ये प्रतिरोध स्वयं अनुभव से बनाया गया है। सौ-सौ बार आजमाया जा चुका है।

—लेखक—

आयु. पं. महावीरप्रसाद जी मिश्र

मंडावरा पो० खंडेला (जयपुर)

—०❀०—

पिता का नाम— पं० रामप्रताप जी वैद्यराज

आयु—२६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आपने साहित्यायुर्वेदाचार्य पं० हनुमत्प्रसाद जी शास्त्री से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्तकर विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। अपने पिता की सेवा में चिकित्सा का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया है। आप सफल चिकित्सक हैं तथा आपके निम्न दोनों प्रयोग अवश्य सफल प्रमाणित होंगे। पाठक लाभ उठावें। –सम्पादक

पुत्रदाता घृत—

निम्न प्रयोग पुत्र-दाता है। जिन स्त्रियों के सन्तान होकर मर जाती हों अथवा कन्या ही कन्या होती हैं। उनको इस घृत का सेवन करायें। अनेकों बार का परीक्षित है। इस घृत में एक विचित्र शक्ति है, जो स्त्री अङ्गों को नष्ट कर पुरुष अङ्ग पैदा करता है।

शतावरी रस	२॥ सेर
गौ घृत	२॥ सेर
जल	२॥ सेर

कल्क-द्रव्य—

गोखुरू कौंच बीज खरैटी बीज
गंगेरन की छाल शालपर्णी
पृष्ठपर्णी अनन्तमूल कास। जड़
नीलोत्पल —ये वस्तुयें १०-१० तोला
लाल चन्दन सफेद चन्दन ५-५ तोला
मधुयष्टी (मुलहठी) २ तोला

—कल्क द्रव्यों को बारीक कूटकर घृत पाक विधि से घृत निर्माण करें।

नोट—शतावरी पुष्य नक्षत्र से उखाड़ कर लानी चाहिये। घृत उसी गाय का लेना चाहिये जो पीले रङ्ग की हो तथा जिसके बछड़ा हो (सवत्सा गाय) हो।

सेवन-विधि—जब १॥ माह का गर्भ हो जाय तब से लेकर ७ माह तक का बालक होजाने तक स्त्री इस घृत को प्रातः काल २॥ तोले की मात्रा में आध सेर गाय के दूध के साथ, मिश्री मिलाकर लें।

पथ्य—तैल, गुड़, अधिक मिर्च, गरिष्ठ भोजन वर्जित हैं। ब्रह्मचर्य से रहें।

गुण—यह घृत अनेक बार का परीक्षित है। सुन्दर, सुडौल पुत्र प्राप्त करने वालों को अवश्य व्यवहार कराना चाहिये।

वीर्य-शोधक घृत—

आजकल खान-पान एवं आहार-विहार के दोष से स्त्री-पुरुषों का आर्तव एवं वीर्य दूषित हो जाया करता है, ऐसा आयुर्वेद शास्त्रों का सिद्धान्त है। अशुद्ध रज एवं वीर्य निरोगी सन्तान पैदा करने में

असमर्थ होता है। निम्न घृत के सेवन करने से वीर्य एवं रज निर्दोष हो जाते हैं।

प्रयोग—

आँबाहल्दी	१० माशे
हल्दी रक्त चन्दन कपूर कचरी	
कूठ मूर्वा शिलाजतु कपूर	
नागर मोथा भद्र मोथा	—५-५ माशे

—इनका चूर्ण करके १ सेर दूध में मिलाकर उदुम्बर (गूलर) की लकडी के पात्र में दही जमावे। बाद में गूलर की लकड़ी की मथनी से मक्खन निकाल घृत बनावे।

नोट—दूध को औटाते समय एक सेर पानी में उपर्युक्त दवाएं मिलाकर दूध में डालना चाहिये, जिससे दवाइयों का सत्व १ सेर पानी जलने तक दूध में आजाये। घृत बन जाने पर एक छटांक घृत हो तो उसमें—

कस्तूरी	१ रत्ती
जावित्री जायफल इलायची	
—तीनों आधी-आधी रत्ती	

—मिलाकर प्रयोग में लावें।

नोट—गूलर की लकड़ी पौष्टिक है। अतएव उसका बना हुआ पात्र लेने से रसायन योग से वही गुण दूध में आजायगा। यदि गूलर का पात्र न मिल सके तो दही मिट्टी के पात्र में जमा दें, किन्तु एक सेर दूध में ५ तोला गूलर की छाल चूर्ण कर मिला दें।

सेवन-विधि—

स्त्रियों को—जब रजोधर्म होने के १२-१३ दिन रह जायं तब से २२ दिन तक दूध चावल की बनी खीर में मिलाकर ६ माशे से २॥ तोले तक की मात्रा में देना चाहिये। एक समय इसी खीर का भोजन किया जाय। दूसरे समय और भोजन भी लिया जा सकता है। किन्तु माँस, मदिरा, तैल, मिर्च, गुड़ का परहेज रखें।

पुरुष को—दूध चावल की खीर में ही उपर्युक्त मात्रा में कम से कम १ माह तक इस घृत का सेवन वीर्य शुद्धि के लिये करना परमावश्यक है।

मैं प्रायः ६ माशे से २ तोला तक द्विगुण शहद और मिश्री मिलाकर पाव भर गौ-दुग्ध के साथ प्रातः सायं देता हू।

गुण—इससे वीर्य की शुद्धि एवं वृद्धि होती है, और यह रसायन है।

श्री वै. शिवनरेश पाठक "भिषक" धर्मरत्न,

चिकित्सक—अमर औषधालय, आथर (शाहाबाद)

पिता का नाम— श्री० पं० सुखराज पाठक

जाति— शाक द्वीपीय ब्राह्मण

प्रयोग विषय- १-उदरशूल २-श्वास

"आप एक सिद्ध-हस्त चिकित्सक हैं, तथा गत १४ वर्षों से सफलता-पूर्वक चिकित्सा कर रहे हैं। आपके चिकित्सा-कौशल के कारण अमर औषधालय ने जनता की अच्छी सेवा की है। और अतएव ही विहार सरकार ने उक्त औषधालय को आर्थिक सहायता प्रदान की है। आपके निम्न दोनों प्रयोग सफल सिद्ध हुए हैं। पाठक लाभ उठावें।

—सम्पादक।

शूलामृत-

खाने वाला तेजाब १ ड्राम

पिपरमेंट कपूर अजमाइन का सत्व

सम भाग में गलाया हुआ १ ड्राम

-सबको एक कांच की काली रङ्ग की शीशी में बन्द करके ६ घण्टे तक हिलाते रहे। जब दवा आपस में मिल जांय तब २२ औंस वाली बोतल में पानी भरकर उसी में उक्त दवा डाल दें। पुनः बोतल को हिलाकर डाट लगा दें। इसमें से १ तोला की मात्रा में दें। कैसा ही पेट का दर्द हो उसे शीघ्र शान्त कर देगा। परीक्षित है।

दमा का अचूक योग-

अदरख का रस प्याज का रस

लहसुन का रस ग्वारपाठा का रस

शुद्ध मधु पान का रस

—प्रत्येक २-२ तोला

-उक्त सब रसों और मधु को लेकर एक करले, काच की बोतल में भर लो और डाट लगाकर हिलाकर मिला लो, और १ फुट गढ़ा खोदकर जमीन में गाड़ दो। १५ दिन बाद निकाल कर रोगी को सवा-सवा तोले की मात्रा में सुबह शाम दोपहर को पिलावें। रोगी को पथ्य से रक्खो, कुछ दिन के सेवन से दमा जड़ से छूट जायगा।
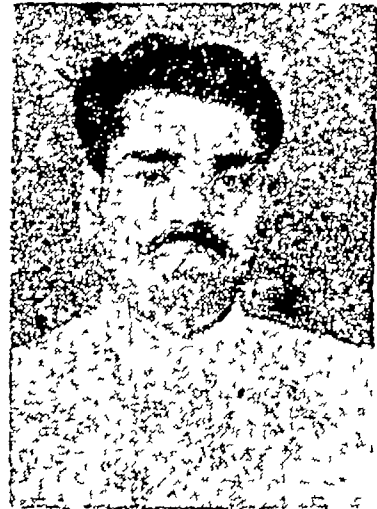
—लेखक—

श्री. पं० दीनदयाल जी मिश्रा

एलिचपुर, कामठी सी० पी०

—:०:ॐ:०:—

—लेखक—

पिता का नाम—वैद्य पं० वासीराम जी मिश्रा ज्योतिर्विद्यारत्न

आयु—२७ वर्ष जाति—गौड़ ब्राह्मण

"आपने आयुर्वेद का अध्ययन श्री. पं० गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी एवं श्री गो० कृ० केकर की सेवा में रहकर किया है। आप ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के भी ज्ञाता हैं। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी प्रतीत होते हैं, आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

विशूचिका पर—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध वच्छनाग, अतीस, आंवा, चित्रक, धाय के फूल, सोंठ, मिरच, पीपल, जायफल, मोचरस, भाग, मोथा, इन्द्रजव, कपित्थ मगज, गिलोय सत्व, सागर गोटी की गिरी, टंकणक्षार, अनारत्वचा—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—पारद गंधक की कज्जली करलें। उपरोक्त औषधियां खूब महीन कर अफीम २१ तोला मिला, अदरख का रस और नीबू के रस अलग २ डाल कर खरल करें। सूखने पर मूंग के समान गोलियां बनालें।

मात्रा—समयानुसार १ से २ गोली प्रति खुराक में अदरख के रस और शहद में मिला कर चटावे। विशूचिका के उग्ररूप में आधा २ घंटे से भी दी जा सकती है। बालकों को कम मात्रा में दें। उपरोक्त मात्रा पूर्णायु की है। इस औषधि से डाक्टरों के छोड़े हुए रोगी भी निरोग हुए हैं। मरणासन्न रोगी को सूतशेखर और स्वर्ण माक्षिक औषधि से दुगनी मिला अदरख शहद में चटनी बना १०-१० मिनट बाद एक उँगली चटावें याने प्रति बार में एक से दो गोली चटाई जाय।

संग्रहणी हर—

सौंफ	४० तोला
सोंठ	५ तोले
पोस्त डोडा	१० तोला
मिश्री	२० तोले
मोचरस	५ तोला
बेल गिरी	५ तोले
सफ-जीरा	५ तोले

—सबको कूट कपड़ छान कर रखलें।

मात्रा—१॥ मासे से ३ माशा तक धारोष्ण दूध या गौ छाछ या शकर के पानी से दिन में २ से ३ दें। यदि दस्त ज्यादा ही हों तो विशूचिकाहर एक-दो वटी दिन में १-२ बार दें। दस्त शीघ्र बन्द करे। अन्यथा पेट फूलने लगता है, अन्न बन्द कर दें, छाछ या धारोष्ण दूध आराम होने से अन्न प्रारम्भ करें। अन्न के साथ कुछ दिन लवणभास्कर दें।

श्री. वैद्य धरमजीत नाई

जरीगपुर (शाहजहाँपुर)

—०—

पिता का नाम— श्री० शंकरलाल

आयु—५१ वर्ष जाति—नाई

प्रयोग विषय- १-अर्श २-छाजन

"आप हिन्दी पढ़-लिखकर गरीबों की चिकित्सा करने लगे। दयालु स्वभाव एवं अपनी सूझ-बूझ के कारण आपने अच्छी सफलता प्राप्त की है। आपके कोई सन्तान नहीं अतएव धन प्राप्ति की अधिक लालसा न करते हुए चिकित्सा करते हैं। पाठक आपके प्रयोगों से लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

अर्श रोग पर-

—केला की पकी फली लेकर उसके ऊपर का छिलका उतार दें और उसके ५-७ टुकड़े कर लें। अब श्वेत फिटकरी ६ माशे और गेरू ६ माशे पीस-छानकर उस पर बुरक दें और रात को ओस में रख दें। प्रातःकाल रोगी को खिला दें। इस प्रकार २१ दिन खिलाने से अर्श रोग नष्ट होता है।

नोट—यदि केला की फली पकी हुई न मिले तो कच्ची फली लेकर आग की भूभल में भून कर उपयोग में ला सकते हैं।

छाजन पर-

आदमी की जली हुई हड्डी	५ तोला
कुत्ते के सिर की हड्डी	५ तोला
सिआर के सिर की हड्डी	५ तोला

—इनको बारीक कूटकर तीन पाव सरसों के तैल में मिलाकर आग पर रखें। जब हड्डी का चूर्ण काला पड़ जाय उतारकर छान लें। इसमें २ तोला रोहनी तथा २ तोला कपूर पीसकर मिला दें। इस तैल के लगाने से कुछ समय में छाजन अवश्य नष्ट हो जाता है।

—लेखक—

श्री वैद्य विशारद पं० नथमल शिवनारा

श्री. धन्वन्तरि आयुर्वेदिक औषधालय, हैदराबाद (दक्षिण)
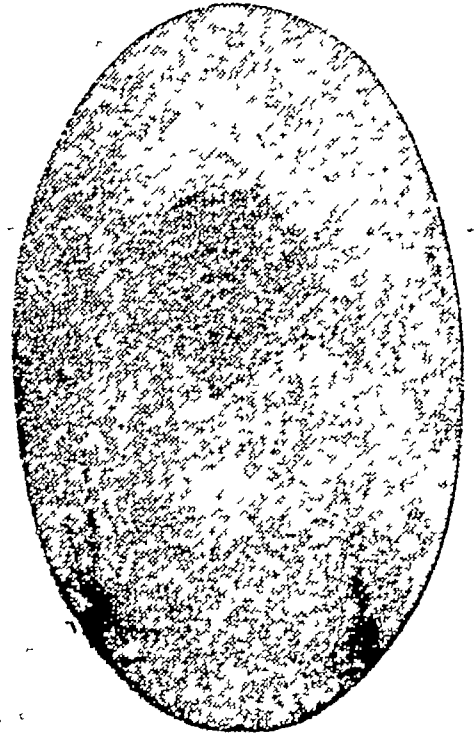
पिता का नाम— श्री कन्हैयालाल जी मास्टर

आयु-२६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आपने गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस से प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आपने आयुर्वेद का अध्ययन व अभ्यास घर पर ही किया। बाद में निजाम आयुर्वेद-तिब्बी कान्फ्रेंस हैदराबाद की वैद्य विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की। अब आप हैदराबाद में ही अपना औषधालय खोलकर सफलता-पूर्वक चिकित्सा-व्यवसाय कर रहे हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग उत्तम हैं। पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक

डब्बा नाशक वटी—

सत्यानाशी (स्वर्णक्षीरी) के बीज और उसार रेवन (रेवन चीनी का सत) यह दोनों बराबर लेकर सत्यानाशी के रस में घोटकर उड़द के बराबर गोली बनालें और छाया में सुखा सुरक्षित रखलें।

मात्रा—१ गोली से २ गोली तक, एक अथवा दो समय जब जरूरत पड़े तब देवे।

उपयोग—बालकों के डब्बे रोग में अति उपयोगी है। एक दस्त और एक वमन कराकर रोग को शान्ति करती है।

दन्त प्रभाकर मंजन

शुद्ध चाक	४० तोले
सेलखड़ी	४० तोले
माजूफल, सफेद कत्था, कपूर	शीतलचीनी —तीनों ५-५ तोले
छोटी इलायची के दाने	लवंग —२॥-२॥ तोले
फिटकरी का फूला	२१ तोले
एसिड कारबोलिक	६ माशे
पिपरमेन्ट का तैल	८ माशे

विधि—पहिले कारबोलिक एसिड और कपूर को मिला लेना। जल होजाने पर चाक मिला लेना। पीछे पिपर मेन्ट का तैल मिला लेना. अन्त में और औषधियों का कपड़-छन चूर्ण मिला कर मजबूत डाट वाली शीशी में भर कर रखलें। डिब्बे में भरने से थोड़े ही दिनों में मंजन कमजोर और दूषित होजाता है।

उपयोग—दांत और दाढ़ के सर्व प्रकार के दर्द, पीब आना, रक्त गिरना, टीस चलना, दांत हिलना, मसूड़े फूलना, मैल लगना, दुर्गन्ध आना आदि सर्व दोषों को दूर करके दांतों को सफेद और मजबूत बनाता है। साथ में गले और जीभ पर लगे हुये कफ और मुंह का बे-स्वादपन भी दूर होता है।

श्री वैद्य पं० शङ्करप्रसाद चन्दुलाल जी

वैद्य भूषण L. M. S. A.

गांधी पोल, मोजित्रा।
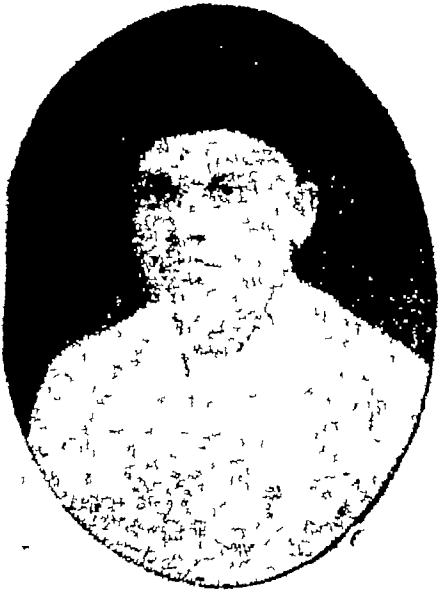
—लेखक—

पिता का नाम— श्री. चन्दुलाल त्रिभुवनदास व. शा.

आयु—४१ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आपके वंशपरम्परा से वैद्यक व्यवसाय होरहा है। अपने पिता के पास ही रह कर आपने आयुर्वेद विद्या का अध्ययन किया। विविध स्थानों से वैद्यराज, वैद्यभूषण तथा आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की। निखिल भारतीय वैद्य सम्मेलन करांची में 'क्षय' निबंध पर प्रमाणपत्र प्राप्त किया। अब आप श्री. मथुर भाई जोरा भाई धर्मार्थ दवाखाने में चिकित्सक के स्थान पर कार्य कर रहे हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग अनुभव सिद्ध हैं। पाठक प्रयोग कर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

ज्वर—

शु० पारद शु. गन्धक शु. संखिया
शु. हरताल शु. बच्छनाग टङ्कण
लोह भस्म भांग कृष्ण धतूरे के बीज
सोंठ मिर्च पीपल
—हरेक १-१ तोला

—इनका चूर्णकर एक दिन अद्रक स्वरस में खरल करें और १-१ रत्ती की गोली बनालें।

मात्रा—१ से २ गोली प्रातःसायं या ज्वरावेग के समय से ३ घण्टे पूर्व से १-१ घण्टे बाद दूध के साथ दें।

गुण—यह औषधि नवीन ज्वर, शीत ज्वर, इन्फ्लुएञ्जा सन्निपात में लाभ करती है। निमोनिया, तन्द्रिक सन्निपात कफ में अद्रक स्वरस के साथ दें, मलेरिया ज्वर में तुलसी के रस के साथ दें।

पथ्य में—दूध, चावल शक्कर, साबूदाना, मूंग की दाल दें।

नोट—सभी प्रकार के ज्वर रोकने के लिये वंशपरम्परा से व्यवहृत होने वाला प्रयोग पाठकों को भेंट किया है।

मदन रंजन गुटिका

(नपुंसकत्व एवं शीघ्र-पतन पर)

रससिन्दूर उत्तम ४ तोला
शिलाजीत चांदी के वरक —२-२ तोला
अम्बर कस्तूरी —६-६ माशे
स्वर्ण वर्क शु. बच्छनाग गिलोय सत्व
कौंच बीज सफेद मूसली अफीम
बरास (भीमसैनी कपूर) जायफल
लवंग अगर तजर केशर १-१ तोला

निर्माण विधि—प्रथम रससिन्दूर को २ दिन भली प्रकार मर्दन करें। फिर काष्ठादि औषधियों का चूर्णकर धीरे-धीरे खरल में डाल घोटे। फिर अफीम, शिलाजीत, सोना-चांदी वर्क का भी मिश्रण करदें। धतूरे के पत्तों के रस में एक दिन घुटाई करें, फिर अद्रक रस का पुट दें। अन्त में बरास, कस्तूरी और अम्बर भी मिला दें अब पान के रस की भावना देकर चने बराबर गोली बनालें।

गुण—प्रातः सायंकाल १-१ गोली दूध के साथ देने से कैसा ही नपुंसक हो, उसे इसी प्रयोग से, दमा, क्षय एवं अन्य धातु-विकार भी नष्ट होते हैं। प्रयोग परीक्षित हैं।

वैद्यभूषण पं० चतुर्भुज शर्मा

मोहिला ठांड़ी, मण्डाना (कोटा)

पिता का नाम— श्री० पं० सुखदेव जी शर्मा

आयु—४८ वर्ष जाति—जागिड़ ब्राह्मण

प्रयोग विषय- १-शोथ २-सूखा रोग ३-क्षय

"आपको आयुर्वेद पद्धति अनुसार चिकित्सा करते हुए लगभग ४ वर्ष होगये हैं। आपने आयुर्वेद विद्यापीठ आगरा से वैद्य-भूषण की उपाधि प्राप्त की है। निम्न प्रयोग सामान्य किन्तु परीक्षित हैं। पाठक उपयोग में लाकर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

—लेखक—

शोथ (सूजन) पर—

सहदेई पंचॉग	आध सेर
कालीमिर्च	५ तोला

—पंचांग को जौकुट कर ले। कालीमिर्च को बारीक पीस लें और दोनों को मिलाकर ८ सेर जल में एक मिट्टी के पात्र में आग पर रख दे। २ सेर जल शेष रहने पर छान कर बोतलों में भर लें।

मात्रा व गुण—प्रातः सायंकाल ५-५ तोला रोगी को पिला दें। ७ दिन में शोथ (वरम) नष्ट हो जायगा।

अपथ्य—दवा सेवन काल में नमक कतई नहीं लें। उस तवे पर रोटी भी पकाना मना है जिस पर नमक युक्त पदार्थ पहिले तैयार किया जा चुका है। तैल, खटाई आदि हानिकारक वस्तुऐं तो अपथ्य हैं ही।

बच्चों के सूखा रोग पर—

रोग परिचय—छोटे-छोटे बच्चे इस रोग से पीड़ित होने पर बहुत कष्ट उठाते हैं। बच्चा दिन प्रति-दिन सूखता चला जाता है। उसकी गरदन पतली पड़ जाती है। सिर मोटा मालूम होता है। पसली सिकुड़ जाती हैं, कमर के नीचे पैर पतले हो जाते हैं। इस रोग पर सैकड़ों बार की परीक्षित औषधि पाठकों की सेवा में प्रेषित है।

जंनजनी छोटी—यह हर स्थान पर गांव के आस-पास, कुए या नहरों के पास मिलती है। इसकी पतली शाख होती है। पैर से सिरे तक नीचे झुका हुआ तीन फीट तक ऊंचा होता है। मटर के समान छोटे-छोटे पत्ते होते हैं। इसकी जड़ को लाकर १ माशे रोजाना ताजे जल में पीसकर प्रातः काल बच्चे को पिलादें। १५ दिन इसी प्रकार पिलाने से रोग नष्ट हो जाता है।

अपथ्य—तैल, खटाई गुड़ आदि बच्चा तथा बच्चे की माँ को न दें।

क्षयरोग पर

नीम पंचांग	
अपामार्ग पंचाग	
गुड़मार पंचाग	—तीनों ४०-४० तोला
तुलसी पंचाङ्ग	२० तोला
विसखपरा पंचाङ्ग	२० तोला
पत्थरचटा पंचाङ्ग	१० तोला

—सभी पंचाङ्ग ताजी हों। साफ करके एक मिट्टी के बरतन में रखें। उसमें छींका बनाकर एक चीनी का कटोरा लटका दें। ऊपर से एक मिट्टी का बर्तन सीधा रखकर सन्धि बन्द करदें। ऊपर के पात्र में ४ सेर जल भरकर आग पर चढ़ा दें। दो पहर अग्नि देकर उतार लें और सावधानी से कटोरे को निकाल लें। उसमें अर्क होगा उसे शीशी में भर लें।

गुण—इसे ५ दिन तक रोजाना प्रातः २ माशे की मात्रा में क्षय रोगी को दें। कीटाणु नष्ट होंगे तथा क्रमशः कास-श्वास, ज्वर, कफ आदि व्याधियां शान्ति होंगी। दवा तेज है, अतः २ माशे से अधिक न दें।

अपथ्य—२७ दिन तक गेहू का आटा, सफेद चीनी और गाय का शुद्ध घृत के अतिरिक्त कोई चीज सेवन न करें।

अमृत के बिन्दु

(श्री. पं० प्रियबन्धु जी शर्मा)

—❀—

साधारण ज्वर

नीम की सींकें ७ और कालीमिर्च ५ नग दोनों को सिल पर पीसकर तथा आधा पाव पानी मे ठंडाई के समान छानकर प्रातः सायम् पी लीजिए। दो चार दिन मे ज्वर दूर हो जायगा।

अथवा

तुलसी की पत्तियाँ ६ नग और कालीमिर्च ५ नग दोनों को सिल पर पीसकर तथा १ छटांक पानी मे छानकर प्रातः सायम् पी लीजिए, ज्वर दूर हो जायगा।

प्रतिश्याय (जुकाम)

प्रातःकाल उठकर और हाथ-मुंह धोकर १ कप गर्म पानी में आधा कागजी नीबू निचोड़ कर और उसी में १ माशा पिसा नमक मिला कर दो-चार दिन पीजिए, जुकाम दूर होजायगा।

अथवा

रूमाल पर नीलगिरि का तैल १-१ बूंद या भुने हुए चने पोटली में बाधकर सूंघिए प्रतिश्याय (जुकाम) दूर हो जायगा।

खांसी

अड़ूसे की पीली पत्तियां ७ नग सिल पर पीसकर १ छटांक पानी में छान लीजिए और १ तोला शहद मिलाकर प्रातःसायं पी लीजिए। दो चार दिन में खांसी दूर हो जायगी।

बच्चों की काली खांसी

फिटकरी को आग पर फुलाकर उसकी १-२ रत्ती भस्म शहद या माता के दूध के साथ दिन मे २-३ वार बच्चों को दीजिए। खांसी नष्ट होगी।

खूनी बवासीर

गेंदे की पत्ती के १ तोला रस में आंवले के मुरब्बे की चासनी या बनप्सा का शर्बत मिला कर पीने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

अथवा

प्रातःसायम् २ माशा तुख्मलंगा खाकर पानी पीने से भी बवासीर का खून बन्द होता है।

—अजन्ता।

श्री. वैद्य राजमल गिरधारीलाल जी

हानोदवाले, मालीपुरा, (उज्जैन)

"आपके यहा कई पीढियों से चिकित्सा व्यवसाय होता आ रहा है। निम्नप्रयोग वंशपरम्परा से सफलतापूर्वक व्यवहृत होते आये हैं। आशा है धन्वन्तरि के पाठक भी इन प्रयोगों से उचित लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

वातारी रस—

शुद्ध पारा जायफल शुद्ध गंधक
शुद्ध सफेद संखिया शुद्ध मीठा विष (वच्छनाग)
शुद्ध तांबे की भस्म शुद्ध सोहागा
अकरकरा जायपत्री पीपलामूल लौंग
पीपल काली मिर्च सोंठ

—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—प्रथम पारद गंधक की नीलवर्ण कज्जली तैयार कर लेवे. बाद में संखिया ताम्र भस्म मीठा विष और सोहागा डाल कर ३ घंटे तक घोटता रहे। तत्पश्चात् काष्ठौषधियों का कपड़छन चूर्ण मिला कर संभालू, भांग, अफीम, अद्रक, तुलसी, नागरवेल के पान के स्वरस की तीन-तीन भावना देकर एक-एक रत्ती प्रमाण की गोलियां तैयार करके सुखा लेवे, और शीशी में रख लेवे।

अनुपान—मधु या अद्रक स्वरस मधु या सोंठ का काढ़ा ये साधारण अनुपान हैं। विशेष अनुपान की योजना रोग दशा पर स्वबुद्धि से कल्पना करे।

गुण—शीतज्वर, विषमज्वर, वातकफज्वर, घोरसन्निपातज्वर, शीतांग, शीतयुक्त प्रस्वेद; खांसी, स्वास, जुक़ाम, वातप्रकोपज सर्वाङ्गशूल, आमवात, पार्श्वशूल, शूलयुक्तशीतज्वर को नाश करता है।

शूलगज केशरी रस (उदर शूल पर)—

शुद्धपारद जवाखार सज्जी क्षार
हिरण के सींग की भस्म —एक-एक भाग
शुद्धगंधक ताम्र भस्म सोहागा की खील
भुनी हुई हींग —दो-दो भाग
शंख भस्म चार भाग
पांचों नमक दस भाग
त्रिकुटा त्रिफला छैः-छैः भाग

विधि—प्रथम पारद-गंधक की नीलवर्ण कज्जली तैयार कर लेवे। तत्पश्चात् भस्म मिलाकर ३ घंटा मर्दन करे, फिर कपड़छन की हुई काष्ठौषधियों के चूर्णको मिलाकर एरंड की जड़, अद्रक, और जम्बीरी नीबू के रस की सात-सात भावना देकर ३-३ रत्ती प्रमाण की गोलियां तैयार कर लेवे।

अनुपान—गर्म जल-शहद या रोगानुसार अनुपान की योजना करके सेवन करावे।

मात्रा—एक से दो गोली तक प्रत्येक बार दिन में तीन या चार बार तक सेवन करावे।

गुण—उदर शूल का नाश करता है।

रक्तातिसार की शर्तिया दवा

पके बेल की गिरी २ तोला
भुनी हुई आम की गुठली २ तोला
सफेद राल मोचरस धनियां
कुड़े की छाल —१-१ तोला
मिश्री ४ तोला

विधि—इनको कूट कर चूर्ण बना लेवे।

मात्रा—चार माशे तक। अनुपान—शीतल जल से।

गुण—रक्तातिसार को शर्तिया आराम करता है।

श्री. वैद्यशास्त्री सूरजमल जी दोशी

श्री. दिगम्बर जैन औषधालय मक्सीपार्श्वनाथ, मक्सी (उज्जैन)

पिता का नाम— श्री० नथमल जी दोशी हकीम हाजरीवाला

प्रयोग विषय— १-नेत्ररोग २-घबराहट

"श्री० दोशी जी ने वैद्यशास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की है, इसके अलावा माइनर सर्जरी, व्हैक्सेनेसन और इन्जेक्शन देने की ट्रेनिंग सिव्हिल हास्पिटल उज्जैन से की है, और आपको इंजेक्शन देने का अभ्यास भी अच्छा है। आप दि० जैन औषधालय मक्सीपार्श्व नाथ, मक्सी से १० वर्ष से निःशुल्क सफलता-पूर्वक चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं, एवं औषधालय द्वारा जनता की सेवा करके आयुर्वेद की मान वृद्धि कर रहे हैं, आशा है कि इन प्रयोगों से पाठकों को पर्याप्त लाभ होगा।'

—सम्पादक।

घबराहट नाशक योग—

नारियल की जटा ५ तोला
कमलगट्टा की गिरी (हरी जीभ निकली हुई) २॥ तोला
इलायची हरी १ तोला

—इन तीनों को निर्धूम जलाकर बाद में वशलोचन १ तोला मिलाकर घुटाई कर लें और छान कर रख लें।

मात्रा—२ रत्ती से ५ रत्ती तक, मुनक्का दाख, या आंवला मुरब्बा के साथ देवें।

गुण—बुखार की घबराहट या सामान्य घबराहट, वमन, व दस्त बन्द होते हैं।

नेत्र रोग हर अंजन—

यशद का फूला, छोटी इलायची के दाने, कपूर देशी, नीम के नरम पत्ते, अब्बासी आंखों का रङ्ग १-१ तोला
अफीम ३ माशा
गौ घृत (सौ वार धुला हुआ) ७ तोला

—इन सब औषधियों को इकट्ठी कर लोहे की कढ़ाई में लोहे के डंडे से कम से कम २ हफ्ताह तक घोटना चाहिये। इस अंजन को ५-७ वार लगाने से आई हुई आंख फौरन आराम होगी। इसके अलावा आंखों की लालामी, आंसू का आना, नासूर, गर्मी से जलन होना, रोहे का होना इत्यादि रोगों में काजल नुमा अंजन करना हितकर है। दिन रात मे ४-५ वार अंजन करना चाहिये।

श्री. पं. टीकाराम जी वैद्य भारद्वाज

खेरा-खदौली (आगरा)
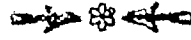
पिता का नाम— श्री० प० रामचन्द्र जी शर्मा

आयु—३२ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय— १-दाद २-न्यूमोनियां ३-नेत्र रोग

दाद पर स्वानुभूत—

—एक बालिस्त गजी का साफ कपड़ा लेकर उसे आक दूध में भिगो २ कर सुखाया जाय । सूखने पर पुनः अर्क दुग्ध में भिगोकर सुखावें । इसी प्रकार एक पाव अर्क दुग्ध लगा दिया जाय, और छाया में सुखाकर फिर उसके ऊपर दूध तर कर आँवलासार गन्धक की बुरकी लगा दो । इस प्रकार तीन बार करो फिर छाया में सुखा लो । अब गौ घृत के छींटे लगाकर बत्ती बना दिये में रख सरसों का तैल डाल जला दो और उसके नीचे पानी का कटोरा भर कर रख दो । और बत्ती को बढ़ाते जाओ इसमें से बूंद २ गिर कर कटोरे के दे में द्रव जमा हो जायगा, इसे दाद पर तीन रोज लगाने के दाद चला जाता है।

निमोनियां पर प्रयोग—

श्वासकुठार शुद्ध आंवलासार गन्धक
स्वर्ण माक्षिक भस्म —१-१ रत्ती

—यह एक खुराक है । ऐसी दिन रात में ५ खुराक दें ।

अनुपान—शहद और अदरख से ।

मर्दनार्थ तैल—

तारपीन तैल एरण्ड तैल १-१ तोला
कपूर ३ माशे

—मिला शीशी में सुरक्षित रखलो और दर्द स्थान पर मल कर सेक दो ।

नेत्रकंडु, बगल-गन्ध, पानी गिरने पर—

सर्व प्रथम नेत्रों को त्रिफला जल से दिन में ३-४ बार धोना चाहिये ।

काजल—

—प्रथम रुई का साफ फाया ❀ लेकर उसे भांगरे के रस में भिगोकर सुखाते जाओ, इस प्रकार तीन छटांक अर्क फाऐ मे सुखा उसकी बत्ती बना दीपक में सरसों का तैल डालकर जला दो, और मिट्टी की कच्ची परिया पर काजल को ले लो. इस काजल को सुरक्षित रख लो ।

त्रिफला जल—

हरड़ १ भाग

[शेषांश पृष्ठ ७६६ पर देखें]

"आपका जन्म ग्राम खेरा मे हुआ । आपने विभिन्न प्रतिष्ठित वैद्यों की सेवा मे रह कर वैद्यक विद्या प्राप्त की है । ८-१० वर्ष से सफलता पूर्वक चिकित्सा कार्य कर रहे हैं तथा जनता आपके चिकित्सा सौकर्य एवं व्यवहार से प्रसन्न है। पाठक आपके निम्न उत्तम प्रयोगों से लाभ उठावें ।"

—सम्पादक ।

❀ ४ अंगुल चौड़ाई और एक बालिस्त लम्बाई ।

श्रीयुत डा० चन्द्रगोपाल शर्मा ए. एम, डी.

ग्रामला (भिवानी-हिसार)

पिता का नाम-श्री [illegible] जी शर्मा
आयु—४[illegible] वर्ष जाति—गौड़ [illegible]

"श्री. शर्मा जी ने पं० रामप्रसाद जी वैद्य से आयुर्वेद ज्ञान प्राप्त किया तथा कलकत्ता [illegible] से एम डी की उपाधि प्राप्त की। आप गत १५ वर्ष से चिकित्सा कर रहे हैं। आपके निम्न प्रयोग सफल [illegible] होंगे ऐसी आशा है पाठक निर्माण कर लाभ उठावें।"

— सम्पादक।

पाण्डु रोग नाशक—

पाण्डु रोग जो कि यकृत की पित्त (Bile) निकलने वाली नाली के रुकने से होता है उसी के लिये यह योग लाभदायक है। अन्य रोगों के कारण से हुई पाण्डुता पर इससे कोई लाभ नहीं होगा, योग बिल्कुल साधारण है परन्तु जितना शीघ्र यह लाभ करता है उतना आयुर्वैदिक या अन्य पैथी का बहुमूल्य योग भी काम नहीं कर सकता, ऐसा मेरा विश्वास और अनुभव है।

प्रातः काल एक घरेलू मक्खी पकड़ कर उसे थोड़े से गुड़ में लपेट कर रोगी को निगलवा दें, बस यही दवा है।

पाण्डु रोगी जिसका शरीर पीला होगया हो, नेत्र पेशाब (मूत्र) आदि पीले हों, भूख मारी गई हो, पिण्डलियों में दर्द हो आदि कितने ही उपद्रव हों, उसे यह खिलावें, पाडु रोगी को मक्खी खिलाने से वमन नहीं होता। पहले ही दिन मूत्र सफेद आने लगता है और नेत्रों में भी पीलापन कम होजाता है। दूसरे दिन रोगी अपने अन्दर उत्साह देख पाता है उसे भूख अच्छी लगती है, तीसरे दिन रोग मुक्त हो जाता है। इस दवा को एक ही समय दें। शाम को देने की आवश्यकता नहीं है और तीन ही दिन दें। यह योग मेरा अनेकों रोगियों पर आजमाया हुआ है, कभी निष्फल जाते नहीं देखा। २५ वर्ष हुये मुझे एक मुसलमान फकीर ने यह बताया था। मैं रोगी को गोली बनाकर अपने सामने खिलाता हूं और उसे मक्खी की बाबत कुछ नहीं बताता। कोई पथ्य परहेज भी नहीं है।

न्यूमोनियां पर—

कबूतर की बीट पिसी छनी	१ तोला
पानी	१ सेर

—कलई की हुई देगची या मिट्टी के बर्तन में दोनों को डाल कर गरम करें। चतुर्थांश शेष रहने पर छान कर बोतल में डाल कर चार खुराक बना लें, निशान लगा दें।

मात्रा—३-४ घण्टे पर १-१ मात्रा रोगी को पिलावें तो एक ही दिन में न्यूमोनिया दूर होता है।

कोई २० वर्ष हुये भिवानी के एक प्रसिद्ध वैद्य को यह रोग होगया, पहले तो उन्होंने अपनी औषधि सेवन की। जब आयुर्वैदिक औषधियों से लाभ न हुआ तो शहर के डाक्टरों की बारी आई उन्होंने भी अपने तीर चलाये, परन्तु कुछ जोर न चला वैद्य जी निराश होकर 'काल की दवा नहीं' यह कह कर फरमाने लगे कि मेरा अन्तिम समय है मुझे और कुछ नहीं चाहिये, अगर हो सके तो मेरे प्रिय मित्र डाक्टर मथुराप्रसाद जी मोगे वाले को बुलादें; उनके दर्शन करलूं। तार दिया गया, डाक्टर साहब आये, उस समय रोगी बेहोश था और अन्तिम सास लेरहा थे

डाक्टर साहब ने कबूतर की बीट मंगाई और ऊपर लिखे अनुसार रोगी को एक मात्रा दी।

रोगी को होश हुआ, और डाक्टर साहब को नमस्ते की, शेष तीन खुराक भी ३-३ घण्टे पश्चात् दी गई और रोगी एक ही दिन में अच्छा हो गया, यह जादू मैंने भी देखा, और उसी समय से जब श्रङ्ग भस्म M.B. ६६३ आदि औषधियां फेल हो जाती हैं, तो इसे सेवन कराता हूं।

कर्ण स्राव पर–

कुत्ते का मूत्र रुई के फाहे से कान में निचोड़ देने से बहुत वर्षों का कर्णस्राव भी अच्छा हो जाता है।

कुत्ता मूत्र ऐसी जगह करता है कि मिलना कठिन होजाता है इसलिये कुत्ता को पकड़ कर सीमेंट के फर्श या बड़ी कढ़ाई में बिठाकर उसे लकड़ी से पीटो जब मूत्र त्याग दे उसे छोड़ दो, वरना समय पर मूत्र मिलना दुर्लभ हो जाता है। कई रोगी तो एक बार मूत्र डालने से ही अच्छे हो गये और कइयों को २-३ दिन भी डालना पड़ता है, पहले कान को खूब साफ करलें ताकि दवा अन्दर चली जावे।

पके दाद पर–

पांव की पिण्डलियों पर एक प्रकार के दद्रु से होते हैं उन्हें पक्क दाद बोलते हैं, उनसे पीप निकलता रहता है जहां वह पीप लगता है वैसे ही फोड़े हो जाते हैं। यह बड़ा हठीला रोग है जल्दी से नष्ट नहीं होता। पाठकों को उसके लिये एक ऐसा सरल और अनुभूत योग लिखता हूं कि एक बार के लगाने ही से रोग समूल नष्ट हो जाता है।

तारकूल जो पक्की सड़कों पर लगाते हैं, उसे थोड़ा गरम करके फोड़ों पर लगादें, ऊपर अरने (जङ्गली) कण्डों की राख कपड़छन की हुई लगादें ताकि तारकूल कपड़ों को खराब न करे और बदबू न दे, बस यह उसी वक्त उतरेगा जब नीचे से जख्म भर जायगा।

अगर कहीं पीप दिखाई दे तो दूसरे दिन भी पहले वाली दवा पर ही दवा लगाकर राख लगादे, धोये नहीं, न पानी लगने दे, ५-६ दिन में जब दवा उतर जाये और कुछ कचापन दिखाई दे तो एक बार और लगा दें।

भीष्म बाण चूर्ण–

पिपरमेंट	१ तोला
शुद्ध कुचला	२ तोले
सोड़ा बाई कार्ब	३ तोला
छोटी हरड़	४ तोला
हिंग्वाष्टक चूर्ण	५ तोला

—सबको मिलाकर चूर्ण करें।

मात्रा—आध से १ माशे अनुपान जल से।

गुण—पेट के समस्त रोग, कब्ज, अफरा, शूल अरुचि, मुंह से पानी आना और अम्लपित्त दूर करता है, दर्द को उसी समय नष्ट करता है, नये और पुराने तथा वात रोगों पर शतशोनुभूत है।

[पृष्ठ ७६७ का शेषांश]

बहेड़ा	२ भाग
आवला	३ भाग

—इस प्रकार लेकर जव-कुट करें। फिर कोरे कुलड़े में एक पाव जल डाल १ तोला उक्त त्रिफला का चूर्ण डाल ढक कर रात्रि को रख दें और सुबह गाढ़े कपड़े से छानकर साफ फाहे से उक्त रोगियों को धीरे २ कई बार एक ही समय में डालना चाहिये। थोड़ी देर दाद नेत्र सुखा काजल लगाना चाहिए। नेत्रकडु, बगलगन्ध, पानी गिरने की खास दवा है।
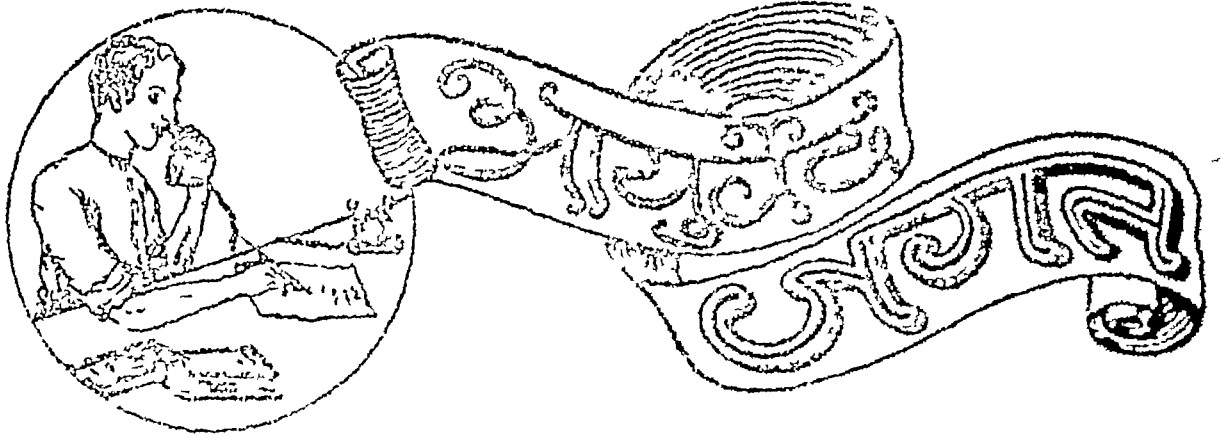
पटियाला-राज्य-संघ में राजकीय—

औषधालय का उद्घाटन

नारनौल, ता० १२ मार्च, आज पटियाला राजधानी से पटियाला राज्य संघ के महामन्त्री सरदार ज्ञानसिंह जी राढ़ेवालों ने प्रधान राजवैद्य श्री० पं० रामप्रसाद जी वैद्यरत्न के साथ यहां पधार कर ग्राम नांगल-चौधरी में आयुर्वेदिक राजकीय-औषधालय का उद्घाटन किया। उद्घाटन-समारोह वैद्य-सभा, जिला महेन्द्रगढ़ के सभापति श्री० पं० मनोहरलाल जी वैद्यराज के सभापतित्व में हुआ जिसमें ग्राम-जनता ने बहुत भारी संख्या में आकर भाग लिया। स्थानीय वैद्य समुदाय, तहसील वैद्य-सभा, जिला वैद्य सभा और ग्राम-जनता की ओर से उक्त प्रधान-मन्त्री और राज्य वैद्य जी दोनों को मान-पत्र भेंट किये गए; जिनके उत्तर में श्री. प्रधान मन्त्री ने बताया—"पटियाला-राज्य-संघ में सम्वत् २००७ विक्रम में इसी प्रकार के चौबीस राजकीय-आयुर्वेदिक औषधालय और खुलेंगे। उत्तम कोटि के आयुर्वेद के पण्डित तैयार करने के लिए यूनियन की राजधानी पटियाला में बहुत बड़ा एक आयुर्वेदिक कालेज तथा उत्तम कोटि की ऐलोपैथी की शिक्षा प्राप्त करने के लिये बहुत बड़ा एक मैडीकल कालेज निकट भविष्य में ही खोले जाने की योजना आपने प्रकट की और घोषित किया कि इन दोनों प्रकार के कालेजों के लिए छब्बीस लाख रुपये की स्वीकृति पटियाला-राज्य संघ की सरकार ने दे दी है।"

आपके साथ बाहर से प्रेस प्रतिनिधि भी आए हुए थे। जनता उक्त-घोषणाओं से बहुत संतुष्ट हुई। जिला-महेन्द्रगढ़ में अनेक जगह उक्त दोनों महानुभावों को कई एक मान-पत्रों और विविध सत्कारों से सत्कृत किया गया। ग्राम नांगल चौधरी के राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय के उद्घाटन-समारोह में मान-पत्र के उत्तर में दिया गया भाषण और जिला वैद्य-सभा के सभापति श्री० पं० मनोहरलाल जी वैद्यराज के स्वागत में आयोजित किए गए एक बृहद्-भोज में दिया गया श्री. राजवैद्य जी का भाषण अत्यन्त विद्वत्ता-पूर्ण, सार-गर्भित, सुन्दर और आयुर्वेद सेवियों को विशुद्ध आयुर्वेदिकता की ओर प्रवृत्त करने वाला था।

—श्री. भवानीदत्त शर्मा वैद्यराज, मन्त्री
वैद्य-सभा, नारनौल।

झांसी आयुर्वेद यूनीवर्सिटी का—

प्रथम दीक्षान्त समारोह

ता० ३० मार्च १९५० को झाँसी आयुर्वेद यूनीवर्सिटी का प्रथम दीक्षान्त समारोह मनाया गया। उत्तर प्रदेश के शिक्षा मन्त्री श्री० सी० बी० गुप्ता ने दीक्षान्त भाषण दिया। उत्सव के अन्त में आपने कहा कि यू० पी० सरकार देशी चिकित्सा पद्धति की सभी संस्थाओं को हर समय सहयोग देने को प्रस्तुत है।

झांसी में सन् १६३४ में प्रारम्भ हुआ आयुर्वेद विद्यालय आज आयुर्वेद यूनीवर्सिटी बन गया तथा उसका यह प्रथम दीक्षान्त समारोह है।

श्री० सी० बी० गुप्ता ने इस संस्था के संस्थापक एवं सभापति श्री० आर० वी० धुलेकर M. L. A. की प्रशंसा करते हुए संस्था को ४० हजार रुपया ग्रांट देने की घोषणा की।

यूनीवर्सिटी के नव-निर्वाचित वाइस चांसलर श्री० पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल ने सरकार से यह निवेदन किया कि उसे आयुर्वेद को पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान के समकक्ष समझते हुए अधिक से अधिक सहायता देनी चाहिये।

श्री० पं० शुक्ला जी, पं० शिवशर्मा मल्लिक आयुर्वेदाचार्य कलकत्ता, आयुर्वेदाचार्य पं० घनानन्द पन्त पं० रामेश्वर मिश्र कानपुर आदि १२ आयुर्वेद विद्वानों को इस समारोह पर सम्मानार्थ "आयुर्वेद-विज्ञान के डाक्टर" की डिग्री प्रदान की गई। २४ उत्तीर्ण विद्यार्थियों को "मास्टर आफ आयुर्वेद साइन्स" की डिग्री दी गई।

अनुकरणीय दान-

श्री० नारायण प्रसाद जी अवस्थी ग्राम अधार बेमेतरा ने रायपुर में आयुर्वेद स्कूल खोलने के लिये २,१०,२०० रुपये की सम्पत्ति दान में दी है।

भारतीय विज्ञान की उन्नति के लिये तथा आयुर्वेद विज्ञान द्वारा जनता की सेवार्थ यह दान अनुकरणीय है। आयुर्वेद दान-वीरों के सहारे ही अब तक जीता रहा है तथा भविष्य में भी आशा है कि भारत की दान-प्रिय जनता आयुर्वेद के लिये उचित सहायता प्रदान करती रहेगी।

यू० पी० एसेम्बली में—

स्वास्थ्य मन्त्री का भाषण

उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य तथा रसद मंत्री श्री. चन्द्रभान ने विधान सभा में चिकित्सा-कार्यों के लिए १,६२,६८,१०० रुपये की मांग पेश करते हुए बताया कि सरकार इस संबंध में क्या नहीं कर सकी और इसके कारणों पर भी उन्होंने प्रकाश डाला।

स्वास्थ्य-मन्त्री ने जो वायदे किये वे अतिरंजित नहीं थे। बजट के वर्ष की योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने राज्य की तपैदिक-निरोध कार्रवाई, जहांगीराबाद मे तपैदिक के रोगियों के इलाज के लिए एक चिकित्सालय के निर्माण का निश्चय तथा कारखानों के मजदूरों के लिये स्वास्थ्य-बीमा योजना का उल्लेख किया।

सरकारी डाक्टर निजी तौर पर डाक्टरी का अपना पेशा न करें इस बात का उल्लेख करते हुए श्री. गुप्त जी ने कहा कि सरकार इस निर्णय पर पहुंची है कि देश मे और विशेष कर जिला सदर मुकामों के बाहर डाक्टरों की कमी होने से डाक्टरों को निजी तौर पर अपना डाक्टरी व्यवसाय करने से नहीं रोका जा सकता। लेकिन साथ ही सरकार ने सरकारी नौकरियों में सलग्न डाक्टरों को यह ध्यान मे रखने को कहा है कि उनसे यह आशा की जाती है कि वे अस्पताल के काम में अधिक योग देंगे और निजी तौर पर अपने व्यवसाय के लिए लालायित न रहेंगे।

अस्पतालों मे "सशुल्क चिकित्सालय" योजना का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इससे दो उद्देश्यों की पूर्ति होगी—एक तो सरकारी डाक्टर प्राइवेट मरीजों को देखने के लिए बहुत समय तक अस्पताल से बाहर न रहेंगे और साथ ही जो मरीज फीस दे सकते है वे डाक्टर से अस्पताल के काम के बाद, सहायता प्राप्त कर सकते हैं। सरकारी डाक्टरों की मरीज को देखने की फीस कम करदी गई है और वह नियत कर दी गई है।

स्वास्थ्य-मन्त्री ने बताया कि जिला-अस्पतालों के सलाहकार समितियों के निर्माण के संबंध में वायदा किया गया था और इनमें से अधिकांश समितियां

चन चुकी हैं। उन्होंने यह भी बताया कि एक रेडियम चिकित्सालय खोलने का वचन दिया गया था किन्तु खेद है कि मितव्ययता के कारण योजना स्थगित करनी पड़ी। आशा है कि स्थिति सुधरने पर सरकार इस योजना को हाथ में लेगी।

आयुर्वेदिक तथा यूनानी कालेज

श्री. गुप्त ने कहा कि आयुर्वेद तथा यूनानी कालेजों के सुधार के लिए एक समिति बनाई गई है और ज्योंही उसकी सिफारिशें सामने आएंगी, कदम उठाये जाएंगे। लखनऊ विश्वविद्यालय ने एक आयुर्वेदिक कालेज आरम्भ किया है और जल्दी ही उसके साथ एक यूनानी विभाग भी खोल दिया जायगा।

परिचारिकाओं (नर्सों) का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि गत वर्ष कमला नेहरू अस्पताल, इलाहाबाद में एक परिचारिका केन्द्र खोलने का सुझाव रखा गया था। मुझे इसके खोले जाने में अथवा यदि अस्पताल के अधिकारी खोलें तो उसे आर्थिक सहायता देने में कोई आपत्ति नहीं। किन्तु कठिनाई यह है कि अभी हमें अपने केन्द्रों के लिए भी पर्याप्त संख्या में उम्मीदवार नहीं मिल रहे हैं और मुझे इसमें शंका है कि इस केन्द्र के लिए पर्याप्त उम्मीदवार मिल सकेंगे। इलाहबाद में मोतीलाल नेहरू अस्पताल में ही इस समय एक परिचारिका—केन्द्र है।"

स्वास्थ्य-मंत्री ने यह कहा कि जच्चा केन्द्रों की भी एक समस्या है। सरकार ६ स्थानों में, शफाखानों में जहां कि स्थान उपलब्ध है, मातृत्व-केन्द्र खोलने की आज्ञा जारी कर रही है। अन्य स्थानों में भी ऐसे केन्द्र खोलने की आवश्यकता है किन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण वे अभी नहीं खोले जा सकते। दाइयों को मातृत्व सबंधी आवश्यक औषधियां दी गई हैं ताकि वे देहाती क्षेत्रों में जच्चाओं की सहायता कर सकें।

रुपये की कमी से देहाती शफाखानों के लिए भवन-निर्माण का कार्य भी रुका है फिर भी सरकार ने ५० एलोपेथिक और ७० आयुर्वेदिक तथा यूनानी शफाखाने और खोले हैं। ५०० एलोपेथिक और ३७२ आयुर्वेदिक तथा यूनानी चिकित्सालय तो पहिले से थे ही। यद्यपि रुपये की कमी के कारण सरकार और चिकित्सालय खोलने में असमर्थ है फिर भी वह २० नये एलोपेथिक तथा १६ नये आयुर्वेदिक शफाखाने खोलने की व्यवस्था कर रही है।

डाक्टर देहातों को देखें

इस प्रसंग में स्वास्थ्य-मंत्री ने डक्टरों से देहातों की देखभाल करने को कहा। उन्होंने कहा कि डाक्टरों को चाहिये कि वे देहाती इलाकों में बस कर वहां के लोगों की सेवा करें। इस प्रकार के डाक्टरों को आर्थिक सहायता देने विषयक योजना का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि मैं यह अनुभव करता हूं कि डाक्टरों में सार्वजनिक सेवा की राष्ट्रीय-भावना का अभी विकास नहीं हुआ है। ग्रामीणों तक पहुंचने और उनकी सेवा करने के लिए उनमें आत्म त्याग की भावना होनी चाहिये।"

लड़कियों को छात्र-वृत्तियां

लड़कियों को डाक्टरी के लिए उत्साहित करने के लिए सरकार उत्तरप्रदेश की २० लड़कियों को आगरा लखनऊ तथा दिल्ली के हार्डिंग मेडिकल कालेज में शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्तियां दे रही है यदि छात्रवृत्ति के लिए और मांग हो तो उस पर विचार किया जायगा। नर्सिंग की शिक्षा प्राप्त करने के लिए और स्त्रियां आगे क्यों नहीं आ रही हैं इस पर प्रकाश डालते हुए स्वास्थ्य-मंत्री ने कहा कि इसका कारण स्थान की कमी बताया जाता किन्तु नैनीताल रामपुर तथा रामनगर जैसे स्थानों में जहां कि स्थान का अभाव नहीं, ऐसे केन्द्र खोले जा सकते हैं। स्त्रियों के गैरसरकारी अस्पतालों को उदारतापूर्वक सहायता दी जा रही है।

स्वास्थ्य-मंत्री ने राज्य के रामकृष्ण मिशन अस्पतालों तथा इलाहाबाद के कमला नेहरू अस्पताल के कार्यों की प्रशंसा की।

तपेदिक की समस्या

श्री. गुप्त ने कहा कि सरकार को खेद है कि तपेदिक के लिये वैसी सुविधाए नहीं हैं जैसी कि होनी चाहिये। इस राज्य मे केवल एक अच्छा सैनेटोरियम भुवाली में है। गैरसरकारी संस्थाएं तथा उत्तर-प्रदेशीय तपेदिक निवारण संस्था भी कुछ चिकित्सालय चला रही हैं। सरकार आगामी वर्ष जहांगीराबाद में तपेदिक का एक सैनेटोरियम खोलना चाहती है जिसमें कि कम से कम १०० रोगियों का इलाज हो सकेगा। मूल योजना ५०० रोगियों के लिए थी। आशा है कि आर्थिक स्थिति सुधरने पर मूल योजना कार्यान्वित हो सकेगी। उन्होंने यह भी कहा कि कानपुर के टी. बी. एसोसिएशन को सहायता दी जायगी।

—हिन्दुस्तान।

खाद्य पदार्थों में मिलावट —

जनता का स्वास्थ्य खतरे में—

सार्वजनिक स्वास्थ्य के विशेषज्ञों और सरकार के खाद्य मंत्रालय के अधिकारियों को जो एक समस्या बहुत परेशान कर रही है, वह है खाद्य पदार्थों में विषैली चीजों की मिलावट के घातक दुष्परिणाम। विश्वास किया जाता है कि प्रथम तो मिलावट को रोकने और बाद में मिलावट वाले खाद्य पदार्थों को शुद्ध करने के उपायों के विषय में विशेष स्तर पर विचार किया जा रहा है।

विशेषज्ञों का ध्यान सबसे पहले सरसों के तेल की मिलावट पर गया है, जिससे बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश और पंजाब मे व्यापक रूप से 'शोथ' रोग फैल रहा है। डाक्टरी परीक्षणों से ज्ञात हुआ कि तेल में शोथ पैदा करने का यह असर आर्गेमोन के तेल के मिलाये जाने के कारण है। अधिकारियों ने कुछ स्थानों पर इस मिले-जुले तेल की बिक्री पर पाबन्दी लगा दी है।

एक दूसरे प्रकार की मिलावट खाद्य-पदार्थों में रङ्ग की है। इस पर भी विशेषज्ञों की आगामी बैठक विचार करेगी। खाद्यपदार्थों के या तो घटियापन को छिपाने के लिये या उनकी क्षति को ढकने के लिये अथवा ग्राहक को एक चीज के बदले दूसरी चीज देने के लिए रंग मिलाये जाते हैं।

इस प्रकार रंग मिलाकर सस्ते निशास्ते से हल्दी बनाई जाती है। घटिया किस्म की खेसरी दाल को अरहर की दाल या काबुली चनों के रूप में बेच दिया जाता है।

खाद्यपदार्थों में रंगों की मिलावट से धोखे के अलावा लोगों के स्वास्थ्य के लिए भयङ्कर खतरा पैदा हो गया है। खाद्य पदार्थों मे डाले जाने वाले कुछ रंगों से नासूर भी हो सकता है। इस लिए ऐसे रंगों की सूची प्रकाशित करना आवश्यक है, जो मानव-शरीर के लिए हानिप्रद नहीं।

ग्राम सेवक चिकित्सकों को अधिक सुविधायें देने की मांग

भारत के एक प्रमुख शल्य-चिकित्सक डा० आर० एन० कूपर ने नागपुर मे कहा है कि यदि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में सु-आयोजित स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की स्थापना करना चाहती है तो उसे चाहिये कि वह डाक्टरों को निश्चित प्रमाण में आराम के साधन और सुविधायें प्रदान करे।

डा० कूपर मध्यप्रदेशीय मेडिकल असोसिएशन और भारतीय मेडिकल असोसिएशन की नागपुर शाखा के १४ वें वार्षिक भोज मे प्रमुख अतिथि थे। भोज में भारी संख्या में डाक्टर उपस्थित थे।

ग्रामीण सेवा के लिए शिक्षित डाक्टर केवल साधारण रोगों की चिकित्सा कर सकते हैं, परन्तु यदि

उन्हें यातायात की तथा अन्य सुविधायें प्रदान की जायें तो वे निकट के नगरों में रहने वाले अधिक योग्य व्यक्तियों के साथ मिलकर अधिक अच्छी सेवा कर सकेंगे।

डा० कूपर ने डाक्टरों का पुरस्कार बढ़ाकर अच्छे से अच्छे व्यक्तियों को इस पेशे में आकर्षित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

कर्नल अमीरचन्द ने चिकित्सकों को अपने पेशे से "राजनीति" को निकाल देने की सलाह दी।

भारत में पेनिसिलिन का कारखाना—

ज्ञात हुआ है कि भारत में पेनिसिलिन तथा अन्य रूक्षा औषधियों के निर्माण में टैक्निकल सहायता के लिये भारत सरकार और स्वीडन की एक कम्पनी में हाल ही में एक समझौता हुआ है, इसके लिये बम्बई में एक कारखाना खोला जायगा और अनुमानत इस पर ३ करोड़ ५० लाख रुपया खर्च होगा, संभवतः यह कारखाना १९५१-५२ में बनकर तैयार हो जायगा।

आगरे में चिकित्सा की नई योजना—

सरकार ने आगरा की जनता के रोग निवारणार्थ एक नवीन योजना जारी की है जिसके अनुसार सरोजनी नायडू अस्पताल में छुट्टी के दिन को छोड कर रोज दिन के २ बजे से ४ बजे तक हर प्रकार के रोगों के विशेषज्ञ बैठेंगे और रोगियों का निरीक्षण करेंगे। मल-मूत्र, खून आदि की जाच आवश्यक समझी जायगी तो वहीं पर की जायगी और इस सब की फीस प्रथम बार २०), दूसरी बार केवल ५) ली जायगी। इस फीस में से २० प्रतिशत रुपया सरकार लेगी, शेष डाक्टर लेंगे।

उत्तर प्रदेश में कोढ़-निवारण के लिए—

सरकारी योजना

कोढ़ के निवारण के लिए उत्तर प्रदेश की सरकार कोई बड़ा कदम उठाना चाहती है। इस सम्बन्ध में पर्यवेक्षण किया जायगा। जो कोढ़ से पीड़ित हैं उन्हें अलग रखने, बीमारी से बचने के लिए उचित उपायों का जनता में प्रचार तथा लखनऊ के मेडिकल कालेज में कोढ़ रोग के विशेष अध्ययन के लिए व्यवस्था आदि योजनाएं सरकार के विचाराधीन हैं।

कोढ़-विरोधी सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का एक दल बनाने का भी आयोजन किया जा रहा है और परीक्षण के रूप में अभी दो कोढ़-विरोधी दल तैयार किये जायेंगे। इनमें से एक देवरिया तथा दूसरा अल्मोड़ा में कार्य करेगा। देवरिया में कार्य करने वाला दल गोरखपुर, देवरिया, गोंडा, बहराइच जिलों में काम करेगा और अल्मोड़ा में कार्य करने वाला अलमोड़ा, नैनीताल तथा मुरादाबाद की देख-भाल करेगा। जहां कि राज्य के अन्य इलाकों की अपेक्षा कोढ़ का अधिक प्रकोप है। यदि यह परीक्षण सफल हो गया तो ऐसे अधिक केन्द्र खोले जा सकते हैं और अन्त में कोढ़ निवारण की योजना स्थायी रूप ग्रहण कर सकती है।

ऋषिकेश में कोढ़ियों के लिए एक बस्ती स्थापित करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया है और आगामी आर्थिक वर्ष में यह योजना कार्यान्वित हो सकती है। देवरिया तथा गोंडा में भी कोढ़ियों के लिए बस्ती बनाने का प्रस्ताव विचाराधीन है।

अभी राज्य में कोढ़ियों का इलाज करने वाली १५ संस्थाएं हैं और उनका सञ्चालन विदेशी मिशनरियों द्वारा या व्यक्तिगत तौर पर होता है। इस कार्य के लिए सरकार से कुल १,७१,००० रुपयों की वार्षिक सहायता मिलती है। इन संस्थाओं को और अधिक सहायता देने के लिये सरकार कदम उठा सकती है।

—हिन्दुस्तान।

उत्तर प्रदेश में तपैदिक के विरुद्ध युद्ध

उत्तर प्रदेश की सरकार राज्य की जनता के स्वास्थ्य सुधार की ओर प्रयत्नशील है। प्लेग, चेचक, हैजा आदि बीमारियों के टीके अभी तक साधारणतः

लगाये जाते थे। परन्तु अब तपैदिक जैसे भयंकर रोग के विरुद्ध भी राज्य की सरकार ने युद्ध करने की घोषणा कर दी है। इस बीमारी के विरुद्ध सरकार ने दो मोर्चे खोलने का निश्चय किया है। एक ओर बी० सी० जी० के टीके जन साधारण के लगवाकर तपैदिक के उत्तरोत्तर बढ़ते हुए प्रकोप को रोकने का प्रयत्न किया जारहा है। इन टीकों के लगाने का प्रबन्ध सबसे पहले आगरा में ही किया गया है। अब तक लगभग पचास हजार से अधिक बालक, स्त्री, पुरुषों के बी० सी० जी० के टीके लगाये जा चुके हैं। दूसरी ओर जन साधारण को स्वास्थ्य के दैनिक नियमों की जानकारी कराकर रोग के कारणों को ही समूल नष्ट करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

इस योजना के अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में आयुर्वेद इन्सपेक्टर की नियुक्ति की जायगी। ये इन्सपेक्टर लोग जिला सूचना अधिकारियों के साथ सहयोग करके दैनिक स्वास्थ्य नियमों की जानकारी जन-साधारण को करायेंगे। स्वास्थ्य के नियमों व रोगों से बचने की शिक्षा व्याख्यानों, चल-चित्र प्रदर्शनों, स्वास्थ्य सम्बन्धी अमूल्य साहित्य वितरण आदि सुबोध साधनों द्वारा देने की व्यवस्था की जायगी। स्वास्थ्य-विशेषज्ञों का अनुमान है कि सरकार के रोग-निरोधक इस सक्रिय कदम से आगामी पांच-छः वर्षों में कम से कम पचास प्रतिशत मृत्यु संख्या कम हो जायगी। —हिन्दुस्तान।

आयुर्वेदिक प्रयोगशाला का उद्घाटन—

उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य व खाद्य मन्त्री श्री० चन्द्रभान गुप्ता ने ६ मार्च को गुरुकुल कांगड़ी की आयुर्वेदिक प्रयोगशाला का उद्घाटन करते हुए बताया कि उत्तर प्रदेश की सरकार पवित्र भागीरथी के तट पर एक विशाल आयुर्वेदिक कालेज की स्थापना करना चाहती है, जिसमें कम से कम ५०० विद्यार्थी पढ़ते हों। सरकार उसके लिये सब सामान मुहैय्या करेगी और प्रतिवर्ष ७ लाख रुपये की आर्थिक सहायता भी देगी।

आयुर्वेदिक प्रयोगशाला का उद्घाटन करते हुए उन्होंने यह भी बताया कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने इस प्रयोगशाला के लिए ३७०००) प्रदान किये हैं।

मानव जाति के स्वास्थ्य में आयुर्वेद का क्या स्थान है यह बताते हुए उन्होंने कहा कि आजकल जितनी भी चिकित्सा पद्धतिया प्रचलित हैं, हम उन सभी से लाभ उठा सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम प्रत्येक चिकित्सा-प्रणाली के वैज्ञानिक आधार की अधिक से अधिक उन्नति करें।

श्री. चन्द्रभान गुप्ता ने गुरुकुल आयुर्वेदिक कालेज के विषय में अधिकारियों से कहा कि इसको उत्तर-प्रदेश की सरकारों के स्वप्नों का सा आयुर्वेद महाविद्यालय बनायें। सरकार गुरुकुल के प्रबन्ध, व्यवस्था और आदर्शों में कोई दखल नहीं देगी।

—हिन्दुस्तान।

तैल को शुद्ध घी का रूप देना जनता को धोका देना है।

संसद में पं० ठाकुरदास भार्गव ने वनस्पति घी का उत्पादन रोकने सम्बन्धी एक विधेयक प्रस्तुत किया।

प० भार्गव ने आरम्भ में ही यह स्पष्ट कर दिया कि मेरा मतलब यह नहीं है कि यह विधेयक 'वनस्पति घी उद्योग' को कुछ हानि पहुँचाने के लिये तैयार किया गया है। मेरा विरोध तो केवल ऐसे वनस्पति घी के उत्पादन से है जो बिल्कुल शुद्ध घी से मिलता जुलता है, लेकिन न तो वह घी ही होता है और न तेल ही। घी को ऐसा रूप देना जनता को धोखा देना है।

उन्होंने कहा कि वनस्पति घी स्वास्थ्य के लिए उचित नहीं है, जिस घी को हम वनस्पति घी कहते हैं वह वास्तव में घी है ही नहीं, यह घी निम्न कोटि का है और पौष्टिक गुण इससे होते ही नहीं।

सरकारी वैज्ञानिकों की रिपोर्ट में भी यह कहा गया है कि यह घी स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

प० भार्गव ने आगे कहा कि वनस्पति घी के उत्पादन पर रोक लगाने की बात केवल स्वास्थ्य को हानि पहुँचने पर ही निर्भर नहीं बल्कि अन्य बातों पर भी निर्भर है। भारत एक कृषि प्रधान देश है, वनस्पति घी 'उद्योग' से इसके ग्रामीण स्वरूप के बिल्कुल बदल जाने का भय है। भारत के ७५ प्रतिशत लोग गांवों में रहते हैं और उनका धन मवेशी है मवेशियों से ही वे खेतों में हल चलाते हैं, मवेशी ही उन्हें स्वास्थ्य-प्रदान करने वाला दूध देते हैं। इस विधेयक का उद्देश्य ग्रामों की आर्थिक व्यवस्था को बनाये रखने का ही है, जो कि इस समय खतरे में है।

इसके पश्चात् प० भार्गव ने देश के बड़े-बड़े नेताओं को घी-सम्बन्धी टिप्पणियां पढ़कर सुनाई। उन्होंने गांधीजी के लेखों का भी जिसमें महात्मा जी ने वनस्पति घी की बुराइयों का उल्लेख किया है जिक्र किया उन्होंने कहा कि देश के ६५ प्रतिशत लोग इस घी के उत्पादन पर रोक लगाने के समर्थन में हैं जिस प्रकार जाली सिक्के बनाने पर लोगों को कड़ी सजा दी जाती है, उसी प्रकार लोगों को चार सौ बीसी घी बनाने पर कड़ी सजा दी जानी चाहिये। संसद ने पहले ही चोर बाजारी को रोकने के लिये मृत्यु दंड देने सम्बन्धी विधेयक पर विचार कर लिया है, तो इस वनस्पति घी के उत्पादन को जिसमें आरम्भ से अन्त तक धोखा ही है, रोकने के लिये क्या सजा दी जाये।

प० भार्गव ने आगे कहा कि राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने भी इस बनावटी घी की बुराइयां ही बुराइयां बताई है, इससे देश की आर्थिक अवस्था को धक्का पहुँचने का भय है। राजेन्द्र बाबू ने कहा है कि वनस्पति घी को रङ्ग दिया जाना चाहिये ताकि शुद्ध घी की पहचान की जा सके। सन् १६४१ में भी स्वास्थ्य मन्त्राणी राजकुमारी अमृतकौर ने भी कहा था कि सरकार को इस घी के उत्पादन पर रोक लगानी चाहिये।

उन्होंने आगे कहा कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि वनस्पति घी के उत्पादन पर रोक लगाने से मध्यमवर्ग के लोगों को काफी हानि पहुँचेगी क्योंकि वे लोग इसे ही प्रयुक्त करते हैं। इसके लिए वे बाध्य हैं क्योंकि उन्हे शुद्ध देसी घी मिलता नहीं।

उन्होंने कहा कि ऐसे देश में, जहां कि लोग शाकाहारी हैं, दूध व घी ही भोजन की महत्वपूर्ण सामग्रियां हैं। दूध ही पौष्टिक द्रव है। मैं पञ्जाब का रहने वाला हूं, वहां के लोगों को भी शुद्ध घी नहीं मिल रहा है। हिसार के मवेशी धन ने ही लोगों को दुर्भिक्ष के समय बचाया है और यही कारण है कि वहां के लोग दुर्भिक्ष का सामना कर लेते हैं।

प० भार्गव ने कहा कि अंग्रेजों की लापरवाही व असावधानी से ही भारत के घरेलू धंधे 'घी' को हानि पहुची है। शुद्ध घी का उत्पादन ५० प्रतिशत तक कम हो चुका है। मवेशियों की नस्ल को पुष्ट करने के लिये कुछ नहीं किया जा रहा है। इसी कारण से अब गाय दोनों समय लगभग ८ सेर ही दूध देती है।

वनस्पति उद्योग का विकास

वनस्पति उद्योग के सम्बन्ध में बोलते हुये प० भार्गव ने कहा कि पहला कारखाना सन् १६२४-२५ में खड़ा किया गया था। आज इनकी कुल संख्या ४० है सन् १६२७-२८ में भारत ने २२,००० टन बनस्पति घी का आयात किया था, जब कि सन् १६४० में कुल २६ टन घी का आयात किया था इसका कारण यह है कि देश में इस घी का उत्पादन बढ़ा है।

प० भार्गव ने 'वनस्पति घी उद्योग' में निहित स्वार्थ का उल्लेख किया और कहा कि वे बहुत मजबूत हैं और उनकी इच्छा पर ही रहता है कि प्रस्तावित कदम को कार्य-रूप दिया जा सके। इन्हीं स्वार्थी

लोगों ने वनस्पति घी को नहीं दिया हालांकि सन् १६२७ मे इनकी सिफारिश की गई थी। हाल में ही नये कारखाने खोले गये हैं।

—हिन्दुस्तान।

गांवों में काम करो,

चिकित्सकों को परामर्श।

कलकत्ता मेडिकल कालेज के ११५ वें स्थापना दिवस के अवसर पर भाषण करते हुये पश्चिमी बङ्गाल के राज्यपाल डा० के. एन. काटजू ने चिकित्सकों को परामर्श दिया कि वे ग्रामों में जायें, उन्होंने कहा कि बहुत अधिक चिकित्सकों का नगरों में एकत्रित हो जाना उनके पेशे की दृष्टि से उचित नहीं है। यदि वह ग्रामों में फैल जांये तो वह अपने देश और जाति की भरसक सेवा कर सकते हैं।

उन्होंने चिकित्सा-शास्त्र के छात्रों से कहा कि वह राजनीति के पचड़े में न पड़ें और जो नवयुवक इस पेशे में आएँ वह सेवा भावना से ओतप्रोत हों। उन्होंने इस बात पर भी खेद प्रकट किया कि भारतीय नारियां परिचारिका के पेश को अपनाने के लिये आगे नहीं बढ़ रहीं और आशा प्रकट की कि नव-समाज में वह इधर ध्यान देंगी।

आयुर्वेद औषधालय की मांग—

बरेली ३ अप्रैल। यू० पी० जिला बोर्ड सभापति कान्फ्रेंस की बैठक में एक प्रस्ताव द्वारा ग्रामों मे औषधियों की कमी के विषय में खेद प्रकट करते हुए सरकार से अनुरोध किया गया कि वह ग्रामीण क्षेत्र में आयुर्वेद के औषधालय एवं अस्पताल खोले।

पेप्सू बजट और आयुर्वेद—

पेप्सू के मुख्य मंत्री श्री. ग्यानसिंह रारेवाला ने ३ अप्रैल को अपने वक्तव्य में स्पष्ट किया है कि राज्य में भारतीय प्राचीन चिकित्सा विज्ञान—आयुर्वेद के उत्थान के लिये विशेष ध्यान दिया जारहा है। पांच वर्ष में १२५ आयुर्वेदिक डिस्पेसरी और खोली जायगी तथा डेवलपमेंट फंड से २॥ लाख रुपये की व्यवस्था आयुर्वेद एवं यूनानी कालेज के चालू करने के लिये की गई है।

बम्बई सरकार की सहायता—

सन् १६४६–५० मे बम्बई सरकार ने निम्न ५ आयुर्वेद महाविद्यालयों को २ लाख ७५ हजार रुपया उनकी इमारत बनाने के लिये प्रदान किये हैं।

१—आयुर्वेद महाविद्यालय पूना—

निवास-स्थान, रुग्णालय के लिये उपकरणादि तथा स्वस्थवृत्त-साधन सामिग्री जुटाने के लिये ८१,१६०)

२—ओ० नाभर आयुर्वेद विद्यालय, सूरत—

आयुर्वेदीय रुग्णालय व महाविद्यालय के भवन बनाने के लिये ८१,०००)

३—आर्यांग्ल वैद्य महाविद्यालय सतारा—

डा० आगासे रुग्णालय व सूतिकागृह भवन के लिये ५१०००)

४—महागुजरात आयुर्वेद विद्यालय, नडियाद—

विद्यालय एवं रुग्णालय के भवन को ३४०००)

५—आयुर्वेद महाविद्यालय, अहमदनगर—

सूतिकागृह व रुग्णालय भवन को २७८४७)

'धन्वन्तरि' का आगामी विशाल विशेषांक
सिद्ध-चिकित्सांक
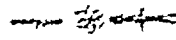
पाठकों को प्रारम्भ में प्रकाशित मेरे निवेदन से ज्ञात हो गया होगा कि धन्वन्तरि के २५ वें वर्ष का प्रथम एवं द्वितीय (अगस्त-सितम्बर १९५० का सम्मिलित) अंक 'सिद्ध-चिकित्सांक' नामक विशेषांक प्रकाशित होगा। सुप्रसिद्ध प्रयोगांक का प्रथम भाग चिकित्सकों के लिये एक उपयोगी संग्रह ग्रन्थ प्रमाणित हुआ है उससे कहीं अधिक उपयोगी एवं अधिक सुन्दर यह विशेषांक प्रकाशित किया जायगा।

लगभग १५ वर्ष पूर्व धन्वन्तरि ने चिकित्सा विषयक दो विशेषांक (१-अनुभूत चिकित्सांक २ चिकित्सानुभवांक) प्रकाशित किये थे। इन विशेषांकों में अनुभवी चिकित्सकों के विविध-रोगों पर सफल चिकित्सानुभवों का अभूतपूर्व संग्रह हुआ था। तथा उस समय के ग्राहकों ने इनको केवल पसन्द ही नहीं किया प्रत्युत उन्होंने अपने प्रति दिन के चिकित्सा-व्यवसाय में हस्तपुस्तिका के रूप में उनको देखा-पढ़ा और पर्याप्त लाभ उठाया। जिनके पास ये विशेषांक हैं वे ही इनकी उपयोगिता जानते हैं और जान सकते हैं। जिस समय उक्त दोनों विशेषांक प्रकाशित किये गये थे उस समय धन्वन्तरि के केवल १००० ग्राहक थे। इस समय के धन्वन्तरि के ८००० ग्राहकों में सम्भवतः वे पहिले ग्राहक बहुत कम होंगे, अतएव आगामी "सिद्ध चिकित्सांक" आप सभी के लिए एक नया एव अति उपयोगी साहित्य प्रमाणित होगा ऐसी हमारी मान्यता है।

धन्वन्तरि अपने पाठकों को सदैव वह साहित्य भेंट करने का प्रयत्न करता आया है जो उनके दैनिक व्यवहार, उनके चिकित्सा-कार्य में सहायक हो। वे इससे आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को अधिकाधिक समझें, जनता को आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति से उचित लाभ पहुंचाते हुए उसका प्रचार कर सकें और स्वयं अपनी उन्नति कर सकें। इसके सभी विशेषांकों के विषय इसी धारणा के आधार पर निश्चय किये जाते हैं तथा आगामी—

सिद्ध चिकित्सांक

भी इसी धारणा का परिणाम है। हमको आशा है कि हमारे सभी लेखक एवं अनुभवी सज्जन अपने अपने अनुभव लिख भेजकर इस विशेषांक को सफल बनाने में पूरा-पूरा सहयोग देंगे।

पहिले प्रकाशित विशेषांकों की सूचना की भांति कोई विषय-सूची इस सूचना के साथ प्रेषित नहीं कर रहे हैं। क्योंकि इस विशेषांक का विषय बहुत विस्तृत है। अनुभवी सज्जन किसी भी रोग, आकस्मिक चोट, लना, पानी में डूबना, विष-भक्षण या सर्प आदि विषैले जन्तुओं से काटना, आदि विषयों में कोई भी चुन कर अपनी अनुभवपूर्ण विस्तृत चिकित्सा विधि लिख कर भेज सकते हैं। जिस रोग के विषय में लिखें उसके लक्षण, उपद्रव एवं अन्य आवश्यक विषय को लिखते हुए अवस्था भेद की

चिकित्सा विधि विस्तार से लिखने की कृपा करें जिससे धन्वन्तरि के पाठक विशेषांक को पढ़कर उस रोग के रोगी की चिकित्सा सफलता पूर्वक कर सकें। चिकित्सा लिखते समय शास्त्रीय प्रयोगों का ग्रन्थ प्रमाण देना ही पर्याप्त होगा। यदि उनमें स्वानुभव के आधार पर कोई फेर-फार किया हो या स्वानुभव से कल्पित प्रयोग व्यवहार किया हो तो उसका विवरण लिख दीजिये। अनुपान, सेवन विधि, पथ्यापथ्य सभी समझा कर लिखना चाहिये जिससे पाठकों को सभी समझ में आजाये।

चित्र

अपने लेख से सम्बन्धित यदि आप चित्र तैयार कर सकें अथवा किसी से तैयार करा सकें तो हम उसका उचित व्यय दे देंगे और स्वयं ब्लोक तैयार कराकर प्रकाशित कर देंगे।

"अनुभव"

के आधार पर संसार के महान कार्य सम्पन्न होते हैं। भीमकाय इंजन, रेडियो, टेलीफोन, नये-नये आश्चर्य-प्रद आविष्कार सभी के पीछे एक विस्तृत क्रम-बद्ध 'अनुभव' की ही कहानी आपको मिलेगी। चिकित्सा विषय में तो 'अनुभवी' अपढ़ भी मान-सम्मान पाता है तथा अनुभव-हीन विद्वान भी अपनी दुकान पर बैठा मक्खी मारता है, यह सर्व विदित है। अतः

ग्राहकों

से विशेष रूप से निवेदन है कि वयोवृद्ध अनुभवी चिकित्सक अपने अनुभव अवश्य लिखकर भेजें। अनुभव प्रकट करने से आयुर्वेद समाज का लाभ होगा तथा उनके अनुभव से हजारों-लाखों आर्त व्यक्तियों के दुःख दूर हो सकेंगे।

समय अधिक नहीं

है अतएव मान्य लेखकों से सादर आग्रह पूर्ण निवेदन है कि वे इसी सूचना रूप में मुझे स्वयं अपनी सेवा में उपस्थित समझें और अविलम्ब अपना सहयोग-पूर्ण हाथ आगे बढ़ावें।

— वैद्य देवीशरण गर्ग
सम्पादक।

डाक्टर जी ने अपनी सारी आयु के अनुभव का निचोड़ इस पुस्तक में दे दिया है। हमारा तो यह दावा है कि जो साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार देखेगा इसे अवश्य अपने पास सदा के लिये रखने का प्रयत्न करेगा। डाक्टर जी ने ऐलोपैथिक (डाक्टरी) सिद्धान्तानुसार शरीर के भिन्न २ अंगो का वर्णन तथा उनका कार्य, शरीर की सूक्ष्म रचना तथा भिन्न २ तन्तुओं का वर्णन, दन्तोद्गम, टीका लगवाना, बच्चो के विषय में कुछ जानने योग्य बातें, रक्त सञ्चार, नाड़ी परीक्षा रक्तभार, लसीका वाहिनियां, प्रणाली विहीन ग्रंथियां, हमारा भोजन, खाद्य पदार्थों का रासायनिक संगठन भोजन बनाने के सबध मे कुछ जानने योग्य बातें, भिन्न २ प्रकार के खाद्य पदार्थ, भोजन से रक्त की उत्पत्ति, भोजन किस स्थान पर कितनी देर रहता है, पाखाना, मूत्र परीक्षा, मूत्र के स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक अवयव, भिन्न २ आयु में मूत्र का परिणाम, विटेमिन्स, भिन्न २ खाद्य पदार्थ और उनकी विटेमिन्स, खाद्य तालिका, पाण्डु रोग और दौर्बल्य, कब्ज, मधुमेह, अनिद्रा, अजीर्ण, ज्वर, गठिया, सूजाक, नाडी दौर्बल्य, मोटापा, क्षयरोग, गर्भावस्था, वायु, टाइफाइड, रोगियो के लिये भिन्न २ प्रकार के आहार, मक्खी, मच्छर, खटमल आदि का वर्णन, सक्रामक रोग और उनसे बचने के उपाय, औषधियो को शरीर मे प्रवेश करने के भिन्न २ मार्ग, व्यवस्था पत्रलेखन, औषधालय के संबंध में कुछ आवश्यक बातें, इन्जेक्शन्स (सूची भेद चिकित्सा इसमें प्राय सभी प्रकार के इन्जेक्शन्स का वर्णन है, किन २ बीमारियो में और कौन २ से) वेक्सीन थैरेपी, सीरम चिकित्सा, मुख्य २ रोग और उनके पूर्ण अनुभूत नुस्खे, अन्य उपयोगी नुस्खे इन्हेलेशन्स स्प्रे, लिंक्टस, लिनिमेन्ट्स लोशन्स, मिक्चर्स, आइन्टमेन्टस्, पिग्मेन्ट्, पल्प पाऊडर्स, रोग और उनमें प्रयोग किये जाने वाले इन्जेक्शन्स और पेटन्ट औषधियां, कुछ पेटन्ट औषधियों का वर्णन, नवीन औषधियां जैसे पैनीसिलीन, सल्फोनेमाइड, आदि उनके गुण दोष, प्रयोग, उपचार, औषधियां हिन्दी अंग्रेजी नाम आदि अनेको विषय इस पुस्तक में हैं। वर्णन कर दिये है।

गंगयति निदान

मूल लेखक पजाब निवासी जैन यति गङ्गाराम। हिन्दी अनुवादकर्त्ता आयुर्वेदाचार्य श्री नरेन्द्रनाथजी शास्त्री। पक्की कपडे की जिल्द मूल्य ६) रु०।

पजाब के गावो में प्राय वैद्य लोग इसी पुस्तक के आधार से रोगो का निदान करते हैं। भाषा इतनी सरल है कि सर्वसाधारण भी बडी आसानी से समझ सकता है। इसमें रोग जानने के उपाय, लक्षण, पूर्वरूप, उपशम, सम्प्राप्ति के लक्षण, भेद, स्वरूप, मिथ्याहार-विहार के लक्षण, ज्वर के पूर्वरूप, वात, पित्त, कफ, वातपित्त, वातकफ, पित्तकफ, सन्निपात आदि लक्षण ५२ प्रकार के सन्निपात का सविस्तर वर्णन है। विषमज्वर की सप्राप्ति, लक्षण, भेद, साध्यासाध्य, अर्थात् हर प्रकार के ज्वर का सविस्तर वर्णन है। स्थान स्थान पर पाश्चात्य मतानुसार भी वर्णन किया गया है। सग्रहणी रोग, अर्श (बवासीर) अजीर्णरोग, क्रिमिरोग, पाण्डुरोग, रक्तपित्तरोग। राज-यक्ष्मा, कासरोग, श्वासरोग, स्वरभेद, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृष्णारोग, मूर्छारोग, मदात्ययरोग, दाहरोग, उन्माद-रोग, भूतोन्माद, अपस्माररोग, वातरोग, शूलरोग, उदावर्तरोग, गुल्मरोग, हृद्रोग, मूत्राघात, अश्मरीरोग, प्रमेहरोग, मेदोरोग, उदररोग, शोथरोग, वृद्धिरोग, अर्बुदरोग, श्लीपदरोग, विद्रधिरोग, व्रणशोथरोग, शारीरव्रणरोग, सद्योव्रण-रोग, नाडीव्रणरोग, भगन्दररोग, उपदंश, शूकरोग, कुष्ठरोग, अम्लपित्तरोग, विसर्परोग, विस्फोट, मसूरिकारोग, मन्थर (टायफायड) ज्वर, स्नायुकारोग, क्षुद्ररोग, प्लेग, चिप (चडा) रोग, कुनखरोग, मुखरोग, ओष्ठरोग, दन्त-रोग, जिव्हारोग, तालुरोग, कठरोग, सर्वसररोग, कर्णरोग, नासारोग, नेत्ररोग शिररोग, शीर्षक्लाशोथरोग, मस्तिष्क-रोग, वादगठियारोग, हस्तमैथुनरोग, प्रदररोग, योनिव्यापदरोग, वाधकरोग, हिस्टीरिया, गर्भरोग, योनिसवरण, गर्भिणी परिचर्या, प्रसूतरोग, स्तनरोग, दुग्धरोग, बालरोग, विषरोग, जगमविषरोग, नाडीविज्ञान, मूत्र विज्ञान, शारीरिक विज्ञान, वरनरोग, उरोग्रह, पार्श्वशूलरोग आदि प्राचीन काल तथा आजकल में होने वाले हर एक प्रकार के रोगो के पूर्वरूप, भेद, सप्राप्ति, लक्षण, सामान्यनिदान विशेष लक्षण, वातज, पित्तज, कफज तथा साध्यासाध्य तथा पाश्चात्य-मतानुसार सविस्तर वर्णन दिया गया है हिन्दी भाषा में इस प्रकार की कोई पुस्तक आज तक नही छपी। इस एक ही पुस्तक से सर्वसाधारण मनुष्य हर प्रकार के रोगो का ठीक ठीक निदान कर सकता है। भाषा इतनी सरल है कि हर एक मामूली पढा लिखा भी इसे अच्छी तरह समझ सकता है।

चरक संहिता हिन्दी अनुवाद सहित

सुप्रसिद्ध टीकाकार आयुर्वेदाचार्य श्रीजयदेवजी विद्यालकारकृत तत्वार्थदीपिका नामक विवेचनात्मक तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित। चरक जैसे कठिन ग्रन्थ के समझने के लिये उक्त वैद्यजी का यह अनुवाद इतना लोकोपयोगी सिद्ध हुआ है कि ऐसा हिन्दी अनुवाद आज तक कही भी किसी भाषा में नही छपा। यही कारण है कि इतने थोडे समय में यह इसका चौथा सस्करण छपा है। कागज की कठिनाई के कारण यह बहुत थोडा छपा है जो पुस्तक की माग को देखते हुवे आशा है शीघ्र ही समाप्त हो जावगा। इस लिये शीघ्रता करें ताकि फिर अगले सस्करण की प्रतीक्षा न करनी पडे। दो बढिया पक्की कपड़े की जिल्दो में बडे साईज में छपा है। [illegible]

भैषज्यरत्नावली

लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र द्वारा संशोधित तथा आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालङ्कार कृत सुविस्तृत सरल तथा विवेचनात्मक भाषा-टीका सहित । पचमावृत्ति बड़ी सज धज कर तैयार हुई है । अब की बार बहुत परिवर्द्धित कर दी गई है अर्थात् जितने योग इस संस्करण में मिलेंगे वह किसी भी आवृत्ति में आपको नहीं मिल सकेंगे । आयुर्वेद की प्राचीन पुस्तकों में प्राचीन समय के अनुसार औषधियो की मात्रा बहुत ज्यादा है जो इस समय उलटी हानि कर देती है, विशेषकर साधारण वैद्यों को तो मात्रा देने में कठिनाई का सामना करना ही पडता है, इसी लिये इस संस्करण में औषधि की मात्रा (doses) को समयानुकूल बना दिया है । इसके अतिरिक्त इस पांचवे संस्करणमे भिन्न भिन्न योगो के अन्त में जहा जहा आवश्यक जचा विशेष वचन दिया गया है । इसमे जहा पाठान्तरो मे कहा योग का रूपान्तर दिखाया गया है वहा यह भी बताने की चेष्टा की है कि उस योग को रोग की किन अवस्थाओ मे प्रयोग किया जाता है वा कराना चाहिये । व्याख्या मे जहा जहा परिभाषा के अनुसार मान को दुगुना करना चाहिये वहा दुगुना ही करके लिखा गया है । अत हर एक औषध निर्माता यदि व्याख्या मे कहे गये मान से औषध बनायेगें तो औषध ठीक बनेगी । इस संस्करण मे सब से बढ कर खूबी यह है कि उक्त कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र के अपने अनुभूत कई बडे कीमती नुस्खे इसमे दिये है जो आपको कही नही मिल सकते । आयुर्वेद का कोई ऐसा प्रसिद्ध नुस्खा नही जो इसमे न दिया गया हो । पुस्तक बहुत उपयोगी हो गई है और वैद्यसमाज के बडे काम की वस्तु है । पचम संस्करण का मूल्य १३॥) रु० ।

(हरीतक्यादि) भाव प्रकाशनिघण्टु

प० श्री विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदशास्त्राचार्य, साहित्यालंकार, प्रिन्सिपल ललित-हरि आयुर्वेदिक कालिजकृत "ललितार्थकरी" अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित । इस मे हर एक बूटी का पूर्ण विवरण दिया है वनस्पति के पुष्प, फल, त्वक्, सार, पत्र (पत्रपृष्ठ, पत्रोदर) तना, काष्ठ आदि हर एक का वर्णन । वनस्पति कब फूलती है, किस भूमि मे, किस ऋतु मे, किस काल मे संग्रह करना चाहिये । औषधि का कौनसा भाग प्रयुक्त होता है और उन की मात्रा इत्यादि सब बाते स्पष्टतया लिखी है । यद्यपि यह कहना अतिशयोक्ति नही कि वनस्पति के पर्याय वनस्पति के पर्यालोचनात्मक विवरण के लिये पर्याप्त है किन्तु उसे हर एक व्यक्ति नही समझ सकता इस लिये उन्हे भी व्यक्त कर दिया है, जहा २ आवश्यक समझा गया है औषधियो के व्यापार पर भी प्रकाश डाला गया है । वंशलोचन, एलवा, मुसब्बर आदि कई एक वस्तुओ के निर्माण का इतिहास तथा वर्णन दिया है । हर एक वनस्पति के नाम भिन्न २ भाषाओं में दिये है । जहा पर इस पुस्तक में आयुर्वेदोक्त औषधियो के गुण हिन्दी टीका में लिखे है, वहा पाश्चात्य वनस्पतिवेत्ताओं के भी विचार दिये है । यूनानी हकीमो के विचारो को भी यथा स्थान लिखा है । पाश्चात्य वनौषधि विज्ञान को साथ साथ रखने से वैद्यगण वा विद्यार्थी को अनेक एलोपैथिक औषधियो के मुकाबले मे भारतीय औषधिया जो विशेष गुण करती है तथा अत्यन्त लाभप्रद है उनका पता लग जावेगा । एलोपैथिक तथा यूनानी हकीमो के सहयोग में रहने से बहुत सी एलोपैथिक तथा यूनानी औषधिया प्राय वैद्य लोग बरतने लगे है परन्तु उनका वर्णन निघण्टुओ में नही है अत उन्हे भी परिशिष्ट मे दे दिया गया है । एक बहुत बडी विशेषता इस में यह है कि प्राय प्रत्येक औषधि की प्रतिनिधि औषधि भी दी गई है तथा औषधि का अधिक सेवन किस अग को हानिकारक है और उसके दर्पनाशक के लिये क्या देना चाहिये । अत यह सर्वगुण सम्पन्न हिन्दी अनुवाद हुआ है । छात्रो तथा वैद्यो के लिये अत्यन्त उपयोगी है । कोई भी बात जो निघटु मे समझने लायक है इस मे छूट नही पाई पक्की कपडे की जिल्द सहित । यू० पी० इण्डियन मेडिसन बोर्ड जो आलुबुखारा, हरमल, औलिव ऑयल आदि अन्य चीजे भी परीक्षा मे निर्धारित की हुई है उन सब का वर्णन भी इस संस्करण में किया है । अब छात्रो के लिये यह नितान्त उपयोगी पुस्तक हो गई । परन्तु दाम केवल ७) रु०

रसतरंगिणी (हिन्दी टीका सहित) पक्की कपड़े की जिल्द सहित, चतुर्थ संस्करण, मूल्य १०) रु०

आयुर्वेद में रस शास्त्र का कितना महत्व है यह बात आज कल के प्रतिदिन के व्यवहार में आने वाली रसचिकित्सा पद्धति के अनुसरण करने वाले किसी से छिपी नहीं। यों तो रसशास्त्र में धातुओं का भी विशद वर्णन पाया जाता है। परन्तु रसचिकित्सा में व्यवहार में आने वाले खनिज द्रव्यों का शोधन मारण आदि किस विधि के अनुसार किया जाना चाहिये जिससे वह अत्यन्त गुणदायक हो सकें यह एक बड़ी भारी कठिनाई वैद्य समाज के आगे थी। इसी कठिनाई को अनुभव करते हुये लाहौर के सुप्रसिद्ध तथा सिद्धहस्त कविराज श्रीनरेन्द्रनाथजी मित्र तथा उनके सुयोग्य शिष्य प्राणाचार्य श्रीसदानन्दजी ने इस पुस्तक को संस्कृत श्लोकों में तैयार की थी। इसकी विशेषता यह है कि इसमें केवल वही तरीके दिये गये हैं जो उनके अनुभव में आ चुके थे। ग्रन्थ की उपादेयता का इसी से पता चलता है कि प्रायः सभी आयुर्वेद विद्यालयों में यह पुस्तक पाठ्य क्रम में नियत है। इस संस्करण में मूल पुस्तक तथा आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्त जी शास्त्रीकृत संस्कृत टीका तथा रसविशेषज्ञ श्रीधर्मानन्दजी कृत सरल तथा विस्तृत रसविज्ञान नामक हिन्दी अनुवाद साथ दिया गया है। अब इस संस्करण से साधारण से साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है। पुस्तक २४ अध्यायों में समाप्त हुई है। पहले अध्याय में रसशाला के विषय में पूरी जानकारी दी गई है। दूसरे अध्याय में परिभाषा सम्बन्धि सभी बातों का सविस्तर वर्णन है, तीसरे अध्याय में मूषा आदि का वर्णन है चौथे अध्याय में हर प्रकार के यन्त्रों के चित्र, उनके बनाने के तरीके, उपयोग आदि सब दिया है। पांचवें अध्याय में पारद नाम, शुद्ध अशुद्ध स्वरूप, स्वाभाविक दोष, उनका परिचय, शुद्धि की आवश्यकता, शोधन के लिये पारे का मान, समय, पूजन, छः प्रकार के शोधन, हिंगुल से पारा निकालने की विधि, अष्ट संस्कार, स्वेदन, मर्दन, मूर्छन, उत्थापन, ऊर्ध्वपातन, अधः पातन, तिर्यक् पातन, बोधन, नियामन, दीपन, जारण, षड्गुण गन्धक जारण, इन सबके सब प्रकारों का वर्णन दिया है। छठे अध्याय में मूर्च्छना के स्वरूप तथा भेद, मुग्धरस, रसपुष्प, सिद्धपर्तेल, रसकर्पूर, रसकर्पूर द्रव, कज्जली, रसपर्पटिका, रससिन्दूर, मकरध्वज, सिद्ध मकरध्वज, आदि इन सब के स्वरूप, भेद, गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोग आदि विस्तार से दिये हैं। सातवें अध्याय में पारद का सामान्य मारण, मृत पारद लक्षण, सप्त प्रकार, गुण, आमयिक प्रयोग, रसायन में पारद सेवन, क्षेत्रीकरण, रस, भक्षणकाल, मात्रा भेद अपथ्य, पथ्य, उपचार, कूष्माण्ड आदि का वर्णन है। आठवें अध्याय में गन्धक नाम, स्वरूप, अशुद्ध दोष, शोधनादि के छ प्रकार शुद्ध गन्धक के गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोग, कल्प, तैल, अपथ्य, द्रावक, सजलगन्धक आदि गन्धक विषयक विस्तार है। नौवें अध्याय में हिंगुल नाम, स्वरूप, भेद, निर्माण, दोष, प्रकार, शुद्ध हिंगुल गुण, प्रयोग, हिंगुलाद्य मल्हर, हिंगुलीय रससिन्दूर, सिद्धदरदामृत, हिंगुलीयनासिका इन सब के गुण, मात्रादि, सिद्ध हिंगुलेश्वर चपल निर्णय दिया है। दसवें अध्याय में अभ्रक के सब प्रकार के भेद, दोष, लक्षण, गुण, शोधन, मारण, भस्म को लोहिती करण, अमृतीकरण, गुण, आमयिक प्रयोगादि, सत्वों की विशेषता, सत्वपातन, पिण्डीकरण, आदि का अभ्रक संबधि सविस्तर वर्णन है। ग्यारहवें अध्याय में हरताल, मैनसिल, सखिया, फिटकिरि, खरिया मिट्टी, चूना, दुग्धपाषाण, गोदन्त आदि सबके नाम, भेद, स्वरूप शोधन, मारण, मात्रा, गुण, परीक्षा तथा आमयिक प्रयोगादि दिये हैं। बारहवें अध्याय में शंख, क्षुद्र शंख शुक्ति, शृङ्ग तथा समुद्रफेन आदि इन सब के नाम, स्वरूप भेद, शोधन, मारण, गुण तथा आमयिक प्रयोगादि दिये हैं। तेरहवें अध्याय में यवक्षार, नीम्बुकाम्लीय, सर्जीक्षार, टङ्कण, टङ्कणाम्ल आदि के नाम, निर्माण, गुण, मात्रा, शोधन तथा आमयिक प्रयोग दिये हैं। चौदहवें में नवसादर, सोरक, क्षार, लवण आदि इन सबके नाम, भेद, गुण शोधन तथा आमयिक प्रयोगादि सविस्तर दिये हैं। पन्द्रहवें में सुवर्ण सबंधि सब प्रकार के नाम, स्वरूप, लक्षण, निर्माण मात्रा, गुण, मारण तथा आमयिक प्रयोगादि सविस्तर दिये हैं। सोलहवेंमें रजत तथा सवनादर वाष्पद्रव आदि के नाम, स्वरूप, हरप्रकार के शोधन, मारण, गुण, मात्रा आमयिक प्रयोगादि सत्रहवें में ताम्र, नाम, हरप्रकार के स्वरूप, भेदलक्षण, फल, शोधन, मारण, मात्रा आमयिक प्रयोग आदि सविस्तर वर्णन है। अठारवें में वंग (रांगा) के नाम लक्षण भेद, शोधन, मारण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोग आदि सविस्तर दिये है। उन्नीसवें में सीसा, यशद, आदि के नाम, स्वरूप, फल, शोधन, मारण, गुण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोगादि। बीसवें में लोह के भेद, नाम, परिचय, शोधन, मारण, गुण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोग, इक्कीसवें में स्वर्णमाक्षिक, तुतिया, सिन्दूर मुर्दासिंग, खर्पर, कान्तपाषाण, कासीस के नाम भेद, स्वरूप, गुण, शोधन, मारण आमयिक प्रयोग बाईसवें में पित्तल, कांसी अजन, शिलाजीत, गेरु, आदि के नाम, भेद, स्वरूप, शोधन मारण, आमयिक प्रयोग। तेइसवें में सब रत्नों के नाम, परीक्षा, दोष, शोधन मारण, गुण मात्रा प्रयोग आदि। चौबीसवें में सब प्रकार के विषों के भेद, स्वरूप, शोधन, रस, गुण आदि दिया है।

सुश्रुत संहिता सरल हिन्दी अनुवाद सहित

सुश्रुत संहिता का हिन्दी अनुवाद आजकल कोई भी नहीं मिलता। इस कमी को पूरा करने के लिये श्री अत्रिदेवजी गुप्त विद्यालकार ने सरल हिन्दी अनुवाद सपूर्ण पुस्तक का किया है तथा सुविख्यात डा० घाणेकर जी कृत भूमिका सहित पुस्तक बहुत बढ़िया है। मूल्य २०) रु०

पुस्तकें मिलने का पता :—**धन्वन्तरि कार्यालय,** विजयगढ़ (अलीगढ़)।

गुप्त-सिद्ध-प्रयोगांक की

रोगानुसार प्रयोग-सूची

(अकारादि क्रम से)

[नम्बर पृष्ठ-संख्या सूचक हैं।]

Approved by Dept. of Public Instruction of Central Provinces & Berar.

या औषधीः पूर्वजाताः देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मन्नैनुवाभ्र्‌णामहं शतं धामानि सप्त च ॥
[ऋ० १०-९७]

भाग २२
अङ्क १-२

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक

जून-जौलाई
सन् १९४७ ई०

स्वागत है तव बारम्बार

संकट विकट निकट कर निशदिन,
पाते अनुभव रत्न इकाध ।
जय धन्वन्तरि अनर्घ्यमणिमय,
गुप्त--सुसिद्ध--सुयोग--सुसाध ॥

नव--वर्षोपलक्ष में नियमित,
देते सुन्दरतम--उपहार ।
अनुभव--रत्नकरण्ड--विगुंफित,
जगत-जनार्दन युग दुख हार ॥

अनुभव-गुण-गण-गौरव मंडित,
जग--जन जीवन--धन--दातार ।
'गुप्त--सुसिद्ध--प्रयोग' गुणाकर,
स्वागत है तव बारम्बार ॥

—रचयित्री—
वैद्या श्री [illegible] देवी
वैद्य विशारदा ।
×

“आत्म-आमन्त्रण”

अयि ! वैद्यवर्य !! अब जाग उठो,
तज निद्रा मोहमयी निश्चय ॥
हो आयुर्वेद--समुन्नति को,
सन्नद्ध संगठित औ' निर्भय ॥१॥

जिसके आश्रय से कीर्ति-वित्त-सम्मान-शीलगुणवान हुये ।
हा ! खेद उसी की सेवा में दुर्लंघ्य-उपेक्षावान हुये ॥२॥

आलस्य, अकर्मण्यता ग्रसित, कर्तव्य मूढ़ से देते हम ।
हो पक्षपात का दोष विवश परदेशी सत्ता को हरदम ॥३॥

आया स्वराज्य है निकट आज अपने नेता सत्ताधारी ।
अब बनै चिकित्सा राज्य-प्रजा की आयुर्वेद मदुपकारी ॥४॥

चाहिये हमें एकत्रित हो आन्दोलन प्रबल मचा देना ।
प्राचीन-प्राच्य-विज्ञान-प्रणाली को जग में फैला देना ॥५॥

बन कर्मवीर, निस्वार्थ वृत्ति, कर्तव्य मार्ग पर दृढ़ रहना ।
व्रत आयुर्वेदोन्नति का ले सह कर विपत्ति, आगे बढ़ना ॥६॥

धन्वन्तरि- करुणा से अपना,
यह ध्येय सफल हो जायेगा ।
वैज्ञानिक — आयुर्वेद — ध्वज,
दुनियां में फिर फहरायेगा ॥७॥

—रचयिता—

कविराज ब्रह्मदत्त जी शास्त्री,
आयुर्वेदाचार्य, RMP

नवयुग की मांग।

नवयुग ने अब ठान लिया है।

परिवर्तन के बिना जगत को, सारहीन ही मान लिया है।

जो विरोध अनुरोध करेंगे,

पद—मर्दित हो स्वयं गिरेंगे।

प्रबल प्रभञ्जन सम्मुख होकर,

किसने पथ पहचान लिया है ॥नव०॥

क्यों न विकल होंगे ये मन में,

एकाकी जो हों जीवन में।

निबिड़-तिमिर के पथिकों को तो,

छाया ने भी छोड़ दिया है

नवयुग ने अब ठान लिया है।

प्रकट भौ....

दलन हेतु त्रिदोष महान को,

सकल औषध सार प्रदान को।

परम गुप्त-सुसिद्ध प्रयोग ले,

प्रकट भौ नव अंक विशेष ये।

—श्रीकृष्ण, नाथद्वारा।

वैद्य-बन्धु, मत होश गंवाओ,

सब मिल एक सूत्र अपनाओ।

पछतायेंगे क्यों न जिन्होंने।

नहीं समय को जान लिया है॥

नवयुग ने अब ठान लिया है।

छोड़ो तनिक पुराने-पन को,

अपनाओ नव-अन्वेषण को।

लो प्रयोग में योग वही, जो,

अनुभव से पहचान लिया है ॥नव०॥

—रचयिता—

साहित्याचार्य श्री. पं. महावीरप्रसाद जी जोशी, सादुलपुर।

उपहार

गिरि-कंदर-गत ऋषि-पुंगव का,
वृद्ध—वैद्यगत अनुभव—सार ॥
संचय कर नवतम-रूपक दे,
किया प्रगट कौशल—श्रृङ्गार ॥

अनुभव—मणिमय—पात्र सजाकर,
देने सुन्दर—तम उपहार ।
प्रगट हुए हे धन्वन्तरि तुम,
स्वागत है तव बारम्बार ॥

—रचयिता—

श्री. पं. चन्द्रशेखर जी जैन वैद्यशास्त्री,
जवाहरगंज, जबलपुर सी. पी. ।

—※—

—रचयिता—

श्री० पं० रामबहादुर पाण्डेय,
विजयगढ़ (अलीगढ़)

—※—

आवाहन

रुग्णाते ! रुग्णाते !! दूर, दूर,
आरोग्य देवि तव आवाहन,
हम सभी आज हैं विपद्ग्रस्त,
खोये से लुटे महान-त्रस्त ।
करते मिलकर तेरा वन्दन ।आरोग्य देवि०॥
पलकें मग में बिछ रहीं अम्ब !
आओ ! आओ !! न करो विलम्ब,
भारती करें तव अभिनन्दन आरोग्य देवि०॥
हम सब निजत्व भी भूल गये,
दुःख पाये कितने नये—नये,
क्या सुन न-पड़ा करुणा-क्रन्दन ।आ० देवि०॥
हे 'धन्वन्तरि' युग याद हमें,
ऋषि 'भरद्वाज' भूले न हमें,
घर २ में था तेरा नर्तन ।आरोग्य देवि०॥
भारत पर कृपा कोर कर दे,
अब ऐसा तू वर दे ! वर दे,
ज्योतिर्मय हो अपना जीवन ।आरोग्य देवि०॥

॥ श्री धन्वन्तरये नमः ॥
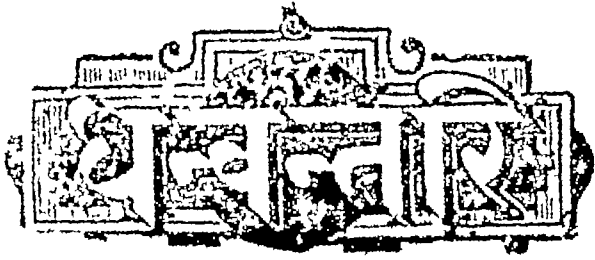
रोगाक्षयत मृत्यु भयं निवारयत ।
समर्जयेत् भूयिशो यशांसि च ॥
मुदं ददत् ज्ञान मथो विवर्धयत् ।
विजृम्भतां पत्रमिदं प्रकाशयत ॥

प्रस्तुत अंक के विषय में—

चिरकाल की प्रतीक्षा के पश्चात् उस "गुप्त-सिद्ध-प्रयोग" पुस्तक को जिसके प्रकाशन की हम कई वर्षों से चेष्टा कर रहे थे आज इस विशेषांक के रूप में पाठकों को समर्पित कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि हमारी यह तुच्छ भेंट पाठकोंके ज्ञान-वर्धन और गृहस्थों के कष्ट-निवारण में अवश्य ही सहायक सिद्ध होगी।

आजकल वैद्य समाज में परीक्षित-प्रयोगों की बड़ी मांग है, प्रत्येक वैद्य चाहता है कि मुझे कहीं से उत्तम और अचूक प्रयोग प्राप्त हों। इसीलिये थोड़े से समय में ही परीक्षित-प्रयोगों पर बहुत सी पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। इन पुस्तकों से वैद्य-समाज का कुछ लाभ हुआ या नहीं, इस विषय पर यहां विचार करना अभीष्ट नहीं है। यहां तो हम केवल इस प्रश्न पर विचार करना चाहते हैं, कि आर्ष ग्रन्थों में एक-एक रोग पर शत-शत प्रयोग होते हुए भी वैद्य-समाज परीक्षित प्रयोगों के लिये इस प्रकार क्यों लालायित रहता है तथा क्या उसकी यह लालसा उचित है, और यह किस प्रकार पूर्ण हो सकती है।

आयुर्वेदीय-संहिता-ग्रन्थ उन ऋषि-महर्षियों और अनुभवी वैद्यराजों द्वारा लिखित हैं जिनको त्रिकालज्ञ कहा जाता है। यह सम्पूर्ण साहित्य निसंदेह पूर्ण अनुभव और विस्तृत ज्ञान के आधार पर लिखा गया है। यह भी निश्चित है कि साधनों से सम्पन्न आधुनिक विज्ञान अभी तक वहां नहीं पहुंच पाया जहां हमारे ऋषि-महर्षि पहुंच गये थे। यह सब कुछ होते हुए भी यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि इन संहिता ग्रन्थों से वही लाभ उठा सकता है जिसने विधिवत् अच्छी प्रकार से इनका अध्ययन-मनन किया हो और इनके चिकित्सा सिद्धान्तों के मर्म को समझ लिया हो। एलोपैथी और होमियोपैथी की तरह आयुर्वेदीय-चिकित्सा लाक्षणिक चिकित्सा नहीं है। इसलिये नवपठित वैद्य जो आजकल के एलोपैथिक-मिश्रित आयुर्वेद विद्यालयों से निकलते हैं और जिन्हें चिकित्सा-सिद्धान्तों का विधिवत् ज्ञान नहीं होता, जब चिकित्सा-क्षेत्र में उतरते हैं तो अपने को किंकर्तव्य विमूढ़ सा अनुभव करने लगते हैं। उनको रोग की अवस्था, दोष दूष्य का सम्यग् ज्ञान और चिकित्सा-सिद्धान्तों का वास्तविक रहस्य ज्ञात न होने के

इस दिशा में किये गये प्रयत्नों की उपरोक्त त्रुटियों को अनुभव करते आरहे थे। आज उसीके फल स्वरूप विभिन्न शतशः वैद्य-बन्धुओं के अनुभूत प्रयोगों का यह संग्रह आपकी सेवा में समर्पित है। यह चेष्टा की गई है कि व्यर्थ के प्रयोगों से इस विशेषांक का कलेवर न भरा जाय। इसका १-१ प्रयोग एवं एक-एक पंक्ति पाठकों को उपयोगी सिद्ध हो सके, यही हमारा प्रयास रहा है।

इस बात को दृष्टि में रखकर कि कोई भी चिकित्सक सभी रोगों का पूर्ण अनुभवी नहीं हो सकता, हर वैद्य से केवल २-२ प्रयोग मांगे गये थे। इनमें से भी अधिकांश प्रयोगों की हमने स्वयं परीक्षा करली है और अब हम विश्वस्त रूप से कह सकते हैं कि इस संग्रह के अधिकांश प्रयोग आशुफलप्रद हैं। कुछ प्रयोग तो वास्तव में आयुर्वेद का मस्तक ऊंचा करने वाले हैं। हमको स्वयं उनके फल को देख कर आश्चर्य होता है। ऐसे-ऐसे वैद्यराजों के प्रयोग इस विशेषांक में हैं जो भारत के इने-गिने चिकित्सकों में से हैं। इन प्रयोगों के संग्रह करने में हमको जो प्रयत्न करने पड़े हैं उसको पाठक स्वयं अनुभव कर सकेंगे।

आयुर्वेदीय—चिकित्सा — सिद्धान्त के ऊपर चलने वाली चिकित्सा –पद्धति है। फिर भी कोई दो वस्तु मिल कर क्या प्रभाव उत्पन्न करेंगी इस विषय को सिद्धान्तों द्वारा हल नहीं किया जा सकता, अतः किसी भी प्रयोग के मूल-द्रव्यों को देख कर प्रयोग की उत्तमता और आशुफल-प्रदता का अनुमान नहीं लगाना चाहिये। "प्रभावोऽचिन्त्य उच्यते" सिद्धान्त वाक्य के अनुसार औषधियों की दोषहरण एवं रोगहरण-शक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिये साधारण प्रतीत होने वाली वस्तु कभी-कभी ऐसा चमत्कार दिखाती है कि उससे आश्चर्य-चकित रह जाना पड़ता है।

इस विशेषांक में प्रयोगों की गुणावली आजकल की प्रथा के अनुसार बहुत विस्तार से एवं मनोरंजक भाषा में जान-बूझ कर नहीं दी गई है। पाठकों को इससे यह अनुमान न लगाना चाहिये कि प्रयोग साधारण हैं। अतिरंजित भाषा प्रायः पाठकों को मिथ्या भ्रम में डाल देती है। इसीलिये हमने इस सम्बन्ध में विशेष संकोच से काम लिया है।

इस विशेषांक में भी एक-एक रोग पर कई-कई प्रयोग हैं। वह सब पाठकों की सुविधा के विचार से ही प्रकाशित किये गये हैं। कुछ प्रयोग तो अवस्था भेद से उपयोगी सिद्ध होंगे और यह भी सम्भव है कि किसी प्रयोग की कोई वस्तु किसी प्रान्त में सुविधा से न मिल सकती हो, उस अवस्था में भी एक रोगपर कई प्रयोग लाभप्रद सिद्ध हो सकते हैं।

जहां तक सम्भव होसका है प्रयोग बनाने की विधि और उनके गुण पाठकों की समझ में आसकने योग्य सरल भाषा में लिखे गये हैं; फिर भी वैद्यराजों को बुद्धिमानी के साथ दोष-दूष्यों, रोगी की प्रकृति, ऋतु, समय एवं अवस्था का विचार कर प्रयोगों का व्यवहार करना चाहिये। चेष्टा की गई है कि ऐसे ही प्रयोग प्रकाशित किये जांय जो रोग

की प्रत्येक अवस्था में लाभप्रद सिद्ध हों। फिर भी रोगी की अवस्था, और रोगी की प्रकृति की भिन्नता से कल्पनातीत भेद हो सकते हैं। उस अवस्था में चिकित्सक की बुद्धि ही कार्य कर सकती है। न तो यह सम्भव है कि रोग की प्रत्येक अवस्थाओं का वर्णन किया जा सके और सभी अवस्थाओं के रोगियों पर प्रयोगों का अनुभव करके उसका फल प्रकाशित करना ही असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य है। प्रायः यह होता है कि रोग की १-२ अवस्थाओं के रोगी ही अधिक दृष्टिगोचर होते हैं और उन पर सफल सिद्ध होने वाले प्रयोगों को ही सफल प्रयोग कहा जाता है और ऐसा ही हमने माना है।

इस विशेषांक में प्रकाशित प्रयोगों को सहस्रों पाठक अपने रोगियों पर व्यवहार करेंगे। जिन रोगियों पर ये प्रयोग व्यवहार किये जाय उन रोगियों की अवस्था आदि का पूर्ण विवरण नोट करते रहना चाहिये और प्रकाशनार्थ भेज देना चाहिये, जिससे उन प्रयोगों के विषय में आवश्यक विवरण आगामी संस्करण में प्रकाशित होसके। यदि कोई प्रयोग व्यवहार करने में निष्फल सिद्ध हो तो उसका भी पूर्ण विवरण कि वह किस अवस्था में किस आयु के व्यक्ति को किस प्रकार व्यवहार कराया गया है सूचित करना चाहिये। इससे यह वास्तविक ज्ञान हो जायगा कि अमुक प्रयोग रोग की किस अवस्था में लाभ करता है और किस अवस्था में नहीं। इन पूर्ण विवरणों सहित जब इसका आगामी संस्करण प्रकाशित होगा तो हम समझते हैं कि वह नवीन वैद्यों के लिये पथ-प्रदर्शक सिद्ध होगा। भगवान धन्वन्तरि से प्रार्थना है कि हमारी यह तुच्छ भेंट सेवा-भावनापूर्ण हो। यदि हमारे इस उद्योग से वैद्य-बन्धुओं का सूक्ष्मातिसूक्ष्म लाभ भी होसका तो हम अपने इस परिश्रम को सफल समझेंगे।

अन्त में उन आदरणीय विद्वानों और स्नेही वैद्य-बन्धुओं के प्रति जिन्होंने अपने अमूल्य प्रयोगों को प्रकाशित करने की उदारता-पूर्वक आज्ञा देकर हमें कृतार्थ किया है, हम हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं और विश्वास करते हैं कि 'धन्वन्तरि' इसी प्रकार सदैव ही इनके स्नेह का पात्र बना रह सकेगा।

—देवीशरण गर्ग।

ग्राहक नम्बर नोट कर लें—

इस विशेषांक के ऊपर रैपर पर आपका ग्राहक नम्बर लिखा हुआ है। इस नम्बर को नोट कर लीजियेगा और धन्वन्तरि के विषय में पत्र-व्यवहार करते समय वह नम्बर अवश्य लिख दिया कीजियेगा।

—सम्पादक।
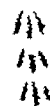
पूज्यपाद स्व० श्री० नारायणदास जी वैद्य
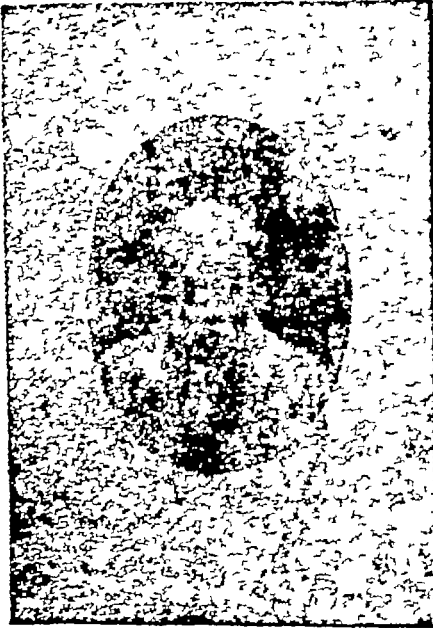
हमारे पूज्य पितामह स्व० श्री० नारायणदास जी वैद्यराज को इस संसार से गये हुए लगभग ३१ वर्ष हो गये, किन्तु उन सहस्रों व्यक्तियों की स्मृतियों में जिनको उनसे चिकित्सा कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, वे आज भी जीवित हैं। उनका चिकित्सा अनुभव इतना बढ़ा-चढ़ा था कि अनेकों व्यक्तियों के निकट तो वे एक चमत्कारिक महापुरुष की भांति थे।

पितामह जी ने आयुर्वेद का अध्ययन किसी विद्यापाठ में नहीं किया था, और न चिकित्सा कार्य उनकी जीविका का साधन ही था, अपितु अपने विशाल व्यापार के कारण वे बहुत थोड़ा समय इस ओर दे पाते थे, फिर भी उनके हाथ में कुछ ऐसा अमृत था कि कठिन से कठिन और अपने जीवन से सर्वथा निराश रोगियों को वे अपनी साधारण औषधियों से ही पूर्णतः रोग मुक्त कर देते थे।

वैद्यक से उनको असीम प्रेम था और यही कारण था कि उन्होंने अपने पुत्र अर्थात् हमारे पूज्य पिता जी स्व० श्री० राधावल्लभ जी को अपने पैतृक व्यापार-कार्यों में न डाल कर आयुर्वेद का अध्ययन कराया और उनको ऐसी शिक्षा दीक्षा दी, जिससे अत्यन्त अल्पायु में ही अखिल भारतीय ख्याति के वैद्यों की पंक्ति में उनकी गणना होने लगी थी। 'धन्वन्तरि' पत्र की तथा 'धन्वन्तरि औषधालय' की स्थापना हमारे पितामह जी के परामर्श और पथ-प्रदर्शन में ही हमारे पूज्य पितृ देव ने की थी; किन्तु इसके कुछ ही दिन पश्चात हमारे पितामह स्व० श्री० नारायणदास जी का देहान्त लगभग ६७ वर्ष की आयु में हो गया, जैसे वे अपने इसी स्वप्न को पूर्ण होते देखने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

पितामह जी का आशीर्वाद और उपदेश हमारा आज भी पथ प्रदर्शन कर रहा है। 'आयुर्वेद की निर्लोभ भाव से सेवा करते रहना' उनका अन्तिम सन्देश या आदेश था और हमारा दृढ़ निश्चय है कि हम उसका यावज्जीवन पालन करते रहेंगे।

आगे पितामह जी के कुछ प्रयोग दिये जा रहे हैं, आशा है वैद्य-बन्धु इनको स्वर्गीय का प्रसाद समझ कर श्रद्धा सहित अपनायेंगे और उनसे लाभ उठाने का यत्न करेंगे। —सम्पादक।

परम-पूज्य स्व० श्री. लाला नारायणदास जी वैद्यशिरोमणि

—के अनुभूत प्रयोग—

मलेरिया पर—

सोडा (बाजार में जो शिर धोने और रंग में मिलाने के लिये बिकता है) १ तोला तथा बिना बुझा चूना (कलई) १ तोला दोनों को पीसकर रखलें। जूड़ी आने के एक घंटे पूर्व पुरुष के सीधे हाथ और स्त्री के बायें हाथ की तर्जनी (अंगुली) पर पानी लगाकर २ रत्ती दवा (नाखून बचाकर) लगावें और गीला कपड़ा लपेट दें। इस कपड़े को पानी से थोड़ी थोड़ी देर बाद भिगोते रहें। सूखने न दें। इससे जूड़ी का आना बन्द होजाता है। सुकुमार स्त्री-पुरुष एवं बालक, जो कड़वी औषधि नहीं पी सकते, तथा गर्भवती स्त्रियों के लिये उत्तम प्रयोग है।

कर्णमूल पर—

कत्था	मैनफल
गूगल	रेवतचीनी

—समान भाग लेकर पानी के साथ सिल पर पीस कर गरम करें। जब लेही जैसी होजाय तब अग्नि से उतार लें। कर्णमूल के बराबर कपड़ा काट उस पर दवा लगाकर कर्णमूल पर चिपका दें। पानी न पड़ने दे। यह पलस्तर कर्णमूल शान्त कर स्वयं छूट जायगा।

अनुभूत चुटकुले—

१—मिरच काली ५० सोंठ का टुकड़ा ३ माशे कुचल कर पाव सेर जल में औटावें। आधा रह जाने पर छान लें और उसमें १ तोले बताशे या मिश्री डाल कर चाशनी करें। जब चाशनी से तार छूट निकले तब गुनगुनी ही पीकर वस्त्र ओढ़ कर सोजाय।

गुण—जिस शीतज्वर में ज्वरांश बना रहता हो, शिर भारी रहता हो तथा सारे दिन सर्दी लगी रहती हो बड़ा लाभ होता है।

२—नीम की हरी सींकें २१ ले आग की भूभल में भुल-भुला (भूंज) लें। उसका छिलका उतार कर उसके बराबर काली मिरच डाल कर एक छटांक पानी में पीस कर छान लें। किसी पत्थर के टुकड़े को खूब गरम कर इसमें बुझा लें, जिससे वह पानी कुछ गरम होजायगा। इसे पीने से शीत ज्वर छूट जाता और वमन व दाह शान्त होती है।

० जम्भीरी द्राव—

जंभीरी का रस		२॥ सेर
भुनी हींग		२ तोला
अजमायन	सोंठधार की	छोटी पीपल
कालीमिरच	सेंधानमक	बायविडंग
लवंग	सोरा कलमी	हरड़ छोटी

—प्रत्येक ५-५ तोला

राई	१० तोला

—सब औषधियों को दरदरी कूट कर जंभीरी के रस में डाल एक माह रखा रहने दें।

गुण—भोजनोपरांत ६ माशे से एक तोला तक पीने से दस्त साफ होता है। भूख लगती है पेट का भारीपन अफारा अजीर्ण तथा पेट का दर्द दूर होता है।

परम पूज्य स्व० श्री० राधावल्लभ जी वैद्यराज के उत्तम प्रयोग रत्न

सन्निपात पर—

शु. पारद १ तोला   शु. गंधक २ तोला
अभ्रकभस्म   लोहभस्म   ताम्रभस्म
शु. वच्छनाग   शु. हरताल   कपर्दभस्म
शु. मसिल शु. हिंगुल   स्वर्णमाक्षिकभस्म
चित्रक छाल   हस्तसुण्डी   अतीस
सोंठ   मिरच   पील

—हरेक १-१ तोला
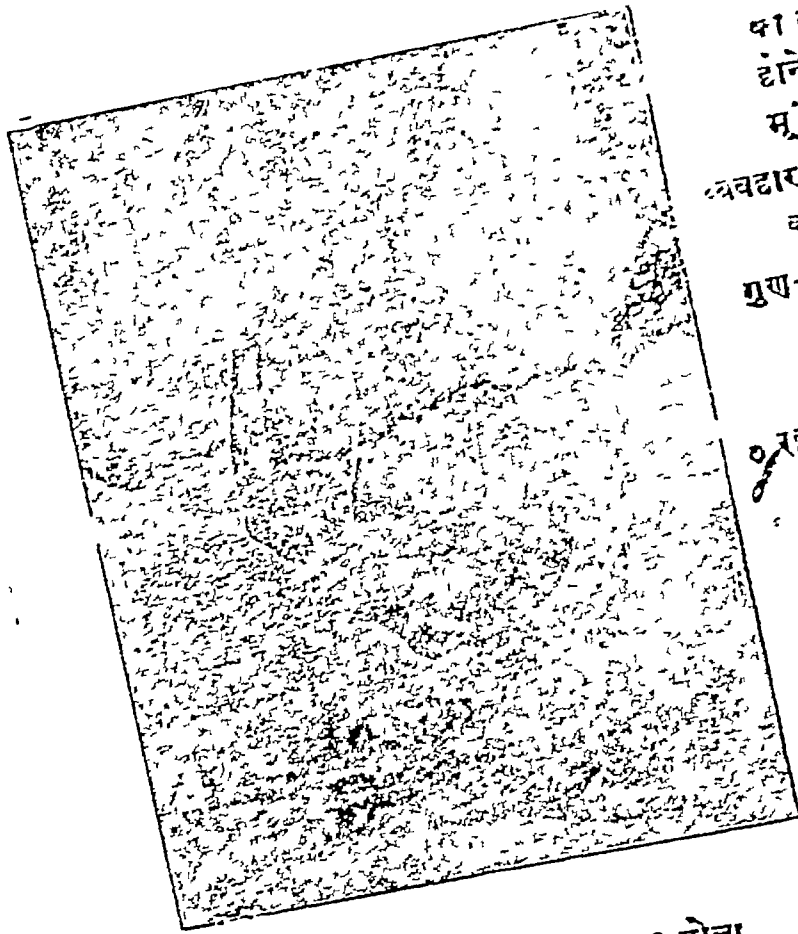
—प्रथम पारद-गंधक की कजली करलें और भस्मों को मिलालें और शेष औषधियों को कपड़-छनकर मिलालें। खरल में डाल अद्रक स्वरस, निर्गुण्डी स्वरस तथा भांगरे के स्वरस में ३-३ दिन मर्दन करें और शुष्क होने पर बालुका यंत्र में २ प्रहर की अग्नि दें। स्वांग शीतल होने पर निकाल अद्रख के रस में मर्दन कर मूंग बराबर गोली बनालें।

व्यवहार-विधि—१-१ गोली प्रातःसायं-काल या उपद्रव के समय अद्रक स्वरस के साथ सेवन करावें।

गुण—इसके सेवन से त्रिदोष दूर होता है। सन्निपात के उपद्रव जैसे प्रलाप, शीत आना, तन्द्रा, हिचकी, स्वास आदि नष्ट होते हैं।

रक्त-श्राव पर—

कमलकेशर   नागकेशर   लालपीपल

—तीनों १-१ भाग

मिश्री ४ भाग

—मिला कर रखलें। यह रक्त श्राव को बंद करने के लिये उत्तम औषधि है।

मोती ज्वर नाशक—

मोथा   पित्तपापड़ा   मुलहठी
मुनक्का   —चारों समभाग

—इनका अष्टावशेष क्वाथ कर शहद डालकर पिलाने से ज्वर, दाह, भ्रम वमन आदि दूर होते हैं।

जिस शीत ज्वर में वमन और दस्त होते हों उसके लिये निम्न प्रयोग अत्युपयोगी सिद्ध हुआ है।

कंजा के पत्ता   १ तोला
सेंधानमक   ६ माशे
सूखे आंवले   २ तोला

—इनको जल में पीस कर झरबेर के बराबर गोली बना लें। ज्वरावेग से ३ घण्टे पूर्व १-१ गोली जल के साथ दें। उन गोलियों से न ज्वर ही आवेगा और न दस्त वमन ही होंगे।

स्वर्गीय श्री० राधावल्लभ जी वैद्यराज

अपने पूज्य पितृदेव स्व० श्री० राधावल्लभ जी वैद्यराज का परिचय देते हुए, हमें सूझ नहीं पड़ रहा, कि क्या लिखें और क्या न लिखें। वैद्य समाजोद्यान के वे एक ऐसे पुष्प थे, जिसको पार्थिक रूप से मुरझाये हुए यद्यपि २६ वर्ष से भी अधिक होगये, किन्तु उसका यश–सौरभ आज भी वायु मंडल को सुरभित कर रहा है।

पूज्य पिता जी को हमारे पितामह जी के आयुर्वेदिक प्रेम के कारण चिकित्सा-कार्य में प्रारम्भ से ही दिलचस्पी थी और वे अत्यन्त बाल्यावस्था से ही, उन रोगियों और उनकी चिकित्सा को जो हमारे पितामह जी की चिकित्सा में रहते थे, बड़े मनोयोग से अध्ययन करते रहते थे। आयुर्वेद में उनकी ऐसी जिज्ञासा देखकर ही हमारे पितामह जी ने उनको व्यापारिक कार्यों में न लगाकर संस्कृत के अध्ययन में प्रवृत्त किया, जिससे वे मूल आयुर्वेदिक ग्रन्थों का विधिवत् अध्ययन कर सकें। पूज्य पिता जी ने बहुत ही अल्प समय में संस्कृत ज्ञान में अच्छी प्रगति करली, इसके पश्चात् आपने जयपुर तथा पीलीभीत के आयुर्वेदिक विद्यालयों में आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की और फिर अपने पिता जी के पथ-प्रदर्शन में चिकित्सा कार्य करने लगे।

अपनी तीव्र बुद्धि, निर्लोभ स्वभाव और चिकित्सा सम्बन्धी अगाध ज्ञान के कारण अत्यन्त अल्पायु में ही वे अखिल भारतीय प्रसिद्धि के वैद्य-विद्वानों की पंक्ति में आगये और उनका चिकित्सा-क्षेत्र अन्तर-प्रान्तीय हो गया। 'संग्रहणी' रोग के तो वे अपने समय के श्रेष्ठतम चिकित्सक थे और इस रोग के सहस्रों असाध्य समझे जाने वाले रोगियों को पूर्ण आरोग्य लाभ करा कर उन्होंने अनेक बार ऐलोपैथिक जगत के सुप्रसिद्ध चिकित्सकों को भी आश्चर्य में डाल दिया था। इस सम्बन्ध में एक बार तो अखिल भारतीय मैडीकल एसोशियेशन के मुख्य पत्र मैडीकल जर्नल में उनकी चिकित्सा-प्रणाली पर कई मास तक चर्चा चलती रही थी, जिसमें उस समय के अनेक प्रसिद्धतम डाक्टरों ने भाग लिया था।

पूज्य पिता जी को अपनी ख्याति से अधिक आयुर्वेद के पुनरुद्धार की चिन्ता रहती थी और इस दिशा में वे दिन-रात प्रयत्न-शील रहते थे। 'धन्वन्तरि' पत्र और 'धन्वन्तरि औषधि-निर्माण शाला' की स्थापना भी उन्होंने इसी हेतु की थी, जिसके प्रारम्भिक काल में उनको सहस्रों रुपये की हानि उठाना पड़ा थी। इतना तो सभी जानते हैं कि यदि वे केवल धन-संचय करने का प्रयत्न करते, तो अपने धनी मानी रोगियों से वे लाखों रुपया उपार्जित कर सकते थे, किन्तु आयुर्वेद का आदर और प्रतिष्ठा तथा उसके प्रति पुनः आस्था स्थापित करना ही उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य था।

पूज्य पिता जी की इच्छा थी कि संग्रहणी रोग की भांति ही क्षय रोग को भी सर्वथा निर्मूल कर देने वाली औषधियां आविष्कृत की जाय और इस सम्बन्ध में वे प्रयत्न कर ही रहे थे कि मई सन् १९१८ को काल का एक आकस्मिक झोंका आया और आयुर्वेद-सम्बन्धी अपनी समस्त उच्च आकांक्षाओं तथा लालसाओं को लिये हुए, केवल सैंतीस वर्ष की आयु में वे मृत्यु की चिर-निद्रा में सदैव के लिये सो गये।

आज जो सज्जन 'धन्वन्तरि' की वर्तमान उन्नति के सम्बन्ध में जिज्ञासा रखते हैं, उनसे हमारा यही निवेदन है कि यह केवल हमारे पूज्य पितामह जी और पिता जी के ही सद्-प्रयत्नों का परिणाम है और हमारा विश्वास है कि जब तक हम उनके चरण चिन्हों पर चलते रहेंगे, तब तक 'धन्वन्तरि' अपने मार्ग की समस्त बाधाओं को रोंदता हुआ इसी सफलता और प्रगति के साथ आयुर्वेदिक जगत के सेवा मार्ग पर चलता रहेगा।

पूज्य पितृ देव के कुछ प्रयोग हम आगे प्रस्तुत करते हैं, जो सर्वथा विश्वस्त हैं और अनेकों बार अनुभव में आ चुके हैं।

— सम्पादक।

आयुर्वेद-पंचानन श्री० पं० जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल,

भिषड्मणि, सम्मेलन मार्ग, प्रयाग।

गर्भदायक वटी—

कस्तूरी	२ रत्ती
केशर	८ रत्ती
चिकनी सुपारी	३ नग
गुड़ (उत्तम व पुराना)	४ माशे
अफीम	८ रत्ती
भांग धुली	१६ रत्ती
लवंग	४ नग

विधि—सब औषधियों को पृथक्-पृथक् बारीक पीस कर पुराने गुड़ में मिलालें और इसकी ४ गोलियां बनालें।

प्रयोग-विधि—मासिक स्नान के पश्चात् चौथे दिन लक्ष्मणाकंद १ तोला थोड़े दूध में पीस कर १ या १॥ पाव दूध में मिलालें। फिर स्त्री १ गोली खाकर ऊपर से यह दूध पीलें। पांचवे छटे तथा सातवे दिन १-१ गोली दूध से या फलघृत से लें। आठवें दिन स्त्री उड़द के बड़े तथा पुरुष दूध चावल की सुगंधित एवं उत्तम खीर खाकर रात्रि को सम्भोग करें। अवश्य गर्भधारण होगा।

नोट—(१) लक्ष्मणाकंद चम्पारन व दरभंगा की ओर मिलती है। कन्द का आकार गर्भस्थ बालक के समान होता है।

(२) इस प्रयोग को सेवन कराने से पूर्व यह आवश्यक है कि स्त्री एवं पुरुष के रज और वीर्य की भलीभांति परीक्षा करलें। यदि उनके रज या वीर्य में किसी प्रकार का दोष प्रतीत हो तो उनकी चिकित्सा पहिले करें।

व्याधि-हरण—

शुद्ध गंधक, शुद्ध सोहागा, शुद्ध हरताल या हरताल भस्म, अतीस, पीपल छोटी, आंवला, हरड़, बहेड़े की मिंगी, चीता, अकरकरा, शुद्ध जयपाल (दन्ती बीज), समुद्रफैन, एरण्डमूलत्वक, वायविडंग, मुलैठी, पीपरामूल, दारुहल्दी, शुद्ध वच्छनाग, खुरासानी अजवाइन, बेल की गिरी, जायफल, जावित्री, अफीम, सेंधा नमक, कूठ, भुनी हींग —प्रत्येक १-१ तोला

विधि—कूट कपड़-छन कर खरल में डाल पहले एक दिन लहसुन के स्वरस में खरल करें। इसके बाद तीन दिनों तक भांगरे के रस में खरल करें और फिर १-१ रत्ती की गोली बना छाया में सुखा कर रखें। अवस्था के अनुसार एक से चार गोली तक दूध के साथ लेवें। अथवा पहिले सप्ताह १-१ गोली, दूसरे सप्ताह दो-दो

गोली, तीसरे सप्ताह तीन-तीन गोली, चौथे सप्ताह चार-चार गोली फिर पांचवे सप्ताह में ३-३ गोली, छटे सप्ताह दो-दो गोली और सातवें सप्ताह एक-एक गोली केवल प्रातः दिया करें, और ऊपर से दूध पीवें। इससे शारीरिक सभी व्याधियों का शमन होता है। विशेष अनुपान से लेने से विशेष गुण प्रकट होते हैं। यथा—

(१) शहद से लेने से कफ-विकार, घृत से लेने से पित्त विकार और अदरख के रस और मधु से लेने से वायु विकार नष्ट होते हैं।

(२) कछुए की पीठ की हड्डी के साथ घिस कर अंजन करने से आंखों का तिमिर और मामान्द्य अन्धत्व नष्ट हो।

(३ नींबू के रस के साथ गोली लेने से पेचिस नष्ट होगी।

(४) पुराने गुड़ और पीपल के साथ लेने से दमरोग नष्ट होता है।

(५) सांप या बिच्छू के काटने पर गोली घिस कर

"श्री० शुक्ल जी का जन्म श्री० प० रामप्रसाद जी शुक्ल के यहा सम्वत् १६४६ वि० में हुआ। आप शिक्षाकाल में सभाएं स्थापित करने, आवश्यक विषयों का पठन-पाठन तथा निबन्ध और काव्य-रचना में अधिक मन लगाते थे, अच्छी रचना करने में भी आपने ख्याति प्राप्त करली थी, जिससे "प्रयाग समाचार" और "श्री० वेंकटेश्वर समाचार" के आप सम्पादक नियुक्त हुए। आपके प्रभाव से इन समाचार पत्रों की लोक प्रियता में असाधारण वृद्धि हुई, इसका प्रभाव लोकमान्य तिलक जी तथा प० माधवराम जी सप्रे पर पड़ा। इन्होंने श्री० शुक्ल जी को राष्ट्रीय पत्र हिन्द-केशरी का सम्पादन करने के लिये निमन्त्रित किया। आपने हिन्द-केशरी का भी सफल सम्पादन किया। राष्ट्रीय आन्दोलन की उग्रता के कारण सरकार ने हिन्द-केशरी बन्द कर दिया। तब आयुर्वेद महोपाध्याय पं० शंकरदत्त शास्त्री पदे ने वैद्य-सम्मेलन के कार्यों को उत्तर भारत में विस्तृत करने के लिये इन्हें प्रयाग बुलाया। किन्तु पन्द्रह-बीस दिनों में वे स्वयं स्वर्गवासी होगये। अतएव शुक्ल जी ने उनकी इच्छापूर्ति के लिये वैद्य-सम्मेलन को पुनरुज्जीवित किया एवं नये ढंग से सार्वजनिक संगठन कर आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षाएं आरम्भ की। छः सात वर्षों तक आपने सम्मेलन और विद्यापीठ का संचालन कर इन्हें भारत-व्यापी बनाया। आप अनेकों वर्षों तक सम्मेलन के प्रधान मन्त्री रहे तथा पटना के सप्तदश सम्मेलनाधिवेशन के आप सभापति भी हुए।

उस समय हिन्दी के क्षेत्र में कोई आयुर्वेदिक पत्र न होने के कारण आपने "सुधानिधि" आयुर्वेदिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। सुधानिधि का इतिहास वैद्य-सम्मेलन और आयुर्वेदिक प्रगति के इतिहास के साथ चल रहा है। आपने अनेक आयुर्वेदिक ग्रन्थों की रचना तथा प्रकाशन किया। अनेक प्रांतीय-सम्मेलनों के आप सभापति पद पर विभूषित होचुके हैं। जिला वैद्य सम्मेलनों का आरम्भ भी आपके द्वारा हुआ। भारत के अनेक आयुर्वेद-विद्यालयों के प्रबन्ध तथा परीक्षाओं से आपका घनिष्ट सम्बन्ध है।

बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसन के जन्म-काल से ही आप प्रभावशाली सदस्य रहे हैं। इस वर्ष भी प्रान्त के वैद्यों ने आपको अपना प्रतिनिधि निर्वाचित किया है। मेरे पूज्य पिताजी से आपका स्नेह-पूर्ण व्यवहार रहा है और उसी नाते से आप मुझ पर स्वपुत्रवत् स्नेह एवं अधिकार रखते हैं।"

—सम्पादक।

स्वर्गीय प० मस्तराम जी शास्त्री,

रावलपिंडी

आयुर्वेद-पंचानन पं० जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल,

सुधानिधि सम्पादक, इलाहाबाद।
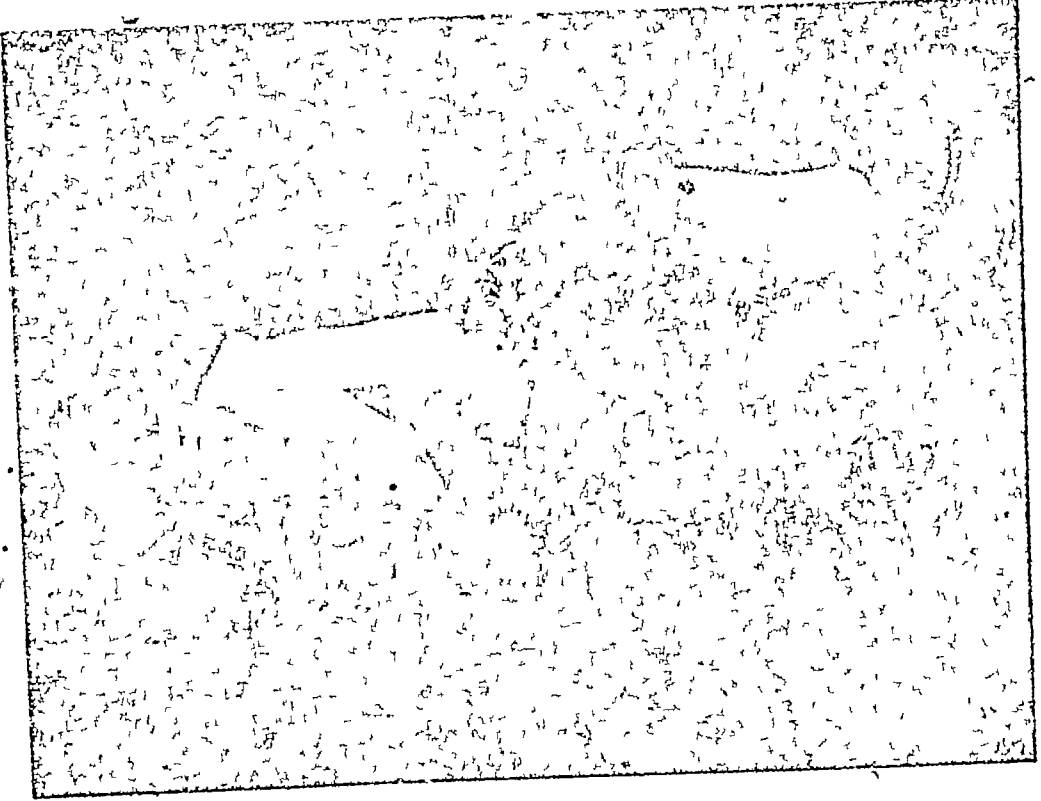
अंजन करे, और दंश-स्थान पर लगावें; विष दूर होता है।

(६) बायविडंग और गुड़ के साथ गोली मिला कर दांतों में दबाने से दन्तकृमि नष्ट होगा।

(७) शहद के साथ मुख में रगड़ने और खाने से मुख की दुर्गन्धि नष्ट होती है।

(८) बायविडंग और चीनी के साथ २१ दिन खाने से पेट के कृमि नष्ट हों या गिर जावें।

(९) निर्गुण्डी के स्वरस के साथ ४८ दिन खाने से धातुस्राव बन्द हो।

(१०) शरीर में हड़फूटन रहती हो तो गोली गोमूत्र के साथ लिया करें।

(११) दो तोले घीगुआर (ग्वारपाठे) के गूदे या रस के साथ दो से तीन गोली तक लेते रहने से वायुगोला नष्ट होगा।

(१२) निद्रा न आती हो अथवा कभी-कभी मूर्च्छा हो जाती हो तो दो गोली नित्य भैंस के दूध के साथ लिया करें।

(१३) नित्य सवेरे शाम दो गोली खाकर भैंस का दूध पिया करें तो धातु-पुष्टि हो।

(१४) शरीर में खुश्की या खुजली रहती हो तो नित्य दो गोली दही के साथ खाया करें।

(१५) नित्य २ तोला अडूसे के स्वरस से दो या तीन गोली लेते रहने से शीतपित्त और रक्तपित्त शान्त होजाते हैं।

(१६) नित्य जीरा और बच के साथ लेते रहने से वज्र-काय हो।

(१७) पाषाण भेद के साथ अधिक समय लेते रहने से पथरी नष्ट हो।

(१८) विषखपरे के काटने पर तुरन्त पाषाण भेद के साथ घिसकर घाव पर लगावें और इसी तरह गोली खिलावें तो विष नष्ट होगा।

(१९) यदि शरीर में तथा हाथ-पैर के तलुओं में पसीना बहुत आता हो तो अकरकरा के साथ ८-९ गोली पीसकर मालिश करें।

(२०) धतूरे के पत्तों के स्वरस के साथ गोलियां लेने से मरोड़ का आना बन्द हो।

(२१) बबूल के काढ़े के साथ लेने से कृमि-विकार दूर हों।

(२२) पानी में गोली घिसकर नस्य लेने से या इसी पानी को नाक में छोड़ने से आधाशीशी का दर्द दूर हो।

(२३) नागार्जुन (कड़ु तुम्बी) के रस से लेने और इसी के रस में गोली घिसकर अंजन करने से आंख की फूली कटे।

(२४) शाम-सवेरे नित्य निर्गुण्डी के रस से लेते रहने से जीर्ण-ज्वर नष्ट हो।

(२५) गुलाब के साथ गोली खाने और अंजीर की लकड़ी के साथ घिसकर लगाने से कुष्ठ आराम हो।

(२६) नित्य जायफल के साथ लेने से बादी की बवासीर नष्ट हो।

(२७) कुन्दरू के रस के साथ लेने से सब प्रकार के विष उतरें।

[शेष पृष्ठ १६ पर]

वै.भू. प्राणाचार्य पं० गोवर्द्धन जी शर्मा छांगाणी भिषक्केसरी

सीताबर्डी, नागपुर ।

—:():—

श्री धन्वन्तरि भगवान की असीम कृपा का कारण है कि धन्वन्तरि का आज गुप्तसिद्ध प्रयोगांक निकल रहा है। संचालक चि० देवीशरण के आग्रह-वश ये प्रयोग जगदुपकारार्थ दे रहा हूँ। आतशक (गरमी-उपदंश), सुज़ाक आदि के रोगी अनेक कच्ची-पक्की रसायनों को खाते हैं। प्रथम रसायन का प्रभाव कुछ समय में जाता रहता है। फिर दुबारा सेवन करते हैं। कुछ प्रभाव होता है; परन्तु प्रथम बार जैसा नहीं प्रभाव नष्ट होने पर फिर वही सूझती है; परन्तु देखा गया है कि रसायन जवाब दे देती है। कुछ भी लाभ नहीं होता। रोगी संकट में पड़ जाता है। वैसे समय में भी प्रभाव करने वाली एक पक्की रसायन लिखता हूँ। इसमें उतार चढ़ाव नहीं होता, क्योंकि पक्की है। दूसरी विशेषता यह है कि रसायन का प्रमाण गोली में कम होते हुए भी काम अच्छा करती है।

सब-सिद्धि रसायन—

—रसकपूर पपड़िया एक तोला लेकर उसकी बारीक कपड़े में पोटली बांध लें और १ बेंगन में युक्ति पूर्वक चीरा लगाकर रस—कपूर की पोटली रखकर दबा दें। फिर गोबरी या कंडों की निर्धूम अग्नि में पोटली वाले बड़े बेंगन का भाटत्र (भर्ता) नीचे-ऊपर अंगारे देकर तब तक बनावें जब तक वह पोटली बेंगन के रस को न चूसले। फिर दूसरे बेंगन में चीरा लगा पोटली रख कर भर्ता बनावें। इस प्रकार कम से कम ५१, मध्यम पक्ष से ६१ और अधिकाधिक १०१ ताज़े-मोटे बेंगनों में स्वेदन कर पोटली को निकाल लेवें और ठंडी हो जाय तब ठंडे पानी से धो डालें।

इस क्रिया के बाद हरड़, बहेड़ा, आंवला, प्रत्येक सात-सात तोले ज़रा कूट कर मिट्टी की बड़ी हांडी में डालकर आधी से अधिक पानी से भर चूल्हे पर चढ़ा कर दौला-यंत्र विधि से वह पोटली को जल में डूबी रहने दें और स्वेदन करें। ध्यान रहे कि पोटली-हांडी की पैंदी से न लगने पाये। यह क्रिया त्रिफला का काढ़ा रबड़ी सा गाढ़ा हो जाय तब तक करें, फिर उतार कर जब हांडी काढ़े सहित ठंडी होजाय तब पोटली को निकाल ठंडे पानी से धो डालें। इसके बाद गाय या भैंस के १ सेर दूध में दौला-विधि से आध घंटा मन्दाग्नि से स्वेदन कर पोटली को निकाल गुनगुने पानी से धो डालें और रस-कपूर को निकाल कर सुखालें।

इस शुद्ध रस कपूर को खरल में महीन पीस लें और उसमें २॥ तोले लवंग, इलायची छोटी के दाने १ तोला तथा असली केशर ३ माशे का महीन चूर्ण मिलाकर जल के साथ मर्दन कर जंगली बेर के

श्री० छागाणी जी का जन्म जोधपुर राज्य के पोकरण नगर में संवत् १९३३ के आश्विन शुक्ला १० को प्रातः स्मरणीय पं० जीतमल जी के घर हुआ था। आप अपने सब बन्धुओं में प्रखर बुद्धि वाले हुए। आज भारत का कोई विरला ही वैद्य होगा जो छागाणी जी के नाम से अपरिचित हो। आपका विद्या-व्यासंग १४ वें वर्ष से आरम्भ होकर आज तक अव्याहत चला आरहा है। केवल पढ़ने से ही विद्या-भण्डार इतना नहीं बढता। सच तो यह है कि पूज्यपाद छागाणी जी एक छिपे हुए योगी हैं। आपमें आपके गुरुवर के वरद हस्त का प्रभाव है। इसीका कारण है कि संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि ६ भाषाओं पर आपका समान अधिकार है। आप केवल आयुर्वेद के ही नहीं न्याय, व्याकरण, साहित्यादि शास्त्रों के भी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र प्रकाण्ड पण्डित हैं। काशी आदि विद्यापीठ प्रधान नगरों से सम्मान प्राप्त हैं। आप वैद्य भूषण, विद्या-वाचस्पति, भिषक्केसरी, प्राणाचार्य, आयुर्वेद महोपाध्यायादि अनेक पदवियों से विभूषित हैं। निखिल भारतीय आयुर्वेद महा मडल आदि कई संस्थाओं के अध्यक्ष भी आप रह चुके हैं और वैद्य सम्मेलन पत्रिका आदि कई पत्रों का वर्षों सम्पादन कर चुके हैं। हिन्दू विश्व विद्यालय काशी आदि के परीक्षक रह चुके हैं, और हैं। वैद्यक में तो आधुनिक धन्वन्तरि माने जाते हैं। कट्टर सनातनी, देशभक्त, कवि और आध्यात्म-शास्त्र के प्रेमी हैं।

आप श्री धन्वन्तरि महाविद्यालय के संस्थापक एवं आचार्य हैं। सैकड़ों छात्रों को विद्या-दान दे आपने उन्हें सवथा योग्य बना दिया है। भारत के प्रायः सभी विद्वानों के साथ आपका प्रेम-पूर्वक घनिष्ठ सम्बन्ध है, मेरे पूज्य पिता जी से भी आपका स्नेह पूर्ण व्यवहार रहा था और उस नाते आप मुझ पर स्वपुत्रवत् स्नेह रखते हैं।"

—सम्पादक।

बराबर गोलियां बनालें और सूखने पर शीशी में सुरक्षित रख लेवें।

रोग की प्रबलतावस्था में सायं-प्रातः एक-एक गोली दही के चक्के में लपेट निगलवा दें। यद्यपि मुंह आती परन्तु उपर्युक्त विधि से ही देवें, ताकि खटका न रहे।

गुण—यह उपदंश (आतशक), सोज़ाक तथा गठिया पर रामबाण का काम करती है। इन व्याधियों के सिवा निर्बल को भी बलवान बना कर उसके वज़न को बढ़ाती है। इसलिये हमने इसका नाम 'सर्वसिद्धि' रक्खा है।

नोट—क्षय और ज्वर की अवस्था में भूल कर भी इसका प्रयोग न करें। परहेज़ वही जो कराया जाता है। सहजने की फली और केला जहां तक बन पड़े न खावें।

सुजाक संहार—

—कलमी शोरा और आंवलासार गन्धक दोनों को १-१ तोला लेकर एक साथ पीस डालें

और एक कड़ाही के बीच में रख कर ऊपर से चीनी के प्याले आदि से ढंक कर आटा गोबर आदि से संधि बन्द कर दें। फिर चूल्हे पर चढ़ावें और मन्द अग्नि दें। कुछ देर में औषधि पिघलकर पानी होजायगी। तब उतार लें और ठंडा होने पर, निकाल कर, खरल में डालें; इनमें ही एक तोला लाल फिटकिरी का फूला तथा एक माशा तवे पर भुना हुआ तूतिया मिलाकर पीस कर, शीशी में सुरक्षित रखलें। दवा काले रंग की होगी।

सेवन-विधि—खुराक १ रत्ती, २ तोला मक्खन में मिलाकर दिन में एक ही बार चढावें। फिर दो दिन बीच में देकर तीसरे दिन चढावें।

इस प्रकार खुराक देने से सोजाक में अवश्य लाभ होता है। बीच में जो-दो दिन छूटते हैं। उनमें पहले दिन की रात में ६ जंगी हरड़ का चूर्ण पानी के साथ लेकर सोवें, दूसरे दिन दस्त होजाने के १-२ घंटे बाद सागवान के एक बीज का चूर्ण पानी के साथ दें ताकि पेशाब साफ होता रहे। इस प्रकार करके तीसरे दिन पुनः एक खुराक मक्खन में सुजाक-संहार की देवें।

पथ्य-तैल, मिर्च, गरम चीज़, शराब आदि से परहेज़ करें।

गुण—इसके सेवन से नया-पुराना हर तरह का सुजाक अवश्य नष्ट होता है।

[पृष्ठ १३ का शेष]

(२८) कुन्दरू की जड़ पीसकर उसी के साथ दो गोली नित्य लेते रहने से सुजाक नष्ट हो।

(२९) पुराने गुड़ के साथ लेने से प्रमेह नष्ट हो।

(३०) अडूसे का रस और शहद या मिश्री के साथ गोलियां लेने से श्वास और खांसी दूर हो।

(३१) नित्य बकरी के दूध से सवेरे-शाम लेने से शारीरिक क्षय नष्ट हो और सुस्ती, दुबलापन दूर होकर शरीर शुद्ध हो।

(३२) जीरा और चीनी के साथ लेने से ज्वर उतरे।

(३३) चन्दन के साथ गोली घिस कर लेप करने से बाह्य कृमि नष्ट हों या कृमि गिर जावें।

(३४) नीम की पत्ती या पत्तियों का रस और नौसादर तथा गोली मिलाकर लेप करने से दाह शान्त हो।

(३५) नीम का रस, कतीरा और गोली पीसकर मालिश करने से शरीर पर पड़े हुए दाग नष्ट हों। इसके सेवन के समय घी-दूध और सौम्य आहार लें, तैल, खटाई, मिर्च और अन्य खट्टी चीज़ों से परहेज़ रखें।

कृपया अपना ग्राहक नम्बर, पत्र-व्यवहार करने के लिये ऊपर के रेपर पर से अभी नोट कर लिजिये।
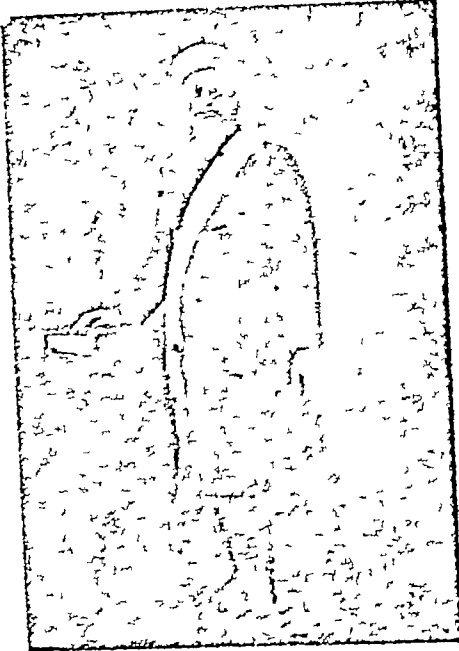
वैद्यरत्न कवि. प्रतापसिंह जी रसायनाचार्य, हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस।

साहित्याचार्य पं. घनानन्द जी पंत विद्यार्णव, सीताराम बाजार, देहली।

पं० देवदत्त जी शर्मा वैद्यशास्त्री, शकरगढ़ (गुरदासपुर)

प्राणाचार्य पं० सुन्दरलाल जी शुक्ल, आयुर्वेद पंचानन जब्बलपुर।
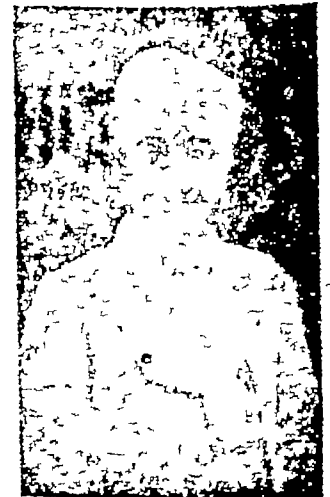
रसायनाचार्य, कविराज श्री० प्रतापसिंह जी वैद्यरत्न,

प्रोफेसर एण्ड सुपरान्टेडेंट आयुर्वेद कालेज फार्मेसी,
हिन्दू यूनिवर्सिटी, बनारस।

पिता का नाम—श्रीमान् पं० गुमानीराम जी शर्मा।

उम्र—५५ वर्ष जाति—ब्राह्मण।

विषय-प्रयोग—१—क्षय रोग २—इक्षुमेह

"श्री० कविराज जी आयुर्वेद के माने हुए विद्वान एवं प्रसिद्ध चिकित्सक हैं। आपकी विद्वत्ता पर मुग्ध होकर भारत सरकार ने आपको 'वैद्यरत्न' की उपाधि प्रदान की है। कई अन्य प्रतिष्ठित संस्थाओं ने भी आपको उपाधि और पदक प्रदान किये हैं। अखिल भारतवर्षीय वैद्य-सम्मेलन के सभापति एवं प्रधान मंत्री रह कर अपने अथक परिश्रम से आप पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। आपके अनेकों शिष्य भिन्न-भिन्न स्थानों पर सफलता पूर्वक चिकित्सा कर रहे हैं। आप बाबा काली कमली वालों के विद्यालय और ललितहरि आयुर्वेद कालेज के प्रिंसिपल रह चुके हैं और आज संसार-प्रसिद्ध हिन्दू विश्व विद्यालय में प्रोफेसर एवं रसायन-शाला के सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। स्थानाभाव के कारण आपकी पूरी उपाधियां एवं विस्तृत परिचय देना सम्भव नहीं है। आप धन्वन्तरि चिकित्साऽनुभवांक के विशेष सम्पादक रह चुके हैं, अतः धन्वन्तरि के पाठक आपसे परिचित हैं। आपके जो दो प्रयोग प्रकाशित किये जारहे हैं, आशा है उनसे पाठकों का उचित लाभ होगा।"

—सम्पादक।

१—क्षयरोग हर रसायन—

पिष्टि कहरवा १ माशे	पिष्टि पन्ना १ माशे
पिष्टि माणिक्य १ माशे	स्वर्ण भस्म १ माशे
मुक्ता भस्म १ माशे	प्रवाल भस्म १ माशे

छोटी इलायची के बीजों का चूर्ण १ माशा
उत्तम केशर पिसी ६ माशे
वंसलोचन असली पिसा १ तोला

विधि—

कहरवा, पन्ना और माणिक्य को पृथक-पृथक गुलाब जल में घोट कर पिष्टि तैयार करनी चाहिये। वस्तुएं किसी विश्वस्त स्थान से ही लेनी चाहिये। फिर सब औषधियों को मिलाकर अच्छी तरह घोट कर ६-६ रत्ती की पुड़िया बनालें; कुल ४८ पुड़ियां बनेंगी। १-१ पुड़िया प्रातः-सायं काल बकरी के धारोष्ण दूध के साथ निम्नप्रकार देनी चाहिये। यदि सम्भव हो तो ताजा ताड़ी भोजन के बाद एक पाव पिला दिया करें। इसके सेवन से ४० दिन में रोगी ज्वर मुक्त होकर स्वस्थ होने लगता है।

व्यवहार विधि—

एक कांच के गिलास पर स्वच्छ बारीक कपड़ा बांध कर इस पर आवश्यकतानुसार मिश्री का चूर्ण तथा मिश्री के बीच में दवा की एक पुड़िया रख कर बकरी का दूध दुहना चाहिये। इस प्रकार दूध के साथ मिश्री व दूध घुल कर ग्लास भर

जायगा। कपड़ा हटा कर उस दूध को अविलम्ब रोगी को पिलादें।

विशेष-वक्तव्य—

इस प्रयोग को हमने कई रोगियों पर व्यवहार किया है क्षय की प्रारम्भिक अवस्था में यह अच्छा लाभ करता है, किन्तु अवस्था-विशेष से इस प्रयोग के साथ ही या पृथक रूप से अन्य औषधियां भी दी जा सकती हैं। एक रोगी को ज्वरावेग रोकने के लिये हमको जयमंगल रस की १-१ मात्रा ज्वर चढ़ने के समय से पूर्व देनी पड़ी, दूसरे को कास की उग्रता में वासारिष्ट का प्रयोग करना पड़ा। साधन सम्पन्न व्यक्ति यदि बकरी को केवल वासा, बबूल की पत्ती और नीम की पत्ती खिलावें और उस बकरी का दूध क्षय-रोगी को दें तो अधिक सफलता मिलती है। क्षय रोगी की यदि पाचन-क्रिया ठीक न हो तो उसे सुधारने का ध्यान अवश्य रखना चाहिये। (सं०)

२—इक्षुमेह हर रसायन—

विजयसार लकड़ी १ तोला के छोटे टुकड़े कर १ कांच के गिलास में पानी भर कर उसमें डाल दें और ४-५ घन्टे रक्खा रहने दें। इस प्रकार पानी में एक प्रकार का रंग आजाता है। फिर इस जल को छान कर रोगी को पिलादें।

यह योग इक्षुमेह रोगी के लिये अच्छा लाभ करता है। मैं चिरकाल से इसका प्रयोग करता हूँ।

नोट—इक्षुमेह रोगी का मूत्र अतिशय मधुर, मैला, शीतल, अस्वच्छ और गन्ने के रस जैसा होता है। —सम्पादक।

श्रीयुत वैद्यमनीषी मौजीराम जी वर्मा, पुरान पो. बालोदाबाजार के दो परीक्षित प्रयोग।

पागल कुत्ते के काटने पर शतशोनुभूत—

पुराना कम्बल (शुद्ध ऊनी शाल) के जगह से टुकड़े तोड़कर उसे बारीक २ टुकड़ा करके गुड़ में बराबर रख के खिलादें। यदि गहरा घाव हो तो परमैंगनेट पोटास पानी में मिला कर घाव धो डालें। यदि पोटास न मिले तो गरम पानी से धो दें। यह योग मेरा परीक्षित है। आज तक सैकड़ों के अनुभव द्वारा मैंने इसे शत-प्रतिशत लाभप्रद पाया है। पागलपन का कोई परहेज़ नहीं है। दवा खिलाने वालों को कसौली आदि जगह नहीं जाना पड़ता है।

बिच्छू काटने पर—

मेथिलेटेड स्प्रिट में जीते बिच्छू डंक सहित पकड़ कर ४-६ डाल दें। शीशी का कार्क मज़बूती से बन्द करदें। जहां बिच्छू ने काटा हो उसी स्थान पर रुई के फाहे से २-४ बार तरल दवा लगादें, २-४ फाहे के बाद रोता आदमी हँसता लौटेगा।

...य पं० भागीरथ जी स्वामी आयुर्वेदाचार्य,

...युर्वेद रसायन-शास्त्री, सैयद शाली लेन, कलकत्ता।

पिता का नाम—स्वामी श्री० पं० हनुमान जी शर्मा

आयु—६७ वर्ष जाति—गौड़ ब्राह्मण

प्रयोग-विषय— १-अर्श २-श्वास ३-मोतियाविन्द

४-दृष्टिमांद्य ५-मलेरिया

"श्री० स्वामी जी आयुर्वेद के उद्भट विद्वान और वनौषधि-विशेषज्ञ हैं। आपकी लिखी पुस्तकों-संदिग्ध वनौषधि निर्णय-शास्त्र, आत्म सर्वस्व आदि को विद्वानों ने अच्छा आदर दिया है। आपकी विद्वता पर मुग्ध होकर अनेकों स्थानों से ससम्मान प्रशंसापत्र प्राप्त हुये हैं। नि० भा० वर्षीय वैद्य-सम्मेलन की कई सम्भाषा-परिषदों के आप अध्यक्ष रह चुके हैं। विद्वान होने के साथ २ आप अच्छे चिकित्सक और रसायनज्ञ भी हैं। हमें आशा है कि आपके प्रयोगों से पाठकों का असीम उपकार होगा, इसीलिये आपके ५ प्रयोग जो आपने हमारे बड़े आग्रह करने पर भेजे हैं, प्रकाशित किये जा रहे हैं।"

—सम्पादक।

...र्श रोग हर दो प्रयोग—

...—नागफनी के पत्ते के कांटे चाकू से काट कर फेंक दें और पत्ते को बीच से चीर कर दो भाग करलें, दोनों पर हल्दी का चूर्ण बुरक कर एक या आध घण्टा सेंक कर गुदा पर इस पत्ते को बांध दें। इसका १० दिन प्रयोग करने से 'वातार्श' नष्ट होता है।

...—१० माशे अर्शोहर बूटी (बावली घास) लेकर ११ काली मिर्च के साथ घोट कर १० तोला पानी में छान कर पिलावें। ४० दिन पीने से रक्तार्श पित्तार्श व कफार्श नष्ट होते हैं।

...—बावली घास, बाजरा, अरहर व ज्वार के खेतों में आसानी से मिल जाती है।

"कई वर्ष हुये हरदुआगंज निवासी प्रसिद्ध कवि श्री० नाथूराम जी 'शंकर' पर किसी ने इसका प्रयोग किया था और सफलता मिलने पर समाचार पत्रों में इसका जो विवरण प्रकाशित हुआ था उसे देख मुझे भी इसे प्रयोग करने का अवसर मिला। निस्सन्देह यह बूटी रक्त रोकने में बड़ी प्रभावशाली सिद्ध हुई है। वर्षा ऋतु में ज्वार, बाजरे और मक्का के खेतों में यह बूटी बड़ी आसानी से मिल जाती है। जब तक हरी मिले हरी व्यवहार करनी चाहिये और सुखाकर रख लेनी चाहिये। यदि किसी स्थान पर न मिलती हो तो हमारे यहां से परीक्षार्थ बिना मूल्य मंगाई जा सकती है।"

—सम्पादक।

श्वास शार्दूल—

श्वेत पुनर्नवा मूल का स्वरस	५ तोला
रक्त अपामार्ग मूल का स्वरस	५ तोला
कालीमिर्च	२॥ तोला
सोभा (सोआ) का स्वरस	५ तोला

—मिला कर घोट कर चने बराबर गोली बनालें। रोज़ाना प्रातः १-१ गोली गर्म दूध या गर्म जल से दें। अच्छा लाभ करती है।

मोतिया-बिन्द—

काली मिर्च को कपड़ छन कर तमाल(तम्बाकू) पत्र के रस की २१ भावना देकर गोली बनालें। पानी या नीबू के स्वरस के साथ स्वच्छ पत्थर पर घिसकर लगाने से मोतिया-बिन्द में अच्छा लाभ होता है। इसके प्रयोग से आदमी जल्दी अन्धा नहीं होपाता।

दृष्टिमांद्य—

निर्मली के बीज ५ तोला कालीमिर्च ५ तोला —दोनों का बारीक चूर्ण कर काले सर्प की चर्बी से २१ दिन घोंट कर अंजन बना कर लगाने से दृष्टिमांद्य मिटता है।

मलेरिया—

नांले थूथे को ३ मा. घोटकर या चूर्ण बना जल के साथ ३ बार खाने से मलेरिया शीघ्र व शर्तिया नष्ट होता है।

नोट—इसके सेवन करने के दिन रोगी को केवल दुग्ध पर रखें। अन्य कोई चीज़ खाने को न दें।

वैद्यशास्त्री श्री. सूरजमल जी, दिगम्बर जैन औषधालय, मकसी (उजैन) के दो अनुभव में आये पूर्व प्रकाशित प्रयोग।

कृष्णादि चूर्ण—

धन्वन्तरि के सन् १९४१ के किसी अङ्क में यह लिखा था कि बच्चों के बुखार, दस्त, श्वास-कास, वमन पर निम्न प्रयोग रामबाण है :—

पीपल मोया अतिविषा अङ्गी मधु सङ्ग देय।
श्वास-कास ज्वर दस्त कफ बालक के हर लेय॥

इस नुस्खे में मैंने यह फेर-फार किया है कि इन चारों चीज़ों का चूर्ण बना और पान के रस में सीरा बना यानी पान के रस में इन चारों चीज़ों के चूर्ण को उबाल कर २-२ रत्ती की गोली बनालीं, और सैकड़ों बच्चों पर देकर आज़माई जो हर वक्त लाभकारी सिद्ध हुई।

अर्कपुष्पादि वटी—

श्री रामनारायण जी वैद्य मुत्रीमगंज बनारस ने जो प्रयोग अनुभूत योगमाला १५ अप्रैल सन् १९४९ में प्रकाशित कराया है वह पेट दर्द अजीर्ण, क़य, दस्त, ख़ास तौर से बच्चों के दस्त, दुग्ध वमन, पेट दर्द पर रामबाण है। मैंने स्वयं ५ सेर गोली बनाकर एक साल में वितरण कर दी हैं। नुस्खा यह है :—

आक की मुंह बन्द कली २ छटांक
जीरा भुना नौसादर सेंधा नमक
मरिच काला नमक अम्ली जवाखार
—प्रत्येक १-१ तोला

—चने बराबर गोली बनावें।

श्री० वैद्य जयरामदास जी स्वामी, भिषगाचार्य,

प्रोफेसर—महाराज संस्कृत कालेज, जयपुर।

"श्री० स्वामी जी स्वर्गीय आयुर्वेद-मार्तण्ड स्वामी लक्ष्मीराम जी आचार्य के प्रिय शिष्य एव उत्तराधिकारी हैं। आप दादू पथी हैं तथा आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान एवं सिद्धहस्त चिकित्सक हैं। आप "सादा जीवन उच्च विचार" सिद्धान्त के अनुगामी हैं, जैसा कि आपके निम्न विचार से ज्ञात होगा। इस समय आप स्वामी लक्ष्मीराम चिकित्सालय के प्रधान चिकित्सक तथा महाराज संस्कृत कालेज जयपुर के सम्माननीय प्रोफेसर हैं। हमारे बहुत आग्रह करने पर आपने अपना केवल एक प्रयोग प्रकाशनार्थ भेजा है तथा चित्र प्रकाशित कराने के लिये तो आप सहमत ही नहीं हुए। आशा है पाठक आपके प्रयोग रत्न को विवेकपूर्ण ढंग से व्यवहार कर लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।

—आप के विचार—

"मेरा ख़याल है कि आयुर्वेद के सिद्धांत पर जब हम विचार करते हैं तो सभी प्रयोग गुप्त तथा सिद्ध हैं, यदि प्रयोक्ता ठीक है तो; अन्यथा यदि प्रयोक्ता ठीक नहीं है तो सिद्ध प्रयोग भी अपना कुछ असर नहीं कर सकते पर्व बजाय लाभ के बहुत बड़ी हानि कर देते हैं। इसलिये आयुर्वेद के प्रयोग अनुभव गम्य हैं; अनुभव ही उनको सिद्ध बनाता है।

तथापि आपका आग्रह है, इसलिये निम्नांकित प्रयोग भेज रहा हूँ। आशा है वैद्य-समाज इसका सम्यक प्रयोग कर सफलता का निर्णय करेगा।

चित्र के लिये आपने लिखा उसको मैं उपयुक्त नहीं समझता, इसलिये चित्र नहीं भेजा जा रहा है।"

—श्री० वैद्य जयरामदास जी स्वामी।

योग

मल्ल (संखिया) श्वेत	१ तोला
कज्जली (सम गंधक-पारद)	२ तोला
कत्था पपरिया उत्तम	१ तोला

विधि—इन तीनों को खरल में डाल कर जवासे के रस में खरल करके सरसों के दाने के बराबर गोली बनावें। शीतल जल के साथ सेवन करना चाहिये।

अपथ्य—इसका सेवन करते समय तैल, गुड़, खटाई मिर्च—मसाला आदि का सेवन छोड़ दें।

सावधानी—इसमें "मल्ल" विष पड़ता है. अतः प्रयोक्ता को सावधानी से व्यवहार करना या कराना चाहिये।

गुण—इसके सेवन से संधिवात (गठिया) कुष्ठ, गलित कुष्ठ, दुष्ट नाड़ी व्रण, वात-विकार, कफ विकार, अग्नि मांद्य, उदर-विकार, कास-श्वास-हिक्का आदि रोगों में अच्छा लाभ होता है।

श्री० पं० विश्वनाथ जी द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य,

प्रिंसीपल, ललितहरि आयुर्वेद कालेज, पीलीभीत।

पिता का नाम— श्री० पं० रामकिशोर जी द्विवेदी

आयु–४० वर्ष जाति— ब्राह्मण

प्रयोग विषय—१–ज्वरावेग २–फुफ्फुस प्रादाहिक-ज्वर

"श्री० द्विवेदी जी ने अपनी विद्वत्ता, परिश्रम तथा आयुर्वेद प्रेम के कारण थोडे समय में ही पर्याप्त ख्याति प्राप्त करली है। आप इस समय पीलीभीत के ललितहरि आयुर्वेद कालेज के प्रिंसिपल हैं अपने समय में आपने उक्त कालेज के आयुर्वेद-विभाग की वडी उन्नति की है। इधर आपने युक्त-प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के कार्यक्रम में बहुत वडा भाग लिया है और उसे अपने सभापतित्व एव मंत्रित्व मे लेकर उसमें क्रान्ति उत्पन्न करदी है। आप इन्डियन मेडीसन बोर्ड यू० पी० के मैम्बर और त्रिदोषालोक. वैद्य सहचर आदि कई पुस्तकों के लेखक हैं। आपके प्रयोग सरल, अनुभव पूर्ण तथा अत्युपयोगी है, आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

—ज्वरवेग हर योग—

प्रयोगकाल–इस योग का प्रयोग अधोलिखित अवस्था में करना चाहिये। जब ज्वर लगातार लग रहा हो, वेग एकसा हो, तापक्रम १०१ से १०३ डिग्री तक रहत हो, ज्वर का लक्षण संतत ज्वर की तरह हो; जैसे मियादी बुखार या टायफायड में ज्वर का क्रम होता है, तब इस योग का प्रयोग करना चाहिये।

योग—

मृत्युंजयरस २ रत्ती व स्फुटिका-भस्म ४ रत्ती मिला लें। यह एक मात्रा है। ऐसी ४ मात्रा शहद या जल के साथ देने से ज्वर शीघ्र ताप के क्रम को छोड़कर उतरने लगता है। ३ दिन देने पर ज्वर का तापमान कम हो जाता है और धीरे-धीरे ९७ या ९८ तक पहुंच जाता है। कभी-कभी इसके साथ सप्तपर्ण सत्व या चतुर्मित्र द्रव देने की आवश्कता पड़ती है किन्तु ज्वर हठी किस्म का हो वह भी उतरने लगता है। शीत ज्वर, तृतीयक, चातुर्थिक, ज्वरों के विपर्यय भेदों में जब ज्वर ४८ या ७२ घन्टे रह कर उतरता है और फिर २-३ घन्टे का अन्तर देकर पुनः चढ़ जाता है वह अनुपान ज्वर को निश्चय ही उतार देता व रोक देता है। यद्यपि ज्वर २-३ मात्रा देने के बाद से ही धीरे-धीरे कम पड़ता है किन्तु ३ दिन लगातार देने पर टायफाइड के अतिरिक्त सब प्रकार के म्यादी बुखार उतरने

लगते हैं और बिलकुल उतर जाते हैं। यह प्रयोग कई रोगियों पर किया गया है।

(१) साधारण ज्वर के वे रोगी जिन्हें ज्वर ७ दिन से लेकर ११ दिन तक लगातार रहा, किन्तु कोई उपद्रव न था तापक्रम १०३ व १०४ डिग्री तक रहता था, ३ दिन के प्रयोग से घटकर नार्मल हो गया। ४५ रोगियों पर प्रयोग किया गया। अनुपान-शहद-सुदर्शन अर्क दिया गया, ज्वर निरुपद्रव उतर गया।

(२) ज्वर के साथ साधारण कास; ज्वर ६ दिन से लगातार रहता था, उतरता न था ताप-क्रम प्रायः १०२, १०३ व १०४ डिग्री तक पहुंचता था। डाक्टर टायफाइड कह कर दवा दे रहे थे। ज्वर में शीत भी लगता था। इस अवस्था में इस योग का व्यवहार किया गया और ज्वर उतर गया। वेग तीसरे दिन कम हुआ और कम होता गया। ७ रोगियों पर प्रयुक्त हुआ, ६ का ज्वर कम होकर उतर गया। सप्तपर्ण द्रव के अनुपान से ७ वें का भी ज्वर उतर गया।

(३) ज्वर का वेग बना रहना, तापमान १०० से कम न होना व प्रातः इसी में जाड़ा लग कर बढ़ जाना और १०४ डिग्री तक जाना। इस अवस्था के १० रोगियों में चातुर्मित्र द्रव के साथ देने से शीघ्र ज्वर का वेग कम हो गया व ज्वर पुनः न बढ़ा। पूर्वोक्त योग को दिन में तीन चार देना पड़ता था व हर बार चातुर्मित्र द्रव देना पड़ता था। सप्तपर्ण सत्व १ माशा सुदर्शनार्क २॥ तोले में मिला लें यह एक मात्रा द्रव हुआ। इसी प्रकार २ छटांक सुदर्शनार्क में १ माशे, सप्तपर्ण सत्व १ माशे, कल्पनाथ सत्व, १ माशे, कुटकी सत्व, ½ माशे, कुचला त्वक सत्व मिलाने से ४ मात्रा चतुर्मित्र की बन जाती हैं। इस प्रकार मृत्युंजय स्फुटिका योग को देने से ज्वर के संतत वेग का क्रम दूर होजाता है। इस प्रयोग का अनुभव जाड़े-बुखार या शीत ज्वर में देकर लाभ उठाया गया है।

नोट—हम इसे टायफाइड पर भी प्रयोग कर रहे हैं। संभावना होती जारही है कि इसके द्वारा टायफाइड भी कम समय में आराम किया जा सकेगा, पूर्ण प्रयोग करके फलाफल प्रकाशित किया जायगा।

√ पार्श्वशूल हर (फुफ्फुस प्रादाहिक ज्वर में)

प्रयोग-काल—शीत लग कर ज्वर का वेग बढ़ना, कास का होना, वक्ष में शूल होना, भीतर फेंफड़ों से स्वर में कूंजन व गुंजन का निकलना, किंतु ज्वर वेग से लगातार बना रहना अर्थात् संक्षेप में न्यूमोनिया के लक्षण से सब लक्षण मिलते-जुलते लक्षणों का होना। इस दशा में अधोलिखित योग देना चाहिये।

योग-मल्लसिंदूर १ रत्ती, चंद्रामृतरस ४ रत्ती, शृंग भस्म, १॥ रत्ती, नासार (नवसादर) १॥ माशे, मिलाकर ४ मात्रा उष्णोदक से दें।

इसको प्रति चार घन्टे पर उष्ण जल से देना चाहिये। यदि वक्ष में दर्द अधिक हो तो दशमूलार्क को उष्ण करके प्रति बार १॥ तोले देने से शीघ्र लाभ होता है।

गुण—वह योग कफ को द्रव करके निकालता है। फेफड़ों की शोथावस्था को मृदु करके खांसी को कम करता है। कफ सरलता से निकलने लगता है। ज्वर का वेग कम होजाता है। वक्ष वेदना कम होजाती है। इस योग को एम.बी. ६९३ की बराबरी का पाया गया है।

प्रयोग—

१—२५ रोगियों पर इसका प्रयोग उपर्युक्त लक्षण रहने पर किया गया है। सबको सफलता मिली है। शतप्रतिशत लाभ हुआ है। अधिक बार देने (प्रति दो घन्टे) पर इससे रूक्षता की वृद्धि पाई गई है। श्वास की वृद्धि, कुछ अरति (बेचैनी) पाई गई है। प्रतिकारार्थ गिलोय-सत्व, प्रवाल भस्मको क्रमशः २ व १ रत्ती की एक मात्रा बना कर प्रयोग करने पर लाभ होगया है।

२—साधारण वातज कास के लक्षण से युक्त (ज्वर हीन) ११ रोगियों पर प्रयोग करने पर कास की कमी पाई गई है।

३—प्रतिश्याय की तीव्रता में इसके प्रयोग से अत्यन्त लाभ प्राप्त किया गया है, जब कि प्रतिश्याय शुष्क होजाता है और नासिका में खुश्की मालूम होती है, शिर में दर्द होने लगता है, इस दशा में उष्णोदकानुपान से देने पर लाभ पाया गया है। प्रति ४ घन्टे के बाद प्रयोग करने पर यह लाभ होता है।

नोट—वक्ष में वेदना होने पर विष्णु तैल का अभ्यंग व सेक करना विशेष सहायक होता है। यदि धुत्तूर या अलसी का प्लास्टर लगाया जाय तो और भी शीघ्र लाभ होता है।

मलेरिया की सस्ती व अचूक दवा—

डा. एन. जी. बाघ, तार बाजार, काटोल, नागपुर सी. पी.

मलेरिया (विषम ज्वर) इनफ्लुएञ्जा आदि पर निम्न-लिखित प्रयोग ५ साल से अपने रोगियों पर व्यवहार कर रहा हूँ। ७५ प्रतिशत लाभ करता है। सस्ता भी होने के कारण धर्मार्थ वितरण करने वालों के लिये उत्तम प्रयोग है।

करंज की मिंगी १ तोला　　कुटकी १ तोला
पिप्पली बोर्डी　　६ माशे

—इसका चूर्ण कर ४-४ रत्ती की गोली बनाकर अथवा चूर्ण रूप में ही दिन में तीन बार पानी के साथ देने से मलेरिया बुखार ३ दिन में चला जाता है।

नोट—यदि उपर्युक्त चूर्ण में चिरायता एवं गिलोय के क्वाथ की ५-५ भावना देदी जाय तो औषधि के गुणों में वृद्धि होजाती है। —सम्पादक।

कविविनोद श्री० पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्यभूषण,

अध्यक्ष—"अमृतधारा" लाहौर ।

पिता का नाम— श्री० पं० मूलचन्द जी शर्मा

आयु—६७ वर्ष जाति—ब्राह्मण ।

"श्री० पं० जी के विषय में अधिक लिखना बेमानी ही है, क्योंकि आपके द्वारा आविष्कृत "अमृतधारा" ने आपकी ख्याति भारत के कोने २ में फैला दी है। भारत की सभी जनता जानती है कि आपने अपनी कुशाग्र बुद्धि एव व्यापार-कुशलता से अपने जीवन मे किस प्रकार उन्नति की है। आप अनेकों पुस्तकों के लेखक व 'देशोपकारक' पत्र के सम्पादक हैं। कलकत्ता से 'कविविनोद' एव अ० भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन द्वारा "वैद्य भूषण" की उपाधि से आप सम्मानित किये गये हैं। पुरुषो के विशेष रोगों के आप विशेषज्ञ हैं। वीर्य-विकार के लिये आपका निम्न प्रयोग अत्युपयोगी है। इस प्रयोग के अन्तर्गत सात प्रयोग हैं। उनमें से कोई भी एक बनाकर यदि व्यवहार किया जाय तब भी वीर्य-विकार रोगी का उपकार ही होगा।" —सम्पादक।

१—ब्राह्मी १ पाव शीशम के ताजे पत्ते आध पाव हरड़ १ पाव, गौखरू एक पाव, बहुफली एक पाव; इनको ८ गुना जल में औटा कर घन बनावें। लगभग २० तोला घन(Extract) प्राप्त होगा।

२—कीकर की फली अधपकी १॥ सेर लेकर सब कूट करके ८ गुना पानी में मिला कर घन तैयार करें, यह भी लगभग पावभर घन तैयार होगा।

३—बड़ (वट, बरगद) के पत्ते जो पक कर पीले हो गए हों, ३ सेर लेकर ८ गुना जल में ३ दिन भिगों कर औटा कर लगभग एक पाव घन तैयार करलें।

४—शीशा शुद्ध ५ तोला कड़ाही में डाल कर कोयलों की तीव्र अग्नि पर रख कर शोरा की चुटकी देकर पीतल के डण्डे से हिलाते जावें। मटियाले रंग की राख होजावे तो घृत कुमारी के रस में खरल करके टिकिया बना कर सुखा कर दो प्यालियों में बंद करके ४ सेर उपलों की अग्नि में फूंक दें। घी कुमार के ७ पुट देकर कीकर के पत्तों के रस के ३ पुट और केला के फूल के रस का एक पुट दे कर भस्म करें। पीले रंग की उत्तम भस्म होगी।

५—संगयशब दो तोला संगजराहत दो तोला मोती के टुकड़े या छिलका या अनविंधे मोती २ तोला, तीनों को पीस कर २ दिन गुलाब के अर्क में २ दिन कमल या नीलोत्पल के रस या हिम में और दो दिन गावज़ुबान के फूल के हिम या क्वाथ में खरल करके टिकिया बना कर सुखा कर २ प्यालियों में बंद करके २० सेर कण्डों की अग्नि देकर भस्म तैय्यार करें।

६—गोदंती ५ तोला, वहरोजा २॥ तोला, बकरी का दूध १ पाव एक मिट्टी के सकोरे में डाल कर १५-२० सेर को आग में फूंक दें, गोदंती भस्म निकाल कर पीस कर रखलें।

७—चांदी के वर्क या चूरा १ तोला, सोने के वर्क या चूरा ६ माशा, फौलाद का चूरा ४ तोला, मुर्गी के अण्डे का छिलका झिल्ली उतारा हुआ २ तोला, शु. पारा १ तोला सबको अच्छे खरल में डाल कर आक का दूध थोड़ा २ डाल कर १५ दिन खरल करते जावें। फिर घृत कुमारी का पत्ता लेकर चाकू से चार कर रख दें। पतला रस जो निकले, उसमें दो दिन खरल करके टिकिया बना कर सुखा कर छुनरी वाली दूधक या कांटे वाली फनदार थूहर की आध सेर लुगदी में रख कर कपरौटी कर के २० सेर कण्डों की अग्नि में फूंक दें और पीस कर रखलें। यह भस्म बहुत काम की चीज़ है। अकेली ही सब वीर्य-विकारों को दूर करके शरीर को पुष्ट करती है। इतनी औषधि तैयार हो जाने पर अद्वितीय "वीर्य रक्षक" इस प्रकार तैय्यार करें।

प्रयोग—

ब्राह्मी आदि का घन एक पाव, घन नं० २ एक पाव, घन नं० ३ एक पाव, नं० ४ पांच तोला, नं० ५ पांच तोला, नं० ६ पांच तोला, नं० ७ पांच तोला, इमली बीज की मींगी, सत्व गिलोय वंशलोचन, इलायची छोटी, वंग भस्म, मूंगा, कौड़ी पीली भस्म, प्रत्येक ५ तोला; कूटने वाली औषधियों को कूट कर भस्मों के साथ मिला कर घनों को किंचित गर्म पानी में घोल कर सब चीज़ें मिला दें और ३-३ रत्ती की गोली बनावें। १ गोली प्रातः तथा सायं ताजे दूध या अन्य उचित अनुपान से खावें।

गुण—हर प्रकार का वीर्य-दोष, स्वप्नदोष, शीघ्र पतन, धातु-क्षय, प्रमेह दूर होता है। वीर्य सन्तति के योग्य होता है। मूत्राशय और वीर्याशय की गर्मी दूर होती है। हृदय की धड़कन मस्तिष्क की थकावट जाती है। फुफ्फुस विकार दूर होते हैं। राजयक्ष्मा, क्षय तक जाते रहते हैं, मूत्र की जलन, पुराना सुजाक जिसमें पीप जाती हो इससे हट जाते हैं। रक्त-विकार हर प्रकार का दूर होता है अर्थात् रक्त कहीं से भी आता हो, आराम होजाता है। रक्तार्श रक्तातिसार, रक्तमूत्र, नकसीर आदि के रक्त-स्राव को लाभदायक है, रक्त इससे बढ़ता भी है, मुख पर लाली आती है। शरीर पुष्ट होता है। यह एक ही औषधि तैय्यार करके रक्खें। यह सब वीर्य-विकारों को दूर करने के वास्ते अति उत्तम योग है।

स्वर्गीय राजवैद्य पं० मस्तराम जी शर्मा शास्त्री,

चरक फार्मेसी, रावलपिंडी ।

"श्री शास्त्री जी पंजाब प्रांतीय आयुर्वेद-समाज के चमकते रत्नों में से थे। यह लिखते हुए दुख होता है कि यह पुस्तक जिसके लिये कि आपने निम्न दो प्रयोग भेजने की कृपा की थी आपके जीवनकाल में प्रकाशित न हो सकी। आपके विद्याध्ययन में बड़ी कठिनाइयां रहीं क्योंकि आपके पिता जब कि आप केवल दो वर्ष के थे, स्वर्गवासी होगये। केवल अपनी कुशाग्र-बुद्धि एवं अध्यवसाय के बल पर ही आपने विद्या प्राप्त की और अपने अथक परिश्रम एवं व्यवहार कुशलता से अपने जीवन मे पर्याप्त ख्याति प्राप्त की। आप 'आचार्य' एवं 'चन्द्रोदय' पत्रों के सफल सम्पादक तथा अनेक पुस्तकों के लेखक व टीकाकार थे। आप जैसे अनुभवी चिकित्सक, प्रकाण्ड आयुर्वेदज्ञ एव योग्य शिक्षक के निधन से पंजाब प्रान्त ही नहीं समस्त भारत के आयुर्वेद समाज का एक प्रकाशमान सितारा अस्त होगया।" —सम्पादक।

मधुमेह पर अनुभूत योग—

हिंगुल १ तोला अभ्रक पत्र पर रखकर अग्नि-पर चढ़ावें; उस पर ६ तोला नारी-दुग्ध का चोआ दिया जाय फिर ६ तोला नारी-दुग्ध में पकाया जाय, फिर उस हिंगुल की डली को कपित्थ फल-कवीर अर्थात् (कैथ) में बन्द कर २० उपलों की आग दे दें, स्वांग शीतल होने पर उसमें से निकाल लें, यह अग्नि-स्थाई हो जायगा तथा रक्तवर्ण ही रहेगा।

उपरोक्त हिंगुल	सुहागा चौकिया
हींग शुद्ध अफीम शुद्ध	१-१ तोला

—आमिया हल्दी तथा नीबू के रस की ७-७ भावना देकर फिर इसमें निम्नांकित औषधि मिलावें।

चन्दन सफेद	तवाशीर असली
जाफरान (केशर)	बुरादा हाथी दांत

— प्रत्येक ६-६ माशा

कौंच के बीज	४२ तोला
जीरा काला	१ तोला

—कीकर गोंद में गोली बनावें।

मात्रा—४ रत्ती जल के साथ सेवन करने से १५ दिन में मधुमेह नष्ट हो जाता है।

व्रणान्तक रसायन—

श्वेत संखिया	हिंगुल	१-१ तोला
कत्था		३ तोला

—आर्द्रक रस में सरसों प्रमाण गोली बनावें।

अनुपान—दुग्ध, घृत।

रोग-रक्त-विकार, व्रण में अत्युपयोगी है।

सावधानी—इसमें मल्ल विष का सम्मिश्रण है। अतः इसके निर्माण एवं प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिये।

कवि० श्री० उपेन्द्रनाथदास काव्य-व्याकरण-सांख्यतीर्थ,

भिषगाचार्य, प्रोफेसर आयुर्वेद एण्ड यूनानी तिब्बिया-कालेज, देहली।

पिता का नाम— श्री० राजमोहन दास जी

आयु—५२ वर्ष जाति—कायस्थ।

प्रयोग विषय—१ सुज़ाक २—कुकर-कास।

"श्री० कविराज जी आयुर्वेद के धुरंधर विद्वान और पीयूषपाणि चिकित्सक हैं। आपने विधिवत् अध्ययन करके काव्य, व्याकरण एवं साख्य विषय में उच्च उपाधि प्राप्त की हैं। भारत के जो इने-गिने आयुर्वेद शास्त्र-वेत्ता हैं उनमें आपकी गणना की जाती है। आप आयुर्वेद एवं तिब्बिया कालेज के सन् १९२२ से सीनियर प्रोफेसर और सन् १९४४ से नि० भा० वर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ के प्रधान-मंत्री हैं। आपने कई उत्तम सारगर्भित पुस्तक लिखकर आयुर्वेद-समाज में अपनी विद्वत्ता की धाक बिठा दी है। आपके बहुत से छात्र आज सफलता पूर्वक चिकित्सा कर रहे हैं। धन्वन्तरि पर आपकी सदैव से ही कृपा रही है और उसी के फलस्वरूप हमारे विशेष आग्रह पर किसी प्रकार समय निकाल कर आपने यह दो प्रयोग हमको प्रदान किये हैं। आशा है पाठकों को इनसे उचित लाभ होगा।"

—सम्पादक।

गनेरिया (सुज़ाक) के लिये—

असली चंदन का तैल १ तोला

वंशलोचन कीकर गोंद, सफेद कत्था,

छोटी इलायची, —प्रत्येक ६-६ माशे

अर्क गुलाब २५ औंस

निर्माण-विधि—अर्क गुलाब व चंदन के तैल को छोड़ कर शेष वस्तुओं को पृथक-पृथक बारीक कर, चन्दन के तैल में मिलाकर खरल में घोटें। अच्छी प्रकार घुट जाने पर गुलाब जल में मिलालें।

सेवन-विधि—प्रातः सायंकाल १-१ औंस पिलावें; औषधियाँ शीशी में नीचे बैठ जाती हैं, अतः पीने के समय शीशी को अच्छी प्रकार हिला लिया करें।

नोट—नवीन रोग में १ बोतल दवा सेवन करने पर रोग नष्ट होता है। तथा पुरातन रोग में ४-५ बोतल तक पीना पड़ता है। लेकिन नवीन व पुरातन दोनों सुज़ाक अवश्य नष्ट होते हैं।

कुत्ता खांसी (कुकर-कास) पर—

अर्क (आक) के फूल तथा सैंधव लवण दोनों को लें। एक मिट्टी की हाण्डी में कुछ अर्क-पुष्प रख कर ऊपर से सैंधव चूर्ण छिड़क दें। फिर अर्क पुष्प रख कर लवण बुरक दें। इस प्रकार जब हांडी भर जावे तो मुख बन्द करके गजपुट में अग्नि दें। शीतल होने पर निकाल कर पीस कर शीशी में रखलें।

प्रयोग-विधि—दिन में ३-४ बार ३-४ रत्ती की मात्रा में मधु के साथ देना चाहिये। इसके सेवन से कुकर-कास को ७ दिन में अवश्य लाभ होता है।

❀ धन्वन्तरि के दो यशस्वी लेखक ❀

कविराज श्री. उपेन्द्रनाथ दास जी
प्रोफेसर आयुर्वेद एवं यूनानी
तिब्बी कालेज, देहली।

श्री० पं० चन्द्रशेखर जी जैन, शास्त्री
न्यायायुर्वेदाचार्य, जब्बलपुर।

श्री० पं० श्रीदत्त जी शर्मा वैद्यराज रायबहादुर,

आनरेरी मजिस्ट्रेट एण्ड सबजज, भिवानी।

प्रयोग विषय— १ ब्लडप्रैसर (हृद्रोग) २ फुफ्फुस-सन्निपात

"श्री० वैद्यराज जी हिसार प्रांत के प्रतिष्ठित विद्वान, प्रतिभाशाली चिकित्सक एवं धनी व्यक्ति हैं। आपका जन्म हिसार प्रान्त में एक ग्राम में गौड़ ब्राह्मण कुल में हुआ। आपने विभिन्न स्थानों पर सक्रिय शिक्षा-प्राप्त कर उच्च शिक्षा प्राप्त समुदाय में आयुर्वेद का चमत्कार दिखाकर उन्हें इस पद्दलित पद्धति का भक्त बनाकर आयुर्वेद की अटूट सेवा की है। आपने परिश्रम से द्रव्य एकत्रित कर तथा स्वयं दान देकर कई धर्मार्थ चिकित्सालय चालू कर जनता की सेवा के साथ आयुर्वेद का प्रचार किया है। इस समय आप वानप्रस्थी रूप में श्री० बाबा काली कमली वालों के क्षेत्र में रहकर आत्मज्ञान -मंडल की योजना को सफल बनाने का उद्योग कर रहे हैं। अभी आपको श्री० शमशेर जंग बहादुर महाराजा साहिब बहादुर नैपाल ने धार्मिक कार्य में लगाने के लिये ६१०००) प्रदान किये हैं। आशा है आपके प्रयत्न और प्रभाव से आयुर्वेद-समाज का असीम उपकार होगा। यह हमारा सौभाग्य है कि हम एसे वयोवृद्ध और अनुभवी चिकित्सक के प्रयोग पाठकों को समर्पित कर सके हैं।"

—सम्पादक

आलू बुखारे उत्तम व साफ २० तोला लेकर रात्रि को १ सेर पानी में भिगोदें। प्रातःकाल मसल छानकर डेढ़ पाव चीनी डालकर किमाम बनालें और निम्न औषधियां डालकर अवलेह तैयार करें।

बनाब की साफ पत्ती	२॥ तोला
सौंफ उत्तम	२॥ तोला
गुलाब के फूल (छाया शुष्क)	२॥ तोला

—इनको बारीक कर डालना चाहिये।

गुण—इसके सेवन से ब्लडप्रैसर में बड़ा लाभ होता है। हृद्रोग की साधारण अवस्था में भी यह अत्युपयोगी है। मुक्ता भस्म या अकीक भस्म मिलाकर देने से पूर्ण लाभ होता है।

नं० ६९३ जैसा प्रयोग—

मुक्तापिष्टी	१ तोला
जहर मोहरा खताई	२ तोला
कस्तूरी उत्तम	१ तोला
केशर ३ तोला	जायफल ४ तोला
जावित्री	५ तोला
लवङ्ग	६ तोला
तुलसीपत्र	७ तोला
अभ्रक भस्म	८ तोला
साबर शृङ्ग भस्म	९ तोला

निर्माण-विधि—सभी चीजों का बारीक चूर्ण कर अद्रक रस की ५ भावना दें। फिर ब्राह्मी

श्री. वैद्यराज पं. यादव जी त्रिकम जी

आयुर्वेदाचार्य, बम्बई ।

"श्री० आचार्य जी से आयुर्वेद-समाज का एक छोटे से छोटा व्यक्ति भी भलीभांति परिचित है, अतः आपके विषय में अधिक लिखना 'सूर्य को दीपक दिखाना' मात्र होगा । आप अनेक आयुर्वेद ग्रन्थों के रचियता, सम्पादक व टीकाकार, सुप्रसिद्ध सफल चिकित्सक, प्रतिभाशाली शिक्षक एवं आयुर्वेद-आकाश के देदीप्यमान सितारे हैं । आपका निम्न प्रयोग धन्वन्तरि परीक्षित प्रयोगांक में प्रकाशित हुआ था जिसे अनेक प्रयोक्ताओं ने पूर्ण प्रभावशाली बताया है ।" —सम्पादक ।

सुदर्शन घन वटी—

सुदर्शन चूर्ण के द्रव्यों को मोटा-मोटा कूट कर रखलें । ५ सेर चूर्ण तथा एक सेर करंजुआ (कंटकी करंज) की ताजी पत्ती कुटी हुई दोनों को अठगुने (४८ सेर) जल में औटावें । चतुर्थांश रहने पर छान लें । छान को पुनः अठगुने जल में औटावें और चतुर्थांश रहने पर छान लें । दोनों बार के जल को मिलाकर औटावें, गाढ़ा होने पर फिटकरी का फूला ५ तोला, निम्ब पत्र में फुंकी गोदन्ती हरताल भस्म ५ तोला, मिलाकर चने के बराबर गोली बनालें ।

विषम ज्वर वाले रोगी को ३-३ घंटे के अन्तर से २-२ गोली जल के साथ दें ।

[पृष्ठ २६ का शेष]

स्वरस की ५ भावना दे चने बराबर गोली बनावें।

गुण—यह गोली अनुपान भेद से कफाधिक्य वाले सभी रोगों पर लाभ करती हैं। विशेष-कर निमोनियां, फेफड़े की व्याधि या, ज्वर तथा आंत्रिक ज्वर (मोतीझरा) मंथर ज्वर पर अद्भुत चमत्कार दिखाता है । सन्निपात ज्वर में भी लाभप्रद है ।

विशेष वक्तव्य—

"आप श्री० यदसाहब जी ने पाठकों का ऐसा प्रयोग भट किया है जिसकी प्राप्ति के लिये वैद्यसमाज चिरकाल से इच्छुक था । एम० बी० ६६३ का प्रयोग आज एलोपैथिक चिकित्सक के अलावा सर्व-साधारण ही नहीं आयुर्वेदीय चिकित्सक भी कर रहे हैं । आयुर्वेदीय चिकित्सा के भक्त जो एलोपैथिक औषधि व्यवहार न करने का घोर विरोध करते हैं एम० बी० ६६३ के समान आयुर्वेदीय औषधि न बता सकने के कारण निरुत्तर होजाते हैं । पाठकों को इस प्रयोग की परीक्षा करनी चाहिये और इसको भिन्न-भिन्न रोगों पर प्रयोग करके फलाफल सूचित करना चाहिये । भगवान धन्वन्तरि की कृपा रही तो आपका सेवक धन्वन्तरि पैंसुलिन जैसी औषधि भी आयुर्वेद-समाज को भेंट कर सकेगा ।"

—सम्पादक ।

श्री. पं. रघुबरदयाल जी भट्ट वैद्य,

काव्यतीर्थ, नौघड़ा; कानपुर।

पिता का नाम— श्री० पं० यमुनानारायण जी भट्ट

उम्र - ६४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

विषय—१-मधुमेह २-वाजीकरण ३-सन्तति का वर्ण ४-वन्ध्यत्व

"श्री० भट्ट जी कानपुर के प्रतिष्ठित एवं ख्याति प्राप्त चिकित्सकों में से एक हैं। आपको कलकत्ता की प्रतिष्ठित संस्थाओं से आयुर्वेद मार्तण्ड एवं भिषग्रत्न की उपाधि प्राप्त हुई है। नि० भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन के कार्यों में भी आपने जीवन भर सहयोग प्रदान किया है। आप बालरोग विशेषज्ञ हैं। आपने हमारे विशेष आग्रह पर अपने वास्तविक परीक्षित प्रयोग प्रकाशनार्थ भेजकर अपने उदार स्वभाव का परिचय दिया है।" —सम्पादक।

मधुमेह-नाशक चूर्ण—

जामुन की पत्ती, बकायन की पत्ती, मकोय की पत्ती, बेलपत्र, गुड़मार —पाँचों समभाग लेकर बारीक कपड़-छन चूर्ण करलें।

मात्रा—१ माशे से ३ माशे तक।

समय—प्रातः-सायं और यदि हो सके तो मध्यान्ह में भी केवल जल के साथ सेवन करावें।

गुण—इससे बहुमूत्र और मधुमेह दोनों में लाभ होता है।

आजकल भद्र पुरुषों में मधुमेह एवं उसके सहयोगी बहुमूत्र का अधिक प्रसार देखा गया है। विद्वान चिकित्सकों का मत है कि मधुमेह की उत्तम चिकित्सा—भोजन-व्यवस्था का नियमित कर देना है। अर्थात् ऐसे पदार्थों का जिनसे शक्कर या मूत्र अधिक उत्पन्न हो सेवन बन्द कर देना चाहिये। भोजन में जौ-चना की रोटी, पालक-बथुआ, मकोय आदि पत्र-शाक के अलावा बैंगन, भिण्डी आदि खा सकते हैं, परन्तु चावल और आलू को पूर्ण रूप से छोड़ देना चाहिये। घी अधिक न दें। बिना शक्कर के दूध पीने में कोई हानि नहीं। वसन्त कुसुमाकर रस और बृहद् वंगेश्वर इस रोग के लिये प्रत्यन्त लाभप्रद औषधि है। किन्तु उक्त प्रयोग भी कुछ समय सेवन करने पर अवश्य चमत्कार दिखाता है।

वाजीकरण प्रयोग—

सिंगरफ हंसपदी १० तोला को दो सेर निम्बू के अर्क तथा चार सेर प्याज़ के रस में आग पर चढ़ाकर पकावें। जब सब रस जल जावे तब—

शुद्ध घृत	कुचला	भल्लातक
धतूरे के बीज	मालकांगनी	शहद

—प्रत्येक पाव-पाव भरे।

प्याज़	आध सेर

—इन चीज़ों को एक में मिलाकर और उसके मध्य में पूर्व परिपक्व सिंगरफ को रख कर २४ घंटे कढ़ाई में पकावें। जब पक जाये तब सिंगरफ को निकाल कर पीस कर शीशी में रखलें।

सेवन-विधि—प्रातः सायंकाल ४ चावल से १॥ रत्ती तक मलाई, मक्खन अथवा शहद के साथ सेवन करें।

गुण—इसके सेवन से वीर्य-वृद्धि के साथ-साथ क्षुधा में वृद्धि होती है। कुछ दिन नियमित सेवन करने से स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है और जिनको हमेशा प्रतिश्याय होजाया करता है यदि वे भी इस प्रयोग को कुछ दिन सेवन करें तो लाभ होगा।

सन्तति-गौर-वर्ण कैसे हो—

जिस स्त्री की सन्तान सदैव कृष्णवर्ण की उत्पन्न हो और यदि वह गौर-वर्ण की सन्तति चाहे तो उसे गर्भ रहने के बाद से प्रतिमाह निम्न प्रयोग सेवन करायें :—

बबूल की कोमल पत्ती छाया में सुखा कर और उसका बहुत महीन चूर्ण कर रखलें।

सेवन-विधि— गर्भ रहने के बाद प्रतिमाह १५ दिन तक २-२ माशे जल के साथ सेवन किया जाय तो उसके जो सन्तान होगी वह अवश्य ही गौर-वर्ण होगी।

वन्ध्यत्व नाशक प्रयोग—

पीपल की जटा के महीन अंकुर कच्चे दूध में पीसकर रजोदर्शन के ४ दिन बाद से १५ दिन तक सेवन करावें। इस प्रकार २-३ माह सेवन कराने से जिस स्त्री के गर्भ न रहता हो उसके अवश्य गर्भधारण होता है।

नोट—दवा सेवन कराने से पूर्व चिकित्सक को यह देख लेना चाहिये कि स्त्री को मासिक-धर्म विकृति या ऐसा ही कोई अन्य योनि-दोष तो नहीं है जो गर्भावरोधक हो। यदि हो तो प्रथम उसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

"श्री. भट्ट जी के प्रयोगों की परीक्षा करने का अवसर यद्यपि नहीं मिल सका फिर भी उनकी विद्वत्ता और प्रसिद्धि हमें विश्वास दिलाती है कि उनके प्रयोग लेखानुसार ही गुण-प्रद होंगे। जो सज्जन परीक्षा करें वह फलाफल अवश्य सूचित करें।"

—सम्पादक।

डा. रामजीवन जी त्रिपाठी

साहित्यरत्न, सम्पा० प्रजाबंधु,
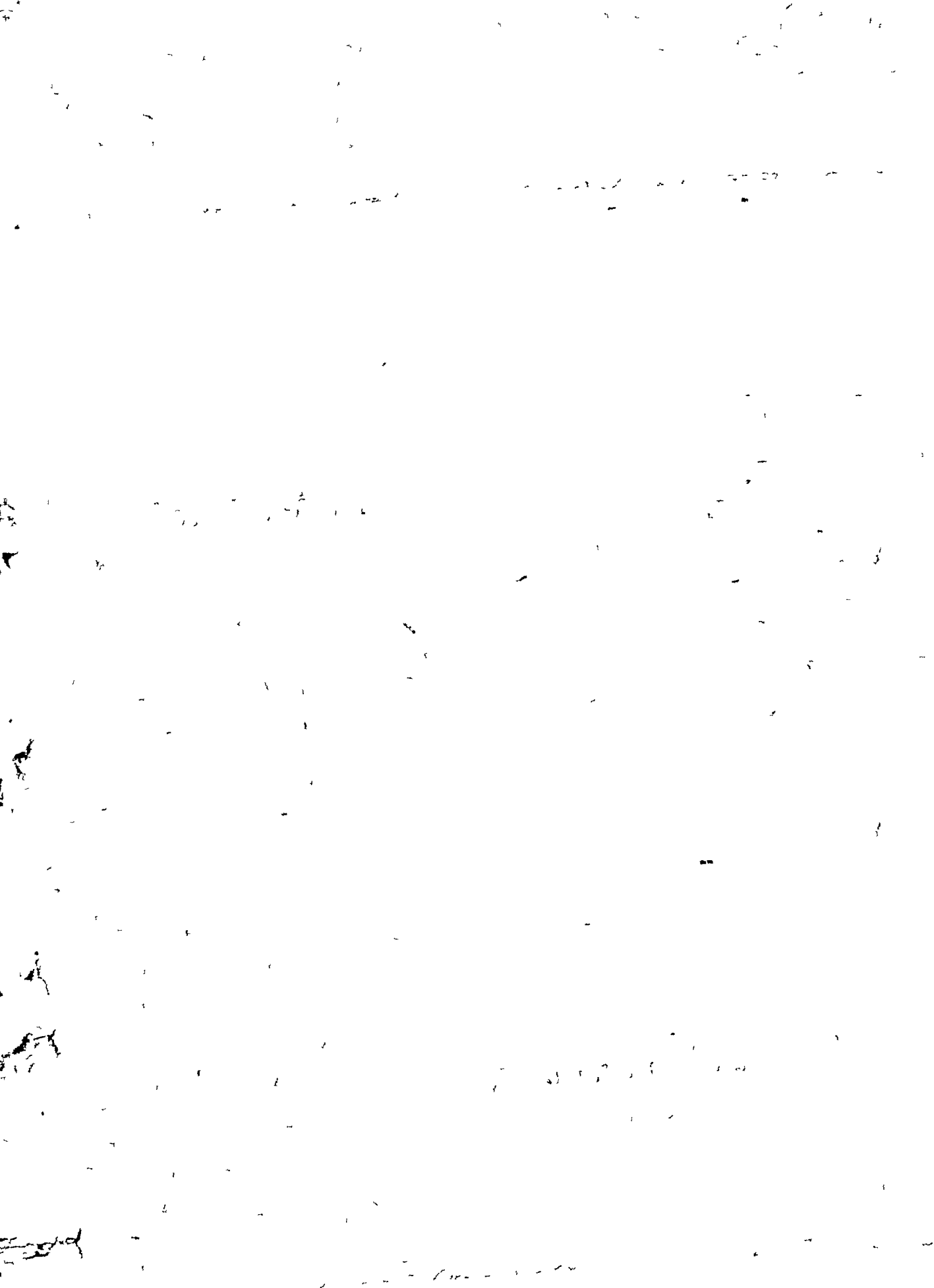
फतहपुर (जयपुर)

- :): —

आयुर्वेदाचार्य पं० सोमदेव जी शर्मा ए. एम. एस.,

प्रोफेसर—ललितहरि आयुर्वेद कालेज पीलीभीत।
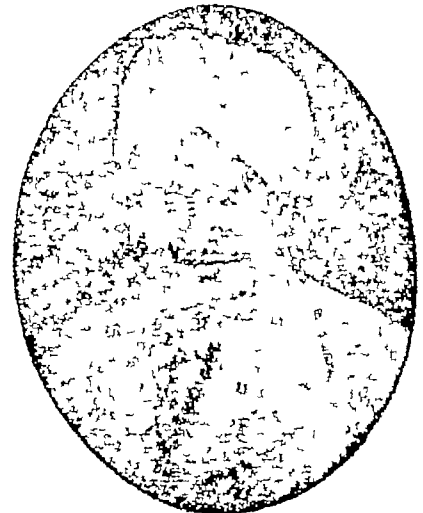
श्री० डा० रामजीवन जी त्रिपाठी साहित्यरत्न,

मैडीकल प्रेक्टिसनर, फतेहपुर (जयपुर)।

पिता का नाम—पुरोहित श्रीनारायण जी त्रिपाठी

आयु—५२ वर्ष जाति—ब्राह्मण

विषय—१-सुज़ाक २-स्थानीय-अवसादक

"श्री त्रिपाठी जी संस्कृत, आयुर्वेद और एलोपैथी के अच्छे ज्ञाता तथा उच्च साहित्यक हैं। आप एक दातव्य औषधालय के योग्य एवं प्रतिष्ठित चिकित्सक हैं एवं "प्रजाबंधु" साप्ताहिक के योग्य सम्पादक हैं। इससे पूर्व "बंधु" मासिक पत्र के सम्पादक भी रह चुके हैं। अखिल भारतीय वैद्य-सम्मेलन के फतहपुर अधिवेशन के प्रधान मंत्री रह चुके हैं। आजकल आप म्यूनिसिपल कमिश्नर भी हैं। आप "धन्वन्तरि" पर विशेष प्रेम तथा मेरे उपर सदैव कृपा रखते रहे हैं। आपके निम्न दोनों योग अत्युपयोगी तथा धन्वन्तरि पाठकों के लिये एक अनुपम देन प्रमाणित होगी, एसी आशा है।"

—सम्पादक।

सुज़ाक के लिये—

रसौत ५ तोला फिटकरी ५ तोला

नीलाथोथा कपूर अफीम

—प्रत्येक १-१ तोला।

निर्माण विधि-उपर्युक्त वस्तुओं को पीसकर सवा-सेर स्वच्छ जल में उबालें और अच्छी प्रकार उबल जाने पर छान कर रख लें।

प्रयोग विधि-२ तोला उपर्युक्त तरल को कांच की पिचकारी में भर मूत्र नलिका में प्रवेश कर दें और मूत्र नलिका के अग्रभाग को दबा लें, जिससे औषधि कुछ समय मूत्र-नलिका में रह सके।

गुण-यह प्रयोग सैकड़ों बार का आज़मूदा तथा शीघ्र फलप्रद है। बहुत नया सुजाक ३-४ दिन के प्रयोग से अवश्य नष्ट होता है और पुराना सुजाक भी इसी विधि से एक माह में ठीक हो जाता है।

स्थानीय अवसादक—

शरफुंखा की जड़ लेकर २० गुने जल में उबालें और आधा पानी जल जाने पर छानलें। छने हुए पानी को जलाने से नीचे एक प्रकार का क्षार रह जायगा। आप इसे कांच की शीशी में रख लें।

प्रयोग विधि—यह उत्तम अवसादक है, हानिकारक क़तई नहीं है। साधारण योग्यता का मनुष्य भी इसका प्रयोग आसानी से कर सकता है। प्रयोग-विधि बड़ी सरल है। इसका ८ प्रतिशत का घोल बनाकर जहां अवसादन की आवश्यकता हो उस स्थान के चारों ओर कहीं इन्जैक्ट कर दी जाय। एक बार में उक्त घोल की १ सी. सी. या १७ बूंद इन्जैक्ट कर दें।

जैसे दांत निकालना हो तो मसूड़े में इन्जैक्शन दें और दो मिनट बाद दांत निकाल लें। अगर कोई इतना भी न कर सकें तो १-२ रत्ती सूखी दवा मसूड़े में खूब मल दें, बस काफी है।

पाश्चात्य चिकित्सकों को जिस प्रोकेन (Procain) परकेन (percain) और नोवोकेन (Novocain) पर इतना नाज़ है, उनसे यह औषधि किसी भी अवस्था में कम नहीं है। अन्यान्य देशों की भांति हमारी सरकार आयुर्वेद को अपना कर परीक्षण के लिये सहायता नहीं देती, अन्यथा हम भी दिखा सकते कि आयुर्वेदिक पद्धति से तैयार की हुई यह औषधि पाश्चात्यों के सबसे महान् आविष्कार कोकेन (Cocain) को मात कर सकती है।

"श्री त्रिपाठी जी ने इस प्रयोग के साथ ही इसकी कुछ मात्रायें हमारे पास परीक्षार्थ भेजी थी जिन्हें व्यवहार करके हम यह कह सकते हैं कि यह प्रयोग वास्तव में अनुपम है। यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता कि यह कोकीन के समान प्रभावशाली है किन्तु यह निस्सन्देह है कि यदि किसी प्रकार इसकी तीव्रता में वृद्धि हो सके तो उसके समान ही लाभदायक हो सकता है। कांग्रेसी-सरकार क्या एलोपैथी के समान आयुर्वेद को भी रिसर्च के लिये कुछ सहायता और सुविधा प्रदान करेगी?"

—सम्पादक।

रक्त प्रदर हर चूर्ण—

मिश्री

आंवले २॥ छटांक,

ऊन की राख २ तोला,

नागकेशर २ तोला,

चूहे की मेंगनी ६ माशे,

सोंठ १ तोला, १ छटांक,

सौंफ १ तोला,

—इनको कपड़छन कर प्रातः सायम् ४ माशे से ६ माशे तक मिश्री मिले गाय के धारोष्ण दूध से सेवन करावें। सैकड़ों बार का परीक्षित है। वैद्य बन्धु अवश्य लाभ उठावें। यह समस्त प्रदर रोगों पर अचूक है।

यह प्रयोग भाग २० अंक पांच के ४४२ वें पृष्ठ पर प्रकाशित हुआ है। धन्वन्तरि के पाठकों को इससे अवश्य लाभ उठाना चाहिये, आशा है व निराश न होंगे। कब्ज रहने पर गुलकन्द गुलाब २॥ तोला सौंफ ६ माशे मिलाकर दूध से लेते रहें। उक्त प्रयोग विश्वासकारक है।

परीक्षक—श्री० वैद्यराज रणवीर जी शास्त्री,
विद्याभास्कर, आगरा।

चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालु जी वैद्यराज,

सम्पादक—अनुभूत योगमाला, बरालोकपुर।

पिता का नाम— राजवैद्य चेतराम जी द्विवेदी

आयु—५४ वर्ष जाति—कान्यकुब्ज द्विवेदी

प्रयोग विषय— १ रेचन १ मलेरिया

"श्री० वैद्यराज जी "अनुभूत योगमाला" आयुर्वेदीय मासिक पत्र के सफल एवं यशस्वी सम्पादक हैं। आपके कुटुम्ब में पिता एवं पितामह के समय से चिकित्सा व्यवसाय होता आया है। आप संस्कृत एवं आयुर्वेद के अच्छे विद्वान हैं। वैद्य सम्मेलनों से आपको कई बार प्रमाणपत्र मिले हैं। लगभग ५० पुस्तकों के लेखक तथा संग्रहणी, यक्ष्मा एवं अर्श के विशेषज्ञ हैं।" —सम्पादक।

मेंहदी का जुलाब—

मेंहदी की जड़ १ तोला, पाव भर पानी में चतुर्थांशावशिष्ट क्वाथ कर पिलावें। यह जड़ एक बार में २ तोला तक दी जा सकती है, साधारण मात्रा १ तोला ही है। रक्तदोष के लिये इसका प्रयोग ३ माह करना चाहिये।

यह जुलाब हर अवस्था में बिना डर दे सकते हैं। जहां तीव्र से तीव्र जुलाब फेल होजाते हैं वहां यह साधारण औषधि अपना कार्य अवश्य करती है। सभी प्रकृति एवं अवस्था में कोई विकार पैदा नहीं करती।

मलेरिया पर—

मलेरिया रोग जब अन्य औषधियों से नष्ट न होता हो तब कैथ (कपित्थ) का गूदा रोगी की तृप्ति के अनुसार खूब खिलावें। चटनी बनाकर अथवा नमक-मिर्च मिलाकर खिलाया जा सकता है; इच्छानुसार खाने दें। जैसे २ उसकी इच्छा पूर्ण होगी उसकी ओर से भी मन हटेगा और मलेरिया बुखार भी नष्ट होजायगा।

श्री० आयुर्वेदाचार्य पं० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी बी० ए०

ब्रह्माण्डघाट, महावन (मथुरा)।

पिता का नाम— स्वर्गीय पं० गनपतप्रसाद जी त्रिवेदी

आयु-५८ वर्ष जाति—ब्राह्मण (कान्यकुब्ज)

प्रयोग विषय— १ रक्तार्श २ मोतियाबिन्द

"श्री० त्रिवेदी जी की मंजी हुई लेखनी से धन्वन्तरि के पाठक भली-भाति परिचित हैं, क्योंकि आपकी 'धन्वन्तरि' पर सदैव से कृपा रही है। इंगलिश के बी० ए० होने के साथ २ आप आयुर्वेदाचार्य भी हैं। ऐसे उभयज्ञ विद्वान अभी आयुर्वेद समाज में इने-गिने ही हैं। आपने स्वर्गीय भिषक्केशरी प० सेनाराम जी दुबे के आश्रम में रह कर वैद्यक का सक्रिय अध्ययन किया है। आप आयुर्वेद के धुरंधर विद्वान, सफल चिकित्सक एवं प्रतिभाशाली लेखक हैं। आपने कई सारगर्भित पुस्तकें लिखी हैं। यद्यपि इस समय आप वानप्रस्थी जीवन व्यतीत कर रहे हैं फिर भी हमारे आग्रह से आपने २ प्रयोग भेजने की कृपा की है। आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।

रक्तार्श पर—

प्रातः एक ताज़ा पत्ता घृत कुमारी (ग्वारपाठे) का काटें; उसे काटने पर उसमें से जो एक पीत वर्ण का रस निकलता है, उसे एक कलई-दार या चीनी मिट्टी की कटोरी में लेकर, उसी में पत्ते का मगज़ १॥ या २ तोले तक मिलालें। इसमें १ माशा हल्दी का महीन चूर्ण और एक तोला मिश्री मिलाकर सेवन करें।

गुण—इस प्रकार ८-१० दिन सेवन करने से रक्तार्श रोगी को अवश्य लाभ होता है। कान्तिहीन, निस्तेजता प्राप्त हो, कलेजा हलका, छाती में धड़कन होती हो, ऐसी अवस्था में भी उक्त प्रयोग से [illegible] लाभ होता है।

मोतिया बिन्द पर—

कच्चे नारियल× का जल ५ सेर लेकर उसमें दारू हल्दी ५ तोले, त्रिफला १५ तोले, मुलहठी ५ तोले का महीन चूर्ण मिला, कलईदार कढ़ाई में पकावें; जब आधा शेष रह जाय तब छानकर पुनः पकावें। कुछ गाढ़ा हो जाने पर उसमें सेंधा नमक १ तोला, बरास कपूर (भीमसेनी कपूर) १ तोला और शहद आध सेर तक मिला कर सुरक्षित रखें।

प्रयोग-विधि—प्रातःसायं सलाई से लगावें। नेत्र में मोतियाबिन्द का प्रारम्भ हुआ हो उस

×कच्चे नारियल जल वाले बम्बई, कलकत्ता, कराची आदि समुद्र किनारे के शहरों में बहुतायत से मिलते हैं।

आयुर्वेदाचार्य पं. कृष्णप्रसाद जी

त्रिवेदी बी० ए०

महावन (मथुरा)

पं० चन्द्रशेखरानन्द जी बहुगुणः आयुर्वेद-शास्त्री,

वाइस प्रिंसीपल तिब्बिया कालेज, देहली।

श्री. पं. देवेन्द्रदत्त जी कौशिक, आयुर्वेदाचार्य-धन्वन्तरि,

अध्यक्ष—लोकहितकारी रामरसायन शाला, मेरठ।

पिता का नाम—स्वर्गीय पं० रामसहाय जी शर्मा वैद्यशास्त्री

आयु—२६ वर्ष जाति—कौशिक ब्राह्मण

विषय—१-अर्श (बवासीर) २-व्रण

"श्री० प० जी के पिता आयुर्वेद के इने-गिने सफल-चिकित्सकों में से एक थे। उन्होंने अपने जीवन को साधारण-स्थिति से उठाकर उसे हर पहलु से उन्नतिशील बनाया तथा यह सिद्ध कर दिया कि एक आयुर्वेद चिकित्सक निर्धन व्यक्तियों की सेवा करता हुआ तथा हर व्यक्ति की सहानुभूति का अधिकारी होता हुआ भी लक्षाधीश बन सकता है। आप भी अपने स्वर्गीय पिता के योग्य पुत्र हैं और उन्ही के पद-चिन्हों पर अग्रसर होरहे हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग अनेकों बार के परिक्षित हैं। पाठक व्यवहार में लाकर लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

अर्शहर मलहम—

अहिफेन ५ तोला नीलाथोथा २॥ तोला

तैल सरसों ५ तोला

—तैल में अच्छी तरह पका लें। शौच जाने के बाद इसमें से रुई की फुरैरी से मस्सों पर लगाने से अर्श के मस्से शीघ्र ही नष्ट होते हैं।

व्रणारि मलहम—

रसांजन हरिद्रा १-१ तोला

अर्कगुलाब ५ तोला

रसाजांन एवं हल्दी को बारीक कर अर्क गुलाब में डालदें और ७ दिन पर्यन्त रखा रहने दें। बीच-बीच में हिला दिया करें।

सेवन-विधि—व्रण को नीम के पत्ते पानी में उबाल कर छान कर उस पानी से साफ कर उपर्युक्त औषधि का फोहा व्रण पर रख कर पट्टी बांध देने से शीघ्र आराम होता है।

समय तो इसका असर जादू जैसा होता ही है बढ़ा हुआ मोतियाबिन्द भी कुछ काल के उपयोग से दूर होजाता है।

विशेष—

"मोतियाबिन्द जैसे रोग का जिसके लिये एलोपैथ आपरेशन के अतिरिक्त अन्य कोई चिकित्सा ही नहीं बताते श्री० 'त्रिवेनी' जी ने सफल प्रयोग देकर, आयुर्वेद-समाज का बड़ा उपकार किया है। अभी समय नहीं है कि हमारे एसे प्रयोगों के परीक्षण के लिये भी सरकारी सहायता प्राप्त हो, फिर भी हमें निराश न होते हुये स्वयं प्रयत्न करना चाहिये और विचारना चाहिये कि कैसे इनकी शक्ति में वृद्धि की जाय। परीक्षा करने वाले सज्जन हमें भी अवश्य सूचित करें।" —सम्पादक।

साहित्याचार्य वैद्य घनानन्द जी पंत विद्यार्णव,

सीताराम बाजार, देहली ।

विषय—१-प्लूरिसी २-कान का बहना

"श्री० पंत जी साहित्य, संस्कृत एवं आयुर्वेद के उद्भट विद्वान हैं। आपका जन्म सम्वत् १९३६ में जिला अल्मोड़ा में हुआ था। आपने कई पुस्तकों की संस्कृत व हिन्दी टीका की है; आप कई आयुर्वेद-कालेजों के बहुत समय से परीक्षक रहते आये हैं। ३० वें निखिल भारतीयायुर्वेद सम्मेलन लखनऊ की निबंध-परिषत् के सभापति थे। सोम व सर्पगंधा का प्रचार चिकित्सक समुदाय में आपने ही सर्वप्रथम किया है। आपके निम्न दो प्रयोग भी बड़े मारके के हैं।"

——सम्पादक।

फांफ्फ शोथ (pleurisy) पर—

हरड़ बहेड़ा आंवला पुनर्नवा श्वेत
पुनर्नवा रक्त गोखरू निर्गुण्डी पत्र

विधि—सातों चीज़ें ६-६ माशे लेकर जवकुट कर आध सेर जल में उबालें। आध पाव शेष रहने पर छान लें। शीतल होने पर २ तोला मधु मिलाकर पिलावें। इस प्रकार प्रातः सायं दो बार पिलावें।

गुण—इसके सेवन से टट्टी साफ होती है। पेशाब २४ घण्टे में ४ सेर के करीब तक होजाता है। इसके कुछ दिन के प्रयोग से प्लुरिसी के दोनों पार्श्वों का पानी भी ठीक हुआ है। इससे रोगी को नींद अच्छी आती है।

पथ्य—इसके सेवन-काल में केवल दुग्ध व फल-रस दें।

कान बहने पर—

२४ घंटे में एक बार समुद्र-फैन का बारीक चूर्ण २ रत्ती कान में डालकर ऊपर से ७ बूंद गोले का तैल डाल कर रुई का फोहा लगा दें। दूसरे दिन सींक में रुई लगाकर कान साफ करें। पानी न डालें। कुछ दिन इसी का प्रयोग करने से पुराना कान का बहना भी ठीक हो जाता है।

—वैद्यराज—

पं० विश्वेश्वरदयालु जी
सं०—अनुभूतयोग माला,
इटावा।

श्री० आयुर्वेदाचार्य हरदयालु जी गुप्त,
दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज, लाहौर।

साहित्यायुर्वेदाचार्य पं. सोमदेव जी शर्मा शास्त्री, A. M. S.

वाइस-प्रिंसीपल ललितहर आयुर्वेद कालेज, पीलीभीत।

पिता का नाम—श्री० रघुनन्दन जी शर्मा सारस्वत

आयु—३६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग विषय— १ सन्निपात ज्वर २ विद्रधि हर लेप

"श्री० पं० जी साहित्य एवं आयुर्वेद के उच्च कोटि के विद्वान हैं। आपके लेख बड़े खोजपूर्ण होते हैं। आप संस्कृत एवं अंग्रेजी के भी अच्छे ज्ञाता हैं। 'क्षयरोगांक' में सर्वोत्तम लेख होने के कारण आपको ही 'धन्वन्तरि-स्वर्ण-पदक' दिया गया था। आपने आयुर्वेद प्रकाश, आयुर्वेदीय प्रश्नोत्तरावली आदि पुस्तकें भी लिखी हैं। बालकों तथा स्त्रियों के विशेष रोगों के आप विशेषज्ञ हैं। आपके निम्न प्रयोग वास्तव में उपयोगी हैं। पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

१ सन्निपात ज्वर (धातुपाके)—

घृत कुमारी से शोधित ताम्र की सोमनाथी भस्म १ रत्ती
वृ० कस्तूरी भैरव
उत्तम चन्द्रोदय
अभ्रक भस्म शतपुटी
मुक्ता भस्म
प्रत्येक ४-४ चावल

—सबको मिलाकर १ मात्रा हुई। यह मात्रा बड़ों के लिये है, बच्चों को अवस्थानुसार कम दें।

सेवन-विधि—तुलसी या पान के रस में १ मात्रा खिलाकर ऊपर से दशमूल क्वाथ पिलादें। १-१ घण्टे पश्चात् ३-४ मात्रा बनाकर दें। आयु शेष होने पर रोगी की अवस्था अवश्य सुधर जायगी।

विशेष—

सन्निपात ज्वर में यद्यपि धातुपाक असाध्य माना गया है, परन्तु प्रारम्भावस्था में पता लगने पर धातुपाक की क्रिया रोक देने पर रोगी के प्राण बच जाते हैं। हमने धातुपाक के दो रोगियों की प्राण-रक्षा की है। धातुपाक प्रारम्भ होने के अन्य चिह्नों में मुख्य चिह्न यह है कि रोगी की नाभि से ऊपर तथा हृदय के नीचे बीच के स्थान पर हाथ रखकर दबाने से रोगी शूल का अनुभव करता है। अतएव सन्निपात ज्वर में इसकी परीक्षा करते रहना चाहिए और शूल का ज्ञान होते ही तत्काल उपर्युक्त औषधि देनी चाहिये।

विद्रधि हर लेप—

मुलहठी जौ गेहूँ मूंग
उड़द —प्रत्येक १-१ तोला

—सब औषधियों को पीसकर रखलें। व्यवहार के समय मिली हुई १ तोला थोड़े जल के साथ चटनी जैसी पीसकर कुछ गर्म कर विद्रधि पर लेप करदें। यदि विद्रधि पैदा होते ही यह लेप लगाया जायगा तो बड़ी से बड़ी विद्रधि बैठ जायगी और दाह भी शान्त हो जायगा।

ग्रेन तक की गोलियाँ बना लें। जब तापक्रम होने लगे या पारी का दिन हो तो ३-४ गोली एक दिन में लें।

पथ्य—कच्ची तरकारियां अंडखर्बूजादि सेवन करें। शीतल जल से स्नान नहीं करना चाहिये।

रोग का आक्रमण बंद होने पर ५-५ या ७ ७ दिन बीच में देकर इस औषधि का प्रयोग कुछ समय करते रहें, जिससे पुनः आक्रमण का भय न रहे।

मासिक धर्म पर चूर्ण—

पठानी लोध १२ ग्रेन

आम की गुठली ४ ग्रेन कुड़ा (कुटज) ४ ग्रेन

छोटी जामुन का बीज ४ ग्रेन

—इनका पृथक-पृथक चूर्ण उपर्युक्त मात्रा में लेकर एकत्रित करने से एक मात्रा बनती है। ऐसी ३ मात्रा प्रतिदिन प्रात सायं तथा मध्याह्न को जल के साथ देना चाहिये।

विशेष—उपर्युक्त चूर्ण मासिकधर्म विकृति पर लाभ प्रद है, लेकिन कुछ अधिक समय सेवन करने की आवश्यकता होती है। केवल जल के साथ न देकर यदि इस चूर्ण को अशोकारिष्ट के साथ दिया जाय तो इसका प्रभाव कुछ जल्दी होता है। —सम्पादक।

मृगदादि वटी—

कस्तूरी ६ माशे कपूर ६ माशे

सोने के वर्क १० नग चांदी के वर्क २० नग

सत्व कुचला ४ चावल जावित्री १॥ तोले

जायफल अकरकरा कंकोल मिर्च

छोटी इलायची —प्रत्येक २-२ तोला

यह प्रयोग "धन्वन्तरि पुरुषरोगांक" में १८४ पृष्ठ पर छपा है। योग अनुभूत है। धातुक्षीणता, प्रमेह, निर्बलता, वीर्यतारल्य, उत्तेजना और स्तम्भन का प्रभाव, नामर्दी, सुस्ती आदि समस्त निर्बलता के उपद्रवों पर रामबाण है। इसकी विस्तृत निर्माण—विधि पुरुषरोगांक में ही देखें। हां! प्रयोग बनाते समय निम्न परिवर्तन आवश्यक समझ कर किया है। कुचला सत्व (स्टिकनिया हाईड्रोक्लोरिक) १ ग्रेन की जगह २-२ ग्रेन (अर्थात् ८ चावल) डाला एवं पान के रस में ७ दिन तक बराबर भावना दी गई। इस तरह इसका प्रभाव पूर्वापेक्षया अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ।

कुष्ठ नाशक मरहम (लेप)—

रस कपूर, कैलोमल, कपूर, मुर्दासङ्ग, सफेद-कत्था, कासगरी सफेदा, भुना सुहागा, फिटकरी भुनी, संग जराहत भस्म, शुद्ध गन्धक, सब चीजें समान भाग २-२ तोले लेकर ताम्र-पात्र में २१ बार धुले २० तोले गोघृत में अच्छी तरह मिलालें। औषधियां बहुत बारीक पिसी होनी चाहिये।

गुण—इससे कुष्ठ, दाद, छाजन, खुजली, उकौता, वातरक्त आदि समस्त चर्मरोग नष्ट होते हैं।

मैंने इसका प्रयोग करते समय इन्द्रवारुणयासव और मंजिष्ठादि-आसव का सेवन अवश्य कराया है। चमत्कारिक गुण दिखाता है।

यह प्रयोग धन्वन्तरि रक्तरोगांक २३० पृष्ठ पर छपा है। कई बार का अनुभूत है।

परीक्षक—श्री० वैद्यराज रणवीर जी शास्त्री,
विद्याभास्कर, आगरा।

श्री. पं. गयाप्रसाद जी शास्त्री, राजवैद्य

आयुर्वेदाचार्य. साहित्याचार्य, आयुर्वेद-वाचस्पति,
मुरलीबाग, हैदराबाद (दक्षिण)।

पिताजी—श्री० पं० केदारनाथ जी मिश्र

आयु—५२ वर्ष जाति—ब्राह्मण (कान्यकुब्ज)

"श्री० शास्त्री जी डी० ए० वी० कालेज देहरादून, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगडी, हिन्दू यूनिवर्सिटी इलाहाबाद में प्रोफेसर और प्रिंसिपल रहे हैं। आप आयुर्वेद के प्रसिद्ध लेखक तथा कवि हैं। इस समय निज़ाम गवर्नमेंट के "आयुर्वेदिक एडवाइजरी बोर्ड" तथा 'मेडिकल सेंट्रल बोर्ड' के मेम्बर हैं। हिस्टेरिया तथा क्षय रोग के विशेषज्ञ हैं। अपनी आदर्श सरलता, उदारता तथा विद्वत्ता के कारण राजा और प्रजा दोनों में ही आपका समान सम्मान है। आप 'धन्वन्तरि' पर विशेष स्नेह रखते हैं, इसीलिये अवकाशाभाव होते हुये भी आपने यह दो प्रयोग प्रदान किये हैं।"

—सम्पादक।

कामायनी गुटी—

रससिंदूर या सिंगरफ भस्म अभ्रक भस्म
स्वर्णमाक्षिक भस्म लोहभस्म नागभस्म
वङ्ग भस्म शु० कुचिला
शु० धतूरे के बीज शु० कपूर सोंठ
शु० अफीम शु० भांग सफेद मिर्च
छोटी पीपल अकरकरा चित्रककी जड़
छोटी इलायची के बीज जायफल
जावित्री केशर

—ये २० चीज़ें १-१ तोला।

कस्तूरी ६ माशे

—काष्ठादि औषधों का सूक्ष्म चूर्ण, केशर, कस्तूरी तथा रस भस्मादि को खरल में डालकर पान एवं अदरख के रस की एक २ भावना देकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लेना चाहिये।

गुण—भिन्न २ रोग नाशक अनुपानों के साथ सेवन करने से समस्त वात-रोग, वृद्धावस्था जनित दुर्बलता, हृदय की शिथिलता, कास-श्वास, स्वप्नप्रमेह, मधुमेह, कामेच्छा की कमी तथा नपुंसकता को नष्ट करती है। वीर्य-दोष तथा कामेच्छा की कमी को दूर करने के लिये प्रातः सायं या रात्रि में शयन से पूर्व १-१ गोली दूध के साथ सेवन करनी चाहिये।

नोट-गोलियों को सुन्दर और सुनहरी बनाने के लिये सोने के वर्क वा स्वर्णवङ्ग का कोट किया जा सकता है।

अमृतायनी वटी—

करंज की गिरी		अतीस (अतिविष)
तुलसीपत्र	सोंठ	कालीमिर्च
छोटी पीपल	पीपलामूल	शु० कुचला
शु० फिटकरी		शु० सुहागा

—दसों २-२ तोला

छोटी इलायची के बीज	प्रवाल भस्म
वंशलोचन	गिलोय का सत
शुद्ध श्रृङ्गिक विष	गौदन्ती भस्म
सावरशृङ्ग भस्म	मुक्ताशुक्ति भस्म
स्वर्णमाक्षिक भस्म रससिंदूर	१-१ तोला
अमृता घन सत्व	१० तोला

—काष्ठादि औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण, रस-भस्म तथा अमृतायन सत्व को खरल में डालकर क्रमशः तुलसी पत्र, अदरख एवं पान के स्वरस की १-१ भावना देकर ३-३ रत्ती की गोलियां बना लेनी चाहिये।

उपयोग—

प्रातः सायं या ज्वर आने से पूर्व १ या २ गोली सुदर्शनार्क या जल के साथ सेवन करने से सभी प्रकार के विषम ज्वर (Malarial fever), सन्तत, सतत, अन्येद्युष्क, तृतीयक तथा चातुर्थिक आदि एवं मांस, मज्जा, मेद, अस्थि तथा शुक्र में व्याप्त होने वाले जीर्ण ज्वर, ज्वर जनित दुर्बलता, रक्त-विकृति, मस्तक का जलना, भारी रहना, हथेली, पैर के तलवे तथा नेत्रों की जलन आदि कष्ट दूर होते हैं। क्षय की प्रथमावस्था में भी ये गोलियां अपूर्व लाभकारी सिद्ध हुई हैं।

शर्बत स्वर्ण पत्रिका—

कासनी १४ माशा, फूल गुलाब लाल १७ माशा, गावजबां १८ माशा, गुलबनफसा १८ माशा, गिरी खरबूजा १ तोला, सनाय पत्र ६ तोला, आलू बुखारा १५ नग, उन्नाव ३० नग, लसूड़िया (लसलड़ा) ४० नग, तुरंजबीन ४ तोला, खांड (मिश्री) ६० तोला।

विधि निर्माण—खांड तथा गिरी को छोड़ अन्य औषधियों को अर्ध कूट कर दो सेर जल में २४ घंटे भिगो दें। पश्चात् अग्नि पर चढ़ा क्वाथ करलें, जब आधा रह जावे तब उतार क्वाथ को खूब मथ छानलें और खांड मिला कर पकावें। पकते ही में गिरी खरबूजे को जल में पीस घोट कर चासनी में डाल दें। जब पक जाये और १ तार की जलेबी जैसी चासनी आजावे तब उतार ले। बोतल में डाल कार्क लगा दो।

मात्रा—बल एवं वयोनुसार ३ माशा से १ तोला तक, जल में मिला पिलादें।

गुण—इससे बिना किसी प्रकार कष्ट के खुलासा शौच हो आता है तथा उदर सम्बन्धी व्याधियां कोष्ठ बद्धता, कफ-कासादि दूर होजाते हैं। यह नरम विरेचक है तथा सारक है। बाल-वृद्ध सब को एक समान हितकारी है।

धन्वन्तरि प्रयोगांक पृष्ठ ४६७ वर्ष ५ अंक ११ १२ में प्रकाशित हो चुका है।

—वैद्य सा० भू० तेजीलाल नेमा शास्त्री,
आयुर्वेदरत्न, भाटापारा (सी. पी.)

श्री० वैद्यराज गोपाल जी कुंवर जी ठक्कुर,

सम्पादक—'आरोग्य-सिंधु' (करांची)
कालवादेवी रोड, बम्बई ।

"श्री. वैद्यराज जी बम्बई के एक अग्रगण्य चिकित्सक हैं जो आज कई वर्षों से बम्बई में और कराची में बड़े यश और सफलता के साथ चिकित्सा कर रहे हैं। आप 'आरोग्यसिंधु" नामक गुजराती आयुर्वेदिक मासिकपत्र के सम्पादक हैं और उसी के द्वारा करीब २४ साल से महागुजरात में आयुर्वेद की सेवा करते चले आये हैं। "आरोग्यसिंधु" कार्यालय और

प्रेस के मालिक आप स्वयं ही हैं। उसी के सहारे आपने २५ से ज्यादा आयुर्वेद के विविध विषयों के गुजराती ग्रंथ, स्वयं लिखकर प्रकाशित किये हैं जो आयुर्वेद की एक स्मरणीय निधि के रूप में चिरजीव रहेंगे। इस समय आप ज्यादा समय बम्बई में ही रहते हैं। आप आयुर्वेद के उद्धार के महान् कार्य में सक्रिय साथ देते आये हैं।" —सम्पादक।

—लेखक—

शुद्ध विजया ४ तोला   अफीम १ तोला
अजवाइन   शक्कर   जायफल
लोध्र   छोटी इलायची के बीज
—प्रत्येक २॥-२॥ तोला ।

विधि-अफीम के सिवाय सब चीजों का बारीक चूर्ण बनालें। अफीम को पानी में घोलकर अलग तैयार करलें। खरल में दवाइयों के चूर्ण को अफीम के पानी में घोटकर दो-दो रत्ती की गोली बनालें। गोली सूखने पर डेढ़ रत्ती की होनी चाहिये।

प्रमाण—दो गोली।

समय—सुबह-शाम दो बार।

अनुपान—दूध, तक्र किंवा ताजा जल।

पथ्य—तक्र (मट्ठा), नरम भात, दूध, मौसंबी का रस, अनार का शरबत।

उपयोग—मुखपाक, अजीर्ण, अतिसार, पुराना दस्त, आमातिसार, मंदाग्नि, पेट की वायु, कमजोरी और पेट के रोग दूर होते हैं।

विशेष सूचना—दवाई लेने के बाद कब्ज़ीपन मालूम हो तो दूध का सेवन करना ठीक होगा। अन्यथा तक्र और भात लेना। मल के साथ अगर कच्चा आमांश गिरे तो केवल तक्र का पथ्य ठीक है। एक दो सप्ताह पीछे पेट की हालत ठीक होने के बाद भोजन में पतला चावल, दाल और थोड़ी मात्रा में रोटी ले सकते हैं।

इस दवाई से पुरानी संग्रहणी वाला रोगी एक दो मास में अच्छा होजाता है।

वायु-रोग की महौषधि—

आप सब जानते हैं कि कुचला एक योगवाही और शीघ्र फलदायक औषधि है। इसका असर वातादि दोष युक्त किसी भी व्याधि में उत्तम देखा गया है। नई बीमारी की अपेक्षा यह पुरानी व्याधि में अधिक गुणदायक देखने में आता है। इसका एक शतशोनुभूत योग हम यहां पर देते हैं।

विषतिन्दुक वटी—

गौ-मूत्र में शुद्ध किया कुचला २० तोला
लौंग ४ तोला कालीमिर्च ४ तोला
अकरकरा ८ तोला
केशर, जायफल, जावपत्री (जाविश्री), —तीनों १-१ तोला।

—इन सबका बारीक चूर्ण पीस कर एक खरल में डालना और कालीमिर्च, लौंग ५-५ तोले, पानी १५० तोले, इनका क्वाथ कर लेना। शेष जल ५० तोले रहने पर छान कर, चूर्ण में डाल कर बराबर ३ दिन घोटकर गोली बनाने योग्य हो, तब १-१ रत्ती की गोली बनाकर छाया में सुखाकर रख लेवें।

गुण—२-२ गोली प्रातःसायं दोनों समय दूध के साथ लेने से सभी प्रकार के वातरोग नष्ट होते हैं। शरीर में बल और रक्त की वृद्धि होती है। मल साफ आता है। भूख अच्छी लगती है; हर प्रकार का वीर्य दोष, मंदाग्नि, अजीर्ण इत्यादि दूर होकर पाचन शक्ति खूब अच्छी रहती है। हाथ-पांव और कमर का दर्द भी शीघ्र दूर हो जाता है।

"उपर्युक्त-प्रयोग "धन्वन्तरि वातरोगांक" में भी प्रकाशित होचुका है। हमने इसका प्रयोग किया है। यह औषधि वातरोग के लिये उत्तम एवं प्रभावशाली है।" —सम्पादक।

श्री० कवि० आशुतोष जी मजूमदार M.R.A.S (London) R.M.P

भिषगाचार्य-धन्वन्तरि, ६०/८ कनाट सरकस, न्यू देहली ।

पिता का नाम—श्री० कविराज हरिरंजन जी मजूमदार M.A. भिषगाचार्य ।

आयु-३२ वर्ष जाति—कायस्थ

विषय—१—वाजीकरण २—गर्भस्राव

"श्री० मजूमदार जी योग्य पिता के होनहार पुत्र हैं। आपने तिब्बिया कालेज देहली से "भिषगाचार्य-धन्वन्तरि", दे० कालेज से एफ. एस. सी. (मैडीकल) उपाधि प्राप्त की हैं। आप रोयल एशियाटिक सोसाइटी के मेम्बर हैं तथा सम्मेलनों से स्वर्ण व रजत पदक प्राप्त हुए हैं। इस समय आयुर्वेद एवं यूनानी तिब्बिया कालेज में प्रोफेसर हैं और सम्मेलन पत्रिका के प्रधान सम्पादक हैं। कई आयुर्वेद विद्यालयों के परीक्षक भी हैं। थोड़ी सी आयु में आपने अपने पिता जी के संरक्षण में अच्छी ख्याति प्राप्त की है।"

—सम्पादक ।

वाजीकरण—

अफीम शु० पारद
लवंग जावित्री
अकरकरा ३-३ माशे
शु० सखिया (श्वेत)
कस्तूरी जायफल
केशर १॥-१॥ माशे
सर्प का मांसरस,
१ तोला
नर नेवले का मगज (ताजा) एक

—सबको बारीक पीस और एकत्र मिला कर उत्तम शराब की एक भावना दे, काली मिर्च के बराबर गोली बनालें। दिन में दो बार खाने के बाद १-१ गोली दूध के साथ देना चाहिये।
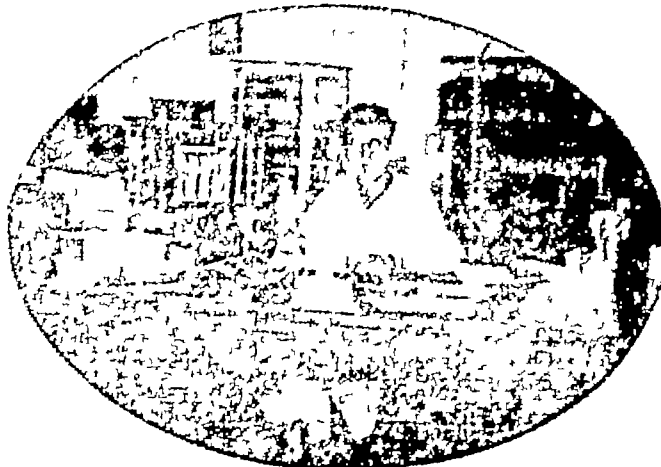
—लेखक—

नोट—इस प्रयोग में 'सर्पमांसरस' तथा 'नरनेवले का मगज' पड़ता है, जिसे प्राप्त न कर सकने के कारण प्रयोग की परीक्षा करने में असमर्थ रहे। लेकिन लेखक की ख्याति हम को यह विश्वास दिलाती है कि आपका प्रयोग निरर्थक नहीं होगा ।

—सम्पादक ।

गर्भस्राव पर उत्तम प्रयोग—

कुश, कांस, एरण्डमूल, गोखरू; चारों ६-६ माशे चारों वस्तुओं को जौकुट कर १६ तोला दुग्ध में डाल दें। इसमें ६४ तोला पानी मिला कर

[शेष पृष्ठ ५१ पर]
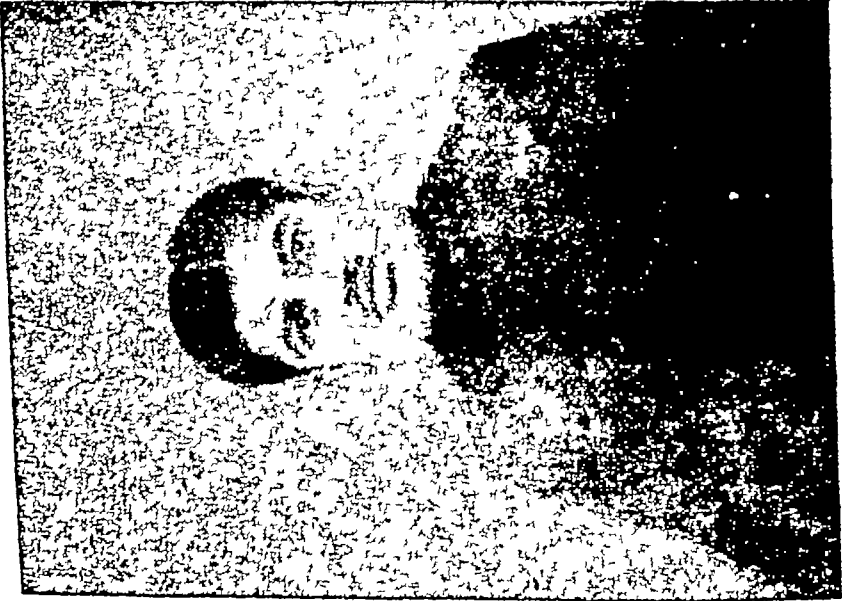
कविराज धर्मदत्त जी चौधरी आयुर्वेदाचार्य,
प्रोफेसर—स० प्र० आयु० कालेज लाहौर।
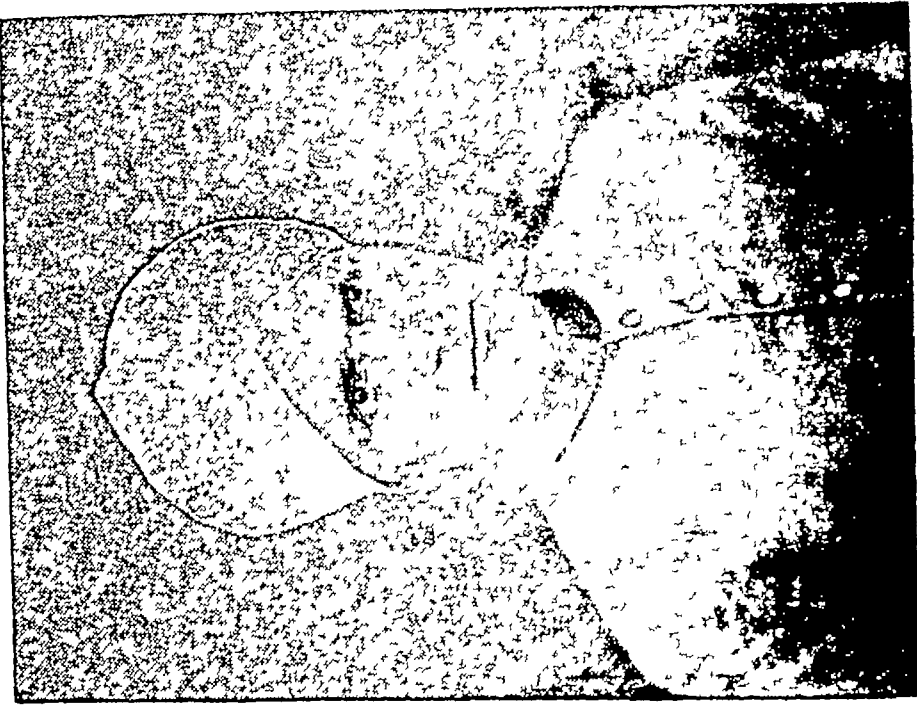
राजवैद्य कृष्णदयाल जी वैद्यशास्त्री,
प्रताप आयु० फार्मेसी, छहरटा (अमृतसर)

कविराज श्री० धर्मदत्त जी चौधरी आयुर्वेदाचार्य,

प्रोफेसर—सनातनधर्म प्रेमगिरि आयु० कालेज, लाहौर।

पिताजी—श्री० चौधरी चरणदास जी दत्त 'वैद्यरत्न'

उम्र—३० वर्ष जाति—मोसाल ब्राह्मण (दत्त)

"श्री वैद्यराज जी प्रारम्भ से ही उत्साही एवं उद्योगशील रहे हैं। विद्यार्थी जीवन में आपको एक निबंध पर स्वर्णपदक प्राप्त हुआ था। आयुर्वेदाचार्य होते ही आप कालेज रसायनशाला के अध्यक्ष बना दिये गये और सन् ३६ में अपना स्वतन्त्र कार्य प्रारम्भ किया। आपने गोमूत्र चिकित्सा पुस्तक लिखी है जिस पर स्वर्ण-पदक प्राप्त हुआ है। आप विभिन्न सभा समितियों के मंत्री व प्रबन्धक रहे हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग अत्युपयोगी हैं, पाठक इन प्रयोगों से लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

बालरोग नाशक—

वंशलोचन	छोटी इलायची के दाने
फिटकरी का फूला	कमलगट्टा की मिंगी
माजूफल	तबाशीर
रूमी मस्तगी	मोथा
कचूर	अतीस कड़वी

—प्रत्येक समान भाग लेकर चूर्ण करलें।

मात्रा—२ रत्ती से १ माशे तक।

अनुपान-विभिन्न रोगों में अनुपान भेद से दी जाती है और बाल-रोगों के लिये तो अत्युत्तम है। तालुकंटक रोग में मधु के साथ दें, पतले दस्तों में अर्क सौंफ से दें, छर्दि रोग में अर्क गुलाब के साथ दें। दन्तोद्गम के समय बालकों को अनेक रोग सताते हैं, उस समय भी अवस्थानुसार अनुपान निश्चित कर इसको देना उपयोगी सिद्ध हुआ है।

नारीरोग नाशक—

वंशलोचन		छोटी इलायची के दाने
जायफल		सुपारी दखिनी
माजूफल	केशर	नागकेशर
छोटी माई		शिवलिंगी बीज
पीपल की दाढ़ी		पीपल की कोंपल
जावित्री		कमरकस

—प्रत्येक १-१ तोला लेकर चूर्ण करें; फिर पीपल, जामुन, गूलर तथा बबूल (कीकर) इन चार वृक्षों की अन्तर छाल सम-परिमाण में २ सेर लें और १६ सेर जल में पकायें, ४ सेर रह जाने पर छानलें; फिर इस क्वाथ को भबका (वाष्प-

[शेष पृष्ठ ५१ पर]

राजवैद्य श्री० कृष्णदयाल जी वैद्यशास्त्री,

प्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी, छहरटा (अमृतसर)।

पिता का नाम—श्री० लाला रामलाल जी

आयु—६४ वर्ष   जाति—आर्य

प्रयोग विषय—१-उपदंश   २-नाड़ी व्रण

"श्री० वैद्य जी पंजाब के प्रसिद्ध वैद्यों में से हैं। उन बहुत से धनी-मानी रोगियों को अपनी चिकित्सा से आरोग्य करके आपने उपाधि और पदक प्राप्त किये हैं, जो एलोपैथी, होम्यो-पैथी आदि से निराश हो गये थे। आपने आयुर्वेद की अनेकों बड़ी २ पुस्तकें हिन्दी तथा उर्दू भाषा में लिखी हैं, जिन्हे जनता ने बहुत पसंद किया है। आयुर्वेद-संसार (हिंदी) जिंदगी तथा घर का वैद्य (उर्दू) के सफल सम्पादक रह चुके हैं। आपके निम्न दो प्रयोग सरल, किंतु उपयोगी हैं। पाठक अवश्य व्यवहार करें।"

—सम्पादक।

आतशक (फिरंग) नाशक—

रीठे का छिलका	२ तोला
शु० कत्था कलमी शोरा	१-१ तोला

—ग्वारपाठे के रस के साथ मर्दन कर बेर प्रमाण गोली बनालें।

मात्रा—प्रातः सायंकाल १-१ गोली। अनुपान जल।

विशेष—

नवीन रोगी को ५ सप्ताह तथा पुराने रोगी को १० सप्ताह औषधि सेवन करनी चाहिये। औषधि सेवन काल में घृत अधिक सेवन करना चाहिये। तैल, खटाई से परहेज़ रखे। इस औषधि से किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होता तथा इसके सेवन से रक्त पूर्ण शुद्ध हो जाता है। भावी सन्तान पर भी कोई असर नहीं पड़ता।

० नाड़ी व्रण (नासूर) के लिये—

उत्तम हरताल वर्की	२ तोला
काले सांप की कैंचुली	१ तोला
भल्लातक	२१ नग

विधि—पहिले हरताल को बारीक पीसकर मिलावे तथा कैंचुलीको कूटकर मिलालें फिर एक सप्ताह स्नुही-क्षीर (थूहर के दूध)के साथ खरल करें। सूखने पर एक प्याले में डाल दूसरा प्याला ऊपर उलटा रख कर संधि बन्द करके कपड़ मिट्टी करदें और कपड़-मिट्टी सूख जाने पर चूल्हे पर चढावें

नीचे २ अंगुल मोटी बेरी की दो लकड़ी जलादें। और अग्नि ३ पहर तक दें। ऊपर वाले प्याले को गीले कपड़े से ठण्डा रखें। दुपहर के पश्चात् अग्नि शांत होने पर प्याले को खोल कर ऊपर वाले प्याले में लगा धूसर वर्ण का जौहर निकाल लें।

मात्रा—१ चावल से २ चावल तक।

अनुपान—प्रातः सायं घृत के साथ लें।

गुण—इसके सेवन से पुराना तथा बिगड़ा हुआ नाड़ी व्रण बिना किसी बाह्योपचार के ठीक हो जाता है।

विशेष—तैल, गुड़ व खटाई से परहेज़ रखें।

नोट—प्याले के स्थान पर यदि मिट्टी की छोटी २ हाडिया एक बराबर मुख वाली लेकर पत्थर पर रगड़ मुख इकसार कर व्यवहार में लावें तो अधिक सुविधा रहेगी।

—सम्पादक।

[पृष्ठ ४६ का शेष]

यन्त्र) के ऊपर अथवा उबलत पानी की पतीली पर रख पकावें। जलांश सूख जाने पर उपरोक्त चूर्ण डाल गोली बनने योग्य करलें। फिर चने के बराबर गोली बनालें।

मात्रा—१ गोली से २ गोली तक। अनुपान—दुग्ध, अर्क सौंफ अथवा दशमूल अर्क।

गुण—हर प्रकार के प्रदर रोग में उपयोगी है। कष्टार्तव, अनियमित ऋतु, योनिशूल और कटिशूल के लिये लाभप्रद है।

नोट—१—चारों वृक्षों की अंतर-छाल के क्वाथ को वाष्प-यंत्र पर घन बनाने में बहुत समय लगता है। यदि कढ़ाई में मंदाग्नि पर पकायें तो शीघ्र बनता तथा गुणों में साधारण अंतर पड़ता है; पर ध्यान रखना चाहिये कि जलने न पाये।

२—उपर्युक्त चार वृक्षों की अंतर छाल के अतिरिक्त यदि अशोक छाल आध सेर भी मिलाकर क्वाथ किया जाय तो गुणों में वृद्धि होती है। —सम्पादक।

[पृष्ठ ४८ का शेष]

अग्नि पर चढ़ादें। पानी जल जाने पर छान कर मिश्री मिला कर स्त्री को पिलावें।

—इसका प्रयोग गर्भ के द्वितीय माह से प्रारम्भ करना चाहिये और जब तक बच्चा न हो जाय चालू रखना चाहिये।

विशेष—इस प्रयोग की हमने ३ स्त्रियों पर परीक्षा की है और योग अत्युत्तम प्रमाणित हुआ है। लेकिन हमने उपर्युक्त चार वस्तुओं के साथ-साथ पलास पत्र (ढाक के ताजे पत्ता) ३ माशे भी दिये हैं। लेखक ने औषधि की मात्रा कुछ अधिक लिखी है। हमने पाचों चीजें ३-३ माशे लेकर एक मात्रा बनवाई थी। यह कौड़ियों का प्रयोग अपना पूरा प्रभाव दिखाता है।

—सम्पादक।

"गर्भ-स्राव पर—पलाशपत्र का मेरा प्रयोग जो प्रारम्भ में दिया गया है उसे भी देखिये यदि दोनों ही प्रयोग साथ २ व्यवहार किये जांय तो यह निश्चित है कि गर्भ-स्राव हो ही नहीं सकता।"
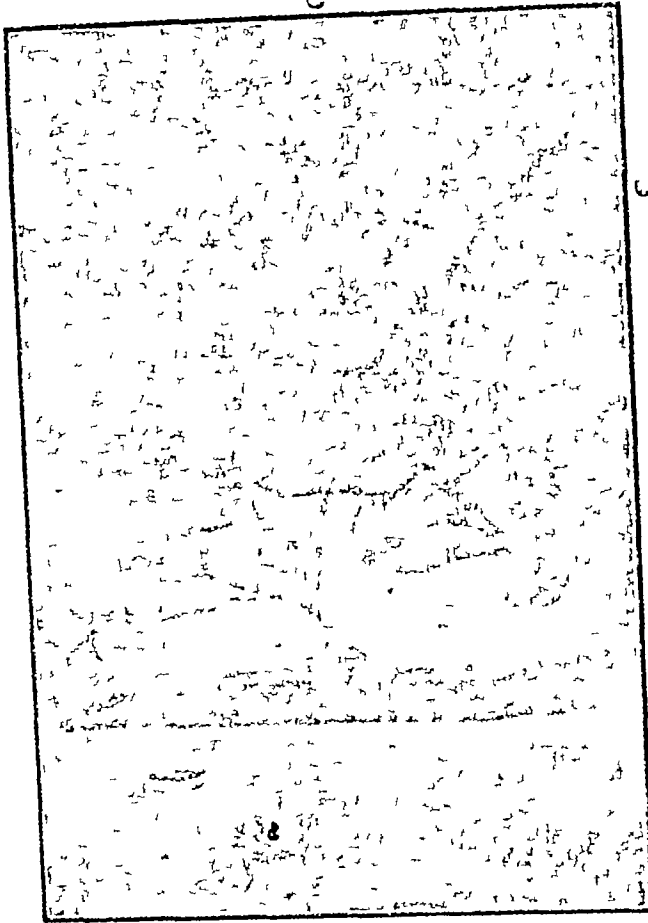
कवि. पं. रामगोपाल जी मिश्र राजवैद्य,

भिषग्भूषण, गोंदिया, सी० पी० ।

"श्री० मिश्र जी का जन्म सम्वत् १९३६ में प्रतापगढ़ जिले के अन्तर्गत रामपुर ग्राम में हुआ था। आप योग्य चिकित्सक, अनुभवी आयुर्वेदीय औषधि निर्माता एवं प्रतिभाशाली लेखक हैं। आपको संस्कृत, मराठी, गुजराती, व मारवाड़ी भाषाओं का अच्छा ज्ञान है। विविध "निखिल भारतवर्षीय वैद्य-सम्मेलनों" से आपको प्रमाणपत्र तथा स्वर्ण-पदक प्राप्त हुए हैं। आप मध्य प्रान्तीय वैद्य-सम्मेलन के पञ्चमाधिवेशन के अध्यक्ष थे। प्रायः सभी आयुर्वेद पत्रों को समय-समय पर अपने अनुभव-पूर्ण लेख देकर आप आयुर्वेद की सेवा करते रहे हैं। आपके निम्न प्रयोग आशा है पाठकगण व्यवहार में लाकर लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।

कल्प वटी—

त्रिफला चूर्ण २० तोला तथा शु० गंधक आंवलासार २॥ तोला को भृंगराज (भांगरे) के रस में घोटें; जैसे-जैसे रस उसमें सूखता जाय और मिलाते जांय। इस प्रकार २ सेर रस उसमें खपा दें। गाढ़ा होजाने पर १ पाव सत्यानाशी का रस तथा १ पाव गिलोय का रस भी धीरे-धीरे डाल कर खपा दें। गोली बनने योग्य होने पर ३-३ रत्ती की गोलियां बना कर अच्छी तरह सुखा कर रखलें।

सेवन-विधि—१ या २ गोली जल या दूध के साथ लें। चर्मदल रोगी को महा मंजिष्ठादि क्वाथ के साथ दें। गण्डमाला में कांचनार या वरने की छाल के क्वाथ के साथ दें। व्रण, शिराव्रण आदि होने पर त्रिफला क्वाथ, निम्ब पत्र क्वाथ, कृमिनाशक साबुन, या फिटकरी के जल से धोकर स्वच्छ वस्त्र से जल सुखा कर चर्म-रोग नाशक तैल भी लगाते रहना चाहिये।

गुण—यह गोलियां मलगत कृमियों को नाश करती, बालों की जड़ को असमय में पकने से बचाती तथा शारीरिक धातुओं के अणुओं में नवीनता प्रदान करती हैं। यह उपदंश, गजचर्म, चर्मदल, गण्डमाला, व्रण, नासूर आदि नाशक उत्तम दवा है।

पथ्य—गेहूँ की रोटी, चावल, मूंग की दाल, घी गौदुग्ध, मौसम्बी, परवल, लोकी, अंगूर। शर्करा का कम व्यवहार करें।

ज्वर-दमन—

प्रवाल भस्म चन्द्रपुटी	५ तोला
पिप्पली चूर्ण	१० तोला
गिलोय सत्व	१० तोला

—तीनों को तुलसीपत्र के रस में मर्दन करें तथा २-२ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखालें।

सेवन-विधि—ज्वर उतर गया हो तब, दोनों समय मधु या मंदोष्ण जल के साथ लेना चाहिये।

गुण—शीतपूर्व ज्वर (मलेरिया) में तथा अन्य सामान्य ज्वर में उत्तम कार्य करती हैं।

विशेष—"यदि इसके निर्माण मे गोदन्तीहरताल भस्म ५ तोला और मिला दी जाय तथा चिरायते के क्वाथ की एक भावना और देदी जाय तो इसके गुणों में बहुत कुछ वृद्धि होजाती है। रोगी को इसके सेवन काल मे यथासम्भव केवल दुग्ध व्यवहार कराना चाहिये अन्यथा कम से कम मात्रा में हल्का भोजन देना चाहिये।" —सम्पादक।

सुखद-विरेचन—

शु० गंधक ५ तोला	मुलहठी चूर्ण ५ तोला
सौंफ का चूर्ण	५ तोला
सनाय पत्ती का चूर्ण	१५ तोला
गुलकंद (उत्तम)	१५ तोला

—सबको खरल में डाल कर अच्छी तरह मर्दन करें और १॥-१॥ माशे की गोलियां बना कर सुखा लें।

—रात्रि का सोते समय २ गोली से ४ गोली तक गर्म जल या गर्म दुग्ध के साथ दें। प्रातः १-२ दस्त होकर बद्ध-कोष्ठता दूर होती है।

शोशमनी योग—

सत्व गिलोय	१० तोला
चन्द्रोदय षटगुण गंधक जारित	१ तोला
लोह भस्म	१ तोला
प्रवाल पिष्टी (चन्द्र पुटी)	१ तोला
स्वर्ण माक्षिक भस्म	१ तोला
मुक्ता-पिष्टी	१ तोला
सोने के वर्क	दस नग

—सबको खरल करके शीशी में सावधानी पूर्वक रखें। मात्रा—२ रत्ती।

अनुपान—शहद; विशेषानुपान गाय का दूध ऊपर से पीवें।

प्रधान-गुण— हृदय की निर्बलता, ज्वरांश, शरीर में हमेशा रहने वाला दाह, श्वास-खांसी, अग्निमांद्य रक्तगत निर्बलता, वीर्यगत निर्बलता, प्रदर, सूतिका वात, सूतिका रोग जन्य क्षय आदि नाशक है।

मध्यम गुण-यकृत, प्लीहा वृद्धि, कामला पांडु-नाशक।

सामान्य गुण—बल-वीर्य-वर्धक, रोग-नाशक, पुरुषत्व-दाता।

श्री० पं० चन्द्रशेखर जी बहुगुण आयुर्वेद-शास्त्री,

वाइस प्रिंसीपल—तिब्बिया कालेज, देहली।

पिता का नाम—श्री० पं० धनिराम जी बहुगुण

आयु—६० वर्ष जाति—ब्राह्मण।

प्रयोग विषय— १-फिरंग रोग २-गर्भिणी का ज्वर

"श्री०बहुगुण जी के वंश में पहिले से ही वैद्यक-व्यवसाय होता आया है। आप राजयक्ष्मा,दाहशादि तथा ग्रहणी रोग के सफल चिकित्सक हैं। 'अन्जुमने तुब्बाम' आदि कई संस्थाओं से आपको स्वर्ण-रौप्य पदक एवं प्रशंसापत्र प्राप्त हुये हैं। यक्ष्मा रोग के विषय में आपने अधिक छान-बीन की है और उसके लिये १ विशेष औषधि का आविष्कार करने का प्रयत्न कर रहे हैं। आपका निम्न प्रयोग उपदंश रोग पर उत्तम प्रमाणित हुआ है। पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

फिरङ्गादि वटी—

शुद्ध रस कपूर १ तोला

(मिथिलिटिड् स्प्रिट में उड़ाया हुआ)

सफेद कत्था ६ माशा

छोटी इलायची ६ माशा

लौंग २० दाने शीतलचीनी २० दाने

—बकरी के दूध में ७ दिन तक घोटकर मटर के समान गोली बना आम के आचार से ७ दिन खिलानी चाहिये। गोली को आम के आचार में लपेट कर निगलवा देना चाहिये। ताकि दाँतों से न लगे*। ७ दिन में ही आतशक ठीक हो जायगा। यदि फिर जरूरत समझें तो कुछ दिन बाद फिर ७ गोली ७ दिन प्रयोग करनी चाहिये।

इसके सेवन से कभी २ किसी २ को दस्त आ जाते हैं। उसमें चिन्ता करने की बात नहीं। हाँ अगर दस्तों में खून आने लग जाय तो एक-दो दिन को गोली बन्द कर देनी चाहिये। खून बन्द होने पर फिर प्रारम्भ कर देनी चाहिये। किसी के गले में दर्द हो जाता है। उसके लिये भी २-३ दिन गोली बन्द रखनी चाहिये। इस प्रकार ७ गोली या १४ गोलियों से फिरंग-रोग नष्ट हो जाता है।

*दांतों से लगने पर हानि होगी, अतएव यदि पीस कर कैप्सूल में भरकर दी जाय तो दांतों से लगने का डर ही न —सम्पादक।

लाल गुटिका—

त्रिकुटा ६ तोला

रससिंदूर, सुहागाखील, नीम की छाल, सफेद सरसों, सिंगरफ, इन्द्र जौ, नागर मोथा लाल चन्दन, कुटकी,

—प्रत्येक २-२ तोला।

—इन सबको कूट कपड़छान कर मिला कर चूर्ण कर लेना चाहिये। यह बच्चों और गर्भिणी के ज्वरादि के लिये उत्तम प्रयोग है और निर्भय होकर प्रयोग किया जा सकता है।

वैद्यभास्कर श्री० पं० देवदत्त जी शर्मा वैद्यशास्त्री,

शंकरगढ़ (गुरदासपुर-पंजाब)

पिता का नाम—नाड़ीविज्ञानाचार्य पं० सोहनलाल जी प्राणाचार्य

आयु—४३ वर्ष जाति—ब्राह्मण।

प्रयोग विषय—१-नाड़ी व्रण (नेत्र में) २-वृक्क-शूल

"श्री० शर्मा जी के वंश में पीढ़ियों से वैद्यक व्यवसाय होता आया है। आपके पूर्वज जसरोटा स्टेट के राज्यवैद्य थे। आपके स्वर्गीय पिताजी नाड़ी-ज्ञान के लिये दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे। आप विभिन्न स्थानों पर आयुर्वेद का अध्ययन एवं सक्रिय अभ्यास कर अपने पिता जी के 'आरोग्य-भवन' में कार्य कर रहे हैं और अपनी सेवा-भावना, उदारता, एवं चिकित्सा कौशल के कारण पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। प्रायः सभी आयुर्वेदीय पत्रों में आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग अत्यन्त सरल किन्तु गुणों में अक्सीर प्रतीत होते हैं। पाठक व्यवहार कर फलाफल अवश्य सूचित करें।" —सम्पादक।

नाड़ी व्रण पर—

रविवार के दिन प्रातः "अपामार्ग की जड़" खोद कर निकाल लें। मिट्टी झाड़कर छाया में सुखा कर निम्न प्रकार काम में लावें।

व्यवहार-विधि—दिन में ३-४ बार स्वच्छ पत्थर पर मुख की लार के साथ उपर्युक्त अपामार्ग मूल को घिस कर नाड़ी व्रण (आंख के कोये) पर लगावें।

आंख का नासूर (नाड़ी-व्रण) आंख के कोये में होता है। खारिश होने पर रोगी दबा कर पीव निकाल देता है, जिसमें कुछ समय बाद पीव इकट्ठा हो जाता है। यह वर्षों चलने वाला कष्ट-साध्य रोग है। डाक्टर आपरेशन के अतिरिक्त इसकी और कोई दवा नहीं जानते। वैद्य भी इसकी चिकित्सा करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। आज धन्वन्तरि पाठकों के लाभार्थ अपना एक गुप्त प्रयोग प्रकट कर दिया है।

वृक्क-शूल पर—

कलमी शोरा	१ छटांक
भल्लातक	आध पाव

निर्माण-विधि—भिलावे के सरोते से छोटे-छोटे टुकड़े करलें। लोहे की एक कलछी में प्रथम भिलावे के टुकड़े रखें ऊपर शोरा रखदें, फिर टुकड़े रखें और शोरा रखदें। इस प्रकार ३-४ तह शोरे और भिलावे की लगादें। सबसे ऊपर भिलावे ही रखें। अब कलछी को आग

पर रखदें। भिलावा प्रथम तैल छोड़ेगा, फिर आग लग जायगी। जब भिलावे की आग बुझ जाय तब शोरे तथा जले भिलावे के टुकड़ों को मट्टी के पात्र में उड़ेल दें। ठंडा होने पर पीस कर शीशी में रखलें।

निर्माण में सावधानी—भिलावे के टुकडे करते समय यह ध्यान रखें कि उसमें से जो एक प्रकार का चेंप निकलता है वह हाथ से या शरीर से न लगने पावे। यदि यह लग जायगा तो तमाम शरीर सूज जायगा। इसके लिये अंगुलियों में तैल लगाकर कपड़ा लपेट लेना चाहिये। यदि रबड़ के मोजे हाथ पर चढ़ा लिये जाय तो फिर कोई डर ही नहीं रहता है।

२—आग पर रखते समय जब आग लगे तो उसके धुएँ से अलग रहना चाहिये। इसका धुआँ हानिप्रद होता है।

—सम्पादक।

प्रयोग-विधि— मात्रा ३ माशे है। प्रातः सायं तथा रात्रि को यानी दिन में तीन बार गरम जल से सेवन करनी चाहिये। सेवन करने से पहिले ५ तोला एरंड तैल आध पाव दुग्ध में मिला कर रोगी को दें जिससे उसके कोष्ठ की शुद्धि हो जाय। जिन्हें २-३ माह निरंतर लेना हो उनको हर सप्ताह एरंड तैल देकर कोष्ठ शुद्धि कर देनी चाहिये। जिस दिन एरण्ड तैल दें उस दिन औषधि नहीं देनी चाहिये।

दौरे के समय एरंड तैल ५ तोला को १० तोला या अधिक-कम दूध में मिलाकर अथवा गर्म जल में मिलाकर पिलावें। दस्त होने पर बाद में औषधि व्यवहार करावें।

वृक्क शूल अथवा वस्ति शूल का दौरा होने से पूर्व प्रायः रोगी को पता चल जाता है कि अब दौरा होना चाहता है। ऐसा प्रतीत होते ही इस प्रयोग की १-२ मात्रा १५-२० मिनट के अन्तर से दें तो तत्काल शान्ति मिलेगी।

योग वातानुलोमक और मूत्रल है। साथ ही वृक्क, वस्ति के लिये बल्य और शोथ हर है। शर्करा, पथरी को तोड़ने की इसमें पूर्ण शक्ति है।

उपर्युक्त दोनो प्रयोगों की स्वयं परीक्षा करने का अवसर हमको नहीं मिल सका है; फिर भी लेखक की निःस्वार्थ भावना तथा निजी अनुभव के आधार पर हमको विश्वास होता है कि दोनों प्रयोग अति उत्तम हैं, पाठक अवसर पड़ने पर इन्हें व्यवहार कर सफलता प्राप्त करें।

—सम्पादक।
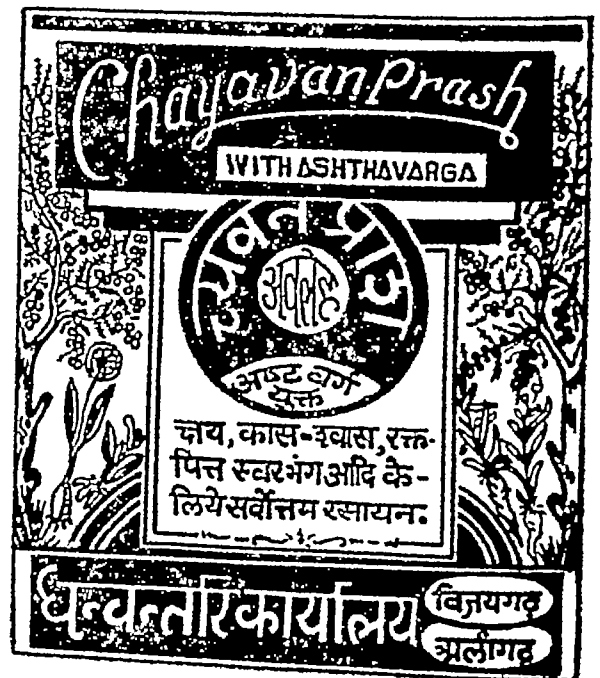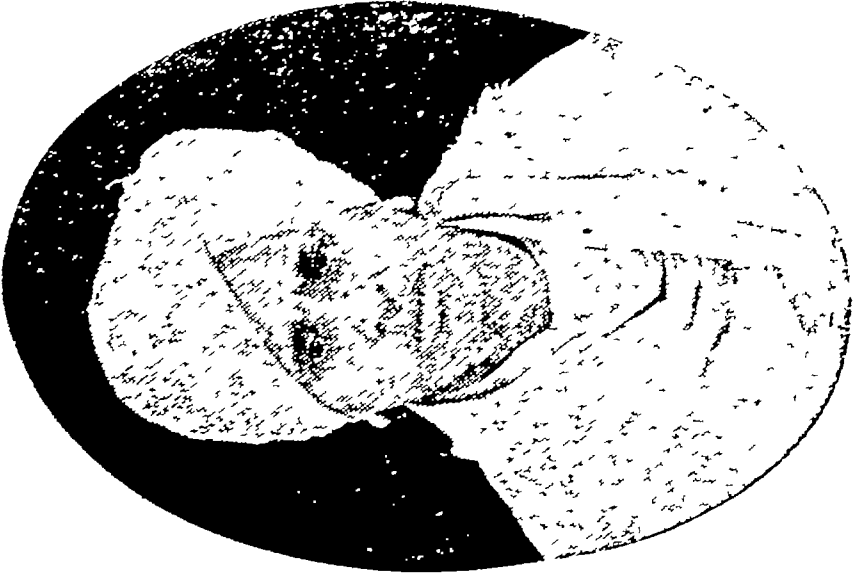
श्री. पं. श्रीदत्त जी शर्मा वैद्यराज,
रायबहादुर, आनरेरी मजिस्ट्रेट, भिवानी ।

स्व० श्री० पं० बद्रीदत्त जी भा
आयुर्वेदाचार्य, भारी ।

स्वर्गीय आचार्य बद्रीदत्त जी झा A. M. S.

प्रोफेसर बुन्देलखण्ड आयुर्वेदिक कालेज, झांसी।

पिता का नाम— श्री० पं० क्षेत्रपाल जी झा

आयु—३६ वर्ष (मृत्यु के समय) जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय— १-वात-विकार २-मूत्रकृच्छ्र-पूयमेह

"आचार्य 'झा' प्रतिभाशाली लेखक, योग्य चिकित्सक तथा सफल अध्यापक थे। आपने इस छोटी आयु में ही अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली थी। हिंदू विश्वविद्यालय से आपने A. M. S. की परीक्षा सन् १९३५ में प्रथम श्रेणी में पास की थी। कई पुस्तकें भी आपने लिखी हैं। ३ वर्ष सुधानिधि पत्र के सफल सम्पादक एवं महामण्डल यू० पी० के वाइस प्रेसीडेंट रह चुके हैं। खेद है कि आपके जीवनकाल में ही हम आपके लेख प्रकाशित नहीं कर सके। आपके निम्न दोनों प्रयोग उत्तम गुणप्रद हैं। पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।"

— सम्पादक।

कपीलु वटी—

शु० कुचला शु० वत्सनाभ

शु० हिंगुल शु० धतूरे के बीज

—चारों ५-५ तोला लेकर हिंगुल के अलावा तीनों चीजों का कपड़-छन चूर्ण करलें। फिर इस चूर्ण तथा हिंगुल को मिलाकर एक खरल में अद्रक स्वरस, चित्रक के क्वाथ तथा तुलसी पत्र स्वरस की ३-३ भावना देकर गुंजा प्रमाण वटी बना सुखालें।

गुण—इसके सेवन करने से पाचकाग्नि की वृद्धि होती है। उदर-कृमि नष्ट होते हैं। हृदय व शरीर की दुर्बलता दूर होती है। समस्त प्रकार के वात-विकारों में एवं बहुमूत्र में भी इससे लाभ होता है।

उपयोग—इसका प्रयोग भोजन के बाद १ या २ गोली तक जल के साथ करना चाहिये।

आचार्य गुग्गुल—

शु० गूगल	५ तोला
बबूल का गोंद कतीरा गोखुरू का चूर्ण	
छोटी इलायची के बीज हरेक	१-१ तोला
हरीतकी के छिलके का चूर्ण	१ तोला
सफेद चन्दन का चूरा	१ तोला
शुद्ध फिटकरी	३ माशे
चन्दन का इत्र	आवश्यकतानुसार

निर्माण-विधि—समस्त औषधियों के चूर्ण में चन्दन का इत्र (संदल) मिलाकर खरल में मर्दन करे। जब गोली बनाने लायक हो जाय तब १-१ माशे की गोली बनालें।

[शेष पृष्ठ ५६ पर]

श्री० डाक्टर बी० एस० थापर वैद्यवाचस्पति,

एल. सी. पी. एण्ड एस., हाल रोड, लाहौर।

पिता का नाम—श्रीमान् लाला केदारनाथ जी थापर।

"आपका जन्म १५ अगस्त १६०५ को लाहौर में हुआ था, आपने लाहौर के दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज से वैद्य-वाचस्पति की डिग्री सन् १६२५ में प्राप्त की तथा बम्बई के एक कालेज से L.C.P.&.S. की परीक्षा सन् १६३० में पास की है। लाहौर सनातन धर्म आयुर्वेदिक कालेज के वाइस प्रिंसीपल भी ६ साल रह चुके हैं। अब लाहौर में ही अपना स्वतन्त्र वैद्यक व्यवसाय कर अच्छी ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग शास्त्रोक्त औषधियों का सम्मिश्रण होते हुए भी अनुभव-पूर्ण हैं। आशा है पाठक लाभ उठावेंगे" —सम्पादक।

—लेखक—

प्रसूतिका ज्वर का यह प्रयोग बहुत अधिक रोगियों में प्रयुक्त किया गया है और हमेशा रोगी को पूर्ण स्वस्थता प्राप्त हुई है। मेरी धर्म पत्नी लेडी डाक्टर हैं, वे केवल एलो-पैथी में शिक्षित होने के कारण प्रायः एलोपैथिक औषधियों का प्रयोग करती हैं; किन्तु अब मेरे कारण धीरे-धीरे आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग उन्होंने प्रारम्भ कर दिया है। उनके प्रसूतिका ज्वर के रोगियों में जहां Penicillin आदि औषधियों ने रोगी को विशेष हानि पहुंचाई हो वहां भी इस प्रयोग ने काम दिया है।

मतलब यह कि पत्नी के डाक्टर होने के कारण मुझे इस प्रकार के रोगियों की चिकित्सा करने के विशेष अवसर प्राप्त हुए हैं।

अब यह अनुभूत प्रयोग 'धन्वन्तरि' द्वारा वैद्य-समाज की सेवा में प्रेषित है ताकि सब वैद्य-बन्धु इससे लाभ उठा सकें।

प्रसूतिका ज्वर (Puerperal Fever) के लिये अनुभूत प्रयोग यह है :—

लक्ष्मीनारायण रस (योगरत्नाकर)	१ गोली
प्रवाल पिष्टी	१ रत्ती
मधुरान्तक वटी (रसतंत्रसार) (मुक्तायुक्त)	१ गोली

—यह एक मात्रा है।

प्रत्येक मात्रा को १ तोले दशमूलारिष्ट में आधी छटांक जल मिला कर उसके साथ प्रातः आठ बजे, दुपहर को बारह बजे, शाम को चार बजे और रात्रि को आठ बजे देवें।

यदि रोगी की प्रकृति पैत्तिक होवे और ग्रीष्म ऋतु होवे तो दशमूलारिष्ट के स्थान पर उसी मात्रा में अमृतारिष्ट दिया गया है।

कुछ रोगियों को जिनको बेहोशी में चारपाई पर ही दस्त हो जाते थे उनको उपरोक्त औषधि केवल तीन बार दी गई थी अर्थात् आठ बजे प्रातः १२ बजे दोपहर को और पांच बजे सायंकाल। इसके साथ ही यह और दिया था :—

सूत शेखर रस (योगरत्नाकर)	१ रत्ती
वृ० गंगाधर रस (भैषज्यरत्नावली)	१ रत्ती

जल, दही का पानी अथवा निम्बू की शकंजबीन के साथ प्रात: १० बजे, दोपहर को तीन बजे और रात्रि को आठ बजे देने से १५ या २० दिन में रोगी ठीक हो गये थे।

श्वसनक ज्वर—

(Pneumonia) पर यह प्रयोग भी काफी रोगियों पर प्रयुक्त किया गया है। जहां डा० ने Penicillin औषधि के टीकों की सलाह दी थी वहां इस प्रयोग ने अवश्य लाभ पहुंचाया है।

श्वसनक ज्वर (Pneumonia) के लिये अनुभूत प्रयोग यह है। विशेष कर जब कि रोगी को ज्वर, छाती में दर्द और तीव्र श्वास हो।

(क) समीर पन्नग रस—

(रस-तन्त्रसार प्रथम विधि)	½ रत्ती
शृंग भस्म	२ रत्ती
अभ्रक भस्म (उत्तम)	½ रत्ती
बृहत ताशीलादि चूर्ण (भैष०)	३ रत्ती

—यह एक मात्रा है, ऐसी तीन मात्रा बनालें।

—प्रातः आठ बजे, दोपहर को बारह बजे और शाम को चार बजे शहद के साथ १-१ मात्रा दें।

(ख) दशमूलारिष्ट १ छोटा चम्मच
द्राक्षासव १ छोटा चम्मच

—दोनों को मिला कर ऐसी एक-एक मात्रा आध छटांक कोसे जल में मिला कर १० बजे प्रातः ३ बजे दोपहर और सात बजे रात्रि को देवें।

(पृष्ठ ५७ का शेष)

प्रयोग-विधि—दिन में रोगी की अवस्थानुसार २-२ घण्टे के अन्तर से दूध की लस्सी, जल अथवा नारियल के पानी के साथ देना चाहिये।

उपयोग-इसका प्रयोग मूत्रकृच्छ्र तथा पूयमेह में किया जाता है। इसके सेवन से मूत्र-त्याग करते समय की दाह शान्त होती है। पेशाब खुलकर आता है और पीप की कमी होती है।

पथ्य—रोगी को अम्ल, उष्ण और लवण का परित्याग कर देना चाहिये।

श्री० वैद्यरत्न पं० रघुवीरशरण जी शर्मा,

रसायनशाला, बुलन्दशहर।

पिता का नाम—श्री० पं० भवानीप्रसाद जी शर्मा।

उम्र—४३ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-गर्भस्राव २-रक्तप्रदर

"श्री वैद्य जी श्यामसुन्दराचार्य वैश्य बनारस वालों के प्रिय शिष्य हैं। आपने आयुर्वेद की परीक्षा बनवारीलाल आयुर्वेद विद्यालय देहली से दी है। आप अनुभवी औषधि निर्माता, योग्य चिकित्सक एवं सुलेखक हैं। आयुर्वेद के प्रायः सभी पत्रों में आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। आशा है पाठक आपके निम्न दोनों प्रयोगों से जो सरल किंतु पूर्ण प्रभावशाली हैं, अवश्य लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

—लेखक—

गर्भपात पर—

गोखरू छोटे अरण्ड की जड़ की छाल
कांस की जड़ कुशा की जड़

—प्रत्येक समभाग लेकर जौकुट करके रखलें।

मात्रा—१ तोला।

सेवन-विधि—रात को सोते समय पाव भर दूध और पाव भर पानी मिलाकर औटावें, इसके बाद पूर्वोक्त औषधियों में से १ तोला लेकर कपड़े की पोटली बांधलें और उस पोटली को औटते हुये दूध में डालदें। जब दूध मात्र रह जाय, पानी जल जाय, तब छानकर रोगिणी को पिलादें।

समय—गर्भ-स्थिति के एक मास बाद ही से अर्थात् दूसरे मास से पिलाना प्रारम्भ करदें और प्रसव पर्यन्त पिलावें। हां, यदि छटे-सातवें मास में गर्भपात होने की आशङ्का हो तो तीसरे मास से भी दे सकते हैं। किन्तु बार २ अनिश्चित समय पर गर्भपात होता हो तो दूसरे मास से ही दें।

गुण—जिन स्त्रियों का गर्भ एक बार गिरा हो अथवा कई बार, इसके सेवन से फिर न गिरेगा।

गर्भ गिरने की आशङ्का हो, कटिशूल आदि लक्षण हो चुके हों तो भी दे सकते हैं। लाभ होगा परन्तु गर्भ रुक ही जायगा यह निश्चित् नहीं। गर्भ स्थिति के बाद में जिसको भी पिलाया जायगा उस का गर्भ नहीं गिरेगा यह निश्चित् है। जिस स्त्री का गर्भ एक बार जिस मास में गिर जाता है उसको उसी मास में दुबारा भी गिरने की सम्भावना अधिक रहती है।

"यही प्रयोग श्री० कविराज आशुतोष जी मजूमदार द्वारा प्रेषित इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित किया गया है, योग अत्युपयोगी है। पाठक इसे सेवन कराने से पूर्व मेरा विशेष निवेदन श्री० मजूमदार जी के लेख में अवश्य पढ़लें।" —सम्पादक।

रक्त प्रदर—

पठानी लोध	५ तोला
समुद्र शोख	५ तोला

—इसको कूट-छानकर रखलो।

मात्रा—६ माशे से १ तोला।

सेवन-विधि—प्रातःकाल २ तोला साठी चावल को पीने योग्य पतले पकावें और उपरोक्त चूर्ण को फाक कर ऊपर से इनको पिलावें, बस दिन भर में एक ही बार।

विशेष अनुभव—उपरोक्त चूर्ण ४ माशे प्रातः सायं चावल के धोवन से देने से भी लाभ होता है, परन्तु उतना नहीं।

गुण—रक्त-प्रदर कैसा ही भयङ्कर हो, जो अनेक औषधि देने पर भी अच्छा न हुआ हो वह भी ठीक हो जायगा।

आयुर्वेदाचार्य पं० ब्रह्मानन्द जी दीक्षित विद्यालंकार

राजा की मंडी, आगरा ।

पिता का नाम-श्री प०.चतुर्भुज जी दीक्षित तहसीलदार।

उम्र—५७ वर्ष जाति—ब्राह्मण ।

प्रयोग-विषय— १-क्षय २-सुजाक

"श्री० दीक्षित जी आयुर्वेद संस्कृत एवं अंग्रेजी के अच्छे ज्ञाता हैं। आयुर्वेदिक कालेज गुरुकुल कांगड़ी के प्रोफेसर और अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद स्नातक सम्मेलन ग्वालियर के सभापति रह चुके हैं। आप योग्य चिकित्सक हैं तथा कष्ट-साध्य रोगियों को भी आपकी चिकित्सा से लाभ पहुंचता है। सभा-सोसाइटियों में विद्वत्तापूर्ण भाषण देते हैं। संस्कृत व हिन्दी के कवि भी हैं।"

—सम्पादक।

क्षय नाशक रस—

नाग भस्म ४ तोला

पारदगन्धक सममाग की कज्जली २ तोला

शु० मंशिल १ तोला

—इनकी कज्जली कर कूपीपक्व रसायन-विधि से पक्व करलें। शीशी के कण्ठ में लगा द्रव्य पीस कर रखलें।

सेवन-विधि—उपर्युक्त रस १ रत्ती, स्वर्णवसन्त-मालती १ रत्ती। वांसा पत्र-स्वरस की चासनी में प्रातः सायंकाल दें।

सोजाक (उष्णवात) के लिये—

फिटकरी. गन्दा बिरोजा सूखा.

कलमी शोरा। —तीनों समान भाग —लेकर चूर्ण करलें।

मात्रा—३माशे से ६ माशे तक। दूध की लस्सी के साथ पीवें। दूध की लस्सी भर पेट पी सकते हैं।

गुण—नया-पुराना सभी प्रकार का सुजाक नष्ट होता है।

"इस प्रयोग को हमने कई रोगियों पर व्यवहार किया है। नये सुजाक के रोगियों के लिये तो अत्युत्तम साबित हुआ है, लेकिन पुराने सुजाक के रोगियों को भी लाभ करता है। प्रयोग सस्ता, सरल तथा उपयोगी है।"

—सम्पादक।

कविराज पुरुषोत्तमदेव आयुर्वेदालंकार भिषगाचार्य,

एम० ए० एम० एस० प्रवचनालंकार, अंगूरीन फार्मेसी, मुल्तान (पंजाब)

"आप गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी (हरद्वार) के सुयोग्य, यशस्वी तथा प्रतिभाशाली स्नातकों में से हैं। आपने गुरुकुल की शिक्षा समाप्त कर सुप्रसिद्ध अष्टांग आयुर्वेद कालेज कलकत्ता में क्रियात्मक चिकित्साशास्त्र का अध्ययन किया है। यहां तक ही नहीं आप जिज्ञासु भावना के व्यक्ति होने के कारण देश के सुप्रसिद्ध कविराज गणनाथसेन सरस्वती कलकत्ता, कविराज हरिरंजन जी मजूमदार देहली आदि से ज्ञानवृद्धि करते रहे हैं। आप अनेक आयुर्वेदीय पत्रों के सफल लेखक हैं। अपनी योग्यता तथा कार्यपटुता के कारण अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन की कार्यकारिणी का निर्वाचित सदस्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आपको अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन लाहौर ने स्वर्णपदक भी प्रदान किया है।"

—सम्पादक।

श्वेत प्रदर—

(१) वज्रक्षार — एक छटांक
सज्जीक्षार १ तोला — कासीस ३ माशे
गेरू — २॥ तोला
मल्लभस्म — ४ रत्ती

—खरल करके १ से ४ चावल तक शहद या मलाई के साथ प्रातः सायंकाल देना चाहिये।

रक्त-प्रदर—

(२) शुद्धपारा (हिंगुलोत्थ) — १ छटांक
शुद्धगंधक (आंवलासार) — १ छटांक
पलाश गोंद — ½ छटांक
अफीम शुद्ध — १ तोला
नवसार — ½ छटांक

—प्रथम पारद-गंधक की कज्जली करें तथा शेष वस्तु खरल में डाल कर गूलर के पत्तों के रस की भावना दें। शुष्क होने पर पर्पटी-विधि से पर्पटी तैयार करलें। चाहें तो पर्पटी को पीसकर चूर्णवत् कर सकते हैं।

सेवन-विधि—इसमें से ४ चावल से १ रत्ती तक शहद या मलाई के साथ प्रातःसायंकाल दें।

श्री० पं० पुरुषोत्तमलाल जी
वैद्यराज, काव्य-मनीषी,
साहित्यरत्न, जबलपुर।

"श्री० गोस्वामी जी का जन्म सयुक्त प्रांत के अन्तर्गत एटा शहर में सन् १६१३ में, प्रतिष्ठित गौड़ ब्राह्मण वंश में हुआ था। आप बड़े ही उदार विचारों के सहृदय एवं आयुर्वेदाभिमानी व्यक्ति हैं। आपको आयुर्वेदीय-चिकित्सा का अच्छा अनुभव प्राप्त है। काशी-पण्डित सभा ने 'वैद्य मार्तण्ड' की पदवी से भी आप को सम्मानित किया है। आपके निम्न दोनों प्रयोग उत्तम हैं।"

—सम्पादक।

—लेखक—

अपरस-दद्रु नाशक—

गंधक आमलासार	१ तोला
शुद्ध सुहागा	३ माशा
हरताल	३ माशा
नीलाथोथा	१ माशा

—महीन पीसकर मिट्टी के सफेद तैल में मिलाकर लगावें, चमत्कारिक योग है।

"दाद पर उपर्युक्त औषधि लगाने से पूर्व किसी चीज से दाद को खुजला लेना चाहिये। औषधि लगाने से २-३ घण्टे बाद कपड़ा धोने के साबुन से खूब धोकर मोटे कपड़े से अच्छी तरह पोंछ देने से यह औषधि शीघ्र प्रभाव दिखाती है।"

—सम्पादक।

प्लेग हरण पट्टी—

एक पाव गंधा विरोजा को अग्नि पर पिघला कर उसमें २॥ तोला नीलाथोथा महीन पीसकर अच्छी तरह मिलादें। इस दवा को कपड़े की पट्टी पर लगाकर आंच दिखाकर गिल्टी पर चिपकादें। इससे गिल्टी बैठ जायगी, गरम रुई से गिल्टी को सेंक भी देना चाहिये। इसकी परीक्षा सहस्रों रोगियों पर की जा चुकी है।

वैद्य कविराज पं. देवराज शास्त्री,

आयुर्वेदाचार्य, श्रीकृष्ण फार्मेसी अमृतसर।
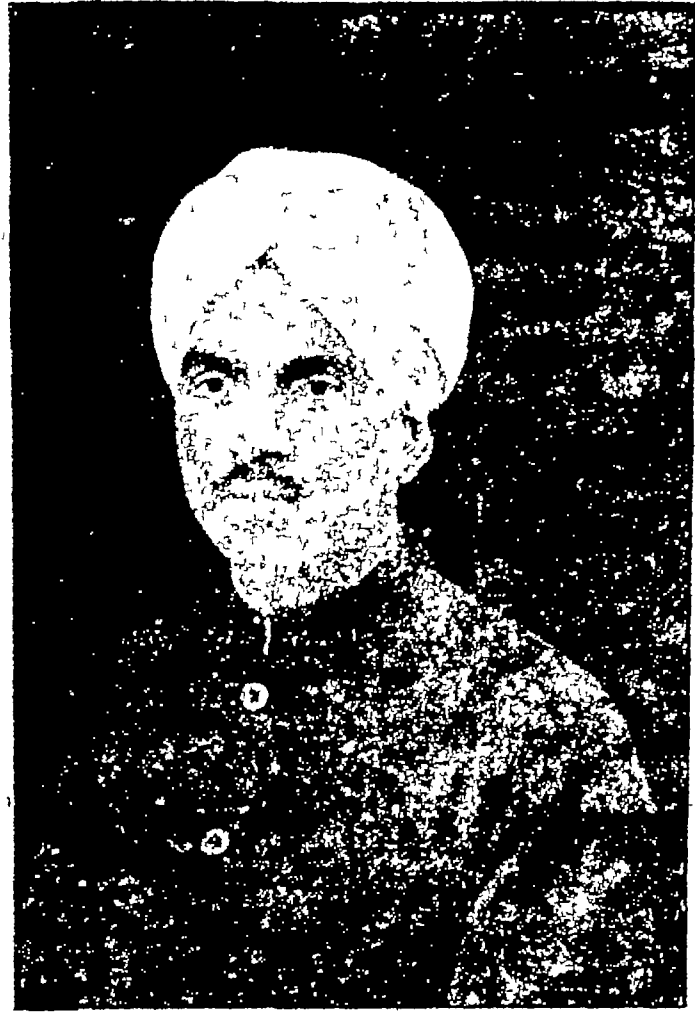
पिता का नाम-श्री० पं० रामतीरथ जी मिश्र

आयु-४५ वर्ष जाति-ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-बाल-शोष २-प्रवाहिका

"श्री शास्त्री जी अमृतसर की श्रीकृष्णा फार्मेसी के अध्यक्ष एवं योग्य व्यक्ति हैं। आप विभिन्न आयुर्वेद संस्थाओं के सभापति, मन्त्री आदि रहे हैं और हैं। जिला जालंधर वैद्य सम्मेलन १९४० के सभापति भी रह चुके हैं। निखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलन से आपको प्रशंसा पत्र एवं स्वर्णपदक प्राप्त हुए हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग उपयोगी हैं। पाठक व्यवहार में लाकर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

बालशोष नाशक—

बम्बई मोती (उत्तम)	२ माशे
जहरमोहरा खताई	४ माशे
नारियल दरियाई	४ माशे
बंसलोचन असली	४ माशे
बेरपत्थर भस्म	४ माशे
इलायची दाना	४ माशे
गुलाब जीरा	४ माशे

प्रथम मोतियों को अर्क गुलाब तथा अर्क बेदमुश्क में घोटें। फिर उपर्युक्त शेष ६ चीजों को बारीक कर उसी में डाल दें। अर्क बेद-मुश्क के साथ एक दिन मर्दन करें और आधी रत्ती की गोली बनाकर सुखा लें।

विधि—प्रातःसायंकाल १-१ गोली अर्क केवड़ा व अर्क बेदमुश्क दोनों बराबर मिलाकर १ तोला में घोल कर बच्चों को पिलावें।

गुण—जिस बच्चे का शरीर सूख कर कांटा हो गया हो अस्थिपञ्जर मात्र शेष हो, उनको इस

औषधि से अवश्य लाभ होता है। १ माह के प्रयोग से रोग नष्ट होता है, लेकिन औषधि २ माह तक चालू रखनी चाहिये, जिससे बालक हृष्ट-पुष्ट होजाता है।

प्रवाहिका नाशक—

हरीतकी फल छाल (हरड़ का वक्कल)
दाड़िम त्वक (अनार की अन्तर छाल)
सौंफ पोस्त डोंडा सुंठी (सोंठ)
—हरेक १०-१० तोला।
सोवर्चल लवण ५ तोला

—बारीक कूट-छान कर मिलाकर शीशी में रखलें।

मात्रा—४ रत्ती से १॥ माशे तक आयु एवं रोगी की अवस्थानुसार देना चाहिये।

अनुपान—प्रवाहिका में यदि रक्त आता हो तो तण्डुलोदक (चावल के पानी) के साथ निम्न प्रकार लें।

रात्रि को १ पाव चावल लेकर पानी से धोकर आध सेर पानी में भिगो दें। प्रातःकाल कुछ हिला कर छानलें। इस पानी के साथ उपर्युक्त औषधि देनी चाहिये। एक बार में एक छटांक पानी पर्याप्त है।

साधारण प्रवाहिका में सौंफ के अर्क या दही की लस्सी के साथ दे सकते हैं।

गुण—योग छोटा सा है, लेकिन पूर्ण प्रभावशाली है; प्रवाहिका चाहे रक्त पित्त से हो चाहे कफादि से २ ३ दिन इस औषधि का सेवन करने पर अवश्य नष्ट होजाती है।

वैद्यराज बा० दलजीतसिंह जी

आयुर्वेदीय विश्व-कोषकार चुनार आयु. औष.

रायपुरी पो० चुनार (मिर्जापुर)

पिता का नाम—बा० महावीर प्रसाद सिंह जी रईस

आयु—४२ वर्ष जाति—क्षत्रिय

विषय—१-रोहे(पोथकी।२-वाजीकरण (स्तम्भक)

"श्री० वैद्यराज जी प्रसिद्ध वनस्पति विशेषज्ञ हैं। यों तो आपने कई एक उत्तम पुस्तकें लिखी हैं, लेकिन "आयुर्वेद विश्वकोष' ने जो आठ विशाल भागों में लिखा गया है और जिसके केवल ३ भाग अभी तक प्रकाशित हो पाये हैं, आपकी विद्वत्ता एवं वनस्पति विषय आपके अध्ययन की धाक आयुर्वेद-समाज पर बिठादी है. इस ग्रंथ की उपयोगिता पर निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन में स्वर्णपदक एवं प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ है। धन्वन्तरि पर आपकी विशेष कृपा रहती है और प्रायः आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं।" —सम्पादक

१—रोहे की अपूर्व औषधि

द्रव्य और निर्माण-विधि—

नौसादर १ तोला, रस कपूर २ चावल,

—दोनों को पीतल की थाली की पीठ पर रखकर थोड़ा जल मिला हाथ से खूब रगड़ें। रगड़ते-रगड़ते जब वह हरे रंग का हो जाय, तब इसे शीशे की डाट वाली शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—इसमें से थोड़ी सी दवा अंगुली में लेकर रोहे के रोगी की आंख में अंजन की भांति दिन में दो बार लगावें।

उपयोग—इसके सेवन से दो-तीन दिन में ही पुराने से पुराना रोहा (पोथकी) आराम हो जाता है।

२—मैथुनानन्ददायिनी गुटिका—

द्रव्य और निर्माण विधि—

चांदी की भस्म		४॥ माशा,
जावित्री,	केसर,	रेंगामाही,
—प्रत्येक १॥-१॥ तोला।		
जायफल,	समुद्र सोख	६-६ माशा
जहरमोहरा	कस्तूरी	१॥-१॥ माशा,
गिलोय सत्व	स्वर्ण भस्म	३-३ माशे

[शेष पृष्ठ ६६ पर]

लाभ करेगी। इसमें से ३—मासे चूर्ण में ३ मासे कच्ची खांड मिला कर दूध से तुरंत इसकी फंकी कर लिया करो, मुख में फिराने की आवश्कता नहीं। रोगी ने ऐसा ही किया, किन्तु फिर भी वह कब्ज़ की शिकायत करता ही रहा। तब मैंने दूध के अनुपान से भी देना बंद कर दिया और प्रातः सायं केवल पानी से ही सेवन कराने लगा और रोगी को आराम होगया। इस प्रयोग ने मेरे हृदय में स्थान बना लिया। किन्तु तब से ही मैं इस धुन में रहने लगा कि यदि यह प्रयोग रोगियों को कब्ज़ न करे और भूख बंद न करे तो यह इस रोग के लिये एक सिद्ध प्रयोग हो जायगा। अस्तु अनुभव करते २ सन् २५ में मैंने इसमें इस प्रकार सुधार कर दिया है।

गोखरू ताल मखाना
शतावर बीजबंद
भुसी ईसबगोल, कौंच के बीज की गिरी
कांकोली (बंगला) शिवलिंगीबीज

—समान भाग लें।

विधि—भुसी ईसबगोल को छोड़कर शेष सब द्रव्यों को पृथक कूट कर चलनी में छानलें और तब सब को पृथक २ तोल कर मिलालें। कोई द्रव्य तोल में कम न हो। स्मरण रखें कि इसे अधिक परिमाण में न बनावें क्योंकि महीने १॥ महीने बाद ही बिगड़ जाता है अर्थात् इसमें जाला पड़ जाता है।

मात्रा—३—३ माशे उतनी ही खांड मिला कर।

समय—प्रातःसायम् भोजन से ३ घन्टे पहिले।

अनुपान—शुद्ध जल।

परहेज—खटाई तैल मिरच गुड़ मसाले।

गुण—यह वीर्य को कुछ ही दिनों में शुद्ध करके इतना गाढ़ा कर देता है जो कि विना निकाले स्वयं नहीं निकल सकता। न कब्ज करता है, न मन्दाग्नि; परम वाजीकरण है। इसके अतिरिक्त ज्वर कास क्षय-शोष में भी परम लाभाकारी सिद्ध हुआ है, जिन्होंने अपने वीर्य के भंडार को विलकुल समाप्त कर दिया है उनको पुनर्योवन प्रदान करता है। इसके सेवन से ३-४ मास में शरीर हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ होजाता है।

कस्तूर्यादिबटी—

कस्तूरी जायफल दखनी जावित्री
नागकेशर काली मिरच पीपल बड़ी
लौंग अकरकरा सोंठ
असगंधनागौरी रूमी मस्तगी पाषाण भेद
माई जाफरान (केशर) मोचरस
सतगिलोय बहूटी अतीस मीठी
छोटी इलायची के दाने काकड़ासिंगी
अफीम बेलगिरी अरलू के फूल

—ये २३ चीज़ें २-२ मासे लेकर छान कर अदरक के रस या पान के रस से ३-३ घन्टे बाद रोगी को दें। वायु शीघ्र दब जायगी और रोगी को नींद आजायगी। विशूचिका में आध आध घन्टे बाद पलाडु रस १-१ तोला से सेवन करावें। शीघ्र ही नाड़ी स्वस्थ हो जायगी और रोगी को ज्वर हो जायगा, कै दस्त बद हो जायंगे। यह प्रयोग वात-कफो ल्वणा सन्निपात (जिसमें

[शेष पृष्ठ ७२ पर]

परिणाम शूल नाशक—

शुद्ध पारद	शुद्ध आंवलासार गंधक
मुक्ता शुक्ति भस्म	शुद्ध गोदन्ती हरताल
शु. श्वेत मल्ल	शंखनाभि शुद्ध
शङ्ख भस्म	—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—सातों औषधियों को पीसकर कुमारी-स्वरस से दो दिन तक खरल करें, फिर गोला बनाकर सुखा लेवें और गजपुट में देकर भस्म बना शीशी में बन्द कर देवें। परिणाम शूल के रोगी को जब पीड़ा अत्यधिक होने लगे तो १-१ घण्टों पर ३ या ४ मात्रा देने से ही आराम होने लगता है। ऐसे नित्य प्रातः रात्रि व दोपहर को १-१ रत्ती गरम पानी से सेवन करना चाहिये। दूध का अधिक सेवन गुणकर होता है।

[पृष्ठ ७१ का शेष]

रोगी उठ-उठ कर भागता व प्रलाप करता हो) के लिये हम बहुत समय से सफलता पूर्वक व्यवहार कर रहे हैं। यह हमारा खानदानी प्रयोग है।

विशूचिकान्तक वटी—

अफीम		१ माशा
हींग		३ माशा
सोंठ	रसकपूर शुद्ध	२-२ माशा
जीरा सफेद	जीरा स्याह	२-२ माशा
लाल मिरच		२ माशा

—शुद्ध ताजे पानी में पीसकर उड़द बराबर गोलियां बनालें और ठंडे-ताजे पानी से आध २ घण्टे बाद उपद्रव शांत होने पर्यन्त देते रहें और बरफ चुसावें।

गुण—यह शत-प्रतिशत लाभ करता है। विशूचिका की घोर तृषा को तो ४-५ गोलियों में ही शान्त कर देता है।

[पृष्ठ ७२ का शेष]

अर्क गुलाब डालकर १२ घन्टे तक घोंट कर ५० गोलियां बनालें।

सेवन-विधि-इसमें से १ गोली प्रातःकाल, १ गोली दोपहरको और १ गोली रात्रि को ६ माशे शहद में मिला कर देने से हिस्टेरिया की भयानक दशा में भी अतीव लाभ होता है। वातकारक वस्तुओं का सेवन छोड़ देना चाहिये। ४० दिन औषधि सेवन करनी चाहिये। यदि प्रदर की शिकायत भी हो तो अशोकारिष्ट १ तोले में समान भाग जल मिला कर भोजनोपरान्त पिलाना चाहिये। इस प्रयोग से कई अत्यन्त वेग-पूर्ण हिस्टेरिया रोगी आरोग्य हुए हैं।

"हमने उपर्युक्त प्रयोग मे हींग, कपूर देशी तथा केशर तीनों ॥-॥ माशे की जगह ६-६ माशे डालकर ५० गोलियां बनाई थीं। प्रयोग फल — ।"

श्री० डाक्टर पृथुवीरसिंह जी,

पृथुवीर भवन, पृथुवीर रोड, छतरसा [कानपुर]

—लेखक—

पिता का नाम—श्री० ठा० मुकटसिंह जी ज़मींदार

आयु—४५ वर्ष जाति—क्षत्रिय

प्रयोग-विषय— १—सर्पदंश २—जीर्ण ज्वर

३—अर्धावभेदक ४—बवासीर

"श्री० डाक्टर साहब के घराने में बहुत पहिले से चिकित्सा-व्यवसाय होता आया है। आप निर्धन जनता को निःस्वार्थ भाव से तथा निःशुल्क औषधि वितरण करते हैं। आप सफल चिकित्सक हैं। आपके निम्न चार प्रयोग अनेकों रोगियों पर व्यवहृत एवं परीक्षित हैं। पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

सर्पदंश पर अव्यर्थ—

कैसे ही भयङ्कर विषधर ने डस लिया हो, चाहे वह किंगकोबरा ही क्यों न हो, तुरन्त १ तोला कान्हाटेरी और सात नग बढ़िया कालीमिर्च से बारीक पीस एक छटांक असली घी में मिला, किंचित् उष्ण कर पिलादें। ऐसा आध २ घण्टे के अन्तर से कई बार करें। शीघ्र ही दंशित विष मुक्त होगा। पशुओं को इसकी चौगुनी मात्रा दें। यदि दांत बन्द हो गये हों तो किसी चीज से दांत खोलकर दवा पेट में पहुंचा दें।

नोट—कान्हाटेरी (कनकौआ) किम्वदन्ती अनुसार इसे कालिया मर्दन के अवसर पर आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द जी ने सहायतार्थ पुकारा था। इसीसे इसका नाम कान्हाटेरी पड़ा।

कान्हाटेरी का परिचय—

यह नीले फूल युक्त छोटी लुआवदार बूटी है, जो चैत से पूष मास तक गीले स्थानों पें प्रायः सर्वत्र मिलती है। अधिक शीत न सह सकने के कारण माघ मास में सूख जाती है। इसकी पकौड़िया व साग बनाकर लोग खाते हैं। बर्र के दंश स्थान पर शीघ्र मल देने से सूजन और पीड़ा तत्काल शान्त हो जाती है; किन्तु वृश्चिक दंश पर काम नहीं करती है।

जीर्ण ज्वर हर प्रयोग—

खूबकला १॥ माशे

काली मिर्च बढ़िया ७ नग

उंगली के समान मोटी नीम पर की—

गिलोय १ बालिश्त

मिश्री ६ माशे जल पाव भर

—खूबकला और कालीमिर्च को दो अलग २ मिट्टी के स्वच्छ कुल्हड़ों में शाम को भिगोदें, प्रातः प्रथम खूबकला को धो साफ कर अलग रखलें। पश्चात् किसी साफ पत्थर पर हाथ से रगड़ कालीमिर्च का छिलका निकाल दें। अब इस छिलका रहित काली मिर्च व गिलोय को खूब बारीक घोंट छानकर पाव भर पानी में मिला, मिश्री डालकर रखलें। बस, खूबकला को फांक ऊपर से इस गिलोय व कालीमिर्च के रक्खे हुये अर्क को पीलें। एक मास तक निरन्तर ऐसा ही करें।

लाभ—दो-तीन दिन बाद पेशाब की रंगत बदलनी शुरू हो जाती है। १ मास में रोगी बिल्कुल चङ्गा हो जाता है। जीर्ण ज्वरी, यक्ष्मा वालों को यह ईश्वरी वरदान है।

अर्धावभेदक (आधाशीशी) पर—

सोंठ की उत्तम गांठ ले कई बार साफ जल से धोकर एक साफ पत्थर पर घिसे, जिस तरफ दर्द हो उसी तरफ की आंख में एक रत्ती आंज दें, आंसू गिरेंगे। ५ मिनट पश्चात् आंख जल से धो डालें और थोड़ा सा घी लगादें, दर्द दूर हो जायगा।

खूनी बादी के बवासीर पर—

त्रिफला	पलुआ	चाकसु बीज
निबौली		बकायन के बीज
शुद्ध रसौत		—प्रत्येक ३-३ तोला
मुनक्का उत्तम		काला सुरमा
पोदीना		—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—शुद्ध रसौत को छोड़कर बाकी इन सब औषधियों को कूट कपड़छन कर बारीक करलें और फिर कांचे कुकरौंधे का स्वरस लेकर उस में रसौत को घोल लें, पश्चात् शेष सब कुटी-पिसी औषधियों को मिला चने प्रमाण गोलियां बनालें।

व्यवहार विधि—१-२ गोली प्रातः-सायं ताजे जल के साथ।

गुण—खून को तुरन्त बन्द करती है, दर्द दूर करती है, दस्त साफ लाती है, मस्से बैठ जाते हैं, दोनों प्रकार की बवासीर पर अद्भुत काम करती है।

श्री० पं० नानकचन्द जी वैद्यशास्त्री,

श्री० शैलेन्द्र रसशाला, मच्छीहट्टा, लाहौर।

—लेखक—

पिता का नाम—श्री. पं० घनीराम जी शास्त्री

आयु—६१ वर्ष जाति—सारस्वत ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-उपदंश (फिरंग) २-नपुंसकता

"श्री शास्त्री जी आयुर्वेद शास्त्र के मर्मज्ञ, वयोवृद्ध अनुभवी चिकित्सक तथा उत्साही कार्यकर्ता हैं। आप योग्य लेखक भी हैं। आपने "ज्वरतिमिर भास्कर" का भाषानुवाद किया है तथा अन्य कई उपयोगी आयुर्वेद-पुस्तकें लिखी हैं। आपके लेख प्रायः सभी आयुर्वेद पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। आप बहुत वर्षों से लाहौर वैद्य सभा के मंत्री तथा नि. भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ के परीक्षक हैं एवं सन् १९४८ में नि. भा० वर्षीय आयुर्वेद-विद्यापीठ के प्रधान मंत्री रह चुके हैं। निम्न दोनों प्रयोग आपके लम्बे अनुभव के अनमोल रत्न हैं। आशा है पाठक लाभ उठायेंगे।" —सम्पादक।

उपदंश (फिरंग या आतशक) रोग—

पाश्चात्य पद्धति में जिसे सिफलिस भी कहते हैं, संक्रामक होने से भयंकरता को धारण करता है। इसकी चिकित्सा करने से पूर्व रोगी को विरेचन द्वारा शुद्ध कर लेना चाहिये।

—१ तोला दालचिकना दश-वर्षीय पुराने गुड़ में मिलाकर गुग्गुल की तरह खूब कूटें, पीछे चने प्रमाण गोलियां बनालें। इनमें १-१ गोली प्रातः सायं साधारण जल से निगल जायें।

पथ्य—भूख लगने पर चने की रोटी, भुने चने छिलका रहित सेवन करावें। अधिक रुक्षता होने पर घी पिलावें। इस रोगी के लिये लवण, तैल, खट्टे अचार दधि आदि कुपथ्य हैं।

गुण—इस औषधि के सेवन करने से उपदंश के व्रण सात दिन के अन्दर स्वयमेव शुष्क हो जाते हैं, रोगी निरोग होजाते हैं।

नपुंसकता नाशक—

नपुंसकता कई प्रकार और हेतु से होती है।

सर्प-विज्ञानाचार्य श्री. पं० कृपाशंकर जी शर्मा वैद्य,

सुर्जा [बुलन्दशहर]

पिता का नाम—आयुर्वेद-भूषण पं० करुणानिधि जी वैद्य

आयु—७३ वर्ष जाति - ब्राह्मण

प्रयोग-विषय— सर्प विष पर नस्य एवं अंजन

"श्री० पंडित जी वयोवृद्ध, अनुभवी एवं प्राचीन ढंग के चिकित्सक हैं। आपके वंश में वर्षों से आयुर्वेद-चिकित्सा का कार्य होता आया है। आपको सर्पों के विषय में हर प्रकार की जानकारी प्राप्त करने का सदैव से शौक रहा है और इसी के फलस्वरूप आपने 'सर्प विज्ञानीय' पुस्तक बड़ी खोज-बीन के साथ लिखी है, आप सर्पदंश चिकित्सा एवं क्लीवत्व चिकित्सा के विशेषज्ञ हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग सर्प-विष पर पूर्ण परीक्षित हैं। पाठक समय पड़ने पर अवश्य परीक्षा कर लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

सर्प विष पर नस्य—

कसौंदी के बीज मनसिल

सिरस के फूल विजयसार

मीठा तेलिया ६-६ माशे

निर्माण-विधि-उपर्युक्त ५ चीजों को कूट-पीस छान कर आक के दूध की १ भावना देकर १ गोला बनालें। काले सर्प का काटा हुआ फण सहित मुख में यह गोला भर दें। एक कुल्हड़े में पिसा हुआ नमक दो तोला नीचे रख कर

—लेखक—
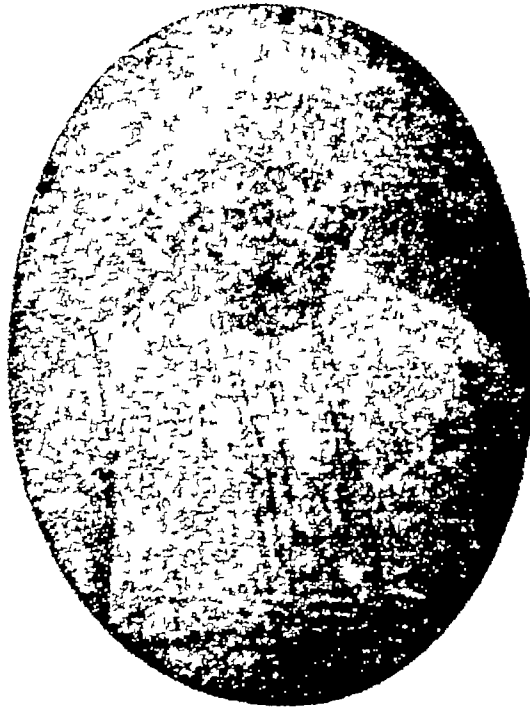
ऊपर गोला से भरा हुआ सर्प का फण रख दें। फिर कुल्हड़े के मुंह पर सरवा रख कर मिट्टी से संधि बंद कर दें। सूख जाने पर १० सेर जंगली कण्डों में फूंक दें। शीतल होजाने पर कुल्हड़े के अन्दर की सब राख निकाल कर बारीक पीसनी चाहिये। अब अपामार्ग के कोंपले कर २ तोला लें और पीस कर मिलादें। फिर अब में आक के दूध की १ भावना देकर सुखा कर शीशी में सुरक्षित रखलें।

सेवन-विधि—अवसर पड़ने पर इसकी २ चावल भात्रा पोली नरई में रख कर नासिका में फूंक दें।

गुण—अन्य औषधि से रोगी की मूर्च्छा दूर न होती हो अथवा रोगी मृतवत् ठंडा पड़ा हो

[शेष पृष्ठ ८३ पर]

श्रीमान् स्वामी कृष्णानन्द जी चक्रवर्ति,

मीरघाट, बनारस ।

प्रयोग विषय— १ फुफ्फुस-सन्निपात २–डब्बा (पसली चलना)

"श्री स्वामी जी का जन्म सम्वत् १६१० में पंजाब प्रान्त में एक सम्पन्न परिवार में हुआ है। आपने काशी में व्याकरण, वेदान्त तथा आयुर्वेद शास्त्रों का पठन पाठन किया। अब बहुत समय से देश-पर्यटन कर रहे हैं। आप अनुभवी एवं सफल चिकित्सक हैं। इस समय ६३ वर्ष की आयु होने पर भी आपकी अग्नि, बल, इंद्रिया और स्वास्थ्य ठीक हैं; यह आपके जीवन-पर्यन्त ब्रह्मचर्य पालन करने का प्रताप है। अब कुछ समय से आप काशी में ही निवास कर रहे हैं। निम्न दोनों प्रयोग आपके सैकड़ों बार के परीक्षित हैं।" —सम्पादक।

फुफ्फुस सन्निपात (न्युमोनियां पर)

सोंठ काली मिर्च पीपल
सुहागा नवसादर सोंचर नमक

निर्माण—सबको बारीक पीस कर खरल में डाल कर ग्वारपाठे के रस में ७ दिन घुटाई करें और २-२ रत्ती की गोली बनालें।

सेवन विधि-दिन में प्रातः ३ गोली १-१ घन्टा के अन्तर से तीन बार में सौंफ के क्वाथ या अर्क के साथ दें। फिर दिन भर देने की आवश्यकता नहीं है। दूसरे दिन इसी प्रकार फिर दें।

पीने के लिये—पानी को गर्म करें और आधा जल जाने पर उतार कर छानलें। इसी में से थोड़ा-थोड़ा पीने को दें।

—लेखक—

पार्श्वचालन (डब्बा, बाल-निमोनियां)—

शुद्ध जयपाल काली मिर्च

—दोनों को १-१ तोला लेकर बारीक कर खरगोश के रक्त में पीस कर आधे मूंग बराबर गोली बनालें। माता के दूध के साथ १ गोली देने से एक या दो दस्त अथवा वमन होकर रोग शीघ्र शान्त होजाता है। यदि आवश्यकता समझें तो दूसरी गोली दें।

नोट—जमालगोटे की शुद्धि पूर्णतया एवं ठीक होनी आवश्यक है अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि होना सम्भव है। —सम्पादक।

ये दोनों प्रयोग देखने में जितने साधारण हैं गुणों में उतने ही बढ़े-चढ़े हैं। प्रायः इनके प्रयोग से सफलता ही मिलती है। यह हमारी दीर्घ अवस्था के अनुभव-भण्डार के प्रभावशाली रत्न हैं।

—लेखिका—

श्री. इन्दिरादेवी जी शास्त्रिणी वैद्या,

आयुर्वेदमणि, "नारी आरोग्य मन्दिर"
मुरलीधर बाग, हैदराबाद (दक्षिण)

पिता का नाम—श्री० पं० शंकरप्रसाद जी पाण्डेय

आयु—२४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-प्रवाहिका २-रक्तापरोधक

"आपने आयुर्वेद की शिक्षा अपने पति श्रीमान् पं० गयाप्रसाद जी शास्त्री से घर पर ही प्राप्त की है। आप हिन्दुस्तान मेडिकल बोर्ड यू० पी० के द्वारा "ए" क्लास में रजिस्टर्ड आयुर्वेदिक चिकित्सिका हैं। "नारी आरोग्य मन्दिर" नाम से लखनऊ तथा हैदराबाद (दक्षिण) में आपके दो औषधालय हैं। आपकी सेवाओं से सन्तुष्ट होकर निज़ाम गवर्नमेण्ट आपकी संस्था को ६००) वार्षिक सहायता (ग्रांट) भी देती है। आप कई भाषाओं की पंडिता तथा प्रतिष्ठित वैद्या हैं।" —सम्पादक।

रक्तापरोधक चूर्ण—
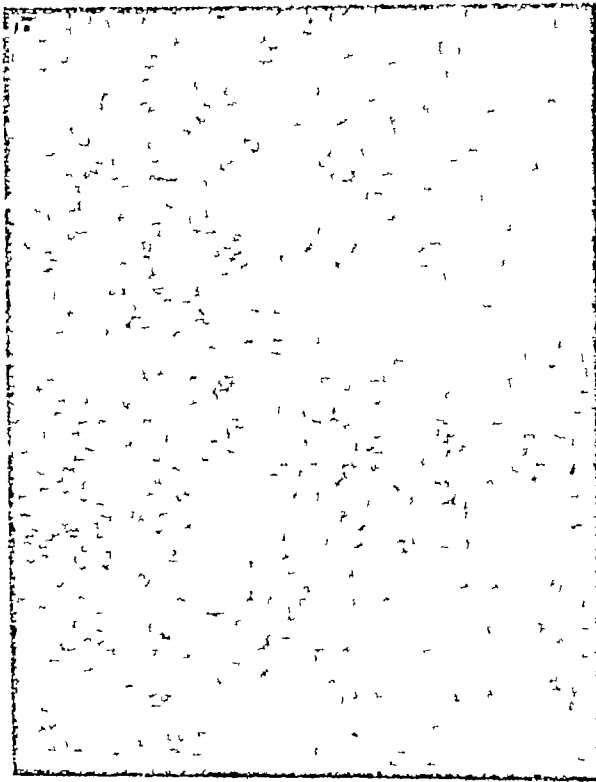
अनार के फूल, कमल की केशर, नागकेशर, पाषाण भेद, सफेद कत्था, सफेद राल, मोचरस, माजूफल, पीपल की लाख, खूनखराबा, बबूल की पत्ती, छोटी इलायची के दाने, वंशलोचन, चन्द्ररस, कहरवा, शुद्ध सोना गेरू, संगजराहत की भस्म, शु० फिटकरी, कौड़ी की भस्म, मोती की सीप की भस्म, यशद भस्म, प्रवालपिष्टी ये २१ औषधें सम-भाग अर्थात् १-१ तोला, चांदी के वर्क १०० नग तथा पिसी छनी हुई मिश्री २२ तोला।

विधि—काष्ठादि औषधों को कूट-पीस, छान कर चूर्ण बनाना एवं वंशलोचन पृथक् पीस कर रखना। अनन्तर काष्ठादि औषधों का चूर्ण, पिसा हुआ वंशलोचन, मिश्री तथा चांदी के वर्क आदि सभी वस्तुओं को खरल में डाल कर एक रूप कर लेना चाहिये।

मात्रा—१ माशा से ३ माशा तक, समय-प्रातः सायं वा आवश्यकतानुसार। अनुपान-दूध की लस्सी, गर्म करके ठंडा किया हुआ दूध, शीतल जल, शरबत बनफ्सा, आंवले का मुरब्बा या उसकी चाशनी, शहद मिला हुआ चावल का पानी, बिल्वाम्बु, मेंहदी या दूर्वा का स्वरस अथवा

नवनीत (मक्खन) प्रभृति रोगानुसार उचित अनुपान।

गुण—सभी प्रकार का रक्तपित्त, रक्तप्रदर, रक्तार्श, नकसीर, अन्तर्दाह, हृदय की दुर्बलता, प्रमेह, ऊष्मा तथा अशक्ति नाशक है।

प्रवाहिका हर चूर्ण—

नागरमोथा,	अतीस,	मोचरस,
बेल की गिरी,	सोंठ,	धाय के फूल,
इन्द्र-जौ,		पाठा (पाढ),
कुड़े की छाल,		ईसबगोल की भुसी,
माजूफल,		पोस्त का छिलका,
आम की गुठली,		जामुन की गुठली,
सफेद राल,		पठानी लोध,
अनार के फूल,		सफेद जीरा (भुना),
जायफल,		भांग,

—प्रत्येक १-१ तोला।

शक्कर या मिश्री २० तोला।

विधि—समस्त औषधों को कूट, पीस, छान कर चूर्ण बना लेना चाहिये।

मात्रा—३ माशा से ६ माशे तक।

समय—प्रातः सायम् या आवश्यकतानुसार।

अनुपान-शुद्ध जल, छाछ, शहद या बेल के मुरब्बे की चासनी।

रोग—सभी प्रकार जीर्ण से जीर्ण अतिसार, प्रवाहिका (पेचिस) तथा आन्त्रशूल।

नोट-ऊपर लिखित दोनों प्रयोग यद्यपि काष्ठादि औषधों से निर्मित होने के कारण साधारण प्रतीत होते हैं फिर भी रसादि औषधों से ये दोनों प्रयोग कहीं अधिक प्रभावशाली तथा गुणों में अपना अपूर्व चमत्कार रखते हैं।

———*———

[पृष्ठ ८० का शेष]

और पसीना आरम्भ हो तो इससे रोगी का पसीना रुकेगा और उसे चेतना आजायगी। यह औषधि भयंकर अतिस्यार (गुमवाय) के लिये भी लाभकारी है। सूक्ष्म विष पर इसकी नस्य न दें।

कृष्ण सर्प के विष पर अंजन

जयपाल की मिंगी	हीरा हींग
काली मिरच	निबौली की मिंगी
भल्लातक	जायफल
रसासन की जड़	लहसन

निर्माण-विधि—इन सबको ४-४ माशे लेकर ताम्र पात्र में नीबू के अर्क के साथ ५ दिन घोटना चाहिये। घोटने के बाद २० दिन तक ताम्र पात्र में ही दवा को रखी रहने दें।

सेवन-विधि—इस दवा को पानी में घिस कर नेत्रों में अञ्जन की तरह लगा देने से कृष्ण सर्प द्वारा काटे मूर्च्छित रोगी की मूर्च्छा दूर होती है।

———*———

श्री० वैद्यराज इन्द्रमणि जी जैन वैद्य-शास्त्री,

इंद्र औषधालय, कनवरीगंज, अलीगढ़ ।

पिता का नाम—श्री० प० वृन्दावनदास जी जैन

आयु—४५ वर्ष जाति—जैसवाल जैन

प्रयोग-विषय— १-यकृत-वृद्धि २-प्राकृत ज्वर (मलेरिया)

" श्री. वैद्य जी अलीगढ़ जिले के सफल एवं ख्याति प्राप्त चिकित्सकों में से हैं । आपकी चिकित्सा की उच्च शिक्षित वर्ग में अच्छी धाक है । आप सार्वजनिक कार्य और सभा सोसायटियों में भी सक्रिय भाग लेते रहे हैं । आपने अलीगढ़ में तीन धर्मार्थ औषधालयों की स्थापना एवं स्थानीय वैद्य-सभा का संगठन किया है । आप संग्रहणी,क्षय, मोतीझला व माता के विशेषज्ञ हैं । आपने अपनी सफल-चिकित्सा द्वारा परखे हुये निम्न दो प्रयोग प्रकाशनार्थ भेज हमको आभारी किया है ।"

—संपादक ।

लेखक

यकृत वृद्धि पर—

शुद्ध नौसादर	शंख भस्म
सुहागा चौकी का फूला	२-२ तोले
पांचों नमक	५ तोले
रोहिड़े की छाल	वायबिडङ्ग
पुनर्नवा	५-५ तोले
ग्वारपाठे का गूदा	१॥ सेर
गिलोय-स्वरस	आध सेर

—रोहिड़ा आदि तीनों औषधि कूट कर वस्त्र में छान कर अन्य पूर्वोक्त औषधियों में मिला लें और गूदा व रस दोनों में डाल दें । कांच के पात्र में ७ दिन रखने के पश्चात् छान कर बोतल में भरलें ।

सेवन-विधि—मात्रा ६ माशे से १ तोला पर्यन्त, दो या तीन समय चतुर्गुण जल में मिला कर देने से कैसा ही यकृत बढ़ गया हो, आश्चर्य-जनक लाभ होता है। प्लीहा, कृशता, शोथ, शूल, कामला आदि उपद्रव भी नहीं रहने पाते।

पथ्य—यदि रोग अधिक बढ़ चुका हो और उपद्रव भी हों तब रोगी को दूध फाड़कर उसका जल देना चाहिये। यदि दूध पच सकता हो तो गाय का दूध देवें । मूली का रस,अनार, पपीता,बथुआ, परवल, तोरई का रस और मिट्ठा भी दे सकते हैं।

नोट—माड्र भस्म त्रिफला द्वारा निर्मित होनी चाहिये ।

[शेष पृष्ठ ८६ पर]

श्रीयुत अत्रिदेव जी गुप्त विद्यालंकार,

अग्रवाल मधु भण्डार, ४७३ कांवली रोड, देहरादून।

पिता का नाम— श्री लाला लौलीराम जी

आयु—४५ वर्ष जाति—अग्रवाल वैश्य

प्रयोग-विषय— १-शिरदर्द २-वातरोग ३-कम्पवात.

"श्री गुप्त जी ने गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी से विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की है। आप आयुर्वेद साहित्य के प्रसिद्ध लेखकों में से हैं। आपके निबंधों पर नि० भा० वर्षीय वैद्य सम्मेलन द्वारा स्वर्णपदक दिया गया है। आपने अष्टांग संग्रह, चरक संहिता, प्रत्यक्ष-शारीरम् की सुबोध हिन्दी टीकायें की हैं और कई स्वतंत्र पुस्तकें भी लिख कर आयुर्वेद-साहित्य भण्डार की वृद्धि की है। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

—लेखक—
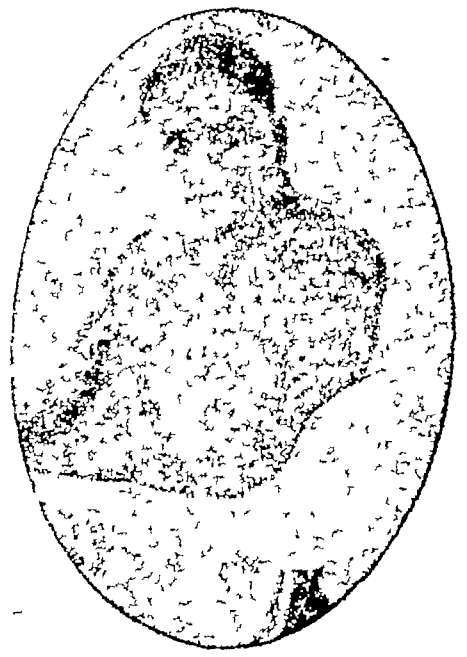
शिरदर्द (वात जन्य) और अनिद्रा पर—

मुचकुन्द के फूलों को तक्र या कांजी में पीस कर लगाने से नींद भली प्रकार आती है। शिरदर्द यदि वह वात जन्य है तो तुरन्त जाता रहता है और रोगी को शांति मिलती है।

वातरोग में—

रास्ना अमलतास का गूदा
देवदारु पुनर्नवा गोखरू
एरण्डमूल, गिलोय —समभाग

—लेकर यवकुट करें। इसमें से २ तोला लेकर क्वाथ-विधि से क्वाथ बनाकर, छान कर, एरण्ड-तैल २ तोला तथा सोंठ का चूर्ण ६ माशे मिला कर पीने को दें। इसमें सोंठ डालने से ऐंठन नहीं होती है। इसके पीने से आंतों में भरी आंव निकल कर वातरोग शान्त होता है।

कम्पवात में—

प्रातः अश्वगंधा चूर्ण १ तोला का क्वाथ करें। वृहद वात चिन्तामणि की २ रत्ती मात्रा मधु के साथ चटा कर ऊपर से यह क्वाथ पिलादें।

सायंकाल—कृष्णचतुर्मुख रस १ रत्ती और शतावरी चूर्ण ३ माशे मिलाकर शहद के साथ दें और शरीर पर कुब्ज प्रसारिणी तैल की मालिश करें।

नोट—अश्वगंधा की जड़ मोटी लेनी चाहिये।

श्रीमती वैद्या प्रकाशवती देवी जैन

अध्यक्षा—अमृत कार्यालय [महिला विभाग]

जवाहरगंज, जब्बलपुर।

पिता का नाम—श्री० लाला बाबूराम जी जैन,

आयु—२५ वर्ष जाति—पद्मावती पुरवाल जैन

"श्रीमती जी श्री प. चन्द्रशेखर जी शास्त्री की योग्य धर्मपत्नी हैं। श्री. पंडित जी के संरक्षण में आपने आयुर्वेद का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है। आपके निम्न दो प्रयोग स्त्री व बच्चों के लिये अत्युपयोगी हैं।" —सम्पादक।

महिलायें प्रायः प्रदर रोग से अत्यधिक पीड़ित रहती हैं। आगे बढ़कर उनकी अवस्था इतनी दयनीय हो जाती है कि उन्हें असाध्य कोटि में नहीं तो कष्ट-साध्यों की कोटि में अवश्य ही रख देना होता है। क्षय की भी प्रारम्भावस्था अधिकतर इसी बीमारी से पैदा हो जाती है।

उस समय इस प्रयोग से बहुत अधिक लाभ देखा गया है। पथ्य पर पूर्ण ध्यान रखना अत्यावश्यक है।

प्रयोग—उत्तम कांतिसार लोह भस्म २ तोले

रजत (चांदी) की भस्म त्रिवङ्ग भस्म

वराटिका (पीली कौड़ी) भस्म उत्तम राल

शंख (बड़े शंख) संगजराहत भस्म

—प्रत्येक ६-६ माशे

शुद्ध हिंगुलोत्थ पारद (पारा) ६ माशे

शोधित आंवलासार गंधक ६ माशे

निर्माण-विधि—पहिले उत्तम पत्थर के काले खरल में हिंगुलोत्थ पारद तथा आंवलासार गंधक को डालकर और अच्छी तरह घोंटकर कज्जली बनालें, बाद में सब भस्में डालकर खूब खरल करें, अच्छी तरह घुट जाने पर राल को भी कपड़-छन कर मिलादें और ३ घण्टे घुटाई करें। बाद में ३ दिन तक घी कुमारी-रस (ग्वारपाठे के रस) में खरल करके मूंग के बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखालें। बस, 'मोहनी वटी' तैयार है।

प्रयोग-विधि—१ गोली खिलाकर ऊपर से २ से ४ तोले तक बरिआरी (बला) का स्वरस पिलावें, प्रातः सायं दोनों समय इस औषध को दें।

गुण—इससे बढ़ा हुआ प्रदर रोग तथा सोम-रोग (मूत्र मार्ग से पानी सा बहना रहना) तो ठीक हो ही जाता है, पर इसके सेवन से रक्त बढ़कर महिलाओं की सुन्दरता भी बढ़ जाती है। आवश्यकतानुसार यह प्रयोग २ से ३ सप्ताह तक करना चाहिये। साथ में पथ्य पर भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिये।

कुमार कल्पद्रुम—

सत मुलहठी अतीस नागरमोथा

पीपल · वच · वायविडङ्ग
जायफल · जावित्री · केशर

—प्रत्येक १-१ तोला

उत्तम शुद्ध कस्तूरी · ३ माशे

रैक्टीफाइड स्प्रिट (शुद्ध अलकोहल) १ पौंड

निर्माण-विधि—काष्ठादिक औषधियों को जौकुट करके रैक्टीफाइड स्प्रिट में डाल दें, बाद में केशर और कस्तूरी भी डाल दें और बोतल पर मजबूत कार्क (डाट) लगाकर रख दें। तीन दिन के उपरान्त शीशी को हिलावें, फिर आठ दिन पर्यन्त धूप में रखकर आठवें दिन तैयारी हुई दवा लेकर फिल्टर में छान लें और मजबूत कार्क वाली शीशी में रख लें। बस दवा तैयार है।

प्रयोग-विधि—यह औषधि दूध या पानी में मिलाकर नीचे लिखी हुई मात्रा में दें—

१ दिन से ३ माह तक के बच्चे को १ बूंद से २ बूंद तक, १ माह से १ वर्ष तक के बच्चे को तीन बूंद से ५ बूंद तक, १ वर्ष से १५ वर्ष तक को ५ से १५ बूंद तक, युवक के लिये १० से २० बूंद तक, रोग की विशेष अवस्था में एक साथ ३० बूंद तक।

गुण-बच्चों के सभी विकारों पर इसका प्रयोग लाभदायक प्रमाणित हुआ है। सर्दी के दिनों में (शीत-काल में) इसका प्रयोग सर्दी से बचाता है तथा पार्श्व शूल, कास प्रभृति नहीं होने देता। योग्यानुपानों के साथ देने पर प्रायः प्रत्येक रोग में काम करता है।

जैसे—सर्दी के कारण यदि अधिक दस्त हो रहे हों तो इसे 'अहिफेनासव' में मिलाकर दें।

नोट—यदि इस औषधि को गर्मी में काम लेना हो तो जावित्री तथा कस्तूरी निकाल कर तैयार कर लेना चाहिये।

शक्तिवर्द्धक पिल्स

स्वर्ण भस्म २ माशे, बंग भस्म ३ माशे, मौक्तिकपिष्टी १ माशा, कान्त लौह भस्म १ माशा, चांदी की भस्म १ माशा, कांस्य भस्म १ माशा, रससिन्दूर १ माशा, चन्द्रपुटी प्रवाल-भस्म १ माशा, मकरध्वज ४ माशा, जायफल १ माशा, जावित्री १ माशा, कस्तूरी १ माशा, भीमसेनी कपूर १ माशा, अभ्रकभस्म १ माशा, धतूरे के पके पीले पत्तों का घनसत्व ६ माशा, बबूल के हरे पत्तों का घनसत्व ६ माशे।

—सब औषधियों को एकत्र कर नागरपान के रस में अच्छे प्रकार खरल करके २-२ रत्ती की गोलियां बनालें। प्रतिदिन सुबह और शाम १-१ गोली शहद में मिलाकर खाने से अपूर्व बल का संचार होता है एवं जठराग्नि क्षुधा की वृद्धि होती है, मस्तिष्क और हृदय में विलक्षण स्फूर्ति का प्रादुर्भाव होता है और हृदय को अत्यन्त बल प्राप्त होता है।

—श्री वैद्य हरिरामजी परदेशी, मुरादाबाद।

कविराज पं० बालकरामजी शुक्ल शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य

प्रधानाध्यापक, आयुर्वेद-विद्यालय, ऋषिकेश।

पिता का नाम
श्री. पं० रघुवरदयालजी शुक्ल

आयु
७६ वर्ष

जाति
कान्यकुब्ज ब्राह्मण

"श्री शुक्लजी के वंश में कई पीढ़ियों से चिकित्सा-कार्य होता आया है। आपने विधिवत् संस्कृत व आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया है और सन् १९२५ से आयुर्वेद विद्यालय ऋषिकेश में प्रधानाध्यापक हैं। विद्यार्थी-जीवन से ही आप प्रतिभाशाली लेखक रहे हैं और आपने आयुर्वेद-विषयक कई उत्तम पुस्तकें लिखी हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रयोग एवं संक्षिप्त चिकित्सा संकेत मधुमेह व रक्तार्श रोगियों के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं।" —सम्पादक।

कविराज पं० बालकराम जी शुक्ल शास्त्री आयुर्वेदाचार्य
प्रधानाध्यापक—आयुर्वेद विद्यालय, ऋषिकेश।

मधुमेहान्तक वटी—

शुभ्र कपूर	६ माशा
असगंध	३ माशा
चिरायते का चूर्ण	६ माशा
दालचीनी	१ तोला
पलाश पुष्प	६ माशा
तालीस पत्र	३ माशा
लवंग	३ माशा
नागरमोथा	३ माशा
त्रिकुटा	६ माशा
त्रिफला	६ माशा
वंशलोचन	१ तोला
गिलोय सत्व	१ तोला
सफेद इलायची के दानों का चूर्ण	६ माशा
शृंगभस्म	६ माशा
रससिंदूर षड्गुण बलिजारित	६ माशा
लोहभस्म (हिंगुलमारित)	६ माशा
अभ्रकभस्म	१ तोला
त्रिवंगभस्म	६ माशा
चांदीभस्म	३ माशा
स्वर्णभस्म	३ माशा
सुहागे का फूला	३ माशा

विधि—पहिले काष्ठादि दवाइयों को कूट-पीस छान लें फिर रस-भस्म मिला कर, करेले के पत्तों के स्वरस की ७ भावना और जामुन के पत्तों के स्वरस की ६ भावना तथा फिर २ माशा कस्तूरी की भावना देकर २-२ रत्ती की गोली बनालें।

अनुपान—बिल्वपत्र स्वरस १ तोला व मधु ४ माशा के साथ प्रातःसायंकाल १-१ गोली दें। भोजन के बाद लोध्रासव (चरकोक्त) १॥-१॥ तोला की मात्रा में पिलावें और चार बजे के समय गुड़मार बूटी की पत्ती ३ माशा, काली मिरच ५ नग लेकर जल के साथ घोट-पीस कर गोली बनाकर प्रति दिन लें। ४० दिन तक निरन्तर प्रयोग करने से पूर्ण लाभ होता है। अधोलिखित तैल का अभ्यङ्ग भी कराना आवश्यक है।

मधुमेहान्तक तैल—

मेंहदी के बीज, गूलर की छाल, नागरमोथा, हल्दी, दारू हल्दी, मरोड़फली, कूठ, असगंध, सफेद चन्दन, कुटकी, मुलहठी, रास्ना, दालचीनी, इलायची छोटी, वृक्षदण्डी, चव्य, धनियां, इन्द्रजव, करञ्ज, अगर, तेजपात, आंवला, हरड़, बहेड़ा, सुगन्धबाला, खिरैटी, कंघी, मजीठ, राल, कमल के फूल, पठानी लोध, सौंफ, सोया, बच, काला जीरा, खश, जावित्री, बाला, तगर—इन सबको १-१ तोला ले

जौकुट करें। शतावरी का स्वरस, ताड़ारस ४-४ सेर, दही का तोड़ ४ सेर, गौदुग्ध ४ सेर, तिली का तैल ४ सेर लेकर तैल पाक विधि से तैल का मूर्छन करके पकावें।

गुण—मधुमेही के शरीर में इस तैल के अभ्यङ्ग करने से सब वातोपद्रव शान्त होते हैं। और शरीर पुष्ट होता है।

भोजन व्यवस्था—मधुर पदार्थ त्याज्य हैं। पत्ते वाले शाक खावें; कन्दयुक्त शाक न खावें। व्यायाम शक्ति के अनुसार लाभदायक है। विशेषकर भ्रमण से बहुत ही सन्तोषजनक लाभ देखा गया है।

रक्तार्श की औषध-चिकित्सा—

वैद्य का कर्त्तव्य है कि रक्तार्श में रक्त-स्राव को एक साथ बन्द करने का प्रयत्न न करे बल्कि दूषित रक्त को निकल जाने देवे। यदि दूषित रक्त को बन्द कर दोगे तो उससे रक्त-पित्त, ज्वर, मदाग्नि, विबन्ध प्रभृति रोग उत्पन्न हो जावेंगे। रक्त-स्राव तब तक होने दे जब तक रोगी को कोई हानि न हो। इसके पश्चात् अग्नि को दीप्ति करने वाले, दोषों को पाचन करने वाले, रक्तस्राव को रोकने वाले तिक्त रसों के द्रव्यों का उपयोग कराना चाहिये। इसके लिये सबसे उत्तम निम्न योग हैं।

१ काकजंघा की पत्ती — ३ माशा,
कालीमिर्च — २४ नग

—दोनों को पीसकर १० तोला जल में मिलावें, और छानकर प्रातः सायं पिलावें।

२. वनमेथनी की पत्ती — ३ माशा,
कालीमिर्च — ५ नग

—दोनों को पीसकर जल में मिलावें और छानकर प्रातः सायं पिलावें।

३. ज्वालामुखी की पत्ती — ३ माशा
काली मिर्च — ५ नग

—दोनों को घोटकर पानी में मिला गोली बनाकर प्रयोग करें। मस्सों की वेदना शान्ति के लिये कुकुरोंधा की पत्ती लेकर टिकिया बनाकर घी में तलकर किंचिदुष्ण ही मस्सों पर बांध दें।

फल—इन तीनों औषधियों में प्रत्येक से रक्तार्श का रक्त-स्राव अवश्य ही बन्द हो जाता है। परन्तु ३ सप्ताह प्रयोग करना चाहिये। ध्यान रहे कि रोगी को विबन्ध न होने पाये और जिसे वायु की प्रबलता हो, रोगक्षीण होगया हो तो उसके लिये स्निग्ध अनुवासन वस्ति और जिस रोगी का पित्तोल्वण रक्त हो, ग्रीष्मकाल हो, और वायु कफ का अनुबन्ध न हो उस रोगी के रक्तस्राव का सामना निश्चय रूप से करना चाहिये। सद्यः फलदायिनी रक्तार्शोघ्न वटी का प्रयोग दिया जाता है। इसका प्रयोग करें।

रक्तार्शोघ्न वटी—

पठानीलोध	१ तोला
माचरस	३ माशा
रक्तचन्दन	१ तोला
पीपल की लाख	१ तोला
स्वर्ण गैरिक	१ तोला
लाल फिटकरी का फूला	३ माशा
शु० रसाञ्जन	६॥ तोला

(शेष पृष्ठ १०२ पर)

कविराज अशोककुमार जी प्रभाकर, आयुर्वेदालंकार
अन्दरून हरम दरवाजा, गली मान्नुन वाली, मुल्तान शहर

पिता का नाम— स्वर्गीय ला० रेमलदास जी
आयु—२५ वर्ष जाति—आर्य
प्रयोग-विषय— १—देशी कुनीन २—एस्प्रीन

"आप अपने विद्यार्थी जीवन से ही अधिक उत्साही एवं साहित्यिक रहे हैं। आयुर्वेद-कालेज पत्रिका के सम्पादक एवं योग्य लेखक रहे हैं। आपके ज्ञान-वर्धक लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। आप स्त्री-रोगों के विशेषज्ञ हैं।" —सम्पादक।

— लेखक —

देशी कुनीन—

करंज गिरी — तूमे की जड़
बनफशा के फूल — अनीस
फिटकरी — छोटी पिप्पली
तुलसीपत्र — हरड़ बड़ी

—समान भाग लेकर कूटें। पानी के साथ चने बराबर गोली बनावें।

मात्रा—दिन में चार गोली दें। बच्चों को आधी आधी गोली ४ बार दें। अनुपान-ताज़ा जल।

"उपर्युक्त प्रयोग मलेरिया ज्वर पर उत्तम प्रमाणित हुआ है: यद्यपि इसे हम शतशोनुभूत नहीं कह सकते लेकिन ९५ प्रतिशत लाभप्रद अवश्य है। कुनीन के समान यह ऊष्ण तथा हृदयावसादक भी नहीं है।"—सम्पादक

देशी एस्प्रीन—

नौसादर १ पाव को १ पाव पके केले के रस में खरल करें, शुष्क होने पर काकमाची के रस में खरल करें; फिर ताज़ी गिलोय के १ पाव रस में खरल करें। और शुष्क होने पर छोटी टिकिया बनालें और ऊर्ध्वपातन-यंत्र से जौहर उड़ालें।

मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—ताज़ा जल।

गुण—यह जौहर तीव्र ज्वर तथा शिरोवेदना में अत्युपयोगी है।

ऊर्ध्वपातन—एक हाडी में उपर्युक्त टिकिया रख कर ऊपर से दूसरी हाडी सीधी रख, कपरौटी से संधि बंद करदें तथा ऊपर की हाडी में जल भरदे। ४ पहर की अग्नि देने के बाद ऊपर की हाडी से धीरे-धीरे पानी निकाल लें तथा अग्नि बंद कर दें। शीतल होने पर ऊपर की हाडी उठा कर उसके पैंदे में लगा जौहर निकाल काम में लावे। —सम्पादक।

कविराज पं. सुरेन्द्रकुमार जी शर्मा आयुर्वेद शास्त्री

इमली बाजार, इन्दौर ।

पिता का नाम—श्री कुमार स्वामी अय्यर लीडर

आयु--४० वर्ष जाति— ब्राह्मण

"श्री कविराज जी का जन्म मद्रास प्रान्त के जिला वायलपाडी के अन्तर्गत भूघनापुरम में हुआ था। आप अपनी माता की मृत्यु के बाद केवल ११ वर्ष की उम्र में घर से निकल पड़े तथा भ्रमण करते हुए विभिन्न स्थानों पर अनेकों विद्वानों द्वारा विद्या प्राप्ति की। आप एक प्रसिद्ध चिकित्सक ही नहीं सफल व्यवसायी भी हैं। आपके द्वारा निर्मित परिष्कृत आयुर्वेदिक औषधियों को देख कर बड़े बड़े व्यवसायी व कैमिष्ट भी आपकी प्रशंसा करते हैं। आपने संस्कृत भाषा में सचित्र 'रोगविज्ञानम्' नामक पुस्तक लिखी है। २-३ अन्य पुस्तकें भी लिखी रखी हैं जो कागज की सुविधा होने पर आप प्रकाशित करेंगे। आप सादा जीवन व्यतीत करने वाले उत्साही, परिश्रमी एवं योग्य व्यक्ति हैं। आपके निम्न दोनो प्रयोग विशूचिका के लिए अत्युपयोगी हैं।"

— सम्पादक।

— लेखक —

महामारी कालरा पर जन साधारण में सामूहिक रूप से व्यवहार में लाने के लिये निम्न प्रयोग अनेक बार परीक्षित सिद्ध हुए हैं।

प्रयोग नम्बर १—

संजीवनी सुरा (आयुर्वेदोक्त)*	४० तोला
अजवायन का अर्क	५ तोला
शुंठी का अर्क	५ तोला
पोदीना का अर्क	५ तोला
दालचीनी का अर्क	५ तोला
बड़ी इलायची का अर्क	५ तोला

* यदि आयुर्वेदोक्त सुरा न मिले तो महुए की शराब या बाजारू ऊंची शराब लेसकते हैं।

खाने का देशी सोडा (सोडा बाई कार्ब)२० तोला

—सब पतली दवाईयों को एक ४ रतल की बोतल में मिलाओ और उसमें तीन माशा देशी कपूर पीस कर मिलादो। डाट (कार्क) लगा कर धूप में २-५ दिन रखा रहने दो और रोजाना गाढ़े कपड़े से छान लो। इस प्रकार तैयार करके सुरक्षित रखलो।

महामारी के दिनों में बिना किसी प्रकृति के विचार किये ही रोगियों को दें। आशातीत लाभ होगा।

सेवन करने की रीति—

रोगाक्रमण के समय में युवा पुरुष व स्त्री के

लिये निम्नांकित मात्राएं आध-आध घण्टे में दो; जैसे २ रोग का वेग कम होता जाये उसी प्रकार औषधि भी, जैसे १-१ या २-२ या ४-४ घण्टे के अन्तर से दें। रोग के वेगारंभ में २-४ मात्रा देने के पश्चात् लाभ दृष्टिगोचर होगा। ½ से १ तोला तक उबाला हुआ पानी २॥ से ५ तोला तक दवा में मिला कर उपरोक्त क्रम से देते जांय। रोग क्रमशः हाल होकर एक या दो दिन में ही रोगी पूर्ण स्वस्थ हो जायगा।

मात्रा—१० से १६ वर्ष की उम्र वाले के लिये आधी मात्रा दें। ४ से १० वर्ष तक के बच्चों के लिये एक चौथाई मात्रा और १ से ४ वर्ष तक के बच्चों के लिये आठवा भाग दें।

गुण-प्रथम वमन व पेट दर्द पर लाभ होगा, फिर दस्तों की मात्रा क्रमश कम होती जायगी और रोगी स्वस्थ होता जायगा।

खाने-पीने को कुछ नहीं देना चाहिये। अधिक प्यास लगने की अवस्था में पड़ंग पानी या गाजवान का अर्क जितना चाहें थोड़ा-थोड़ा करके पिलायें। पिशाब बंद हो तो कलमीशोरा के पानी में कपड़ा भिगो कर नाभी के नीचे रखें।

ज़ोर की भूख लगने पर रोगी को उचित पथ्य दें। तुलसी की या बाजारू चाय बना कर पिलायें। फेर चावल का जरा मएड देने के बाद दो-तीन घण्टे के पश्चात् पतली खिचड़ी काली मिरच, जीरा, नमक आदि मिलाकर दें। नीबू का प्रयोग भी बार-बार कर सकते हैं।

प्रयोग नं० २—

सतपोदीना	सतअजवायन
सतलोबान	कपूर देशी

—चारों २॥-२॥ तोला। संजीवनीसुरा (न मिलने पर और कोई उत्तम मद्य) ८० तोला।

सेवन-विधि—सर्व प्रथम उपरोक्त चारों सत एक शीशी में डाल कर धूप में रख कर पिघला लें। एक मजबूत डाट द्वारा मुख बंद करके रखना चाहिये। जब पतला होजावे इसमें मृतसंजीवनी सुरा मिला कर ४ रतल वाली बोतल में सबको मिला कर उसमें १ तोला असली काश्मीरी केशर मिला दें। १०-१५ दिन धूप में रख कर हिलाते रहें। फिर छान लें।

मात्रा—३० से ६० बूंद, रोगी को निम्न प्रकार देना चाहिये।

प्रयोग नम्बर २	६० बूंद
प्याज का ताजा अर्क	१ तोला
उबाला हुआ पानी	१० तोला

सबको मिला कर इसकी ४ मात्रा बनालें। रोग का वेग प्रबल हो तो आधा-आधा घन्टे में एक मात्रा दें। जैसे २ उपद्रव कम होते जायें, औषधि भी देर से दें।

नोट—हैजा एक भयकर रोग है, जितनी औषधियां आजकल सरकार व जनता प्रयोग कर रही है, सन्तोष जनक नहीं हैं। दैवयोग से रोगी बीत चुका हो उसके लिये तो अमृत भी बेकार है, परन्तु मनुष्य में कुछ भी जीवन-शक्ति शेष हो तो यह दोनों प्रयोग भारतीय जनता के लिये अमृत के समान प्राण सञ्जीवनी हैं।

श्रीमती सरोजनी देवी वैद्या

प्रधान-चिकित्सका—कविराज सुरेन्द्र फैमीली हैल्थ सेन्टर,

इमली बाजार, इन्दौर।

पिता का नाम—श्री.वैंकटराव फिजीसियन, मंगलौर

आयु—३२ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग—१-ऋतुरोध २-प्रदर व रक्तश्राव

"श्रीमती जी कविराज सुरेन्द्रकुमार जी शर्मा की योग्य पत्नी हैं। आप बड़ी परिश्रमशीला हैं, जन सेवा आपका लक्ष्य है। आप इंग्लिश की मैट्रिक और मिडवाफिरी परीक्षोत्तीर्ण हैं। कविराज महोदय से ही आपने आयुर्वेद की शिक्षा भी प्राप्त की है। खेतड़ी राज्य (जयपुर) द्वारा स्थापित "स्त्री-बालक स्वास्थ्य केन्द्र" चिड़ावा की आप १० वर्ष से प्रधान-चिकित्सका हैं। आपकी कार्य कुशलता एवं योग्यता के कारण सभी अधिकारीवर्ग आपसे प्रसन्न हैं। आपके निम्न दो सिद्ध प्रयोग स्त्री-जाति के लिये परमोपयोगी सिद्ध होंगे।"

—सम्पादक।

—लेखिका—

ऋतु-रोध, ऋतु-कष्ट और आर्तव शूल आदि रोगों पर उत्तम प्रयोग—

यवक्षार	१ तोला
सज्जी खार	१ तोला
कलमी शोरा	१० तोला
दन्ती क्षार	१ तोला
उबाला हुआ पानी	१ तोला

—इन चारों क्षारों को पानी में डालकर के छान कर एक स्वच्छ बोतल में भर कर लेबिल लगा दें। उस पर रजप्रवर्तनी नम्बर १ लिखदें। पश्चात् निम्न-लिखित क्वाथ बना कर उस पर नम्बर २ लिख दें।

क्वाथ नं० २

बड़ी इलायची	१ तोला
दालचीनी	१ तोला
अखरोट का छिलका	१ तोला
हंसराज	बांस का छिलका
छुहारा (सूखा खजूर)	मुनक्का (द्राक्षा)
गाजर के बीज	प्याज के बीज
मैथी के बीज	—प्रत्येक २-२ तोला।
सोवा के बीज	८ तोला

—इन सब औषधियों को जौ-कुट करके अष्टावशेष काढ़ा बनाकर उत्तम मद्य चतुर्थांश मिला कर छान लें और एक बोतल में रख छोड़ें

तत्काल १ तोला काढ़ा लेकर आध पाव जल में क्वाथ कर लिया करें। सब औषधियां आठ गुना जल में भिगो कर क्वाथ बनाना उत्तम होगा।
—एक सेर पुराना गुड़ लेकर चासनी बनाकर यह भी एक बोतल में भर कर इस पर नम्बर ३ लिखदें।

व्यवहार करने की रीति—

रजप्रवर्तनी नं० १ चौथाई से आधा तोला
रजप्रवर्तनी क्वाथ नं० २ आधा से एक तोला
गुड़ की चासनी नं० ३ पाव से आधा तोला
गरम पानी २ से ४ तोला

—सब को मिलाकर इस प्रकार की २-३ मात्रा दिन में पिलायें। किसी को शीघ्र, किसी को कुछ दिन में मासिक धर्म खुल कर आयेगा और ऋतु शूल भी नष्ट होगा। ध्येय पूरा होने पर प्रयोग करना बन्द करदें। गर्भवती को यह प्रयोग नहीं देना चाहिये। गर्भाशय शुद्धि के लिये और रज शुद्धि के लिये एवं गर्भपात के पश्चात् या बच्चा हो जाने के बाद २-३ मात्रा गर्भाशय शुद्ध कराने या आवल निकालने के लिये देना चाहिये। केवल रजकष्ट पर ऋतु आने के समय २-३ दिन पहिले और आते समय में २-३ दिन नियमानुसार पिलाकर बन्द करदें।

यह दवा अंग्रेजी अर्गट के समान गर्भाशय संकोचक है। अधिक सेवन नहीं करानी चाहिये। अर्गट खुले गर्भाशय पर दी जाती है परन्तु रजप्रवर्तनी गर्भाशय का मुख भी खोल देती है। अधिक दे देने से गर्भाशय का मुख बन्द नहीं होगा, सावधानी से कार्य में लाना चाहिये।

प्रदर व रक्त-स्राव—

लोह भस्म	२ रत्ती
मुक्ता-शुक्ति भस्म	८ रत्ती
वंग भस्म	१ रत्ती
यशद भस्म	१ रत्ती
अभ्रक (काली) भस्म	१ रत्ती
पुष्पानुग चूर्ण	२ माशे
सुपारी पाक	२ माशे

—इस प्रकार की १-१ पुड़िया दिन में २-३ बार अशोकारिष्ट व अशोक छाल के क्वाथ द्वारा दें, प्रकृति देखने की आवश्यकता नहीं है। सर्व प्रकार के स्राव आदि शीघ्र या देर से बन्द होंगे। गर्भपात, रक्त-स्राव भी रोकता है।

श्री० वैद्य पं. रामचन्द्र जी प्रफुल्ल साहित्यायुर्वेद-विशारद,

चिड़ावा (राजपूताना)

पिता का नाम— श्री० पं० पन्नालाल जी शर्मा

आयु—२८ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-मोती ज्वर २-गुर्दे का शूल

३-प्रसूतिका ज्वर ४-मन्दाग्नि

—लेखक—

"श्री० प्रफुल्ल जी परिश्रम शील, अध्यवसायी, कर्तव्य-निष्ठ, शान्त तथा सरल व्यक्ति और कुशल चिकित्सक हैं। परोपकार-भावना से निर्धनों को मुफ्त औषधि वितरण कर अक्षय पुण्य प्राप्त कर रहे हैं तथा म्यूनिसिपल कमेटी का सेक्रेटरी पद सुयोग्यता से संभालते हुए जनता की सेवा में तत्पर हैं। आप डालमिया विद्यालय के प्रधानाध्यापक और कई सार्व-जनिक संस्थाओं के पदाधिकारी हैं। आपने "कतिपय जटिल रोग और उनकी चिकित्सा" नामक उपयोगी पुस्तक लिखी है जो शीघ्र प्रकाशित होगी। आपके निम्न प्रयोग अत्युपयोगी हैं।" —सम्पादक।

मोती ज्वर पर—

अम्बर ½ रत्ती

मकरध्वज १ रत्ती

मुक्तापिष्टी प्रवाल भस्म शृङ्ग भस्म

अभ्रक भस्म जहरमोहरा खताई

—हरेक १—१ रत्ती

—उक्त सब औषधियों को खरल करके ३ पुड़िया बनालें। १-१ पुड़िया प्रातः-सायंकाल मधु के साथ रोगी को चटावें। उक्त औषधि से मोती ज्वर की भयङ्कर अवस्था में शीघ्र लाभ होता है। पथ्य में केवल मिश्री जल अथवा सौंफ का पानी देना चाहिये।

गुर्दे के शूल में—

फिटकरी जवखार सज्जीखार

खाने का सोडा नवसादर कलमी शोरा

रेवन्द चीनी सौंफ

—प्रत्येक १॥—१॥ माशे

—इन सब को पीस चूर्ण कर ४ खुराक बनालें और २-२ घण्टे के अन्तर से दें, इससे गुर्दे के भयङ्कर शूल में तात्कालिक लाभ मिलता है। दस्त साफ लाने के लिये रेंडी (अरण्डी) का तैल या जैतून का तैल गरम दूध के साथ पिलावें। गरम पानी की बोतल या थैली से सेंक करें। पथ्य में केवल बार्ली वाटर दिया जाय।

अतिसार युक्त प्रसूतिका ज्वर पर—

सिद्ध प्राणेश्वर	१ वटी
कस्तूरी भैरव	१ रत्ती
श्वेत भुना जीरा	२ रत्ती

—इनको खरल में पीसकर तीन पुड़ियां बनाले, एक पुड़िया प्रातः और एक सायंकाल मधु से चटादे; तदनन्तर शीघ्र ही २ तोला जल में तनिक सोंठ तथा जायफल घिसकर कुछ २ गरम करके कड़ुवा अनीस और मोचरस १-१ रत्ती दोनों पीसकर इसमें मिलादें और उपरोक्त मधु के साथ ली हुई पुड़िया के बाद पिला दें। इसी प्रकार दोनों समय प्रातःसायंकाल रोगिणी को सेवन करावें।

पीने के लिये पानी—२ सेर पानी आग पर चढ़ादे और उसमें सोंठ १ माशा, लवङ्ग ५ नग, और जायफल १ माशा डाल दे। जब पानी जलकर १ सेर रह जाय तब उतार कर छानले और किसी बर्तन में रखकर अंगीठी में आग के सहारे रखा रहने दे। जब जरूरत पड़े तभी थोड़ा २ ठंडा कर रोगिणी को पीने के लिए देता रहे।

पौष्टिक पेय—आध सेर दूध और आध सेर पानी में अल्प मात्रा में सोंठ, लवङ्ग १ नग, दालचीनी का टुकड़ा, तुलसी का १ पत्ता, जावित्री का टुकड़ा डालकर गरम करे। जब पानी जल जाय तब दूध में थोड़ी सी चाय की पत्ती डालदे और फिर तैयार होने पर उक्त दूध छानकर रोगिणी को पिलादे। बीच २ में एक या दो बार सूंठी पुटपक चूर्ण २॥ माशा की मात्रा में प्रति चार दे।

मन्दाग्नि पर अचूक प्रयोग—

प्रात काल—महाराज नृपतिवल्लभ रस १ गोली, महा-षट्फल घृत के साथ।

भोजन से पूर्व—बिडलवणादि वटी प्रातः और सायंकाल के भोजन के पूर्व सेवन करावें।

भोजनोपरांत—क्रव्यादि रस और कुमारी आसव अथवा क्रव्यादि रस और शांतिवर्धक चूर्ण एवं द्राक्षारिष्ट भोजनोपरांत दोनों समय सेवन करावें।

सायंकाल—शंख भस्म १ रत्ती, अभ्रक भस्म १ रत्ती।

नोट—ये सब शास्त्रीय औषधियां हैं, अतएव इनके द्रव्य एवं बनाने की विधि आदि नहीं लिखी गई हैं।

राजवैद्य पं० रामप्रसाद जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य,

मैडीकल आफीसर एवं इंचार्ज—सरकारी डिस्पेन्सरी, रेलवे रोड, अलीगढ़।

पिता का नाम
पं० छेदालाल जी मिश्र

आयु—४८ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० पंडित जी योग्य संस्कृतज्ञ, आयुर्वेद के आचार्य, कुशल चिकित्सक एवं सफल शिक्षक हैं। आप 'धन्वन्तरि कार्यालय' की निर्माण-शाला के निरीक्षक भी रह चुके हैं। अवागढ़ के राजवैद्य एवं संस्कृत विद्यालय के प्रिंसीपल पद पर भी आपने कार्य किया है। आपने २-३ पुस्तकें भी लिखी हैं। आशा है कि पाठक आपके निम्न प्रयोग व्यवहार में लाकर लाभ उठायेंगे।" —सम्पादक।
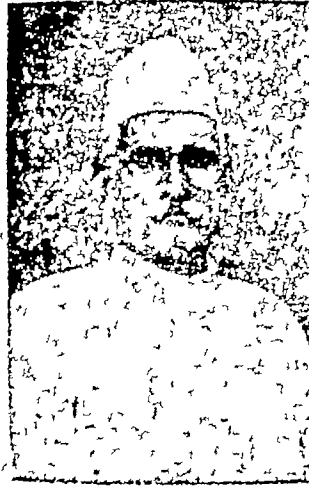
—लेखक—

सिद्ध मणि प्रयोग—

गौमूत्रे क्वथितः स्नुही पयसि च न्यस्तस्ततः क्षालितो, मल्लः सन्मदिराभिषेक विधित सिद्धोग्निनाखपरे। मान्द्यश्लेष्मसमीररुक्कसनक श्वासामदिकाज्वर क्लैब्यातक कुरङ्ग केषु कुरुते शार्दूल विक्रीडितम् ॥१॥

विधि—१ तो. संखिया को पावभर गौमूत्र में दोलायन्त्र द्वारा सिद्ध करें, पश्चात् थूहर के १ छटांक दूध में १५ दिन रखा रहने दें, १६ वें दिन गर्म जल से धोलें, इसको खपरा या बड़े सकोरे पर रख चूल्हे पर चढ़ाकर नीचे अग्नि के स्थान में तैल का दीपक (अंगुष्ठ प्रमाण बत्ती का कमल फूल सम लौ का) जलाकर ऊपर से परमोत्तम मद्य १ सेर लेकर अभिषेक विधि से बूंद २ गिरने दें, करीब तीन प्रहर अभिषेक करें (मद्य उत्तम अंगूरी हो)।

परिमाण-परिभाषा—

गौमूत्रं कुडव स्नुह्याः क्षीरे पक्ष मवस्थितिः।
मद्य प्रस्थं पिचुर्मल्लः पद्मकोषोपमः शिखी।

उक्त सिद्ध मल्ल १ चावल, शुद्ध (उड़ा हुआ) नृसार (नौसादर) ४ रत्ती, शम्बुक भस्म १ रत्ती (सिकुला की भस्म ये नदियों में छोटे २ शंख के आकार के पाये जाते हैं), यह एक मात्रा है। यह मात्रा वृद्ध युवा पुरुषों को देनी चाहिये, बच्चों को नहीं। बच्चों को इसका चतुर्थांश दें।

समय—प्रातः-साय भोजन के बाद।

अनुपान—मुनक्का या बताशे में रखकर खायें।

गुण—मंदाग्नि, यकृत, आम उदर विकारों में अवश्य लाभकारी है।

रोगावस्था—बच्चों का जिगर, दूध डालना, अपच, मन्दाग्नि आदि में २१ दिन सेवन करने से लाभ होता है।

जीर्ण आमदोष मन्दाग्नि में इसकी मात्रा बढ़ाते हुये और दूध का विशेष प्रयोग करना चाहिये। १०० दिन औषधि सेवन से उदर-विकारों में अवश्य लाभ होता है।

कफवातजन्य रोगों में जैसे निमोनियां, हृच्छूल, कटि या पार्श्वशूल, ज्वर, श्वास, कफ-कास को निम्न प्रकार व्यवहार करने से अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

विधि-सिद्ध मल्ल १ चावल, मृगशृङ्ग भस्म १ रत्ती अनुपान-मधु २ माशे, आद्रक स्वरस, यांसाक्षार ३ रत्ती, के साथ ६-६ घंटे बाद दिन रात्रि में दें और पीड़ा के स्थान पर विषगर्भ तैल, नारायण तैल अथवा मोम का तैल मर्दन करें।

क्लैव्यता, वीर्यदोष, श्रम तथा दौर्बल्य पर—

उटंगन के बीज	१ तोला
भांग के बीज	१ तोला
पोस्त	१ तोला
छोटी इलायची	१ तोला
अकरकरा	१ तोला
शिलाजीत	१ तोला
कस्तूरी,	२ रत्ती
उपर्युक्त सिद्ध मल्ल	३ माशे

—इनको बंगलापान के रस में ३ दिन घोटें। बाद में ढाक गोंद १ तोला, गिलोय सत्व १ तोला, बहुआ बीज १ तोला, स्वर्णवंग ३ माशे में मिलाकर —१ दिन घोटें और शीशी में रखें।

समय व अनुपान—प्रातः २ रत्ती की मात्रा में मक्खन १ तोला, मिश्री २ तोला के साथ या कूष्माण्ड पाक १ छटांक, गाजर पाक १ छटांक में मिला कर सेवन करें अथवा रात्रि को मलाई १ छटांक में रखकर लें और ऊपर से दूध-मिश्री पीवें।

अनुभव—सभी प्रकृति वालों को और विशेष कर शीत प्रकृति, कफप्रकृति वालों को जिनकी पाचनशक्ति ठीक है, नये रोग पर ६१ दिन में लाभ देता है, और पुराने रोग में १८० दिन में पूर्ण लाभ देता है।

कुपथ्य-मनोविकार, गर्म व रूक्ष वस्तु, विदाही, लाल मिर्च, गुड़, खटाई, मलावरोध रात्रि में भोजन, अजीर्ण इत्यादि बातें रोग-बर्धक हैं।

पथ्य--सदाचार, सात्विकी भोजन, नियमित आहार, शयन, ब्रह्मचर्य आदि का सेवन सर्वदा पथ्य है।

उदर विकार नाशक—

एलुआ	१ तोला
सुहागा	१ तोला
हींग	२ माशा
सैंधा नमक	६ माशा
अंडी की जड़	२ तोला

विधि—जितने बैंगन के रस में उक्त औषधियां पीसी जा सकें, पीस व गर्म कर पेट पर अंडी का तैल चुपड़ कर लेप करें।

समय—दिन में तीन बार ३-३ घंटे पर। रात्रि में लेप करना निषेध है, अतः न कीजिये।

गुण—वृन्ताक वारिणालेपो ध्रुवमाध्मानधूनन.।

अफरा, उदरशूल, वायुमलावरोध पर अनेकों बार का परीक्षित है।

श्री० कविराज जसवन्तराय सहगल, आयुर्वेदाचार्य,

वकीलां बाजार, होशियारपुर ।

—पिता का नाम—
लाला प्यारेलाल जी सहगल

आयु–२५ वर्ष जाति–क्षत्रिय

—प्रयोग-विषय—
१-विषम-ज्वर २-रक्त-चाप

"श्री० सहगल जी योग्य, उत्साही एवं होनहार नव-युवक हैं। विद्यार्थी जीवन में भी आपने अपनी तीव्र बुद्धि का परिचय दिया और हर परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं। आयुर्वेदाचार्य में सर्व-प्रथम आने पर आपको स्वर्ण-पदक प्राप्त हुआ है। आप जैसे उत्साही नव युवकों से आयुर्वेद समाज को बहुत कुछ आशायें हैं। आपके निम्न दो प्रयोग उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

—लेखक—

विषम ज्वरारि—

विषम ज्वर की प्रत्येक अवस्था में, सतत, सन्तत अन्येद्युष्क, तृतीयक, चातुर्थिक, ज्वरों के लिये राम-बाण है (चढ़े ज्वर में भी दे सकते हैं) यदि ज्वर होने से पूर्व १-१ घण्टे के अन्तर से ३-४ मात्रायें दे दी जायें तो ज्वर कदापि नहीं होगा, ध्यान रहे कि औषधि प्रयोग से पूर्व रेचन* देना आवश्यक है।

*रेचनार्थ Paraffin Liquid एक-दो औंस की मात्रा में दें। अन्यथा निम्नलिखित "तीव्र रेचन" का प्रयोग करायें।

चने की दाल को स्नुही दुग्ध में २-३ दिन भिगो रखें। पुनः रगड कर २-२ रत्ती की गोलियां बनाकर सुखालें। मात्रा—१ गोली दुग्ध या जल से रात्रि के समय अथवा प्रातः काल। —लेखक।

शु० हरताल १ भाग
शु० स्फुटिका ६ भाग

—स्फुटिका गर्भ में हरिताल को रख कर, सम्पुट करके २० सेर उपलों की अग्नि दें। पुनः स्वांग शीतल होने पर निकाल कर पीस कर रख लें।

मात्रा—२-४ रत्ती पर्यन्त, रोगी-प्रकृत्यानुसार दिन में ४ चार बार तक।

अनुपान–उष्णोदक, उष्ण दुग्ध या अश्वत्थ (पीपल छाल) क्वाथ।

पथ्य--दुग्ध, मुद्गयूष, लघु भोजन, फल पथ अश्वत्थ शाखा (का स्वरस) चूषणार्थ दें।

(शेष पृष्ठ ११५ पर)
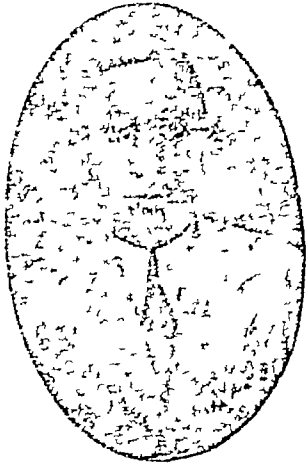
श्री० कविराज डा० प्रेमलाल जी सहगल,

एम. ए. एम. एम. वैद्यशास्त्री, होशियारपुर ।

पिता का नाम— लाला प्यारेलाल जी सहगल

आयु—३० वर्ष जाति—क्षत्रिय

प्रयोग-विषय— १-राजयक्ष्मा। २-मधुमेह

"श्री० सहगल जी एलोपैथी, होमियोपैथी तथा आयुर्वेद तीनों पद्धतियों के ज्ञाता हैं। आप अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, पजाबी तथा सस्कृत पाच भाषाओं के जानकार हैं। आपको असाध्य एवं कष्ट-साध्य रोगों की चिकित्सा व अनुसंधान करने में विशेष रुचि है। राजयक्ष्मा एवं मधुमेह के आप विशेषज्ञ हैं तथा आपके निम्न दोनों योग आपकी विशेष चिकित्सा के अङ्ग हैं।"

—सम्पादक।

राजयक्ष्मा की प्रथम व द्वितीयावस्था में—

(क)-ताम्र भस्म ३ माशे
तुगाक्षीरी चूर्ण १ छटांक
सूक्ष्मला चूर्ण १ छटांक
कमल के बीज का चूर्ण १ छटांक
श्वेत पेषित शर्करा पाव सेर
प्रवाल भस्म शंख भस्म
शृङ्ग भस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म
ज़हर मोहरा खताई स्वर्ण माक्षिक भस्म

—प्रत्येक १-१ तोला।

—सबको कूट-पीस कर मिलालें और शीशी में रखलें।

(ख)-अतिबला (कघी) पाव भर
वासाश्वेत (पुष्प व पत्र) पाव भर
पुनर्नवा मूल (श्वेत) पाव भर
कंटकारी लघु पंचांग पाव भर
उन्नाव पाव भर
मधुयष्टी (मुलहठी) पाव भर
*चूने का पानी ६ सेर

—बकरी का दूध ६ सेर अर्क निकालने के यंत्र से ६ बोतल अर्क खींच लें। ६ माशे कपूर बारीक कपड़े में बांध कर बोतल के मुख पर रखें ताकि गिरने वाला हर बिंदु कपूर में से हो कर बोतल में गिरे।

मात्रा—३माशे (क) तथा १ छटांक (ख) के साथ ४४ घंटे पीछे दिन भर में ३-४ बार दें। मात्रा—आयु

---

* चूना १ भाग, जल १६ भाग, अच्छी तरह घुलने पर ऊपर का निथरा हुआ जल लें।

एवं बलाबल अनुसार के घटाई-बढ़ाई भी जा सकती है। मैं प्रायः ३ माशे (क) से आरम्भ करके ५-६ माशे तक ले जाता हूँ। चलते-फिरते रोगियों को शीघ्र ही लाभ पहुंचाता है। जिन रोगियों ने चारपाई का आश्रय ले रखा है अर्थात् उठ बैठ नहीं सकते, उन्हें देकर अपयश के भागी न बनें।

गुण—इन योगों से ज्वर, कास, दौर्बल्य, आन्त्र दौर्बल्य, शूलादि लक्षण शीघ्र ही शान्त होजाते हैं। यदि इनके साथ उन्नावावलेह (उन्नाव का-साधित अवलेह मधु मिश्रित) चाटने को दिया जाय तो सोने पर सुहागे का काम देते हैं। ज्वरादि के न रहने पर प्रातः सायं दो ही बार उचित मात्रा में दें।

मधुमेह दुःख भंजन योग—

(क)-जामुन की गुठली का चूर्ण ५ तोला
गुड़मार बूटी चूर्ण ५ तोला
लोह भस्म (त्रिफला वाली) १ तोला
अहिफेन शुद्ध ६ माशे रसाजन शुद्ध २ तोले

—कोमल 'वट जटा' १ सेर लेकर उसका क्वाथ बनाये। क्वाथ को छान कर मृदु अग्नि द्वारा उसे घन करें। गाढ़ा होजाने पर उपर्युक्त औषधियां उसमें मिलायें और खूब घोटें। जब गोली बनाने योग्य होजाय तो ४-४ रत्ती की गोलियां बनालें, धूप में सुखाकर शीशी में रखें।

(ख)-विधि-बिल्व पत्र १ छटांक
मरिच ८-१० दाने

पाव भर जल में खूब घोटें। थोड़ा सा सैन्धव लवण मिलाकर कपड़े से छान लें। इसके साथ १ या २ गोली रोगी के बल और रोग की अवस्था को देखकर प्रातः सायं दें। रोगी की अन्त्र (आन्त) शुद्ध रहनी चाहिए। भोजन में शर्करा और निशास्ते के पदार्थों का सेवन अत्यल्प किया जाय अथवा न किया जाय। यदि रोगी को कुछ दिन लंघन करा कर ताजे, मीठे फल और हरी सब्जियों पर रखा जाय तो रोगी शीघ्र ही आरोग्य लाभ प्राप्त कर सकता है। रोटी बिना छने आटे की बेसन मिला कर दें। राजयक्ष्मा और मधुमेह को प्रायः असाध्य समझा जा रहा है; परन्तु यह ठीक नहीं है। यदि ठीक समय पर योग्य चिकित्सक द्वारा ठीक चिकित्सा क्रम के अनुसार चिकित्सा की जाय तो रोगी के स्वस्थ हो जाने में कोई सन्देह नहीं हो सकता। पाठकगण इन योगों से विशेष लाभ उठा सकते हैं; परन्तु चिकित्सा क्रम की उपेक्षा न की जाय।

नोट–यह मिश्रण मैंने अपनी कल्पना से तैयार कर २०-२५ रोगियों को दिया, उन्हें बहुत ही अधिक लाभ हुआ है।

बालकों के पसली चलने पर अत्युत्तम योग—

करंज बालू में हलका सा भून ले, जिससे अधिक लाल न हो। बाद उसकी भीतर की सफेद मिंगी निकाल कर पीस लें और महीन कपड़े में छानकर शीशी में रखदे।

मात्रा—२-२ रत्ती, ३ बार। अनुपान—मधु।

यह एक ही चीज़ बालकों के पसली चलने को दूर कर देती है। इससे एक आध टट्टी भी होती है। इसके प्रयोग से किसी बालक का पहिले पेट भी फूलता है, किन्तु घबड़ाना न चाहिये। टट्टी होने के बाद पेट पचक जाता है और सांस का फूलना बन्द हो जाता है। यह सिद्ध औषधि है।

नोट—यह योग बड़ों के श्वास रोग में भी लाभकारी होता है। मैंने कई बार प्रयोग किया है।

(पृष्ठ १११ का शेष)

चिकित्सक की अनुमति के बिना कोई अन्य भोजन या वस्तु न दें।

रक्तभारान्तक रस—

साधारण रक्त-भाराधिक्य (High Blood Pressure), निद्रा नाश (Sleeplessness) प्रलापादि के लिये अनुपम है। यदि रक्तभाराधिक्य उपदंश, आमवातादि किसी विशिष्ट कारण से हो तो पहले उनकी पूर्ण चिकित्सा करें, अन्यथा लाभ में सन्देह होगा।

चन्द्रभागा (सर्पगन्धा, चौर-मरुआ) का घनसत्व १ भाग व शिलाजीत १ भाग परस्पर मिलाकर ३-३ रत्ती की गोली बनालें।

मात्रा—१-१ गोली प्रातः सायं।

अनुपान—दुग्ध या जल प्रकृत्यानुसार।

तीक्ष्ण, गुरु भोजन कदापि न दें। उत्तेजक पदार्थों का प्रयोग भी वर्ज्य है।

पूर्व प्रकाशित परीक्षित प्रयोग

स्तम्भन योग—

पिस्ता २ तोला बिजवा बीज २ तोला
—खूब पीस थोड़ी शकर मिला तैल निकाल लें।

मात्रा—२ बूंद। अनुपान—बताशा।

समय—मैथुन से २ घण्टा पूर्व।

पथ्य–दूध, शकर, घृत।

गुण–इससे १-१॥ घण्टा स्तम्भन होता है।

धन्वन्तरि वर्ष १३ अङ्क ६ पृष्ठ ७१४।

× × × ×

अल्पार्तव, कष्टार्तव—

बादाम मिंगी ७ छुहारा १
—रात को भिगोदें, प्रातः बादाम का लाल छिलका तथा छुहारे की गुठली निकाल कर पीसे और उसमें १ रत्ती केशर तथा २ तोला मक्खन मिलाकर खायें। गर्म पदार्थों व खटाई से परहेज़ रखें।

धन्वन्तरि-नारीरोगांक वर्ष १५ अङ्क १-२ पृष्ठ २२।

परीक्षक—श्री. महेन्द्रनाथ अग्निहोत्री।

वैद्यभूषण श्री. जुगलकिशोर जी शास्त्री

मुन्नालाल स्ट्रीट, परेट बाजार, कानपुर।

लेखक

पिता का नाम— लाला रामभोहनलाल जी श्रीवास्तव

आयु— ४५ साल जाति— कायस्थ

प्रयोग-विषय—१-सन्निपात २-नेत्र रोग ३-खांसी

"श्री वैद्य जी सन् १९२५ से सफलतापूर्वक चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। आपने अपने चिकित्सा-कौशल से अच्छी ख्याति प्राप्त की है। अनेक उच्च अधिकारियों ने आपकी चिकित्सा से आरोग्य लाभ कर आपको प्रशंसापत्र दिये हैं। आपके निम्न तीनों प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

सन्निपात ज्वर में जब रोगी बहुत बकता है और उठ २ कर भागने की चेष्टा करता है, उस समय निम्न लिखित प्रयोग रामबाण जैसा कार्य करता है।

शुद्ध पारा शुद्ध आंवलासार गंधक

शुद्ध शिंगरफ अभ्रक भस्म शतपुटी

—प्रथम पारे और गंधक की कज्जली कर फिर सभी औषधियों को अदरक के रस में ८ प्रहर घोटकर मूंग प्रमाण गोली बना लेवें।

सन्निपात वाले रोगी को बगला पान और अदरक के रस में शहद मिलाकर उसके साथ दें। बढ़े हुए दोषोंमें २-२ घण्टे में १-१ गोली देनी चाहिए।

आंखों में रोहे अर्थात् दाने पड़ जाते हैं उसके लिये निम्न लिखित प्रयोग सैकड़ों रोगियों पर लाभप्रद सिद्ध हो चुका है।

रसौत भुनी फिटकरी

बोरिक एसिड —हरेक १-१ माशा

तूतिया ५ रत्ती

अफीम २ रत्ती

अर्क गुलाब १ छटांक

निर्माण-विधि—सबको अर्क गुलाब में खरल करलें, फिर रुई के फाये से छानलें या निचोड़ लें। इस पानी की २-२ बूंद प्रातः-साय आंखों में डालें। आंखों के रोहे और लाली के लिये परीक्षित है।

खांसी के लिये सस्ता और उपयोगी प्रयोग—

मीठी बच १ छटांक

मुलहठी १ छटांक

नवसादर ६ माशे

—कपड़-छन कर पानी मिला मटर के बराबर गोली बनाले। प्रातः दोपहर तथा सायंकाल १-१ गोली मुंह में डाल चूसे। बच्चों की काली खांसी के लिये भी उत्तम है।

नोट—उपर्युक्त वस्तुयें कपड-छन कर यदि कण्टकारी स्वरस या क्वाथ के साथ गोली बनावे तो अधिक लाभप्रद होता है। — सम्पादक

आयु० पं. गिरिजादत्त जी पाठक आयुर्वेद-शास्त्री,

श्री० कालिकेश्वर औषधालय, बक्सर (आरा)

पिता का नाम—श्री० पं० रामशकल पाठक वैद्य
आयु—५८ वर्ष जाति—शाक द्वीपीय ब्राह्मण

"श्री० पाठक जी संस्कृत एवं आयुर्वेद के अच्छे ज्ञाता योग्य अध्यापक और सुलेखक हैं। आपके लेख व कविताएं "धन्वन्तरि" में बहुत समय से प्रकाशित होती रही हैं अतः धन्वन्तरि के पाठक आपसे चिरपरिचित हैं। आपके लेखों पर विभिन्न सम्मेलनों से प्रमाण पत्र एवं पदक प्राप्त हुए हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग सफल एवं परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।

अग्नि दग्धहर घृत—

मजीठ, लाल चन्दन, मूर्वा, लोध पठानी, मुलहठी, गुडूची, वटजटा (बरोह), गूलर की छाल, सर्ज रस (राल), मांछी का मोम; —प्रत्येक वस्तु १-१ छटांक।

गोघृत २। सेर

—गोघृत को कड़ाही में उबाल आने तक गर्म कर

—लेखक—

चूल्हे से उतार शीतल होने दें। मोम को अलग गलालें, राल चूर्ण करके पृथक रखें। शेष वस्तुओं को गो-दुग्ध में पीस कर घी में डालें ऊपर से अथवा चावल का जल ४ सेर डाल घृत सिद्ध कर गर्म २ ही छान लें और पिघला मोम तथा राल चूर्ण मिलाकर डाटदार शीशी जो चौड़े मुंह की हो रख लेवें।

गुण—चारों प्रकार के अग्नि दग्ध को दूर करेगा, किसी प्रकार के भी कटे पर लगाने से रक्त बन्द कर देगा, घाव नहीं बढ़ेगा। जिस जले हुए रोगी का मांस गलकर दुर्गन्ध आती हो उसे शीत किये निम्ब क्वाथ से प्रातः-सायं धोकर घी लगाकर कपड़ा की पट्टी बांध दें। ५-७ दिन

(शेष पृष्ठ ११६ पर)

आचार्य श्री. पं. कमलापति जी शास्त्री साहित्याचार्य,

भूदेव फार्मेसी, मुबारिकपुर (गया) जहानाबाद ।

—लेखक—

पिता का नाम—वैद्यराज पं० सोमेश्वर जी मिश्र

आयु—३१ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-जलोदर २-पाण्डु ३-अतिसार

"श्री० आचार्य जी साहित्य एवं आयुर्वेद के अच्छे विद्वान हैं एवं 'विमला' साहित्यिक मासिक-पत्र के सम्पादक भी रह चुके हैं। आप प्रति-दिन लगभग १०० गरीब रोगियों को मुफ्त दवा वितरण करते तथा आयुर्वेद-प्रचार में हर प्रकार प्रयत्न-शील रहे हैं। आशा है कि पाठक आपके निम्न प्रयोग व्यवहार में लाकर लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।

जलोदर पर—

लोह भस्म पीपल पीपलामूल
सोंठ देवदारु नागर मोथा
इन्द्र जौ वायविडङ्ग कुटकी
हरड़ बहेड़ा आवला
स्वर्ण माक्षिक —हरेक १-१ तोला

—सबको कूट-पीस कपड़ छन कर गोमूत्र में पीस कर झरबेर के बराबर गोली बनावें। प्रातः सायंकाल १-१ गोली पुनर्नवा के रस या मधु के साथ दें।

पथ्य—रोगी को पानी पीने के लिये नहीं देना चाहिये। पानी की जगह मकोय तथा पुनर्नवा का अर्क पीने के लिये दें। भोजन में नमक नहीं दें। चने व गेहूँ की रोटी, दूध, सहिजने की तरकारी (बिना नमक की) दें।

नोट—इस दवा के साथ २ कुटकी, त्रिफला व देवदारु का क्वाथ बनाकर प्रति दिन देना चाहिये।

यह प्रयोग मेरे गुरुवर श्री० त्र्यम्बक जी शास्त्री का है।

पाण्डु रोग पर—

सोंठ मिर्च पीपल
हरड़ बहेड़ा आंवला
स्वर्णमाक्षिक लोह वायविडङ्ग
नागरमोथा की जड़ —हरेक ५-५ तोला

—स्वर्णमाक्षिक व लोह को शुद्ध करलें। सभी चीज़ों को कूट-पीस कर शर्करा तथा मधु के साथ बेर के बराबर गोली बनालें। प्रातः सायंकाल १-१ गोली शहद के साथ दें। ७ दिन में पाण्डु

रोगी आरोग्य लाभ करेगा। कष्टसाध्य अवस्था को प्राप्त रोगी १५ दिन दवा सेवन करने से रोग से छुटकारा पायेगा।

नोट—यह प्रयोग 'धन्वन्तरि' (भाग ६ अंक १ प्रयोग संख्या ११४) में प्रकाशित हो चुका है। पाण्डु रोग में अच्छा लाभ करता है।

सभी प्रकार के दस्तों पर—

इन्द्रजौ	धाय पुष्प	नागर मोथा
लोध	कुटज त्वक	वायविडङ्ग
अतीस	कज्जली	अहिफेन

—हरेक १-१ तोला

—कज्जली व अहिफेन को छोड़ शेष को कूट-पीस कपड़-छन करलें। खरल में कज्जली व अहिफेन डालकर खूब घोटें, इसी में उपर्युक्त चूर्ण डालकर घुटाई करें। जब काला होजाय शीशी में भरलें।

मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—खट्टे अनार का रस या दही समयानुसार प्रयोग कराने से दस्त बन्द होते हैं।

गुण—संग्रहणी, अतिसार, प्रवाहिका तथा हैजा किसी रोग के कारण दस्त हों यह दवा अपना असर करती है।

नोट—यह योग मेरे पितामह पं० शिवानन्द जी मिश्र वैद्य तथा पिताजी भी इसे खूब व्यवहार कराते थे। परीक्षित है।

(पृष्ठ ११७ का शेष)

में घाव भरने लगेगा। जलन, बेचैनी तुरन्त लगाते ही शान्त करेगा।

चन्द्र वदन लेप—

सरसों		आधा पाव
कपूर डेला		१ तोला
केशर (अभाव में नाग केशर)		१ तोला
रक्त-चन्दन	बजबटा	मंजीठ
सेमर का कांटा		कपूरी

घी में भुनी हुई मसूर की दाल

—प्रत्येक १-१ छटांक।

—सबका कपड़-छन चूर्ण बना लें। इसको पानी या दूध में घोल कर उबटन की तरह मुख पर मलने से झांई, व्यंग, नीलिका, युवान-पीडिका, हजामत बनाने में छुरे के दोष के कारण हुए व्रण को शीघ्र दूर करके मुख को सुन्दर बना देता है और देर तक सुगंधि देता रहता है।
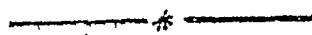
राजवैद्य पं. सिद्धिसागर जी जैन प्राणाचार्य,

बाहुबलि धर्मार्थ औषधालय, ललितपुर (झांसी)

लेखक

पिता का नाम— श्री० सिंघई दौलतराम जी

आयु – ४३ वर्ष जाति—गोलालारे जैन

प्रयोग-विषय— १-वन्ध्यत्व २-न्यूमोनिया

३-शीतांग सन्निपात ४-उदरशूल

"श्री. राजवैद्य जी योग्य चिकित्सक तथा कुशल व्यवसायी हैं। विविध स्थानों पर धर्मार्थ औषधालय खोलने की आपकी व्यापक स्कीम की सर्वत्र प्रशंसा है। आपको अनेक स्थानों से प्रशंसापत्र तथा मान-पत्र प्राप्त हुए हैं। वैद्यक, ज्योतिष, टेलरिंग आदि १७ औद्योगिक विषयों की शिक्षा दिलाने व परीक्षा लेने के लिये 'आ० इ० औद्योगिक स्कूल' का ११ वर्ष से संचालन कर रहे हैं। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी एवं परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।

वन्ध्यत्व दोष हर—

हमारा अनुभव है और आयुर्वेद शास्त्र का भी मत है कि स्त्रियां एक-दो प्रतिशत ही वन्ध्या होती हैं. अन्यथा कोई दोष ही ऐसा उत्पन्न हो जाता है जिस के कारण सन्तान होना रुक जाता है। यदि वह दोष दूर कर दिया जाय तो सन्तान अवश्य हो सकती है।

जिन स्त्रियों के स्तन भाग ठीक उम्र होने पर भी नहीं उभरते और जिन्हें कभी २ मासिक धर्म नहीं होता बस वही 'जन्म-वन्ध्या' कही जा सकती हैं, बाकी सबको सन्तान प्राप्त हो सकती है।

१—अधिक दिनों तक ज्यादा तादाद में और समय से पहिले जल्दी २ मासिक धर्म होने से भी सन्तान होना रुक जाता है। उनको असगंध नागौरी, दक्षिणी सुपारी, नागकेशर, मिश्री समान भाग पीस छानकर ६-६ माशे प्रातःसायं दूध या पानी के साथ एक मास सेवन कराने से यह दोष मिट जाता है और समय पर मासिक धर्म होने लगता है।

२—जिनको मासिक-धर्म कष्ट के साथ थोड़ा होता है उनका गर्भाशय साफ न होने से सन्तान होना रुक जाता है, उनको मासिक धर्म के दिनों में सुबह शाम १-१ छटांक पलास के फूल कपड़े की पोटली में बांध खौलते हुए गरम पानी में

डालकर बार २ निकाल कर पेडू और नाभि के आस-पास सेक करावें, यह सेक बार दिन १-१ घण्टे चालू रहे और निम्न योनि दोषहर वर्ति योनि-मार्ग में रक्खे।

एरण्ड के बीज छिले हुये सफेद	१ तोला
बलुआ	६ माशे
शुद्ध गुग्गुल	६ माशे
मालकांगनी	१ तोला

-हुक्के के पानी में घोटकर बांस की पतली लकड़ी पर ४-४ इञ्च लम्बी ३ बत्ती बनालें, रोजाना सुबह एक बत्ती शहद में लपेट कर योनि में रक्खें। मासिक धर्म के दिनों में स्नान नहीं करें। शीतल वस्तुओं का उपयोग नहीं करें। चौथे दिन स्नान करके सूर्य की तरफ मुख कर खड़े हो किसी लड़के के हाथसे निम्न दवा सेवन करें। इस तरह ७ दिन तक एक बार ही सेवन करें। ७ वें दिन रात्रि में विधि-पूर्वक गर्भाधान क्रिया की जावे तो अवश्य ही गर्भ रहेगा।

सन्तानदाता योग—

अपामार्ग (जिसको चिरचिटा और आघाझाड़ भी कहते हैं) ६ माशा कूटकर १॥ माशा बिना कुटा असगंध डालकर आध सेर पानी में पकावें, जब आध पाव पानी शेष रहे तब छान-कर तीन कड़वे बादाम चबाकर क्वाथ में ६ माशे शहद डालकर पीवें। जिसे मासिक धर्म का कोई दोष शेष नहीं है, उसे इस योग से गर्भ अवश्य धारण होगा।

न्यूमोनिया नाशक—

कायफल छिला हुआ	१ तोला
शुद्ध गूगल वंशलोचन रूमी मस्तगी	
सफेद मोम	—प्रत्येक २-२ तोला

विधि—मोम, गूगल को छोड़ बाकी दवा कूट कर कपड़ा में छान ले, गूगल को प्रथक कूटें और जब खूब बारीक हो जाय तब मोम को पिघला कर गूगल में डाल कूट ले और फिर कपड़-छन दवा डाल कूटकर पान का रस डाले। गोली बनाने योग्य होने पर चना बराबर गोली बनाले।

सेवन-विधि—१-१ गोली गरम पानी में या अदरख के रस में घोटकर रोगी को पिलानी चाहिये। इससे भयंकर निमोनिया, बढ़ा हुआ कफ और पसली(छाती)का दर्द अवश्य शांत हो जाते हैं।

शीतांग सन्निपात पर—

शु० हिंगुल	३ माशे
कायफल अकरकरा शक्कर (खांड)	
तेज लाल मिर्च मय बीज	हरेक-१-१ तोले
श्वेत संखिया शुद्ध	३ माशे
शु० गंधक	६ माशे

विधि सबको पीस-छानकर ३ दिन नीम के पत्तों के रसमें घोटकर उड़द बराबर गोली बना सुखाले।

सेवन-विधि—एक २ गोली एक २ घण्टे बाद जैसा अवसर देखे चतुर्थांशावशिष्ट जल के साथ या अदरख के स्वरस या पान के स्वरस के साथ दें। ५-७ मात्रा से ही लाभ होता है। सन्निपात या विशूचिका (हैज़ा) में शीतांगता, नाड़ी का गिरना, बेहोशी, मूर्छा, शरीर की ऐंठन, नेत्रों की विकृति आदि हो, शरीर ठण्डा होकर रोगी मरणासन्न होगया हो तब यह गोली ऊंचे से ऊंचे रसों से अधिक लाभदायक सिद्ध होती है।

वैद्य विशारद पं. राधेमोहन जी मिश्र D. D. H.

गुदड़ी स्ट्रीट, बहिराइच (अवध)।

पिता का नाम—श्री. पं. हरिहरदत्त जी मिश्र

आयु —३३ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-वातरोग २-खाज(खुजली)

लेखक

वात भंजन तैल—

सोंठ देशी	२० तोला
संखिया	१ तोला
सोंठ बैतरा	२० तोला
अफीम	१ तोला
सैंधा नमक	१० तोला
कपूर	१० तोला
तैल सरसों	आध सेर
मिट्टी का तेल	आध सेर

विधि—दोनों सोंठ तथा सैंधा नमक को यवकुट करके सरसों के तेल के साथ मन्द २ आंच में पाक करे, जब सोंठ का वर्ण लाल हो जावे तब नीचे उतार कर अफ़ीम और संखिया तेल में डालकर पड़ा रहने दे, किन्तु ध्यान रहे कि तेल का धुआं शरीर के किसी भाग में न लगने पावे जब शीतल हो जावे तब उसमें कपूर और मिट्टी का तेल डालकर घोटे तत्पश्चात् उसे छानकर एक शीशी में सुरक्षित रक्खे।

उपयोग-इसकी थोड़ी सी मात्रा कठिन से कठिन वात-व्याधि के लिये पर्याप्त है; किन्तु शिर एवं कोमल अङ्गों पर इसकी मालिश न करे। इसके लगाते समय निम्न लिखित लड्डू का सेवन करे तो आशातीत लाभ होगा।

> "श्री० मिश्रा जी कुशल चिकित्सक तथा योग्य लेखक हैं। आपको कई स्थानों से उपाधिया प्राप्त हुई हैं, आपकी आविष्कृत "खाज-भोगोना" दवा की जनता ने काफी प्रशंसा की है; वही प्रयोग आपने जन हित का विचार कर प्रकाशनार्थ भेज अपने उदर विचारों का परिचय दिया है। आपके दोनों प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं।"
>
> —सम्पादक।

२ सामान्य रीति, नियम, स्वभाव आदि के विपरीत क्रम में होने वाला।

३ विपरीत क्रम यानी ऊपर से नीचे की ओर जाने वाला।

३०—भरि भयमठ मैं बोलइ बोलइ गिरिगिर परमय मेदन वेदन मदन विनोन।

४ पस्त-व्यस्त, विगन हुआ।

साहित्यरत्न वै.भू. पं. श्रीकृष्ण जी शर्मा आयुर्वेद-शास्त्री

पीयूष पयोधि औषधालय, नाथद्वारा (मेवाड़)

लेखक

पिता का नाम— पं० हीरालाल जी शुक्ल

आयु—४८ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय— १-स्त्री रोग २-दाद

"श्री० शर्मा जी का जन्म कानपुर में हुआ। बम्बई के सुविख्यात वैद्य हनुमान प्रसाद जी के तत्वावधान में आपने आयुर्वेद का सक्रिय ज्ञान प्राप्त किया तथा सम्वत् १६७१ से स्वतन्त्र चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। आप सफल वैद्य तो हैं ही, साथ ही साहित्य जगत में भी आपकी ख्याति है। आपकी कविताएँ सरस,एवं भावपूर्ण होती हैं। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं जो अभी अमुद्रित हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

स्त्री-निर्बलता पर—

नवीन जीरा १ सेर, लोध आध सेर, इन दोनों के वस्त्र पूत चूर्ण को १ सेर मावे में मिला कर सेर भर गोघृत में अच्छी तरह भूनें। पुनः ३ सेर मिश्री की बरफी बनाने योग्य चासनी बना उसमें उपरोक्त घृत-पूत मावा आदि तथा, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, पीपल, सौंठ, जीरा, खैर, रसौत, धनिया, दोनों हल्दी, (हल्दी एवं दारु हल्दी) अड़ूसा, वंशलोचन और तवाखीर एक-एक तोले का चूर्ण डाल खूब मिला कर थाली में ढाल दें और २-२ तोले की कतली बना लेवें। इसमें से प्रातःकाल (आवश्यकता होने पर सोते समय रात्रि को भी) गर्म गोदुग्ध के सा[थ] लेने से २-४ दिन में ही अपना अपूर्व प्रभाव दि[ख]लाती है। नदी के समान बहता हुआ प्रदर जनि[त] श्वेत या रक्त जल सेवन करते ही बन्द होते दे[खा] गया है। किसी कारण से भी निर्बलता आगई हो गर्भ गिर जाता हो या अन्य किसी भी गर्भादि स[म्ब]न्धी पीड़ा के लिये यह अमोघ अस्त्र सिद्ध हुआ है।

दाद की अपूर्व मलहम—

नीबू का रस	पाव भर
मीठा तैल	पाव भर
श्वेत मोम	२ तोले
छोटी इलायची	१ तोले

(शेष पृष्ठ १२४ पर)

साहित्यरत्न वै. भू. पं. श्रीकृष्ण जी शर्मा आयुर्वेद-शास्त्री

पीयूष पयोधि औषधालय, नाथद्वारा (मेवाड़)

लेखक

पिता का नाम— पं० हीरालाल जी शुक्ल

आयु—४८ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय— १-स्त्री रोग २-दाद

"श्री० शर्मा जी का जन्म कानपुर में हुआ। बम्बई के सुविख्यात वैद्य हनुमान प्रसाद जी के तत्वावधान में आपने आयुर्वेद का सक्रिय ज्ञान प्राप्त किया तथा सम्वत् १९७५ से स्वतन्त्र चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। आप सफल वैद्य तो हैं ही, साथ ही साहित्य जगत में भी आपकी ख्याति है। आपकी कविताएँ सरस,एवं भावपूर्ण होती हैं। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं जो अभी अमुद्रित हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

स्त्री-निर्बलता पर—

नवीन जीरा १ सेर, लोध आध सेर, इन दोनों के वस्त्र-पूत चूर्ण को १ सेर मावे में मिला कर सेर भर गोघृत में अच्छी तरह भूनें। पुनः ३ सेर मिश्री की बरफी बनाने योग्य चासनी बना उसमें उपरोक्त घृत पूत मावा आदि तथा, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, पीपल, सौंठ, जीरा, खैर, रसौत, धनिया, दोनों हल्दी, (हल्दी एवं दारु हल्दी) अड़ूसा, वंशलोचन और तवाखीर एक-एक तोले का चूर्ण डाल खूब मिला कर थाली में ढाल दे और २-२ तोले की कतली बना लेवें।

इसमें से प्रातःकाल (आवश्यकता होने पर सोते समय रात्रि को भी) गर्म गोदुग्ध के साथ लेने से २-४ दिन में ही अपना अपूर्व प्रभाव दिखाती है। नदी के समान बहता हुआ प्रदर जनित श्वेत या रक्त जल सेवन करते ही बन्द होते देखा गया है। किसी कारण से भी निर्बलता आगई है, गर्भ गिर जाता हो या अन्य किसी भी गर्भादि सम्बन्धी पीड़ा के लिये यह अमोघ अस्त्र सिद्ध हुआ है।

दाद की अपूर्व मलहम—

नीबू का रस	पाव भर
मीठा तैल	पाव भर
श्वेत मोम	२ तोले
छोटी इलायची	१ तोले

(शेष पृष्ठ १२४ पर)

वैद्य विशारद पं. राधमोहन जी मिश्र D. D. H.

गुदड़ी स्ट्रीट, बहिराइच (अवध)।

पिता का नाम—श्री. पं. हरिहरदत्त जी मिश्र
आयु —३३ वर्ष जाति—ब्राह्मण
प्रयोग-विषय—१-वातरोग २-खाज(खुजली)

लेखक

वात भंजन तैल—

सोंठ देशी	२० तोला
संखिया	१ तोला
सोंठ वैतरा	२० तोला
अफीम	१ तोला
सेंधा नमक	१० तोला
कपूर	१० तोला
तेल सरसों	आध सेर
मिट्टी का तेल	आध सेर

विधि—दोनों सोंठ तथा सेंधा नमक को यवकुट करके सरसों के तेल के साथ मन्द २ आंच में पाक करे, जब सोंठ का वर्ण लाल हो जावे तब नीचे उतार कर अफ़ीम और संखिया तेल में डालकर पड़ा रहने दे, किन्तु ध्यान रहे कि तेल का धुआं शरीर के किसी भाग में न लगने पावे जब शीतल हो जावे तब उसमें कपूर और मिट्टी का तेल डालकर घोटे तत्पश्चात् उसे छानकर एक शीशी में सुरक्षित रखले।

उपयोग-इसकी थोड़ी सी मात्रा कठिन से कठिन वात-व्याधि के लिये पर्याप्त है; किन्तु शिर एवं कोमल अङ्गों पर इसकी मालिश न करे। इसके लगाते समय निम्न लिखित लड्डू का सेवन करे तो आशातीत लाभ होगा।

"श्री० मिश्रा जी कुशल चिकित्सक तथा योग्य लेखक हैं। आपको कई स्थानो से उपाधिया प्राप्त हुई हैं, आपकी आविष्कृत "खाज-मोगोना" दवा की जनता ने काफी प्रशंसा की है; वही प्रयोग आपने जन हित का विचार कर प्रकाशनार्थ भेज आपने उदर विचारों का परिचय दिया है। आपके दोनों प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

लड्डू—

सोंठ दोनों	२०-२० तोला
धनियां	२० तोला
गुड़	६० तोला
तैल सरसों	पाव भर

विधि—प्रथम सरसों के तैल में सोंठ और धनियां को भूनो: जब साधारण लाल हो जाय तब गुड़ की चाशनी बनाकर लड्डू बांधलें। प्रातः सायं उपयोग में लावें।

खाज-भीगोना—

पारा	गंधक तैलिया	आंबा हल्दी
गुड़ अजवायन	सिंगरफ	१-१ तोला
तूतिया		३ माशा
गाय का घी		१० तोला
भांगरे का रस		१० तोला

विधान—प्रथम पारे गंधक की कज्जली करे तत्पश्चात् आंबा हल्दी आदि का सूक्ष्म चूर्ण करके घी में कज्जली और चूर्ण को खूब फेंटे और भांगरे का रस मिलाते जांय। मलहम के सब न सब एक में मिल जाव तब तैयार समझिये।

उपयोग—पहिले कार्बोलिक साबुन से स्नान करके इस मलहम को लगावें, फिर तीन दिन तक स्नान न करें और मलहम का प्रयोग करते रहें, इन्हीं तीन दिन में खाज का नाम-निशान न रहेगा।

विदेशी विद्वान द्वारा आयुर्वेद का अभिनन्दन

"जितने अधिक समय तक मैं भारत में निवास करता हूँ उतनी ही मेरे हृदय में प्राचीन चिकित्सकों की दूर दर्शिता के प्रति श्रद्धा अधिक होती जाती है और मैं यह उतने ही अधिक रूप से जान पाता हूँ कि पाश्चात्य देशों को इस प्राच्य देश से बहुत कुछ सीखना है"

—सर चार्ल्स पार्डीलियूकिस

भारत सरकार के सर्जन-जनरल बहादुर।

(पृष्ठ १२२ का शेष)

सफेद चन्दन का महीन चूर्ण	१ तोले
कपूर केशर	४-४ माशे
क्राइसोफानिक एसिड (एक प्रकार की पीले रंग की बुकनी जो अंग्रेजी दवाखानों में मिलती है)	६ माशे

—प्रथम तैल तथा मोम को नीबू के रस सहित अग्नि पर चढ़ा कर एसिड को छोड़ इलायची आदि का चूर्ण भी उसी में डाल मन्दाग्नि से पचावे, तैल मात्र रहने पर गरम ही कपड़े से छान लें। शीतल होने पर उपरोक्त एसिड को मिला खूब घोट कर शीशियों में भरलें।

प्रयोग-विधि-दाद को थोड़ा सा खुजला कर इसको लगा तैल की भांति मसलते हुए चमड़ीमें प्रवेश करा दें। यह लगती नहीं और दाद को उसी समय से आराम करने लगती है। खुजली तो एक बार ही लगाने से दूर होजाती है।
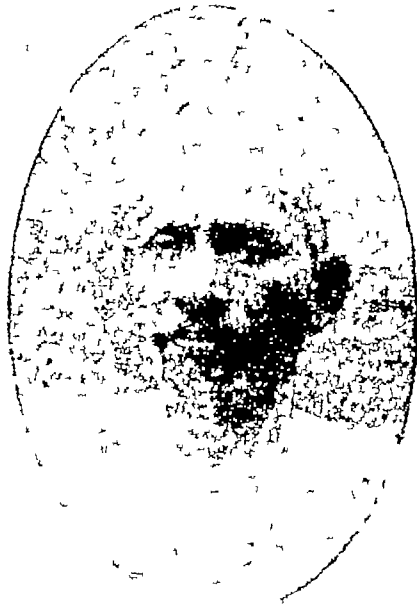
श्री. वैद्यरत्न नवमीलाल देव जी

देव औषधालय, डाल्टनगंज।

लेखक

औपसर्गिक मेह पर—

शीतलचीनी	छोटी इलायची
बिराजे का सत्व	हज़रत जहूर
फिटकरी का लावा	कलमी शोरा
सफेद चन्दन	श्वेत चीनी
सोना गेरू	खीरा के बीज

—प्रत्येक १-१ तोला।

मिश्री १० तोला

—इन सबका चूर्ण बनाकर सेवन करना।

मात्रा–३ या ४ माशा की मात्रा में दिनमें ३ बार दें।

अनुपान–दूध की लस्सी या चावल के मांड में शक्कर मिला कर।

गुण–यह सुज़ाक के सभी अवस्थाओं में लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

"श्री० वैद्य जी का जन्म सम्वत् १९३५ में पटना जिला अन्तर्गत नन्दपुरा ग्राम में एक प्रतिष्ठित वैश्य कुल में हुआ। आप लगभग ४२ वर्ष से सफलतापूर्वक चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। आपका जीवन सार्वजनिक कार्यों में व्यस्त रहता है। स्थानीय कोई भी ऐसी संस्था नहीं जिसमें आपका सक्रिय एवं प्रबल हाथ न हो। २ वर्ष पूर्व इकलौते पुत्र आयुर्वेदाचार्य देवेन्द्रकुमार जी की असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण आपको वृद्धावस्था में एक प्रबल धक्का लगा है। निम्न प्रयोग आपके लम्बे अनुभव सागर के चुने हुए रत्न हैं।" — सम्पादक।

कासान्तक अवलेह—

अडूसे के हरे १०० पत्ते लेकर अठगुने जल में औटावें। जब चौथाई जल शेष रह जाय तब उतार कर छान लें और उसमें १६ तोले मिश्री डालकर अवलेह बनावें और निम्न चूर्ण मिलाकर रखें।

काकड़ासिंगी	मिर्च काली
पीपल छोटी	—तीनों ३-३ तोला
बड़ी कटेरी के फल	१ तोला

—इनका चूर्ण कर उपर्युक्त अवलेह में मिलालें।

मात्रा–२ माशे से ४ माशे तक, गरम जल से दिन में तीन बार दें।

गुण–इससे सभी प्रकार का कास नष्ट होता है। कफज एवं वातज कास में इसका प्रभाव बहुत अधिक होता है।

शीघ्र पतन, धातुविकार, मूत्रदोष, और स्वप्न-दोष पर—

गिलोय सत्व	१ भाग
दिल्ली की सफेद मुसली	२ भाग
ताल मखाना	३ भाग
मखाने की गिरी	४ भाग
मिश्री	५ भाग

—इन सबका चूर्ण बनाकर सेवन करें।

मात्रा-४ से ६ माशा प्रातःसायं दें।

नोट—औपसर्गिक मेह के बाद इसका चूर्ण सेवन करने से रोग फिर उभड़ने का डर नहीं रहता।

बाल कास पर—

पुहकर मूल	पीपल
काकड़ासिंगी	अतीस
बड़ी कटेरी का फल	वंशलोचन
—सब सम भाग	

—इन सबका चूर्ण थोड़ा-थोड़ा मधु के साथ दिन में तीन बार चटाने से बालकों को सब प्रकार की खांसी कुकुर खांसी में आराम होता है।

मात्रा–दो से चार रत्ती तक छोटे बालक जो बता सकें उनको मधु और मां के दूध में मिला कर देनी चाहिये।

* * *

गृहस्थ-उपयोगी सरल प्रयोग

रतौंध पर—

लाल चन्दन गौ के गोबर के रस के साथ घिस कर लगाने से कुछ दिन में 'रतौंध' रोग नष्ट होता है।

गुहेरी की दवा—

अरहर की दाल स्वच्छ पत्थर पर पानी के साथ घिसकर दिन में २-३ बार लगाने से लाभ होता है।

आंख के कोय कटने पर—

पुराने कुये का कंकड़ या पुरानी भीत का कोयला पानी में घिसकर लगाने से 'कोया-कटनी' दूर होती है। परीक्षित है।

मसूड़े फूलने की दवा—

१—माजूफल ६ माशे को आध सेर पानी में औटावे को रस दें और जब डेढ़ पाव जल रह जावे छानकर गुनगुने जल की कुल्ली कर डालें।

२—काली-मिर्च ६ माशे लेकर कपड़-छन करके मसूड़े पर मलने से भी आराम होता है।

कान के दर्द की दवा—

सुदर्शन का पत्ता घी से चुपड़ कर और सेंक कर कान में निचोड़ने से कर्णशूल अवश्य दूर होता।

लेखक—चौधरी ब्रजवासीलाल जी गुप्त

श्रीयुत वैद्य चिरंजीलाल जी आयुर्वेद-शास्त्री

कल्याण औषधालय, बाह [आगरा]

—*—

ज्वर रोकने के लिये—

भांग के पत्ते छाया में सुखाकर सूक्ष्म पीस लें और शीशी में सुरक्षित रक्खें। ज्वर आने से १ घण्टा पूर्व १ रत्ती से २ रत्ती तक की मात्रा में जल से पिलायें। ज्वर न आयेगा।

"शीत पूर्व ज्वर में विजया उस समय देने से जिससे कि ज्वरावेग का समय तथा विजया का नशा होने का समय एक ही हो तो शीत न लगकर नशा हो जाता है और ज्वर नहीं चढ़ता। मेरा अनुभुत है। लेकिन मात्रा आयु, प्रकृति आदि विचार कर निर्धारित करें।" —सम्पादक।

> "श्री० वैद्य जी ने घर पर ही अध्ययन कर आयुर्वेद-शास्त्री की परीक्षा दी है। आप "कल्याण योगमाला" मासिक पत्र के सम्पादक तथा प्रकाशक भी हैं। आप योग्य एवं प्रसिद्ध चिकित्सक हैं तथा आपके निम्न प्रयोग अनुभूत हैं। पाठक व्यवहार करलाभ उठावें।"
> —सम्पादक।

पलकों के गिरे हुये बाल उत्पन्न करने के लिये-

कुन्दरू गोंद को दीपक में जला कर उस पर कोई बर्तन उल्टा करके रख दें, जिससे उसी बर्तन में काजल पड़ जाये। काजल को नेत्रों में लगाने और माजूफल व रुई जलाकर सुर्मा मिलाकर लेप करने से पलकों के गिरे हुए बाल उत्पन्न होते हैं।

बवासीर की दवा—

केहरवा समई, बबूल गोंद, गेरू —हरेक १-१ माशा।

—लेकर कूटकर कपड़-छन करलें, २ माशा दवा की मात्रा को सुबह-शाम १५ दिन गाय के दूध से व १५ दिन गाय के मट्ठे से सेवन करने से रक्त व बादी की बवासीर समूल नष्ट हो जाती है।

दस्तों पर

अचूक प्रयोग—

सोंठ के सूक्ष्म चूर्ण में अरण्डी की जड़ के रस की भावना देकर गोला बनालें। बाद अरण्डी के पत्तों में लपेट कर पुट-पाक विधि से पाक करके चना प्रमाण गोलियां बनालें। प्रत्येक गोली में पोस्त के बराबर अफ़ीम मिलाकर मिश्री की चाशनी में देने से आमातिसार आदि दो दिन में बन्द होते हैं।

आयुर्वेदशास्त्री पं. उदयलाल जी महात्मा आयुर्वेदरत्न,

श्री० महावीर आयुर्वेदिक चिकित्सालय, देवगढ़ (मेवाड़)

"श्री० महात्मा जी का आयुर्वेद-चिकित्सा के प्रति प्रेम आपके नाना जी के यहां से हुआ है। आपने राष्ट्र भाषा हिन्दी में आयुर्वेद की परीक्षाएँ पास की हैं। आप 'नाहरू' रोग के विशेषज्ञ हैं तथा जल-चिकित्सा, बायोकैमिक योग, सूर्यरश्मि एवं आसन चिकित्सा में भी जानकारी रखते हैं। स्थानीय आस-पास की जनता आपकी चिकित्सा में पूर्ण विश्वास रखती है।" —सम्पादक।

नहरुआ पर—

ईसबगोल	कलिहारी	प्याज़
देशी साबुन	सिंदूर	बच्छनाग
हींग	अफीम	कपूर

—इन सब औषधियों को कूट-पीस कर शीशी में रखलें।

लेखक

विधि—नहरुए की भयंकर पीड़ा के समय जब वह स्थान २ पर पकता-फूटता है और नाड़ी सब का रूप लेता है, उस समय उक्त दवा १ या २ तोला किसी कटोरी में लेकर २० तोला पानी डाल आग पर रख कर पकावें और लकड़ी से चलाते रहें। जब पोलिटश तैयार होजाय, किसी हरे पत्ते पर रख कर बांधते रहने से नहरुवे के कष्ट से छुटकारा हो जाता है।
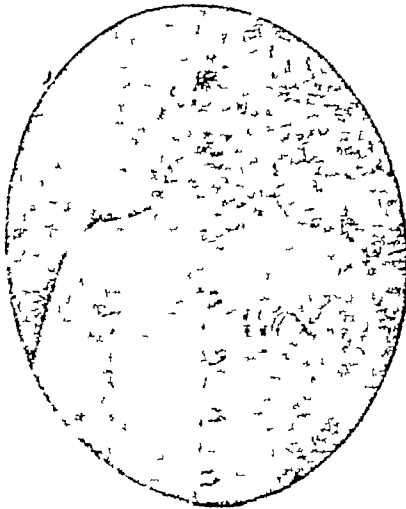
बाल गुटिका—

जावित्री	२ तोला
केसर	१ तोला
जायफल	६ माशे
लवंग	२ तोला
अजमोद	१ तोला
छुहारा	१ तोला
अफीम	१ तोला
मोचरस	१ तोला
शहद	२ तोला

—पीसने योग्य वस्तुओं को बारीक पीस कर शहद

(शेष पृष्ठ १३४ पर)
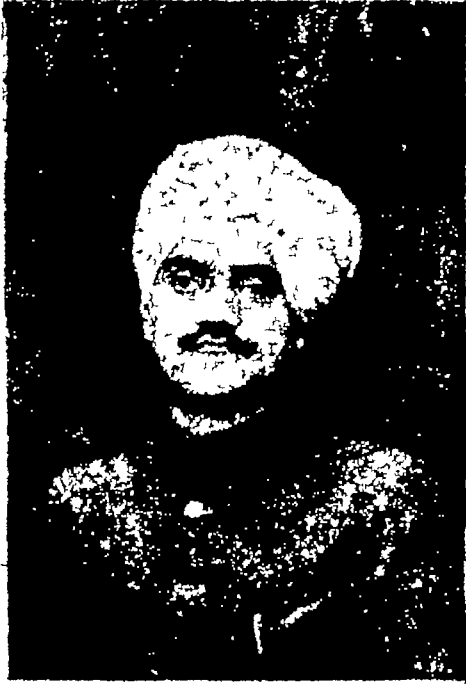
लेखक

वैद्य महावीरप्रसाद जी शर्मा आयुर्वेदशास्त्री,

श्री० वैद्यनाथ आयुर्वेदिक फार्मास्युटिकल वर्क्स,
सहल-सदन, चूरू (बीकानेर)

पिता का नाम— श्री० पं० वैद्यनाथ जी सहल ज्योतिषाचार्य

आयु—३१ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० वैद्य जी वैद्यनाथ औषधालय चूरू के प्रधान चिकित्सक एवं उपर्युक्त फार्मास्युटिकल वर्क्स के सञ्चालक हैं। ग्रहणी एवं प्रमेह रोग के सफल-चिकित्सक हैं। आपके निम्न प्रयोग अनुभूत हैं।"

—सम्पादक।

मानव-सुधा—

स्वर्णसिंदूर २ माशे, रससिंदूर १ तोला, नागभस्म ६ माशा, कान्त लोहभस्म ६ माशा, शतपुटी अभ्रकभस्म १ तोला, वंगभस्म ६ माशा, जायफल १ तोला, लौंग १ तोला, कपूर १ तोला, मिर्च १ तोला, कस्तूरी ६ माशे, शुद्ध शिलाजीत ६ माशा, वायविडंग ६ माशा, स्वर्णमाक्षिकभस्म ६ माशा, वंशलोचन ६ माशा, इलायची छोटी बीज ६ माशा, गिलोय सत्व ६ माशा।

—नागरपान के रस में घोट कर दो रत्ती प्रमाण गोली बनावें।

सेवन विधि—सुबह-शाम एक एक गोली दूध से लें। इसके सेवन से बीसों प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं। रक्त, बल, वीर्य वर्धक पौष्टिक रसायन एवं ताक़त की अपूर्व दवा है।

रक्त-प्रदरान्तक—

रूमी मस्तगी २ तोला, तोदरी सफेद ६ माशा, तोदरी लाल ६ माशा, बहमन सफेद ६ माशा, बहमन लाल ६ माशा, गोखरू १ तोला, समुद्र-शोख २ तोला, पिस्ता का फूल ६ माशा, शतावरी १ तोला, मिश्री ५ तोला। सबका कपड़छान चूर्ण करें। मात्रा—६ माशा।

सेवन-विधि—सुबह-शाम दूर्वा के रस के साथ देने से रक्त-प्रदर में आश्चर्यजनक लाभ होता है।

वैद्यराज पं० खूबचन्द्र जी मिश्र वैद्य-शास्त्री,

श्री. खूब आयुर्वेद-भवन, कुण्डपुरा पो. सबलगढ़ (ग्वालियर)

—पिता का नाम—
वैद्यवर पं. रामरतन जी मिश्र
आयु—४० वर्ष
जाति—सनाढ्य-ब्राह्मण
—प्रयोग-विषय—
१-विरेचक   २-वमन
३-मंथर-ज्वर   ४-ज्वर

"आपने संस्कृत की प्रथमा एवं आयुर्वेद की वैद्यशास्त्री व वैद्य-वाचस्पति की परीक्षा पास की है। आपकी चमत्कारिक चिकित्सा से स्थानीय जनता प्रसन्न है। आपके निम्न प्रयोग अनुभव पूर्ण व उपयोगी हैं।"
—सम्पादक।

—लेखक—

विरेचन वटी—

सनाय   हरड़ का बक्कल   सेंधा नमक
शुद्ध जमालगोटा   —प्रत्येक समान भाग
—का सूक्ष्म चूर्ण और चूर्ण से अर्ध भाग बीज-रहित मुनक्का मिलाकर ६-६ माशे की गोली बनालें।

प्रातःकाल उष्ण जल से एक गोली खाने से उदरस्थ आम और दूषित मल सुगमता से निकल कर उदर साफ हो जाता है तथा कोष्ट बद्ध और आमजशोथ में भी लाभकारी है।

"लेखक के प्रयोगानुसार एक मात्रा में एक माशे शुद्ध जमालगोटा होता है जो अधिक है और इतनी मात्रा में जमालगोटा अधिक दस्त ला सकता है, अतः ३-३ माशे की गोली बनावें तथा मृदु कोठ वाले को इसमें से भी आधी दें। बच्चों को तो चौथाई ही देनी पर्याप्त होगी।" —सम्पादक

वमन कुठार—

इलायची दाने   बढ़िया केशर
शुद्ध हिंगुल   —प्रत्येक २-२ रत्ती
तुलसीपत्र   मुनक्का   मिश्री
—तीनों आधा २ तोला, लेकर पीस लें और ठण्डे जल से लें। वमन के तीव्र वेग को

रोक कर हृदय में शांति करता है। साथ ही दस्त और आंत्रिक ज्वर में अपूर्व लाभकारी है।

मन्थर ज्वरारि वटी—

मुक्ता शुक्ति भस्म	प्रवाल भस्म
स्वर्ण माक्षिक भस्म	सत गिलोय
तुलसी बीज	इलायची बीज

काश्मीरी केशर

—सब समान भाग लेकर ब्राह्मी रस में एक पहर मर्दन करके गुञ्जा प्रमाण वटी बनाकर शहद एवं अदरक स्वरस के साथ सेवन करने से घोर मंथर ज्वर एवं उसके उपद्रवों का शमन करने में अचूक है।

मात्रा—२ से ४ गोली तक, हर एक पहर में देनी चाहिये।

ज्वरांतकारी—

द्रोणपुष्पी पत्र	सहदेवी पत्र
तुलसी पत्र	नाव बूटी
दिमाजरी	गिलोय

—प्रत्येक आध २ सेर हरी लेकर आध पाव काली मिर्चों का चूर्ण मिला एक मटके में भर कर पाताल यन्त्र से शुद्ध अर्क निकाल कर बोतल में रखलें अथवा स्वरस निकाल कर रखलें।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक जल के साथ सेवन करने से दो बार में ही एकतरादि विषम-ज्वर (मलेरिया) को नाश कर देता है, चाहे विकृत विषम ज्वर या प्राकृत कैसा ही क्यों न हो। नया-पुराना सभी में एक अद्वितीय औषधि है। विज्ञापन-व्यवसाइयों के मिक्श्चरों से कहीं अधिक लाभकारी है।

नाव बूटी का विवरण—

इसका संस्कृत नाम सुरसा, नाकुली, नाई आदि है एवं हमारे इस प्रांत में 'नाव' नाम से प्रसिद्ध है। इसका क्षुप बहुत छोटा, पृथ्वी से आध फुट ऊंचा होता है। पत्ते लम्बे, पीली कन्हेर जैसे होते हैं, फूल डण्डी पर छोटे २ सफेद रंग के श्रेणी बद्ध होते हैं। यह प्राकृत ज्वर को नष्ट करने में अद्वितीय है। पुराने वैद्य एवं कवियों के लेखों में इसका नाम कहीं २ पाया जाता है। स्वाद में तिक्त होती है, हमारे यहां पर इसके स्वरस को ग्रामीण मनुष्य विषम ज्वर के दूर करने के लिये बहुत पीते हैं और एकतरा दूर होजाता है।

दिमाजरी बूटी का विवरण—

इसका संस्कृत नाम द्विमंजरी, अहिभुक्, विषम-ज्वर हंत्री आदि हैं। हमारे इस देश में इसे दिमा-जरी नाम से पुकारते हैं। इसका क्षुप बहुत छोटा एवं पृथ्वी पर फैला हुआ लता के रूप में होता है। पत्ते तुलसी के समान तथा किनारों पर कटे हुए से, डंडी चौकोर, पत्तों के संधियों पर पीले फूल बहुत छोटे लगते हैं। आश्विन मास में इसकी गन्ध बहुत आकर्षक होती है और सर्प बड़े प्रेम से खाते हैं। इसका स्वाद तिक्त एवं कटु-कषाय है। यह अनु-पान भेद से कई रोग-नाशक है। ग्रामीण लोग इकतरा दूर करने के लिये इसके स्वरस को दही के तोड़ में मिलाकर पीते हैं।

वैद्यराज पं० हरिप्रसाद सी. भट्ट आयुर्वेदाचार्य

प्राणाचार्य, एम० ए० एम० एस० बड़ौदा।

उदर रोग पर स्नुही प्रयोग--

थूहर का डण्डा एक बालिश्त (१२ अंगुल प्रमाण में) लेकर चाकू से ऊपर का कांटेदार छिलका छील कर बाद में पानी में भिगोकर तर किया कपड़े का टुकड़ा अच्छी तरह उस पर लपेट लें। और अंगीठी में सुलगते हुये कोयले की आग में रखकर भून, थोड़ी २ देर में पलटते जांय। ऐसा करने पर १०-१२ मिनट में डण्डा मुलायम हो जावगा; उसे मरोड़ कर निचोड़ लें, पानी जैसा स्वच्छ स्वरस निकलेगा। दूध का कुछ भी अंश नहीं दीखता। इसे कपड़े में छानकर ५ से १० तोला तक स्वरस बलाबल देख प्रातः एक बार पिलावें। १५ या २० दिन तक प्रयोग करें। इस प्रयोग से २-३ सप्ताह में कफोदर, जलोदर, कठिनोदर, यकृतोदर या प्लीहोदर अच्छा हो जाता है।

नोट—स्नुही क्षीर की तरह तीक्ष्ण विरेचन होगा इस भय को निशंक भूल जावें।

पिता का नाम
पं० चुन्नीलाल भट्ट

आयु-४२ वर्ष

जाति-ब्राह्मण
(बाजखेडावाल)

लेखक

"श्री० भट्ट जी ने देहली से "आयुर्वेदाचार्य-धन्वन्तरि" एवं कलकत्ता से प्राणाचार्य, एम. ए. एम. एस. परीक्षाएं पास की हैं। आप आयुर्वेद के प्रतिभाशाली लेखक, सफल-चिकित्सक एव योग्य अध्यापक हैं। आपने "तक्र कल्प" "आरोग्य-डायरी" आदि कई उत्तम पुस्तकें लिखी हैं। राजकीय संस्कृत महा विद्यालय बड़ौदा के प्रधान-आयुर्वेद अध्यापक हैं। आपके ये प्रयोग सरल एवं अत्युपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

गुण—इस स्वरस के पान से पतले पानी जैसे जुलाब नहीं होते, परन्तु संचित कठिन काले मल के २-२ दस्त रोज होते रहते हैं। निरापद है। शायद ही कभी पतला जुलाब होता है, बिना शंका प्रयोग करें।

साथ में आरोग्यवर्धिनी रस (रसरत्न समुच्चय)

का २ से ३ गोली तक प्रातः-सायं दो बार देवें। केवल दूध या भात का पथ्य रक्खें। यदि कब्ज़ की अधिक शिकायत हो तो नाराच रस या अभ्र-कञ्चुकी का जुलाब ५-७ दिन में एक बार दें।

अनुभव—

१—सन् १९३२ में एक फौजी (उम्र ३६ वर्ष) को कठिनोदर रोग था। उससे कुछ भी नहीं खाया जाता था, पेट भी पत्थर की तरह भारी और कड़ा था, अंगुली से दबा नहीं सकते थे। २१ दिन प्रयोग करने से पेट का आकार १२ इञ्च कम हो गया और करीब पक्का १५ सेर मल पहिले १० दिन में ही निकला। २१ दिन प्रयोग के बाद, अग्निकुमार रस ३-३ रत्ती प्रातः-साय अद्रक स्वरस और शहद से ५ सप्ताह तक दिया गया। बाद में धीरे २ खुराक देते गये; पूर्ण आराम होगया और अभी तक सरकारी नौकरी कर रहा है।

२—एक स्त्री उम्र ३१ वर्ष, सन् १९३० में जलोदर का इलाज कराने आई, सर्वाङ्ग में शोथ था। इसी प्रयोग को २५ दिन तक देने से पूर्ण आराम होगया। बाद में पञ्चामृत पर्पटी २-२ गुञ्जा प्रातः-सायं पीपर, हींग और शहद के अनुपान से देते रहे। अभी जीवित है।

इस प्रयोग का अनुभव कई वर्ष से अनेक रोगियों पर कर चुके हैं। शतप्रतिशत काम देता है और असाध्य माने हुए उदर रोग को अच्छा कर देता है, निर्भय है।

नोट—छोटे बच्चे और बालक को भी बलाबल देखकर उचित मात्रा में दे सकते हैं।

कुत्ता खांसी पर—

कच्ची फिटकरी का चूर्ण	१० तोला
सोमकल्प चूर्ण	५ तोला

—दोनों को अच्छी तरह मिलाकर, घोटकर शीशी में भर लेवें, अथवा टेबलेट बना लेवें। कुत्ता-खांसी की उग्र अवस्था (Acute stage) के ८-१० दिन व्यतीत होने पर देने से निश्चय-पूर्वक ७ से १० दिन में आराम होता है। "६-८ सप्ताह तक यह खांसी दूर नहीं होती" ऐसा मानना असत्य हो जाता है। कई वर्षों से सफलता पूर्वक व्यवहार कर रहा हूँ।

मात्रा-उम्र के अनुसार—

१ से २ साल की उम्र वालों को	२ रत्ती
५ से ६ ,, ,,	३ से ५ रत्ती
बड़े बालकों के लिये	७ से १० रत्ती

दिन भर में तीन बार देवें।

अनुपान-कोष्ण जल से अथवा शहद में मिलाकर चटा दें।

कफ-पिल्स----

(खांसी की चूसने की गोली)—

मुलहठी सत्व	४० तोले
बबूल का गोंद शक्कर	२०-२० तोले
कत्था	१५ तोले
मुलैठी मूल	१० तोले
मेन्थोल (Menthol)	१। तोले
केसर	१। तोले
छोटी इलायची के दाने	१० तोले
लौंग सौंफ	१०-१० तोले

बहेड़ा की छाल	१० तोले
काली मिर्च कबाबचीनी	५-५ तोले
जायफल	२॥ तोले

—इन १४ वस्तुओं में से मुलैठी सत्व, गोंद और मेन्थोल अलग रक्खें। बाकी सब चीजों को कूटकर कपड़छान चूर्ण बना लेवें। मुलहठी मूल के छोटे-छोटे टुकड़े कर गरम पानी में भिगो कर खूब घोट कल्क सा बना लें। गोंद का पानी मिला कर बना लें। मेन्थोल क्रस्टल्स (पिपरमेंट) कांच की शीशी में दीपक पर गरम कर प्रवाही करले। अब मुलहठी सत्व के कल्क में गोंद का पानी तथा पिपरमेंट मिलाकर खूब घोटलें। बाद में कपड़छन चूर्ण मिलाकर खूब घोटलें। गोली बनाने लायक होने पर १-१ रत्ती की गोली बनाकर छाया में सुखा लें। सूखने पर शीशी में भरलें।

उपयोग— २-३ गोली मुख में रख चूसने से खांसी को तात्कालिक लाभ होता है, गले को साफ रखती है, रुचि उत्पन्न करती है।

(पृष्ठ १२८ का शेष)

मिला अच्छी प्रकार खरल कर मूंग के समान गोलियां बनावें।

बलानुसार १ गोली प्रातः सायं देने से बच्चों के अतिसार, वमन, दंतोद्भेद, पारिगर्भिक, बच्चों का अधिक रोना आदि रोग मिटते हैं।

नेत्रांजन—

समुद्रफेन	७ तोला
फिटकरी	१ तोला
बहेड़ा की गिरी	१ तोला
भीमसेनी कपूर	२ तोला
शुद्ध कृष्णांजन	१ तोला

विधि-पहले समुद्र फेन को नीबू के रस में गलावें, और खरल में डाल मक्खन के समान हो तब तक घोटते रहें। बाद में कपड़-छनकर शेष द्रव्य मिला १२ घंटे तक निरंतर खरल कर रखलें।

गुण—नेत्रों की लाली, जल गिरना, रतौंध, फूली को मिटाकर नेत्रों को स्वच्छ करता है।

नहरुये के लिये अव्यर्थ प्रयोग—

भिलावा, मुर्दाशंख, सिन्दूर, खुरासानी अजवाइन, मोम देशी पांचों २०-२० तोला, तिल का तैल सवा सेर।

निर्माण-विधि—पहिले भल्लातक को सरौते से काट लें। फिर तैल में डालकर जला लें। तैल को छान कर अलग रख लें। अब भिलावा, मुर्दाशंख, खुरासानी अजवायन को खूब महीन पिसवा लें। तैल को आग पर रखकर गरम करें और मोम डाल दे। जब मोम पिघल जाय तो सिन्दूर डाल दे और करछुली से जल्दी-जल्दी हिलावें, जिससे गांठें न पड़ें। जब देख लें कि सिन्दूर अच्छी तरह मिल गया शेष चीजों को कढ़ाई में डाल दें। जल्दी से मिला कर नीचे उतार लें। मलहम तैयार है।

प्रयोग-विधि—आक के पीले पत्ते पर रखकर नहरुये के स्थान पर बांध दें। इस तरह तीन दिन तक तीन पट्टी बांधने से आराम होजायेगा।

नोट—भल्लातक को सरौते से काटते समय उससे निकला चेंप अपने हाथों या शरीर के किसी भाग से न लगने दें अन्यथा शरीर सूज जायगा।

—आयु० प० नन्दवल्लभ जी पाण्डेय, चोमूं (जयपुर)

आयुर्वेद मार्तण्ड श्री. पं० रामचन्द्र जी वैद्य शास्त्री

सुधा-वर्धक औषधालय, अलीगढ़।

—लेखक—

पिता का नाम— श्री० पं० जयजयराम जी शर्मा

आयु—६२ वर्ष जाति—गौड़ ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-प्लीहा-यकृत २-रक्त-स्राव ३-क्षय

"श्री० शास्त्री जी विद्वान और प्रसिद्ध चिकित्सक हैं। आपने संस्कृत की मध्यमा (शास्त्री) परीक्षा देकर आयुर्वेद का ज्ञान आपने घर पर ही मामा जी से प्राप्त किया है। आप उत्साही सार्वजनिक कार्यकर्त्ता रहे हैं। एवं कई उत्तमोत्तम पुस्तकें भी लिखीं हैं। आपको अनेकों प्रशंसापत्र, मानपत्र और वाणी-भूषण की उपाधि भी प्राप्त हुई है। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।
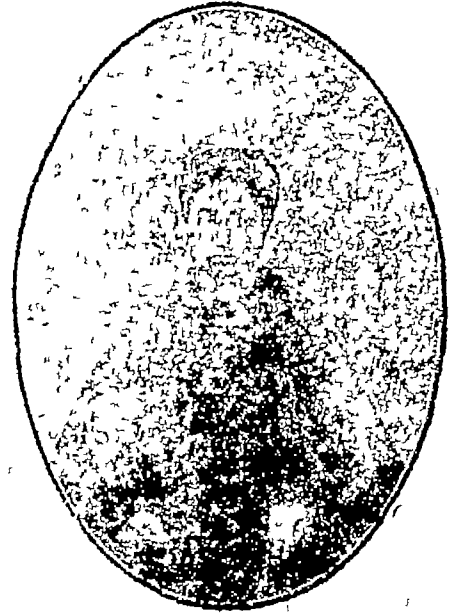
प्लीहा-यकृत वृद्धि पर—

आक के पके हुए बड़े-बड़े पत्ते १ सेर लेकर वस्त्र से पोंछ कर साफ करलें। तदनन्तर उन्हें खरल में डालकर थोड़ा कूट लें। छोटे-छोटे टुकड़े होजाने पर, पाचों नमक (समभाग कुटे-पिसे) आध पाव लेकर उन पत्तों में मिला दें। एक मिट्टी की हांडी में भर कर ऊपर सरवा से मुख बन्द कर कपड़-मिट्टी से संधि बन्द कर दें। गजपुट में ५० कण्डों की अग्नि दें। शीतल होने पर उसे निकाल पीस कपड़-छनकर रखलें।

मात्रा-१ माशा। समय—दिन में २ बार।

अनुपान—अर्क मकोय। पथ्य—रोगानुसार।

गुण—इस सरल प्रयोग से यकृत प्लीहा-वृद्धि अवश्य नष्ट होती है।

रक्त-रोधक चूर्ण—

नागकेशर पहाड़ी	बेलपत्र
अजवाइन	चन्दन चूरा श्वेत
धनियां	वंसलोचन
छोटी इलायची	धाय के फूल
कुड़ा की छाल खस	—समानभाग

विधि—सबको कूटकर छान लो और ३-३ माशे चूर्ण शर्बत उन्नाव १ तोले में मिलाकर प्रातः मध्याह्न और सायंकाल चटाओ। किसी भी

कारण से रुक जाना हो वह ७ मात्रा में बन्द वा कम अवश्य होजाना है। यह अव्यर्थ योग है।

क्षय-रोग की निर्बलतानाशक—

गीले वस्त्र से पोंछे हुए और बीज निकाले हुए द्राक्षा २ तोले, भिगोकर छिलका दूर किये हुए बादाम २ तोले, लशुन की छिली और नुचाई हुई साफ कली ३ माशे।

—सबको लेकर सिल-लोढ़ी से चटनी की तरह खूब पीसलो, पीसते समय पानी भी डालते जाओ। बारीक चटनी के समान पतला अवलेह सा बन जाने पर लोहे, तांबे या पीतल का कलईदार बर्तन ले, कोला की अंगीठी पर रख गरम करे और २ तोला असली घी डालकर पकावे। खूब खुश्क होजाने पर १ तोला मिश्री पिसी हुई मिला दो, गाढ़ा हलवा बन जाने पर उतार कर ठण्डा कर प्रातः ६ बजे सिद्ध मकरध्वज ४ चावल चढाकर खिला दे। रोगी की कृशता दूर होगी, वज़न बढेगा, निर्बलता दूर होगी। नपुंसक को २१ दिन ब्रह्मचर्य्य से रह कर यह औषधि व्यवहार करनी चाहिये।

विशेष वक्तव्य—

इस औषधि को मे स्वयं बहुत व्यवहार करता हूं। मस्तिष्क की निर्बलता मे मुक्ता पिष्टी मिलाकर और काम की उग्रता में प्रवाल भस्म मिलाकर व्यवहार करने से बड़ा लाभ होता है। उस पुरानी खासी मे जिसमें खासते २ रोगी परेशान होजाता है और कफ नहीं निकलता, थोडा खागर्यतगाल (यूनानी) मिलाकर व्यवहार करने से अपूर्व लाभ होता है। मेरी सम्मति में पाठकों को अवश्य व्यवहार करना चाहिये।

—सम्पादक।

वैद्य भास्कर

हरिदत्त जी शास्त्री एम. ए.

प्रोफेसर—बलवन्त राजपूत कालेज,

सूरजभान फाटक, बेलनगंज (आगरा)।

"श्री० शास्त्री जी आंग्ल, संस्कृत व आयुर्वेद के उद्भट विद्वान हैं। आप संस्कृत महाविद्यालय आगरा के प्रिंसीपल रह चुके हैं तथा अब बलवंत राजपूत कालेज में प्रोफेसर हैं। आप विद्वान होने के साथ-साथ अनुभवी चिकित्सक भी हैं। आपने बहुत कुछ आग्रह करने पर निम्न प्रयोग यहीं दिये हैं जिनका आप स्वयं अनुभव पर कर चुके हैं। आशा है पाठक इन प्रयोगों से लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

१—मैं स्वयं अश्मरी का रोगी हूं, या रह चुका हूं इसका दौरा बड़ा भयङ्कर होता है। साईकिल पर विशेष चढ़ना भी इसके उत्पादक कारणों में से एक है।

इसके नाश के लिये मुझे सबसे अधिक कुलथी (पहाड़ी) व शिलाजीत का प्रयोग दूध के साथ तथा खाने को नोनिया की घास का शाक जो बरसात में होता है, बड़ा ही लाभदायक सिद्ध हुआ है। यह मेरा अनुभूत है।

२—इसी प्रकार मैं वातार्श का भी मरीज हूँ। इसपर नीलाथोथा व फिटकरी का प्रयोग बड़ा ही लाभदायक है। लगती जरूर है पर उस पर एक लेप है उसे लगाना चाहिये। वह लेप पुनः सफल होने पर लिखा जायगा, पर कुचला सिन्दूर, मोम व शुद्ध सरसों का तैल पकाकर लगाना विशेष लाभदायक होता है।

३—पायोरिया से सब पीड़ित हैं मुझे यह रोग २० वर्ष से है। नमक, तैल मात्र का लगाना बड़ा ही लाभदायक है, काली मिर्च व तम्बाकू भी ज़रा मिलालें तो फिर कहना ही क्या।

श्री० पं. चन्द्रनप्रसाद जी मिश्र आयुर्वेद-शास्त्री

असरपुर-भागलपुर [विहार]

पिता का नाम
पं० अयोध्याप्रसाद जी
आयु—२७ वर्ष
जाति
शाक द्वीपीय ब्राह्मण
प्रयोग-विषय—
१-मलेरिया
२-उदर रोग

"श्री मिश्रा जी के वंश में बहुत समय से वैद्यक व्यवसाय होता आरहा है, आपने श्री० बाला-नन्द संस्कृत कालेज वैद्यनाथधाम के आयुर्वेद-विभाग में अध्ययन व प्रैक्टिस करते हुये मध्यमा, शास्त्री व आचार्य की परीक्षायें दी हैं। आप योग्य चिकित्सक लेखक व आयुर्वेदज्ञ हैं। विद्यार्थी जीवन में भी आपने अपनी योग्यता के कारण सदैव छात्र वृत्ति (वजीफा) प्राप्त की है।"

—सम्पादक।

विषम ज्वर पर—

कालमेघ पत्र	५ तोला
शु० कुचला	२॥ तोला
सोंठ मिर्च पीपल	

—तीनों २॥-२॥ तोला।

विधि—कूट-कपड़छन कर हारश्रृङ्गार के स्वरस तथा तुलसी पत्र स्वरस की ३-३ भावनाएं देकर काली मिर्च के बराबर गोली बनाकर सुखालें।

मात्रा—ज्वरावेग से पूर्व २-२ घण्टे के अन्तर से १-१ गोली ३-४ बार तुलसी पत्र स्वरस या हारश्रृङ्गार स्वरस के साथ देना चाहिये।

गुण—विषम ज्वर के लिये अमोघ औषधि है। मलेरिया कीटाणुओं को मारती है। ज्वर को रोकती है। कुनैन जैसा गुण करती है।

सिद्ध योगासव—

भाग बबूल की छाल	१-१ सेर
महुआ आध सेर	सोंठ पाव भर
मिर्च १ छटांक	गुड़ १२॥ सेर
जल	५२ सेर

—आसव बनाने की विधि से तैयार करें। विसूचिका, आमातिसार, अतिसार, अर्श, उदर-शूल नाशक, मोदक, स्त्री-रोग और प्रसूतिका रोग-नाशक है।

—लेखक—
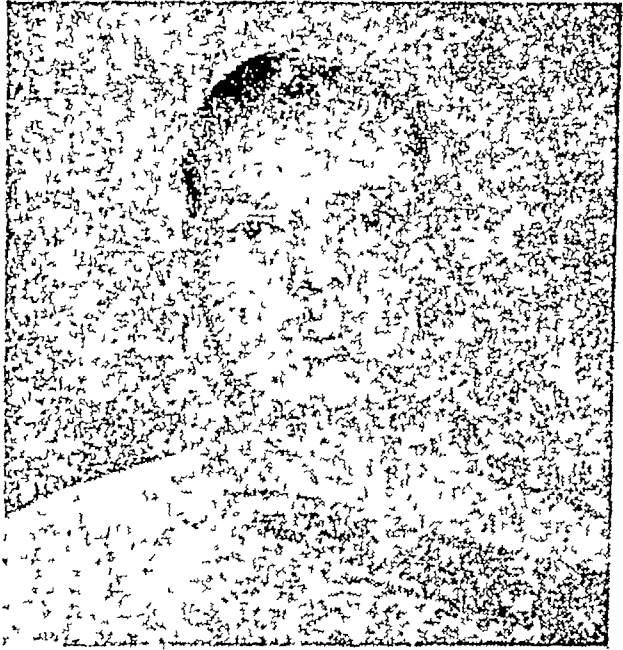
कविराज पं० परमेश्वरप्रसाद जी वैद्य आयुर्वेदाचार्य.

सर्वजन हितैषी दातव्य औषधालय, राजगढ़ (बीकानेर)

पिता का नाम—
श्री. पं० श्रीराम जी वैद्य
आयु— २६ वर्ष
जाति— गौड़ ब्राह्मण

"श्री. कविराज जी विद्यापीठ के आयुर्वेदाचार्य हैं, तथा पहिले कलकत्ता के सुप्रसिद्ध विशुद्धानन्द सरस्वती दातव्य औषधालय के सफल चिकित्सक रहे

—लेखक—
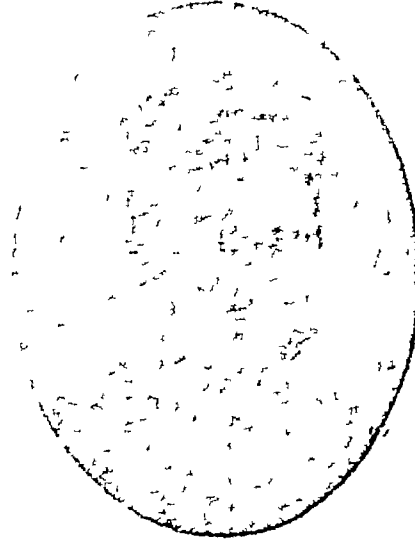
हैं। गत ५ वर्ष से आप श्री. सर्व हितैषी दातव्य औषधालय के प्रधान चिकित्सक हैं, आपकी चिकित्सा-कौशल के कारण आस पास की जनता आपका यशगान करती है। आपके निम्न प्रयोग अनुभव पूर्ण व उपयोगी हैं। पाठक व्यवहार में लाकर लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

मंथर ज्वर पर "मुक्तादिवटी"—

मुक्ता-पिष्टि	कस्तूरी	अम्बर
गोरोचन		चारों २-३ माशे
कालीमिर्च		६ माशे
मुनक्का		१० तोला
जायफल	जावित्री	दालचीनी
पिप्पली	केशर	अकरकरा
नागकेशर		—प्रत्येक ३-३ माशे।

विधि—काष्ठौषधियों का अलग २ वस्त्र पूत चूर्ण कर मिलालें। मुक्ता, कस्तूरी, केशर, अम्बर, गोरोचन को अलग गुलाब जल में घोट लें। मुनक्का के बीज निकलवाकर खरल में डालकर घोटलें। फिर सबको मिलाकर खूब घुटाई कर आधी रत्ती की गोलियां बनालो।

व्यवहार-विधि—तुलसी पत्र ३, काली मिर्च ३, लवंग ३, को छोटे खरल में घोटकर दो तोला जल मिलावें। गोली मुंह में लेकर ऊपर से वह जल पिलादें। यदि ज्वर बहुत तीव्र हो तथा पसीना न आता हो तो यह यह उपाय है।

गिलोय हरी	१ तोला
खूबकला	६ माशे

इलायची छोटी मय छिलका १ माशा, मुनक्का ३ नग, जल २० तोला, शेष ५ तोला।

—इस क्वाथ के प्रयोग से दाने निकल आवें मियादी बुखार के लिये यह मुक्तादिवटी सब अवस्थाओं में उत्तम कार्य करती है।

(शेष पृष्ठ १५० पर)

वैद्यभूषण

प० शंकरदत्त जी गौड़

वनौषधि भंडार, जबलपुर सी० पी०

—+—

पिता का नाम

पंडित हरप्रसाद जी वैद्यराज

आयु— लगभग ४० वर्ष

जाति— गौड़ ब्राह्मण

"श्री० गौड़ जी ने विश्वेश्वरानन्द जी सरस्वती कनखल की सेवा में लगभग १० वर्ष रहकर आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की है। आपके संकलित 'शंकर-निघण्टु' से पता लगता है कि आप योग्य संकलन-कर्त्ता एवं कुशल व्यवसायी हैं। आपके द्वारा लिखी "नपुंसक संजीवन" पुस्तक पर आपको रजत-पदक भी प्राप्त हुआ था। आपके निम्न प्रयोगों में 'विरोजे की मलहम' का प्रयोग उपयोगी एवं विशेष महत्व-पूर्ण है।" —सम्पादक।

कांच निकलना—

फिटकरी	१ तोला
माजूफल	अनार की जड़ की छाल
गुलेनार	अकाकिया
माईं छोटी	ढाक का गोंद

—प्रत्येक ६-६ माशा।

—इन सबको जवकुट करके तीन सेर पानी में औटाना चाहिये। जब डेढ़ सेर पानी रह जाये तब उतार छान कर रख लेना चाहिये।

—आब-दस्त लेने के बाद इस पानी से गुदा को धोना चाहिये तथा इसी के फोक की टिकियां

आयुर्वेद-विशारद पं० सुन्दरलाल जी जैन वैद्यभूषण

तिलक आयुर्वेदिक फार्मेसी, इटारसी

प्रतिश्याय पर—

पीली सरसों का तैल सांची से निकलवा कर स्वच्छ कपड़े में छान लें और एक शीशी में रखलें।

उपयोग—प्रातः सायंकाल इस तैल की ३-५ बूंद नासा-छिद्रों में डालकर ऊपर को सूतें।

गुण—इसके कुछ दिन लगातार व्यवहार करने से पुराने से पुराना प्रतिश्याय एवं नज़ला ठीक हो जाता है। बार-बार जुकाम होजाने की शिकायत भी दूर हो जाती है।

मलेरिया नाशक—

कुटकी	५ तोला
लाल फिटकरी का फूला	१ तोला
काले मुनक्का बीज रहित	१० तोला

निर्माण-विधि—कुटकी को प्रथक कूट-पीस कर कपड़े में छानलें और खरल में फिटकरी को पीसकर उसमें कुटकी का चूर्ण मिला दें; फिर बीज निकाल कर मुनक्का मिलाकर एक दिन कूटें और भरबेरी के बराबर गोली बना कर छाया में सुखालें।

मात्रा—२ गोली से ४ गोली तक। दिन में तीन बार जल के साथ दें।

गुण—मलेरिया ज्वर, एकतरा, तृतीयक आदि शीत-ज्वर को शीघ्र रोक देती है।

नोट—रोगी की अवस्था व बलाबल का विचार कर मात्रा घटा-बढ़ा सकते हैं। क्योंकि यह बटी दस्तावर है।

"श्री० वैद्य जी का जन्म सागर जिला अन्तर्गत खैराना ग्राम में सम्वत् १९५७ में हुआ था। आपने संस्कृत की प्रथमा, आयुर्वेद की विशारद एवं 'वैद्य-भूषण' परीक्षायें पास की हैं। आपने अनेकों धर्मार्थ चिकित्सालयों में प्रधान चिकित्सक रह कर अच्छा अनुभव प्राप्त किया है। आप उत्साही समाज सेवी भी हैं, अनेकों जैन संस्थाओं के मंत्री, सभापति आदि पद पर रहकर लगन के साथ कार्य किया है। "कल्याण-योगमाला" मासिक पत्र के सहायक सम्पादक भी रह चुके हैं। आपके यह प्रयोग सरल और उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

काव्यतीर्थ श्री० पं० वासुदेव जी जोशी आयुर्वेद-शास्त्री

जोशी आयुर्वेदिक औषधालय, चूरू (बीकानेर)

"श्री० जोशी जी ने मध्यमा, साहित्योपाध्याय, काव्यतीर्थ, विशारद एवं आयुर्वेद-शास्त्री परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं और अनेक पदक एवं प्रशंसापत्र प्राप्त किये हैं। संग्रहणी, विशूचिका एवं मोतीझला के विशेषज्ञ हैं। आपके निम्न प्रयोग चिरपरीक्षित हैं।" —सम्पादक।

आंखों का बढ़िया सुरमा—

शीशा*	५ तोला
वंशलोचन	२॥ तोला
कलमी शोरा	१। तोला
इलायची छोटी के दाने	७॥ माशे
कबाब चीनी	३॥। माशे
कालीमिर्च	१॥ रत्ती
सुरमा काला	१० तोले

विधि—प्रथम दश तोले की एक डली काले सुरमा की लेकर ४ महीना तक नीम की जड़ में गाड़ रक्खें, बाद को डली को निकाल लें और शेष औषधियां लोहे के खरल में लोहे की मूसली से कूट कपड़-छन कर एक लोहे की कड़ाई में डाल दें। उसमें ही सुरमे की डली भी डालकर लोहे के मूसले से ४० रोज तक घोटें, जिससे काजल के सामान बारीक हो जाय।

इस सुरमे को निरन्तर ४ महीने लगाते रहने से रोशनी बढ़ जाता है, चश्मा लगाना छूट जाता है। रोहे और धुन्ध के रोगों को भी ३ मास तक व्यवहार करना चाहिये।

विशूचिका के लिये—

कपूर	१८ माशे
अफ़ीम	६ माशे
हींग भुनी	११ माशे
लाल मिर्च	३ माशे
ईसबगोल	६ माशे

पिता का नाम
श्री० पं० दुलीचन्द जी जोषी वैद्य
आयु—३५ वर्ष जाति—जोषी

—लेखक—

*शीशा का अर्थ काच या शीशा धातु जिसे नाग भी कहते हैं लेना चाहिये। हमने सफेद काच ही लिया और रोहे व धुन्ध के लिये लाभकारी पाया। —सम्पादक।

दो अनुभूत प्रयोग

[लेखक—श्री० चन्द्रदत्त जी भारतीय, आगरा]

चमवम—

अरीठे की छाल	५ तोला
सड़ी सुपारी	५ तोला
सूखा खोपरा	५ तोला
तैल तिली का	३० तोला
पानी	१२० तोला

विधि—पहले सब दवाओं को कूट कर पानी के सिल पर पीसें। तत्पश्चात् तैल में मिलाकर मन्दी २ आंच से गरम करें पानी जलने के बाद दवाएं भी तैल में जलने दें जब दवाएं जल कर काली पड़ जायं, तैल छान लें और शीशी में भरलें।

उपयोग—इस तैल को व्रण, दाद, चकत्ते खुजली आदि किसी भी प्रकार के चर्म-रोग पर निःसंकोच लगावें। जादू की तरह काम करेगा। शतशः अनुभूत है।

नयन जीवन वटी—

सिन्दूर उत्तम	१ तोला
रसौत	१ तोला

(रसौत=रसाञ्जन) तीनों बराबर लें।

विधि—सबको पानी में घोट कर चने बराबर गोली बना सुखा कर रखलें। एक-एक गोली गुलाब के अर्क के साथ एक-एक घंटे बाद निगलवानी चाहिये। २-३ मात्रा के बाद ही उलटी, दस्त बन्द हो जाते है, रोगी को निद्रा आ जायगी। प्यास के लिये सौंफ का अर्क पिलाना चाहिये।

—विधि—सीप को खरल करके फिर रसौत को पानी में घोलकर शुद्ध करलें और सिंदूर, सीप और रसौन का पानी मिलाकर खूब मर्दन करें। जब टिकिया बनाने लायक होजाय १-१ माशे की टिकिया बनावें।

उपयोग—शुद्ध पत्थर पर पानी के साथ टिकिया घिस कर आंख में और आंख के ऊपर लगाने से आंखों की सुर्खी, आंखों का खटकना गुहांजनी, आदि समस्त नेत्र विकार ठीक होते हैं। सुख से नींद आ जाती है। परवाल बालों के बाद उखाड़ कर दवा लगाने से फिर बाल नहीं उगते। शतशः परीक्षित है।

(पृष्ठ १४१ का शेष)

नपुंसकत्व पर—

पलास वृक्ष की जड़ का रस निकाल कर दो-दो बूंद प्रातःसायं पान में देने से २१ दिन में सर्व-प्रकार की नपुंसकता नष्ट होती है।

रस निकालने की विधि—पलास झाड़ की एक इंच मोटी जड़ ज़मीन से खुली करलें। यानी मिट्टी हटादें और जड़ दीखने लगे। जड़ का वह भाग जहां झाड़ (वृक्ष) लगा है, उसमें एक कांच की साफ शीशी जिसका मुंह एक इंच हो लगा देना। शीशी के मुंह में वह जड़ करीब १॥ इंच फसी रहे। शीशी का मुंह व जड़ पर कपड़ मिट्टी कर मिट्टी से ढांक दें। २४ घण्टे बाद शीशी में उत्तम लाल रंग का रस निकल आवेगा। शीशी निकाल कर कार्क लगा कर रखें और व्यवहार में लें।

कविराज श्री० ओ३मप्रकाश जी वर्मा वैद्यवाचस्पति

प्रकाश औषधालय, फाजिलका [पंजाब]

पिता का नाम— लाला गौरीशंकर जी आर्य

आयु—३० वर्ष जाति—आर्य

प्रयोग-विषय—१-सुज़ाक २-श्वित्र-कुष्ठ ३-लाहौर सोर

"श्री० कविराज जी ने अंग्रेजी की 'एफ० ए०' हिन्दी की 'प्रभाकर' तथा आयुर्वेद की 'वैद्य-कविराज' एवं 'वैद्य वाचस्पति' का परीक्षायें पास की हैं। आप योग्य लेखक हैं तथा आपको एक उत्तम लेख पर अ भा आयु सम्मेलन से एक स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ है। आपके निम्न प्रयोग अनुभव पूर्ण हैं।" —सम्पादक।

सुज़ाक हर योग—

लोबान को पीस कर कपड़-छन करलें। इसमें असली चन्दन का तैल इतना मिलावें कि वह लेही सी बन जावे। अब इस को १ माशा से १॥ माशा तक की मात्रा में कैचट (कैपसूल) में बन्द करके कच्चे दूध के साथ प्रातः सायं प्रयोग करावें। यदि रोग का वेग अधिक हो तो दोपहर को भी एक मात्रा शर्बत

—लेखक—

बजूरी के साथ दे सकते हैं। ईश्वर कृपा से पेशाव की जलन तो पहले ही दिन मिट जावेगी और पीव का आना ३-४ दिन में बन्द हो जावेगा। कई २ रोगी तो एक दिन की ३ मात्राओं से ही रोग-मुक्त होते देखे गए हैं। औषधि प्रयोग के दिनों में रोगी को नमक खाना बन्द कर देना चाहिये।

नोट—औषधि को कैचट (कैपसूल) में बन्द कर देना आवश्यक है, अन्यथा रोगी को वमन आने का भय रहता है।

श्वित्र पर शतशोनुभूत

प्रायः आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वानों का कथन है कि फुलबहरी नया २ हो, थोड़ा स्थान घेरे हुए हो तथा एक ही अङ्ग पर हो तो सुखसाध्य है, यदि दो अङ्गों पर हो, अधिक काल से हो और अधिक ही स्थान घेरे हुए हो तो कष्ट-साध्य है। यदि सर्वांगीण हो तो असाध्य है। किन्तु अब तक यह देखा गया है कि यदि पथ्यसेवी रोगी हो और साथ ही दया-

प्लेग से बचने की गोलियां—

जहर मोहरा	कपूर देशी
गेरू	—तीनों ३-३ तोला
पपीता	१ तोला

—इनका सूक्ष्म चूर्ण करके निम्बु रस से मटर बराबर गोलियां बनावें। प्रति सप्ताह एक गोली खाने से प्लेग का भय नहीं रहता।

प्लेग की गोलियां—

यदि किसी को प्लेग हो जाय तो निम्न प्रयोग बहुशः अनुभूत है। प्रायः ८ गोलियों में ही एक रोगी को लाभ हो जाता है। इसका प्रयोग सरकारी औषधालयों में डाक्टरों द्वारा भी करके देखा गया है।

वच्छनाग	मन्दार (अर्क) पुष्प
पंचलवण	नौसादर	—चारों बराबर-बराबर

— इन सबको पलांडु के रस की भावना देकर ४ ७ रत्ती की वटी बनावें। २४ घंटे में एक २ करके ४ गोलियां देनी चाहिये। इस प्रकार रोगी प्रायः दो दिन में अच्छा हो जाता है।

इसके अतिरिक्त गिल्टी का रक्तमोक्षण करने से सदैव लाभ प्रतीत होता है। चाकू आदि किसी भी चीज से खरोंच लगाकर रक्त निकाला जा सकता है।

गिल्टी पर लेप—

बण्डाल (देवदाली)	धत्तूर
वच्छनाग	मकोय
अमलतास	वरुणा छाल

—इनको पीसकर गरम करके दिन में ४ बार लेप करें।

पूर्व प्रकाशित दो प्रयोग

ज्वर नाशक—

नीम की छाल	चिरायता	पटोलपत्र
हरड़	नागरमोथा	करंजपत्र
लाल चन्दन		कुटकी

—समभाग लेकर अठगुने जल में रात्रि को भिगो दें। प्रातः भवका से अर्क निकाल लें। इसमें से २-२ तोला तीन-तीन घण्टे के बाद दें। २-३ दिन में बुखार ठीक हो जाता है।

—धन्वन्तरि भाग १६ अङ्क ११ पृष्ठ ६७०।

प्रसूत ज्वर पर—

देवदारु	वचमीठा	कूठमीठा
पीपल	सोंठ	कायफल
नागरमोथा	चिरायता	कुटकी
धनिया	हरड़	गजपीपल
धमासा	गोखुरू	जवासा
कटेरी की जड़	अतीस	गिलोय
स्याह जीरा		काकड़ा सिंगी

—प्रत्येक ४-४ तोला।

—यवकुट कर मिट्टी के पात्र में १६ सेर पानी में क्वाथ बना लें। इस क्वाथ में एक सेर मिश्री और एक सेर मधुक पुष्प का क्वाथ मिला कर दूसरे मिट्टी के पात्र में मुंह बन्द कर एक मास रखा रहने दें। १५ दिन बाद इस अर्क का बलाबल देख कर १ से २ तोला तक भोजन के बाद देने से प्रसूत ज्वर और तत्कालीन उपद्रव जैसे खांसी, श्वास, मूर्च्छा, कम्प, शिर दर्द, अतिसार आदि ठीक हो जाते हैं।

—धन्वन्तरि भाग १६ अङ्क ११ पृष्ठ ६८८।

वैद्यराज

प्रो० ब्रह्मदत्त जी आयु०

आयुर्वेदालंकार, रावलपिंडी।

— * —

"श्री० वैद्य जी का जन्म सन् १६१६ में हुआ था। प्रारम्भिक विद्यार्थी जीवन से ही आपने अपनी प्रतिभा प्रकट की और हर परीक्षा में प्रथम रहे हैं। आपने आयुर्वेदालंकार एवं आयुर्वेदाचार्य परीक्षाऐं ससम्मान उत्तीर्ण की हैं। आप गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में प्रोफेसर भी रह चुके हैं। आपकी लिखी 'तुलसी' पुस्तक पर गीता मंदिर आगरा से २०१) का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आपने कई एक पुस्तकें लिखी तथा संस्कृत पुस्तकों की टीका की है। आप गंभीर विचारक, सरस साहित्यिक, प्रतिभाशाली लेखक तथा प्रभावशाली वक्ता हैं। आप जैसे योग्य नवयुवकों से आयुर्वेद-समाज को बहुत कुछ आशायें हैं। आपके निम्न तीन प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं। —सम्पादक।

बादी की बवासीर पर—

काई	२ पाव
आलू	१ पाव
छोटी इलायची	१ तोला
मुर्दासंग	४ तोला

—काई को निचोड़ कर बारीक कूट लें। आलू का छिलका उतार कर फेंकदें। आलू के गूदे को काई के साथ खूब कूटें। फिर इलायची और मुर्दासंग को भी अच्छी तरह से इनमें मिलायें। यह सब गुंदे आटे की तरह बन जायगा। इसे कलई वाले बरतन में रखदें और रुपये के बराबर की टिकियां बनालें। कागज़ के एक टुकड़े

पर घी लगा कर उस पर एक टिकली इस दवाई की रख तवे पर इस कागज को ज़रा गरम करलें और बादी बवासीर के मस्से पर रख ऊपर से रुई रख कर पट्टी बांध दें। शौचादि के समय इस पट्टी को खोल कर और पिछली के बजाय नई टिकली रख कर बांध दें। ३ दिन में आराम हो जावगा।

गुण–यह प्रयोग बादी की बवासीर के फूले हुए तथा दर्द करने वाले मस्से के लिये बहुशः परीक्षित है और शत-प्रतिशत लाभ करता है।

पारद गुटिका–

—पाव भर नीलेथोथे को महीन पीस कर किसी लोहे की कड़ाही में डालदें और १ छटाक पारा नीलेथोथे के चूर्ण में गढ़ा सा बनाकर तथा ऊपर से भी थोथे का चूर्ण डालकर ढक दें। अब इस ढेरी के ऊपर मिट्टी का इतना बड़ा प्याला औंधा मुंह रखें, जिससे नीलेथोथे का चूर्ण पूरी तरह से ढंक जाय। कड़ाही के भीतरी धरातल के साथ इस प्याले के मुख का गोल किनारा जहां मिल रहा हो, वहां चारों ओर गोलाई में कपड़-मिट्टी से सन्धि बन्द करदें। अब इस प्याले के इर्द-गिर्द इतना पानी डालें कि ४ इंच ऊंचा होजावे। कड़ाही को आग पर रख कर गरम करें, जब पानी सूखकर तिहाई रह जावे तब कड़ाही को उतार कर प्याला उठालें। इस ढेरी में बार-बार ठण्डा पानी डालकर हाथ से हिलाकर पानी फेंकते जावें, ताकि तमाम नीलाथोथा पानी के साथ बाहर निकल जावेगा। बाकी गाढ़ा पारद रह जायगा। उसकी आधी रत्ती भर की गोलियां बना कर हवा में रखदें। २४ घंटे के बाद ये गोलियां सूख जावेंगी। अब इन्हें सुरक्षित शीशी में रखलें।

नैर्बल्य के लिये यह पारद गुटिका अत्युपयोगी है, विशेषतः वाजीकरण के लिये।

एक गोली प्रतिदिन मक्खन और खांड के साथ प्रातः प्रयोग करें।

नोट–१ प्रयोग काल में क्षारात्मक पारद अपथ्यों का ध्यान अवश्य रखें।

२. प्रस्तुत पारे के अठारहों संस्कार तथा मूर्च्छन यथा विधि पहले कर लेने चाहिये।

३. प्रकृति, वय, बल, काल देश आदि का विचार करके मात्रा में परिवर्तन किया जा सकता है।

पामाहर तैल—

क—शीशम की छाल	काहू की छाल
चीड़ की छाल	ऊंट की मेंगनी

—चारों ३-३ सेर

ख—कलमी शोरा		३ तोले
अफीम	गाल	संखिया
दालचिकना	माल कंगनी	अकरकरा
सफेदा	रतनजोत	पिप्पली
सफेद मिर्च	—प्रत्येक १-१ तोला।	

—इनमें 'क' भाग के द्रव्यों के दो हिस्से करके एक हिस्से को नीचे रखे, उस पर 'ख' भाग के द्रव्यों का मिश्रण रखें और फिर उस पर 'क' भाग के द्रव्यों का दूसरा हिस्सा रखदें। पातालयन्त्र के द्वारा तैल निकालें, इस तैल को दो शीशियों में अलग-अलग रखलें।

(शेष पृष्ठ १५३ पर)

राजवैद्य पं० सुरेन्द्रनाथ जी दीक्षित आयुर्वेद-विशारद,

बाराबंकी।

पिता का नाम— पं० श्रीनिवास जी दीक्षित वैद्य-शास्त्री

आयु—३४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री दीक्षित जी के कुटुम्ब में वैद्यक-कार्य बहुत समय से होता चला आया है। आपके स्वर्गीय पिताजी भी योग्य चिकित्सक तथा कई रियासतों के राजवैद्य थे। आप बाल्य-काल से ही उत्साही सार्वजनिक कार्यकर्त्ता रहे हैं। अनेकों सभा-समिति एवं संस्थाओं के मंत्री, सभापति, संयोजक आदि रह कर आपने उनको सफल बनाया है। अ० भा० आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रचारक संघ के आप प्रारम्भ से ही प्रधान-मंत्री हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं। —सम्पादक।

सिद्ध श्वासघ्न तैल—

गंगा जी की बालू		२० तोला
कलमी शोरा		२० तोला
शु० संखिया	जावित्री	२-२ तोला
लवंग	तज	शीतलचीनी
पठानी लोध		जायफल
केशर	छोटी इलायची के बीज	

—प्रत्येक १-१ तोला।

निर्माण-विधि—सबको कूट कर आतशी शीशी (कपड़-मिट्टी की हुई) में भर दें। पाताल यन्त्र-विधि से तैल निकाल लें। इसमें तैल बहुत कम निकलता है, अतएव सावधानी से निकाल कर शीशी में रखलें।

सेवन-विधि—इस तैल की शीशी में १ सींक डुबोकर लगे हुए बंगला पान पर लगा दें। इस पान को प्रातः सायंकाल खायें। यदि गर्मी अधिक मालूम हो तो मक्खन व मिश्री मिलाकर उसमें सींक से तैल लगा कर मिलाकर सेवन करे।

गुण—यह सर्व प्रकार की श्वास के लिये उपयोगी दवा है।
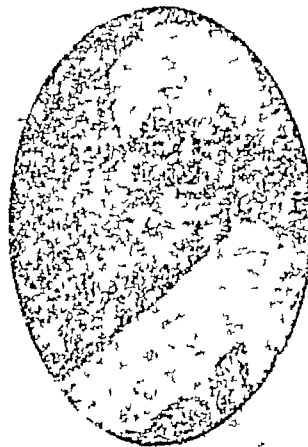
बालकल्याण वटी—

केशर असली		जायफल
जावित्री	लौंग	अजवाइन
वंसलोचन		अतीस मीठी

—सातों १-१ माशे

छुहारा (बीज-रहित) १ तोला

निर्माण-विधि—सबको कूट कर सिल पर पानी के साथ अच्छी प्रकार पीसलें और एक गोला

बनाले। इस गोले पर कपड़-मिट्टी कर २ सेर कण्डों की अग्नि में रख दें। ध्यान रहे कि दवा न जलने पाये। शीतल होने पर मिट्टी हटाकर दवा निकाल लें। इसमें ४ रत्ती अफ़ीम थोड़े पानी में घोल कर मिला दें। खरल में भली-भांति घोट कर मूंग बराबर गोली बना सुखा लें।

गुण—प्रातः सायंकाल १-१ गोली माता के दूध में घोलकर देने से खांसी, बुखार, सर्दी, पसली चलना, कय-दस्त, दूध पलटना, हरे-पीले दस्त आदि ठीक होते हैं। शरद-ऋतु में आधी आधी गोली देते रहने से बच्चे हृष्ट-पुष्ट होते हैं।

पाचक चूर्ण—

कागजी नीबू का रस १ सेर में अमलतास का गूदा आध सेर किसी स्वच्छ कांच पात्र में भिगो दें। ३ दिन भिगोने के बाद मसल कर छान लें। इसमें मीठे अनार का रस १ पाव तथा निम्न-लिखित दवाओं को कूट कपड़-छन कर मिलादें।

तज सोंठ पीपल
काली मिरच छोटी इलायची
—पांचों २-२ तोला।

जीरा सफेद भुना कालादाना भुना
काला नमक सेंधा नमक मुनक्का
प्रत्येक ५-५ तोला।

हींग भुनी १ तोला

गुण—यह चूर्ण मन्दाग्नि एवं आलस्य को दूर करता है। पाचक एवं रुचि-कारक है। चढ़े ज्वर में भी दिया जा सकता है। इससे १—२ साफ दस्त होकर कब्ज़ दूर होता है। पाचक व स्वादिष्ट है। मात्रा—३ माशे से १ तोले तक।

बालसुधा वटी

लेखक—स्वर्गीय पं० महावीरप्रसाद जी मालवीय "वीर"

अहिफेन	६ माशा
सुहागे का लावा	६ माशा
घी में भुनी हुई हींग	६ माशा
इलायची छोटी का दाना	१ तोला
कत्था सफेद	१ तोला
सोंठ	२ तोला

विधि—प्रथम इलायची, खैर (कत्था) और सोंठ का कपड़छन चूर्ण बना कर शेष द्रव्यों को खरल में पानी के साथ पीस लें। खूब घुट जाने पर चूर्ण डाल कर खरल कर उड़द के बराबर गोली बनालें।

मात्रा—आधी से एक गोली; अनुपान—मधु या माता के दूध के साथ दिन में दो या तीन बार दें।

गुण—बालकों का आंव, पेचिस, हरे पीले पतले दस्त आना, वमन, खांसी और ज्वरादि रोग शीघ्र आराम होते हैं। परीक्षित है।

परीक्षक—श्री० रामनारायण गुप्ता वैद्य, बूडादाना (इटावा)

कविराज

पं. सूर्यनाथ जी पाण्डेय

आयुर्वेदाचार्य

४ बी. मछुआ बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता।
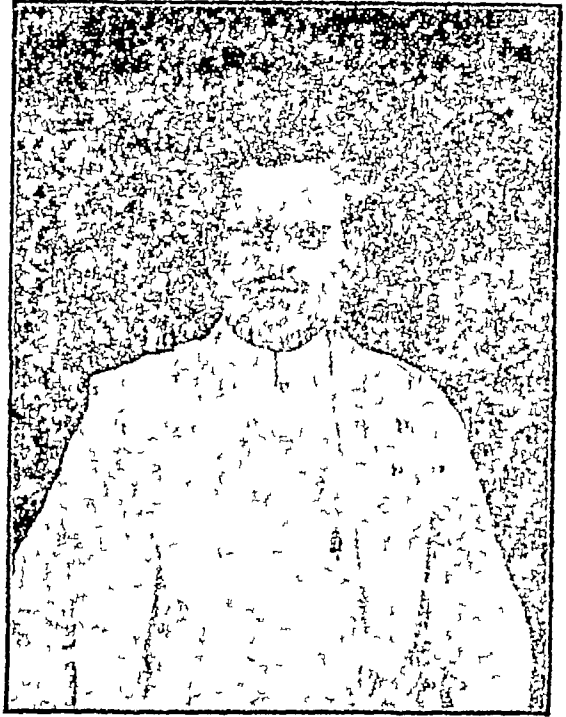
पिता का नाम— पं० गदाधर जी पाण्डेय

आयु—३४ साल जाति—सरयू पारीण ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-शून्य बहरी २-रक्तार्श

"श्री. पाण्डेय जी ने श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय कलकत्ता से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की है। आपके पिता भी प्रतिभासम्पन्न वैद्य थे। आप बंगाल फैकल्टी द्वारा रजिस्टर्ड वैद्य हैं और योग्य चिकित्सक तथा 'आमवात' के विशेषज्ञ हैं।" —सम्पादक।

—लेखक—

शून्य बहरी—

निम्ब तैल	१०० तोला
सरसों का तैल	६० तोला
वर्रे तैल	६० तोला
कुचला की छाल	६० तोला

—पहले कुचला की छाल को अच्छी तरह कूटलें, फिर १५ सेर पानी में उपर्युक्त तैल और छाल का चूर्ण सब लोहे की कढ़ाई में डाल मंद मंद उपलों की आंच से पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर उतार-छान कर रखलें। इसके लगाने से पुराना या नवीन किसी भी प्रकार का शून्य-बहरी शीघ्र नष्ट होता है। अनुभूत है।

रक्तार्श की दवा—

लजवंती	कमल
लोध	मोचरस
लाल चन्दन	फिटकरी भुनी हुई

—इन सबके चूर्ण को ३ माशे गाय के दूध के साथ प्रातः सायंकाल फकावें। भीषण रक्तस्राव ७ दिन में बंद होता है।

(पृष्ठ १५० का शेष)

पामा के रोगी को—

आभ्यन्तर प्रयोगार्थ पहली शीशी में से १ बूंद तैल प्रतिदिन प्रातः मक्खन के साथ दें। दूसरी शीशी में के तैल का स्थानीय प्रयोग करें, परन्तु पहले इस स्थान को फिटकरी के पानी या नीम के पानी से धोलें। पुराने पामा-रोग के लिये भी अक्सीर है।

कवि० श्रीराम गोविल भिषग्रत्न L.A.M.S. & M.A.S.F.

मन्त्री—वैद्य-सभा, बुलन्दशहर

—लेखक—

पिता का नाम— बा० किशोरीलाल गोयल मुख्तार

आयु—३३ वर्ष जाति—अग्रवाल

प्रयोग-विषय— १—कास २—उपदंश

"श्री० गोविल जी ने अष्टांग आयुर्वेद कालेज कलकत्ता से आयुर्वेद परीक्षा पास की है। आप उत्साही कार्य-कर्त्ता एवं योग्य चिकित्सक हैं। निम्न दो प्रयोगों में से 'कफान्तक' प्रयोग वास्तव में उत्तम प्रयोग है। सरल भी है। पाठक निर्माण कर व्यवहार में लावें।

—सम्पादक।

कफान्तक—

नवीन स्वच्छ गेहूँ को आक दुग्ध में किसी शीशे के बर्तन में खूब डुबोकर रख देना चाहिये। २ दिन के बाद जब गेहूँ दूध पीकर फूल जावें, तब उन्हें मिट्टी के सकोरे में रखें और उस सकोरे को दूसरे सकोरे से ढंक दो। बाद में उन पर गेहूँ के आटे का लेप कर दो। जब लेप कुछ २ सूख जावे तब उसे उपलों की मन्द २ आग में फूंक लो। आग इतनी लगनी चाहिये कि गेहूँ भुन जावें, मगर जल कर राख न हों। स्वांग शीतल होने के बाद गेहूँ को पीसकर रख लेना चाहिये।

जिस रोगी के कफ अधिक जाता हो उसे २-२ रत्ती की मात्रा में दिन में ३ बार मधु के साथ चटाने को देना चाहिये। इस प्रकार बराबर ३ दिन देने से कफ जाना अवश्य बन्द होगा।

जिस रोगी के कफ कठिनाई से निकलता हो और खांसी शुष्क हो तो उस रोगी का मधु के स्थान पर मलाई मिलाकर उपरोक्त विधान से दो। कफ पतला होकर निकलेगा और ३ दिन में ही रोगी ठीक हो जायेगा।

उपरोक्त प्रयोग एक सन्यासी का बतलाया हुआ है और अच्छा लाभ करता है किन्तु धर्मार्थ ही देना चाहिये। पैसा लेने पर सम्भव है लाभ न कर सके। कितना ही पुरातन रोग क्यों न हो। आराम अवश्य होगा।

उपदंश हर योग—

रस कपूर दालचिकना हिंगुल
संखिया श्वेत —चारों ३-३ माशे

—इन सबको ७२ घंटे तक बराबर आक दुग्ध में मर्दन करने के बाद डमरूयन्त्र विधि से जौहर उड़ालो।

मात्रा—चावल बराबर (आटे की गोली में) हर तीसरे दिन।

पथ्य—चने की रोटी, घी काफी हो। उड़द की दाल इनके अतिरिक्त कुछ नहीं। इस प्रकार ८ मात्राएं प्रयोग करानी चाहिये।

गुण—इन्द्री चाहे कितनी ही गल चुकी हो किन्तु लाभ अवश्य होगा। अनेक बार प्रयोग कर चुका हूँ।

राजवैद्य पं० नागरदत्त जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य

प्रधान-कविराज डाबर लिमिटेड, वैद्यनाथ देवघर (S. P.)

स्तम्भन वटी—

मल्ल सिन्दूर	४ तोला
भीमसेनी कपूर	४ तोला
अभ्रक भस्म	४ तोला
जायफल	६ माशा
जावित्री लवङ्ग	६-६ माशा
कस्तूरी	१ तोला
कुचला सत्व अफीम	२-२ तोला

निर्माण विधि—गुलाब जल तथा पान के रस से मर्दन कर २-२ रत्ती की गोली बनाना।

अनुपान—सोते समय पान में रखकर खाना, ऊपर से दूध, मलाई, मक्खन खाना।

नोट—इस योग से श्वास, कास, धात-व्याधि और दुर्बलता में भी आश्चर्यकारक लाभ होता है।

पिता का नाम-स्वर्गीय पं० गंगादयालु जी जोशी
आयु—३७ वर्ष जाति—ब्राह्मण
प्रयोग-विषय—१-स्तम्भक २-मलेरिया

"श्री० राजवैद्य जी अनुभवी व योग्य विद्वान हैं, साथ ही आप सिद्ध-हस्त औषधि निर्माता एवं सफल-चिकित्सक हैं। श्री० विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाडी अस्पताल की रसायनशाला में प्रधान कविराज रह चुके हैं, तथा जीवन विज्ञान, मासिक पत्र के भू. पू. सम्पादक हैं। आपके निम्न २ प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं। पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।
—सम्पादक।"

लेखक
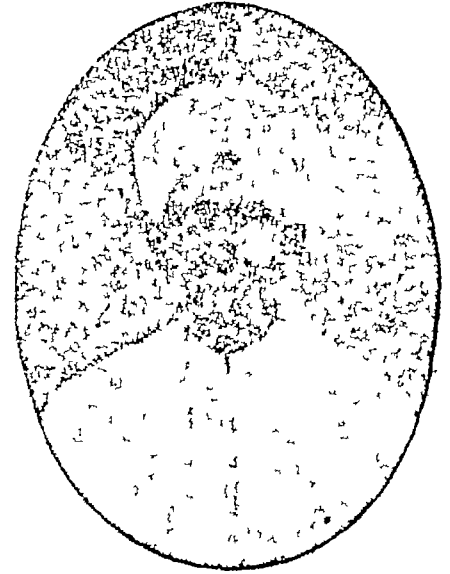
मलेरिया नाशक—

कालमेघ (महा भांग) स्वरस	६० तोला
मधु	६० तोला
पिप्पली चूर्ण	२॥ तोला
मरिच चूर्ण	२॥ तोला

निर्माण-विधि—महा भांग का रस निकाल कर छान कर अन्य चीजें मिलाकर प्रयोग करना चाहिये प्रतिदिन दवा की २ खुराक लें।

मात्रा—१ औंस समान भाग जल के साथ।

गुण—नवीन तथा पुरातन दोनों तरह के मलेरिया के लिये रामबाण है।

नोट—इसको हमने हजारों रोगियों पर अनुभव करके देखा है।
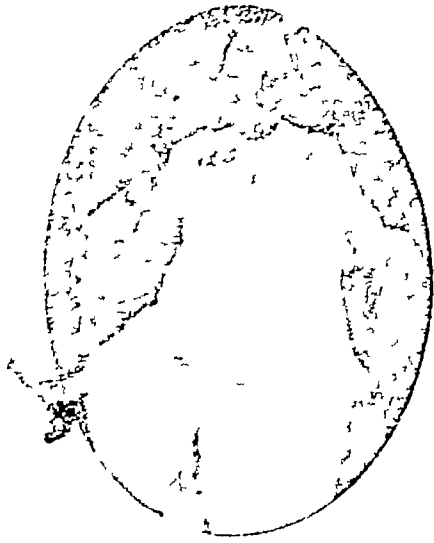
वैद्यवर श्री कुंवर मन्नीसिंह जी सेंगर

बरौली पो. सहार (इटावा)।

पिता का नाम— कुंवर फतेहसिंह जी सेंगर

आयु—५५ वर्ष जाति—सेंगर-क्षत्रिय

प्रयोग-विषय— १-उपदंश २-रेचक

"श्री सेंगर जी ने वैद्यक-ज्ञान कुल-परम्परानुगत घर पर ही प्राप्त किया है। आप अनुभवी चिकित्सक हैं। आप सेवाभाव परायण, सरल स्वभाव, स्वाध्याय-निरत एवं शान्तिप्रिय पुरुष हैं। आपका निम्न प्रयोग "भल्लातक वटी" अनुभूत एवं अव्यर्थ है। पाठक व्यवहार में ला लाभ उठायें।" —सम्पादक।

भल्लातक वटी—

शुद्ध पारा	शुद्ध भिलावा
अकरकरा	असगन्ध
वायविडंग	अजवाइन खुरासानी
अजवाइन देशी	मूसली स्याह
अजमोद	—प्रत्येक १-१ तोला।
गुड़ पुराना	१० तोला

निर्माण-विधि—उक्त औषधियों के कपड़ छन चूर्ण में से प्रत्येक एक-एक तोला, पारा (भांगरे के स्वरस में मूर्च्छित किया हुआ) १ तोला एवं गुड़ आधा पाव सबको इमामदस्ते में ३२ पहर खूब कुटाई करें। झड़बेरी के बड़े बेर प्रमाण गोलियां बना लेवें। गुड़ सूखा हो तो जल के छींटे लगाकर कूटलें।

सेवनविधि—मलाई या दूध की साढ़ी में लपेट कर नित्य प्रातः निहार मुख से १ गोली निगल ली जावे। गोली पीसकर और मलाई में लपेट कर भी निगली जा सकती है। यथासम्भव गोली को दांतों से लगने से बचाया जावे।

सेवन अवधि—अधिक से अधिक २१ दिन।

अपथ्य—सेवन-काल पर्यन्त दूध का परहेज़ रखें। खटाई, तैल, मिर्च और मिठाई साधारणतः वर्जित हैं ही।

सावधानी—(१) उपदंश (आतशक) के विषाक्त प्रभाव से शरीर के निर्दोष होजाने पर इस औषधि के प्रभाव से प्रायः मुंह आजाता है। मसूड़े फूल जाते हैं और लार गिरती है, यह रोगी के निर्दोष स्वास्थ्य और रोग मुक्त होने के स्पष्ट लक्षण हैं। मुंह आजाने पर झड़बेरी की छाल, नीम की पत्ती, बिनौला और हल्दी का यथावश्यक क्वाथ बनाकर दोनों समय मुख-शुद्धि करनी चाहिये।

(२)—भल्लातक वटी सेवन कराने से प्रथम निम्नोक्त

(शेष पृष्ठ १५९ पर)

वैद्य-भूषण पं. बिहारीलाल जी मिश्रा आयु० विशारद

मिश्रा आयुर्वेद दवाखाना, महाल, नागपुर ।

पिता का नाम— श्री० पं० केदारनाथ जी शर्मा
आयु—२८ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० मिश्रा जी ने श्री० प्राणाचार्य पं० गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया है और अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री गुलराज जी शर्मा के पास रहकर चिकित्सा एवं निर्माण विषयक सक्रिय ज्ञान भी प्राप्त किया है। नि. भा. आयुर्वेद विद्यापीठ की 'आयुर्वेद-भिषक' एवं आयुर्वेद विशारद परीक्षाएँ दी हैं। कुछ समय श्री धन्वन्तरि आयुर्वेद महाविद्यालय के धर्मार्थ औषधालय में चिकित्सा कार्य करने के बाद ६ वर्ष से स्वतन्त्र कार्य कर रहे हैं।" —सम्पादक।

लेखक

नासूर (भगन्दर) पर—

तबकी हरताल	१ तोला
श्वेतमल्ल (सोमल अर्थात् संखिया)	१ तोला
रस कपूर	१ तोला

—तीनों को खरल में डालकर एक जीव करके एक कपड़े में पोटली बांध कर ५ तोला फिटकरी का चूर्ण एक सराव (सकोरे) में बिछाकर पोटली रखकर और उसके ऊपर ५ तोला फिटकरी चूर्ण और डालकर पोटली को भलीभांति बन्द कर देना। कोयलों की तीव्र अग्नि में दो घण्टे पकाना स्वांग शीतल होने पर फिटकरी हटाकर पोटली को धीरे से निकाल, खरल में खूब मज़बूत हाथों से ८ घण्टे मर्दन कर शीशी में भर कर रख लें।

आधी रत्ती से एक रत्ती तक की इसकी मात्रा है। इसके उपरान्त बलाबल देखकर मात्रा का निर्माण करें। शहद के साथ इस दवा का सेवन कराया जावे।

पथ्य में—केवल गेहूँ की रोटी, दलिया, घी, शक्कर दूध। केवल चने की रोटी खाई जावे तो बहुत शीघ्र सफलता मिलती है। यह दवा नासूर (भगन्दर) गर्मी, परमा, कुष्ठ, विशेषतः गलित कुष्ठ और कॅन्सर में विशेष फलदायी है।

श्वासहर—

तूतिया (नीलाथोथा)	१ तोला
तबकी हरताल	१ तोला
मुर्दासंग	१ तोला

[शेष पृष्ठ १५६ पर]

साहित्याचार्य

पं० महावीरप्रसाद जी जोशी वैद्य आयु०

प्रधान-चिकित्सक—मोहता दातव्य औषधालय, सादुलपुर।

पिता का नाम—श्री० पं० ब्रजमोहन जी वैद्यराज

आयु—३४ वर्ष जाति—जोशी

"श्री० जोशी जी विद्वान लेखक, अनुभवी चिकित्सक तथा रस सिद्ध कवि हैं। आपके उत्तमोत्तम निबन्ध 'धन्वन्तरि'में प्रकाशित होते रहते हैं। आपने कई-एक पुस्तकें भी लिखी हैं। आठ वर्ष से मोहता दातव्य औषधालय में सफलता पूर्वक प्रधान-चिकित्सक के पद पर कार्य कर रहे हैं। आप साहित्य, आयुर्वेद, काव्य विषय के अच्छे विद्वान हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं। पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।

लेखक
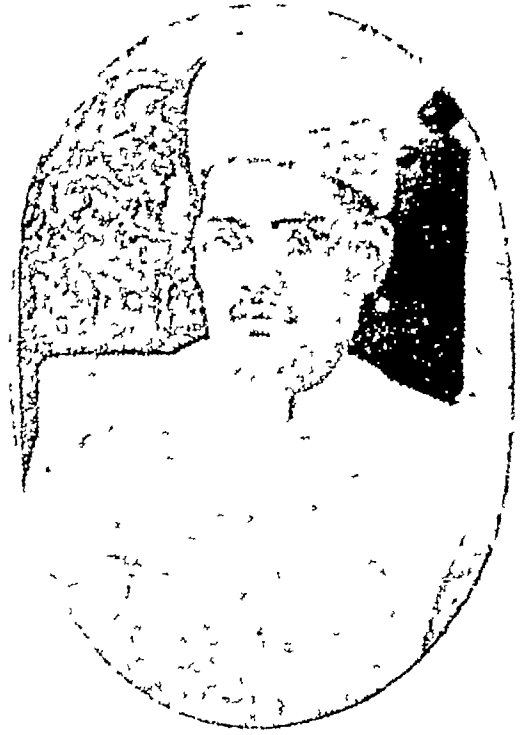
गोक्षुराद्यासव—

शीतलचीनी का तैल	१ ड्राम
चन्दन का तैल	आधा औंस
विरोजे का तैल	१ ड्राम
गोखरू का पानी	पोदीने का रस
धनिये का पानी	अर्क चन्दन
उत्तम सुरा	—प्रत्येक ५-५ तोला।

—गोखरू २ तोला को एक पाव पानी में भिगोदें और उबाल कर १ छटांक उतार लें। ठंडा होने पर मथ कर छानलें, यह पानी ५ तोला लेना चाहिये। इस तरह ही धनियां दो तोला को भिगोकर पानी बनालें। पोदीने का रस हरे पोदीना को कूट कर निकाल लेना चाहिये। चन्दन का अर्क भबके से खिचा हुआ हो या गोखरू के पानी की तरह क्वाथ कर बनालें। चन्दन का तैल बढ़िया मैसूर वाला लें। सब चीजों को निर्दिष्ट मात्रा में मिलाकर १ शीशी में डाल मजबूत डाट लगाकर एक सप्ताह छोड़ दें, बाद में काम लें।

मात्रा-१ ड्राम, १ तोला ठंडे पानी में मिलाकर दिन में तीन-चार बार पिलावें।

गुण-यह आसव भूशोष्णवात (गनोरिया, सुजाक) के लिये रामबाण औषधि है और हमारा विशेष अनुभूत प्रयोग है। नये या पुराने सभी तरह के सुजाकों में पूरा लाभ करता है। पीब, जलन और दर्द तीनों में एक साथ ही गज़ब का काम करता है। जिन बीमारों को एम.बी. ६९३, या लियाजोल आदि से कुछ भी लाभ नहीं

हुआ था, और महीनों से दर्द एवं पीब से बेचैन थे, इस औषध के अल्प कालिक सेवन से ही आश्चर्य-जनक लाभ हुआ है।

विश्व मोहन रस——

शुद्ध कुचला	२ तोला
मिरच	आधा तोला
सोहागा	आधा तोला
स्वर्णबंग	१ तोला
सौंठ	आधा तोला
पीपल	आधा तोला
लोह भस्म	१ तोला
कज्जली	१ तोला

—काष्ठौषधियों को कूट कपड़-छान कर भस्मादिक मिला, ग्वारपाठे के रस में ३ दिन घोटकर १-१ रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा एक या दो गोली प्रतिदिन भोजनोत्तर दोनों समय दूध या जल से दें।

गुण—यह नव-जीवन देने वाला बहुत ही उपकारक योग है। साधारणतया तो यह किसी भी रोग में लाभदायक है किन्तु विशेषतः पाचन-विकृति जन्य सभी रोगों में पूर्णलाभ देने वाला है। उपरान्त दौर्बल्य में तो आश्चर्य-जनक काम करता है। कुछ दिनों में ही शरीर में रक्त का संचार होता मालूम देता है। यकृत आदि की क्रिया को ठीक कर देता है। रक्ताल्पता, प्रमेह तथा श्वेत प्रदर के निवारण के लिये इससे विश्वस्त रूप से काम लिया जा सकता है। बल, वीर्य एव रतिशक्ति की वृद्धि भी निःसन्देह करता है।

[पृष्ठ १२६ का शेष]

मुंजिस से कोष्ठ शुद्धि कर लेनी चाहिये। मुंजिस को देकर भल्लातक वटी का अत्यन्त आशु फल दृष्टि-गोचर हुआ है।

उदर शोधन मुंजिस—

हरड़ बड़ी का बक्कल सनाय ५-५ तोला
शक्कर १० तोला
उसबा फूलगुलाब गुलाफा
झाऊ के पत्ते शाहतरा रेवन्द चीनी
शीर खिस्त चिरायता बिसफायज
मुनक्का सौंफ लालचन्दन
सरफौंका —प्रत्येक १-१ तोला।

निर्माण-विधि-शीर खिस्त और शक्कर के अतिरिक्त शेष चौदह औषधियों का कपड़-छन चूर्ण कर लेवें। उपरान्त शीरखिस्त (असली) और शक्कर मिलाकर खरल करें।

सेवन-विधि-एक-एक तोला औषधि ताजे जल से प्रातः सायं दोनों समय ११ दिन सेवन करनी चाहिये, तदनन्तर भल्लातक वटी का सेवन कराना शीघ्र फलप्रद रहेगा।

[पृष्ठ १५७ का शेष]

—इन तीनों को घी-कुंवार (ग्वारपाठे) के रस में घोट कर छोटी २ टिकिया बनाकर सुखालें और दो सकोरों में बन्दकर कपड़-मिट्टी करके गजपुट में फूंक दे, स्वांग शीतल होने पर निकालकर खूब महीन पीसकर रखले। शहद के साथ दिन में दो बार १-१ रत्ती चटावे। दूसरी खुराक में आशातीत लाभ प्रतीत होगा। हां, ध्यान रहे पित्त-श्वास में न दें। निमोनियां आदि में विशेष हितकर है।

श्री. डा. सुधाकर त्रिवेदी 'द्विजराज' M.B.H.

असरापुर, जयपुर।

—०—

पिता का नाम— श्री० पं० कालूराम जी त्रिवेदी

आयु—३५ वर्ष जाति—गौड़ ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१—पामा-छाजन २—बालापस्मार (कमेड़ आना)

"श्री० द्विजराज जी ने स्थानीय कविराज पं० बसन्तकुमार जी शास्त्री से आयुर्वेद ज्ञान प्राप्त किया है। आप एक योग्य लेखक एवं सच्चे समाज-सेवक हैं। समाज-सुधार विषयक आपके लेख विभिन्न पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। आपने कई-एक पुस्तकें भी लिखी हैं। निम्न प्रयोग साधारण किन्तु उपयोगी है, पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

लेखक

कण्डू कालिका—

सत बिरोजा गन्धक

नवसादर फिटकरी सफेद का लावा

—चारों समानभाग लेकर कूट कपड़-छन करलें। नवनीत या मक्खन में अच्छी तरह मिलाकर मलहम बनालें।

गुण—इसे पामा तथा उक्रवत Eczema पर लगाने से अवश्य लाभ होता है। दिन में २ बार लगावें।

फड़का (कमेड़ आना)

गधी के दूध में एक रुई का फाया भिगो कर सुखावें। इस प्रकार सात बार भिगो २ कर सुखालें और जिस बालक को फड़का (Convultion) हो उस समय उपर्युक्त फाये को जला कर सुंघावें। लाभ प्रतीत होगा।

नोट—मारवाड़ में इस रोग को 'कमेड़ आना' कहते हैं। यह प्रयोग एक महात्मा का बताया हुआ और परीक्षित है।

[पृष्ठ १६० का शेष]

में सुखालें। आकर की सूखी पत्ती ३ तोला छोटी पीपल ३ तोला, काली मिरच १॥ तोला, काला नमक ३ तोला तथा घी में भुनी सनाय पत्ती १॥ तोला।

—इनको कूट-पीस कर कपड़छन चूर्ण बनालें। ग्वारपाठे के रस की एक भावना देकर अच्छी तरह मर्दन कर चने बराबर गोली बनालें।

गुण—गरम जल, शहद, शर्बत-बनप्सा अथवा अन्य योग्यानुपान से देने से यह गोलियां हर प्रकार की खांसी को दूर करती है।

वैद्यालंकार पं० श्यामनारायण जी शुक्ल आयुर्वेद-विशारद

मसूरिका शल्य चिकित्सक, डि० कौ० आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी
मकर-धोकड़ा (नागपुर)

पिता का नाम—वैद्य भूषण पं० कन्हैयाप्रसाद जी शुक्ल शास्त्री,

आयु—३४ वर्ष जाति—कान्यकुब्ज ब्राह्मण

विषय— १-वमन २-मधुमेह ३-अर्श

"श्री शुक्ल जी ने श्री. अष्टाग आयुर्वेद महा-विद्यालय शिवनी तथा नागपुर के श्रद्धेय पं० गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी से आयुर्वेद-ज्ञान प्राप्त किया है। नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षाऐं भी पास की हैं। अब सरकारी आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी मकरधोकडा में चिकित्सक पद पर सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। आप सफल चिकित्सक हैं तथा आपके निम्न प्रयोग उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

लेखक

वमन नाशक—

शुद्ध गंधक २ तोला
पलाश बीज १ तोला

—प्रथम पलाश (ढाक) के बीजों को कूट कर कपड़े में छान लें। गंधक को आग पर पिघला कर बीजों का चूर्ण उसी में मिलावें और १-१ रत्ती की गोली बनाले।

सेवन-विधि—१-१ घंटे के अन्तर से १-१ गोली शहद या चावल के धोवन के साथ देने से तीव्र वमन होना शान्त होता है।

मधुमेह व बहुमूत्र नाशक—

गौमूत्र २ सेर
त्रिफला चूर्ण ५ तोला
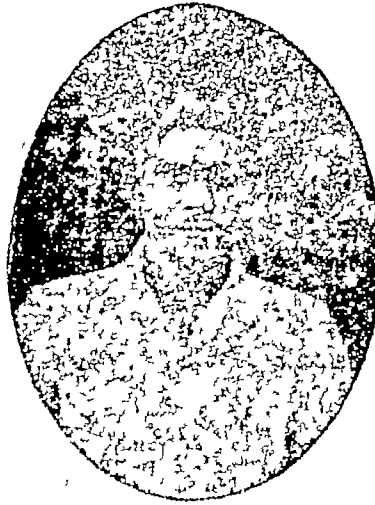
निर्माण—गोमूत्र में त्रिफला चूर्ण डालकर अग्नि पर पकावे। जब गोली बनाने योग्य गाढ़ा होजाय, उतार कर २-२ रत्ती की गोली बनालें। जल के साथ देने से मधुमेह व बहुमूत्र रोग शीघ्र शान्त होता है।

बवासीर नाशक—

—सेहुड़ के दूध में थोड़ी हल्दी मिलाकर उसमें एक सूत का धागा भिगो कर सुखावे। इस प्रकार ७ बार भिगो-भिगो कर सुखावें। इस धागे को मस्सों पर बांध दे। मस्से गल कर गिर पड़ेंगे और घाव हो जावेंगे। इन घावों की सामान्य घाव की तरह चिकित्सा करलें।

—गौघृत में कुचला घिसकर मस्सों पर लगाने से भी मस्से ठीक हो जाते हैं।

निर्माण-विधि—पहिले संखिया को १४ दिन तक आक के दूध में डुबाये रक्खें। आक का दूध रोजाना बदल कर ताज़ा डाल दिया करें। १४ दिन के बाद इस संखिया को घी में ४५ घंटे खरल किया जावे। १५ घंटे प्रतिदिन खरल करके ३ दिन में समाप्त करें; इस तमाम घी को पीतल के कटोरे में निकाल लेवे। इसे धूप लगाने से घी ऊपर आजावेगा, संखिया नीचे बैठ जावेगा। आहिस्ता से घी को फिर खरल में निथार लें और केशर आदि को बारीक करके इसी घी में मिलाओ और २० घंटे लगातार खरल करो। जब एक दिल हो जावे, निकाल कर शीशी में रख लो।

लगाने की विधि—इन्द्री का अग्र भाग और सीवन बचाकर ४ बूंद सोते समय लेप करलो और बंगला पान गरम करके बांध लो। ऊपर से कसकर लंगोट बांधो। ३०दिन के अन्दर इन्द्री पर सफेद या सुर्ख दाने निकल आवेंगे। तब दवा का लगाना छोड़ दो और दिन में २ या ३ बार इन्द्री पर घी चुपड़ दिया करो, चन्द दिनों में वह दाने दूर हो जावेंगे और इस तिला से तमाम बुराइयां दूर हो जांयगी।

श्री० वैद्य पं० रामदत्त जी शर्मा भिषगाचार्य

दन्त-चिकित्सक, तिलक-चौक, बूंदी राज्य।

—लेखक—

शीत पित्त पर [पित्ती उछलना]—

पारद भस्म (रससिन्दूर) २ रत्ती को बारीक पीसकर अमानी (अजवाइन) ४ माशा, गुड़ ४ माशा के साथ देने से और ऊपर से ताजा जल थोड़ा सा पिला देने से शीत-पित्त बहुत जल्द शान्त हो जाता है। एक ही मात्रा में लाभ हो जाता है। यदि आवश्यकता पड़े तो दूसरी मात्रा २ घण्टे बाद और दे सकते हैं। यदि पेट में अधिक खराबी हो तो कोष्ठ-शुद्धि करना आवश्यक है।

विषम ज्वर पर—

हरिण (मृग) शृङ्ग के टुकड़े १० तोला को ज्वालामुखी के रस में भिगो दे। जब रस खुश्क होजावे तब एक हड़िया में रख कर मुंह बन्द कर दे। बाद में हड़िया को चूल्हे पर चढ़ा दे और नीचे आग जलावे जब वह ठीक तरह जल जावे तब नीचे उतार कर ठण्डा करके खरल कर डाले। इस प्रकार जितनी भस्म और हो उसका आठवां हिस्सा त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) कूट-छानकर मिलादे और सबको अच्छी तरह पीस कर शीशी में रखले।

मात्रा—४-४ माशा यह दवा पान के रस में मिलाकर सुबह-शाम चटा दें। इस तरह चार दिन तक देने से ठण्ड लगकर आने वाला या बिना ठण्ड लगे आने वाला, विशेषकर अनियमित समय पर चढ़ने वाला विषम ज्वर शीघ्र ही

पिता का नाम

श्री० वैद्य पं० भंवरलाल जी शर्मा, व्यास

आयु—४२ वर्ष जाति—दाधीच ब्राह्मण

"श्री वैद्य जी के परिवार में बहुत समय से वैद्यक व्यवसाय होता चला आ रहा है। आप योग्य अनुभवी चिकित्सक हैं और दांत साजी के कार्य में निपुण हैं। आप बूंदी धारा सभा के मेम्बर तथा म्यूनिसिपल-कमिश्नर भी हैं। आपके निम्न दोनों प्रयोग अत्युपयोगी हैं।" —सम्पादक।

जौ-कुट चूर्ण बनाले। इसमें से २ तोला चूर लेकर आध सेर पानी में डालकर पकावें, जब १० तोला पानी बचे तब मल-छानकर इसमें दो तोला मिश्री मिलावें। इस ताजे काढ़े के साथ गोली खालें।

समय—३-३ घण्टे के बाद १०-१० ग्रेन की एक २ गोली २-२ तोले काढ़े के साथ खिलाते रहना चाहिये।

सूचना—उक्त काढे में यदि चवक न मिले तो इसके स्थान पर पीपरामूल डालना चाहिये।

गुण—यह गोली 693 M. B. के समान गुण करती है। इसलिये मैंने इसका नाम 693A.V. रक्खा है। कैसा ही न्यूमोनियां (Pneumonia) क्यों न हो, बिगड़ी से बिगड़ी हालत हो, नाड़ी की कमज़ोरी, पसीना, हिचकी, शीतांग, कफ का घड़घड़ाना, बेहोशी, प्यास, दस्त, तीव्र-ज्वर, पार्श्वशूल, तन्द्रा, अनिद्रा सम्पूर्ण उपद्रव-युक्त न्यूमोनियां को आराम कर देता है। मामूली कफ रोग, सर्दी, खांसी या दूसरे रोगों में देने से लाभ नहीं होगा। यह तो केवल न्यूमोनियां पर ही काम देती है।

सूचना—ऊपर की गोलियों में रसमाणिक्य जो हरताल से बनता है वही डालें और सावर भस्म आक के दूध के द्वारा की हुई डालनी चाहिये। सब दवाओं को बारीक पीस कर खूब घोट कर फिर टिकिया या गोलिया बनावें। जितनी बारीक दवायें पीसी जायगी उतना ही अधिक लाभ होगा।

अपस्मार दमन वटी—

ताजा मारा हुआ या सूखा हुआ खटमल एक नग लेकर थोड़े से गुड़ के बीच में रखकर एक गोली बनाले। इस प्रकार २१ खटमलों की २१ गोलियां बनालें और इन गोलियों पर चांदी के वर्क चढ़ाकर एक शीशी में बन्द करके रखले।

मात्रा—रोज प्रातःकाल रोगी को १-१ गोली पानी के साथ निगला दे। इस प्रकार २१ दिन तक खिलावें। यदि फिर भी लाभ न हो तो २१ दिन तक पुनः खिलावे, इससे पूर्ण लाभ हो जाता है। इस दवा के साथ-साथ —

ब्राह्मी १ तोला लेकर बारीक पीस ले और ५ तोला बादाम के तैल में खूब घोटकर कपड़े से छानकर शीशी में रखले। इस तेल को रोज़ एक बार रोगी के दिमाग़ में नाक के रास्ते पहुंचावे।

विधि—रोगी को खाट पर सुलावे। रोगी का सिर खाट से लटकना रखकर इस तैल की २० बूंद पिचकारी में भरकर नाक के दोनों नथुनों में इस प्रकार से डाले कि तैल रोगी के मगज़ तक पहुंच जाय।

गुण—ऊपर लिखे दोनों प्रयोगों के सेवन करने से पुराने से पुराना अपस्मार (Epilepsy) रोग मिट जाता है।

नोट-१—रोगी को शराब नहीं पीने दें और पैरों में गर्म मोजा पहनने को कहे। शिर को ठंडा रक्खे। दूध, चावल, मक्खन, हरी भाजी, गेहूँ की रोटी, घी खूब खिलावे।

२—खटमल एक प्रकार का जीव है, जो खाट (चारपाई) के अन्दर रहते हैं और फिर रात को खाट पर सोने वाले मनुष्यों को काटते हैं। हिंदुस्तान के सब प्रांतों में पाया जाता है, ये मनुष्य का रक्त पीता है।

३—गोली बनाने के लिये सख्त गुड़ काम में लाना चाहिये।

बाल विसर्प हर शर्बत—

गुल बनफ्शा १० तोला लेकर १३० तोला पानी में डालकर रात को भिगोदें, सुबह अग्नि पर रख कर पकावें। जब ४० तोला पानी बाकी रहे तब उतार कर हाथों से खूब मल कर छान ले। इस छने हुये पानी (क्वाथ) में ६० तोला शक्कर (खांड) डालकर पकावें। जब शहद जैसी चाशनी बन जावे तब उतार कर ठण्डी करके बोतल में भरकर रख दें।

मात्रा—२ तोला शर्बत में २ तोला पानी मिलाकर पिलावें। इस प्रकार दिन में ३ बार पिलाना चाहिये।

गुण—जिस स्त्री के बालक पैदा होकर रतवा (विसर्प रोग) से मर जाते हों, यह शर्बत उन स्त्रियों के लिये अत्युत्तम प्रमाणित हुआ है और सम्पूर्ण दोषों का शमन कर बालकों व बचाने के लिये परीक्षित है।

शर्बत पिलाने का समय—

स्त्री जब गर्भवती हो और गर्भ तीन महीने व होजाये तब इस शर्बत की एक बोतल ताजी बनाक रोज दिन में तीन बार पानी के साथ पिलायें।

इसी प्रकार दूसरी शर्बत की बोतल गर्भा वस्था के पांचवें महीने में पिलावें और फि तीसरी बोतल सातवें महीने का गर्भ हो जब पिलावें। इस तरह तीन बोतल शर्बत गर्भावस्था में पिलावें और चौथी बाटली तब पिलावें जब बालक पैदा होचुका हो और ४० दिन बीत गये हों उस स्त्री के गर्भ के अन्दर से विसर्प का असर मिट जाता है और फिर उसके बालक इस रोग से नहीं मर सकते हैं।

पथ्य—गेहूँ की रोटी, चावल, चौलाई का साग, नमक डालकर दवा के सेवन-काल में खाना चाहिये।

अपथ्य—शर्बत के सेवनकाल में घी और चिकनी वस्तु, तैल, खटाई नहीं खिलाना चाहिये।

वैद्य-भिषग्. श्री कृष्णराव जी तात्या पाटील

अध्यक्ष—रामकृष्ण आयुर्वेदिक औषधालय,
ग्राम नरखेड पो० मुलताई जिला बैतूल सी० पी०।

—लेखक—

पिता का नाम—श्री तात्या जी पाटील
आयु—५५ वर्ष जाति—क्षत्रिय

विषय—१-नासूर २-प्लीहा यकृत वृद्धि

"श्री० पाटील जी अपने यहां के प्रभावशाली जमींदारों में से हैं आपकी अभिरुचि अपने सम्मान को देखते हुए आयुर्वेद की ओर अग्रसर हुई। अ० भा० आयुर्वेद महामंडल कार्यालय में भस्मों के उत्तम निर्माण करने के फल-स्वरूप प्रथम श्रेणी का प्रमाण पत्र तथा स्वर्ण-पदक मिला। आप अपने यहां के योग्य चिकित्सकों में से हैं आपके निम्न दोनों प्रयोग परीक्षित एवं अत्युपयोगी हैं। पाठक इन प्रयोगों को निर्माण कर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

नाड़ी व्रण (नासूर) पर अनुभूत प्रयोग—

किसी भी किस्म का नया या पुराना फोड़ा या घाव हो, हमेशा बहता रहता हो और नासूर हो गया हो तो उसके लिये पुराना यानी १०० वर्ष पूर्व का बना किला या मन्दिर के चूने का ढेला लें, और उसे बारीक पीस कर कपड़ छन कर ३ माशा लें। तथा संगजीरा* (संग जराहत) ३ माशा कपड़ छन करके दोनों एकत्र कर खरल करें। उसके बाद तम्बाकू के हरे पत्ते २ तोले के साथ उपरोक्त दोनों चीजों को एकत्र पीस कर लुगदी बनालें। फिर जहां नासूर हो वहां लुगदी को रख ऊपर से तम्बाकू का पत्ता रखकर पट्टी से बांध दें। इसी प्रकार प्रतिदिन नवीन औषधि तैयार कर १४ दिन तक निरंतर बांधते रहने से नासूर अच्छा होजाता है। साथ ही व्रण को नीम के पत्तों के पानी से धोते रहना चाहिये।

नोट-तम्बाकू के उन पत्तों को प्रयोग करना चाहिये जिन पर क्षार अंश विद्यमान हो। व्रण छोटा अथवा बड़ा होने पर औषधि की मात्रा में कम-बेशी भी कर सकते हैं। यह प्रयोग किसी साधु ने हमारे पिता जी को बताया था तब से अनेक रोगियों पर सफलता-पूर्वक व्यवहार कर चुका हूँ।

प्लीहा तथा यकृत पर अचूक प्रयोग—

एक बड़ा कच्चा पपीता लेकर उसके मध्य में से इस प्रकार काटें कि उस स्थान में उसमें पाव सेर सैंधा नमक भर जावे, भरने के पश्चात्

[शेष पृष्ठ २७६ पर]

* इसका संस्कृत नाम शंग जीरक है। हिन्दी में संगजराहत मराठी में शंखजिरे, और गुजराती में शकजीरू, कहते हैं। पंसारी 'सगजिरा' नाम से पहिचानते हैं। —लेखक।

श्री करांके वकील श्री एस. के. कपूरने ... स्मरणपत्र देनेवाले अपने किसी भी आरोप में असफल रहे हैं।

पंजाब सरकार द्वारा बीज फार्मों की खरीद के लिए जर्मनिकी खरीदसे सम्बन्धित आरोपके बारेमें श्री करोंने कहा राज्य सरकारने १९५६ और १९६३ के बीच लगभग २२० बीज फार्मों के लिए जर्मीन खरीदी। यह जर्मीन महत्तसे लागोंसे खरीदी गयी। उनमस सिर्फ तीन या चार ही मुख्यमंत्रीके सनधी थे।

आरोप लगाया गया है कि श्री हरि चरणसिंह ब्रार और उनके पुत्र की जमीन

हरिश्चन्द्र जी तिवाड़ी वैद्य

जत्तीबाड़ा (मेरठ)

पं० (विद्वारा) ...

आयु—लगभग ५५ वर्ष

जाति—ब्राह्मण

विषय—१-मुखपाक

२-संखिया भस्म

"श्री० पंडित जी वयोवृद्ध अनुभवी रसायनज्ञ हैं। मेरे स्वर्गीय पिता वैद्यराज राधावल्लभ जी के समय में "धन्वन्तरि निर्माणशालाध्यक्ष" के पद
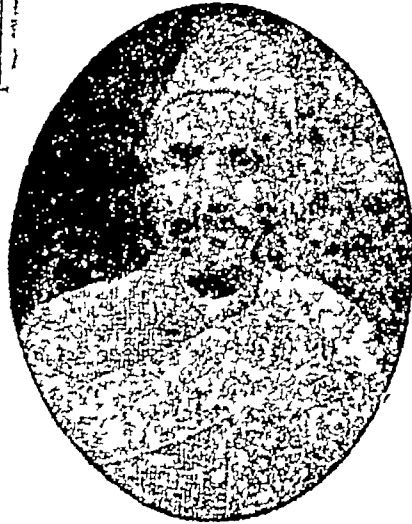
—लेखक—

पर कई वर्षों आपने काम किया था। यहा से जाकर अभी तक आप मेरठ के सुप्रसिद्ध स्वर्गीय रामसहाय जी वैद्य की रसायनशाला में योग्यतापूर्वक औषधि-निर्माण कराते रहे हैं। औषधि-निर्माण में तो आप निपुण हैं ही, लेकिन दो आयुर्वेद-महारथियों के संसर्ग से आप अनुभवी-चिकित्सक भी बन गये हैं। हमारे पर सदैव से अपने बच्चों की भांति स्नेह रखते रहे हैं।"

—सम्पादक।

मुखपाक पर शर्वत—

(बच्चों के छालों पर)

पठानी लोध　　उसवा　　मुलहठी

काले तिल　　—चारों १-१ तोला।

सुहागा (टंकण)　　६ माशे

—एक पाव पानी में पकायें। १० तोला शेष रहने पर छानलें और १० तोला मिश्री मिला चासनी बनाकर शर्बत बनालें।

प्रयोग-विधि—जिस प्रकार ग्लिसरीन रुई की फुरैरी से लगाते हैं, उसी प्रकार इस शर्वत को दिन में ३-४ बार बच्चों के मुख के फलकों पर लगायें, शीघ्र लाभ होता है।

मुखपाके—

शीतलचीनी　　कत्था

सुहागा　　छोटी इलायची

वंशलोचन　　मिश्री

हंसराज के सूखे पत्ते　　—समान भाग

—लेकर कपड़-छन करलें। दिन में ३-४ बार छालों पर बुरक मुख नीचे को कर दें, जिससे खराब पानी निकल जाय। परीक्षित है।

संखिया भस्म-निर्माण विधि—

संखिया श्वेत की २ तोला की एक डली लेकर खूब गरम किये गोमूत्र में डालकर अग्नि पर थोड़ी देर रखा रहने दें। खौलते समय जो भाप निकले उससे बचते रहें। दूसरे दिन संखिया डेली को गोमूत्र से निकाल कर स्वच्छ जल से धो डालें। औंगा (अपामार्ग)

[शेष पृष्ठ १७८ पर]

श्री. पं. वंशीधर जी वैद्य विशारद,

चिकित्सक-मारवाड़ी सेवा संघ धर्मार्थ औषधालय, नागपुर।
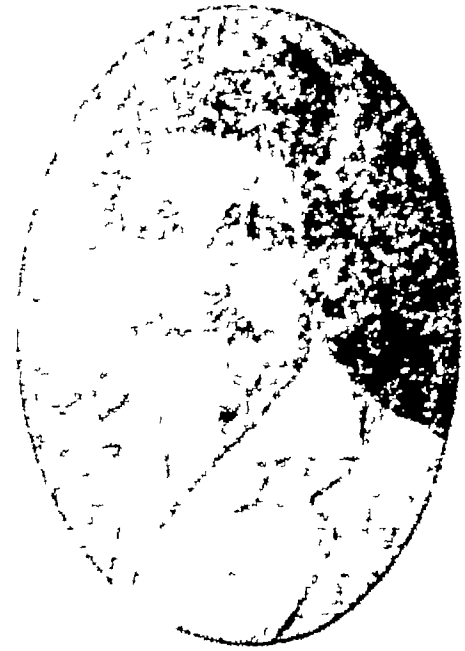
पिता का नाम— श्री० पं० मुन्नालाल जी शर्मा

आयु-३४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-अर्श २-अर्श मस्सों पर सूत्रबंधन

"श्री० वैद्य जी ने धन्वन्तरि वियायल नागपुर से वैद्यभूषण तथा अखिल भारतवर्षीय विद्यापीठ से वैद्य–विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की हैं। आप मारवाडी धर्मार्थ औषधालय के प्रधान वैद्य तथा सफल चिकित्सक हैं। मंथर ज्वर व अर्श-रोग के आप विशेषज्ञ हैं।"

—सम्पादक।

अर्शहर मलहम—

मुरदाशंख पपड़िया-कत्था जीरा

यशद भस्म काला सुरमा १-१ तोला

कपूर २ तोला शुद्ध गौघृत २८ तोला

—गौघृत को कांसे की थाली से १०१ बार जल से धोलें; उसी में अन्य द्रव्यों का बारीक चूर्ण कर मिलावें।

गुण—इस मलहम को हर प्रकार के अर्श के मस्सों पर लगा सकते हो। वातज, पित्तज, कफज व रक्तपित्तोल्वण, इन सबमें इसके प्रयोग से लाभ प्रतीत होता है।

अर्शांकुरों पर सूत्रबंधन—

थूहर के दूध में हल्दी का चूर्ण मिलाकर उस में एक धागा भिगो कर सुखावें। इस प्रकार २१ बार भिगो २ कर सूत्र को सुखालें और मस्सों (कील) पर बांध दें। यदि मस्से बाहर न निकल रहे हों तो किसी से निकाल कर सूत्र-बंधन कर दें। इससे ४ दिन तक मस्से में गिरता है, फिर मस्से सूख कर झड़ जाते

नोट—इससे रोगी को तीव्र वेदना सहन क पड़ती है, यदि रोगी अशक्त अथवा ना मिजाज का हो तो इसका प्रयोग न कर उपर मलहम व्यवहार में लाना चाहिये।

[पृष्ठ १७७ का शेष]

पचाग की लुगदी बनाकर उसके बीच में डेली को रख सुखालें, ऊपर से कपरौटी पुनः सुखालें, एक सरवा में बुझा हुआ च भरें, उसके बीच में कपरौटी किये गोले रखदें, ऊपर से अपामार्ग की राख भर सराव सम्पुट बनालें और स्वल्प पुट फूंक दें। अपने को धुएं से बचाते रहें। प्रा काल आहिस्ते से उसे खोलकर भस्म निक लें। यदि भस्म ठीक होगई होगी तो उस वज़न १॥ तोला होना चाहिये।

वैद्यभूषण कविराज ब्रह्मानन्द जी चन्द्रवंशी

बरोदा पो० पनागर (जबलपुर)

पिता का नाम— श्री० इच्छाराम जी चन्द्रवंशी

आयु—४८ वर्ष जाति—चन्द्रवंशी कौर्मि क्षत्रिय

"श्री० चन्द्रवंशी जी अनुभवी वैद्य, सरस कवि एवं योग्य लेखक हैं। आपकी उत्तम रचनाएं यदा-कदा धन्वन्तरि में प्रकाशित होती रहती हैं। निदान की विशेषज्ञता पर आपको मध्य प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन कटनी से प्रमाण-पत्र प्राप्त हुआ है। आपने कई-एक पुस्तकें भी लिखी हैं। आपका निम्न प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी है।" —सम्पादक।

साँभर नमक सेंधा नमक

काला नमक समुद्र नमक

विड़ नमक जवाखार

सज्जी क्षार —प्रत्येक पांच-पांच तोला।

नौसादर ७ छटांक

—सबको महीन पीस कर पत्थर के खरल में डालकर नीबू के रस की तीन भावना देकर सुखालें। पश्चात् डमरूयंत्र में रख छः घंटे तक मन्दाग्नि देकर शीतल होने पर ऊपर की हांडी में चिपका हुआ सत्व (जौहर) निकाल कर शीशी में कार्क लगाकर रखें।

मात्रा-४ रत्ती सत्व, १ माशा दालचीनी चूर्ण के साथ सेवन करने से कृमि, मंदाग्नि, अफारा, शूलादि नष्ट हो क्षुधा बढ़ती है। स्वादिष्ट भी है।

(१)—बालकों की कुकर खांसी (हूपिंग कफ) में आधी रत्ती सत्व यवक्षारादि चूर्ण कंठ में डाल कर प्रातः सायं निगलवा दें। इस प्रयोग से सैकड़ों बालकों की कुकर खांसी में आश्चर्य जनक लाभ हुआ है। कफ ढीला होकर तुरन्त खांसी रुक जाती है।

(२)—मनुष्यों की शुष्क कास पर ४ रत्ती सत्व ३ माशे लवणभास्कर चूर्ण के साथ निगलवाने से अत्यन्त शीघ्रता से आने वाली खांसी भी आराम हो जाती है, कफ तुरन्त निकलने लगता है। लंघनों की हालत में भी अष्टाङ्गावलेह के साथ बिना अनुपान के देना चाहिये, कफ पिघल कर निकलने लगता है निमोनियां की अवस्था में भी देने से लाभ होता है।

(३)—शूल, पेट दर्द, वायुगोला में—लवण भास्कर के साथ देने से १०-१५ मिनट में अचूक लाभ होता है।

नोट—यह प्रयोग २५ वर्षों से उपरोक्त व्याधियों में वरतते आरहे हैं, कफ पिघलाने में तो अद्वितीय ही है।

श्री० वैद्य मुन्नालाल जी गुप्त B. I. M.

५६।१३२ पुरानी दाल मण्डी, नयागंज, कानपुर।

पिता का नाम— स्वर्गीय लाला बाबूलाल जी गुप्त

आयु—३१ वर्ष जाति—अग्रवाल

प्रयोग-विषय- फोड़ा-फुन्सी व घाव

"श्री० गुप्ता जी योग्य चिकित्सक एवं प्रतिभाशाली लेखक हैं। आपने आयुर्वेद विषयक अनेकों पुस्तकें लिखी हैं तथा आपके सारपूर्ण लेख आयुर्वेदीय पत्रों में सदैव प्रकाशित होते रहते हैं। आप होमियोपैथिक-चिकित्सा-विज्ञान के भी अच्छे ज्ञाता हैं। मेरे ऊपर आपकी विशेष कृपा रहती है।"

—सम्पादक।

मरहम नं० १—

गोंद कुन्दरू ३॥ माशा
जंगाल ३॥ माशा
गंधा-विरोजा ३५ तोला

निर्माण-विधि—गंधे-विरोजे को १ कड़ाई में डाल अग्नि पर रखें, जब वह पिघल जाय तब छान लें। बाद में फिर कड़ाई में डालकर पिघलावें और उसी में गोंद कुंदरू और जंगाल का चूर्ण महीन पिसा-छना डालकर खूब मिला देवें। बस मरहम तैयार होगई।

उपयोग—एक पतले कपड़े पर लगाकर घाव फोड़े और फुंसी पर लगावें। इसके उपयोग से कैसा ही घाव क्यों न हो शीघ्र अच्छा हो जाता है।

मरहम नं० २—

सफेद कत्था राल सफेद तिल तैल
मीठा पानी —प्रत्येक १-१ तोला
फिटकरी २ माशा

निर्माण-विधि—कांच या चीनी के पात्र में १ तोला पानी (जल) में १ माशा शक्कर (खांड) मिलावे उसी में तैल भी मिलाएं और फेंटे। जब वह घी के समान हो जाय तब कत्थादि का कपड़-छन्न चूर्ण मिलाकर सुरक्षित रखें।

उपयोग—घाव व फोड़े को नीम जल से धोकर महीन कपड़े पर मरहम लगाकर गर्म कर लगावें। यह सब प्रकार के घावों को और फोड़े को शोधने और भरने के लिये महान् चमत्कारिक योग है।

नोट—कपड़े के बीच में एक छेद रखना चाहिये, जिससे मवाद निकल सके। यह भी ध्यान रखें कि जब तक कपड़ा स्वयं न उतरे, तब तक उसे लगा रहने दें। यदि दर्द मालूम हो तो नमक की पोटली से सेंक दें।

श्री. वैद्य रतनलाल जी शास्त्री

मु० सांकरा पो० दादों [अलीगढ़]

लेखक

पिता का नाम— श्री० मिश्रीलाल जी गुप्त

आयु—२६ वर्ष जाति—वैश्य

प्रयोग-विषय—१—नेत्र-रोग २-विशूचिका ३—रक्तार्श

"श्री० वैद्य जी एक ग्रामीण, सरल व अनुभवी वैद्य हैं। आपने वैद्य-भूषण व शास्त्री की परीक्षायें पास की हैं। निम्न-प्रयोग आपकी अनुभूत चिकित्सा के अंग हैं, पाठक व्यवहार कर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

नेत्रप्रभा वटी—

शंख भस्म शुद्ध मैंसिल बहेड़े की मींग
मुर्गी के अण्डे का छिलका पीपल
हरड़ का छिलका कालीमिर्च बच
कूठ कंजा की मिंगी समुद्रफेन
सेंधा नमक हरी लूनी —समान भाग

निर्माण-इनका चूर्ण बनाकर बकरी के दूध में घुटाई करे, जब बत्ती बनाने योग्य हो जाय बत्तियां बनाकर सुखाले।

प्रयोग-विधि—रेणुका के बीज पानी में भिगोदें। थोड़ी देर बाद मसल कर निथार लें। इस पानी के साथ बत्ती को घिसकर नेत्र में लगावें।

गुण-इससे जाला, फूला, मांस-वृद्धि, नेत्र-पटलगत रतौंधी आदि नेत्र-रोग नष्ट होते हैं।

खूनी बवासीर पर—

जामुन वृक्ष की अन्तर छाल का स्वरस एक तोला बराबर शहद मिलाकर प्रातःकाल प्रति-दिन एक बार चाटने से बवासीर का खून शीघ्र बन्द होजाता है।

विशूचिकान्तक बटी—

लाल मिर्च (पटना वाली) का छिलका कपड़-छन किया	२ तोला
हींग (घी में भुनी)	२ तोला
भीमसेनी कपूर	३ माशा
अफ़ीम	३ माशा

—इन चारों वस्तुओं को प्याज़ के अर्क में ३ घण्टे तक मर्दन करे। ३ घंटे अर्क पोदीना में ३ घंटे तुलसी पत्र के रस में और ३ घण्टे अरहर के पत्तों के रस में घोटने के पश्चात् १-१ रत्ती की गोली बना सुखालें। आवश्यकता पड़ने पर ५-५ मिनट के पश्चात् १-१ गोली देते रहें।

[शेष पृष्ठ १८७ पर]

डाक्टर लल्लू भाई जी पटेल

M B S., M L I MC.

जीवन फार्मेसी, खांदलज पो० बोडेली [बरौदा]

लेखक

पिता का नाम—श्री० द्वारिकादास जी पटेल

आयु—२५ वर्ष जाति—पटेल

विषय—सर्पदंश

"श्री० पटेल जी के पिता भी वैद्यक-कार्य करते थे। आपने आयुर्वेद का ज्ञान इम्पीरियल इन्टर-नेशनल मैडीकल कालेज (धनुला) से प्राप्त किया है। आप दमा व सर्पदंश के सफल चिकित्सक हैं। सर्पदंश पर आपके अव्यर्थ प्रयोग यहां प्रकाशित कर रहे हैं, श्वासरोग-चिकित्सा आगामी किसी अंक में दी जायगी।" —सम्पादक।

सर्पदंश पर अक्सीर प्रयोग—

भिलावा (भल्लातक) टोपीदार लेकर टोपी अलग करदें और गरम सड़ासी से भिलावा पकड़ कर दबाएं उससे तेल की बूंद निकलेगी, उन्हें सर्प-दंशित स्थान पर टपकने दें। इसी प्रकार दूसरा और तीसरा भिलावे लेकर उसके तेल की बूंद टपकायें। २-३ या अधिक भिलावे का तैल विष को शरीर में से खींच लेगा और विष तत्काल उतर कर रोगी को होश आ जायेगा।

सर्पदंश पर सरल प्रयोग—

ज्येष्ठ माह में जामुन वृक्ष की छाल लाकर छाया में सुखा चूर्ण बना डब्बे में सुरक्षित रखलें। आवश्यकता पड़ने पर ५ तोला चूर्ण और एक काली मिरच ताजी जल में पीस घोलकर पिलावें। ईश्वर ने चाहा तो विष जल्दी ही उतर जायगा।

सर्पविष चूसने वाला जादू—

चूहे का पेट चीर कर सर्प-दंशित स्थान पर रखदें तो वह सर्पविष को अपने अन्दर खींच लेता है।

गुप्त-प्रयोग—

एक मुर्गी लेकर उसकी गुदा और आस-पास के बाल उखाड़ फेंके। स्वच्छ त्वचा निकल आयेगी। इस मुर्गी की गुदा को दंशित स्थान पर लगादें। उसी समय चिपक जायगी और थोड़ी देर में ज़हर को चूसकर मरकर छूट पड़ेगी। तुरन्त ही दूसरी मुर्गी पूर्ववत् लगा दें। इस प्रकार जब तक मुर्गी मरती रहें, चिपकाते रहें। मनुष्य के शरीर से सम्पूर्ण विष निकल जायगा और वह नव-जीवन पायेगा, परीक्षित है।

श्री० वैद्य मोहनलाल जी कामलिया

श्री० बालकृष्ण औषधालय उन्हेल (उज्जैन)

पिता का नाम—श्री० बालकृष्ण जी कामलिया

आयु—३० वर्ष जाति—वैश्य जाजू पाड़वाल

"श्री० कामलिया जी ने नि० भारतवर्षीय विद्यापीठ की आयुर्वेद भिषक एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की वैद्य विशारद, आयुर्वेद-रत्न की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की हैं। खाज-खुजली के लिये आपकी निम्न चिकित्सा-विधि उत्तम प्रमाणित हुई है।" —सम्पादक।

खाज के लिये—

आंबा हल्दी काली जीरी बाकुची के बीज
लक्कड़ चोप आंवलासार गंधक
— प्रत्येक १-१ तोला

—लेकर दरदरी कूट कर तीन मात्रा बनालें।

सेवन-विधि—इसमें से एक मात्रा शाम को मिट्टी के सकोरे में पानी डाल कर भिगो दें। दूसरे दिन प्रातःकाल पानी निथार कर रोगी को पिलादें। ऊपर से ५-७ तोला भुने चने खिला दें। इसी तरह तीन दिन सेवन करावें।

लगाने की दवा—

पानी निथारने के बाद जो दवा बच रहे उसे सिल पर ३ माशा मनसिल के साथ पीसें। उसमें तिली का तैल मिला कर धूप में बैठ कर सारे बदन पर मालिश करें। एक घंटे बाद धूप में बैठ कर शीतल जल से स्नान कर लें। इस प्रकार तीनों दिन मालिश करें।

गुण—तीन दिन दवा पीने व लगाने से सब प्रकार की खाज खुजली से छुटकारा मिलता है।

लेखक

[पृष्ठ १८४ का शेष]

अनुपान—सूखा पोदीना २॥ तोला, सोंफ ७॥ तोला, इलायची २॥ तोला थोड़ा कूट-कुटाकर २॥ सेर पानी में औटावें। ४॥ पाव बाकी रहने पर छान बोतल में भरले और इसमें से १ तोला के साथ २ गोली देते रहो।

विशूचिका रोगी के लिये पेय—

आक के पत्ते (जो कि स्वयं पीले पड़कर नीचे गिर गये हों) ५ लेकर आग में जला दो। जब उनके कोयला होजावें तो किसी कलई वाले बर्तन में आध सेर पानी में बुझादो। थोड़ी देर के बाद पानी को छानकर रखलो और रोगी को इस जल में से थोड़ा २ देते रहो। इससे रोगी को शीघ्र लाभ पहुंचते देखा गया है।

लेखक

श्री. वैद्य सुन्दरदास, फगुणमल जी

नीमचौक, म्यानी रोड, सक्खर-सिंध।

पिता का नाम— श्री० फगुणमल जी वैद्य

आयु—४० वर्ष जाति—आसधानी

प्रयोग-विषय---१-सुजाक २-आतशक

"श्री० वैद्यजी के वंश में कई पीढ़ी से चिकित्सा-व्यवसाय होता आया है। आप रस (पारद) शास्त्र के कुशल ज्ञाता हैं। आपने पारद को अग्नि स्थाई बनाकर अद्भुत कार्य किया है। आपके निम्न प्रयोग योग्य चिकित्सक की देख-रेख में व्यवहार करें।"

—सम्पादक।

सुजाक के लिये—

रस कपूर	१ तोला
कपूर देशी	२ तोला

—दोनों को पीस कर दो प्यालों में डमरूयंत्र विधि से जौहर उड़ा लें। बेरी की लकड़ी की अग्नि १ घंटा तक देना पर्याप्त होगा।

नोट-यदि रसकपूर का जौहर न उड़े तो पुनः दोनों को मिलाकर उसी विधि से उड़ा लेना चाहिये।

मात्रा-२ चावल से ४ चावल तक, माखन या मलाई के साथ दिन में दो बार देना चाहिये।

नोट-रोगीको घृत का अधिक सेवन करना चाहिये।

सुजाक में पिचकारी—

मुर्दासंग फिटकरी सुरमा काला रसौत कत्था

—पांचों २॥-२॥ तोला।

तूतिया (तुत्थ) रस कपूर ४-४ माशे
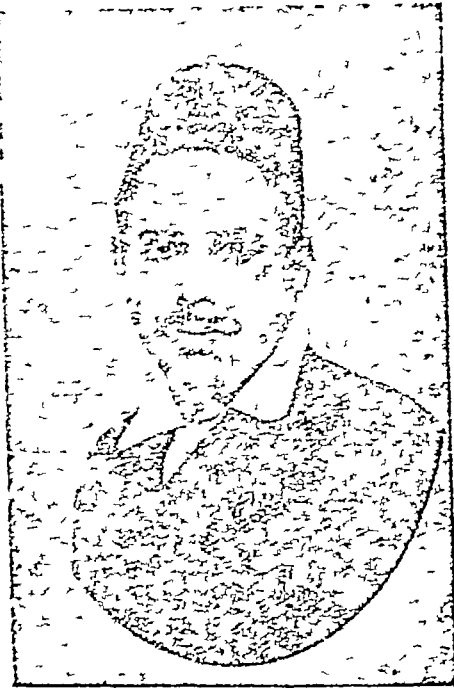
—सबको कपड़े में छान कर ३० तोला पानी में भली-भांति घोल लें। इसमें से ६ माशे जल को १॥ छटांक स्वच्छ जल में मिला कर पिचकारी लगावें।

आतशक पर—

दाल चिकना	६ माशे
कुकुटाण्ड	१२ नग

—दालचिकना को एक अण्डे में डाल कर ऊपर से माष (उर्द) का आटा लपेट कर कोयलों की अग्नि में पकावें। जब आटा लाल हो जाय आग से हटा कर ठंडा होने पर, दालचिकना निकाल लें और दूसरे अण्डे में भर कर पुनः

इसी प्रकार माष का आटा लपेट कर पकावें। इसी प्रकार उसी दालचिकना को १२ बार १२ अण्डों में पाक करलें। पश्चात् उसमें अजमाइन चारों तरह की १-१ तोला मिला-कर मधु के साथ मर्दन करें और चने बराबर गोली बनालें।

सेवन-विधि—प्रातःकाल एक गोली हलुए के साथ निगल लें। यदि रोग तीव्र रूप में हो तो १ गोली शाम को भी ले सकते हैं। ७ दिन में सम्पूर्ण दोष शान्त होकर शरीर निर्मल होजाता है।

पथ्य—मांस रस थोड़ी काली मिरच व नमक डाल कर दें। नमक बहुत थोड़ा दें। रोगी यदि मांस न खाता हो तो मक्खन, घी-दाली पथ्य में दें।

नोट—दवा व्यवहार कराने से पूर्व इच्छाभेदी विरेचन अवश्य देना चाहिये।

[पृष्ठ १८१ का शेष]

रेसदार सब्जी बन्द कर देना चाहिए। स्नान भी वर्जित हैं। बस इतने से इस रोग में अच्छा लाभ देखा गया है।

मुख के छालों पर शास्त्रीय मिश्रण—

कई रोगियों के मुख में छाले हो जाते हैं। दाह-शूल इतना होजाता है कि खाना-पीना तो दूर बोलने में भी कष्ट होता है। जिह्वा, तालु, कंठ और नल नाड़ी से लेकर आमाशय तक दाने हो जाते हैं। इनसे अम्लपित्त भी होता है, किसी २ को रक्त-वमन आदि उपद्रव उत्पन्न होते हैं।

चिकित्सा—

स्वर्णमाक्षिक भस्म १ रत्ती, प्रवाल-पिष्टि (गुलाबजल में घुटी हुई) १ रत्ती प्रातः—सायं अनार के शर्बत से दें।

गोजिह्वा का अर्क ४-४ तोला की मात्रा में दिन में २ बार पिलाता हूँ। इससे विचित्र लाभ देखा है।

साहित्याचार्य श्री० रामेश्वर जी विद्यालंकार लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

पिता का नाम— श्री० पं० घनश्यामचन्द्र शास्त्री विद्यामार्तण्ड

आयु—३८ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० शास्त्री जी ने अ० भा० विद्यापीठ की आयुर्वेद-विशारद एवं आयुर्वेदाचार्य की परीक्षाएं पास की हैं। आप श्री रामानुज संस्कृत कालेज में प्रिंसीपल तथा श्री० वैंकटेश आयुर्वेद चिकित्सालय में उपाध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं। आप सफल अध्यापक, योग्य चिकित्सक, कुशल वक्ता व लेखक हैं। आपके निम्न प्रयोग उत्तम हैं।" —सम्पादक।

अग्नि दग्ध मलहम—

राल ४ तोला कत्था १ तोला
कबीला ६ माशा कपूर ६ माशा

—कपूर के सिवाय सब चीजों को कपड़-छन कर पीछे से खरल में कपूर पीस कर मिला दें, फिर अलसी तैल में मिलाकर उसे ५० बार पानी से धोकर काम में लें।

गुण—कैसा ही अग्नि से जला हुआ हो ७ दिन के लेप से अवश्य फायदा होता है

भुनी हल्दी काली जीरी ५-५ तोला
बादाम की गिरी ५ तोला मिश्री २० तोला

मात्रा—२ तोला।

गुण—निमोनियां, डब्बा के रोगों में उठे हुए श्वास को दबाने में अत्युत्तम है।

वै. पं. रामलाल जी शर्मा शास्त्री आयु. विशारद

सूर्य मंदिर, चुरू [बीकानेर]

—लेखक—

पिता का नाम—श्री० पं० गणेशदत्त जी शर्मा

आयु—३० वर्ष   जाति—ब्राह्मण

"श्री० शास्त्री जी ने व्याकरण की मध्यमा बनारस में की है, तथा अखिल भारतवर्षीय विद्यापीठ की 'आयुर्वेद विशारद' परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप योग्य चिकित्सक हैं और आपके निम्न दोनों प्रयोग उत्तम हैं।"

—सम्पादक।

पीयूष प्राश—

वंशलोचन	६ माशा
सत मुलहठी	६ माशा
दालचीनी	४ माशा
तगरतिगार	६ माशा
गोंद कीकर	४ माशा
कतीरा	४ माशा
इलायची छोटी	२० नग
शहद	५ तोला

—काष्ठादि औषधियों को महीन वस्त्र-पूत कर शहद में मिला कांच के पात्र में सुरक्षित रखें।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक शुष्क कास के लिये यह अवलेह अमृत तुल्य है। अत्यन्त कष्ट-प्रद शुष्क कास में हर ३-३ घन्टा के अन्तर से चटावें।

नोट—योग में तगरतिगार औषधि को सावधानी से साफ कर लेना चाहिये। इसमें कीड़े होते हैं।

गर्भ संजीवनी चूर्ण—

मुक्ता पिष्टी	१ तोला
स्वर्ण-माक्षिक भस्म	१ तोला
मिश्री	३६ तोला
शतावर	शालम मिश्री
शकाकुल मिश्री	इलायची छोटी
बहमन सुर्ख	बहमन सफेद

प्रत्येक ५-५ तोला।

निर्माण विधि—काष्ठादि औषधियों को महीन वस्त्र-पूत कर खरल में डालें, मुक्ता-पिष्टी व स्वर्ण-माक्षिक भस्म डालकर २ घन्टे घोटकर सुरक्षित रखें।

सेवन-विधि—प्रातः-सायं ६ माशा तक शीतल जल अथवा दूध के साथ सेवन करावें।

पथ्य-गर्म चरपरे वायुकारक पदार्थ त्याज्य हैं। यह योग शुष्कगर्भ (छोड़) के लिये अत्युत्तम है। तथा गर्भपात, मृतवत्सा आदि सभी दोष निवृत होकर सन्तान खूब हृष्ट-पुष्ट एवं सुन्दर उत्पन्न होती है।

गर्भपात वाली रुग्णा को तीसरे व चौथे मास से लेकर ७ वें मास तक सतत देना चाहिये।

लेखक

आयुर्वेद-शास्त्री पं० विश्वनाथ जी त्रिपाठी वैद्य,

विश्वनाथ फार्मेसी, सिधावे पो० रामकोला (गोरखपुर)

पिता का नाम— पं० भृगुनाथ जी त्रिपाठी

आयु—३५ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-पामा २-प्लीहा-वृद्धि

"श्री० त्रिपाठी जी को जड़ी-बूटियों के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा बाल्यकाल से ही है। आपके वनस्पति विषयक अनुभव विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। आपने विधिवत् अध्ययन कर 'आयुर्वेद-शास्त्री' की परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा आप ज्वर-रोग के विशेषज्ञ समझे जाते हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित हैं।"
—सम्पादक।

पामा पर—

फिनाइल १ सेर मिट्टी का तैल १ सेर
आंवलासार गन्धक आध सेर

—तीनों को मिलाकर खरल में अच्छी तरह घोटो। एक-दिल हो जाने पर बोतल में भर दो। दिन में २-३ बार धूप में बैठ कर लगाने से खुजली २-१ दिन में ही जाती रहती है। दवा लगाने के २ घंटे बाद नीम की पत्ती डाल कर उबाले हुए पानी से स्नान कर लेना आवश्यक है। बोतल को हिलाकर औषधि व्यवहारार्थ लेना चाहिये।

प्लीहा-वृद्धि पर—

ताम्र भस्म लोह भस्म
शु० जयपाल शु० बच्छनाग
यवक्षार सज्जीक्षार
—प्रत्येक १-१ तोला
जंगी हरड़ ३ तोला
चौकिया सुहागा २ तोला
हल्दी कच्ची ५ तोला

—सबको कूट कपड़-छन कर खरल में डालें। जिमीकन्द के रस तथा ग्वारपाठे के रस की ३-३ भावना देकर ४-४ रत्ती की गोली बना छाया में सुखा लें।

सेवन-विधि—दिन में तीन बार १-१ गोली गर्म जल से दें। १० मिनट बाद मट्ठा (तक्र) देना आवश्यक है।

गुण—यह दवा प्लीहा, गुल्म, यकृत आदि उदर-रोगों के लिये उत्तम है।

पथ्य—भात-रोटी मट्ठा के साथ दें।

—*—

वैद्य-विशारद डा० ईश्वरलाल मेघराज आयुर्वेद-शास्त्री,

एम. डी. एच., हैदराबाद (सिन्ध)

"श्री० डाक्टर साहब ने हिंदी साहित्य सम्मेलन (हिन्दी विश्वविद्यालय) प्रयाग की 'वैद्यविशारद' परीक्षा उत्तीर्ण की है। श्री भारत धर्म महामण्डलान्तर्गत श्र० भा० सं० विश्वविद्यालय, काशी की 'आयुर्वेद-शास्त्री' वाशिष्ठ आयुर्वेदिक कालेज करांची की वैद्यशास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपने आयुर्वेद-शास्त्र का पर्याप्त काल तक अभ्यास किया है। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित हैं।" —सम्पादक।

हृदयराज वटी-[हृदय रोग पर]

एक-पुती लहसुन छीला हुआ	५ तोला
इन्द्र-जौ	२ तोला
करंज के बीज की गिरी	२ तोला
संचर नमक	१ तोला
मण्डूर भस्म	१ तोला
शुद्ध कुचला	६ माशा
घी में भुनी हुई हींग	१॥ तोला
एरण्ड के तेल में तली हुई काली छोटी हरड़	१। तोला

विधि-प्रथम लहसुन को छील कर खरल में डाल खूब बारीक घोट कर फिर इसमें हींग डाल कर घोटें। फिर सब दवाओं का बारीक चूर्ण डाल कर घोटें। फिर इसमें घृत-कुवार (ग्वारपाठे) का रस डाल कर खूब खरल कर ३-३ रत्ती भर की गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें।

मात्रा—दो-दो गोली, सुबह-शाम, पानी के साथ निगल जावें।

अपथ्य—इन गोलियों के सेवन-काल में मटर, चावल, खटाई, इमली, अचार, भुजिया और तेल की बनी हुई वस्तु नहीं खानी चाहिये।

गुण—यह गोलियां दिल की कमजोरी, घबराहट, बेचैनी और हृदय के शूल को मिटा देती हैं। इसके सेवन से दिल की ताकत बढ़ने लगती है। इसके अतिरिक्त अपान वायु (गैस) को शीघ्र बाहर निकालती हैं और पेट में बनते

लेखक

हुए गैस को रोकती है। जिसे भोजन के बाद बेचैनी रहती हो; बारह बजे का खाया हुआ भोजन शाम तक हज़म नहीं होता हो, पेट भारी और अफारा रहता हो; ऐसे रोगी को यह गोलियां अवश्य खिलावें, इससे भोजन हज़म होकर नवीन शक्ति पैदा होजाती है। इसके सेवन से कब्ज़ भी दूर होजाता है।

नोट—काली हरड़ को एरण्ड के तैल में तवे पर रख कर तल लेवें। करज के बीजों को आग पर सेक कर फिर तोड़ कर अन्दर से गिरी निकाल लें। लहसुन को छील कर डालें।

पक्षाघात विनाशक रस—[पक्षाघात पर]

सोंठ	काली मिरच	पीपर
पीपरामूल	जायफल	लौंग
छोटी इलायची के दाने		अकरकरा
असली केशर	— प्रत्येक ६ ६ माशा	
मल्लचन्द्रोदय		४॥ तोला

विधि—प्रथम मल्लचन्द्रोदय को खूब बारीक पीसकर, ऊपर लिखी दवाओं का बारीक चूर्ण करके मिला कर सबको खूब खरल करें। फिर पान का रस डाल कर खरल करके चने के बराबर गोलियां बना छाया में सुखा कर रखें।

नोट-पान के रस में ३ दिन तक घोटनी चाहिये।

मात्रा-२-२ गोली सुबह-शाम, पीस कर शहद में मिलाकर खावें और ऊपर से 'महारास्नादि क्वाथ' में एरण्ड का तैल डाल कर पिलावें। अथवा गोली को दूध के साथ खिलावें। १ गोली से शुरू करें और २ गोली तक जावें।

पथ्य-में घृतादि भोजन लेना चाहिये।

नोट-इस दवा को लगातार २०-२१ दिन खिला कर बीच में आठ दिन तक बन्द कर दें, फिर खिलावें। इस प्रकार ३० दिन तक खिलानी चाहिये और रोगी को दूध अधिक पिलाना चाहिये। तैल, खटाई तो बिलकुल नहीं खिलावें, लाल मिर्च भी न दें।

गुण-इस दवा के सेवन करने से लकवा (पक्षाघात) के रोगी को आराम होजाता है और अर्दित-घात आदि सम्पूर्ण वातरोगों में लाभ करती है। मूर्छा और सन्निपात जैसे भयङ्कर रोग में भी बहुत लाभ-प्रद है। इससे दुर्बलता मिट कर बल और रक्त की वृद्धि होती है।

८ कंचुकी भस्म—

[प्रसव में देर होने पर]

सांप की कांचली को मिट्टी के सकोरे में बन्द करके कण्डों में फूंक दें। शीतल होने पर अन्दर से राख निकाल कर पीसकर शीशी में बन्द करके रखलें।

मात्रा—४ रत्ती भस्म को नीचे लिखे अनुपान के साथ खिलावें।

अनुपान—भैंस का ताजा गोबर २ तोला लेकर आधा सेर पानी में पका कर कपड़े से छान लें। ऊपर की भस्म को मुंह में रख कर यह पानी ऊपर से पिला दें।

गुण—जिस स्त्री को तकलीफ होरही हो और बच्चा पैदा न होता हो या पेट में मुर्दा होकर रह गया हो तो इस दवा से शीघ्र पैदा होगा, और दर्द बिलकुल जाता रहेगा।

लेखक

वैद्य पं० चन्द्रशेखर जी व्यास आयुर्वेद-विशारद
रंगून।

—*—

पिता का नाम—श्री० पं० श्रीधर जी शर्मा व्यास

आयु—३४ वर्ष जाति—पुष्करण ब्राह्मण

विषय—१-संग्रहणी २-रक्तप्रदर

"श्री० व्यास जी अनुभवी एवं उत्साही चिकित्सक हैं। आपने चुरू (बीकानेर) के "श्री गणपति आयुर्वेद दातव्य चिकित्सालय के प्रधान चिकित्सक रह कर अच्छी ख्याति प्राप्त की है। आपका धन्वन्तरि के प्रति प्रगाढ़ प्रेम है तथा आपके निम्न दोनों प्रयोग सफल एवं परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।

ग्रहणी की अमोघ दवा—

शु० अहिफेन		६ माशे
शु० पारद		शु० गंधक
अभ्रकभस्म सहस्त्रपुटी		शु० हिंगुल
लोह भस्म १०० पुटी		जायफल
बेलगिरी		मोचरस
शु० विष	अतीस	सोंठ
मिर्च	पीपल	धायफूल
हरैं भुनी हुई		कैथ
नागर मोथा		अजवाइन
चित्रक		अनारदाना
कम्बु भस्म	राल	इन्द्र जौ
शु० कनक बीज		शु० अहिफेन

प्रत्येक १-१ तोला।

विधि-पहले काष्ठादि औषधियों को कूटकर कपड़—— करें। फिर पारद गंधक की कज्जली तैयार कर और समस्त औषधें मिलाकर धतूर पत्र के स्वरस से घोटें और काली मिर्च के बराबर वटी बनावें। यह योग संग्रहणी के लिये परमोत्तम है।

मात्रा-१ से ४ वटी तक।

अनुपान-तक्र।

इसके सेवन-काल में तक्र ज्यादा पीवें, इस वटी के सेवन से दुःसाध्य ग्रहणी रोग नष्ट होता है।

रक्त प्रदर पर—

कपोत की बीट	१ तोला
गोपी चन्दन	१ तोला
मिश्री	२ तोला

—कूट-पीस कपड़छन कर लें।

मात्रा-३ माशा।

अनुपान-शीतल जल।

जहां पर डाक्टरों के इन्जैक्शन बेकार होजाते हैं वहां पर भी यह दवा अपना पूरा असर करती है।

वैद्य गोकुलप्रसाद ब्रजलाल जी पटेल आ० भि०

श्री वृज औषधालय, वैतूल सी० पी० ।

लेखक

पिता का नाम— श्री व्रजलाल जी पटेल

आयु—५८ वर्ष जाति—कसेरा

"श्री० पटेल जी ने नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेद-भिषक् परीक्षा उत्तीर्ण की है आपके स्वर्गीय पिता जी भी वैद्य तथा आयुर्वेद के तत्कालीन इने गिने सेवकों में से थे। आपने भी अपने आस-पास आयुर्वेद का अच्छा प्रचार किया है। आप सफल एवं योग्य चिकित्सक हैं, आपके निम्न प्रयोग परीक्षित तथा उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

बालरोग हर—

डीकामाली अनार की जड़ कुटकी
अजवाइन खुरासानी कबीला इन्द्रायण
कंजा-गिरी इन्द्र-जौ पलास पापड़ा
निशोथ अनीम नवसादर
सेंधानमक पञ्चाम्र —हरेक १-१ तोला
दालचीनी सोंठ मिरच
पीपल तेजपत्र अजमोद
तुलसीपत्र अजवाइन भुनी हींग
पलुआ खिलावा तैल कपूर
कौंच के रोएं —हरेक ३-३ माशे
सुदर्शन चूर्ण —सबका चतुर्थांश

निर्माण— सबका चूर्ण करलें। बबूल की अन्तर छाल के रस में, गौमूत्र तथा करेले के रस में १-१ दिन खरल कर १-१ रत्ती की गोली बनालें।

सेवन-विधि— ६ माह से ५ वर्ष तक के बालक को आधी गोली से २ गोली तक गरम जल या मां के दूध के साथ दिन में तीन बार दें।

गुण— इसके सेवन से बालकों का ज्वर, अतिसार, खांसी, अफारा, वमन, दांत निकलने के समय के विकार, पाचन-विकृति आदि तथा सूखा रोग शीघ्र नष्ट होकर बालक बलवान बनते हैं।

बाल यकृत पर—

अण्ड-पपीते के बीजों का दूध, प्रथम दिन एक बूंद, दूसरे दिन दो बूंद इसी प्रकार १-१ बूंद बढ़ाते हुए सातवें दिन ७ बूंद दें। फिर एक-एक बूंद कम करते हुए १४ वें दिन एक बूंद बताशे, मिश्री या शहद में बालक को चटादें। इसके बाद १ महीना तक गौमूत्र १-१ चम्मच प्रातः सायंकाल पिलाते रहें तथा भेड़ के बांधने की जगह की मिट्टी को पानी के साथ गरम कर यकृत-स्थान पर लेप करते रहें। इस क्रम से चमत्कारिक लाभ होगा। जहां बड़े-बड़े प्रयोग फेल होजाते हैं, वहां यह चिकित्सा क्रम सफल होता है।
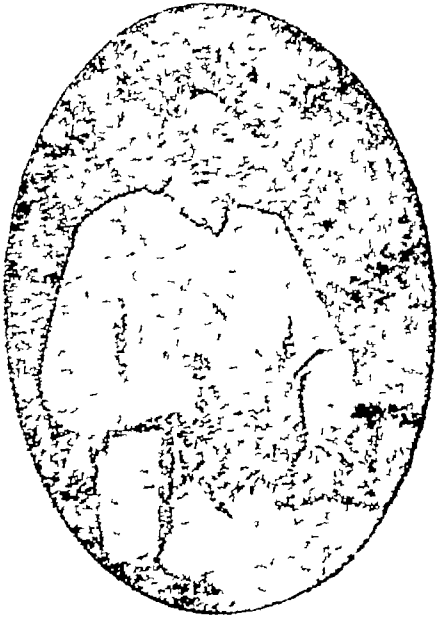
श्री० वैद्य महावीरप्रसाद जी स्वर्णकार

श्री आनन्दी औषधालय, अतर्रा [बांदा]

लेखक

पिता का नाम—श्री० रामप्रसाद स्वर्णकार

आयु—४६ वर्ष   जाति—स्वर्णकार

प्रयोग-विषय—१-प्रमेह   २-रक्त प्रदर

"श्री० वैद्य जी अनुभवी व प्राचीन ढंग के चिकित्सक हैं। आपके अनुभव पूर्ण प्रयोगादि यत्र-तत्र पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। आपके निम्न प्रयोग भी आपके अनुभव-सागर के दो रत्न हैं।"

—सम्पादक।

प्रमेह-स्वप्नप्रमेह पर—

ऊंट कटेरा की जड़ का छिलका १० तोला।
इमली के बीज का अन्दर का गूदा भुना
१० तोला

सफेद मूसली	१० तोला
मिश्री	१० तोला

—कूट-पीस कर चूर्ण बनालें। इसमें से प्रातः-सायं ६-६ माशे दूध के साथ ४० दिन सेवन करने से लाभ होता है।

परहेज़-तैल, खटाई, मिर्च-मसाला, गरम वस्तुएं त्याज्य हैं।

नोट-एक मात्रा उपर्युक्त चूर्ण में वंग भस्म १ रत्ती और मिला लेनी चाहिये।

रक्त-प्रदर पर—

बेरी की पत्ती	१ तोला
काली मिर्च	३ नग
मिश्री	२ तोला

—ठंडाई की तरह पीस १०-१२ तोला जल में घोल, नाग भस्म १ रत्ती शहद के साथ चाट कर ऊपर से पीलें। ३ दिन में रक्त-प्रदर बहना रुक जायगा।

बवासीर के मस्सों पर—

—कुकुरौंदा की पत्ती पीसकर लुगदी बनालें। इसमें २ रत्ती फिटकरी बारीक पीसकर मिला दें। इसकी टिकिया बना मस्सों पर रख लंगोट कस दें। दिन में तीन बार नवीन टिकिया बना कर लगावें। इस प्रकार ७ दिन करने से मस्से ठीक होजाते हैं। कभी-कभी २-४ दिन और भी यह दवा व्यवहार करनी पड़ती है।

वैद्यराज गिरजाशंकर जी बोरा, 'भिषगाचार्य-धन्वन्तरि'

आयुर्वेदिक औषधालय, रतलाम ।

—लेखक—

पिता का नाम— श्री० पं० गुलाबचन्द जी बोरा

आयु—३२ वर्ष जाति—बोरा

"श्री० बोरा जी ने आयुर्वेद एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज देहली से 'भिषगाचार्य-धन्वन्तरि' की परीक्षा उत्तीर्ण की है । आप योग्य चिकित्सक, कुशल औषधि निर्माता तथा प्रतिष्ठित वैद्य हैं । आप हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओं के परीक्षक भी हैं । आपके निम्न दोनों प्रयोग उत्तम तथा परीक्षित हैं ।''

—सम्पादक ।

विरेचन वटी—

सत्यानाशी, स्वर्ण क्षीरी, पीत दुग्धा, हैमवती, अंग्रेजी-The Mexican or Prickly poppy

लैटीन—Argemone mexicana

यह सब स्थानों में पाया जाता है । इसका १ से २॥ फुट ऊंचा क्षुप कटेली की जाति का होता है । इसके पत्ते और शाखा आदि सब अङ्ग पर कांटे होते हैं । इसका पत्ता या टहनी तोड़ने पर पीला दूध निकलता है । और पुष्प पीले रङ्ग के लगते हैं । फल एक या डेढ़ इञ्च लम्बा होता है । उसमें काले रङ्ग के बीज निकलते हैं । इसकी जड़ को मारवाड़ी में 'चोक' कहते हैं । इस ही पर जब फल आया हुआ हो (चैत्र, वैशाख) इसे समेत पेड़ उखाड़ कर मिट्टी आदि दूर करके छोटे-छोटे टुकड़े काट लें और किसी कलईदार बड़े बर्तन में दुगुने जल में भिगो दें । तीन दिन तक पानी में भीगा रहने दे, फिर आग पर चढ़ा दें । जब चौथाई जल शेष रह जावे तब उतार कपड़े से छान लें और उस छने हुए जल को दुबारा आग पर चढ़ा दें । जब रबड़ी के समान हो जावे तब उतार करके किसी कलईदार बर्तन में निकाल डालें और तीन दिन तक रखा रहने दे, बाद में जब गोली बांधने लायक होजाय तो छोटी मटर के बराबर गोली बना लें और छाया में सुखा कर रख लें ।

प्रयोग—रात को सोते समय १ गोली से ४ गोली तक खाने से प्रातःकाल पाखाना खुलकर आ जावेगा । उदर के कृमि भी निकल जाते हैं ।

सुबह-शाम–१ गोली से ४ गोली खाकर ऊपर से २ तोले गोखुरू का शीत कषाय पीने से सुजाक और पथरी म भी लाभ होता है।

२ गोली सुबह, २ गोली रात को खाने से और चोबचीनी की २ माशे फंकी लगाने से कैसा भी उपदंश (आतशक) हो–अच्छा होजाता है।

जलोदर रोग मे इन गोलियों को कुटकी के चूर्ण के साथ लेना लाभकारी है। इस रोग में इन गोलियों का जुलाब अच्छा रहता है।

पाचन वटी—

काला नमक	७५ तोला
सांभर नमक	८॥ तोला
अर्कक्षार	२। तोला
पिप्पली	१०। तोला
काली मिर्च	१०॥ तोला
जीरा सफेद	१० तोला
इमली क्षार	२। तोला
यवक्षार	१। तोला
अडूसा क्षार	१। तोला
दालचीनी २ तोला	तेजपात ५ तोला
छोटी इलायची	५ तोला
धनिया ३ तोला	अजवायन ५ तोला
अकरकरा १० तोला	शंख भस्म ४ तोला
नौसादर १ तोला	पीपलामूल २ तोला
सेंधा नमक ५ तोला	लौंग ५ तोला
चित्रक मूल की छाल	५ तोला

निर्माण विधि–इन सब औषधियों को ग्रीष्म ऋतु में कूट-कपड़ छान कर बाद में एक मिट्टी के मटके का नीचे का हिस्सा निकालें और उस पर सात कपड़ मिट्टी करके सुखालें, बाद में ऊपर की औषधि को उस मटके में रखकर लकड़ी के कोयले की अग्नि पर रख कर गर्म करलें। जब औषधि सिक जाय तो उस औषधि में नीबू का रस डाल-कर (करछी) खुरपे से हिलावें। जब सब रस जल जाय, तब और डाल दें, इस तरह से ७ बार करना, बाद में औषधि को निकाल लें। शीतल होने पर उसमें शुद्ध घी में भुनी हुई हींग ५ तोला मिलालें और सिल पर पिसवाकर फिर घी के साथ चने के बराबर गोली बनालें। छाया में सुखा कर गोली रखें चार-पांच रोज में सूख जावेगी।

मात्रा–२ गोली से ३ गोली तक सुबह, दोपहर व रात्री को जल के साथ दें।

अनेक रोगों पर अलग अलग अनुपान—
मन्दाग्निमें–गर्म जल से या चित्रक के काढ़े के साथ।
खांसी में–शहद तथा अडूसे के रस या क्वाथ से।
बवासीर में–हरड़ और गुड़ से।
मूत्रावरोध में-गोखरू के शीत कषाय से।
अरुचि में–ठण्डे जल से।
दाह में-मिश्री के शरबत के साथ।
विष्टम्भ में–कुटकी और अमलतास के साथ।
ज्वर में–चिरायते के क्वाथ के साथ।
बच्चों की कुकर खांसी में–मुलहठी के क्वाथ से।

इसी प्रकार अनेक अनुपान से अनेक रोगों को लाभ पहुंचाती है। स्वाद में बहुत ही बढ़िया है

विद्याभास्कर वैद्यराज रणवीर शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य

इन्द्र औषधालय नाई मंडी, आगरा
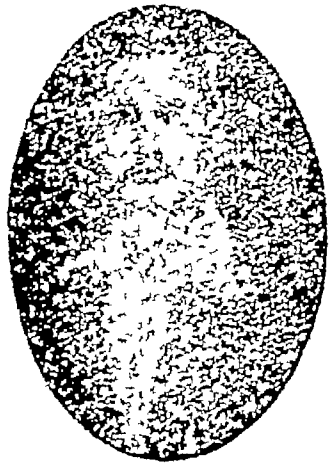
—लेखक—

पिता का नाम—डा० इन्द्रजीत जी रावत "प्रधान"

आयु—३२ वर्ष जाति—क्षत्रिय (राजपूत)

प्रयोग-विषय--१-प्रमेह २-उदर रोग

"श्री. शास्त्री जी ने नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेद-विशारद तथा आयुर्वेदाचार्य की परीक्षाऐं पास की हैं और बाबा काली कमली वालों के धर्मार्थ औषधालय श्रीनगर में आपने सक्रिय ज्ञान प्राप्त किया है। आप उदर-रोगों के विशेषज्ञ हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित व उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

मेहमिहिर चूर्ण--

बबूल की फली (छाया शुष्क बिना-बीज की)	आधा सेर
छटंगन के बीज	शतावरी
वंशलोचन	छोटी इलायची
शीतलचीनी	विदारीकन्द सफेद
गोखरू छोटा	गोखरू बड़ा
तालमखाना	चन्दनचूरा सफेद
आमला सूखा	प्रवाल भस्म
मुक्ता-शुक्ति भस्म	—हरेक ३-३ तोला
मिश्री	तीन पाव

निर्माण विधि—भस्मों को छोड़कर शेष औषधियों को कपड़छन कर भस्में मिलादें। प्रातः तथा सायं धारोष्ण दूध से ६-६ माशे लिया करें। अनुकूल पड़ने पर १-१ तोला तक भी सेवन किया जा सकता है।

गुण ४-५ दिन सेवन करने से स्वप्नदोष, प्रमेह आदि वीर्य-विकार नष्ट होजाते हैं। यह स्तम्भक भी है।

नोट--यदि कब्ज़ की शिकायत हो तो रात्रि में सोते समय ईशबगोल १॥ तोले या त्रिफला चूर्ण ६ माशे पानी के साथ सेवन करें। यह स्वप्नदोष तथा वीर्य-विकारों में अनुभूत है।

घनसाराद्यासव--

१—शुद्ध कपूर	२ तोला
२—सत्व पिपरमेंट	१ तोला
३—सत्व अजवायन	१ तोला
४—एमोनियां कार्ब (लिक्विड)	६ माशे

५–उत्तम संजीवनी सुरा या रैक्टीफाइड
 स्प्रिट ४० तोला
६–अर्कमूल चूर्ण १ तोला
७–जायफल १ तोला
८–सत्व लोबान ६ माशे
६–लौंग १ तोला
१०—अहिफेन (कच्ची) १ तोला
११—बड़ी इलायची के बीज १ तोला
१२—अकरकरा १ तोला

निर्माणविधि– नं० ६ से १२ तक की औषधियों को बारीक पीस लें और काच की डाट वाली बड़ी शीशी में संजीवनी सुरा भरकर उसमें थोड़ा २ करके इस चूर्ण को मिलादें और कार्क बन्द कर ७ से १०दिन तक धूप में रक्खें, कभी २ हिलाते रहें। कार्क इतना मजबूत लगा हो कि जिससे वायु का प्रवेश न हो, छिद्र रह जाने से संजीवनी सुरा उड़ जायगी। कार्क, मुलतानी मिट्टी या चपड़ा भी लगा सकते हैं।

—१० दिन बाद फिल्टर-पेपर, फलालेन, ऊन आदि स्वच्छ कपड़े से छानकर तुरन्त शीशी में भरलें। पश्चात् नं० १ से ४ तक की चीजें इसी में डालदें और धूप में रखकर एक रस कर लें।

प्रयोग-विधि व मात्रा–१ बूंद से १० बूंद तक बूरा, बताशा या पानी में दे सकते हैं। विशेषावस्था में प्याज का अर्क या नीबू के अर्क में दे सकते हैं। छोटे बच्चों को (१ वर्ष से ५ वर्ष तक) १-१ बूंद ३-३ घन्टे बाद देना उचित है। रोग की प्रबलता में मात्रा का विपर्यय भी हो सकता है।

आन्तरिक प्रयोग के अलावा बाह्य उपयोग भी चमत्कारिक फलदायक है।

शिरः—पीड़ा, वातशूल, आघात जन्य पीड़ा, व्रण आदि में भी फुरेरी से लगा सकते हैं। घाव व्रण आदि में भी वैसलीन लगा सकते हैं। कान के दर्द में ५-६ बूंद केवल या तैल में मिलाकर डालने से पूर्ण लाभ होता है। दन्तशूल, नासिका शूल आदि की पीड़ा को भी शीघ्र शमन करता है।

आन्तरिक उपयोग—

इस सिद्ध आसव का विशूचिका में अच्छा प्रभाव है। प्रथम तथा द्वितीयावस्था में पोदीना अर्क प्याज का अर्क या बूरा में इसका प्रयोग करने से शीघ्र लाभ होता है। वमन, अतिसार को रोक कर दोषशमन करता हुआ वह उदर-शूल को शांत करता व पेशाब लाता है। मूत्रावरोध में—टेसू के फूलों के पानी में कलमी शोरे को पीसकर पेड़ू (मूत्राशय) पर पट्टी रखनी चाहिये। द्वितीय व तृतीयावस्था में—रबर या कांच की बोतलों में पानी भर कर दोनों बग़ल, कटि प्रदेश, तथा जांघों की सिकाई करनी चाहिये। पानी का सेवन न करा कर केवल बर्फ चूसने को देनी चाहिये, अभाव में पोदीना प्याज़ सौंफ आदि का अर्क भी दिया जा सकता है। या इन चीज़ों को पानी में औटा कर देना हितकर है।

विशेष–यदि रोग की तीव्रता हो तो इसकी ५ से १० बूंद तक की मात्रा १-१ घण्टे बाद दी

[शेष पृष्ठ ७०४ पर]

—लेखक—

कविराज वी० जी० भोजवानी

रामकृष्ण आयुर्वेदिक फार्मेसी, लरकाना (सिंध)

"श्री० भोजवानी जी प्रसिद्ध समाज-सेवी हैं तथा बड़े उत्साह से जाति-सेवा का कार्य करते रहे हैं। आपने आयुर्वेद का ज्ञान प० माधव जी शर्मा के पास रह कर प्राप्त किया है। सन् १९४० में आपके ज्येष्ठ पुत्र की अकाल-मृत्यु के कारण आप आयुर्वेद-चिकित्सा द्वारा पीड़ित जनता की सेवा में लग पड़े हैं। आपके निम्न प्रयोग रक्त-विकार व प्रधानतः उपदंश-रोग पर अत्युत्तम प्रतीत होते हैं।"

—सम्पादक।

अष्टमूर्ति रसायन—

रूमी हिंगुल	५ तोला
वर्की हरताल	१० तोला
वालचिकना	१० तोला
रसकपूर	१० तोला
नीलाथोथा	१० तोला
शु० पारद	१० तोला

—सबको बारीक पीस कर ग्वारपाठे के रस में २४ घंटे निरन्तर मर्दन कर १-१ माशे की टिकियां बनालें। इन टिकियों को छाया में सुखा कर डमरू यंत्र द्वारा, चार प्रहर बेरी की लकड़ी की मन्द अग्नि दें और जौहर उड़ालें।

मात्रा—१ चावल, मक्खन २ तोला के साथ प्रातः निगल जांय। औषधि दान्तों से न लगने पाये। दिन में केवल एक बार सेवन करें।

गुण—तीन दिन में उपदंश तथा चर्मरोग नष्ट होजाते हैं। व्रण, विद्रधि, ज़हरबाद, विसर्प पूयमेह आदि रोगों को नष्ट कर अपूर्व शक्ति देने वाली रसायन है।

पथ्य—रोगी को रोजाना १ पाव घृत अवश्य सेवन करना चाहिये। गेहूँ की पूड़ी शुद्ध घृत में बना कर दें।

पारदादि मलहम—

गाय का मक्खन १५ तोला लेकर नीम के क्वाथ से १०१ बार धोकर शुद्ध करलें। मुर्दासन तथा पारद २-२ तोला, आग में फुलाया नीलाथोथा ६ माशे, इन तीनों को तुलसी रस में ३ दिन खरल करें। सूख जाने पर उपर्युक्त शुद्ध मक्खन में मिलाकर मलहम बनालें।

गुण—उपदंशज व्रणों को निम्ब जल से धोकर यह मलहम लगाने से व्रण शीघ्र सूख जाते व नष्ट होते हैं।

लेखक

श्री. पं. शालिग्रामदेव जी शुक्ल वै. शा

अम्मारा (खीरी)

पिता का नाम— पं० भगवान जी शुक्ल वैद्य

आयु—४२ वर्ष जाति—ब्राह्मण
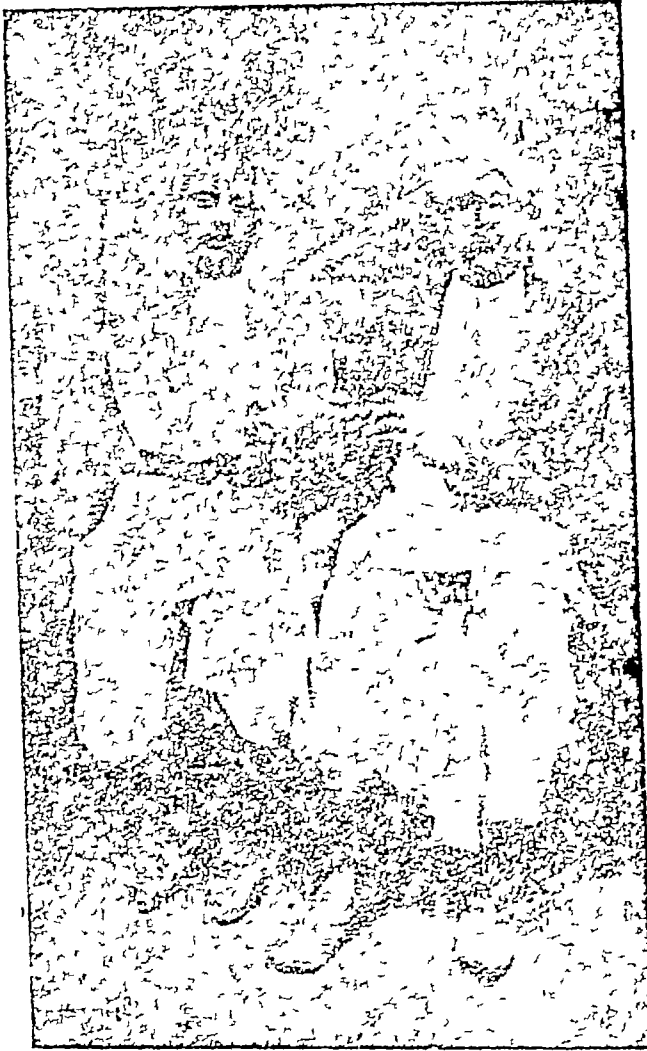
"श्री० शुक्ल जी ने हाथरस से ज्योतिष तथा अपने पिता जी से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया है। आप पुराने ढंग के अनुभवी चिकित्सकों में से हैं । आपने २-३ पुस्तकें भी लिखी हैं तथा आपके निम्न-प्रयोग परीक्षित व उपयोगी हैं।"
—सम्पादक।

अमृत संजीवनी रस—

चन्द्रोदय रस	४ तोला
शुद्ध जयपाल	३ तोला
टंकण भस्म	२ तोला
गिलोय सत्व	१ तोला

—इन चार द्रव्यों को खरल में डाल ३ घण्टे तक भली-भांति घोंटें । पश्चात् निम्न द्रव्यों के क्वाथ में क्रमशः पृथक-पृथक १-३ घण्टे घुटाई करें।

सोंठ मिर्च पीपल छोटी
चित्रक मूल त्वक अद्रक
सेंधा नमक —हरेक २॥-२॥ तोला

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक।

गुण—प्रत्येक ज्वर में लाभकारी है। मल को शुद्ध कर रेचन करता है, किसी प्रकार की निर्बलता नहीं होने देता। यदि रोगी उष्णता अनुभव करे तो शीतलोपचार करना चाहिये।

पथ्य में—दही व चावल का प्रयोग करना चाहिए।

नोट-१. मेरे वंश में कई पीढ़ियों से व्यवहार में लाया जाता है।

२. घुटाई करते समय शुष्क होजाने पर दवा हाथ या शरीर के अन्य हिस्से पर न लगने दें, अन्यथा शोथ होजाना सम्भव है।

पुनर्नवादि तैल—

श्वेतपुनर्नवा मूल २८८ तोला को अठगुने जल

[शेष पृष्ठ २०४ पर]

आयु० विशारद पं० रामस्वरूप जी गौड़

आरोग्यसिंधु औषधालय, फीरोजाबाद

पिता का नाम—श्री० पं० लक्ष्मीनारायण जी वैद्यराज

आयु—४० वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय— १-हृदय रोग २-डब्बा ३-वमन

"श्री० पंडित जी ने संस्कृत की प्रथमा परीक्षा पास कर आयुर्वेद की विशारद व शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपके पिता जी श्री. पं. लक्ष्मीनारायण जी सफल एवं योग्य चिकित्सक हैं, जिन्होंने आयुर्वेद का क्रियात्मक ज्ञान मेरे पूज्य पिता स्वर्गीय वैद्यराज राधावल्लभ जी से प्राप्त किया है। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

लेखक

हृदय की निर्बलता पर—

मुक्ता-पिष्टि (गुलाबजल में की हुई)

प्रवाल भस्म चन्द्रपुटी — वंशलोचन

कहरवा पिष्टि (गुलाबजल में की हुई)

छोटी इलायची के दाने — दालचीनी

छोटी पीपल के दाने — शीतलचीनी

रूमी मस्तगी — वहमन सफेद

गिलोय सत्व — चांदी के वर्क

—प्रत्येक ६-६ माशे

निर्माण-विधि—समस्त कूटने वाली औषधियों को कूट छान कर उसी में मुक्ता, प्रवाल, कहरवा व सत्व गिलोय तथा चांदी के वर्क मिलालें, और केवड़ा अर्क व गुलाब जल १-१ पाव में क्रमशः घोट लें। शुष्क होजाने पर शीशी में रखलें।

मात्रा—३-३ माशे शर्बत अनार के साथ सेवन करें।

गुण—हर प्रकार की हृदय की निर्बलता, हृदय की धड़कन पर लाभप्रद है।

नोट—इसी के साथ अर्जुनारिष्ट १-१ तोला बराबर जल मिला कर भोजनोत्तर सेवन कराने से हृदय की धड़कन का वेग शीघ्र शान्त होता है।

बच्चों का पसली चलने पर—

गोलोचन	३ माशा
एलुआ	६ माशा
जवारे रहमन	१ तोला
केशर	१ तोला
कटेरी का जीरा	१ तोला
यवक्षार	१ तोला
सत्यानाशी के बीज	१ तोला

—सबको कूट पीस कर कपड़छन कर अद्रक स्वरस के साथ बाजरा के समान गोली बना छाया में सुखालें।

सेवन विधि-सेहुंड का पत्ता गर्म कर रस निकाल लें। १ माशे इस रस में १ माशे शहद तथा १ गोली घोलकर प्रातःसायंकाल दीजिये।

गुण—यह बच्चों का डब्बा (पसली चलना) खांसी (जो सर्दी के दिनों में हो जाती है) तथा विबंध को दूर करती है। कफ को मल द्वारा निकाल कर शीघ्र लाभ पहुंचाती है।

वमन-नाशक—

नारियल जटा की काली भस्म	१ तोला
गेरू फुंका हुआ	१ तोला
बड़ी इलायची (भुनी) के बीज	१ तोला

—पीसकर बारीक करलें। आवश्यकता पड़ने पर १ रत्ती से ४ रत्ती तक शहद के साथ चटाने से हर प्रकार की वमन शांत होती है। तृषा भी दूर होती है। परीक्षित है।

[पृष्ठ २०० का शेष]

आ सकती है। प्रथमावस्था में तो यह औषध सदैव फलदायक है। द्वितीयावस्था में विधिवत् उपचार से लाभदायक है। इसी तरह अन्य अवस्थाओं में भी रोग के भयंकर आक्रमण को नष्ट कर रोगी को मृत्युमुख से बचाने में समर्थ है। इस पर मेरा बहुत बार का अनुभव है।

अन्य रोगों में—

वमन, अतिसार, अजीर्ण, उदरशूल, मूत्रावरोध, सब प्रकार के अतिसार, प्रवाहिका आदि बहुत से रोगों में इसका प्रभाव शीघ्र ही रोग-निवारक है।

सूचना-इसका अधिक उपयोग विषकारक है, अतएव सावधानी से प्रयोग करना चाहिये।

[पृष्ठ २०२ का शेष]

में क्वाथ करें। चतुर्थांश शेष रहने पर छान लें। इसमें निम्न वस्तुएं डालें।

काली बकरी का दूध		२२८ तोला
काले तिल का तैल		१०० तोला
लोबान		८ तोला
काली मिर्च	राल	५-५ तोला
लालचन्दन	अगर	रुद्राक्ष
विष्णुकान्ता श्वेत		कपूर देशी
खस	मंजीठ	गंधबार
चन्दन बुरादा		—हरेक २-२ तोला

—काष्ठादि औषधियों को यव-कुट करके डालें और मंदाग्नि से पाक करें। तैल मात्र शेष रहने पर छान लें।

गुण—इस तैल की मालिश करने से ज्वर तत्काल उतर जाता है। ज्वर के बाद की निर्बलता भी इसके मर्दन से नष्ट होती है। बालकों के सूखा रोग के लिये भी अत्युपयोगी है।

नोट-तैल मालिश के बाद स्नान नहीं करना चाहिए।
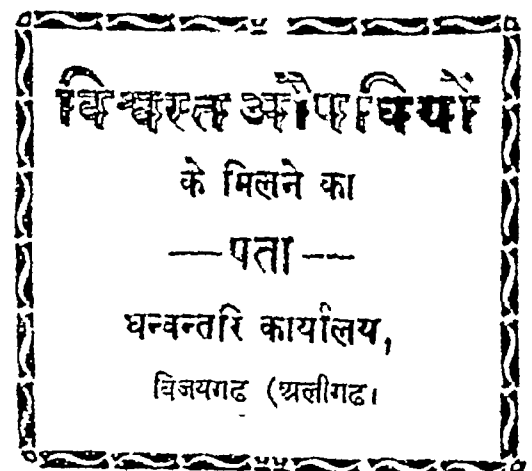
वैद्यराज पं० हनुमानप्रसाद जी मिश्र,

मिश्र औषधालय, मंदसौर, ग्वालियर।

लेखक

पिता का नाम—श्री पं० वंशीधर जी मिश्र
आयु—३४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० मिश्र जी के वंश में कई पीढ़ियों से चिकित्सा कार्य होता आया है। आपने अपने पिता जी से परम्परागत आयुर्वेद ज्ञान प्राप्त किया है। शोथ-रोग के आप विशेषज्ञ हैं। आपके निम्न प्रयोगों में से प्रथम प्रयोग शोथ के लिये अत्युत्तम प्रमाणित हुआ है।" —सम्पादक।

सूजन (शोथ) पर—

पुनर्नवा (सांठ) की जड़ १ सेर
चित्रक आध सेर अजवाइन पाव सेर

निर्माण—आठ सेर गौ-मूत्र में ३ दिवस कांच अथवा कलईदार वर्तन में भिगो रखें। ३ दिन बाद भवका से अर्क निकाल लें।

सेवन-विधि—प्रातः सायं २-२ तोला अर्क दें।

पथ्य—केवल २१ दिन तक गौ-दुग्ध ही दें।

गुण—वातज, पित्तज एवं कफज हर प्रकार का शोथ (सूजन) २१ दिन में अवश्य जाता रहता है। परीक्षित है।
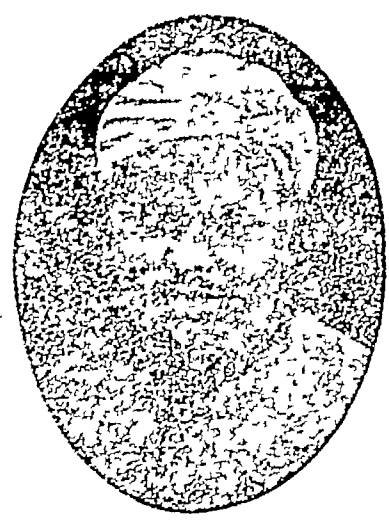
क्षुधावर्धक चूर्ण—

भांग धुली त्रिफला त्रिकुटा
सनाय —प्रत्येक २॥ २॥ तोला
दालचीनी ६ माशे मिश्री १० तोला

निर्माण—सबका चूर्ण बना २० तोला शुद्ध मधु में मिलाकर चटनी बनालें।

सेवन-विधि—प्रातः सायं २-२ माशे दूध के साथ लें।

अपथ्य—तैल, गुड़ तथा खटाई का सेवन न करें।

गुण—इसके सेवन से उदर-विकार दूर होकर भूख बढ़ती है तथा बल की भी वृद्धि होती है।

श्री० वैद्यराज पं० काशीनाथ जी शर्मा

निम्बाहेड़ा [टोंक]

लेखक

वात रक्त पर—

चिरायता	उसवा	कालनी
सौंफ	तुख्म रिहां	सनाय

प्रत्येक १०-१० तोला।

> पिता का नाम—श्री पं० केशरीमल जी
>
> आयु—६१ वर्ष जाति—ब्राह्मण
>
> प्रयोग-विषय—१-वातरक्त २-नेत्ररोग
>
> "श्री० वैद्यराज जी वयोवृद्ध अनुभवी चिकित्सक हैं। आपने पर्याप्त देश-पर्यटन किया है। बनारस की प्रथमा, पटना की मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण की हैं और पीलीभीत विद्यालय में एवं स्वामी लच्छीराम जी जयपुर वालों से आपने आयुर्वेद-ज्ञान प्राप्त किया है। आप ज्योतिष शास्त्र के भी अच्छे ज्ञाता हैं। सरल स्वभाव एवं सादगी के लिये तो आप सुप्रसिद्ध हैं। राष्ट्रीय विचार एवं सेवा-भावना आप के अंदर कूट-कूट कर भरी है। आपके निम्न प्रयोग सरल व उत्तम हैं।" —सम्पादक।
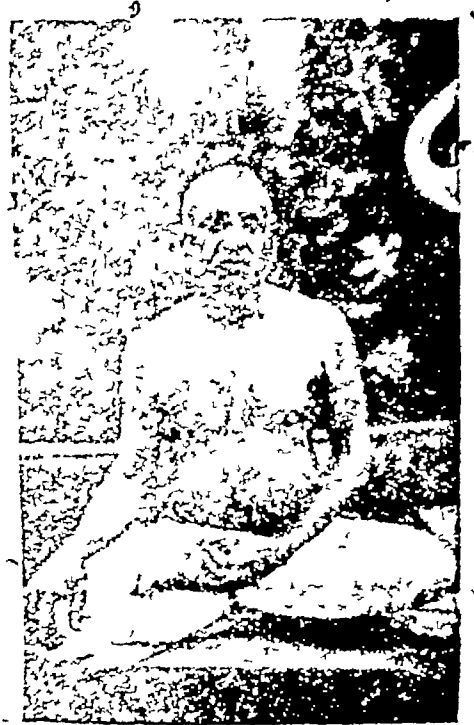
—सबको बारीक कूट सात पुड़िया बनालें। एक पुड़िया प्रातः मिट्टी के बर्तन में ४० तोला पानी में भिगो मन्द अग्नि से पकावे, २० तोला जल रहने पर छान कर पिलावें। जो छान या (फोक) बचे उसे उसी बर्तन में ४० तोला पानी में भिगोकर सन्ध्या को उसी तरह क्वाथ कर छान कर पिलावें। इस तरह सात दिन दें। पथ्य—केवल दूध, घी, शकर से भोजन करें।

नेत्रबिंदु—

ताम्बे के तार का टुकड़ा	लाहोरी नमक
नौसादर	गंधक

—प्रत्येक २-२ तोला।

निम्बु का रस ताजा १ बोतल

—यह सब वस्तु बोतल में डाल दें। प्रतिदिन हिलाते रहें। बहुत गहरा हरा रंग होने पर आंख में केवल १-१ बूंद डालें। पिचकारी से नहीं, क्योंकि पिचकारी से मात्रा ज्यादा पड़ जाती है।

श्री पं. कुन्दनलाल जी शास्त्री, न्यायतीर्थ, आयुर्वेदाचार्य

प्र०-चिकित्सक स० सि० दिगम्बर जैन धर्मार्थ औषधालय, कटनी।

*

'श्री० शास्त्री जी ने जयपुर की आयुर्वेदाचार्य, कलकत्ता की न्यायतीर्थ आदि परीक्षाएँ उत्तीर्ण की हैं। आप कुशल वक्ता, योग्य लेखक एवं सिद्ध-हस्त चिकित्सक हैं। विवादास्पद सामाजिक एवं धार्मिक विषयों पर आपके विवेचनात्मक लेख जैन पत्रों में प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं। आपसे आयुर्वेद जगत को बहुत कुछ आशाएँ हैं।" —सम्पादक।

मलेरिया ज्वरहरी वटी—

चूना खाने का	५ तोला
सोना गेरू शुद्ध हुआ	१० तोला

—दोनों को पानी में अलग २ भिगो कर, फिर एक जगह मिलाकर ३ दिन घोटें। जब गोली बनाने योग्य होजाय तब चना बराबर गोली बनाकर रक्खें।

मलेरिया के रोगी का तापमान नार्मल आने पर २-२ गोली पूर्ण वयस्क को निगलवा कर ठण्डा पानी १ छटाक पिलादे। ३-३ घण्टे पर दवा दें। बुखार को अवश्य रोक देगी।

श्वेत-प्रदर नाशक योग—

पलासपत्र (नवीन कोंपल) सूखे	२१ तोले
देशी खांड	२१ तोले

—दोनों को मिलाकर कपड़-छन चूर्ण करलें। कच्चे धारोष्ण गौ दुग्ध में मिश्री मिलाकर सुबह-शाम १-१ तोला दें। प्रदर अवश्य चला जायगा। पूर्ण परीक्षित है।

पिता का नाम
श्री. ब्रजलाल जी

*

आयु-४२ वर्ष

जाति
दिगम्बर जैन

*

प्रयोग-विषय—
१-मलेरिया
२-प्रदर

लेखक

पथ्य—पूर्ण ब्रह्मचर्य रखें। चावल, बादी की वस्तुयें, तैल, गुड़, खटाई, मिरच का परहेज़ रखें।

नोट—यह योग भी मैं बरसों से अपने यहां बरत रहा हूँ।

—o—

श्री०प्रो० डा० माधवाचार्य कवले आयु०

M. B. H. आयुर्वेदिक दवाखाना, शहादा पू० खा०

पिता का नाम--श्री भगवानराय खडु जी कवले देशमुख

आयु—४८ वर्ष जाति—कवले

"श्री० प्रोफेसर साहब आयुर्वेद के योग्य विद्वान एवं अनुभवी चिकित्सक हैं। आपने विविध-संस्थाओं से आयुर्वेदाचार्य आदि परीक्षाएं पास की हैं और आपके चिकित्सा-कौशल्य पर मुग्ध कर अनेकों प्रतिष्ठित महानुभावो ने प्रशंसापत्र प्रदान किये हैं, आपके निम्न प्रयोग सफल व परीक्षित हैं।" —सम्पादक।

—लेखक—

बालरोगों पर—

हरड़	सैंधव	जायफल
लवंग	काली मिर्च	सोंठ
पीपल बड़ी	बेलगिरी	केशर
नागरमोथा		संचर लवण
सुहागा भुना		अतीस

निर्माण-हरेक समान भाग लेकर कूट कपड़-छन कर खरल करलें, पानी के साथ खरल करें। २-२ रत्ती की गोलियां बनालें।

अनुपान-६ माह तक के बच्चों को आधी-आधी गोली मां के दूध के साथ दें। बड़े बच्चे को यथानुसार मात्रा बढ़ाकर दें।

गुण-इससे बच्चे का पेट साफ रहता है, कृमि, चर्म-विकार, अपचन, अग्निमांद्य, पुराना ज्वर, खांसी, कृशता, अतिसार आदि विकारों की उत्तम गुणप्रद व परीक्षित दवा है।

खांसी पर—

मृगशृंग भस्म	१ रत्ती
प्रवाल भस्म अग्निपुटी	१ रत्ती
स्वर्ण माक्षिक भस्म	१ रत्ती
सितोपलादि चूर्ण	३ रत्ती

निर्माण--सब मिलाकर ३ मात्रा बनालें। प्रातः-दोपहर तथा रात्रि को सोते समय दें।

अनुपान--तुलसी रस १॥ माशे, मधु १ माशे, शक्कर २ रत्ती के साथ एक पुड़िया मिलाकर दें।

[शेष पृष्ठ २११ पर]

श्री० कविराज ब्रजमोहन जी नागर वैद्यशास्त्री

स्यालकोट (पंजाब)

पिता का नाम— श्री पं० मेलाराम जी नागर

आयु—२६ वर्ष जाति-ब्राह्मण

"श्री० नागर जी ने अंग्रेजी पढ़ने के बाद सनातन धर्म आयुर्वेद कालेज लाहौर में आयुर्वेदाध्यन किया है। तत्पश्चात् पिता जी की सरक्षता में सक्रिय चिकित्साभ्यास करने के बाद अपने पिता जी के औषधायल में ही चिकित्सा कर रहे हैं। श्वेतकुष्ठ के लिये आपका निम्न "हरीतकी कल्प" आशा है लाभ-प्रद सिद्ध होगा।" —सम्पादक।

लेखक

हरीतकी कल्प—

(श्वेतकुष्ठ पर)

किसी शुभ नक्षत्र में मंगलवार के दिन यह कल्प प्रारम्भ करें। प्रथम दिन प्रातःकाल बाल हरड़ (जंग हरड़) जिसे छोटी हरीतकी भी कहते हैं, एक अदद नवनीत (लौनी या मक्खन) में खिलावें। प्रति-दिन १ हरड़ बढ़ाते जांय, २१ वें दिन २१ हरड लें। हरड़ की तादाद के अनुरूप ही नवनीत की मात्रा भी बढ़ाते जांय। २२ वें दिन से १-१ हरड़ कम करते जांय। ४२ दिन मंगलवार को ही यह कल्प समाप्त किया जाय। जिस प्रकार हरड़ घटाते जांय। उसी क्रम से नवनीत की मात्रा भी कम करते जाइये। नवनीत शुद्ध होना चाहिये। दागों पर निम्न मलहम लगावें।

पथ्य—नमक कम से कम, और यदि सम्भव हो तो क़तई न लें। घृत का अधिक सेवन करें। गेहूँ की रोटी, मूंग, अरहर की दाल, चने की दाल का व्यवहार करें। प्यास लगने पर ताज़ा पानी पी सकते हैं।

गुण—इसके प्रभाव से प्रथम चिभियां पड़ेंगी और बाद में चमड़ी काली होकर अपने प्राकृतिक रूप में आजायगी। कई रोगियों पर अनु-भव कर चुके हैं।

श्वित्र दागों पर—

अशुद्ध पारद	१ तोला
बावची	६ माशे
गंधिल	६ माशे

[शेष पृष्ठ २११ पर]

श्री० वैद्य-चूड़ामणि पं० फतहशंकर जी शर्मा

आयुर्वेदाचार्य, बूंदी (राजपूताना)

पिता का नाम— वैद्य कालूराम जी शर्मा

आयु—४० वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-अतिसार २-श्वेत-प्रदर ३-वात-गुल्म

"श्री० वैद्य जी के वंश में बहुत पहिले से वैद्यक-कार्य होता आया है। आपने स्वर्गीय पं० विशुद्धानन्द जी शास्त्री से आयुर्वेद-ज्ञान प्राप्त किया है तथा आप बहुत समय से स्थानीय सार्वजनिक धर्मार्थ औषधालय में प्रधान वैद्य हैं और अनुभवी चिकित्सक हैं। आपका प्रथम प्रयोग पूर्ण परीक्षित एवं अत्युपयोगी है। पाठक व्यवहार में लाकर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

प्रवाहिका आमातिसार और रक्तातिसार पर—

वज	लौंग	काली मिर्च
छोटी हरड़	काला नमक	हींग (हीरा)
अफ़ीम		—प्रत्येक १-१ तोला
पीपल		६ माशा
छुहारे (मोटे)		२० नग

विधि-छुहारों के अलावा सब औषधियों को कूट कर कपड़-छन चूर्ण करलें और छुहारों को १२ घंटे तक पानी में भिगोदें, छुहारे अच्छी तरह भीग कर फूल जांयगे, तदुपरान्त छुहारों को एक तरफ चाकू से चीर कर गुठलियां निकाल दें और चूर्ण की हुई औषधि को छुहारों के अन्दर भर कर धागे से लपेटें। अब महुए (महोबे) के पान लेकर एक-एक छुहारा एक-एक पान में लपेट दें और इस पर भी धागा लपेट दे। इसके बाद पानों में लपेटे हुए, छुहारों को इकट्ठा करके चौतरफा महुए के पत्ते लपेट कर, धागे से मजबूत पिंडाकार लपेटें और ऊपर मिट्टी में सना हुआ कपड़ा लपेट कर सुखावें। वन-कण्डों की अग्नि में पुटपक्व विधि से तैयार करलें। छुहारे अन्दर जलने न दें। ठीक तरह स्विन्न होजाने पर निकाल कर स्वांग शीतल होने पर तोड़ कर अन्दर के छुहारे निकाल लें। धागा अलग करके छुहारों को चटनी की तरह बारीक पीस कर चने बराबर गोलियां बनालें।

मात्रा—पूर्ण मात्रा २ से ३ गोली तक ३-४ घंटे के अन्तर से ४ बार।

अनुपान—शीतल जल अर्क सौंफ और कुटज क्वाथ।

पथ्य—दही, चावल, साबूदाने की खीर, पपीता, अनार, मौसम्बी और नारंगी स्वरस। इसके अलावा अन्य पदार्थ त्याग दें।

गुण—इसके सेवन से प्रवाहिका, आमातिसार और भयङ्कर रक्तातिसार शीघ्र ही आराम होते हैं। औषध की मात्रा ज्यों-ज्यों पेट में पहुँचती जायगी रोग क्रम-पूर्वक घटता जायगा। आध्मान होने का भय नहीं है। मैं अपने औषधालय में इसको ६ वर्ष से बरत रहा हूँ, किसी प्रकार के उपद्रव की शङ्का नहीं है। दूध पीते हुए बालक को अवस्थानुसार मात्रा देनी चाहिये।

विशेष—इसको चिरस्थायी और शीघ्र फलप्रद बनाने के लिये, मैं इसमें शु० पारद १ तोला और शु० गन्धक १ तोला की कज्जली भी मिला देता हूँ। यह प्रयोग शास्त्रीय नहीं है।

श्वेत प्रदर पर फकीरी योग—

नीम के बीज की मिंगी	१० तोला
मुनक्का बीज निकले हुए	१० तोला

विधि नीम की मिंगी बारीक पीस कर इसमें मुनक्के इस तरह सिल पर मिलावे कि दोनों का एक जीव होजावे। झरबेरी के बेर से दूनी बड़ी गोलियां बनावें।

मात्रा—१ से २ गोली तक।

अनुपान—बबूल (कीकर) की पत्तियों का क्वाथ।

गुण—इसके ४१ दिन के लगातार (दिन में एक बार प्रातः) के प्रयोग से अत्यन्त बढ़ा हुआ, जीर्ण श्वेत प्रदर नाश होता है। कई बार का अनुभूत है। खट्टी और गरम वस्तुओं से परहेज करें।

बातगुल्म पर फकीरी चुटकला

अफीम	२ चावल
चूना खाने का बिना बुझा	३ से ४ माशा
हल्दी खाने की	१ माशा
गुड़ पुराना	१ माशा

—इन सबको मिलाकर एक गोली बनालें, यह एक ही मात्रा है। इसको गरम जल के साथ निगलवादें। दर्द तत्काल बन्द होगा।

[पृष्ठ २०८ का शेष]

नोट—यदि बालकों को खांसी से अधिक कष्ट हो तो प्रथम प्रयोग की एक गोली भी इसी में मिला कर दें, शीघ्र लाभ होगा।

वमन पर—

सोंठ तथा शक्कर दोनों समान भाग लेकर बारीक करें और घी के साथ दें।

गुण—जिसे यकायक कै दस्त होजाय उसके लिये यह प्रयोग उत्तम लाभप्रद है।

[पृष्ठ २०६ का शेष]

हरताल, वर्की	६ माशे
गंधक आंवलासार	६ माशे

—इनको मर्दन कर धतूरे के स्वरस में ३ दिन घुटाई करें। फिर काली गाय के मूत्र में ३ दिन खरल कर सुखा कर रखलें। श्वेतकुष्ठ के दागों को बन-उपले से रगड़ कर काली गाय के मूत्र में औषध मिला कर लेप करदें। यह लेप २ घंटे लगा रहने दें, बाद में धो डालें। दिन में दो बार इसी प्रकार लगाना चाहिये।

वैद्यभूषण श्री० विश्रामानन्द जी शास्त्री,

विश्राम रसशाला, चांपानेर दरवाजा, बरौदा।

पिता का नाम— श्री० खेम जी भाई

आयु—३६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

लेखक

मरोड़ के साथ होने वाले दस्तों पर दो अपूर्व योग—

—बेल चूर्ण	१ तोला
अतीस कड़वी	२ तोला
भुनी हींग	३ माशा
अफ़ीम	१ तोला
पुरानी कार्क की भस्म	१ तोला
प्रवाल भस्म	६ माशा

—सबको बारीक पीस कर शर्बत में झड़बेरी के बेर बराबर गोली बनालें।

मात्रा-१ से २ गोली जल के साथ।

> "श्री० शास्त्री जी अपनी छोटी आयु में ही पिता जी के साथ अफ्रीका गये और वहीं पर १२ वर्ष शिक्षा पाई। इसके बाद आप अपनी मात्र-भूमि भारतवर्ष वापस आये और बडौदा में धर्मार्थ औषधालय की स्थापना कर गरीबों की चिकित्सा बड़ी लगन के साथ करने लगे। जिसके कारण आप वहा की जनता के प्रिय बन गये हैं। आपका मुख्य ध्येय धनिकों से द्रव्य लेकर दीन हीन मनुष्यों की सेवा में लगाना रहा है। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी व परीक्षित हैं।"
>
> —सम्पादक।

२—शुद्ध संखिया	६ माशा
शुद्ध अफ़ीम	२ तोला
शुद्ध बच्छनाग	१ तोला
शुद्ध कनक बीज (धतूरे के बीज)	६ माशा
केशर	१ तोला

—इन्हें पीस कर मूंग के बराबर गोली बनालें।

मात्रा—प्रात-सायं १-१ गोली जल के साथ दें।

श्रीमान् वैद्य हरीराम जी बराटे,

श्री शङ्कर आयुर्वेद सेवाश्रम, भुसावल ।

पिता का नाम—श्रीमान् राम जी बराटे

आयु – ५१ वर्ष जाति—लेवा हिन्दू

प्रयोग-विषय—१-मलेरिया २-बवासीर

"श्री० बराटे जी आयुर्वेद के विद्वान, वयोवृद्ध एवं अनुभवी व्यक्ति हैं। आपको आयुर्वेद विद्यादान का शौक है और सदैव ४-६ विद्यार्थी आपसे आयुर्वेद-ज्ञान प्राप्त करते रहते हैं। आपने आंग्ल 'मिश्र आयुर्वेद विद्यालय सतारा' तथा अ. भा विद्यापीठ से आयुर्वेद-विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपके निम्न प्रयोग उत्तम व परीक्षित हैं।" —सम्पादक ।

लेखक

मलेरिया पिल्स—

भुनी हुई करंज-गिरी भुनी हुई कुटकी
शुद्ध कुचला सेका हुआ इन्द्रजव
नीम की निम्बोली चिरायता
काला जीरा डीकामाली
सौंठ पीपल काली मिर्च
दारु हल्दी गिलोय बड़ी हरड़
आंवला बहेड़ा
अनीस कालमेघ फिटकरी
सप्तपर्ण वृक्ष की अन्तर की छाल

निर्माण-विधि—सब द्रव्य समभाग लेकर कपड़-छन चूर्ण करें। सम्भालू की पत्ती, धतूरे की पत्ती और कालमेघ इन तीनों के स्वरस में एक-एक दिन मर्दन करके चने समान गोलियां बनालें।

मात्रा—२ से ४ गोली दिन में ३ बार जल के साथ दें। छोटे बच्चे को १ से २ रत्ती दूध के साथ दें।

गुण-इस वटी के सेवन से सब प्रकार के विषम ज्वर मलेरिया, संतत, सतत, एकतरा, तिजारी और अन्य ज्वर दूर होते हैं।

बवासीर पर—

शुद्ध रसौत छोटी हरड़
नीम की निंबौली की गिरी
बकायन की गिरी —प्रत्येक १०-१० तोला

—सबको बारीक पीसकर कपड़-छान करलें, इसके बाद कुकुरोंदे के रस में ३ दिन, लाल

[शेष पृष्ठ २१७ पर]

श्री० वैद्यभूषण पं. चन्दूलाल लक्ष्मीचन्द्र फड़के,

हैदराबाद (सिंध)

लेखक

"श्री० फडके जी का जन्म कच्छ (माडली) में सम्वत् १९७० में हुआ। आपकी बचपन से ही उत्कट इच्छा थी कि "मैं डाक्टर बनूं" और अन्ततोगत्वा आप चिकित्सक बन ही गये। आपने नि० भा० विद्यापीठ से वैद्यभूषण की परीक्षा उत्तीर्ण की है और आप अनुभवी वैद्य हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित व उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

बृहत् आमराक्षसी वटी—

हिंगुल	४ माशा
काली मिरच	६ माशा
अहिफेन (अफ़ीम)	६ माशा
हींग	६ माशा
सुहागा (फूला हुआ)	५ माशा

बनाने की विधि—हिंगुल ४ माशा लेकर नीबू के रस में खरल करें। अफ़ीम ६ माशे के छोटे-छोटे टुकड़े करके, उक्त हिंगुल के साथ दो पहर तक खरल करें, ताकि दोनों मिलकर एक होजांय। बाद में बाकी सब चीज़ें कूट कर मिलादें और फिर खूब खरल करें और मूंग बराबर गोलियां बनायें। दवा अगर खुश्क होजांय, तो पानी मिलाकर गोली बनाने के योग्य करलें।

गुण—उक्त गोलियां अतिसार Diarrhoea संग्रहणी (Chronic Diarrhoea), आमातिसार (Mucous-Colitis) तथा विशूचिका (Cholera) में बहुत लाभदायक हैं। जिनको बार-बार आमातिसार होता हो उनको भी लाभ करती हैं।

मात्रा—वय तथा बलाबलानुसार १ से ४ गोली, एक बार में दे सकते हैं, रोग की दशा देखकर कम या ज्यादा कर सकते हैं। लेकिन एक बार में चार गोली से अधिक न देना चाहिये। पहिले चार गोली पानी या सोडा के साथ दें फिर जब तक दस्त बन्द न हो, हर एक दस्त के बाद, दो दो गोली पानी से देते रहें। उक्त मात्रा जवानों के लिये है, बच्चों के लिये सोच-विचार कर दे सकते हैं।

बेताल रस—

शुद्ध गंधक	शुद्ध पारद
शुद्ध वत्सनाग	शुद्ध हरताल वर्की
काली मिरच	स्वर्ण माक्षिक भस्म

[शेष पृष्ठ २१७ पर]

वैद्यराज पं० क्षेमचन्द्र जैन विशारद

सर्व-हितैषी औषधालय, कटनी ।

लेखक

"श्री० पंडित जी का जन्म १९१० में सागर जिला के नारादेही ग्राम में हुआ । आपने कलकत्ता के प्रसिद्ध कविराज बाबूलाल जी से आयुर्वेद-ज्ञान प्राप्त किया है । आपकी कटनी के प्रसिद्ध व योग्य चिकित्सकों में गणना है । अ० भा० विद्यापीठ की विशारद व आचार्य परीक्षा पास की है । आप जैन विद्यालय के जनरल सेक्रेटरी भी हैं । आपके निम्न प्रयोग परीक्षित व उपयोगी हैं ।"
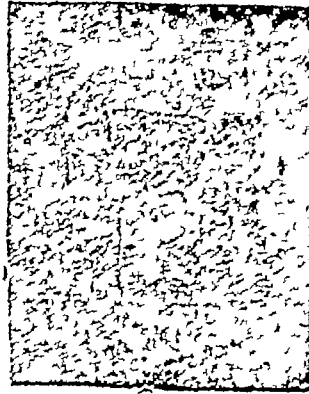
—सम्पादक ।

जीर्ण ज्वर पर—

चिरायता	६ माशा
गिलोय हरी	१ तोला
छुहारा	नग १
करंज की पत्ती	गुलबनफ्शा
सौंफ	गोरखमुण्डी
नीम की गाठें (पतली डाली के आखिरी-भाग का हिस्सा)	सनाय की पत्ती

—प्रत्येक ३-३ माशे ।

—प्रत्येक वस्तु को जौ-कुट कर मिट्टी के बर्तन में एक पाव ताजी पानी में रात्रि को भिगो दें। प्रातः मल-स्नान कर १ तोला मिश्री या शकर मिला साफ शुद्ध की हुई खूबकला ३ माशे फांक कर ऊपर से उक्त शर्बत पी जाना चाहिये ।

फल—दो सप्ताह के अन्दर कितना ही पुराना बुखार हो, अवश्य दूर होता है । यहां तक कि यक्ष्मा की प्रथमावस्था में भी आशु-लाभप्रद सिद्ध है । यह एक ही मात्रा है ।

नोट—इसमें सनाय होने से सम्भव है कि २-३ दस्त प्रति दिन होजांय, कमजोर अवस्था एवं मृदु कोष्ठ वाले को बिना सनाय के भी दिया जा सकता है । अवश्य लाभप्रद सिद्ध होगा ।

खूबकला की शुद्धि—

पाव भर साफ खूबकला को कपड़े की ढीली पोटली में बांध ३ दिन-रात काफी पानी में भिगो रखें, चौथे दिन निकाल छाया में सुखाकर शीशी में रख लेवें । इसी की ३ माशे की मात्रा लेनी चाहिये ।

वीर्य बन्धु चूर्ण—

(सम्पूर्ण धातु-विकारों के लिये)

नाग मखाना	विदारीकन्द

बहमन सफेद	वंशलोचन
छोटी इलायची दाना	ईसबगोल की भुसी
सालम मिश्री (पंजेदार)	दालचीनी
शीतलचीनी	रूमी मस्तगी
गाजुवां	ढाक का गोंद
बीजबंद गुजराती	इमली की मिंगी
सैंमर का गोंद	मोचरस
सतगिलोय	तोंदरी सफेद
शिलाजीत सत्व	बहरोजा सत्व

प्रत्येक १-१ तोला।

मिश्री	२४ तोला
निम्नांकित प्रवालपिष्ट्यादि	५ तोला

—एकत्र मिलाकर शीशी में रख लेवें।

मात्रा—६ माशे, प्रातः सायं धारोष्ण गो-दुग्ध के साथ लेना चाहिये।

गुण—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, उष्णवातादि, धातु सम्बन्धी सर्व-विकारों पर अपूर्व लाभकारी सिद्ध हुआ है।

प्रवालपिष्ट्यादि योग-प्रवाल की शाखा व जड़, मोती की सीप, कहरवा शमई —प्रत्येक ६-६ माशे।

चांदी के वर्क १ तोला

—सब मिलाकर अर्क केवड़ा या गुलाबजल में ३५ दिन तक खूब घोटें। बाद सूखने के उक्त-प्रयोग में मिश्रण करें।

नोट—स्त्रियों के लिये भी उपयोगी है।

[पृष्ठ २१४ का शेष]

विषखपरे के रस में ३ दिन, कंघी के रस में १ दिन खरल करके छोटे बेर के बराबर गोलियां बनालें।

सेवन-विधि—प्रतिदिन प्रातः और संध्या के समय १-१ गोली ताजे जल के साथ खावें, और रात को सोते समय १ गोली काशीसादि तैल में घिस कर मस्सों पर लगाकर सो जावे।

गुण—खूनी बादी सब प्रकार की बवासीर दूर हो जाती है।

[पृष्ठ २१५ का शेष]

—यह सब १-१ तोला, अद्रक के रस में (कज्जली करने के बाद) खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—एक से दो गोली तक, शहद में मिलाकर चटावें या तालू में लगावें।

गुण—यह रस सन्निपात ज्वर (Typhoid fever) सिरसाम में जब रोगी का शरीर ठण्डा पड़ जाय, मूर्च्छा हो उस समय काम में लाना चाहिए, फौरन बदन को गरमी पहुंचाता है। जब रोगी ठण्डा होकर बिलकुल काल के मुख में हो, उस समय यह गोली दें, ईश्वर कृपा से वह अवश्य बच जाएगा। भय से मूर्छित रोगी या अन्य ऐसी हालत में जहां रोगी को बदन में गर्मी चाहिये उस समय इसका प्रयोग करें, असफलता न मिलेगी।

नोट—उपरोक्त प्रयोगों में से वेताल रस नामक प्रयोग-पूज्य मान्यवर बाबू हरीदास की चिकित्सा-चन्द्रोदय नामक पुस्तक का है, लेकिन हम इसको लगभग १०-११ साल से काम में लाते हैं, एक बार भी निराश नहीं होना पड़ा।
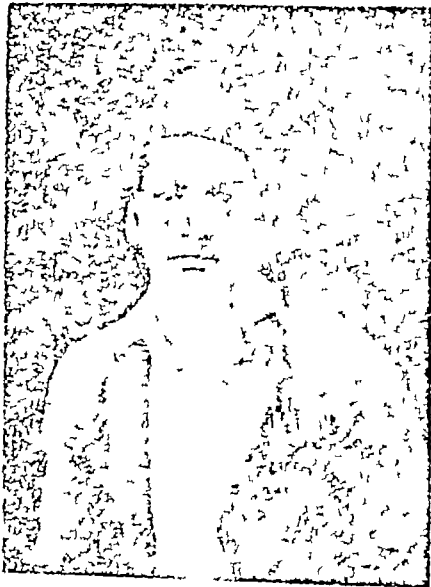
श्री० डाक्टर भगवानदास जी भण्डारी

H.M.B., A.8.V. राष्ट्रीय आरोग्य मंदिर, ललितपुर (झांसी)

पिता का नाम— श्री० लक्ष्मीचन्द जी भण्डारी

आयु—२२ वर्ष जाति-जैन गोलालारे

"श्री० भण्डारी जी उत्साही एवं उद्योगी नवयुवक हैं, आपने "भण्डारी जनरल मैडीकल हाल" भी स्थापित कर रखा है। आप होमियोपैथिक तथा इन्जैक्शन-विधान से भी सुपरिचित हैं। आप जैसे नवयुवकों से आयुर्वेद-समाज को बहुत कुछ आशाएं हैं। आपके निम्न प्रयोग आशा है, उपयोगी सिद्ध होंगे।" —सम्पादक।

पुरुष जीवन—

नागौरी असगंध बढ़िया सोंठ
हरड़ बहेड़ा आंवला
मूसली सफेद —प्रत्येक २॥-२॥ तोला
ताल मखाना भुना ५० तोला
कमरकस भुना २॥ तोला
तज जायफल जावित्री
वंसलोचन गिलोय सत्व भांग
वंग भस्म धुली हुई हरेक १।-१। तोला
शिलाजीत ६ माशा
जहरमोहरा खताई ६ माशा
शक्कर २५ तोला

—सबको कूट-पीस कर कपड़-छान करके तैयार रखें। इसके बाद मौआ की घास छाया में सुखा कर २५ तोला चूर्ण बनावें और एक दिन गिलोय के रस में और एक दिन आंवले के रस में घोट कर सुखालें। इसे उपर्युक्त चूर्ण में मिला दें। बस दवा तैयार है।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक सुबह-शाम गरम दूध के साथ खाना चाहिये।

गुण—इसमें पुरुषों के सब प्रकार के प्रमेह धातु का पतलापन, धातु-सम्बन्धी कुल विकार, विषय करने की असमर्थता शीघ्र-पतन और लगातार सेवन करने से पुराना सुजाक ठीक होते हैं।

स्त्री-जीवन—

असगंध नागौरी नागकेशर सोंठ
पाषाण भेद दारू-हल्दी हजरत जहूर
पठानी लोध —हरेक २॥-२॥ तोला

—पीस-छान कर अशोक की छाल के काढ़े में और पाढल के रस में १-१दिन घोटें और सुखावें बाद में हरड़ बहेड़ा आंवला रसौत २॥ तोला, तज १। तोला, वंसलोचन ६ माशे मोती की सीप कपड़-छन ६ माशे, मिश्री तोला मिलाकर रक्खें।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक सुबह-शाम दूध से देना चाहिये।

गुण—यह दवा भी स्त्रियों के प्रत्येक रोगों के पूर्ण लाभ करती है, हर तरह के रज-दोष, मासिक धर्म जल्दी २ होना ज्यादा आना आदि तमाम रोगों में देने से स्थाई लाभ होता है।

वै.भू. तेजीलाल जी नेमा शास्त्री आयुर्वेदरत्न,

श्री नेमा आयुर्वेद भवन, भाटापारा।

लेखक

पिता का नाम— श्री० काशीराम जी नेमा

आयु—४० वर्ष जाति नेमा (वैश्य)

प्रयोग-विषय—१-हृदय रोग २-बाल रोग

"श्री० नेमा जी के पूर्वज भी चिकित्सा-कार्य करते थे। आप अनुभवी एवं प्रसिद्ध चिकित्सक हैं, आपकी योग्यता पर मुग्ध होकर विविध संस्थाओं से आपका सम्मान रूप कई उपाधियां प्राप्त हुई हैं। मंथरज्वर तथा बाल रोगों के विशेषज्ञ हैं तथा आपके निम्न प्रयोग पूर्ण परीक्षित एवं उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

हृदय रोग पर—

अर्जुन सत्व	१ तोला
अकीक भस्म	६ माशा
अभ्रक भस्म (शतपुटी)	६ माशा
मौक्तिक भस्म	३ माशा
मकरध्वज (षट्गुण गंधक जारित) स्वर्ण मिश्रित	१॥ माशा
केशर उत्तम	३ माशा
उत्तम कस्तूरी दानेदार	६ रत्ती
गुलाब जल	५ तोला

बनाने की विधि—केशर को गुलाबजल में डाल भीगने दें। भस्मों को तथा सत्व को काँच या चीनी मिट्टी के खरल में डाल ऊपर से केशर को जो गुलाब जल में पड़ी है मथकर डाल लें और घुटाई कर रखलें।

मात्रा-१ रत्ती। अनुपान-मृतसंजीवनी सुरा, दोषानुसार।

गुण-हार्ट फेल की बीमारी, दिल की धड़कन कमजोरी, नाड़ी की शिथिलता, शीतांग सन्निपात, मंथर ज्वर जैसी व्याधियों पर अकसीर है। हमारे इस योग ने कई रोगियों को मरते मरते बचा लिया है।

नेमा बालशूलामृत—

सोया का अर्क	१० तोला
सौंफ का अर्क	१० तोला
चूना का जल	१० तोला
मिश्री (बारीक पिसी छनी)	५ तोला
संजीवनी सुरा	५ तोला

[शेष पृष्ठ २२० पर]

श्री. पं. लक्ष्मणकुमार गोवर्धन जी त्रिवेदी

श्री अरुणोदय फार्मेसी, माधवनगर [उज्जैन]

—पिता का नाम—

श्री० पं० गोवर्धनाचार्य जी त्रिवेदी

आयु-२६ वर्ष जाति-गौड़ ब्राह्मण

"श्री० त्रिवेदी जी ने लाहौर विद्यापीठ से "आयु-भिषक" और हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से आयुर्वेद विशारद की परीक्षा पास की है। आपके पिता जी भी वैद्यक-कार्य करते थे। आपके निम्न प्रयोग बाल-रोगों पर उत्तम व गुणप्रद हैं।" —सम्पादक।

अरुण योगामृत वटी—

जायफल	वच	डीकामाली
सैन्धव	करंज के बीज	हींग
हरड़		भुना सुहागा

—प्रत्येक १-१ तोला

केशर १॥ माशा

—तुलसी के रस में इसकी गोलियां बनाली जावें।

गुण—बच्चों के लिये बहुत ही उत्तम है। इससे बाद, दांत सुगमता से निकल आते हैं। खांसी, बुखार, दस्त, उल्टी इत्यादि बच्चों की हर बीमारी के लिये अत्यन्त ही लाभप्रद है।

बालकों के डब्बा रोग-पर—

गौमूत्र १ तोला	लवण पाव तोला
मिश्री आधा तोला	हल्दी १॥ माशा

—सबको मिलाकर अच्छी तरह ४ बार मोटे कपड़े में छान लेवें और शीशी में भर रखें। आध-आध घंटे बाद आधी-आधी चम्मच देते रहें।

गुण—इससे दस्त, उल्टी और पेशाब होकर, डब्बा रोग नष्ट हो जाता है।

[पृष्ठ २१६ का शेष]

विधि—सबको १ कांच की बोतल में डाल, कड़ी डाट लगा कर सूर्य की किरणों में ३ दिन तक रखें। पश्चात् छान कर रखलें।

मात्रा—नये जन्म पाये हुये बच्चों को ५ से १० बूंद, छः माह के बच्चे को एक छोटा चम्मच १ वर्ष तक के बालक को २ चम्मच।

गुण—इससे पेट का दर्द, अपचन, अजीर्ण, दस्त, उल्टी, पेट फूलना या दांत निकलते समय की पीड़ा दूर होती है। बना कर लाभ उठावें। जब बच्चा एकाएक रोने लगे और बन्द न होवे तब इसको देने से बच्चे को शान्ति मिलती और मां बाप की चिन्ता दूर होजाती है। इसके निरन्तर देने से बच्चे तन्दुरुस्त रहते हैं।

श्री० वैद्य पं. आनन्दस्वरूप जी शर्मा मिश्र आयु.

कलंजरी पो० बानी (मेरठ)

लेखक
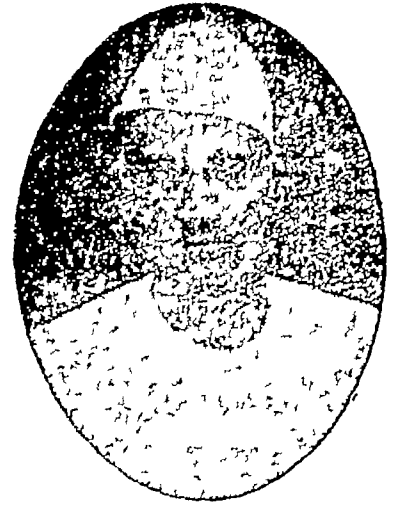
पिता का नाम—पं० लालमनी जी शर्मा मिश्र वैद्यराज

आयु—२६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० मिश्र जी ने अ० भा० आयु० विद्यापीठ से 'आयुर्वेदाचार्य' एवं बनवारीलाल आयुर्वेद विद्यालय दद्‌ली से 'वैद्यराज' की परीक्षायें पास की हैं। आपके वंश में बहुत पहिले से वैद्यक-कार्य होता आया है। आपके निम्न दोनों प्रयोग नेत्र-रोगों के लिये उत्तम हैं।"

—सम्पादक

नेत्र-कल्पद्रुम—

शीशा (नाग)	२० तोला
हिंगुलोत्थ पारद	६ तोला
शीतलचीनी सुरमा काला	३-३ तोला
छोटी इलायची के बीज	३ तोला
जस्ता की खील	३ तोला
पिपरमेंट	१ तोला

निर्माण-विधि—शीशा (नाग) को आग पर पिघला कर गोमूत्र, त्रिफला क्वाथ, गाय का खट्टा मट्ठा(छाछ) सरसों के तैल में क्रमशः ७-७ बार बुझाकर शुद्ध करलें। शुद्ध करने के पश्चात् पुनः पिघला लें। एक लोह-पात्र में हिंगुलोत्थ पारद डाल कर उसी में ऊपर से पिघला हुआ (शीशा) भी डाल दें और किसी छुरी या (कड़)छी से जल्दी ही चला कर मिलावें। थोड़ी (देर मे)ं दोनों मिल जांय तो एक ठिकड़ी सी (बन) जायगी। पारद लुप्त हो जायगा। इस (ठिकड़ी) को खरल में कुटवा कर चूर्ण बनालें। (पि)परमेंट को छोड़ शेष उपर्युक्त द्रव्यों का चूर्ण करलें और दोनों चूर्ण व पिपरमेंट को मिला सौंफ के अर्क की २१ भावना दें। भली-भांति पीस कर बारीक कपड़े में छान कर शीशी में रखलें।

सेवन-विधि—प्रातः-सायंकाल दिन में दो बार सलाई से लगा लिया करें।

गुण—यह सुरमा सभी प्रकार के नेत्र-रोगों पर लाभप्रद है। निरंतर प्रयोग करने पर रोशनी बढ़ जाती है और चश्मा छूट जाता है।

आंख दुखने पर—

रसौत	२० तोला	जल	४० तोला
मिश्री	५ तोला	तुत्थभस्म	१ माशा

—रसौत को पानी में डाल धूप में दो दिन रखा रहने दें। बाद में निथार लें और मिश्री मिला आग पर पकावें, ३० तोला जल शेष रहने पर उतार लें और ठंडा होजाने पर तुत्थ भस्म मिलावें। प्रातः सायंकाल इसमें से १-१ बूंद डालने से शीघ्र ही लाभ होता है। उत्तम प्रयोग है।

वैद्यराज पं० काशीराम जी शर्मा

श्री० धन्वन्तरि फार्मेस्युटिकल वर्क्स, झालू [बिजनौर]

लेखक

पिता का नाम—श्री० पं० जगन्नाथ जी मेरठी

आयु—४१ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० वैद्यराज जी ने 'धामन आयुर्वेद विद्यालय हरद्वार' में आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया है। आप 'महाविश्व औषधालय' कलकत्ता तथा यूनानी एण्ड आयुर्वेद फार्मेसी लिमिटेड मेरठ में प्रधान चिकित्सक रह चुके हैं। मंथर ज्वर एवं विशूचिका के आप विशेषज्ञ हैं। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी और परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।

बालापस्मार वटी—

एलुवा जुन्दबेदस्तर कुन्दरु गोंद

—सब बराबर २ लेकर खरल में अद्रक के स्वरस में बारीक पीसलें और सरसों के बराबर गोलियां बनालें।

सेवन-विधि-इसमें से २ मास के बच्चों को १-१ गोली और ६ मास के बच्चों को ३-३ गोली रोज दें। बारी के दिन २-३ बार खिलानी चाहिये।

अनुपान-गरम जल।

नोट-यह योग अक्सीर है। लेकिन ध्यान रहे, बच्चे को अजीर्ण न होना चाहिये। इसके लिये कोष्ठ की कठिनता, मृदुता के अनुसार प्रति तीसरे दिन १ से २ तोला कास्टरायल (अरण्डी का तैल) देते रहें। लाक्षादि तैल और महानारायण तैल की मालिश करें। दोनों सम भाग में मिलावें।

मेरी धर्म पत्नी को गर्भपात व गर्भश्राव का रोग लग गया। आठ बार गर्भश्राव हुआ। बेहद कमज़ोर होगई और मैंने सन्तान तो क्या उसके भी जीवन की आशा छोड़ दी। एक दिन एक उर्दू के पत्र में "कल्बुलहज़" के विषय में एक लेख पढ़ा और उसे मैंने सेवन कराया। इससे बेहद लाभ हुआ और अब इस रोग का सदा के लिये अंत होकर उसकी सन्तान जीवित होने लगीं।

मैं बराबर इस योग को अनेकों रोगणी स्त्रियों पर बरत चुका हूँ, अचूक साबित हुआ है।

योग निम्न प्रकार है:-

*कल्बुलहज़ १ रत्ती

*नोट-कल्बुलहज़, पाषाण जीव, पत्थर का दिल आदि कई नामों से पुकारा जाता है। यह आगरा, झांसी, ग्वालियर, मंसूरी के पहाडों पर प्राप्त होता है। जब बड़े २ वजनी पत्थरों को फाड़ा जाता है तो यह ... [illegible]

—श्रीयुत राजवैद्य—
ब्रजलाल जी जैन आयुर्वेदाचार्य,
आयु० शिरोमणि, गोगाकुण्ड, इन्दौर।

"आपका जन्म जैनपरिवार जाति बैसाखिया में सम्वत् १९४९ में हुआ है। आप आयुर्वेद के अनुभवी एवं पुराने चिकित्सक हैं। आपने बम्बई के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री प० हरिप्रपन्न जी शास्त्री के पास आयुर्वेद का अध्ययन कर तिब्बत, चीन, जापान, मद्रास, कलकत्ता आदि बड़े बड़े शहरों में भ्रमण करते हुए प्रसिद्ध वैद्यों से विचार-विमर्श कर अपने अनुभव दर्शन को विस्तृत किया है। पहिले बम्बई में अपना औषधालय खोला था। अब आप सेठ कल्याणमल जी के औषधालय में प्रधान वैद्य के पद पर सफलता पूर्वक चिकित्सा कार्य कर रहे हैं।" —सम्पादक।

लेखक

चर्मरोग नाशक मलहम—

पारद काली मिरच गंधक
स्याह जीरा सिंदूर जीरा सफेद
मस्तगी —हरेक समान भाग

—लेकर नीम काष्ठ-खरल कर १०१ बार पानी में धुले घी में या लौनी में मिलाकर मलहम तैयार करलें।

गुण—उपदंश एवं कुष्ठ को छोड़ कर सम्पूर्ण चर्म-रोगों के लिये अत्युत्तम प्रमाणित हुई है।

रक्त शुद्धि के लिये—

शु० गंधक काली मिरच ५-५ तोला
सनाय पत्ती १० तोला

—चूर्ण बना कर रखलें।

मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती तक, पानी के साथ दें।
परहेज़—कुछ ख़ास नहीं।

का पत्थर उनके बीच में से निकलता है, जो रंग में श्वेत होता है। बहुत खोज करने पर भी किसी आयुर्वेद के ग्रन्थ में इसका कुछ वर्णन मुझे नहीं मिला; हां, यूनानी किताबों में कहीं २ इसका उल्लेख मिलता है। यह गर्भस्राव, गर्भपात के अतिरिक्त प्रदर, वन्ध्या-रोग, हिस्टीरिया, प्रमेह, स्वप्नदोष, हैजा, क्षय, मूत्र-कृच्छ, रक्तार्श, विष तथा सर्पदंश आदि अनेक रोगों में लाभदायक है। —लेखक।

चांदी का वर्क १ नग मुक्ता १ नग
वंशलोचन असली १ माशा

यह एक मात्रा है। ऋतुस्नान के बाद तीन दिन तक गाय के दूध के साथ खिलावें। फिर हर महीने १-१ पुड़िया खिलाते रहें, गर्भस्राव तथा गर्भपात का रोग नष्ट होगा, ईश्वर कृपा से लड़का ही होगा। यदि ऋतुविकार हो तो पहले उसकी चिकित्सा करें।

श्री पं. विद्याधर जी शर्मा जोशी आ. शा.

श्री बजरंग आयुर्वेद औषधि भंडार, चूरू।

लेखक

पिता का नाम – श्री० पं० बजरंगलाल जी शास्त्री

आयु – ३८ वर्ष जाति—जोशी

"आप योग्य अनुभवी वैद्य हैं। व्याकरण की मध्यमा तथा आयुर्वेद की आयुर्वेद शास्त्री परीक्षा पास की है। मौक्तिक ज्वर, विषम ज्वर व प्रदर्भ रोग के आप विशेषज्ञ हैं। आपके प्रयोग उत्तम प्रमाणित हैं। पाठक परीक्षा कर फलाफल हमको भी अवश्य सूचित करें।"

—सम्पादक।

मलेरिया ज्वर उतारने की दवा—

नौसादर देशी २० तोला को पहले केले के रस की १ भावना दें। पीछे सूखने पर मकोय के रस और गिलोय के रस की १-१ भावना दें। फिर टिकिया बना डमरू यंत्र से इसका जौहर उड़ालें।

मात्रा-२ से ४ रत्ती, पानी के साथ देवें। विषमज्वर का जब वेग हो, बुखार १०३ या १०४ या इसके ऊपर होजावे, तो १-१ घन्टे के अंतर से २ मात्रा दे देवें। बुखार फौरन कम होजायगा और रोगी को चैन पड़ आयगा। वैद्य महानुभावों को चाहिये कि इस योग को केवल विषमज्वर में ही बरतें, अन्य ज्वरों में नहीं। यह अकसीर योग है।

रक्त बन्द करने की दवा—

अभ्रक भस्म, लोह भस्म, रससिंदूर, लाक्षा (लाख), खूनखराबा —पांचों १-१ तोला
सैलखड़ी ६ माशे
गेरू ६ माशे
मुक्ताशुक्ति पिष्टी १०॥ माशे
अकीक भस्म १०॥ माशे

—इन सब दवाओं को बबूल के पत्तों के रस में घुटाई करें और गोली बनालें।

अनुपान-दूब के रस के साथ १-२ गोली दें।

गुण-किसी भी कारण रक्तप्रवाह हो यह दवा बेहद लाभ करती है। पूर्ण परीक्षित है।

श्री० सरदार उजागर सिंह जी वैद्य,

चौक लछमणसर (अमृतसर)

लेखक

न्यूमोनियां पर—

काक जंघा का क्षार	१ तोला
सुहागा फुलाया हुआ	१ तोला
बारहसिंगा की भस्म	१ तोला
गौदन्ती हरताल भस्म	६ माशे
फिटकरी फुलाई हुई	८ माशे

—बारहसिंगा भस्म को मधु के साथ पीस कर भस्म करलें। फिटकरी को आक के साथ पीस कर टिकिया बनाकर फुलायें। फिर सबको पीसकर शीशी में रखलें।

मात्रा—२ रत्ती तक, बच्चों को ३-४ चावल आयु के अनुसार।
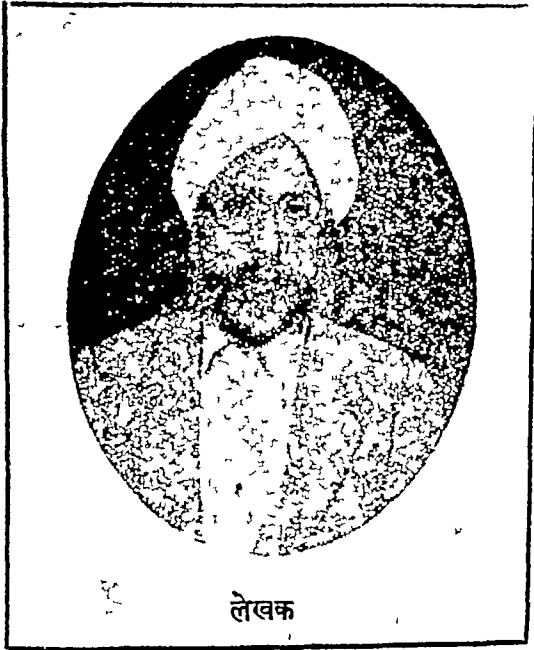
अनुपान—अजवाइन या सौंफ के अर्क के साथ दें।

गुण—यह न्यूमोनियां, पसली के दर्द व ज्वर को ३-४ दिन में कम कर देने वाली परीक्षित दवा है।

योनि शूल में—

त्रिकुटा　　　　शुद्ध बच्छनाग

पलुआ　　　　—तीनों समभाग

—लेकर कूट पीस बकरे के पित्ते के साथ घोट कर १-१ रत्ती की गोली बनालें।

सेवन-विधि—प्रातःसायं १-१ गोली दें, अशोकारिष्ट १-१ तोला में बराबर जल मिला कर ऊपर से पिलावें।

पिता का नाम— सरदार गण्डासिंह जी

आयु—५२ वर्ष　　　जाति—अरोड़

—प्रयोग-विषय—

१-न्यूमोनियां　　　२-योनिशूल

"श्री० वैद्य जी ने आयुर्वेद का क्रियात्मक अभ्यास श्री० सन्त गनेशासिंह जी महन्त की सेवा में १० वर्ष तक रह कर प्राप्त किया है। आप वयोवृद्ध एवं पूर्ण अनुभवी चिकित्सक हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित व उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

स्वर्गीय आयुर्वेदाचार्य डा. देवेन्द्रकुमार जी A.M.S.

डाल्टनगंज (पलामू)

पिता का नाम-वैद्यराज श्री नवमीलालजी वैद्य
आयु-(मृत्यु के समय)-३१ जाति—अग्रवाल
प्रयोग-विषय १—मलेरिया

"श्री० कुमार जी विद्वान एवं योग्य वैद्य थे। हार्दिक खेद है कि आपका प्रेषित प्रयोग आपके जीवन-काल में प्रकाशित न होसका और आप कुछ समय पूर्व ही अपने वृद्ध पिता एवं विदुषी पत्नी को दुखी छोड़ स्वर्गवासी होगये। आप उत्साही सार्वजनिक कार्य-कर्ता एवं मिलनसार व्यक्ति थे"।

—सम्पादक।

विषम ज्वर पर उत्तम प्रयोग—

सुदर्शन चूर्ण की सारी औषधियां १-१ तोला कटुका चिरायता कुल औषधियों का आधा

—इनको यवकुट कर दो भाग करलें। एक भाग को ४ सेर जल में भिगोदें और दूसरे दिन अष्टावशेष क्वाथ बनालें। इसे छान कर पृथक रखदें। अब उपर्युक्त दूसरे भाग को बारीक चूर्ण करलें तथा उक्त काढ़े की ३ भावनायें दे गोदन्ती हरताल भस्म २॥ तोला इसी में मिला कर घोटें और १-२ माशे की गोलियां बनाले।

सेवन-विधि—ज्वर चढ़ने के ५-६ घन्टे पूर्व से ही १-१ गोली शीतल जल के साथ २-२ घन्टे के अन्तर से ३ गोली दें। ज्वर का वेग न होने पर भी ४-५ दिन प्रातः-सायंकाल १-१ गोली शीतल जल से देते रहें।

लेखक

गुण—इससे १-२ दिन में ही जूड़ी का वेग रुक जाता है तथा ४-५ दिन और देने पर ज्वरांश निकल जाता तथा पुनरागमन का भय नहीं रहता

श्री० पं० रामचरनलाल जी दीक्षित,

बी. ए. एल. टी. विशारद
हैडमास्टर-हकीमिया कारोनेशन हाई स्कूल, बुरहानपुर सी. पी.

लेखक
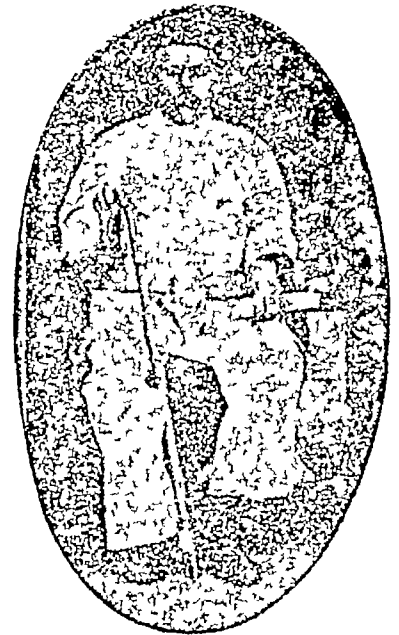
पिता का नाम- श्री० पं० बिहारीलाल जी दीक्षित

आयु —४३ वर्ष जाति—कान्यकुब्ज ब्राह्मण

प्रयोग-विषय- १ शीत ज्वर २-बालकों की खांसी ३-आमवात

"श्री० मास्टर साहब के वंश में बहुत समय से वैद्यक व्यवसाय होता आया है और आपने आयुर्वेदिक-शिक्षा घर पर ही प्राप्त की है। आप संग्रहणी, मन्दाग्नि, प्रसूत-वात रोगों के विशेषज्ञ समझे जाते हैं। आप सी. पी. बोर्ड की मैट्रिक परीक्षा तथा साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओं के परीक्षक एवं केन्द्र व्यवस्थापक हैं, आपके निम्न प्रयोग परीक्षित व उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

शीत ज्वर पर—

कुछ दिनों पूर्व शीत ज्वर आदि पर ज्वरांकुश के साथ २ क्विनाइन का भी विशेष उपयोग किया जाता था। युद्ध काल में क्विनाइन सुगमता से उपलब्ध न होने के कारण निम्न-लिखित प्रयोग सफलता पूर्वक काम में लाया जारहा है। यह सस्ता है और इससे ६० प्रतिशत लाभ होरहा है।

कुटकी भारंगी

चिरायता तीनों —समभाग

—लेकर इसका क्वाथ तैयार कर लिया जाये। इससे एक-दो दिन में ही ज्वर का वेग रुक जाता है। कब्जियत की हालत में इसमें थोड़ी सनाय की पत्ती भी डाल देते हैं।

बच्चों की खांसी के लिये—

अपामार्ग क्षुप का पंचाग छाया में सुखा कर जला डाले। इसकी तीन-चार रत्ती काली राख बच्चों को जल में या पान के रस में देने से बच्चों की खांसी शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

आमवात—

(घुटने-टखने इत्यादि की शोथ तथा पीड़ा पर)

अडूसे के पत्तों का रस १ तोला तथा १ तोला घी मिलाकर उसमें १ रत्ती हरताल भस्म डाल कर रोगी को सुबह-शाम पिलाया जाये। रोगी ७ दिन अथवा १४ दिन केवल दूध रोटी या घी रोटी ही खाये। दर्द और शोथ जल्दी ही दूर होजाता है।

श्रीमती वैद्या शान्तीदेवी जी अग्रवाल

डाल्टनगंज [पलामू]

—लेखिका—

पति का नाम—स्व० श्री रवेन्द्र कुमार जी आयु० ए.एम.एस.

आयु—२८ वर्ष जाति—अग्रवाल

"श्री० वैद्या जी ने आयुर्वेद का ज्ञान अपने स्वर्गीय पति से प्राप्त किया है। आपने हिन्दू विश्वविद्यालय, महिला कालेज में अंग्रेजी आई० ए० तक पढ़ा है। आपके पति विद्वान एवं योग्य वैद्य थे। आपके निम्न प्रयोग उत्तम व परीक्षित हैं।" —सम्पादक।

प्रदर की अचूक दवा—

पाठा जामुन के बीज की गिरी
आम के बीज की गिरी पाषाण भेद
रसौत मोचरस
लजवन्ती (जो छूने से सिकुड़ जाती है)
कमल केसर अतीस नागरमोथा
बेलगिरी लोध्र सोना गेरू
त्रिफला —हरेक १-१ भाग
काली मिरच सोंठ मुनक्का
लाल चन्दन अरलू (सोनापाठा की छाल)
इन्द्रयव अनन्तमूल
धाय के फूल जेठी मधु
अर्जुन की छाल

—सब औषध समान-भाग लेकर महीन चूर्ण बना लेना।

मात्रा—दो से तीन माशे तक, चावल के धोवन से प्रातः सायं। इसके सेवन से सब प्रदर का प्रदर अवश्य आराम होता है। यदि श्वेत-प्रदर की शिकायत हो तो भोजनोत्तर पत्रांगासव १ से २ तोला समभाग जल मिलाकर दोनों समय दें। गर्भाशय को नित्य गुनगुने जल से पिचकारी द्वारा धोना या डूस से धोना भी आवश्यक है।

रजःप्रवर्तनी वटी—

मुसब्बर शुद्ध हींग
सुहागे का लावा शुद्ध कासीस
—चारों २-२ भाग
सोंठ वंगभस्म १-१ भाग

—सबको जल से घोंट कर मटर बराबर गोलियां बनालें। एक-एक गोली दोनों समय गुनगुना जल से मासिक धर्म होने के समय से आठ दस दिन पूर्व ही सेवन करना और रजो काल में बन्द कर देना चाहिये।

[शेष पृष्ठ २३० पर]

राजवैद्य श्री० पं० नित्यानन्द जी शंखधार

वनस्पति रसायन शाला, बीसलपुर

—:x:—

लेखक

पिता का नाम श्री० पं० अंगनलाल जी शंखधार रईस

प्रयोग-विषय—१-टॉनिक २-प्रदर ३-वृकशूल

"श्री० शंखधार जी योग्य एवं अनुभवी चिकित्सक तथा उत्साही सार्वजनिक कार्य कर्ता हैं। यू० पी० प्रांतीय-सम्मेलन के प्रचारक रह कर आपने बड़ा कार्य किया है। आप वनस्पति रसायन-शाला के अध्यक्ष एवं ख्याति प्राप्त वैद्यराज हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं।" —सम्पादक।
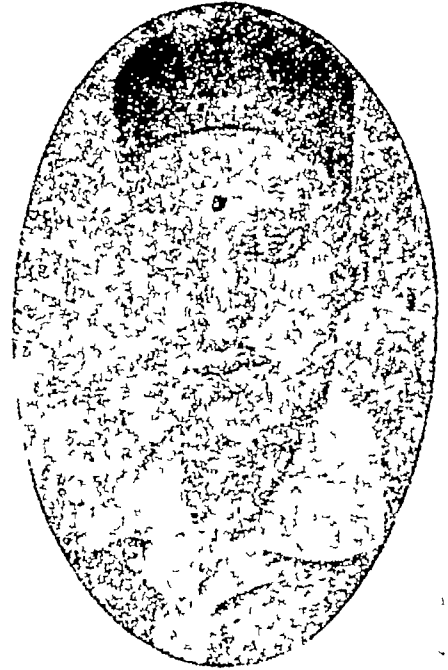
टानिक रसायन—

लवंग के फूल का चूर्ण केशर मोगरा
लाल चन्दन का चूर्ण कस्तूरी भूटानी
सहस्रपुटी अभ्रक भस्म मुक्ता भस्म
फौलाद (लोह) की भस्म मकरध्वज
प्रवाल पिष्टी (गुलाब अर्क में घुटी)

—प्रत्येक ३-३ माशे।

स्वर्ण-वंग ६ माशा
शुद्ध भीमसैनी कपूर ४ माशा
सूर्यतापी शिलाजीत ६ माशे

—इन सब औषधियों को बंगला पान व विदारी-कन्द के रस में घोट कर मटर के बराबर गोली बना लेवें।

सेवन-विधि—गाय या बकरी के धारोष्ण दुग्ध के साथ सुबह-शाम सेवन करनी चाहिये।

गुण—यह (टानिक) रसायन स्त्री-पुरुषों में ताक़त पैदा करता है, और सन्तान को जन्म देने में समर्थ करता है। शरीर का वज़न बढ़ाकर चेहरे पर सुर्खी लाने वाला है। बल, स्फूर्ति, रक्त और शक्ति-वर्धक; क्षयकास, मन्दाग्नि नाशक, सन्निपात, निमोनियां, प्रसूति-रोग में अनुपान भेद से अद्वितीय लाभदायक है।

पथ्य—दुग्ध, घी, फल, लघु और पौष्टिक पदार्थों का सेवन करना चाहिये।

अपथ्य—गुड़, लाल मिर्च, तैल, खटाई, भारी अजीर्ण करने वाले विदाही तथा उष्ण चीज़ों को त्याग देना चाहिये।

प्रदर पर—

मांई छोटी मांई बड़ी

बीजबन्द तालमखाना
रूमी मस्तंगी —प्रत्येक ४-४ माशे ।
इमली के बीज गेरू कच्चा
लेलयड़ी बबूल का गोंद
सालम मिश्री असगन्ध नागौरी
—प्रत्येक १-१ तोला ।
मिश्री ४ तोला
वर्क चांदी ११ नग

—सब औषधों को कूट कपड़-छन करलें, फिर वर्क चांदी मिला देवें।

मात्रा–६ माशे से ६ माशे तक ।

सेवन-विधि–साठी चावल को कच्चे दुग्ध मे मलें, इस घोवन में शर्बत शहतूत २॥ तोला डाल कर पिला देवें या धारोष्ण दुग्ध या चावल के घोवन के साथ में सेवन करावें ।

अपथ्य–तैल, खटाई, मिठाई, मिर्च, क्षार-आदि उष्ण वस्तुओं को त्याग दें ।

गुण–यह योग हर प्रकार के प्रदर के लिये अत्युत्तम प्रमाणित हुआ है ।

वृक्क शूलारि—

हजरल यहूद पीपल छोटी
सैंधा नमक मूली खार
शोरा कलमी —प्रत्येक ४-४ तोला

— कुल द्रव्यों को लेकर कूट-कपड़ छन कर २ सरावों में कपड़ मिट्टी करके लघुपुट से फूंक लेवें ।

मात्रा–४ रत्ती से १॥ माशा तक सेवन करें ।

गुण–इसके सेवन करने से वृक्कशूल क्षण भर में न हो जाता है । उदर सम्बन्धी समस्त रोगों उत्तम कार्य करता है ।

[पृष्ठ २२८ का शेष]

गुण–इसके सेवन से बाधक, रजो कष्ट, कष्टार्त आदि रोग शीघ्र दूर होते हैं ।

गर्भाशय में रखने के लिए बत्ती—

इन्द्रायण की जड़ को बारीक चूर्ण कर घृ कुमारी के गूदे में खरल कर छोटी अंगुली बराबर लम्बी और मोटी बत्ती बनाकर मही मलमल के एक या दो तह लपेट कर तागे बांध गर्भाशय में रोजाना तीन-चार दिन रखना और दो-तीन घण्टे के बाद निकाल कर फेंक देना ।

गुण–इसका प्रयोग रजःप्रवर्तनी वटी के साथ-साथ करने से शीघ्र लाभ होता है ।

श्री० पं० लक्ष्मीनारायण जी दुबे स्काउटमास्टर
स्कूल-गुंजौरा पो० गढ़ाकोटा [सागर]

लेखक

पिता का नाम— पं० भैयालाल जी दुबे
आयु—४३ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० दुबे जी शिक्षण कार्य करते हुये भी आयुर्वेद से विशेष प्रेम रखते हैं। आपके लेख अनेक पत्रों में समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। आप अनुभवी, सरल एवं साहित्य-प्रेमी व्यक्ति है। आपके निम्न प्रयोग उत्तम व परीक्षित हैं"। —सम्पादक।

मूत्र बंद होने पर—

कलमी शोरा	१ भाग
फिटकरी	आधा भाग

विधि—दोनों एकत्र कर लोहे के पात्र में रख अग्नि पर रखदें। जब दोनों पिघल जावें, तब बारीक घोट लें।

मात्रा—६ माशा।

अनुपान—ऊपर से कुछ गर्मजल, एक-दो घूंट पिलाना चाहिये।

गुण—१०-१२ मिनट के पश्चात् पेशाब खुलकर आयेगा।

दस्त बंद होने पर—

(प्रत्येक ऋतु में, गर्भवती स्त्री को छोड कर)

सनाय पत्ती	२ तोला
बड़ी दाख	२ तोला
अमलतास की फली	२ तोला
पुराना गुड़	२ तोला
हरड़ छोटी	२ तोला
गुलाब के फूल	२ तोला
जल	१२० तोला

विधि—सब वस्तुएँ एकत्र कर, मिट्टी के पात्र में उपर्युक्त जल भर अग्नि पर औटाने रखदें। जल १ पाव रह जावे, तब कपड़े से छान लें और काग लगा कर शीशी में रखदें।

मात्रा—एक बार में आध पाव दवा पिलावें।

समय—दवा सेवन करने के एक दिन पहिले हलका पतला भोजन करना, तथा दवा सेवन करने के एक दिन बाद भी।

गुण—२० मिनट के बाद ज्यादा से ज्यादा बार पाच दस्त होंगे।

नोट—आवश्यकता पड़ने पर शेष दवा फिर पिला दें।

खूनी-बवासीर पर—

शु० जिमीकन्द	२ सेर
काली मिरच	५ तोला
हल्दी	५ तोला
बड़ी इलायची के बीज	२ तोला

विधि—एकत्र कर पीस छाया में सुखालें।

मात्रा—२ से ६ माशा तक।

अनुपान—दवा खाकर, ऊपर से कुछ ठण्डा जल पीवें।

समय—तीनों काल, यानी दिन में तीन बार।

गुण—एक साल के भीतर की बवासीर का खून गिरना, एक सप्ताह के भीतर ही ठीक हो जाता है।

नोट—जिमीकंद को अरण्ड के पत्तों में लपेट कर भूभल में आलू या भटे की तरह भर्तन करने से शुद्ध होता है।

मस्सों पर लेप—

हीरा कसीस सेंधा नमक
हल्दी चीता (चितावर) कन्नेर की जड़
—प्रत्येक समभाग

विधि—उपर्युक्त पांचों द्रव्य कूट कर चूर्ण करलें। पश्चात् इसी चूर्ण को आक के दूध की सात भावना दें और छाया में सुखालें। तदनन्तर इसे तैल में पकावें और शीशी में रखलें।

सेवन-विधि—इसे ही मस्सों पर लगावें।

गुण—बवासीर और आँपरेशन के मस्से गिर जावेंगे।

समय—शौच क्रिया के पश्चात् दोनों समय।

परहेज़—बादी की वस्तुओं का त्याग।

नारियल के तेल में सीसे को चन्दन की तरह घिस कर लगावें। मस्से गिर जावेंगे।

सिर दर्द, आधा-शीशी—

(जो पित्त के कोप से हो)

कपूर १ तोला

विधि—इसे एक कटोरी में रख कर चौड़े मुंह की पीतल या तांबे की डेगची में रख दें। तदनन्तर डेकची के मुंह की चौड़ाई के बराबर पीतल का ढक्कन ढकदें और कपड़ मिट्टी कर, दर्ज बन्द करदें। और ढक्कन के ऊपर मोटा, गीला कपड़ा, चार-छः तह लगा कर रखदें और अब इसे आग पर रखें।

परिणाम—कपूर उड़ कर ढक्कन में लग जावेगा।

पहिचान—कपूर के उड़ते समय दर्ज-बन्दी खुलने लगती है। बस, समझ जाइये, कपूर उड़ गया और ढक्कन में लग गया।

जब बर्तन शीतल होजावे तब दर्ज बन्दी अलग कर दें।

मात्रा—१ माशे से २ माशे तक।

अनुपान—मिश्री या खोवा के साथ।

समय—तीनों काल।

गुण—एक दिन में ही रोग दूर होजावेगा।

परहेज़—गरम वस्तुओं का त्याग, संयम से रहना।

पथ्य—दोपहर के भोजन के पश्चात् गाय का तक्र इच्छानुसार पीना चाहिये।

वैद्य शिरोमणि किशनलाल शर्मा वैद्य मनीषी R. L. M. P.

श्री० चित्रगुप्त आयुर्वेदिक औषधालय, आकोट (बरार)

घात वेदना पर—

शुद्ध कुचला	सोंठ
सायर श्रृङ्ग	अर्क (आक) मूल

—घिस कर गरम कर लेप कर दें। सर्व-घात

लेखक

पीड़ा के लिये उपयोगी है। परीक्षित है।

उपदंश रोग पर—

शुद्ध खपरिया (कारबेल)	१ तोला

(अगर न मिल सके तो यशद भस्म लें)

शुद्ध हीरा कसीस	३ माशे
शिलाजीत (सूर्यतापी)	१ माशे
नीलाथोथा	४ रत्ती

—ये चारों चीजें खरल करलें, और चने बराबर गोलियां बनालें।

"श्री० वैद्य जी ने महामहोपाध्याय श्री० पं० बालाराम जी तिवारी से सक्रिय आयुर्वेद-ज्ञान प्राप्त किया है। आपने सन् १९२५ से अपना स्वतन्त्र कार्य प्रारम्भ कर अच्छी ख्याति प्राप्त की है। आपको अनेकों सम्मान पत्र व प्रमाण पत्र प्राप्त हुए हैं। आप उत्साही समाज सेवी भी रहे हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित व उपयोगी हैं।"—सम्पादक।

सेवन-विधि—प्रातः-सायं १-१ गोली घी के साथ खिलादें।

पथ्य-खिचड़ी, घी खाने को दें।

गुण—१४ दिन के प्रयोग से उपदंश-रोग नष्ट हो जाता है।

पं० मोहनदत्त जी शर्मा शास्त्री

कटनी

—*—

"श्री० शास्त्री जी श्री० पं० हल्कूराम जी के सुपुत्र हैं, आप धर्म-शास्त्र एवं कर्म-काण्ड के भी पूर्ण पंडित हैं। आप श्री० तिलोकचन्द सरावगी धर्मार्थ औषधालय के प्रधान चिकित्सक हैं। आपके निम्न प्रयोग सरल होते हुए भी अत्युपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

लेखक

सन्निपात ज्वर में—

जबकि रोगी उठ २ कर भागता हो तथा अंट-संट बकता हो, उस अवस्था में इस प्रयोग को काम में लावें।

कुम्ही वृक्ष के बक्कुल का रस निकाल कर ४ रत्ती पीपल चूर्ण मिलाकर पिलावें। यह अव्यर्थ औषधि कभी धोखा नहीं देगी।

कुम्मी

संस्कृत नाम-कुम्भि—गिरिकर्णिका, भाद्रेन्द्राणि, कैदारि तथा मधुवेणु।

हिन्दी—कुम्भि, कुम्भ, वकम्भ, कुम्ही।

बङ्गाली नाम—कुम्बि, कुएड, कुम्व।

गुजराती - कुम्बि।

मराठी नाम—कुम्भा, कुम्भ लाल।

तालिम भाषा—कुम्बि, पेला।

तैलुगी भाषा—गोकवू।

लैटिन भाषा—केरिया, आरबोरिया।

इस वृक्ष के सम्बन्ध में यदि विस्तृत वर्णन जानना चाहें तो श्री. चन्द्रराज भंडारी कृत वनौषधि चन्द्रोदय का द्वितीय भाग पृष्ठ ४८३ में देखियेगा।

कास में—

जबकि अनेकों दवा कर चुके हों तब इस औषधि का प्रयोग कर लाभ उठावें।

बांसा की जड़ का बक्कुल आधी छटांक पीस कर, दो आना भर अफीम पानी में घोलकर, पिसी हुई दवा में मिलावें। फिर गोली बांधने लायक घी मिलावें और कुल दवा की २० गोली बनालें। एक गोली सुबह और एक गोली शाम को दें।

ज्वर के लिये—

शुद्ध स्फटिका मरिच चूर्ण
पीपल — —तीनों २॥-२॥ तोला

[शेष पृष्ठ २३५ पर]

वै० भू० कवि० पं० भगवानदास जी शास्त्री

आयुर्वेदाचार्य, श्री. दयानन्द आयुर्वेदिक धर्मार्थ चिकित्सालय
मंडी-बहाउद्दीन [गुजरात-पंजाब]

लेखक

पिता का नाम—श्री० पं० श्रीकण्ठ जी वैद्यराज
आयु-३५ वर्ष जाति—सारस्वत ब्राह्मण
प्रयोग विषय--१-विरेचन २-दाद

"श्री० कविराज जी ने लाहौर की वैद्य-कविराज व वैद्य-भूषण आयुर्वेदाचार्य परीक्षाएं सम्मान उत्तीर्ण की हैं। आप अपने विद्यार्थी जीवन में सदैव प्रतिभाशाली रहे हैं। अब आप श्री० दयानन्द आ. ध. हौस्पीटल के प्रधान एवं सफल चिकित्सक हैं। आपके निम्न प्रयोग पूर्ण परीक्षित एव उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

रुक्मिश रस—

बड़ी हरड़ का बक्कुल का वस्त्रपूत चूर्ण पांच भाग तथा शु० जमालगोटा १ भाग। दोनों को एक खरल में डालथूहर के दूध के साथ घोट चने बराबर गोलियां बनावें।

मात्रा—अवस्थानुसार आधी गोली से २ गोली तक दें।

गुण—इसके सेवन से दस्त साफ आता है, तथा आम नष्ट होती है। यह रस अन्य विरेचन द्रव्यों से उत्तम प्रमाणित हुआ है। इसके सेवन से मूर्च्छा भ्रमादि कोई कष्ट नहीं होता। कब्ज उदररोग, अफारा तथा नीचे के अंग के रोग जैसे भगन्दर, बवासीर आदि गुप्त-रोगों में भी लाभप्रद है।

दाद की दवा—

कारबोलिक एसिड	१ भाग
सिलीसिलिक एसिड	१ भाग
पीली वैसलीन	८ भाग

—खरल में डाल खूब मिलालें। दाद वाले स्थान को खुजला कर इसको मलें, और इतना मलें कि मलते-मलते चर्म में प्रविष्ट होजाये। ४-५ दिन के प्रयोग से दाद अवश्य नष्ट हो जायगा।

(पृष्ठ २३४ का शेष)

करंज फल चूर्ण १ छटांक
—सबको पीस छान कर चिरायता के क्वाथ में मटर बराबर गोली बनालें।

गुण—ये गोलियां ज्वर के लिये अव्यर्थ हैं।

अपरस पर—

भृंगराज का रस १ पाव
गोघृत ५ तोला तूतिया आधा तोला

—तूतिया को पीस कर भृंगराज रस में डालें तथा उसी पात्र में घी डालकर अग्नि में पकावें, घृत मात्र रहने पर उतार कर ठण्डा होने पर व्यवहार में लावें. उपयोगी सिद्ध हुआ है।

वैद्यराज पं० शंकरदत्त जी शास्त्री काव्यतीर्थ,

माधोगढ़, पो० सतनाली (पटियाला)

पिता का नाम—श्री० गोंगराज जी जोशी

आयु—३६ वर्ष जाति—जोशी

"श्री० वैद्य जी ने व्याकरण की मध्यमा, साहित्य की शास्त्री तथा आयुर्वेद की वंगीय "भिषग् रत्नम्" परीक्षाएं पास की हैं। आपने जसीडीह मारवाड़ी आरोग्य भवन में प्रधान वैद्य के पद पर पाच वर्ष तक रह कर सफलता के साथ कार्य किया था। अब आप श्री० प्रभुदयाल आयुर्वेद दातव्य औषधालय के प्रधान चिकित्सक हैं। आपने शार्ङ्गधर संहिता की संस्कृत टीका की है तथा "अनुभूत योगरत्नाकर" नामक स्वतन्त्र ग्रंथ का निर्माण किया है। आपके निम्न प्रयोग अत्युपयोगी हैं।" —सम्पादक।

लेखक
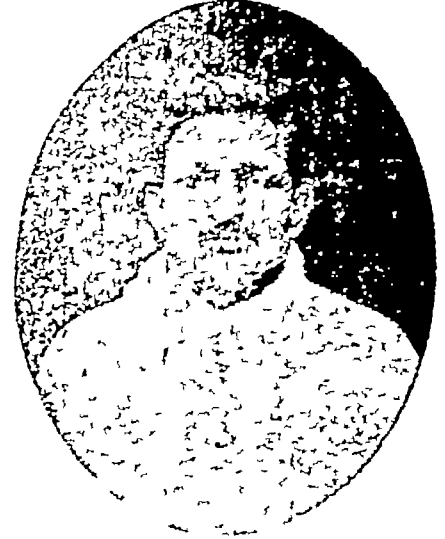
नेत्र बिंदु—

अफीम	१ तोला
बोरिक एसिड	२ तोला
जिंक आक्साइड	२ तोला
काश्मीरी केशर	६ माशा
भीमसैनी कपूर	१ तोला
रसौत	नीम की कौंपल
कीकर की कौंपल	फिटकरी भुनी हुई
मिश्री देशी	—प्रत्येक ५-५ तोला।

निर्माण-विधि-प्रथम रसौत, अफ़ीम को थोड़े गुलाबजल में थोड़ी देर भिगोकर रखदें और छानलें। केशर, भीमसैनी कपूर को अलग २ गुलाबजल में खूब पीस लें, और रसौत अफ़ीम के जल में मिलादें। नीम, कीकर की ताजी कौंपल लाकर पत्थर पर पीसकर १-१ छटांक रस पृथक २ निकाल लें। सफेद फिटकिरी को किसी छोटी कड़ाही में पिघलाकर खील बनालें, एसिडबोरिक एवं जिंक आक्साइड भी पीसकर मिलाना अच्छा है ताकि डली वगैरह फूट जाय मिश्री को कूट कपड़छान कर मिलाना चाहिये, फिर ऊंचे किनारों की एक बड़ी कांसे की थाली में सब दवाओं को मिलाकर कांसे की कटोरी से तीन दिन शनैः शनैः मर्दन करके साफ कपड़े में छान कर बोतल में भरकर रखलें।

गुण—दुखती (आई आंखों) के लिये लाभप्रद है। कितनी ही लाल आंखें हों इस दवा के तीन बार डालने से साफ होजाती हैं। परन्तु लाल-

मिर्च, खटाई मैथुन वगैरह का परित्याग अवश्य करें।

विषम-ज्वर पर—

शुंठी	गिलोय	कायफल	पिप्पली
नीम की छाल		—प्रत्येक २-२ तोला	
शुद्ध करंज बीज			३ तोला
गोदंती हरताल भस्म			१ तोला
भुनी फिटकिरी			३ तोला

विधि—प्रथम करंज बीजों के छिलके उतार कर भीतर की सफेद मिंगी को कपड़े की पोटली में बांध कर गोदुग्ध पूर्ण हांडी में दोला यंत्र की विधि से ३ घन्टे पाक करें। फिर निकाल कर गर्म जल में धोकर धूप में सुखालें। शुंठी आदि सूखी चीज़ों को कूट-पीस छानकर उपर्युक्त परिमाण में लें। गोदन्ती हरताल को मिट्टी की हांडी में नीचे-ऊपर ग्वारपाठे का गूदा रखकर अरण्योपलों में पुट देवें। स्वांग शीतल होने पर निकाल पीस कपड़छन कर भस्म काम में लें। सफेद फिटकिरी को अग्नि पर किसी पात्र में रखकर फुलालें। ताजी गिलोय लाकर महीन कूटकर पानी में भिगो दें, दो-तीन दिन बाद पानी को निथार कर नीचे जमे हुये सफेद रंग के अमृतासत्व को सावधानी से निकाल कर धूप में सुखाकर काम में लें। चीज़ों को पत्थर की खरल में डालकर शुंठी क्वाथ की ३ भावना देकर २-२ रत्ती की गोली बनालें।

अनुपान—शुंठी का काढ़ा।

समय—बुखार चढ़ने से ६ घंटे पूर्व २-२ घन्टे बाद २-२ गोली। खाने के लिये गो-दुग्ध मिश्री डाल कर दें और कुछ नहीं। दूसरे दिन भी प्रातः, दोपहर, सायंकाल २-२ गोली पूर्वोक्त विधि से दें। बुखार अवश्य रुक जायगा। रुक जाने पर भी दो-तीन दिन तक या इससे भी अधिक दिनों तक तीनों समय अगर सेवन करावें तो बुखार लौट कर फिर नहीं चढ़ेगा। अगर विबंध हो तो मृदुविरेचन दें, कोष्ठ-शुद्धि अवश्य करावें।

प्रदर पर—

पीपल की लाख	पाव सेर
माजूफल	आधा पाव
नागकेशर	पठानी लोध
खस	आंवला
—प्रत्येक १-१ छटांक।	
अशोक छाल	आधा पाव

विधि—सब चीज़ों को कूट कपड़छान कर रखलें।

मात्रा—६ माशे।

अनुपान—दूर्वा रस या अशोकारिष्ट।

समय—प्रातः सायं।

पथ्य—गेहूँ का दलिया, बकरी का दूध।

अपथ्य—उष्ण वस्तु, मैथुन प्रभृति।

गुण—रक्तप्रदर में आशातीत लाभ करता है। मैंने १ रक्त-प्रदर से पीड़ित रोगिणी को देखा, जिस जगह वह बैठी थी उससे चार पांच हाथ दूर तक रक्त-प्रवाह चला गया था। वह इसी औषध के सेवन से बिल्कुल स्वस्थ होगई। ऐसे ही और कई एक उदाहरण हैं। प्रयोग अव्यर्थ है।

लेखक

वै० पं० मातादीन जी शर्मा आयु० विशारद

श्री० लोकनाथ आयुर्वेद भवन, वैद्यनाथधाम।

पिता का नाम—पं० रामविलास जी शर्मा

आयु—३२ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० वैद्यराज जी ने विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी विद्यालय से आयुर्वेद विशारद की परीक्षा पास की है तथा अस्पताल में सक्रिय ज्ञान भी प्राप्त किया है। आपके निम्न सरल चुटकुले परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।

सुजाक नाशक योग—

शीतलचीनी विरोजा सत

इन्द्रयव यवक्षार

कलमी शोरा —पांचों १-१ तोला

विधि-उपरोक्त सब चीज़ों को महीन पीसकर चन्दन तैल १ तोला के साथ खरल कर शीशी में रख लेवें।

मात्रा-१ माशे से २ माशे तक।

अनुपान-जल

श्वास की दवा—

नवसादर ५ तोला

लाल फिटकिरी ५ तोला

—दोनों को अच्छी तरह पीसकर एक हांडी में डालकर दूसरी हांडी का मुंह जोड़ कर डमरू यंत्र की तरह बना कर चूल्हे पर चढ़ावें और जौहर उड़ालें।

मात्रा-२ चावल से ४ चावल तक, पान में रखकर आवश्यकतानुसार।

गुण-श्वास, कफ़, सूखी खांसी आदि के लिये उत्तम है।

हाजमा गोली—

नौसादर कालीमिर्च छोटी इलायची

निम्बू सत सोंठ काला नमक

शु० टंकण —हरेक १-१ तोला

शु० हींग ६ माशा

आक की सूखी लवंग २ तोला

विधि-सहजने की जड़ के रस में अथवा जल के साथ अच्छी प्रकार पीसकर बेर बराबर बटी बनावें।

नेत्र-सुधा—

गुलाबजल २४ औंस केशर ६ माशा

भीमसैनी कपूर १ तोला

पिपरमेंट १॥ माशा

विधि-गुलाबजल के साथ सब औषधियों को घोट कर फिल्टर करके शीशी में भर दें। नेत्र-सम्बन्धी विकारों के लिये उत्तम है।

मात्रा-१ बूंद से २ बूंद तक।

श्री० राजन्य महाराजदीन सिंह जी वैद्यशास्त्री

उमरा पो० कांथा (उन्नाव)

पिता का नाम—राजन्य द्वारिकासिंह जी
आयु—५४ वर्ष जाति--चन्द्रवंशीय क्षत्रिय

लेखक

मात्रा-तीन माशे से छः माशे तक, बच्चों को उनकी आयु के अनुसार।

गुण—श्वास-कास, क्षयज कास, साधारण कास, जुकाम, नजला, बच्चों की काली खांसी आदि में अद्भुत चमत्कार-पूर्ण लाभ होता है।

रक्त-पित्त व रक्तप्रदर पर—

स्वर्ण माक्षिक भस्म	६ माशे
भेड़ की ऊन की भस्म	१ तोला

"श्री० ठाकुर साहब योग्य व अनुभवी वैद्य तथा जमीदार हैं। आपका प्रेषित 'कासारि-मधु' परीक्षित व उपयोगी प्रयोग है। पाठक इसको बना कर अवश्य व्यवहार में लायें।" —सम्पादक।

सारि मधु—

वांसा के पीले ताजे पत्र लेकर साफ़ कर वारुणी यंत्र (भवका) में तहें लगाकर केवल पत्र ही इतने भरदें कि यंत्र कुछ ही खाली रह जाय। मंदाग्नि द्वारा निर्मल पत्र-वाष्प परिश्रुत करलें। फिर इस परिश्रुत अर्क के बराबर शुद्ध मधु मिलाकर रखलें। यही "कासारि मधु" है।

खाली बर्रे के छत्ते की भस्म	१ तोला
कासारि मधु (उपर्युक्त)	२० तोला

—एकत्र मिलाकर ६ माशा की मात्रा में चटाकर ऊपर से बकरी का दूध पिलावें। अथवा दूध में ही दवा घोल कर पिलावें।

गुण—रक्त-प्रदर या रक्तपित्त के कारण कितना ही भयकर रक्त-प्रवाह हो, थोड़ी देर में रुक जाता है।

श्री० पं० मद्दाबक्स जी शर्मा वैद्य

अजीतगढ़-अमरसर [जयपुर]

—:x:—

"श्री० वैद्य जी का जन्म सम्वत् १९९९ में हुआ था। आप १२-१४ साल से सफलता के साथ वैद्यक-कार्य कर रहे हैं। आपका 'उपदंश' रोगी के लिये प्रकाशित प्रयोग किसी योग्य वैद्य की देख-रेख में ही व्यवहार में लाना चाहिये।"

—सम्पादक।

लेखक

प्रमेह के लिये—

उन्नाब के कपड़छान किये हुए चूर्ण को बबूल के पके फल (इन्हें विरछे या पातड़े कहते हैं) के रस से (फल चूर्ण के पकने पर उसमें मवाद के समान चेप निकलने लगता है उससे) भिगोयें और उसे छाया में सुखालें। इस प्रकार इस भिगोने और सुखाने की क्रिया को ७ बार करें। तत्पश्चात् सूखे द्रव्य को चूर्ण कर उसमें समभाग मिश्री मिलालें।

मात्रा–१ तोला के परिमाण से प्रातः-सायं गो-दुग्ध के साथ सेवन करें। २१ दिवस पर्यन्त सेवन करने से अवश्य लाभ होता है।

पथ्यापथ्य-गेहूँ की रोटी, मूंग की दाल पुराने चावल, फल आदि सुपाचक भोजन करे। तथा स्त्री-सहवास, तैल, मिर्चादि उत्तेजक तथा अहितकर पदार्थ दिवानिद्रा आदि का त्याग आवश्यक है।

एक ही रात्रि में—

अकरकरा	माजूफल	सिंगरफ
सुहागा	—चारों ५-५ माशे।	

—सबको कूट कर ४ गोलियां बनालें। फिर रोगी को तम्बाकू की भांति हुक्के में रात्रि के समय १-१ प्रहर के अन्तर से पिलाये, इससे रोगी को दस्त और वमन होंगे। घबराने की आवश्यकता नहीं। रोगी को सम्पूर्ण रात्रि सोने न दिया जाय, टहलते-फिरते रहना चाहिये। बैठने भी न पाये अन्यथा गठिया वात होजायगी। टहलते समय सहारा देते रहना आवश्यक है। जब दिन निकल आये, उस समय रोगी को ठंडे जल से स्नान कराये, और गेहूँ की रोटी, मूङ्ग की धुली दाल, खिलाकर शयन करादे। यदि रोगी मांसाहारी हो तो मुर्गी के मांस का शोरवा तथा गेहूँ की रोटी खिलाकर सुलायें। दूसरे ही दिन से टिकारे झड़ने आरम्भ हो जांयगे तथा रोगी बहुत शीघ्र रोग-मुक्त होजायगा। यदि लिंग पर सूजन हो तो ६ माशे त्रिफला को पानी में औटा कर उस जल में धोयें। दिन में ३ बार।

नोट—परिचारक ३-४ आदमी होने चाहिये। जिससे बारी २ से रोगी के टहलते समय सहारा दे सकें।

लेखक

श्री० पं० नन्दलाल जी वसिष्ठ विद्यार्थी

बनवारीलाल आयुर्वेद विद्यालय, देहली।

प्रयोग-विषय—१-न्यूमोनियां २-अर्श
३-प्रमेह ४-कर्णश्राव

"श्री० वसिष्ठ जी उत्साही एवं महत्याकांक्षी विद्यार्थी हैं। आपके जन्म के पश्चात् आपके पिता जी ने घर का सपूर्ण उत्तरदायित्व आपकी मा पर छोड़ कर आयुर्वेद-विद्या का पढ़ना प्रारम्भ किया, और अब योग्य चिकित्सक बन गये हैं। निम्न प्रयोग आपके पिता जी के अनुभूत हैं। आपने बनवारीलाल आयुर्वेद विद्यालय देहली में विद्याध्यन करते हुए सन् १९४४ में प्रकाशनार्थ भेजे थे। प्रयोग सरल एवं उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

न्यूमोनियां पर—

पुष्करमूल	४ रत्ती
छोटी इलायची के दाने	१ माशा
वंशलोचन	६ माशे

—इनका चूर्ण करके मधु के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से तुरन्त लाभ होता है। यह एक मात्रा की औषधि है।

अर्श पर उत्तम प्रयोग—

छोटी मक्खी का शहद गौ का घृत
—दोनों को समभाग लेकर गुदा के मस्सों पर लगाने से २१ दिन में बिना किसी पीड़ा के मस्से नष्ट होजाते हैं।

प्रमेह के लिये—

असगंध सतावर
कौंच के बीज त्रिफला
—इन चारों औषधियों को समभाग लेकर कपड़छन करने के बाद ६-६ माशे पाव भर दूध के साथ सुबह-शाम फंकी करने से २१ दिन में प्रमेह रोग दूर हो जाता है।

कान बहने पर—

गंधक मनशिल हल्दी
—तीनों १-१ तोला

—पिता का नाम—
श्री० पं० मानसिंह जी शर्मा वैद्यशास्त्री
आयु—२५ वर्ष जाति—ब्राह्मण

कड़वा तैल	१० तोला
धतूरे के पत्ते का रस	१० तोला
पानी	२० तोला

—तैल पाक विधि से मन्दाग्नि द्वारा पकावें। कान को पहले पिचकारी से साफ करके दो-दो बूंद कान में डालने से कर्ण-श्राव बंद हो जाता है।

श्री० ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह वैद्य,

महीपुर (बस्ती)

—पिता का नाम—
श्री० रामरतनसिंह जी
आयु-४४ वर्ष
जाति—गौतम क्षत्री

लेखक

मलहम-राल—

सफेद राल	२ तोला
तूतिया	६ माशे
छोटी इलायची के दाने	६ माशे
चिपक (चीचे) की पत्ती	४ माशे

इन सबको चूर्ण कर कपड़े में छानलें।

मु० शंख	१ तोला
कड़ुआ तैल	१० तोला

—पीतल की थाली में हाथ से मलता रहे। अब युक्त चूर्ण भी इसी में डालदें। थोड़ा-थोड़ा पानी डालता जाय और रगड़ता जाय। थोड़ी देर में मलहम जल के ऊपर तैरने लगेगी।

"श्री० ठाकुर साहब ने आयुर्वेद विद्यालय आगरा से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की है। आपके पूर्वज भी वैद्यक व्यवसाय करते थे। आपका मलहम का प्रयोग पूर्ण लाभप्रद है। अवश्य व्यवहार करें।"

—सम्पादक।

इसे किसी कांच या चीनी के पात्र में रख उसके ऊपर थोड़ा पानी भरदें। इससे मलहम खराब नहीं होगी।

प्रयोग-विधि—यदि घाव या छोटा फोड़ा हो तो उसे साफ कर दिन में २ बार मलहम लगा दिया करें। यदि घाव बड़ा हो तो किसी साफ कपड़े पर मलहम लगा कर घाव पर रख दें।

गुण—घाव कैसा ही हो, जले का हो या फोड़ा-फुंसी का हो इस मलहम से अवश्य ठीक होता है।

नेत्र निरोग रखने की विधि—

जितने पेय पदार्थ हैं, पीते समय नेत्र बन्द कर लेना चाहिये। केवल इस बदल से उपाय से नेत्रों की अनेक बीमारियां नहीं होने पातीं।

डाक्टर रामरतन जी निगम राजवैद्य

H C. H M B, M R H. S, M B H, & F. H. R.

जसवन्तनगर (इटावा)

लेखक
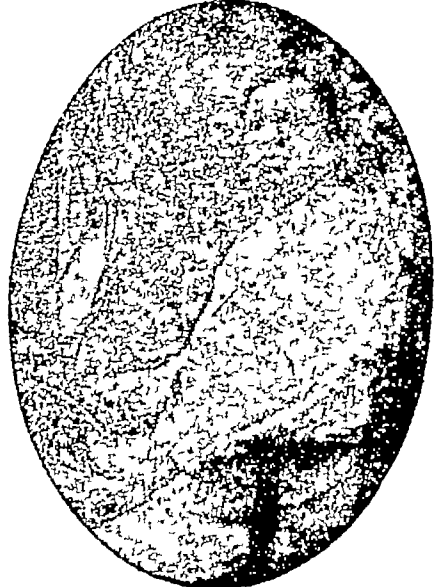
पिता का नाम— श्री० चन्द्रीप्रसाद जी

आयु--५२ वर्ष जाति-कायस्थ

"श्री० निगम जी वयोवृद्ध एवं अनुभवी चिकित्सक हैं। आप एलोपैथी व होमियोपैथी से भी भलीभाति परिचित हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित व उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

विषम ज्वर व पुराने बुखार पर—

गिलोय का सत्व, छोटी पीपल, बड़ी हरड़, सोंठ, नागरमोथा, बहेड़ा, सफेद चन्दन, नीम की अन्तर छाल, देवदारु

—हरेक १-१ तोला

चिरायता ४॥ तोला

निर्माण-विधि—सब चीजें कूट-पीस कर कपड़े से छान लें।

मात्रा -२ से ४ माशे तक।

समय—सुबह-शाम, या वेग से पूर्व।

अनुपान—ठण्डा जल।

रोग—कुनैन से न जाने वाला ज्वर, जाड़ा देकर आने वाला विषम-ज्वर और पुराना बुखार इसके सेवन से चला जाता है।

खांसी पर—

भटकटैया	१ सेर
काकड़ा सिंगी	६ छटांक
मिश्री	२ सेर
मुलहठी	१ छटांक

निर्माण-विधि—भटकटैया का पंचांग, मुलहठी और काकड़ासिंगी मिलाकर मोटा २ कूट कर चार सेर पानी में औटाना, आध सेर बाकी रहने पर छान कर मिश्री मिला कर पकाना, दो तार की चाशनी होजाने पर ६ माशे पिसी हुई पीपल मिलाकर बोतल में रख लेना।

मात्रा—१ तोला से २ तोला तक।

समय सुबह-शाम और रात को।

रोग--सूखी खांसी, क्षय की खांसी, स्वर की खराबी, पुरानी खांसी, कच्चा बलगम आना और साधारण ज्वर पर भी लाभप्रद है।

बाल अतिसार पर—

छुहारा २ अदद

[शेष पृष्ठ २५७ पर]

लेखक

श्री० पं० मदनलाल जी त्रिपाठी वै. भू.

जनकूपुरा, मन्दसौर।

—::—

पिता का नाम—पं० हजारीलाल जी शर्मा,

आयु—३८ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० त्रिपाठी के यहां ४ पीढ़ी से वैद्यक-कार्य होता आया है। आप प्रदर के विशेष चिकित्सक हैं, तथा आपके निम्न प्रयोग परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।

रक्त-प्रदर पर—

संग जराहत	३ माशा
मुल्तानी मिट्टी	३ माशा
मिश्री	१ तोला

—इन सब वस्तुओं को रात को मिट्टी के बरतन में ५ तोला पानी में भिगोकर सवेरे भंग की तरह पीस कर, कपड़े में छानकर, १० तोला पानी बनाकर पीने से रक्त-प्रदर दो तीन दिन में बन्द होजाता है और वेदना भी बन्द हो जाती है।

श्वेत प्रदर पर—

सफेद चन्दन का बुरादा कुरैया की छाल
लोध कमल केशर नागकेशर
जटामांसी खस नागरमोथा
हाऊबेर बेल का गूदा इन्द्रजौ
अतीस सूखे आंवले रसौत
आम की गुठली की गिरी मोचरस
कमलगट्टे की गिरी मजीठ
इलायची अनार के बीज सोंठ
जामुन की गुठली की गिरी कूठ
कत्था सफेद अशोक की छाल
गूलर के फल सूखे

—सब दवाइयां सम्भाग लेकर, कपड़छान कर, बोतल में रखलें।

मात्रा—सुबह-शाम ६ माशे से १ तोला तक, चावल के पानी के साथ ३ माशा शहद मिलाकर पीवें, १५ दिन में श्वेत-प्रदर आराम हो जायगा।

रसौत	१ तोला
चूहे की मेंगनी	१ माशा
पीपल की लाख	३ तोला
मिश्री	१ तोला

—सबको मिला कूट-पीस कर ६ माशा सुबह, ६ माशा शाम को शीतल जल या गाय के कच्चे दूध के साथ सेवन करने से दो दिन में ही फ़ायदा नज़र आता है। रक्त-प्रदर की अचूक औषधि और वैद्यों को धन और यश देने वाली है।

अवश्य उपयोग करें

श्री० पं. विश्वनाथप्रसाद जी "प्रजावैद्य"

मकबूलगंज [लखनऊ]

लेखक

पिता का नाम—पं० रामचरण जी शुक्ल

आयु—५२ वर्ष जाति—ब्राह्मण
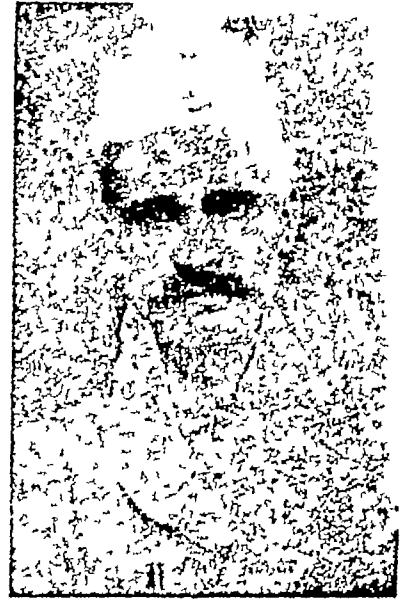
"श्री० प्रजावैद्य जी के यहां वंशपरम्परागत वैद्यक व्यवसाय होता आया है। आप भी अनुभवी चिकित्सक एवं योग्य लेखक हैं, तथा ज्वर व संग्रहणी के सफल चिकित्सक समझे जाते हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।

निमोनियां पर—

शुद्ध आमलासार गंधक	२ तोला
संखिया भस्म	६ माशा
ताम्र भस्म	६ माशा
शुद्ध कुचला	३ माशा
अभ्रक भस्म	६ माशा
सिद्ध मकरध्वज नं० १	६ माशा
पीपल छोटी	३ तोला
शुद्ध मीठा तेलिया	जावित्री
अकरकरा असली	जायफल
लौंग	—प्रत्येक १-१ तोला

निर्माण-विधि—भस्मों को छोड़ कर शेष का चूर्ण करलें और भस्मों सहित खरल में डाल कर बंगला पान के रस में घोटें, और इसी भांति ७ बार पान का अर्क डाल कर घोटें और १-१ रत्ती की गोलियां बनावें।

मात्रा-१ गोली से २ गोली तक।

अनुपान-अदरक रस और मधु या पान के रस के साथ दें।

समय-दिन में ३ या ४ बार दें।

गुण-इससे निमोनियां की कैसी ही बिगड़ी दशा क्यों न हो आराम होजाता है। इसके अतिरिक्त यह गोलियां प्रसूत, अर्द्धाङ्ग और नामर्दी के लिये अत्यन्त लाभप्रद है।

त्रिशूचिक्रान्तक वटी—

श्वेत मिर्च	२ तोला
त्रिफला	३ तोला
असली कस्तूरी	२ माशा
शुद्ध कुचला	५ तोला
श्वेत अर्कमूल त्वक्	५ तोला
जायफल	जावित्री

[शेष पृष्ठ २४७ पर]

श्री. वैद्य हरिनारायण जी शास्त्री जयपुरीय

गुलाबवाड़ी, बम्बई।

लेखक
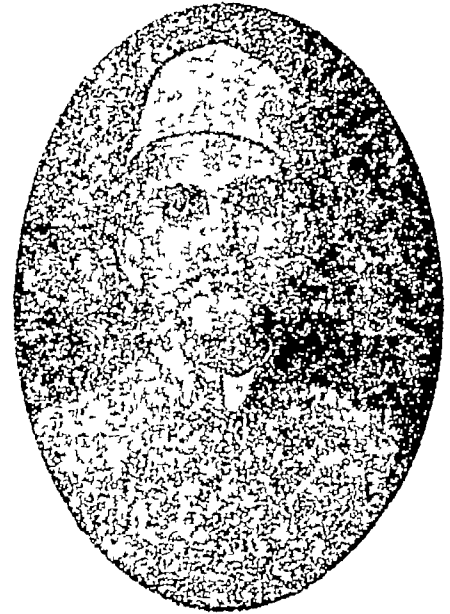
पिताका नाम— श्री गंगाबक्स जी शास्त्री

आयु-३१ वर्ष जाति—गौड़ ब्राह्मण

प्रयोग-विषय -१ श्वास २-रक्त-स्राव

"शास्त्री जी ने श्री० यादव जी त्रिकम जी आचार्य के बम्बई आयुर्वेद-विद्यालय में आयुर्वेद का अध्ययन कर विद्यापीठ की आयु० विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप गोस्वामी दीक्षित जी बावा साहब के पास धर्मार्थ चिकित्सालय में कार्य करते हैं, आपके निम्न प्रयोग उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

कालेश्वर रस—

(श्लेष्माधिक्य श्वास के लिये)

रसेश्वर कान्त लोहभस्म
ताम्र-भस्म शतपुटी अभ्रक भस्म
चन्द्रोदय रस शुद्ध आंवलासार गंधक
स्वर्णमाक्षिक भस्म शुद्ध हिंगुल

—सब ६-६ माशा मिलाकर खरल करलो और

लौंग जायफल छोटी इलायची
दालचीनी शुद्ध सींगिया
शु० काले धतूरे के बीज शु० जमालगोटा
भुना सुहागा —प्रत्येक ६-६ माशा
छोटी पीपल ८ तोला

—इन सबको पीस कर छान लो। ऊपर की भस्म और यह चूर्ण मिला कर निर्गुंडी, चिचड़ी, भांग, भृंगराज, अडूसा इन पांचों के स्वरस में क्रमशः १-१ दिन घुटाई करो। सूख जाने पर कांच के पात्र में रखलो।

मात्रा—४ चावल से १ रत्ती तक।

गुण—इस रस के सेवन करने से श्लेष्माधिक्य श्वास अवश्य नष्ट होजाता है। वात, पित्त के श्वास पर इसे व्यवहार करने से हानि होती है।

"श्वासान्तक लेह"—

खस-खस के दाने डेढ़ पाव
पोस्त डोडे एक छटांक

—इन दोनों को रात के समय एक मिट्टी के वर्तन में १ सेर पानी में भिगो दें। प्रातः सबको सिल पर पीस कर उसी पानी में घोल दो और कपड़े में छान लो। इस दूध जैसे पदार्थ को कलईदार कढ़ाई ही में डाल कर आग पर पकाओ और जबकुछ गाढ़ा होने आवे तब इसमें तीन पाव मिश्री पीस कर मिला दो। जब चाटने के योग्य होजाय तब इसमें १ छटांक मुलहठी का चूर्ण भी मिला दो और उतार कढ़ाईसे निकाल कर कांच के पात्र में रखलो।

मात्रा-४ माशे। समय—प्रातः-सायं, दोनों समय चटाना चाहिये।

[शेष पृष्ठ २५२ पर]

श्री. वैद्य जानराव चन्द्रभान जी ठोके
शिरखेड (अमरावती)
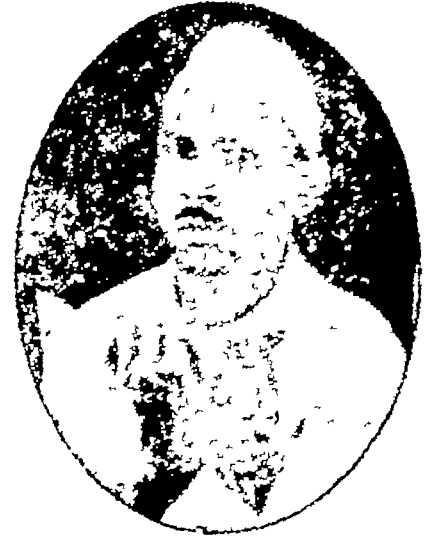
—लेखक—

पिता का नाम—श्री० चन्द्रभान जी ठोके वैद्य

आयु—३१ वर्ष जाति—जोशी

"श्री० ठोके जी के पिता भी योग्य वैद्य थे। आपने स्वर्गीय वैद्य वामनराव चन्द्रभान जी देशमुख से आयुर्वेद-ज्ञान प्राप्त किया है। श्री० देशमुख जी की मृत्यु होजाने के बाद भी अनेक आयुर्वेद-ग्रन्थों का अध्ययन आपने स्वाध्याय रूप में किया है। आपका निम्न प्रयोग उपयोगी है।"

—सम्पादक।

धातु-स्राव पर—

बंग भस्म (वनौषधि द्वारा) १ रत्ती
शिलाजीत चन्द्रप्रभा २-२ रत्ती
त्रिफला चूर्ण पुराना गुड़
मत्स्य (मछली) पित्त सनाय
—प्रत्येक १-१ माशे।

—मिलाकर २ मात्रा बना लें। १ मात्रा को प्रातः ३ माशे एरण्ड तैल में मिलाकर, पाव सेर गरम दूध के साथ लेना चाहिये और रात्रि को सोते समय आरोग्य वर्द्धिनी वटी २ रत्ती निम्न-लिखित क्वाथ के साथ ६ माशे घी मिलाकर लेना चाहिये। क्वाथ का प्रयोग निम्न प्रकार है।

त्रिफला त्रिकुटा सनाय
मत्स्य पित्त एरण्ड मूल

—समान भाग लेकर चूर्ण करलें। ३ माशे चूर्ण १० तोला पानी में उबाल लें। छान कर उपरोक्त घी व दवा मिलाकर लें।

दवा को ४० दिन व्यवहार करें। कोष्ठ-बद्धता। होने दें।

गुण-जिस रोगी को पाखाने या पेशाब के साथ या स्वप्नावस्था में वीर्य जाता हो, इस दवा से अवश्य लाभ होता है।

पथ्य-मूंग की दाल, गेहूँ की रोटी तथा हलका भोजन दें।

[पृष्ठ २५१ का शेष]

गुण—इसके खाने से अत्यन्त बढ़ा हुआ श्वास फौरन दब जाता है। तत्काल फल दिखाने वाली चीज़ है।

रक्त बंद करने को—

अभ्रक भस्म लोह भस्म
रस सिन्दूर —तीनों १-१ तोला
लाख खूनखराबा १-१ तोला
सेलखड़ी गेरू ६-६ माशा
काला सुरमा ३ माशा
कहरुवा शमई १० माशा
दमउल अखवीन कतीरा-श्वेत
गोंद बबूल —तीनों ७-७ माशा

—बबूल के पत्तों के रस में घोट कर २-२ रत्ती की गोली बनालो।

गुण—किसी भी मार्ग से रक्त आता हो इसके सेवन से शीघ्र बन्द होजाता है।

श्री पंडित श्रीपतिप्रसाद जी पाठक वैद्य "भिषगाचार्य"

श्री कालिकेश्वर आयुर्वेद-विद्यालय, बक्सर (आरा)

लेखक

पिता का नाम—श्री पं० गिरिजादत्त जी पाठक
आयु—२३ वर्ष जाति—शाक द्वीपीय ब्राह्मण
प्रयोग-विषय—१-उदर रोग २-प्रदर
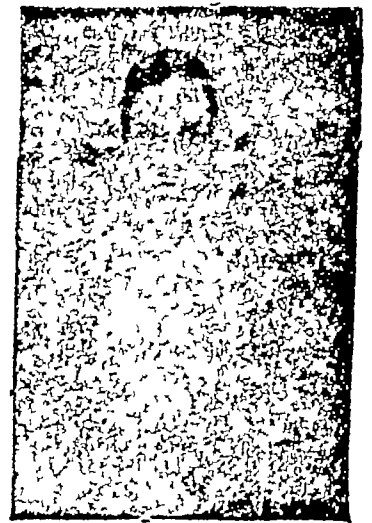
"श्री० पाठक जी के यहां कई पीढ़ियों से वैद्यक कार्य होता आया है। आपने बिहार संस्कृत एसासियेसन से आयुर्वेद शास्त्री उत्तीर्ण की है। आप बक्सर म्यूनिसिपिल बोर्ड के धर्मार्थ औषधालय में सहायक चिकित्सक के पद पर कार्य करते हैं। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

उदरभास्कर चूर्ण—

जीरा सफेद		जीरा स्याह
सौंफ		अजवाइन
हरड़	समुद्र नमक	अमलबेत
सैंधव नमक		—प्रत्येक १-१ तोला
काला नमक		आधा पाव
यवक्षार		२॥ तोला
नौसादर		१॥ तोला
नीबू सत्व		१॥ तोला

विधि—दोनों जीरों को घी में भूनकर शेष औषधियों सहित कूट कर कपड़-छन करलें। इस चूर्ण को हर प्रकार के उदर शूल में व्यवहृत करते हैं। मैंने उदर शूल पर इसे विशेष उपयोगी पाया है।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक शत-पुष्पार्क या जल के साथ देना चाहिये।

प्रदर नाशक—

अशोक छाल		२० तोला
आंवला	सफेद चन्दन	रक्त चन्दन
कमल पुष्प		अतीस (असली)
धाय के फूल	चित्रक	जीरा
नागर मोथा		—प्रत्येक १०-१० तोला

विधि—सबको कूट कर कपड़ छन करलें।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक, मिश्री १ तोला के साथ या शुद्ध मधु से दिन में ३ बार फंकाकर ऊपर से तण्डुलोदक पिलावें।

गुण—दोनों प्रकार के प्रदर पर पूर्ण लाभप्रद है। अन्य स्त्री-रोगों में भी लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

लेखक

श्री. कविराज ब्रजलाल गुप्ता वैद्य काव्यरत्न
बिछौर (गुड़गांवा)

पिता जी—स्वर्गीय श्री लाला बद्रीप्रसाद जी।

उम्र—४५ वर्ष जाति—वैश्य

"श्री० गुप्ता जी ने व्याकरण की शास्त्री कर श्री मंगलदत्त जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया तथा आयुर्वेद विशारद, वैद्यराज आदि उपाधि प्राप्त की। आप २४ वर्ष से चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं। बिछौर ब्रज की सरहद पर होने के कारण यहां उच्च कोटि के साधु-महात्मा आते रहते हैं। उनसे आपने अनेक साधारण किंतु अत्युपयोगी प्रयोग प्राप्त किये हैं।"
—सम्पादक।

चातुर्थिक ज्वर पर—

शु० मंजिल सुहागा कत्था
चूना (कलई) शुद्ध गंधक आंवलासार

—चारों १-१ तोला। लेकर ग्वारपाठे में ६ घंटे मर्दन कर टिकिया बना सुखालें और सराय-सम्पुट कर ५ सेर जंगली कण्डों में फूंक दें। स्वांग शीतल होने पर निकाल कर पीसलें।

सेवन-विधि—ज्वर आने से आध घंटे पूर्व २ रत्ती की मात्रा में देशी खांड के शर्बत के साथ दें। अगर कुछ ठंड मालूम पड़े तो दूसरी पुड़िया और दें। इसी प्रकार दो बार देने से लाभ होता है।

पथ्य—गेहूँ चने की रोटी, मूंग की दाल दें।

"नोट—औषधि ६० प्रतिशत लाभ करती है। इसे देते समय यदि रोगी को कब्ज़ हो तो विरेचन देकर कोष्ठशुद्धि करें।

२—बीच के दो दिनों में प्रातः सायंकाल महाज्वरांकुश निम्न प्रकार सेवन कराया जाय तो उक्त औषधि अवश्य लाभ करती है।

महाज्वरांकुश १ गोली तुलसीपत्र ५ नग
कालानमक २ रत्ती जीरा सफेद कच्चा १ मा.
—थोड़े पानी में पीस कर गुन गुना कर पीलें।

३—पारी के दिन जूड़ी चढ़ने के समय तक यदि रोगी को निराहार रखा जाय तो श्रेष्ठ है।"
—सम्पादक।

सर्पविष पर—

काक जंघा बूटी ताजी १ तोला। ताजी न मिल सके तो सूखी ६ माशे लें। काली मिरच १० नग के साथ आध पाव जल में घोट कर पिला दें। २-२ घंटे के अन्तर से ४-५ बार दें। सर्प-विष नष्ट होगा। रोगी को २ दिन तक अन्न न दें। केवल शाक भाजी दे सकते हैं। पशुओं को सर्प डसले तब भी यह उपयोगी होगी है। पशुओं को भी सूखा चारा देना चाहिये, उसमें अन्न का दाना न मिलावें।

"इस प्रयोग की परीक्षा का अवसर हमको नहीं मिला है। लेकिन प्रयोग अत्यन्त सरल है तथा लेखक ने इसे अनेकों रोगियों पर सफलता-पूर्वक बरता है, अतः प्रकाशित कर रहे हैं। पाठक परीक्षा कर फलाफल अवश्य सूचित करें।"
—सम्पादक।

श्री० डा० भानुदास कृष्णाशास्त्री तरडे

एम० डी० (होमियो) ए० बी० [बनारस]
दवाखाना कारंज बाजार, बुरहानपुर सी० पी०

जाति—ब्राह्मण आयु—२६ वर्ष

श्री० डा० साहब ने नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ बनारस से आयुर्वेदभिषक् की उपाधि प्राप्त की है, आपने महाराष्ट्र इन्स्टीट्यूट नामक संस्था में होमियोपैथिक का नियमित अध्ययन किया है, आप पाण्डु व संग्रहणी के विशेषज्ञ हैं। निम्न प्रयोग उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

नारू-रोग पर उत्तम योग—

सोहागा का लावा (भुना सुहागा) २ रत्ती ताम्बूल (नागर वेल के बनाये हुए पान) में रख कर दिन में दो बार दें। ३ दिन में तन्तु बाहर निकल आयेगा।

यदि न निकले तो टंकण-क्षार ठंडे पानी में पीस कर नारू के स्थान पर लगाने से तन्तु निकल आवेगा।

यदि फिर भी न निकले तो टंकण क्षार पके केल के साथ मिलाकर लेप करें। रोग अवश्य नष्ट होगा।

लेखक

अर्शनाशक मलहम—

नीलाथोथा सफेद कत्था बड़ी सुपारी

—सम प्रमाण में लें। सुपारी तथा नीलाथोथा को अग्नि द्वारा भूंजलें। मक्खन के साथ ताम्र पात्र में उपर्युक्त तीनों वस्तुए मिलाकर मरहम तैयार करें।

गुण-इसे प्रातः सायंकाल लगाने से अर्शरोग ८-१० दिन में अवश्य नष्ट होजाता है।

श्री० पं० लक्ष्मीनारायण जी शर्मा वैद्यराज

श्री० सरस्वती औषधालय पो० चिड़ावा [जयपुर]

—:():—

लेखक

पिता—स्वर्गीय पं० झालूराम जी राजवैद्य

आयु—५१ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० वैद्यराज जी वयोवृद्ध एवं अनुभवी चिकित्सक हैं। आप पहिले धर्मार्थ औषधालय के चिकित्सक रह चुके हैं, और अब आप श्री० सरस्वती औषधालय में प्रधान वैद्य हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

अर्क यवानी—

अजवायन	५ सेर
अड़ूसा	३० तोला
दालचीनी	कुलिंजन
पोहकरमूल	पीपरामूल
सोंठ	—पांचों ७-७ तोला
काकड़ासिंगी	काली मिरच
बड़ी इलायची	छोटी कटेरी
बड़ी कटेरी	नागरमोथा
भारंगी	—सातों ५-५ तोला

—सबको साफ़ करके, कूट कर, १५ सेर जल में २४ घंटे भिगो दीजिये। बाद में भबका से खींच लीजिये।

तोला से १ तोला तक।

स, कास, उदरशूल, अजीर्ण आदि के सर्वोत्तम औषधि है। कान में दर्द हो तो इसकी ३-४ बूंद डालने से शांत होगा। बद्धकोष्ठता में संचर नमक ३ माशे डाल कर गरम जल के साथ देने से लाभ होगा।

नहरू की दवा—

तिली का तैल	१ सेर
भिलावा	अजवायन खुरासानी
मोम	मुरदासन
सिंदूर	—पांचों २०-२० तोला
कपूर	४ तोला

—सबको पीस कर सारी दवा तैल में पकावें। लोहे की कढ़ाई में सब दवा जला कर उतार लें। नीम की लकड़ी से घोट कर पीस लें। और नहरुवा के ऊपर फोहा से लगावें। ५-७ दिन में लाभ होगा।

नोट—इसके साथ-साथ पापड़खार १४-१॥ जल के साथ लें तो शीघ्र लाभ हो सके।

[शेष पृष्ठ २५८ पर]

श्री० पं० विरंचीलाल जी आयुर्वेदाचार्य

श्री० माहेश्वरी आयुर्वेदीय दातव्य औषधालय,
पो० इस्लामपुर (जयपुर)

—:():—

—लेखक—
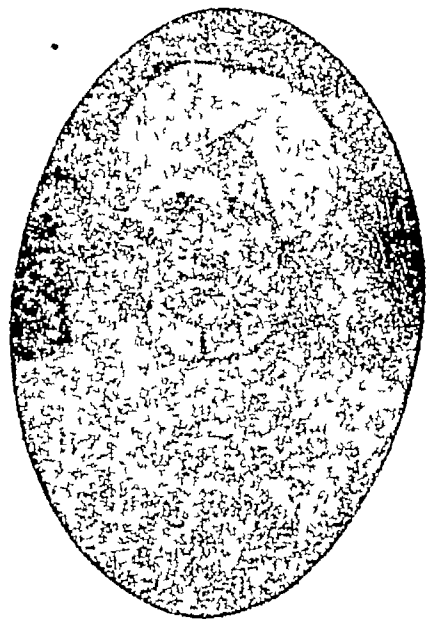
पिता का नाम— श्री पं० जयदेव जी शर्मा वैद्य

आयु—३१ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० वैद्य जी ने 'लाला ताराचन्द आयुर्वेद विद्यालय महेन्द्रगढ" से आयुर्वेद-शिक्षा प्राप्त की है और जयपुर की 'आयुर्वेद शास्त्री' एवं विद्यापीठ की 'आयुर्वेदाचार्य' परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। आप उत्साही एवं योग्य चिकित्सक हैं। पक्षाघात, ग्रहणी एवं उपदंश के विशेषज्ञ हैं। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी एवं परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।

केशोत्पादक तैल—

चन्दन बुरादा सफेद मुलेठी मूर्वा
नीलोफर प्रियंगु वट की कोंपल
गिलोय जटामांसी चित्रक की जड़
लौह बुरादा (वा कम पुट दी हुई भस्म)
करंज फल मिंगी आम की गुठली
कनेर छाल मुनक्का केशर
रसौत कलिहारी इन्द्रायन की जड़
गोखरू तिल के फूल वच
चिरमी (रत्तियां) श्वेत सरसों

—प्रत्येक ६-६ माशा

शारिवा दोनों भृंगराज का रस
चमेली के पुष्प या पत्ता —१-१ तोला
आंवले गीले (हरे) का रस १ तोला
बड़ी कटेरी का रस १ तोला
कड़वे परवल के पत्तों का रस १ तोला
त्रिफला १॥ तोला

—सबको लेकर कूटने वाली औषधियों को कूट कर तीन सेर पानी में औटावें; चतुर्थांश शेष रहने पर एक सेर बकरी का दूध मिलावें

घोड़े के खुर की अन्तर्धूम की हुई भस्म
हाथी दांत की भस्म —दोनों ६-६ माशा
आक का दूध थोहर का दूध १-१ तोला
शहद घी १-१ तोला
आंवला नागरमोथा ६-६ माशा

—लेकर उपरोक्त बकरी के दूध से कल्क करें। इसी में तिल का तैल आध सेर मिलावें। तैल पाक विधि से तैयार कर छान लें।

गुण – इसके कुछ दिन नियमित लगाने से निःसन्देह रोम (बाल) उत्पन्न हो जायंगे। यदि इसके साथ सुबह-शाम त्रिफला का सेवन करावें तो और भी अच्छा है।

उदरशूल पर—

निम्बूकागजी का रस	१ तोला
मधु यवक्षार	३-३ माशा

—मिला कर देने से कैसा भी भयंकर शूल हो नष्ट होजावगा।

यक्ष्मा पर—

विशुद्ध भल्लातक को बीच में से काट कर दूध में बराबर जल मिलाकर सिद्ध कर दूध छान कर मिश्री मिला पीने से ४० दिन में रोगी यक्ष्मा-रोग से अवश्य छुटकारा पायेगा।

नोट—१-भल्लातक अच्छी मिंगी वाला लें, ३-४ दिन गौमूत्र में भिगो दें। बाद में निकाल सरोंते या चाकू से काट कर ईंट के चूरे में दबा दें। १-२ दिन बाद निकाल कर गरम जल से धोकर व्यवहार में लावें। रोगी को केवल दूध ही दें।

२—इस दवा को उसी समय सेवन करावें जब यह विश्वास होजाय कि रोगी यक्ष्मा से ही पीड़ित है।

रक्तार्श—

श्वेत स्फटिका	१ माशा

—दही की मलाई में मिलाकर चाटने से कैसा भी रक्त गिरता हो पांच-सात खुराक में ही अवश्य बन्द हो जायगा।

[व्र]ण-नाशक—

मुर्दासंग	३० तोला
नीलाथोथा	१० तोला
कत्था सफेद	२० तोला
सुपारी की राख	२० तोला
कौड़ी (पीली) की राख	२० तोला

—सबको कपड़-छान कर तैयार करो। घी में मिला कर लगावें। कैसा भी फोड़ा हो उठते ही लगाने से सब काम यानी फोड़ना, भरना आदि यह मरहम ही कर देगा। अच्छी चीज़ है।

[पृष्ठ २५६ का शेष]

सुज़ाक पर—

शतावरी सफेद मूसली तोदरी
चांदी भस्म तालमखाना कौंचबीज
प्रवाल भस्म —प्रत्येक ७-७ माशे
विदारीकंद छोटी इलायची गोखरू
अभ्रक भस्म गिलोय सत्व शीतल चीनी
लोबान वंगभस्म —हरेक ६-६ माशे
बड़ी इलायची ४ माशे
कतीरागोंद सफेद चंदन
मोचरस —प्रत्येक ३-३ माशे
सालम मिश्री पंजेकी शु० शिलाजीत
वंशलोचन बिरोजा सत्व
कहरूवा रूल —हरेक १-२ माशे
मिश्री १६ तोला

—सबको कूटकर बारीक कर लीजियेगा।

मात्रा—६-६ माशे, जल के साथ दें।

गुण—सुज़ाक के लिये अत्युत्तम दवा।

कविराज वैद्य पं० विष्णुदत्त जी शर्मा आयु०

हरसौली [मुजफ्फरनगर]

—:x:—

लेखक

पिता का नाम—पं० द्वारिकाप्रसाद जी शर्मा

आयु—३४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० पडित जी ने सनातन धर्म प्रेमगिरि आयुर्वेद कालेज लाहौर से अयुर्वेदाचार्य की परीक्षा पास की है। आप सन्निपात-ज्वर के विशेषज्ञ हैं। आपके निम्न प्रयोग सन्निपात-ज्वर पर अत्युपयोगी हैं।" —सम्पादक।

सन्निपात पर—

मृगशृङ्ग भस्म (अर्क दुग्ध द्वारा)	२ रत्ती
प्रवाल भस्म	१ रत्ती
मुक्ता शुक्ति भस्म	१ रत्ती
सितोफलादि चूर्ण	४ माशा
ताम्र भस्म	१ रत्ती
पुष्पादि चूर्ण	४ रत्ती

यह एक मात्रा है, जो कि अद्रक स्वरस दस बूंद, पान का रस दस बूंद और मधु ६ माशा में मिलाकर दें। दिन में ४ मात्रा प्रयोग कर सकते हैं। पुष्पादि चूर्ण का योग निम्न लिखित है—

त्रिकुटा		३ तोला
पीपला मूल		१ तोला
छोटी इलायची		१ तोला
अकरकरा	लवङ्ग	१-१ तोला
रक्त चन्दन		४ तोला

—सबको बारीक पीसकर चूर्ण तैयार करलें।

सान्निपातिक पार्श्व-शूल पर —

बादाम तैल	अलसी तैल
तारपीन तैल	जैतून का तैल
तिल का तैल	—प्रत्येक १-१ माशा
स्प्रिट	१ तोला

—इन सबको मिला कर एक शीशी में डाल कर खूब हिला मिला कर जिस स्थान पर वेदना हो उस पर इस तैल को पन्द्रह-बीस मिनट मालिश करें। ऊपर से पान पर यही तैल लगावें और गर्म करके वेदना स्थान पर रख ऊपर से रुई रख बांध देना चाहिये। यह क्रिया प्रातः और सायं करनी चाहिये। हवा न लगने दें।

श्री० पं० रामरत्न जी दीक्षित आयुर्वेद-शास्त्री

दीक्षित औषधालय, बिलासपुर (रामपुर स्टेट)

लेखक

पिता का नाम—श्री० पं० रामनारायण जी वैद्य

आयु—२६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

प्रयोग-विषय—१-कास २-सुजाक

"श्री० दीक्षित जी ने पीलीभीत विद्यालय एवं बनारस में आयुर्वेद-ज्ञान प्राप्त किया है। आप उपदंश तथा सुजाक रोग के विशेषज्ञ हैं तथा आपके निम्न दोनों प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

कास पर—

सत मुलहठी	४ माशा
वंशलोचन	६ माशा
सफेद इलायची के दाने	६ माशे
काली मिर्च	४ माशे
सत गिलोय	६ माशे
पीपल छोटी	४ माशा
नमक काला	२ माशे
मुनक्का	७ दाने
दालचीनी	३ माशे
पोदीना सौंफ	४-४ माशे

—प्रत्येक औषधि को कूट कर कपड़छन कर लेना चाहिये।

मात्रा-१ माशे की मात्रा में ६ माशे शहद के साथ ४-४ घन्टे बाद चाटना चाहिये।

गुण-यह प्रयोग हर प्रकार व हर अवस्था की खांसी के लिये उपयोगी सिद्ध हुआ है।

सुजाक पर—

सेलखड़ी	२॥ तोला
शीतलचीनी	आध पाव
गेरू लाल	४ माशे
फिटकरी	६ माशे
कलमी शोरा	१॥ तोला
कपूर	२ माशे

—कूट कपड़छन कर २-२ माशे की मात्रा में लेकर दिन में चार बार गौ के पाव भर दूध के साथ खाना चाहिये।

पथ्य-खीर खानी चाहिये।

गुण-पेशाब खुलकर साफ आयगा और सुजाक रोग ५-७ दिन में नष्ट हो जायगा।

श्री० मुंशीलाल जी आर्य वैद्य-विशारद,

आर्य-फार्मेसी, कुंडरिया [शाहजहांपुर]

लेखक

पिता का नाम—श्री० द्वारिकाप्रसाद जी माहौर

आयु—२६ वर्ष जाति—वैद्य

"श्री० वैद्य जी को बचपन व विद्यार्थी जीवन से ही दीन आर्तजनों को औषधि-वितरण का शौक रहा है। आपने आर्य नवयुवक संघ की योजना की है। आप योग्य एवं उत्साही नवयुवक हैं। आपके निम्न प्रयोग उत्तम व परीक्षित हैं।"
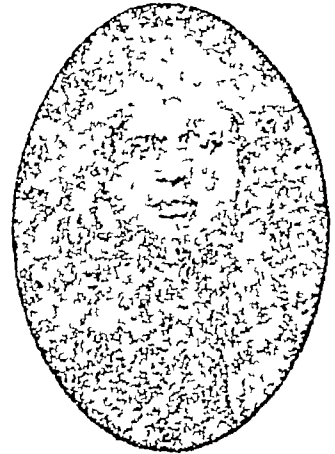
—सम्पादक।

हिस्टीरिया [योपपस्मार] हर—

मल्ल चन्द्रोदय	१ तोला
शुद्ध कुचला	१॥ माशे
घोड़ाचोली रस	६ माशे

—ताजे भांगरे के स्वरस में एक दिन घोटकर सुखाकर शीशी में भर लें।

मात्रा—१ रत्ती से ३ रत्ती, ६ माशे घी में मिलाकर प्रातःसायंकाल चटावें। भोजन हलका दें। पेट साफ़ रखें।

"हमने उक्त प्रयोग को बनाकर २-३ रोगियों पर व्यवहार किया है उत्तम लाभप्रद है। किन्तु साथ में हिस्टेरिया हर आसव भी दिया गया है। किसी-किसी रोगिणी को अनियमित मासिक-श्राव की शिकायत भी पायी जाती है। ऐसी दशा में पहिले रजःश्राव के लिये चिकित्सा करनी चाहिये। बाद में हिस्टीरिया रोग की चिकित्सा करें।"

—सम्पादक।

अर्श रोग पर—

पलुआ, कत्था सफेद निशोथ

—समान भाग लेकर मूली के स्वरस के साथ घोट कर १-१ माशे की गोली बनावें। गोलियों में मूली की जड़ का स्वरस जितना भी खपा सके उत्तम है। प्रातः सायंकाल १-१ गोली गरम जल अथवा मट्ठा के साथ लें। मूली का शाक तथा गेहूँ की रोटी खांय। बादी की बवासीर पर परीक्षित प्रयोग है।

श्री० आयु० वाचस्पति डा० विद्याप्रकाश जी

M. D. H. S. विशारद, औरंगावाद (खीरी)

लेखक

पिता का नाम—राजवैद्य स्वर्गीय पं० नन्दलाल जी वाजपेयी

"श्री० वाजपेयी जी के यहा वैद्यक-कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी होता चला आता है। आपने बाल-रोगों में अच्छा अनुभव प्राप्त किया है। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी व परीक्षित हैं।" —सम्पादक।
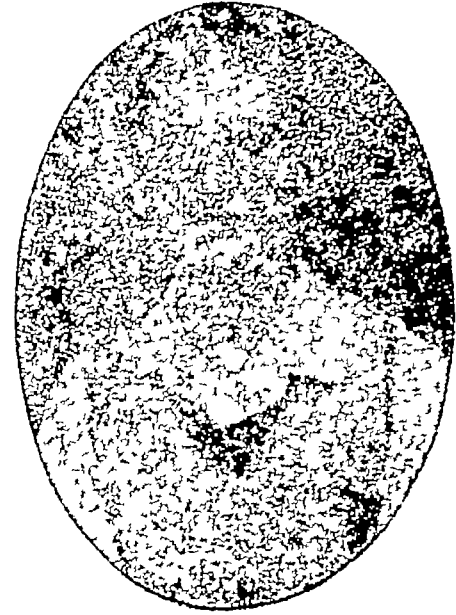
प्रदरान्तक वटी—

स्वन की भस्म	रजत भस्म
यशद भस्म	लोह भस्म
संग जरात भस्म—	प्रत्येक २-२ तोला
रससिंदूर	वंग भस्म
कोड़ी भस्म	—तीनों १-१ तोला

विधि—उपर्युक्त वस्तुएं लेकर खरल करें। तदुपरांत प्रथम पलाश के फूलों के रस की ३ भावना दें, पुनः खिरैटी के रस की ३ भावना दें और घोट कर १-१ रत्ती की गोलियां बनालें।

अनुपान—गूलर के पत्तों का स्वरस १ तोला मधु ३ माशा मिलाकर सुबह-शाम सेवन करें।

परहेज़—खटाई, लाल मिर्च, गुड़, तैल से परहेज़ करें।

उदर शूलान्तक वटी—

सोंठ	मिर्च	पीपल
आंवला	हरड़	बहेड़ा
कपूर		सोहागे का फूला
हींग का फूला		बड़ी इलायची
तेजपात		जायफल
लौंग	अजवायन	जीरा स्याह
शु० कुचला	यवक्षार	सज्जीखार

—प्रत्येक १-१ तोला।

निशोथ	लोह भस्म
रससिंदूर	अमलवेत

—चारों २-२ तोला।

काला नमक	३ तोला

विधि—प्रथम काष्ठादिक औषधियों का चूरा करके छान लें। पुनः भस्म मिलाकर काग़ज़ी नीबू के रस में घोटकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१ गोली से २ गोली तक आवश्यकता पड़ने पर गर्म जल के साथ सेवन करें। हर प्रकार के उदर शूल पर रामबाण है।

गंज नाशक प्रयोग—

पारा गंधक मुर्दाशंग कबीला

—चारों को बराबर लेकर प्रथम पारद, गंधक की कज्जली कर एकत्र कर उसे घी में मिलाकर गंज पर लेप करें। लगाने से पहिले नीम के पानी से गंज स्थान को धो डालें। दिन में २-३ बार लगायें। बीच में १ दिन छोड़ कर तीसरे दिन फिर लगायें। शर्तिया लाभ होगा।

श्री० वैद्य पं० रामचरणलाल जी वाजपेयी,

श्री० विष्णु फार्मेसी, औरैया (इटावा)

पिता का नाम-श्री. पं. मन्नूलाल जी वाजपेयी

आयु—५६ वर्ष जाति - ब्राह्मण

"श्री० वाजपेयी जी वयोवृद्ध एवं अनुभवी आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं। आपने आयुर्वेद का ज्ञान अपने घर पर ही स्वाध्याय से किया है। आपके निम्न प्रयोग अनुभवपूर्ण व उपयोगी हैं।" —सम्पादक।
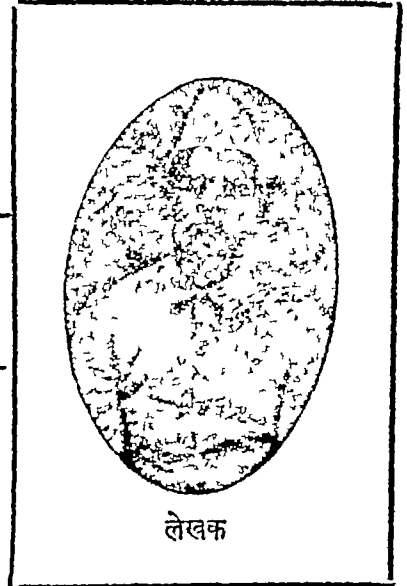
लेखक

कासहर वटी—

बहेड़ा	अनार का छिलका
पपड़िया कत्था	भुना सुहागा
मिर्च काली	मुलहठी
गुलबनफ्शा	—हरेक १-१ तोला
पान	५० नग
चूना (पान में लगाने का)	३ माशे

—सब दवा कूट-पीस कर बबूल की छाल के काढे के साथ गोली बनालें। यह हर प्रकार की कास के लिये उपयोगी है।

प्रदरारि अर्क—

रसौत	आक की बौंडी
लाल चन्दन	अडूसा के पत्ता
गिलोय	अशोक छाल
दारु हल्दी	—समान भाग

—लेकर यवकुट कर अठगुने पानी में भिगा दें। तीन दिन बाद भभका से अर्क खींच लें। गुप्त-प्रदर के लिये उत्तम है। ग्रीष्म-ऋतु में अधिक लाभप्रद है।

अर्क उसवा (चर्म रोगों पर)—

उसवा	नीम की छाल, निबौली
बकायन की मिंगी	मेंहदी के पत्ते
सफेद चन्दन का बुरादा	गुलाब के फूल
कचनार की छाल	धनियां
लाल चन्दन का बुरादा	गूलर की छाल

[शेष पृष्ठ २६६ पर]

आयुर्वेदाचार्य श्री० पं० रामेश्वर जी द्विवेदी

श्री० गणेश औषधालय, गोतोना पो० हैदरगढ़ [बाराबंकी]

पिता का नाम— वैद्यरत्न स्वामी गणेशानन्द जी वेदान्त-शिरोमणि

आयु-५० वर्ष

जाति—कान्य कुब्ज ब्राह्मण

"श्री० द्विवेदी जी के वंश में कई पीढ़ियों से वैद्यक कार्य होता आया है। आप अनुभवी चिकित्सक, योग्य लेखक तथा इन्जैक्सन-विज्ञान-विशारद हैं। आपकी योग्यता से प्रसन्न होकर विभिन्न संस्थाओं ने आपको ससम्मान उपाधि प्रदान की हैं। आपके निम्न प्रयोग उत्तम प्रतीत होते हैं। पाठक व्यवहार में लावें।"

—सम्पादक।

वन्ध्यत्व नाशक वटी—

देशी नील के बीज	४॥ माशा
हींग उत्तम	४॥ माशे
सन के बीज	४॥ माशे
गुड़	६ माशे

निर्माण—प्रथम तीनों चीजों को पृथक-पृथक बारीक कूट लें, फिर गुड़ के साथ कूट कर जंगली बेर के बराबर गोली बनालें।

क्वाथ—तिल काले नकछिकनी १-१ तोला —१५ तोला जल में औटावें। ७॥ तोला शेष रहने पर छान व ठंडा कर पिलावें।

सेवन-विधि—जब स्त्री को मासिक स्राव हो प्रथम दिन से ही उपर्युक्त क्वाथ प्रातःकाल पिलावें। मासिक स्राव बंद होने पर ऊपर लिखी गोलियां प्रातः-सायं शीतल जल के साथ दें। दुबारा मासिक स्राव होने पर प्रातःकाल २-२ गोली और शाम को उक्त क्वाथ सात दिन तक देते रहें।

नोट—औषधि सेवन से १ माह पूर्व से स्त्री-पुरुष को ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये। यानी २ माह पृथक रहे। द्वितीय बार मासिक स्राव के ७ दिन बाद यानी ८ वें दिन दम्पति खीर आदि सात्विक भोजन कर रात्रि के दूसरे प्रहर में सम्भोग करें। इस प्रकार करने से निश्चय गर्भधारण होगा।

शिरर्दद की मलहम—

कपूर	लौंग का तैल
इत्र संदल	१-१ तोला
इलायची का तैल	६ माशा
दालचीनी का तैल	६ माशा
यूकेलिप्टस आइल	६० बूंद
मालकांगनी का तैल	१ पाव
मोम देशी साफ	१२ तोला
पिपरमेंट	[illegible]

श्री० पं. शिवचरण लाल जी तिवारी वैद्यवर

जीवनसुधा औषधालय, लश्कर ।

लेखक

पिता का नाम- श्री० प० जीवनलाल जी तिवारी

आयु-२१ वर्ष जाति—कान्यकुब्ज ब्राह्मण

"श्री० तिवारी जी के वंश में लगभग ७ पीढ़ियों से वैद्यक कार्य होता आया है। आपने ग्वालियर आयुर्वेद विद्यालय से वैद्यवर तथा लाहौर विद्यापीठ से विशारद की परीक्षा पास की है। आपके निम्न प्रयोग उत्तम प्रतीत होते हैं।"
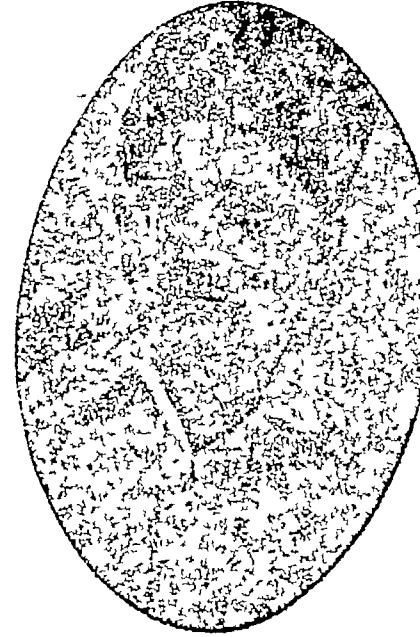
—सम्पादक ।

राजयक्ष्मादि पर "शिवा अर्क"—

अड्सा हरा १० सेर
छोटी कटेरी की जड़ झरबेरी की जड़
बबूल की अन्तर छाल १-१ सेर
मुनका २॥ सेर
भारंगी काकड़ासिंगी कूठ कड़वा
जायफल खूबकला पित्तपापड़ा
नागरमोथा धनिया पोहकरमूल
पृष्ठपर्णी तालीसपत्र रूमीमस्तंगी
पटोलपत्र लालचन्दन लताकस्तूरी
मुलहठी कचूर देवदारु
—प्रत्येक २॥-२॥ तोला
अकरकरा केशर जावित्री
वंशलोचन प्रयंगू —पांचों १-१ तोला
मीठा चिरायता छोटी इलायची
गिलोय तीनों ५-५ तोला
बहेड़े का बक्कुल अनार का छिलका
त्रिफला त्रिकुटा १०-१० तोला
चाय के फूल २० तोला

विधि—इन औषधियों को यवकुट कर ३० सेर पानी में भिगोवें। मुनक्का पीस कर मिला देवें। वर्तन मिट्टी, कलई या चीनी मिट्टी का होना चाहिये। वर्तन का मुंह बंद कर कपड़-मिट्टी से संधि बंद कर दें। गर्मियों में १२ दिन वर्षा में २० दिन तथा जाड़ों में १ माह रखा रहने दें। बाद में छान कर भवके से अर्क निकालें। अर्क खींचते समय केशर रूमीमस्तंगी की पोटली बना कर इस प्रकार लटका दें कि परिश्रुत बूंद पोटली पर होता हुआ बोतल में गिरे ।

मात्रा—आयु एवं बलानुसार १ तोले से २॥ तोले तक दें।

गुण—श्वास, कास, स्वरभेद, जीर्ण ज्वर, अम्लपित्त आमातिसार, प्रमेह रक्ताल्पता, रक्तदोष आदि के लिये तो लाभप्रद है ही, लेकिन यक्ष्मा रोगी के लिये अनुपम दवा है। बच्चों की कुकर-खांसी के लिये भी उपयोगी है। बच्चों को ताक़त देने वाली है।

प्रमेह रोग पर—

इमली के भुने हुये चीये (बीज) छिलका उतरे हुए — २० तोला
कमल गट्टे की मिंगी, बेर की गुठली
धाय पुष्प, पठानी लोध, मोचरस
शतावरी, बबूल की कच्ची फली
असगंध नागौरी, विदारी कंद
नागकेशर, लजवन्ती के बीज, खस
सोंठ, मिरच, पीपल
तेजपात, लौंग, छोटी इलायची
वंशलोचन, नागरमोथा
शिवलिंगी की जड़, कोंच की जड़
शु० शिलाजीत, कृष्णसारिवा
वायविडंग — प्रत्येक १-१ तोला
हरड़, बहेड़ा, आंवला
कसेरू — प्रत्येक २ २ तोला
दालचीनी, जावित्री — ६-६ माशे
घृत ४० तोला, शक्कर ८० तोला

—दवाओं को कूट-कर कपड़-छान करलें। घृत शक्कर तथा निम्न-लिखित भस्मादि मिला कर मोदक बनालें।

केशर — ३ माशे
प्रवालपिष्टि, नागभस्म — १-१ तोला
मुक्तापिष्टि — १॥ माशे
रजत भस्म, कान्तीसार भस्म
स्वर्णमाक्षिक भस्म — तीनों ६-६ माशे

मात्रा—१-१ तोला दूध (एक पाव दूध में मिश्री मिला कर) के साथ लें। प्रातः भोजन के पहिले तथा रात्रि को सोते समय दवा लें।

गुण—हर प्रकार के प्रमेह, धातु का पतलापन, स्त्रियों का प्रदर, सोमरोग, गर्भाशय-विकृति, मासिक-धर्म विकृति आदि रोगों के लिये उत्तम प्रमाणित हुआ है।

रसवैद्य साधुशरणदास जी आयु० भिषक्

कबीर चिकित्सालय, हाजीखाना-भड़ौंच।

लेखक

पिता का नाम - श्रीरामफूल जी शास्त्री

आयु—२८ वर्ष जाति—गौड़ ब्राह्मण

"श्री० वैद्य जी को अहमदाबाद वैद्य-सभा ने 'रस वैद्य' की उपाधि तथा अभिनन्दन पत्र द्वारा सम्मानित किया है। आप हिस्टेरिया प्रमेह, प्रदर रोग के विशेषज्ञ हैं। आपके निम्न प्रयोग उत्तम प्रतीत होते हैं।"

—सम्पादक।

नेत्राऽमृत—

शुद्ध नीलाथोथा	१ तोला
गुलाबजल	४० तोला

—असली नीलाथोथा को लेकर निम्बु के रस में मर्दन कर अग्नि स्राव करने से शुद्ध होता है। प्रथम नीलाथोथा को खूब बारीक पीसकर गुलाबजल में डाल दें, और शीशी को हिला-कर धूप में रख दें। दो-तीन दिन धूप में रखे रहने के बाद कपड़े में छान लें। बस नेत्राऽमृत तैयार होगया। किसी प्रकार के भी नेत्र शूल में इसकी एक-दो बूंद डालें। आशु-लाभप्रद सिद्ध होगा। आई हुई आंखों को २-३ दिन में ही आराम कर देता है। मैंने आठ वर्ष का कुसुम (फूला) इसी से ठीक किया है।

पुराने पेट शूल पर —

(ताम्र भस्म योग)

ताम्र भस्म	संजीवनी वटी
शंख भस्म	कपर्दिका भस्म

—प्रत्येक १-१ रत्ती

—इन सबको अदरक रस और मधु के साथ प्रातः, दोपहर तथा सायं को देने से पुराने उदरशूल का शमन होता है।

ताम्रभस्म निर्माण-विधि—

ताम्र कंटक	१ तोला
वरकी हरताल	२ तोला
सफेद संखिया	१॥ माशे

—वरकी हरताल को जौ-कुट कर सराव में आधा नीचे रखे, उस पर ताम्र रखें, ताम्र के ऊपर

[शेष पृष्ठ २७१ पर]

आयु० भिषक जगतनारायण सिंह जी वैद्य

पिपराकलां पो० नरही (बलिया)

—————*—————

लेखक

पिता का नाम—श्री० डा० महेश सिंह जी वैद्य

आयु -४२ वर्ष जाति—क्षत्रिय

"श्री० वैद्य जी के पिता भी योग्य वैद्य थे। आपने आयुर्वेद-ज्ञान अपने पिता जी एवं बनारस के कविराज उमाचरण जी से प्राप्त किया है। अ० भा० विद्यापीठ की आयुर्वेद-भिषक् की परीक्षा भी पास की है। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित हैं।" —सम्पादक।
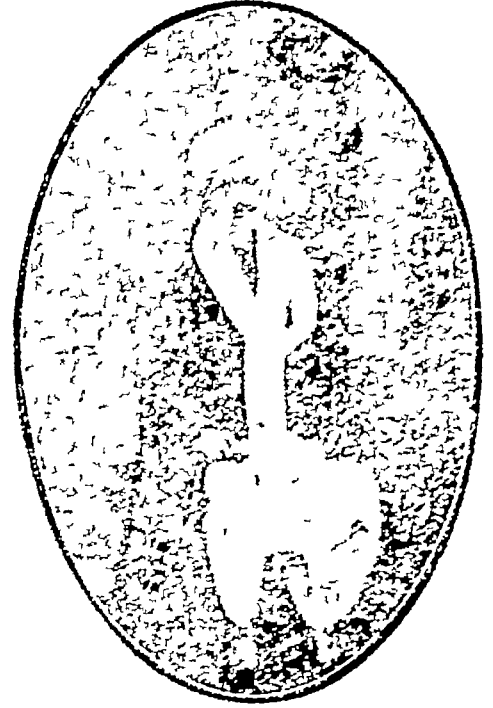
तूतिया भस्म—

१ पाव तूतिया ईख के सिरका में घोटें और छाया में सुखा कर सराव सपुट में बन्द कर, २० कण्डों की आंच में फूंक दें। स्वांग शीतल होने पर पीस कर शीशी में रखदें। छोटे २ बच्चों को जब पसली चलती है, उस समय इसमें से १ चावल दवा मा के दूध में पिला दें। क्रय और दस्त होकर फंसा हुआ कफ निकल जावेगा और बच्चे को आराम हो जावगा।

अगर बड़ों को दमा, शूल, आध्मान हो या शीतज्वर हो, १ या २ रत्ती १ तोला घी में मिलाकर पिलादें। शीघ्र अच्छा होगा। अगर उपदंश के कहीं घाव हों तो १ माशे दवा को ५ तोला घी में मिलाकर लगावें

नेत्रसुधा—

नवसादर	तीन भाग
असली सिंदूर	१ भाग

—मिलाकर शीशी में रखें। ३ माशे १ तोला मधु में मिलाकर नेत्र में दोनों समय लगावें तो माड़ा फूली, रतौंधी, खाज, आंसू गिरना, बाल-झड़ना, मोतिया बिन्द आराम होगा।

केशरी वटी—

असली केशर	१ तोला
हरड़ के वक्कुल का चूर्ण	१ तोला
असली एलुआ	१ तोला

—जल के योग से पीस २-२ रत्ती की गोली बना लें। दवा को सोते समय १-२ या ३ गोली गर्म जल से दें। दमा खांसी जीर्ण ज्वर, क्षय, वातरक्त, स्त्रियों को मासिक-ऋतु की रुकावट आदि रोगों में लाभ होता है।

आयु. पं० जयभगवान जी शर्मा वैद्यराज

प्रिंसीपल-श्री. लक्ष्मणदास आयुर्वेद विद्यालय, खुर्जा ।

—:():—

पिता का नाम—श्री पं० श्रीचन्द्र जी शर्मा

आयु—३० वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० पंडित जी विद्वान व सफल आयुर्वेद-अध्यापक हैं। आपके पिता एव पितामह की मृत्यु आपके बाल्यकाल में होजाने के कारण गृह-भार सम्भालते हुए आपने थोड़े समय में ही आयुर्वेद की कई परीक्षाएं पास कीं और अब आप ६-७ वर्ष से उक्त विद्यालय में अध्यापन कार्य बड़ी सफलता के साथ कर रहे हैं ।"

—सम्पादक ।

लेखक

रक्तार्श पर—

करैरी की गिरी — रसौत

कपूर — निबौली की गिरी

विधि—समान भाग लेकर जल के साथ पीस कर चने बराबर गोली बनालें ।

व्यवहार—प्रातः सायं २-२ गोली शीतल जल के साथ लेनी चाहिये । इसी गोली को जल में घिस कर मस्सों पर लेप करें ।

विषम ज्वर पर—

द्रोणपुष्पी — हजारदाना

सरफोंका — चिरायता बूटी

फिटकिरी (गुलाबी) का फूला

विधि—समान भाग लें । सबके बराबर मिश्री लें और चूर्ण बनालें ।

व्यवहार—ज्वर चढ़ने से पूर्व ३-३ माशे चूर्ण गरम जल के साथ दें । रोगी की अवस्था व बल का विचार कर मात्रा कम ज्यादा भी की जा सकती है ।

गुण—इसके उपयोग से विषम-ज्वर २-१ दिन में जाता रहता है ।

[पृष्ठ २६६ का शेष]

सोमल बुरक दें । फिर सोमल के ऊपर शेष हरताल को बुरक दें, जिससे ताम्र ढंक जावे । पीछे सराव सम्पुट करके फूंक देवें, तीन घंटे के बाद सराव सम्पुट को निकाल लेवें और गरम २ सराव में से ताम्र भस्म को छुड़ा लेवें, सराव शीतल होने से भस्म निकालने में बहुत कठिनता होती है । इसलिये सराव को निकालते ही धुंआ बचाकर खोलकर सड़ांसी आदि से भस्म को छुड़ा लें और शीतल होने पर पीस लें । कृष्ण रंग की भस्म तैयार होगी ।

कविराज अरुणादेवी आयुर्वेदप्रभा

जामनगर (काठियावाड़)

पति का नाम—कविराज अभयचन्द्र जी मेहता

आयु—२४ वर्ष जाति—जैन

—लेखिका—

"श्री० देवी जी ने भाषा का ज्ञान प्रथम अपने पति से प्राप्त कर भगत लखाराम तनजा महिला आयु० महाविद्यालय में आयुर्वेद अध्ययन किया और 'आयुर्वेद-प्रभा' की परीक्षा पास की है। आप आयुर्वेद-सम्मेलन की आजीवन सदस्या हैं। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी हैं।" —सम्पादक।

सौभाग्य शृङ्गार—

अशोक छाल		२० तोला
अश्वगंधा		२० तोला
अर्जुन छाल		२० तोला
धमील	कालाजीरा	धनिया
वच	सोंठ	देवदारु
दरद	मिर्च	बहेड़ा
आंवला	पीपल	वायविडंग
मोथा	हल्दी	चित्रक
चव्य	पीपरामूल	दारु हल्दी
चिरायता		गज पीपल
	हरेक १०-१० तोला	
निशोथ		१५ तोला
दन्तीमूल		१५ तोला

—यवकुट कर १॥ मन जल में पकावें, जब चतुर्थांश शेष रह जाय, छान लेवें और पुनः अग्नि पर चढ़ावें तथा निम्न प्रक्षेप उसमें डालें—

शिलाजीत सूर्यतापी	४० तोला
शु० गुग्गुल	४० तोला
यवक्षार	सज्जी क्षार
सैंधव नमक	सौवर्चल लवण
विड नमक	—प्रत्येक ५-५ तोला

—उपरोक्त वस्तुएं डालकर जब तक गाढ़ा हो जाय हिलावें। पुनः लेही जैसा गाढ़ा होने पर निम्न वस्तुएं डाल दें।

एला चूर्ण	दालचीनी
तेजपत्र	५-५ तोला
लोह भस्म	१६ तोला
कर्पूर	२ तोला
तबासीर	१० तोला
स्वर्णमाक्षिक भस्म	८ तोला

—ठीक तरह से मिलाकर ४-४ रत्ती की गोली बनालें।

[शेष पृष्ठ २७४ पर]

श्री० वैद्य बाबूलाल जी अग्रवाल आयु. वि०

अध्यक्ष—श्री अग्रवाल औषधालय, विजयगढ़।

—:():—

पिता का नाम—लाला श्यामलाल जी अग्रवाल

आयु—३५ वर्ष जाति—अग्रवाल वैश्य

प्रयोग-विषय—१-मूत्रावरोध २-उदरशूल

"श्री० वैद्य जी ने आयुर्वेद-विशारद की परीक्षा श्री० बनवारीलाल आयु० विद्यालय दहली से पास की है। आपने संस्कृत का ज्ञान स्वाध्याय से प्राप्त किया है। आप कष्ट-साध्य रोगियों की चिकित्सा बड़ी लगन के साथ करते तथा सफल होते हैं। आपके निम्न-प्रयोग परीक्षित व उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

लेखक
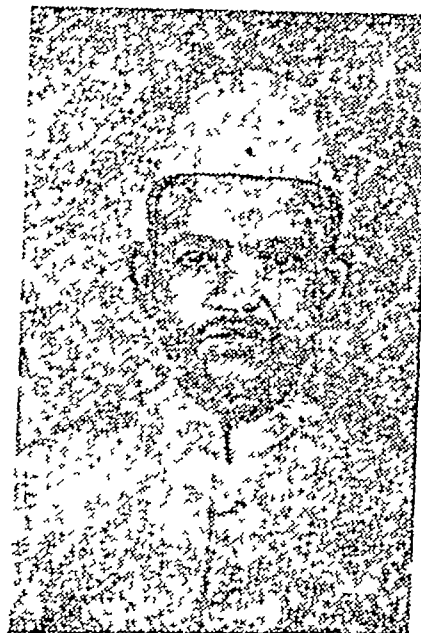
मूत्रावरोध पर—

ब्राण्डी	२ तोला
तारपीन का तैल	३ तोला
गुलरोगन	१॥ तोला
अफीम	२ माशे
सोडावान कौडिया	२ माशे
* अमृतधारा	४ तोला

विधि—प्रथम ब्राण्डी में अफीम और सोडावान कौड़िया को मिलाओ, फिर तारपीन के तैल में अमृतधारा की औषधियों को मिला कर कुल औषधियों को एकत्र कर शीशी को हिलायें। तरल औषधि तैयार होगी। इसे रोगी की नाभि के चारों तरफ थोड़ा-थोड़ा डालकर धीरे-धीरे हाथ से मलो।

गुण—इससे त्रिदोष जनित अफारा (आध्मान) भी दूर होजाता है और रुका हुआ पेशाब (मूत्र) उतरने लगता है।

उदर शूलादि पर—

अर्क नीबू	अदरख का स्वरस
मूली का स्वरस	पांचों नमक
ग्वारपाठा का स्वरस	सिरका

—प्रत्येक १०-१० तोला

—इन सबको १ बोतल में भरकर ८ दिन तक धूप में रक्खा रहने दो, फिर नितार कर छान लो।

मात्रा—३ माशे औषधि में ३ माशे जल मिलाकर पिलाओ।

गुण—इससे सब प्रकार का उदरशूल (पेट का दर्द) दूर होजाता है और जिगर, तिल्ली, मन्दाग्नि नष्ट होजाते हैं।

* पिपरमेंट सत्व अजवाइन तथा कपूर समभाग में मिला कर थोड़ा देर रखा रहने से पिघल कर तरल बन जायगा। यही अमृतधारा प्रयोग करें।

श्री० पं० सत्यव्रत जी प्रेमी आयुर्वेदाचार्य

प्रोफेसर—आयुर्वेदिक कालेज, डौरेली (मेरठ)

"आप परीक्षितगढ़ जिला मेरठ निवासी श्री० पंडित वृन्दावन जी के सुपुत्र हैं। नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ के स्नातक हैं। यू. पी. वैद्य-सम्मेलन के प्रचार मंत्री हैं। आजकल आयुर्वेदिक कालेज डौरली के प्रोफेसर हैं।"

—सम्पादक।

श्वेतप्रदर—

पठानी लोध	२० तोला
समुद्रसोख	२० तोला
अनार की कली	५ तोला
मोचरस	५ तोला
ढाक का गोंद	५ तोला
मिश्री	२० तोला

विधि—सबको कूट-छान मिश्री मिला रखलें। पाव-पाव भर गरम करके दूध में मिश्री मिला उसके साथ प्रातः-सायं एक-एक तोला फकावें, श्वेत प्रदर को अचूक है।

प्रमेह पर—

भूफली (बहुफली)	१ तोला
मोचरस	१ तोला
संखाहोली (शंखपुष्पी)	१ तोला
ढाक का गोंद	१ तोला

विधि—सबको कूट-छान मिश्री मिला कर रख लें। प्रात. रात्रि दूध के साथ ६-६ माशे फांकने से प्रमेह रोग नष्ट होता है।

[पृष्ठ २७२ का शेष]

गुण—कष्टार्तव, नष्टार्तव, अल्पार्तव, प्रदर (श्वेत या रक्त) वन्ध्यत्व, सोमरोग, प्रसवकालीन रोग इसके सेवन से नष्ट होते हैं।

नोट—यह चन्द्रप्रभा वटी का संशोधित रूप है, किंतु इसके सेवन से पुरुष व स्त्री के हर प्रकार के रोग में लाभ होता है। इसलिये इसका नाम 'सौभाग्य श्रृङ्गार' रखा है।

अत्यार्तव के लिये—

—जावित्री ३ तोला लेकर अर्क केवड़ा, अर्क गुलाब १०-१० तोला, खांड २० तोला मिलाकर बोतल में भरलें। इस बोतल को पानी में रखदें, १० दिन बाद छान कर रखलें। अत्यार्तव होने पर उपरोक्त आसव के अनुपान से निम्न औषधि देवें. यह निद्रादायक भी है।

नागकेशर	१ माशे
नाग भस्म	मुक्ता भस्म
संग जराहत भस्म	—तीनों १-१ रत्ती

—मिलाकर १ मात्रा बनावें।

गुण—अत्यार्तव के लिये सर्वोत्तम है।

वैद्यराज पं० ब्रजमोहन जी वैद्यरत्न के. भू.

शिव औषधालय, उदयपुर (शेखावाटी)

"श्री० वैद्यराज जी का निवास-स्थान जयपुर स्टेट के शेखावाटी प्रदेश में 'झुंझलोद' है। पर आप ३५ वर्ष से उदयपुर (शेखावाटी) में शिव औषधालय में काम कर रहे हैं। संग्रहणी आदि दुर्दमनीय व्याधियों की चिकित्सा में आप लब्ध प्रसिद्ध हैं। आपके ६ पुत्रों में से चार पुत्र भी अलग-अलग स्थानों के विख्यात चिकित्सक हैं। धन्वन्तरि के प्रसिद्ध लेखक श्री० पं० महावीरप्रसाद जोशी आपके ही सुपुत्र हैं। आपकी आयु इस समय ५५ वर्ष की है।" —सम्पादक।

रक्त-शोधक घृत—

आजकल भारत में प्रायः सर्वत्र ही रक्त-विकारों का एक-छत्र साम्राज्य होरहा है इसका कारण वेजिटेबल घी का प्रचार है। अतः इसके उपचार में भी हम एक घृत का ही प्रयोग लिख रहे हैं। जो रक्त विकार, उपदंश, खुजली एवं प्रदर में अपूर्व फल देने वाला है।

बहुफली	५ तोला
मजीठ	२ तोला
मुलहठी	३ तोला
कासनी	६ माशा
गुलाब फूल	३ माशा
मुनक्का	१० तोला
शतावरी	५ तोला
आमला	३ तोला
चोबचीनी	५ तोला
उशवा	१२ तोला

खरबूजा बीज ककड़ी बीज
सौंफ सनाय घनिया
उन्नाव —प्रत्येक १-१ तोला

—इन चीज़ों को रात्रि के समय पानी में भिगो कर प्रातःकाल ६ सेर जल में चढ़ाकर मन्दाग्नि से पकावें। १॥ सेर अवशिष्ट रखें। नितार कर दूसरे पात्र में लेलें। उस शुद्ध जल में ४३ तोला गो-घृत रात्रि में डालकर छोड़ दें। प्रातःकाल मन्दाग्नि से पकावें। दो दिन में धीरे २ पकाकर तैयार करें।

मात्रा—प्रातःकाल ६ माशे से १ तोला तक मिश्री इलायची में मिला चाटें।

रक्त रोग, दाद, मस्तिष्क-दौर्बल्य, प्रदर, प्रमेह, एवं उपदंश आदि में अव्यर्थ है।

विशूचिका नाशक अर्क—

पलाण्डु	१ सेर
सौंफ	४ सेर
हरा पोदीना	१ सेर
आलू बुखारा	आध सेर
लवंग	१ छटांक

[शेष पृष्ठ २७६ पर]

कविराज अभयचन्द्र जी महेता वैद्य-वाचस्पति

जामनगर (काठियावाड़)

—पिता का नाम—
लवजी भाई न्यालचन्द महेता
आयु—३० वर्ष जाति-जैन

"श्री० महेता जी उत्साही व प्रभावशाली विद्यार्थी रहे हैं। आपने अपने विद्यार्थी-जीवन में अपनी प्रतिभा दिखाते हुए स्वर्णपदक व रौप्यपदक प्राप्त किये हैं। श्री दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज लाहौर से कविराज तथा "वैद्यवाचस्पति" की सम्मान पास की है। आजकल झण्डू धन्वन्तरि आयुर्वेद विद्यालय में तथा इरविन हास्पीटल जामनगर में कार्य कर रहे हैं। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

शूलान्तक—

भीमसैनी कर्पूर 1 रत्ती
वातान्तक चूर्ण 3 रत्ती

प्रत्येक प्रकार की वातिक वेदना में उष्ण जल के साथ लेने से ५-१० मिनट में वेदना शान्त हो जाती है, हमको इस औषधि के सामने पस्प्रीन या पस्पो की कोई आवश्यकता नहीं है।

गुण—शरीर के किसी भाग में दर्द का दौरा होता हो। शूल स्थिर हो या अस्थिर, उदर में शूल हो तो उपरोक्त १ मात्रा दो, पुनः १० मिनट के बाद दूसरी मात्रा दें।

* अशुद्ध कुचला लेवें, उसे एरण्ड तैल में तल लें। जब लाल होजाय तो निकाल लेवें पुनः त्वक छील कर बिज्ञा निकाल कर के चूर्ण कर लेवें। यही वातान्तक चूर्ण है।

—लेखक।

"अपान देव" या सप्तामृत—

करञ्ज मज्जा चूर्ण	२ रत्ती
कड़वा जीरा	२ रत्ती
इन्द्र-यव	२ रत्ती
हरड़ चूर्ण	३ माशा
नृसार (नवसादर)	४ रत्ती
हिंग्वाष्टक चूर्ण	१॥ माशा
वातान्तक चूर्ण	२ रत्ती

—सबका चूर्ण बनालें, पुनः इसमें अदरक व बिजोरे निम्बु की १-२ भावना देकर सुखालें।

मात्रा—६ माशा भोजनोत्तर।

गुण—उदर-रोगों में दें, विशेषतया अपान वायु विकृत होजावे तब दें अरुचि, अचपन, विबन्ध, जीर्णाजीर्ण, अम्लपित्त, आदि में प्रयोग करें।

अनुपान-गर्म जल।

—लेखक—

[शेष पृष्ठ २७८ पर]

आयुर्वेदाचार्य योगेन्द्रचन्द्र शुक्ल आयुर्वेदरत्न D I M S

अध्यापक-मूलचन्द रस्तोगी आयुर्वेदिक कालेज, लखनऊ ।

"श्री० शुक्ल जी आयुर्वेद-पंचानन पं०जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल के सुपुत्र हैं। आपका जन्म सम्वत् १९७० में दारागंज प्रयाग में हुआ। आपने संस्कृत तथा आयुर्वेद की शिक्षा ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम तथा ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज में प्राप्त की है। कई वर्ष से आप सुधानिधि का सम्पादन कर और ग्राम सुधार औषधालय में रह कर आर्त जनता की सेवा करते रहे हैं। आजकल लखनऊ के मूलचन्द रस्तोगी आयुर्वेदिक कालेज में प्रोफेसर हैं तथा सुधानिधि का सम्पादन कर रहे हैं।"

—सम्पादक।

चिकित्सा-क्षेत्र में अनुभव हुआ कि कास रोगियों को अनेक उत्तमोत्तम औषधियां देने पर भी कभी-कभी यथेष्ट लाभ नहीं होता; उसके अनेक कारणों में टोन्सिलस का बढ़ जाना अथवा काकवृद्धि भी (यूवेलाइटिस) हुआ करते हैं। एलोपैथ लोग ऐसी दशा में मैंडिल आदि योगों का स्थानीय प्रक्षेप कराते हैं किन्तु आयुर्वेदीय चिकित्सक विशेष ध्यान नहीं देते। मैंने ऐसी अवस्था में निम्न-लिखित लेप का प्रयोग कर अच्छा लाभ देखा है। जिन मित्रों को मैंने यह प्रयोग बताया वे भी इसे लाभप्रद तथा सद्यःफलप्रद ही बतलाते रहे हैं। मैं इसे कण्ठलेप नाम से प्रयोग करता हूँ।

कण्डलेप—

लौंग	सोंठ	काली मिरच
पीपल	कुलिंजन	मुलेठी
भुना चौकिया सुहागा		३-३ माशा
प्याज का रस		एक छटांक
रेक्टीफाइड स्प्रिट		एक छटांक

—सम्पूर्ण औषधियों का कपड़छान चूर्ण कर लें, और प्याज का रस तथा रेक्टीफाइड-स्प्रिट एक साफ कांच की शीशी में भर कर उक्त चूर्ण को शीशी में डाल कर एक सप्ताह तक शीशी का कार्क बन्द रहने दें। दिन में १-२ घण्टे धूप में रख दिया करें, ८ वें दिन छान कर रक्खें।

प्रयोग-विधि—रोगी को नमक और गरम पानी के गण्डूष कराकर प्रातः—सायं एक फोहा टान्सिलस या बढ़े हुए काग पर लगा दिया करें।

(पृष्ठ २७७ का शेष)

शिर दर्द पर—

भीमसेनी कपूर १ रत्ती जल से देवें।

गुण-प्रत्येक प्रकार का शिर-दर्द ४-५ मिनट में शान्त होजाता है। यह सर्वत्र निसकोच होकर प्रयोग करें।

एस्प्रीन हृदयावसादक है। लेकिन यह वल्य व रसायन गुणों को रखता है।

नोट—भीमसेनी कपूर शास्त्रीय-विधि से बना हुआ होना चाहिये।

कवि. श्री. सतीन्द्रनाथ बसु L.A.M.S.

भिषगरत्न, आयुर्वेद-शास्त्री, हिंगनघाट।

पिता का नाम—स्वर्गीय श्री० रजनीकान्त बसु

आयु—१८ वर्ष जाति—कायस्थ

"श्री० कविराज जी प्राच्य-पाश्चात्य दोनों विषयों के पूर्ण विज्ञ, योग्य एवं अनुभवी चिकित्सक हैं। आप स्वर्गीय कविराज गणनाथसेन जी के प्रिय शिष्यों में से हैं। आप विद्यार्थी जीवन में हर कक्षा में प्रथम रहे तथा आयुर्वेद कालेज की अन्तिम परीक्षा में आपको ४ स्वर्णपदक तथा २ रौप्यपदक प्राप्त हुए। आपने चिकित्सा-क्षेत्र में भी अच्छी ख्याति प्राप्त की तथा अनेकों उच्च पदाधिकारियों एवं सम्मानित व्यक्तियों के प्रसशापात्र बने हैं। आप गरीबों के लिये सदा त्यागशील रहे हैं। आपका निम्न प्रयोग परीक्षित एवं उपयोगी है। निमोनिया की सफल चिकित्सा-विधि भी आपने प्रकाशनार्थ भेजी है जिसे हम धन्वन्तरि के आगामी अंक में प्रकाशित करेंगे।" —सम्पादक।

वमन के लिये—

श्वेत पर्पटी, जिसको 'बंगदेशीय' क्षारक्षार भी कहागया है, आयु का विचार कर १ रत्ती से ३ रत्ती तक लें। छोटा-हरा पपीता, जिस के अन्दर बीज भी न पड़े हों लें और उसका छिलका पृथक कर दें। इसे चूने के पानी (Lime water) के साथ कुचल कर अर्क निचोड़ लें। इस अर्क के साथ श्वेत-पर्पटी की एक मात्रा दे दें।

गुण—एक ही मात्रा में वमन बंद होजाती है। वमन किसी भी प्रकार की हो; विशूचिका की वमन में भी यह प्रयोग लाभप्रद सिद्ध हुआ है। आवश्यकता समझें तो दूसरी मात्रा भी दी जा सकती है।

वैद्य पं० वसुचन्द्र मिश्र 'आयु० धन्व०'

विजयगढ़ (अलीगढ़)

—*—

पिता का नाम—श्री० पं० शंकरलाल मिश्र

आयु—३१ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० मिश्र जी ने आयुर्वेद एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज देहली से 'आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि' की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप योग्य, मिलनसार एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। आपके निम्न प्रयोग निमोनिया पर पूर्ण परीक्षित हैं अतः वैद्य समाज के लिये अत्युपयोगी प्रमाणित होंगे ऐसी आशा है।" —सम्पादक।

न्यूमोनिया पर—

शु० मल्ल शु० ताल

शु० हिंगुल —तीनों १-१ तोला

—उपरोक्त औषधियों को लेकर करेला के एक सेर रस में एक सप्ताह तक मर्दन कर सरसों बराबर गोलियां बनायें। आवश्यकता पड़ने पर प्रातः-सायंकाल १-१ गोली मिश्री के साथ मिला कर दें। रोग का वेग शान्त होने पर रोगानुकूल अन्य औषधि-व्यवस्था करें।

जब निमोनिया-रोगी के गले में कफ घर-घर कर रहा हो, निम्न योग परम लाभकारी सिद्ध हुआ है।

सोंठ कालीमिर्च पीपल

अकरकरा —चारों १-१ तोला

—कूट कर कपड़-छान कर लें और उसमें स्वर्ण-माक्षिक भस्म तथा यवक्षार १-१ तोला मिला कर रखलें। आवश्यकता पड़ने पर २ रत्ती से ४ रत्ती तक अद्रक स्वरस के साथ दें।

श्री० पं० नारायणदत्त जी शर्मा वैद्य-विशा०

विजयगढ़ [अलीगढ़]

—*—

पिता का नाम—श्री० प० गंगाप्रसाद जी जोतिषी

आयु -४५ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० पंडित जी ने आयुर्वेद एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज से आयुर्वेद विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप प्राचीन ढंग के अनुभवी चिकित्सक हैं। आपके निम्न-प्रयोग अनेकों रोगियों पर परीक्षित एवं पूर्ण प्रभावशाली हैं।" —सम्पादक।
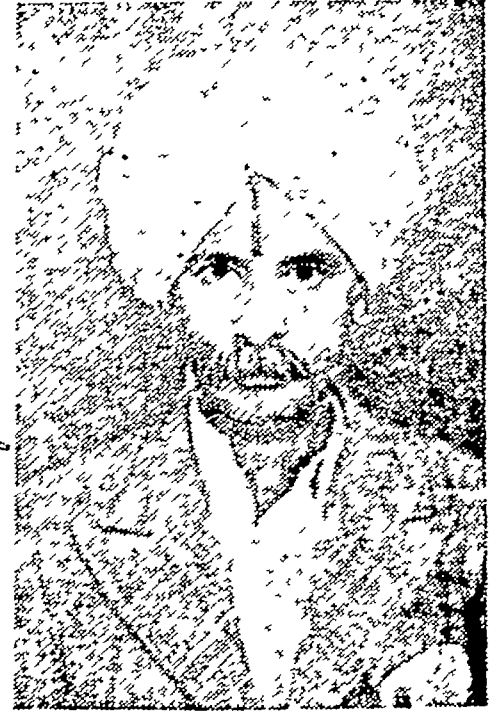
लेखक

यकृत्प्लीहोदर पर—

पांचों नमक पृथक-पृथक १-१ तोला
सज्जीक्षार यवक्षार अजमोद
वायविडंग सुहागा भुना
—हरेक ६-६ माशे
गुड़ पुराना ५ तोला
लोह (फौलाद) चूर्ण १० तोला
ग्वारपाठे का गूदा २॥ सेर

—इन सबको मिट्टी के पात्र में १५ दिन तक रखा रहने दें। बाद में छान कर बोतल में भर लें।

मात्रा—१ तोला से २ तोला तक, प्रातः-सायं-काल लें।

गुण—इसके सेवन से उदर विकार, यकृत, प्लीहा, आध्मान, गुल्म, कोष्ठ बद्धता, पाण्डु, कामला, आदि उदर विकार नष्ट होते हैं। रक्त की वृद्धि होती है। तथा क्षुधा बढ़ती है।

हिक्का-नाशक—

—गजपीपल तथा रेणुका (सम्भालू) दोनों १-१ तोला लेकर यवकुट कर पाव भर जल में चतुर्थांशावशिष्ट क्वाथ कर ३ माशे हीरा हींग का फूला मिलाकर शीशी में रखलें।

मात्रा—इस क्वाथ में से ३-३ माशे की मात्रा में दिन में ३-४ बार दें।

गुण—इसके प्रयोग से हिक्का-रोग अवश्य नष्ट होता है।

—लाहौरी नमक १ माशा पीसकर २॥ तोला पानी में घोल कर, उस पानी की २-३ बूंद नाक में डाल दें। हिचकी तुरन्त बंद होगी।

—काले घोड़े की लीद तम्बाकू में मिला चिलम में रख धूम्रपान कराने से हिक्का रोग नष्ट होता है।

पूर्व प्रकाशित वे प्रयोग जिनकी परीक्षा हो चुकी है

"इस स्तम्भ के अन्तर्गत प्रतिमाह नियमित रूप से उन प्रयोगों को प्रकाशित किया जायगा जो धन्वन्तरि में पहिले प्रकाशित हो चुके हैं और पाठकों द्वारा परीक्षा करने पर जो उपयोगी प्रमाणित हुए हैं। इस प्रकार पाठक इस स्तम्भ में प्रकाशित प्रयोगों को निडर होकर व्यवहार में ला सकेंगे। पाठकों से निवेदन है कि धन्वन्तरि में प्रकाशित किसी प्रयोग को यदि वे बना कर व्यवहार में लाये और वह उत्तम फलप्रद प्रमाणित हो तो उसे प्रकाशनार्थ सविवरण भेज दें। प्रयोग लिखते समय निम्न-विवरण अवश्य लिखें—धन्वन्तरि का वर्ष, अंक तथा पृष्ठ-संख्या, जहा पर वह प्रयोग पहिले प्रकाशित होचुका हो, पूरा प्रयोग व उसकी निर्माण-विधि तथा अपना अनुभव।

यदि आप किसी प्रयोग को परीक्षा करने पर हानिप्रद पाये तो उसकी सूचना (केवल धन्वन्तरि का वर्ष, अंक तथा पृष्ठ) हमको दें, हम उसे भी प्रकाशित कर अन्य धन्वन्तरि पाठकों को सावधान कर देंगे। इस क्रम से दो लाभ होंगे, प्रथम तो अन्य ग्राहक उस प्रयोग को बनाकर समय, पैसा एवं यश की हानि न करेंगे, दूसरा लाभ यह होगा कि प्रयोग प्रेषकों को यह ध्यान हो जायगा और वे केवल नाम प्रकाशित होने के लोभ से निरर्थक प्रयोग प्रकाशनार्थ भेजने का साहस भविष्य में न कर सकेंगे।"

—सम्पादक।

परीक्षक-श्री० तेजोलाल जी नेमा

शास्त्री, भाटापारा।

(धन्वन्तरि भाग ५ अंक ११-१२ पृष्ठ ३८७)

प्रदर रोग पर—

केला की पकी फली	४ नग
दालचीनी	१॥ तोला
लोध	छोटी इलायाची के बीज
धवई पुष्प	इमली के बीजकी मिंगी
नागकेशर	आम की गोंद
आम की गुठली की मिंगी	रसौत

—प्रत्येक ६-६ माशे

माजूफल	सोंठ	३ ३ माशे
मिश्री		७ तोला
घृत		८ तोला

—इनका चूर्ण कर कपड़-छन कर घृत मिलालें।

मात्रा—प्रातः सायंकाल ६-६ माशे जल के साथ लें। १-१॥ घण्टे बाद गौदुग्ध व मिश्री मिला कर पिलावें।

गुण—सब प्रकार के प्रदर नष्ट होते हैं।

(धन्वन्तरि भाग ५ अंक ५ पृष्ठ २४८)

बालामृत—

नागफली थूहर के डोंडे (जो पक कर अच्छी तरह सुर्ख हो गये हों) एक सेर लाकर सायं-

काल को (थोड़ा दिन रहने पर) सूखी घास में डाल कर आग लगादें। फलों के ऊपर के कांटे जल कर साफ हो जांयगे। पानी से कूड़ा करकट अच्छी तरह साफ कर लोहे के खरल में कूटें और मजबूत कपड़े में निचोड़ें। फोक को पुनः कूट कर निचोड़ लें। लगभग आध सेर लाल रंग का अर्क निकल आयेगा। इस

अर्क में पीपल ५॥ तोला

अतीस काकड़ासिंगी नागरमोथा

—तीनों २॥-२॥ तोला

—को एक सेर पानी में क्वाथ करें। एक पाव शेष रहने पर छान कर उपर्युक्त अर्क में मिला दें। इस तीन पाव द्रव्य में तीन पाव मिश्री डाल कर चासनी करलें और रेक्टीफाइड स्प्रिट ६ माशे मिला कर बोतल में रख छोड़ें।

मात्रा —५ वर्ष तक के बालक को ३-३ माशे दिन में ३ ४ बार दूध या पानी में मिला कर पिलावें।

गुण—बालकों का बुखार, खांसी, अतिसारादि ठीक होते हैं।

(धन्वन्तरि भाग७ अंक ३ पृष्ठ ११०)

कफ-कोप पर मृगश्रृंग भस्म—

बारहसिंगा के सींग शोरा कलमी

अजवायन —प्रत्येक १-१ सेर

एरंड का पानी तथा दूध आवश्यकतानुसार

विधि—सींगों के आगे से छोटे—छोटे टुकड़े उतार लें, बहुत मोटे हों तो चीर भी लें। फिर शोरा और अजवायन को एरंड के पानी के साथ यदि यह न मिले तो ताजा जल के साथ ही घोट कर लुगदी बनालें और सींग के कतरों पर लेप करदें। फिर कोयलों के ऊपर वे टुकड़े अलग २ रख कर ऊपर कोयले रखें और अंगार रख कर फूंक दें। खूब आग लग चुके और स्वांग शीतल हो जाय तब सींग के टुकड़े निकाल कर एक शकोरे में रखें और आक का दूध इतना डालें कि वे तर होजांय। फिर उस पर दूसरा शकोरा रख कपरौटी करके गज-पुट में फूंक दें। अब भस्म बिलकुल श्वेत होगी। पहिले सफेद, काली थी। काम वह भी देती, पर यह शुद्ध और सुन्दर होगी।

मात्रा—आधी रत्ती से २ रत्ती तक है।

गुण—कफ ज्वर, फुफ्फुस—ज्वर (न्यूमोनिया) पार्श्वशूल (प्लूरिसी) कफज, आमवात, उदरवात के लिये, उचित अनुपान से दें। अत्यन्त लाभ करती है।

(धन्वन्तरि भाग ७ अंक ३ पृष्ठ १२७)

बाल-शोष-कासारि अवलेह—

आंवला	४० तोला
उत्तम मधु (शहद)	४० तोले
गौ का घृत	१० तोले
मिश्री	६० तोला
पीपल छोटी दालचीनी	६-६ माशे

काकड़ासिंगी गांजवा गुडूची सत्व

तालीसपत्र गुलबनफशा इलायची दाने

वंशलोचन मुलहटी (छिली हुई) बहेड़े

प्रत्येक १-१ तोले

विधि—आंवले, आधा सेर ही जल में पका कर बीज और रेशे निकाल दें, सिल पर पीस लें और घृत में भूनलें। जिसमें आंवले पके थे उसी जल में मिश्री की चासनी करलें। शेष सब चीजें कूट—पीस कर तैयार रखें और भुने आंवले और मधु की चाशनी में डाल मिला कर रखलें।

व्यवहार-मात्रा—६ माशे से २ तोले तक [प्रातः व सायं] अनुपान, गाय का धारोष्ण दूध ऊपर से पीलें; न मिले तो गौ का औटा दूध ठंडा कर मिश्री मिला कर पीवें।

गुण—श्वास, कास, ज्वरान्त की निर्बलता और प्रारम्भ ही हो तो क्षय भी इस आमलका-वलेह से दूर होता है। बाल-शोष के लिये अत्युत्तम है। हम स्वयं १०-११ वर्ष की आयु में बालशोष होकर अस्थि-पंजर मात्र रह गये थे, सदा शुष्क खांसी रहती थी। तब भी इसी योग ने हमें जीवन-दान दिया था। आप भी इससे लाभ उठा देखें।

परीक्षक-श्री. महेन्द्रनाथ जी अग्निहोत्री

(धन्वन्तरि भाग १६ अंक १-२ पृष्ठ ४६)

वेजयावटी—

शुद्ध भांग	२ तोला
कायफल	लोध पठानी
अजवायन	इलायची
सोना गेरू	—पांचों १-१ तोला
शुद्ध अफीम	३ माशा

विधि—कपड़-छन चूर्ण को जल या अजा (बकरी) के दुग्ध में रगड़ कर चना बराबर वटी बनावें। सुखाकर बोतल में रक्खें।

मात्रा—अवस्थानुसार बड़ों को १ से २ गोली तक बच्चों को चौथाई से एक गोली तक।

समय—चार २ घण्टे के अन्तर से।

अनुपान—जल।

गुण—दस्त, बदहज़मी, वायु; मन्दाग्नि, थोड़ा खाना, अधिक दस्त आना आदि विकार दूर होते हैं। यह गोलियां पाचन सुधार कर पेट को मजबूत बनाती हैं, धीरे-धीरे दस्तों को बन्द करती हैं।

(धन्वन्तरि भाग १३ अंक ६ पृष्ठ ६२१)

प्रदर की शतशोनुभूत चिकित्सा—

बबूल का गोंद	शुद्ध रसौत
दारु हल्दी	१-१ तोला
शुद्ध गेरू	पीपल की लाख
नागरमोथा	६-६ माशा
मिश्री	२ तोला

विधि—कपड़-छन चूर्ण करके कागदार शीशी में रक्खें।

दूसरा प्रयोग—

कतीरा गोंद, गोखरू, पपड़िया कत्था, सेलखड़ी समान भाग।

विधि—कपड़-छन चूर्ण करके रक्खें।

अनुपान—अजा (बकरी) दुग्ध। समय-सायंकाल

विशेष—दोनों प्रयोगों से सभी प्रकार के प्रदर अच्छे होते हैं।

—लेकर दोनों समय भोजन के पहिले देने से चेचक नहीं सताती।

"मैं कई साल से इस प्रयोग को व्यवहार में ला रहा हूँ। हर साल चेचक के प्रकोप के समय से पूर्व ही मैं उक्त वस्तुओं को पीस पानी के साथ गोली बना कर और छाया में सुखा कर अपने बच्चों, घरवालों व पड़ोसियों को १ गोली से ४ गोली तक ताजे पानी के साथ प्रयोग कराता हूँ। पहिले तो चेचक निकलती ही नहीं है, और यदि निकलती भी है तो हलकी निकलती है। चेचक निकलने के समय भी मैं इसी का प्रयोग करता हूँ।"—परीक्षक।

(धन्वन्तरि भाग २१ अंक ६ पृ. ३२७)

पायरिया पर—

नारंगी के छिलकों के कपड़-छान चूर्ण का प्रातः मंजन की तरह व्यवहार करने पर ८-१० दिन में पायरिया रोग नष्ट होता है।

"पहिले सिर्फ नारंगी के छिलकों का कपड़-छान चूर्ण करके कई रोगियों पर प्रयोग किया, लेकिन सन्तोषप्रद लाभ नहीं हुआ। फिर मैंने अपने मंजन में इसे मिला कर प्रयोग कराया और उत्तम फल प्राप्त हुआ।

योग—नीम की नई कोपल छाया शुष्क, काली मिरच, सेंधानमक, मौलश्री की छाल, नारंगी के छिलके सूखे, माजूफल और कपूर-देशी मंजन बनालें। —प्रातः सायंकाल मंजन किया जाता है।—परीक्षक।

(धन्वन्तरि भाग २१ अंक ६ पृ० ३८३)

मलेरिया पर नमक—

नमक को खूब बारीक पीस कर कपड़े में छान लेना चाहिये। इस बारीक नमक को लोहे के तवे पर डाल कर मंद-मंद अग्नि से गरम करें। जब नमक का रंग बदल जाय, काला सा पड़ने लगे तब उतार नीचे रखलें और ठंडा करके शीशी में भरलें।

व्यवहार-विधि—

मलेरिया रोगी को पारी के दिन ज्वर आने से कम से कम ४-५ घण्टे पूर्व ६ माशे की मात्रा में एक पाव पानी में घोल कर पिला देना चाहिये। इसके सेवन के पश्चात् जब तक जूड़ी का समय न निकल जाय किसी प्रकार का भोजन नहीं देना चाहिये। पानी भी कम से कम देना चाहिये। यथासम्भव इलायची व अनार के दानों को मुंह में डलवा कर रोगी की प्यास शांत करनी चाहिये, बहुत प्यास लगने पर भी थोड़ा जल देना चाहिये। प्रायः एक दिन में ही लाभ होता है। किसी ही रोगी को दो बार देना पड़ता है। यदि किसी प्रकार उस दिन मलेरिया का आक्रमण हो ही जाय तो ज्वर उतरने पर हलका पौष्टिक भोजन देना चाहिये और दूसरे दिन पुनः इसी प्रकार करना चाहिये।

"इस प्रयोग को मैंने मलेरिया ज्वर-रोगियों पर व्यवहार किया, बहुतों को लाभ हुआ, कुछेक को लाभ नहीं भी हुआ। सस्ता और आसानी से बनने के कारण प्रयोग उत्तम है तथा गरीब रोगियों में खूब बांटा जासकता है।"

—परीक्षक।

परीक्षक-श्री० लोकमणि सकलानी

आयुर्वेदाचार्य, जुब्बल।

(धन्वन्तरि भाग १६ अंक १-२ पृ० २५३)

प्रतिश्याय विध्वंसक वटी—

शु० कुचला काली मिरच सोंठ
पीपल छोटी —प्रत्येक १-१ तोला

—पीस कर गोली मूंग बराबर बनावें। ४-५ गोली दूध में औटाई हुई जलेबी के साथ रात को सोते समय खाने से एक ही दिन में प्रतिश्याय दूर हो जाता है। उस दिन रात्रि को भोजन नहीं करना चाहिये। २-३ रोज तक नाक से पानी बह जाने के बाद अगर खाई जाय तो बहुत अच्छा है। इससे सिर का दर्द, कनपटियों में दर्द, आंख में दर्द, नाक, बंद रहना, समस्त मस्तिष्क के उपद्रव दूर होजाते हैं। शिरो-व्याधि में भी यह गोली स्प्रीन की भांति आशु-प्रभाव दिखाती है। यदि निरन्तर कुछ दिन दूध-घी तथा दूध-जलेबी के इसका प्रयोग किया जाय तो सिर का दर्द सर्वदा के लिये शांत हो जाता है।

एकाहिक, तृतियक एवं चातुर्थिक ज्वर में भी इस गोली का प्रयोग होता है।

"मैंने जब इस प्रयोगको दुबारा बनाया तो इसमें १ तोला लवंग और मिलादीं, इससे इसके गुणों में और भी वृद्धि पाई गई। अनुपान में, मैं प्रायः उष्ण जल बताया करता हूँ। पथ्य वही जो प्रतिश्याय में आमतौर पर दिया जाता है।"

—परीक्षक।

सम्पादकीय प्रयोग

कई सज्जनों का आग्रह है कि मुझे भी इस विशेषांक में अपने प्रयोग प्रकाशित करने चाहिये इस अवस्था में जब कि मैंने बहुत से वैद्य-बन्धुओं को अपने आग्रह से प्रयोग भेजने के लिये विवश कर दिया है तो नियमतः मेरा यह कर्तव्य भी है। इसी भावना से मैं उन तीन प्रयोगों को जिन्हें नित्य-प्रति चिकित्सा में व्यवहार में लाता हूँ प्रकाशित कर रहा हूँ।

गर्भस्राव पर—

यह प्रयोग, उन स्त्रियों के लिये जिन्हें बार-बार गर्भ-स्राव होजाता हो, विशेष उपयोगी है। यह प्रयोग जो देखने में साधारण है, अब तक बीसियों स्त्रियों पर व्यवहार किया गया है, मुझे प्रसन्नता है कि अभी तक एसा अवसर कोई नहीं आया जहां इस प्रयोग का नियमित व्यवहार किया हो और असफलता हुई हो। प्रयोग भी साधारण है एवं सेवन करने और बनाने का भी कोई विशेष झंझट नहीं है, मुझे आशा है कि वैद्य-बंधु विश्वास-पूर्वक इसका व्यवहार करावेंगे।

प्रयोग—गर्भके प्रथम माह में ढाक(पलाश)का १ हरा स्वच्छ पत्र (पत्ता) लेना चाहिये और उसके बारीक टुकड़े करके पाव भर या आध सेर गौ दुग्ध में डाल दें। दुग्ध के बराबर जल मिला कर अग्नि पर रख दें। जब दुग्ध मात्र शेष रह जाय छान कर मिश्री मिलाकर पिला देना चाहिये।

प्रथम माह में एक पत्ता, द्वितीय माह में दो, तृतीय माह में तीन, इसी प्रकार हर माह १-१ पत्ता बढ़ाते हुए नवम माह में नौ पत्र उपर्युक्त प्रकार सेवन करावें। दूध का कोई प्रतिबंध नहीं है, पाव सेर, आध सेर या जितना चाहें दे सकते हैं। हां, दूध गाय का ही होना चाहिये।

मेरी गारंटी है कि यह प्रयोग कभी असफल नहीं हो सकता। जिन स्त्रियों का १०-१० बार गर्भ-स्राव होचुका था, इसके प्रयोग से संतानवती हुई हैं।

* * *

चन्दौसी—निवासी पं० रामस्वरूप जी वैद्य-शास्त्री महोदय ने अपना निम्न प्रयोग धन्वन्तरि के परीक्षित-प्रयोगांक के लिये बड़े आग्रह करने पर प्रदान किया था, परस्पर वार्तालाप होने पर आपने इसकी बड़ी प्रशंसा की और उसीसे प्रभावित होकर मैंने भी इस प्रयोग को तैयार किया और अब तक दस-बीस नहीं सैकड़ों रोगियों पर व्यवहार किया है। इसके प्रभाव को देख कर मुझे स्वयं बड़ा आश्चर्य होता है डाक्टरों से निराश कई रोगियों को मैंने इस प्रयोग से लाभ पहुंचा कर आश्चर्य-चकित किया है। मुझे विश्वास है कि जो भी सज्जन इसे बना कर व्यवहार करेंगे वह शास्त्री जी को अवश्य धन्यवाद देंगे।

शूलशार्दूल वटी—

मिर्च स्याह	१ तोला
हल्दी	४ तोला
मोम देशी	४ तोला
गुड़	५ तोला

विधि–ऊपर की दोनों औषधियां बारीक पीसकर गुड़ और मोम को खरल में डालकर खूब घोटें पुनः पिसी हुई दवा को भी इसी में मिलावें। फिर जंगली बेर के बराबर गोली बनाकर सुखावें, पश्चात् यदि कोई रोगी उदर-शूल से नितान्त पीड़ित हो और कोई दवा अपना असर न कर रही हो एवं लेप-सेंक तथा खाने की औषधियां भी फेल होचुकी हों तो आप इस गोली की धूनी दीजिये दर्द तत्काल ही शान्त हो जावेगा।

व्यवहार–एक दहकता हुआ अंगार लेकर अंगीठी में रखकर दो गोली ऊपर से रख दीजिये, चारपाई से वस्त्र हटवा दीजिये, चारपाई से अंगीठी १॥ बालिस्त की दूरी पर नीचे होनी चाहिये। गोली का धुआं पहुंचते ही शूल शान्त हो जाता है।

यूं तो यह गोली सर्व-प्रकार के शूलों को ही लाभ करती है किन्तु वृक्क शूल और अन्तर वृक्कशूल अर्थात् (दर्द-गुर्दा और दर्द हवालिये गुर्दे) दोनों की रामबाण औषधि है।

इन दोनों शूलों में वमन के कारण औषधि उदर में नहीं रुकती, इसलिये धूनी ही हितकर होती है।

स्त्री को जो स्तन रोग होता है जिसको हिन्दी में थनैला कहते हैं, उसकी भी सर्वोत्तम औषधि समझें, शीत-विष पर भी अद्भुत प्रभाव करती है।

उपदंश में भी इसकी धूनी से शोथ, शूल और जख्मों के लिये बहुत फायदा होता है।

श्वास-रोग में भी इसका धूम्रपान कराने से दौरा तत्काल शान्त होता है।

उत्तम विरेचन—

बादाम की मींग	५ तोला
अन्डी की भीतर की सफेद मींग	५ तोला
शुद्ध जमालगोटा की मींग	१ तोला

—तीनों औषधियों को थोड़ा जवकुट करके, बादाम रोगन की मशीन से जिस प्रकार बादाम रोगन निकाला जाता है उसी प्रकार इनका तैल निकाल लें।

व्यवहार-विधि—आवश्यकता के समय १ से ३ बूंद तक बतासे में डालकर अथवा त्रिफला, पंचसकार या किसी विरेचन चूर्ण में मिलाकर व्यवहार करावें।

गुण–यह उत्तम विरेचक है। कठिन कोष्ठ वाले रोगियों को इसकी १ बूंद से शर्तिया विरेचन होता है।

कुछ अपने विषय में..

अधिकांश पाठकों को यह ज्ञात है कि इस प्रयोग संग्रह को जो कि अब हम विशेषांक-रूप में पाठकों को भेंट किया जारहा है, पहिले पुस्तक रूप में प्रकाशित करने का निश्चय किया गया था। उसीके लिये विद्वान वैद्यों से प्रयोगों की याचना की गई थी। प्रयोग एकत्रित करने, उनके संदिग्ध द्रव्यों का लेखकों से समाधान करने और उनकी परीक्षा में बहुत अधिक समय व्यतीत हो गया। जब सब प्रकार से कार्य-पूर्ण हो गया और पुस्तक की प्रेस-कापी भी तैयार हो गई, तब कागज की असुविधा सामने आगई। बहुत कुछ चेष्टा की गई किन्तु सरकार से इसके लिये कागज नहीं मिल सका। भरसक प्रयत्न करने पर भी इधर यह विलम्ब होरहा था उधर उन सैकड़ों ग्राहकों का जिन्होंने पुस्तक के लिये एडवांस भेज रखा था बेहद तकादा था, बड़ी विकट परिस्थिति थी। फलतः इस प्रयोग-संग्रह को विशेषांक रूप में पाठकों को देने का निश्चय किया गया। यद्यपि इसमें बड़ी हानि हुई, क्योंकि केवल पुस्तक का ही मूल्य ६) रखा गया था। इधर धन्वन्तरि का वार्षिक मूल्य विशेषांक एवं साधारण अंकों सहित ४) ही है। इसके अतिरिक्त यदि अन्य किसी विषय पर विशेषांक प्रकाशित किया जाता तो उक्त पुस्तक का लाभ हमें प्रथक मिल जाता। इसीलिये प्रयोगों की परीक्षा करने और ब्लोक बनवाने आदि पर इतना अधिक व्यय किया गया था। किन्तु ग्राहकों के तगादों से ऊब कर हानि का चिन्ता न करके हमने इस संग्रह को विशेषांक रूप में ही प्रकाशित कर दिया। हमें अपने ग्राहकों पर पूर्ण विश्वास रहा है और हम समझते हैं कि हमारी हानि को हमारे सुहृदय पाठक अनुभव करेंगे तथा १-२ नवीन ग्राहक बनाकर इस क्षति की पूर्ति करने की चेष्टा अवश्य करेंगे।

हां, एक बात और है। इस पुस्तक का सम्पूर्ण साहित्य कार्यालय के व्यय पर हमारे भूतपूर्व सम्पादक द्वारा एकत्रित किया गया था। उनके पास ही इसके प्रयोग चित्रादि और प्रेस कापी भी थी। कार्यालय से प्रथक होते समय उन्होंने प्रेस कापी के अतिरिक्त अन्य वस्तुएं अस्त-व्यस्त रूप में हमको दीं, अतः हम नहीं कह सकते कि जो वस्तुएं हमें दी गई वह पूर्ण थीं या अपूर्ण। अब कई सज्जनों के पत्र मिलने पर हमें ज्ञात हुआ है कि उनके चित्र, प्रयोगादि उनमें नहीं हैं। अब इतना समय नहीं था कि हम उनके चित्र, प्रयोगादि मंगा कर ब्लाक बनवा सकते और प्रयोगों की परीक्षा कर सकते। विवशतया हम उनके प्रयोगादि इसमें प्रकाशित नहीं कर सके। हम ऐसे महानुभावों से क्षमा चाहते हैं। मुझे विश्वास है कि हमारी विवशता समझ कर क्षमा कर भी देंगे

इस विशेषांक में कार्यालय का बहुत धन-व्यय हुआ है, अतः इन सब प्रयोगों को प्रकाशित आदि करने का पूर्ण अधिकार कार्यालय का है। जो सज्जन इन्हें उद्धृत करें उन्हें स्वीकृति ले लेनी चाहिये। कई महानुभावों के पत्रों से ज्ञात हुआ है कि इस विशेषांक के प्रयोगों को ही एक सज्जन पुस्तक रूप में प्रकाशित करना चाहते हैं। उनका यह कार्य कानूनी दृष्टि से तो अवैध होगा ही नैतिकता की दृष्टि से भी सर्वथा अनुचित होगा। वही प्रयोग जो इस विशेषांक में प्रकाशित होरहे हैं पृथक प्रकाशित करने से आयुर्वेद-समाज की क्या सेवा हो सकेगी? थोड़े से आर्थिक लाभ की आशा में पाठकों का समय व कागज का दुरुपयोग सर्वथा अविवेक-पूर्ण कार्य कहा जा सकता

है। उत्तम और उचित तो यही है कि ऐसा ही दूसरा संग्रह प्रकाशित किया जाय, जिससे वैद्य-समाज का कुछ लाभ हो। यदि ऐसा कोई संग्रह प्रकाशित होगा तो हम उसका हृदय से स्वागत करेंगे।

"धन्वन्तरि" सदैव से ही आपकी कृपा पर अवलम्बित रहा है और उसने जो उन्नति की है वह सब आपकी कृपा का ही फल है, कृपया इस बार भी १-२ नवीन ग्राहक बनाकर हमारी सहायता करने का अनुग्रह करें।

गुप्त सिद्ध-प्रयोग का दूसरा भाग

जब से इस संग्रह को विशेषांक रूप में प्रकाशित करने की सूचना दी गई है, कई ग्राहकों ने अपने २ प्रयोग भेजकर प्रकाशित करने का आग्रह किया है, प्रयोग उत्तम होते हुए भी विवशतया हम उन्हें प्रकाशित नहीं कर सके, न तो इतना समय ही था कि हम उन प्रयोगों की परीक्षा करते और ब्लाक आदि तैयार करा सकते और न 'धन्वन्तरि' के इस विशेषांक में स्थान ही शेष था। उन सज्जनों के अतिरिक्त अन्य बहुत से वैद्यराजों के पास भी उत्तम २ प्रयोग होना सम्भव है, अतः हमने निश्चय किया है कि गुप्त सिद्ध-प्रयोग का दूसरा भाग पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाय। इस दूसरे भाग में भी २५० वैद्यों के ही प्रयोग और परिचय होंगे। कुछ विद्वानों को छोड़ केवल उन्हीं वैद्यराजों के प्रयोग इसमें प्रकाशित किये जायंगे जिनके प्रयोग इस विशेषांक में प्रकाशित नहीं हुये। सभी प्रयोग परीक्षा करने के पश्चात् प्रकाशित किये जायंगे और परीक्षा के समय हमारा जो अनुभव होगा वह भी प्रकाशित किया जायगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह दूसरा भाग इससे भी अधिक सुन्दर और उपयोगी होगा। इसमें प्रकाशनार्थ प्रयोगों आदि की प्राप्ति के लिये अभी से उद्योग किया जारहा है. यदि आपके प्रयोग इस भाग में प्रकाशित नहीं हुये तो आप भी अपना २ प्रयोग और चित्र शीघ्र ही भेजने की कृपा करें। प्रयोग पूर्ण परीक्षित होने चाहिये। यदि आपके प्रयोग उत्तम प्रमाणित न होंगे तो हमें विवशतया वापिस करने होंगे अतः चित्र प्रकाशित होने के लोभ में व्यर्थ प्रयोग भेज कर हमारा और अपना समय नष्ट न करें।

यदि आप इस दूसरे भाग को प्राप्त करना चाहें तो हमें अभी सूचना दे दें। जिससे आपका शुभ नाम हम ग्राहकों में नोट करलें। इसके लिये किसी प्रकार का एडवांस भेजने की आवश्यकता नहीं है। जो सज्जन अभी से ग्राहक बनने की स्वीकृत देंगे उनसे पोस्ट-व्यय नहीं लिया जायगा।

इस विशेषांक को इस बार समय पर प्रकाशित करने में हमारे प्रेस कर्मचारी— श्री० इन्द्रपाल शर्मा, प्रेमनारायण गुप्त, श्यामलाल और किशनलाल यादव आदि ने जो अहिर्निश परिश्रम किया है वह यह प्रकट करता है कि उन्हें भी धन्वन्तरि से उतना ही प्रेम है जितना कि मुझे है। उनके सहयोग बिना मैं इसे शायद ही समय पर प्रकाशित कर सकता।

अल्पज्ञता आदि के कारण जो त्रुटियां रह गई हों उन्हें क्षमा कीजिये और जो भी सेवा हो निसंकोच सूचित करते रहिये।

विनीत—

देवीशरण गर्ग।

थोक (व्यापारी) भाव

कूपीपक्व रसायन

सिद्ध मकरध्वज नं० १ (भैषज्य)-[संस्कारित पारद द्वारा निर्मित, स्वर्ण घटित, षट्गुणगन्धक जारित अन्तर्धूम विपाचित] मूल्य १ तो० ३३)
सिद्ध मकरध्वज न० २ (भैषज्य)—[संस्कारित पारद द्वारा निर्मित, स्वर्ण घटित, षट्गुण बलि जारित बहिर्धूम विपाचित] १ तोला २२)
मकरध्वज नं० ३ (भैषज्य)– [हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित, स्वर्ण घटित, षट्गुण बलि जारित, अन्तर्धूम विपाचित] १ तोला १७)
मकरध्वज नं० ४ (रसायन भैषज्य) १ तोला २०)
मकरध्वज नं० ५ (रसायन भैषज्य) १ तोला १२)
मकरध्वज नं० ६ (रसायन भैषज्य) १ तोला ६)
रससिंदूर नं० १ (धन्वन्तरि)—[षट्गुण बलि जारित, अन्तर्धूम विपाचित] १ तोला ८)
रससिंदूर नं० २ (रसेन्द्रसार) १ तोला ६)
रससिंदूर नं० ३ (रसेन्द्रसार) १ तोला ५)
मल्लचन्द्रोदय (रसायनसार)– [स्वर्ण-घटित, षटगुण गन्धक जारित, अन्तर्धूम विपाचित] १ तोला ३५)
मल्लसिन्दूर (रसायनसार) १ तोला ६)
तालसिन्दूर (रसायनसार) १ तोला ५)
ताम्रसिंदूर (रसायन०, सुन्दर) १ तोला ५)
स्वर्णवङ्ग भस्म (आयुर्वेद०, रसायन०, रससागर०) १ तोला ३॥)
मृत संजीवनी रस (भैषज्य० रसेन्द्र) १ तोला २)
रस कर्पूर (कर्पूर भाण्डेश्वर)—(उपदंश रोगे) १ तोला ६)
रस माणिक्य (भैषज्य०) १ तोला २)

भस्में

धातु उपधातुओं की भस्में वही उत्तम होती हैं जो अच्छी प्रकार शोधन करने के पश्चात् भस्म की गई हों तथा जो निरुत्थ हों। आयुर्वेद-शास्त्र में ऐसी भस्में जो पारद, हिंगुल, हरताल, मनशिल द्वारा भस्म की गई हों और जो पुनः जीवित न हों, सर्वोत्तम मानी गई हैं। तथा जड़ी-बूटियों से भस्म की गई होवें वे भस्में मध्यम।

भस्में आयुर्वेदीय शास्त्र के अनुसार [शोधन करने के बाद] किन्तु अपनी विशेष क्रिया द्वारा बनाई जाती हैं। इसलिये जिन्हें इस निर्माण कार्य में अधिक समय व्यतीत हो चुका है, वही उत्तम बना सकते हैं। इसी प्रकार भस्मों में जितने अधिक पुट लगाये जाते हैं, वह उतनी ही अधिक उपयोगी होती हैं। अन्य नवीन फार्मेसी वाले केवल वनौषधि द्वारा बहुत ही कम पुट देकर साधारण भस्म कर लेते हैं। इसलिये वह हमारी भस्मों के समान लाभप्रद सिद्ध नहीं होती हैं।

अभ्रक भस्म नं० १ [निघण्टु, सुन्दर, प्रकाश] सहस्र [१०००] पुटी १ तोला २१)
अभ्रक भस्म नं० २ [निघण्टु, प्रकाश, योग, रसेन्द्र] शत [१००] पुटी ५ तोला ७)
अभ्रक भस्म नं० ३ [भाव, योग, निघण्टु, आदि] [२५ पुटी] १० तोला ६)
अकीक भस्म [धन्वन्तरि] १ तोला ३)
कपर्द (कौड़ी) भस्म [प्रकाश, सुन्दर, निघण्टु] १० तो० २)
गौदन्ती हरताल भस्म (श्वेत) [सुन्दर, रसायन] १० तो० १॥।)
तबकी हरताल भस्म [भैषज्य] १ तो० ६)
ताम्र भस्म नं० १ [कज्जली द्वारा जारित कूपीपक्व, मयूर कण्ठ के वर्ण की]—[रसायन, सुन्दर] १ तोला ३)
ताम्र भस्म नं० २ (शतपुटी पारद योगेन जारित)-[धन्वन्तरि] २ तोला ३)
ताम्र भस्म न० ३ [गंधक द्वारा जारित] [रसायनसार] ५ तो० ४)
नाग भस्म नं० १ (नागेश्वर) मंसिल योगेन जारित [योग, भाव, रस निघंटु०] ५ तोला ६)
नाग भस्म नं० २ [वनौषधि द्वारा जारित] १० तो० ५)
प्रवाल भस्म नं० १ [असली मूंगा की कज्जली द्वारा]— १ तो०४)

प्रवाल भस्म नं० २ [असली मूंगा की वनौषधि द्वारा] ५ तोला ८)
प्रवाल भस्म नं० ३ [मूंगा की सांख की कज्जली द्वारा] ५ तो० १५)
प्रवाल भस्म नं० ४ [मूंगा की सांख वनौषधि द्वारा] ५ तोला ६)
प्रवाल भस्म [चन्द्र पुटी] ५ तोला ६)
वङ्ग भस्म नं० १ [वङ्गेश्वर] हरिताल द्वारा जारित (योग, भाव, प्रकाश, निघ०, शाङ्ग०) ५ तोला ६)
वङ्ग भस्म नं० २ [श्वेत] वनौषधि द्वारा जारित (रसेन्द्र, प्रकाश, निघण्टु) १० तोला ६)
वैक्रांत भस्म (बृ० रसराज सुन्दर, समुच्चय, रसेन्द्र) १ तोला ४)
मल्ल (संखिया) भस्म (संखिया श्वेत की भस्म) १ तोला ४)
मृगशृङ्गभस्म (श्वेत) [निघण्टु भैष० भाव,) १० तो० ३॥)
मांडूर (कीट) भस्म नं० १ रक्त वर्ण (सुन्दर, योग, शार्ङ्ग, रसायन, निघण्टु) १० तोला ३॥)
मांडूर भस्म नं० २ कृष्ण वर्ण (प्रकाश, रसेन्द्र, रत्न, आयुर्वेद) १० तोला २)
मुक्ता भस्म नं० १ कज्जली द्वारा जारित १ तोला ७२)
मुक्ता भस्म नं. २[श्वेत] (धन्वन्तरि) १ तोला ६०)
यशद भस्म (रसायनसार) ५ तोला ५)
रौप्य भस्म नं० १ कज्जली द्वारा जारित (प्रकाश, निघण्टु) १ तो० ६)
रौप्य भस्म नं० २ (हरताल द्वारा जारित) [रसेन्द्र] १ तोला ७)
लोह भस्म नं १ (पारद योगेन)—[सुन्दर, निघण्टु] ३०० पुटी १ तोला ८॥)
लोह भस्म नं ० २ (दरद योगेन जारित) [सुन्दर, योग, निघण्टु] ५ तोला ४)
लोह भस्म नं० ३ (वनौषधि द्वारा जारित)—(शार्ङ्ग० सुन्दर, निघण्टु, भाव) १० तोला ३॥)
स्वर्णभस्म–कज्जली द्वारा जारित (प्रकाश० शार्ङ्ग) १ तोला १२०)
स्वर्ण मानिक भस्म [सुन्दर, प्रकाश, योग, रसेन्द्र, निघ०] ५तो० ५)
शंख भस्म [भैषज्य, मणि, भाव] १० तोला २)
शङ्कर लोह भस्म (भावप्रकाश) १ तोला २॥)
शुक्ति (मोतीसीप) भस्म (प्रकाश, सुन्दर; निघण्टु) १० तोला ३॥)
त्रिवङ्गभस्म नं० १ पारद गंधक हरिताल द्वारा जारित (रसायन०) १ तोला २॥)
त्रिवङ्ग भस्म नं० २ वनौषधि द्वारा जारित [धन्वन्तरि] १० तो० ४)

शोधित द्रव्य

कज्जली नं० १ (बराबर गन्धक, पारद) १० तोला १५)
गंधक आंवलासार शुद्ध १० तोला ८॥)
जयपाल शुद्ध १० तोला ३)
ताल शुद्ध १० तोला ६)
ताम्र चूर्ण शुद्ध १ सेर ८)
धान्याभ्रक १ सेर ४)
पारद हिंगुलोत्थ १० तोला ८)
पारद विशेष शुद्ध १ तोला ४)
पारद संस्कारित ५ तो० ४०)
वच्छनाग शुद्ध १० तो० ४)
विषबीज [वस्त्रपूत] १० तोला ४)
विषबीज [यवकुट] १० तोला २॥)
भल्लातक शुद्ध १० तोला ३)
लोह चूर्ण शुद्ध १ सेर ४)
शिला [मंशिल] शुद्ध. १० तोला ८)
हिंगुल शु. [हंसपदी] १० तोला ५)
मांडूर शुद्ध १ सेर १॥)

इनके भाव बाजार की वर्तमान स्थिति के अनुसार दिये हैं। आर्डर सप्लाई करते समय यदि कोई घट-बढ़ हुई तो उसीके अनुसार मूल्य लगाया जायगा।

पर्पटी

आयुर्वेदिक औषधियों में पर्पटी का स्थान बहुत ऊंचा है, किंतु इनको जितने उत्तम पारद से तैयार किया जायगा, उतनी ही अधिक गुणप्रद होगी, हम विशेष रीति से पारद को तैयार करके फिर पर्पटी तैयार करते हैं, इसलिये वे बहुत गुण करती हैं। एक बार नं० १ की पर्पटी व्यवहार करें। सभी

सुभीते के लिये हम दोनों प्रकार की पर्पटी तैयार करते हैं।

ताम्र पर्पटी नं० १—[वृ० निघण्टु, सुन्दर०, योग०] विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ५॥)

ताम्र पर्पटी नं० २ (वृ०, निघण्टु, सुन्दर०, योग०) हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला २)

पञ्चामृत पर्पटी नं० १ (रसेन्द्र, वृ० निघण्टु, योग० रत्न) विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ५)

पञ्चामृत पर्पटी नं०२ (सुन्दर, भैषज्य, निघण्टु, भाव) हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला २॥)

विजय पर्पटी (भैषज्य०, सुन्दर०) विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित, १ तोला २५)

बोल पर्पटी नं. १ (भैषज्य) विशेष शु. पारद द्वारा निर्मित १ तो. ५)

बोल पर्पटी नं० २ (भैषज्य) हिंगुलोत्थपारद द्वारा निर्मित १ तो. २)

रस पर्पटी नं० १ (सुन्दर०, भैषज्य०, निघण्टु०, भाव०) विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ५)

रस पर्पटी नं० २ (सुन्दर०, भैषज्य०, निघण्टु०, भाव.) हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला२।)

लोह पर्पटी नं० १ (सुन्दर०, भैषज्य०, रसरत्न०, रसेन्द्र०) विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ५)

लोह पर्पटी नं० २ (सुन्दर०, भैषज्य०, रसरत्न० रसेन्द्र०) हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला २॥)

श्वेत पर्पटी १० तोला २॥)

स्वर्ण पर्पटी नं० १ (भैषज्य (विशेष शुद्ध पारद और भस्म द्वारा निर्मित १ तोला २०)

स्वर्ण पर्पटी नं० २ (सुन्दर, भैषज्य०, योग०, रसेन्द्र) हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला १२)

रसायन-गुटिका

अग्निकुमार रस (योग०) ५ तोला १॥-)

अजीर्ण कंटक रस (योग०) ५ तोला ३)

अर्शान्तक वटी (धन्वन्तरि) ५ तोला ३)

अम्लपित्तान्तक लोह (भैषज्य) ५ तोला

अग्नि तुण्डी वटी (रसेन्द्र) ५ तोला

आनन्दभैरव रस नं० १ (भैषज्य) ५ तोला

" " २ (मणि०) ५ तोला १।

आमवातेश्वर रस १ तोला १

आरोग्य वर्द्धनी वटी (रसायन०) ५ तोला २।

इच्छाभेदी रस (वृ० नि०) ५ तोला २।

उपदंश कुठार रस (वृ० नि०) ५ तोला २।

उष्णवातघ्न वटी (धन्वन्तरि) ५ तोला

एलादि वटी (भाव०) २० तोला ३॥

एलुआदि वटी (यो० चि०) २० तोला ३

कस्तूरीभैरवरस (वृ०) (भैष०) ६ माशे ६॥

कस्तूरी भैरव रस (भैषज्य०) १ तोला १०)

कर्पूर रस ५ तोला ५)

कस्तूरीभूषण रस [भैषज्य०, रसेन्द्र०] १ तोला ११)

कनक सुन्दर रस [रसेन्द्र०] ५ तोला २)

कफकुठार रस-[रस०, रसेन्द्र०] ५ तोला ४।)

कफकेतु रस-[रसेन्द्र०] ५ तोला १॥)

करंजादि वटी-[धन्वन्तरि] ५०० गोली ४)

काम चूड़ामणि रस-(भैष०) १ तोला ७)

कामिनी विद्रावण रस (भैष०) २॥ तोला ४)

कामाग्नि संदीपन मोदक-(भैष०) २० तोला ४)

कामधेनु रस (भैष०) ५ तोला ७॥)

कांकायन गुटिका (योग०) ५ तोला १)

कीटमर्द रस (भैष०) ५ तोला २॥)

कुमार कल्याण रस (भैष०) १ तोला २५)

क्रव्यादि रस (वृ०) [भैष०] ५ तोला ६)

कृमिकुठार रस (नि. र., र. चं., र. सु., वै. चि.,) ५ तोला ३॥)

कृष्ण चतुर्मुख रस (आयुर्वेद-संग्रह) १ तोला ६)

खैरसार वटी (वृहन्निघण्टु) १० तोला ३)

गन्धक वटी (धन्व०) २० तोला ८)

गर्भ विनोद रस (रसेन्द्र०) ५ तोला २)

गर्भ पाल रस (वैद्यकसार) ५ तोला ५॥=)

गर्भ चिंतामणि रस (भैष., ध., र. सं., र. र.,) ५ तोला १०)

गुल्म कुठार रस (योग०) ५ तोला ३॥)

गुल्म कालानल रस (भैष०) ५ तोला ३॥)

नीचे की ओर जाने वाला। | परभवभेदन वेदन पवन वसा...
४ ध्वस्त-ध्वस्त, बिखरा हुआ।

गुड़ पिप्पली (भैष०) १० तोला २॥)
गुड़मार वटी (धन्व०) ५ तोला १।)
ग्रहणी गजेन्द्र रस [धन्व०] ५ तोला ६।)
ग्रहणीकपाट रस नं० २ [धन्व०] ५ तोला ३)
ग्रहणीकपाट रस (लाल) (धन्व०) ५ तोला ४)
घोड़ाचोली रस (अश्व-कंचुकी) ५ तोला १॥)
चन्द्रप्रभा वटी (शार्ङ्ग०, भाव०) २० तोला १०)
चन्द्रोदय वर्ति (भावप्रकाश) ५ तोला २)
चन्द्रांशु रस [भैष०] ५ तोला ७॥)
चन्द्रकला रस [मणि०] ५ तोला ४)
चतुर्मुख चिंतामणि रस [र० सं०, धं०, र० सु०,
१ तोला १४)
भैषज्य, यो० र०] ५ तोला ३)
चन्द्रामृत रस [भैष०] २० तोला ४)
चित्रकादि वटी [भैष०] १ तोला १४)
जयमंगल रस [भैष०] ५ तोला २॥)
ज्वरांकुश रस (महा) [भैष०] ५ तोला ६।)
जयवटी [रसायनसार] ५ तोला २॥)
जलोदरारि वटी [बृ० नि० र०] ५ तोला ३)
जातीफलादि रस [भैष०] ५ तोला ३)
तक्र वटी [भैष०] ५ तोला २)
दुर्नलजेता रस [योग०] २ तोला २॥)
दुग्ध वटी नं० १ [सुन्दर] ५ तोला २)
" नं० २ [सुन्दर]
धात्री लोह [र० सं०, भै० र०, यो० र०, र० सु०]
५ तोला ३॥) ५ तोला २)
नवज्वर हर वटी [भाव०]
नवायस लोह [नरसिंही] लोह भस्म से निर्मित
५ तोला २) ५ तोला ८)
नष्टपुष्पान्तक रस (र० चं०)
नृपति वल्लभ रस [भै० र०, ध०, र० सु०]
५ तोला ३॥) ५ तोला २॥)
नाराच रस [भैष०] ५ तोला २॥)
प्रतापलंकेश्वर रस [शार्ङ्ग०] ५ तोला २)
प्रदरारि रस (यो० र०) ५ तोला ५)
प्रदरारि लोह [भैष०] ५ तोला ६)
प्रदरान्तक लोह [रसेन्द्र०] ५ तोला ७॥)
प्लीहारि रस [भै० र० र० यो०] १ तोला १०)
प्रवाल पञ्चामृत रस [योग०]

५ तोला १०)
प्राणेश्वर रस [सुन्दर०] ५ तोला १॥)
प्राणदा गुटिका [भैष०] ५ तोला २॥)
पञ्चामृत रस नं० १ [रसेन्द्र०] ५ तोला २॥)
" २ " ५ तोला ३)
पाशुपत रस [रसेन्द्र०] १ तोला ३)
पीपल चौंसठ पहरा [धन्वन्तरि]
पुटपक्व-विषमज्वरांतक लोह [भैष०] १ तोला १२)
१० तोला ३॥)
पुनर्नवादि मंडूर [भैष०] १ तोला १५)
पूर्णचन्द्र रस [भैष० सुन्दर०] २० तोला ७)
बृ० शंख वटी [भाव०] १० तोला २)
बृ० नायकादि रस [भैष०] ५ तोला ५)
बहुमूत्रांतक रस [भैष०] १० तोला ३)
बहुशाल गुड़ [शार्ङ्ग०]
वसन्तकुसुमाकर रस [सुन्दर०, रस०] १ तोला २०)
५ तोला ५)
बालामृत रस
वातगजांकुश रस बृहत [र० सु०, र० सं०,] ५ तोला ४)
[भै० र०, ध०, र० यो०]
वात चिंतामणि बृ० १ तोला २१)
१ तोला ७)
विशूचिका विध्वंस रस [भैष०)
विषमज्वरांतक लोह [वनौषधि विज्ञान] ५ तोला ५)
५ तोला २)
विषमुष्टिका वटी [सुन्दर०] २० तोला ३)
व्योषादि वटी (शार्ङ्ग०) १ तोला ६६॥)
मृगांक पोटली रस [मणि०) ५ तोला २॥)
मृत्युञ्जय रस महा (भाव०) ४० गोली ७॥)
मधुमेहांतक रस [धन्व०] १ तोला ६)
महाराज वङ्ग भस्म " ५०० गोली २०)
मकरध्वज वटी " ५ तोला २॥)
महागन्धक रस [भैष०] ५ तोला ४)
महा शूल हर रस [निघण्टु] १ तोला ७)
मन्मथाभ्र रस [भैष०, र० र० स०] २० तोला ३)
मदनानन्द मोदक
महाराज नृपतिवल्लभ रस [र० सं०, र० यो०]
१ तोला ५)
५ तोला २)
मार्कण्डेय रस [भैष०]

मूत्रकृच्छ्रांतक रस (र० सं०,र० सु०) १ तोला २)
मेहमुद्गर रस [भैषज्य०, रसेन्द्र०] ५ तोला ३)
यकृत हर लोह (भैष०) ५ तोला ३)
रक्त पित्तांतक रस (रसेन्द्र०) ५ तोला ३॥)
रसराज रस [भैष०] १ तोला १५)
राजमृगांक [भाव०,र० सं०,वृ०, यो० त०, र० सु०] १ तो० २५)
रामबाण रस [भैष०] ५ तोला २॥)
लशुनादि वटी [धन्व०] १० तोला २)
लघुमालती बसन्त ५ तोला ६।)
महा लक्ष्मीविलास रस [भैष० र०, र० सु०, र० सं०, र० चं०] १ तोला ६)
योगेन्द्र रस [धन्वन्तरि] १ तोला ३५)
लक्ष्मीविलास रस [भैष०] ५ तोला ५)
लाई (रस) चूर्ण (भाव०, सुन्दर०) ५ तोला २)
लीलावती गुटिका (वृ० निघण्टु०) ५ तोला १॥)
लीलाविलास रस (सुन्दर०, रसेन्द्र०) ५ तोला ४)
लोकनाथ रस वृहत् (वृ० नि० शा० मणि०) १ तोला ३)
लोकनाथ रस [भैष०] ५ तोला ५)
श्वासचिंतामणि रस [र० म०, ध०, र० सु०, भै० र०] १ तो. १०)
श्वास कुठार रस [वृ० निघण्टु] ५ तोला २)
शंख वटी [सुन्दर०, भैषज्य०] २० तोला ५)
शिरोवज्र रस [भैषज्य०] ५ तोला २॥)
शिलाजीत वटी [धन्वन्तरि] ५ तोला २॥)
शूल वज्रिणी वटी [भैषज्य०] ५ तोला २)
शूलगज केसरी ५ तोला ६)
शोथोदरारि लोह (भैष०) ५ तोला ६)
शृङ्गाराभ्रक रस ५ तोला ५)
स्वर्णबसन्त मालती नं० १—हिंगुल के स्थान पर सिद्ध मकरध्वज नं० १ तथा स्वर्ण वर्क के स्थान पर स्वर्ण भस्म डालकर बनाई हुई १ तोला २०)
स्वर्णबसन्त मालती नं० २ [शास्त्रीय] (भैष०) १ तोला ११)
सर्वाङ्गसुन्दर रस (र० का०) १ तोला १०)
संजीवनी रस (यो० न०, शा० स०) ५ तोला १॥)
समीरगज केशरी (र० रा० सु०, वृ० नि० र०) २॥ तोला ३॥)
समीर पन्नग रस १ तोला ६)
संग्रहणी कपाट रस नं० १ १ तोला २५)
सर्वज्वर हर लोह (भै० र०, र० रा० सु०) ५ तोला ३)
सिद्ध प्राणेश्वर (भैष०) ५ तोला २॥)
सूतशेखर रस (स्वर्ण युक्त) [यो० र०, र० चं०, नि० र०] १ तोला १०)
,, [स्वर्ण रहित] १ तोला २)
सूरणमोदक वृ० २० तोला ३)
सौभाग्य वटी (र० रा० सु०) ५ तोला २।)
हिंग्वादि वटी २० तोला ३॥)
हिरण्यगर्भ पोटली रस (भैष०) १ तोला २०)
हेमगर्भ रस (धन्वन्तरि) १ तोला २२॥)
त्रिपुर भैरव रस ५ तोला २॥)
त्रिभुवनकीर्ति रस [र०, र० चं०, र० र०] १० तोला ५)
त्रिविक्रम रस (शा० ध०, वृ० यो० त०, बो० र०,) १ तोला २)

गुग्गल

अमृतादि गुग्गुल [भैष०] २० तोला ४॥)
कांचनार गूगल २० तोला २)
किशोर गूगल [योग०, भाव० [२० तोला २॥)
गोक्षुरादि गूगल [योग०, चिंता०] २० तोला ४)
रसाभ्र गूगल [भैष०] ५ तोला ४)
वृ० योगराज गूगल [शाङ्ग०) २० तोला १२॥)
योगराज गूगल [भैष०] २० तोला ३)
सिंहनाद गूगल [योग० चिन्ता०] २० तोला ३)

अरिष्ट—आसव

अमृतारिष्ट — १ बोतल १॥=)
१ पौंड १।=)
१ पाव ।॥)॥

अर्जुनारिष्ट — १ बोतल १।-)
१ पौंड १=)
१ पाव ॥=)

अरविन्दासव — १ बोतल १॥)
१ पौंड १≡)
१ पाव ॥≡)

अशोकारिष्ट — १ बोतल १।=)॥
१ पौंड १=)
१ पाव ॥-)॥

अभयारिष्ट — १ बोतल १।)
१ पौंड १) १ पाव ॥-)

अहिफेनासव — आध सेर ६)
आध औंस ।=)

अश्वगन्धारिष्ट — १ बोतल १॥।)
१ पौंड १।≡)
१ पाव ।॥)

उसीरासव — १ बोतल १≡)
१ पौंड ॥≡) १ पाव ॥।

कनक सुन्दरासव — १ बोतल १।=)
१ पौंड १=)
१ पाव ॥=)

कनकासव — १ बोतल १≡)
१ पौंड ॥≡) १ पाव ॥)

कर्पूरासव — १ सेर २०)
आध औंस ।=)

कुमारी आसव — १ बोतल १।=)
१ पौंड १=)
१ पाव ॥=)

कुटजारिष्ट — १ बोतल १।-)॥
१ पौंड १-)
१ पाव ॥=)

खदिरारिष्ट — १ बोतल १॥-)
१ पौंड १।-)
१ पाव ॥≡)

चन्दनासव — १ बोतल १=)
१ पौंड ॥।-)
१ पाव ।≡)॥

दशमूलारिष्ट — १ बोतल १॥=)
१ पौंड १।-)
१ पाव ॥≡)

बृ० द्राक्षासव — १ बोतल २॥।)
१ पौंड ३)
१ पाव १॥=)

द्राक्षासव [खिंचा हुआ] — १ बो. १॥)
१ पौंड १।)
१ पाव ॥≡)

द्राक्षासव [बिना खिंचा प्रचलित] — १ बोतल १।=)
१ पौंड १≡)
१ पाव ॥=)

द्राक्षारिष्ट — १ बोतल १।)
१ पौंड १।)
१ पाव ॥≡)

देवदार्व्यारिष्ट — १ बोतल १॥।)
१ पौंड १।≡)
१ पाव ।॥)॥

पत्रांगासव — १ बोतल १।-)
१ पौंड १-) १ पाव ॥-)॥

पिप्पल्यासव — १ बोतल १≡)
१ पौंड ॥≡)
१ पाव ॥-)॥

पुनर्नवासव — १ बोतल १-)
१ पौंड ।॥-) १ पाव ।≡)

यक्ष्मारिष्ट (रक्तदोष नाशक) — १ बोतल १॥=)
१ पौंड १॥-)
१ पाव ॥=)

बब्बूलारिष्ट — १ बोतल १≡)
१ पौंड ।॥≡)
१ पाव ॥)

वांसारिष्ट — १ बोतल ४=)
१ पौंड ३।=)
१ पाव १॥)
आधा पाव ॥≡)
२ औंस ॥)

वातरोगांतकारिष्ट (सस्ती व उत्तमबूटी) — १ बोतल १।=)
१ पौंड १-)
१ पाव ॥-)

मृगमदासव — १ पाव ७)
आधा पाव ३॥)
२ औंस १॥-)

रक्तशोधकारिष्ट — १ बोतल १।)
१ पौंड १)
१ पाव ॥-)

रोहितकारिष्ट — १ बोतल १।-)
१ पौंड १-)
१ पाव ॥-)

लोद्रासव — १ बोतल १।)
१ पौंड १)
१ पाव ॥-)

सारस्वतारिष्ट [स्वर्णयुक्त] — १ पाव ५)
२ औंस १।-)

सारस्वतारिष्ट [स्वर्णरहित] — १ बोतल १॥=)
१ पौंड १।)
१ पाव ॥≡)

उत्तम गुलकन्द

ग्राहकों के आग्रह के कारण थोड़ी तादाद में लेकिन अत्युत्तम बनाया है।
मूल्य—१ सेर ४)

अर्क

- अर्क उसबा — १ बोतल १॥)
- दशमूल अर्क (धन्वन्तरि) — १ बोतल १॥)
- द्राक्षा अर्क (धन्वन्तरि) — १ बोतल १॥)
- महामंजिष्ठादि अर्क (धन्वन्तरि) — १ बोतल १॥)
- रास्नादि अर्क — १ बोतल १॥)
- सुदर्शन अर्क — १ बोतल १॥)
- मृतसंजीवनी (भैषज्य) — १ बोतल २) १ पाव ।।।=)

क्वाथ

- दशमूल क्वाथ १ मन २५), १ सेर १), २-२ तोले की १०० पुड़िया ४)
- भार्ग्यादि क्वाथ — १। सेर १॥)
- देवदार्व्यादि क्वाथ — १। सेर १)
- द्राक्षादि क्वाथ — १। सेर १)
- बलादि क्वाथ — १। सेर १)
- महामंजिष्ठादि क्वाथ — १। सेर २)
- महारास्नादि क्वाथ — १। सेर १॥)
- त्रिफलादि क्वाथ — १। सेर १)

चूर्ण

- अग्निमुख चूर्ण (भैषज्य) — १ सेर ६)
- अग्निसंदीपन चूर्ण [स्वादिष्ट] — १ सेर ६)
- अविपत्तिकर चूर्ण [वृ०] निघण्टु भाव, भैष० — १ सेर ६)
- अजीर्णपाचक चूर्ण [धन्वन्तरि] — १ सेर ६)
- अग्निवज्रमन्दार चूर्ण [धन्वन्तरि] — १ सेर १०)
- उदरभास्कर चूर्ण (धन्वन्तरि) — १ सेर ५)
- कपित्थाष्टक चूर्ण (धन्वन्तरि) — १ सेर ४)
- कामदेव चूर्ण (रस० चिन्ता) — १ सेर ५)
- कुंकुमादि चूर्ण [मणि० रस०] — २० तोला ८)
- गंगाधर चूर्ण [वृ]—[भैषज्य] — १ सेर ३॥)
- चन्दनादि चूर्ण — १ सेर ३॥)
- [illegible]रभैरव चूर्ण (भैषज्य) — १ सेर ३॥)
- जातीफलादि चूर्ण (भाव, तरं०) — १ सेर ८।
- तालीसादि चूर्ण (तरं० गद०) — १ सेर ६)
- दशन संस्कार चूर्ण (धन्वन्तरि) — १ सेर ४॥)
- दद्रु कुठार चूर्ण (धन्व०) — २० तोला १०)
- धातुश्रावहर चूर्ण (धन्वन्तरि) — १ सेर १०)
- नारायण चूर्ण (तरं० भाव०) — १ सेर ३॥)
- निम्बादि चूर्ण (भाव०) — १ सेर ३॥)
- प्रदरांतक चूर्ण (धन्वन्तरि) — १ सेर ३॥)
- पञ्चसकार चूर्ण (धन्वन्तरि) — १ सेर ४)
- प्रदरारि चूर्ण (धन्वन्तरि) — १ सेर ४)
- पुष्यानुग चूर्ण (वृन्द० वृ०, निघण्टु) — १ सेर ४)
- मनोरम चूर्ण (स्वादिष्ट) — १ सेर ६)
- लवङ्गादि चूर्ण (वृ०)—(योग०, भाव०) — १ सेर १०)
- लवणभास्कर चूर्ण (योग चिन्ता०) — १ सेर ४)
- स्वप्नप्रमेह हर चूर्ण (धन्वन्तरि) — १ सेर १२)
- सारस्वत चूर्ण — १ सेर ३॥)
- सामुद्रादि चूर्ण (रस० योग०) — १ सेर ६)
- शृङ्ग्यादि चूर्ण — १ सेर ६)
- सितोपलादि चूर्ण (चक्र० मणि०) — १ सेर १५)
- सुदर्शन चूर्ण (वृ० निघण्टु) — १ सेर ४)
- हिंग्वाष्टक चूर्ण (शार्ङ्ग०) — १ सेर ४)
- त्रिफला चूर्ण (धन्वन्तरि) — १ सेर ३)

—तैल—

- आंवलाहेअर आइल — १ पौंड ४), ४ औंस १), २ औंस ॥-
- कर्पूरादि तैल (धन्वन्तरि) — १ सेर १५)
- कटफलादि तैल (रसायन) — १ सेर ६॥)
- कन्दर्पसुन्दर तैल (भैषज्य) — आधा सेर ६)
- कामदीपक तिला — १५ तोले १८॥।)
- काशीसादि तैल — १ सेर ६)
- किरातादि तैल (धन्वन्तरि) — १ सेर ४॥)
- कुमारी तैल (भाव०) — १ सेर ५॥)
- ग्रहणी मिहिर तैल (भैषज्य) — १ सेर ६)
- चन्दनादि तैल (भैषज्य) — १ सेर ८), ४ औंस १-), २ औंस ॥-)
- जात्यादि तैल (भैषज्य) — १ सेर ५॥)
- दार्व्यादि तैल (भैषज्य) — १ सेर ४॥)
- महानारायण तैल (वृ० तरं० भाव०) — १ सेर ६), ४ औंस ।।।-), २ औंस ।=)

पानीनाशक तिला (नपुंसकामृतार्णव) १० तोला ५)
पिप्पल्यादि तैल (वृ० निघण्टु) १ सेर ४॥)
पिंड तैल (योग० रत्ना०) १ सेर ४॥)
ब्राह्मी तैल (धन्वन्तरि) १ सेर १२)
विषगर्भ तैल (शार्ङ्ग० योग) १ सेर ५)
४ औंस ॥≡) २ औंस ।=)
भृङ्गराज तैल (भैषज्य) १ सेर ६)
महाविषगर्भ तैल (भाव० योग०) १ सेर ६)
४ औंस ॥।-) २ औंस ।≡)
वैरीजावा तैल (धन्वन्तरि) आधा सेर ४)
मरिच्यादि तैल (निघण्टु भैषज्य) १ सेर ५)
४ औंस ॥≡) २ औंस ।=)
महा माष तैल (निघण्टु, भैषज्य) १ सेर ५)
मोम का तैल (धन्वन्तरि) आधा सेर ६)
राल का तैल (धन्वन्तरि) आधा सेर ३।)
लाक्षादि तैल (गद० वंग०) १ सेर ६)
४ औंस ॥।-) २ औंस ।≡)
शुष्कमूलादि तैल (वृ० भैषज्य) आधा सेर ३॥)
षड्बिंदु तैल (चक्र) आधा सेर ३)
हिमसागर तैल (भैषज्य) १ सेर ७)

घृत

अशोक घृत (भैषज्य) १ सेर १०)
अग्नि घृत (चक्र० वङ्ग०) १ सेर ८)
कदली घृत (भैषज्य) १ सेर १२)
कामदेव घृत („) १ सेर १०)
दूर्वादि घृत (राज० वङ्ग०) १ सेर ८)
धात्रीघृत (भैषज्य) १ सेर ८)
पंचतिक्त घृत (भैषज्य) १ सेर ८)
फल घृत (भैषज्य) १ सेर ८)
ब्राह्मी घृत (वाग्भट) १ सेर ८)
बिन्दु घृत (योग०) १ सेर ८)
श्वेतकुष्ठारि घृत (धन्वन्तरि) २० तोला ७॥)
महात्रिफलादि घृत (भाव० योग० भैषज्य)
१ सेर १०)
भृङ्गीगुड़ घृत २० तोला ३)
सारस्वत घृत (भाव० योग० भैषज्य) १ सेर ८)

अवलेह

च्यवनप्राशावलेह [च० भैषज्य वङ्ग वृन्द] १ सेर ३॥)
शीशी में आध सेर २) पाव सेर शीशी में १)
कुटजावलेह [भाव० भैषज्य] १ सेर ३॥)
कंटकारी अवलेह [शार० नि० वङ्ग० भाव०]
१ सेर ४।)
कुशावलेह „ ४)
बांसावलेह [नर० भाव० चक्र०] „ ४)
आर्द्रक खण्ड [भाव०] „ ४॥)
विषमुष्टिकावलेह ५ तोला ४)
मधुकाद्यवलेह [प्रदर रोगनाशक]
१५ तोले की १ शीशी २॥=)

क्षार-सत्व-द्राव

वज्रक्षार चूर्ण [रसेन्द्र, वृ० सु०] १० तोला २)
अपामार्ग क्षार [धन्वन्तरि] „ २)
बांसे का क्षार „ ३)
कटेरी क्षार „ ३)
कदली क्षार „ २॥)
इमली क्षार „ २)
तिल क्षार „ ३)
मूली क्षार [धन्वन्तरि] „ ३)
ढाक क्षार „ २)
आक का क्षार „ २)
तमाकू क्षार „ ३)
केतकी क्षार „ १॥)
शंख द्राव „ ६)
नयनामृत सुरमा „ १२॥)
भीमसैनी कपूर „ २५)
नेत्रबिंदु [धन्वन्तरि] पाव भर ७॥),
आध औंस ॥), पाव औंस ।)॥
यवक्षार १ सेर १०)
गिलोय सत्व १ तोला ।) १ सेर १५)

पेटेन्ट औषधियां

(PATENT MEDICINES)

संस्थापित–१८६८ ई०

—×—

एक भुक्त-भोगी का अनुभव

" मैं इस बात को दावे के साथ कहूँगा कि जो महाशय दुनियां भर की ढोंग-बाजी की दवाइयां खाकर निराश हो बैठे हैं और अपनी जिन्दगी व्यतीत करना दूभर समझते हैं, जैसे मैं समझता था वे भी "धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़" से लाभ उठावें।"

—(श्री) चौधरी रामभजन सिंह, दौराला।

—×—

प्रदर (Leucorrhea)

स्त्रियों के लिये भयंकर रोग है इसे शीघ्र दूर करें।

—o—

स्त्री सुधा

हम देखते हैं कि प्रायः भारतीय स्त्रियां अशिक्षित होने से साधारण बीमारी की तो कुछ पर्वाह नहीं करती हैं जब धीरे २ रोग शरीर में जम जाता है और लाचार होकर चारपाई पर पड़ जाती हैं, तब कहती हैं। बीमारी की बढ़ी हुई अवस्था में अगर कोई अनुभवी चिकित्सक मिल गया तो आराम हो जाता है। अन्यथा काल के गाल में जाना पड़ता है। प्रत्येक वैद्य डाक्टर स्त्रियों का इलाज नहीं कर सकता क्योंकि इसमें बड़े तजुर्बे की आवश्यकता है। हमने बड़े परिश्रम और परीक्षण के बाद इसको बनाया है और फिर हजारों स्त्रियों पर अनुभव कर लिया है, तब इसे सर्व-साधारण पर प्रकट किया है।

इसके सेवन से सब प्रकार का प्रदर, योनिशूल, कुक्षिशूल, योनिदाह, मासिकधर्म (महावारी) की खराबी-जैसे अधिक दिन में होना अथवा समय के पूर्व होजाना या मासिक धर्म के समय दर्द होना आदि गर्भाशय के विकार, जैसे गर्भ का न रहना और बीच में गिर जाना अथवा सन्तान होकर मर जाना या कन्या ही कन्या अथवा सन्तान का न होना आदि सब शिकायत दूर होजाती हैं। गर्भाशय ठीक और पुष्ट होकर गर्भ स्थित होता है, शरीर कांतिवान और बलवान होजाता है। मूल्य १ शीशी १॥), १ बोतल ३॥)

मधुकाद्यवलेह

यह प्रदर रोग की प्रसिद्ध और परीक्षित आयुर्वेद-शास्त्र की अव्यर्थ औषधि है। इसके सेवन से कठिन से कठिन और सब प्रकार का प्रदर दूर होता है। योनिशूल, कुक्षिशूल, बस्तिशूल, कमर का दर्द जो प्रायः प्रदर के साथ होता है, नष्ट होजाता है। मू० १५ तोले का ३॥)

——o——

नोट—स्त्री-सुधा, मधुकाद्यवलेह दोनों एक साथ सेवन करने से कैसा ही प्रदर क्यों न हो अवश्य नष्ट हो जाता है। हमने देखा है कि इन दोनों औषधों को देने से प्रतिशत ९९ रोगी निरोग हुये हैं। एक बार आप भी परीक्षा कर देखें। मूल्य दोनों एक साथ लेने पर ६) ही रक्खा है, पोस्ट व्यय २।≈) पृथक।

हिस्टेरिया हर सैट—

(हिस्टेरिया-हर वटी, चार, आसव)

यह तीनों औषधि सब प्रकार के हिस्टेरिया के लिये लाभप्रद है। हम इनकी अच्छी तरह से परीक्षा कर चुके हैं। अनेकों ने इसकी प्रशंसा की है। परीक्षा प्रार्थनीय है। मूल्य १५ दिन के लिये तीनों औषधियों का ७)

सुजाक हर सैट-

(सुजाक हर कैपशूल, आसव, पिचकारी की दवा)

सुजाक हर कैपशूल—सुजाक की प्रधान एवं चमत्कारिक औषधि है। नया या पुराना कैसा भी सुजाक हो, इसके सेवन से अवश्य नष्ट होता है। १ शीशी ३)

चन्दनासव—यह प्रमेह, शुक्रमेह, सुजाक की प्रसिद्ध आयुर्वेदीय औषधि है। मूत्र-नली में होने वाले घावों को दूर कर जलन, पीड़ा आदि सब नष्ट करती है। १ बोतल २)

सुजाक की पिचकारी की दवा—इसके लगाने से टीस, मूत्र रुक २ कर आना, मवाद आना, आदि समस्त उपद्रव नष्ट होते हैं। १ शीशी १)

मूल्य—तीनों औषधियों का ५) पोस्ट व्यय २-)

रक्त दोष हर सैट—

[आयुर्वेदीय सालसा परेला, इन्द्रवारुणादि क्वाथ, तालकेश्वर रस)

आयुर्वेदीय सालसा परेला—समस्त विदेशी सालसों से अधिक गुणप्रद है। हमने हजारों रोगियों पर इसका अनुभव किया है। विदेशी सालसों को प्रयोग करने वालों से प्रार्थना है कि इसको भी प्रयोग कर देखें। १ बोतल ४)

इन्द्र वारुणादि क्वाथ—इस क्वाथ से उपदंश और उससे होने वाले रक्त-विकार आदि समस्त रोग दूर होते है। यह आंव निकाल कर रक्त-विकार, उपदंश आदि समस्त नष्ट करता है। मूल्य १२ मात्रा ||।)

तालकेश्वर रस—यह तबकी हरताल द्वारा शास्त्रीय विधि से निर्मित रक्त-विकार के लिये महौषधि है। इसके सेवन से जन्म-कुष्ठी भी आरोग्य लाभ पाते है। ६ माशे४)

उपर्युक्त सैट के सेवन से कैसा भी कुष्ट क्यों न हो अवश्य आराम होता है। हमने सैकड़ों रोगी इस औषधि से इस दुष्ट रोग से मुक्त किये हैं। मूल्य—तीनों औषधियाँ १५ दिन के लिये ६) पोस्ट व्यय ३=)

कुछ अकसीर दवायें

१-अग्निमंदीपन चूर्ण—अजीर्ण आदि के लिये सर्वोत्तम औषधि है। भोजन के पश्चात् सेवन करने योग्य अत्यन्त स्वादिष्ट चूर्ण है। मूल्य १ शीशी ।≈)

२-कर्णामृत तैल—कान में होने वाले दर्द, पीव निकलना आदि व्याधियों के लिये उत्तम औषधि है। मूल्य—१ शीशी ॥≈)

३-स्तम्भन वटी—स्तम्भन का यदि सुख लेना है तो इस औषधि को रात्रि में १ घण्टे पहिले दूध के साथ सेवन करिये। मूल्य १ शीशी १।)

४-ज्वरजादि वटी—ज्वर, जूड़ी आदि के लिये वटी रूप में औषधि है। मूल्य १ शीशी ॥)

५-उपदंश हर कैपशूल—उपदंश रोग के लिये ८० प्रतिशत काम देने वाली वस्तु। परीक्षा प्रार्थनीय है। मूल्य १ शीशी २॥)

६-अर्श हर वटी—यदि अर्श (बवासीर) से छुटकारा पाना चाहते हैं तो शीघ्र ही इस औषधि को सेवन करिये, और लाभ उठाइये।
मूल्य—१ शीशी १)

७-अर्शान्तक मलहम—मस्सों पर लगाने के योग्य उत्तम मलहम। इसके लगाने से मस्से शीघ्र नष्ट होते हैं। मूल्य १ शीशी ॥)

८-मधुमेहान्तक रस—मधुमेह (डाईबिटीज) के लिये उत्तम औषधि २५ साल से परीक्षित है। सैकड़ों आरोग्य लाभ कर चुके हैं। मूल्य ५० गोली १०)

९-क्रिमयादि मलहम—कृमि-नाशक एवं चर्म-रोगों पर आशुफलदायक औषधि है।
मूल्य १ शीशी ।)

१०-कामिनी गर्भ रक्षक—पुरुषों में वीर्य-रोग और नवयुवतियों में रज सम्बन्धी रोग अत्यधिक फैले हुये हैं। इन रोगों के फल-स्वरूप आज कल गर्भपात या गर्भ स्राव की संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है। गर्भ-स्राव एवं गर्भपात के रोकने के लिये यह अव्यर्थ औषधि है। इसके सेवन से गर्भ पुष्ट होता है और गर्भ-पात आदि का भय नहीं रहता। परीक्षा प्रार्थनीय। १ शीशी २)

११-वातारि वटिका—वात-रोग बड़ा भयानक रोग है। जब वात का दर्द होता है तो जो पीड़ा होती है उसे एक रोगी ही जानता है। हमारी इस औषधि को सेवन कराने से वात-रोग अवश्य ही नष्ट होता है। यह सन्धि और मज्जागत वायु को बाहर निकाल देती है। मूल्य १ शीशी २)

१२-स्वप्न-प्रमेह-हर वटी—स्वप्नदोष की अति लाभदायक है। चन्दनासव के साथ सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है। मूल्य १ तोला १॥)

१३-वृ० द्राक्षासव—निर्बलता एवं क्षय रोग के लिए सर्वोत्तम टानिक है। मू० १ बोतल ५)

१४-बाल अपस्मार हर वटी—बालकों के अपस्मार के लिए सर्वोत्तम है। मूल्य १ शीशी २)

१५-कासहर वटी—खांसी के लिये सर्व साधारण में बाटने योग्य उत्तम औषधि है। १ शीशी ।-)

१६-आम निस्सारक वटी—१ गोली को जल में सेवन करने से ही सुबह दस्त होकर आंव निकल जाती है। मूल्य १ शीशी १)

१७-वल्लभ रसायन-किसी भी मार्ग से रक्त निकल रहा हो इसके सेवन से तुरन्त ही बन्द होता है। अर्श रक्तपित्त, रक्त प्रदर, रक्तातिसार, राजयक्ष्मा आदि सभी रोगों में विश्वास के साथ व्यवहार कर चमत्कार देखें। मूल्य १ शीशी २)

१८-रक्त वल्लभ रसायन—ज्वर के साथ होने वाला रक्त-स्राव बन्द होता है। ज्वर को भी साथ २ नष्ट कर देती है। मूल्य १ शीशी १)

१९-अण्ड वृद्धि हर लेप—अण्ड वृद्धि में इसका लेप करना अत्यन्त लाभदायक है। १ शीशी १)

२०-इच्छाभेदी वटिका—सौम्य रेचन,
मूल्य १ शीशी १)

हमारी स्वप्रकाशित

ग्रन्थ-माला

जीवन-विज्ञान

(सचित्र आसन चिकित्सा)

ले० श्रीमान् कविराज अत्रिदेव जी गुप्त विद्यालंकार

इस पुस्तक में १३ प्रकरण हैं और उनमें पुरुष की उत्पत्ति, वीर्य, ओज, आर्तव, त्रिगुण त्रिदोष, दोष विकृति विज्ञान, चिकित्सा सूत्र, आसनों का उद्देश्य, आसनों की तैयारी की विधि तथा उससे रोग निवृत्ति, अनागत रोग प्रति बन्ध, गृह चिकित्सा, रसायनाधिकार वाजीकरण संस्कार आदि शीर्षक हैं। इनसे ही पाठक पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान कर सकते हैं।

साथ ही आसनों के चित्र इतने स्पष्ट और अधिक हैं कि आसनों की विधि में सन्देह नहीं रह जाता। छपाई व चित्र दर्शनीय हैं। मूल्य २)

उपदंश-विज्ञान

ले०—श्रीमान् कविराज पं० वालकराम जी शुक्ल, आयु० प्रोफेसर आयु० महाविद्यालय, ऋषिकेश।

इस पुस्तक में उपदंश (गरमी, चांदी) रोग का वैज्ञानिक कारण, निदान, लक्षण, चिकित्सा का वर्णन किया है। पुस्तक के कुछ शीर्षक यह हैं—उपदंश परिचय, प्राच्य पाश्चात्य का साम्यवाद, संक्रमण, निदान, सिफलिस के भेद, उपदंश, प्राथमिक कील, लिङ्गार्श, औपसर्गिक सकल रोग, उपदंश विकृतियां, मस्तिष्क-विकार, फिरङ्ग चिकित्सा, पारद प्रयोग, पथ्यापथ्य आदि २ उपदंश सम्बन्धी सभी विषय इसमें वर्णित हैं। कोई भी आवश्यक विषय छूटने नहीं पाया है। मूल्य १)

प्रयोग पुष्पावली

ले० वैद्य शिरोमणि पं० महावीरप्रसाद जी मालवीय,

प्रथम भाग-अप्राप्य

[द्वितीय भाग]

इसमें अनेकों उत्तमोत्तम सुगन्धित एवं औषधियों के तैल, अर्क, शरबत, गुटिकायें, मलहम, पेनबाम, अचार, चटनी, मसाले, सिरके, पकवान, मोदक बनाने, सत्व आदि निकालने की नित्य उपयोगी और प्रचुर लाभदायक विधियां बताई गई हैं। जिससे वैद्य, गृहस्थ और बेरोजगार भी खूब फायदा उठा रहे हैं। मू० केवल १)

दोषधातु विज्ञान [सचित्र]

ले०—श्रीमान् पं० मुरारीलाल जी शर्मा वैद्यराज।

दोष क्या है ? वे कैसे उत्पन्न होते हैं ? इनके नाम। दोष क्यों कोप करते हैं ? किस कारण से दूषित होने से क्या २ हानियां करते हैं ? और कुपित होने पर कैसे चिकित्सा करनी चाहिये आदि आदि। तथा सप्त-धातुएं भी इनमें विस्तार रूप से सरल भाषा में वर्णित हैं। मू० ॥=)

सूर्यरश्मि चिकित्सा

सूर्य रश्मि-चिकित्सा को अंग्रेज़ी में क्रोमोपैथी (Chromopathy) कहते हैं। इस चिकित्सा में सूर्य की किरणों से ही समस्त रोग दूर करने का विधान है। पुस्तक बड़े परिश्रम से लिखी गई है। इसको पढ़ पाठक देखें कि सूर्य कितना शक्तिशाली है। उसकी किरणें हमारे शरीर को कितनी लाभदायक हैं और इसके द्वारा रोग किस प्रकार बात की बात में दूर

किये जा सकते हैं। जो सुकुमार स्त्री पुरुष औषधि सेवन से डरते हैं उनके लिये तो अमृत ही है।

पुस्तक अपने विषय की पहली ही है। और हमने इस पुस्तक की छपाई बड़ी ही चित्ताकर्षक कराई है तथा अनेक रंगीन चित्र भी दिये गये हैं। द्वितीय संस्करण, मू० ॥।)

रसायन संहिता

[भाषा-टीका सचित्र]

आयुर्वेदीय साहित्य के अनमोल रत्न अपनी अलौकिक प्रतिभा के साथ अन्धकार के आवरण से ढंके हुये हैं। अमूल्य पुस्तकें यत्र-तत्र पड़ी हुई हैं जिनके प्रकाशन की आवश्यकता है।

यह पुस्तक एक ऐसा ही रत्न है। अनुभवी और विचारशील लेखक महोदय ने हिमालय पर्यटन में परिश्रम से इसकी खोज की है। उन्हीं के प्रशंसनीय प्रयत्न से यह पुस्तक-रत्न वैद्य समुदाय की सेवा में उपस्थित कर सके हैं। इसमे अनेक अव्यर्थ प्रयाग; सत्व प्रस्तुत विधि, उपधातु की शोधन, मारण प्रभृति अनेक विषय दिये गये हैं। मू० १)

कुचमार तन्त्र

[भाषा-टीका]

—श्रीमद् कुचमार मुनि प्रणीत—

प्रस्तुत पुस्तक प्राचीन और अत्यन्त गोपनीय है। इसमें इन्द्रिय वृद्धि, स्थूल-करण, कामोद्दीपन, लेद, वाजीकरण, द्रावण, स्तम्भन, सङ्कोचन, केश-पतन, गर्भाधान, सहज प्रसव आदि पर अनेक योग भली-भांति बताये गये हैं। छपाई चित्ताकर्षक है। मूल्य ।=) मात्र।

दशमूल (सचित्र)

ले०-श्रीमान् लाला रूपलाल जी वैश्य

दशमूल किसको कहते हैं ? किन २ औषधियों से बनता है ? उन औषधियों की आकृति कैसी है ? यह विरले ही जानते हैं। इस पुस्तक में दशमूल औषधियों का सचित्र वर्णन है। साथ ही उनके पर्याय नाम, गुण और प्रयोग बताये गये हैं। तथा दशमूल, पञ्चमूल से बनने वाले अनेक योगों की विधि भी दी गई है। चित्र इतने स्पष्ट हैं कि देखते ही झट पहिचान सकते हैं। मूल्य ॥) मात्र।

शल्यतन्त्रम्

ले.-श्रीमान् आयुर्वेदाचार्य पं. धर्मानन्द जी शास्त्री।

शल्य-क्रिया में ही वैद्य-समाज को पश्चात्पद बताया जाता है। पर इस ग्रन्थ को देखने से प्रकट होता है कि इस ओर भी आयुर्वेद कितना पूर्ण था। इसमें शल्य, व्रण, शोथ की सामान्य और दूषित सभी अवस्थाओं के लक्षण और उपचार, बन्धन, छेदन-भेदन, विम्लापन, पाचन, रक्तमोक्षण, स्नेहन, लेखन, पेषण, आहरण, सीवन, पीड़न, निर्वापन, शोधन, रोपण, अवसादन, क्षार कर्म, प्रतिसारण, लोमोत्पादन, कृमिनाश सबका वर्णन है।

आंत निकलना, अण्डकोष फटना, गोली लगना, विषज व्रण, पिच्छिल व्रण, उनकी व्याप्ति उपद्रव लक्षण और चिकित्सा में काम आने वाले पचास शस्त्रों के सचित्र वर्णन और प्रयोगों की विधि बड़ी अच्छी तरह समझाई गई है। प्रत्येक चिकित्सक को पास रखने योग्य ग्रन्थ है। मूल्य २॥)

मरणोन्मुखी आर्य-चिकित्सा

लेखक—स्वर्गीय ला० राधावल्लभ जी वैद्यराज

आयुर्वेदीय चिकित्सा मरने को तैयार है। प्राण सिसक रहे हैं, मृत्यु शय्या बिछाई जा रही है। क्यों? उनके पुत्र बुड्ढी माता की परवाह नहीं करते। क्या मर जाने दें ? भारतवासी वैद्यो ! पूछो अपने मन से, इस निबन्ध में आयुर्वेदीय चिकित्सा की जो दुरशा है। उसका ओजस्विनी भाषा में वर्णन है। मूल्य।)

रति रहस्य

(भाषा टीका सहित)

१५ अधिकारों में कामकला सम्बन्धी सभी आवश्यक पहलुओं पर अच्छी तरह वर्णन कि

गया है। यह अति प्राचीन पुस्तक कोका रचित१ असली काम-शास्त्र है। मू० १ प्रति २)

दन्त-विज्ञान

यह भिषग्रत्न स्व० गोपीनाथ जी गुप्त की सार पूर्ण रचना है। इसमें दांतों की रचना, आंतरिक दशा, रक्षा के उपाय अनेक दन्त-रोगों के भेद वर्णन और सरल चमत्कारी उपचार दिये हुये हैं। ४ चित्र भी हैं। मूल्य ।=) मात्र

न्यूमोनियां प्रकाश

आयुर्वेद-मनीषी पं० देवकरण जी बाजपेयी की यह बड़ी उत्तम रचना है जिस पर धन्वन्तरि-पदक मिला और जो निखिल भा० वैद्य सम्मेलन से सम्मान और पदक प्राप्त कर चुकी है। न्यूमोनियां की शास्त्रीय व्युत्पत्ति, कारण, लक्षण, निदान, परिणाम, चिकित्सा आदि सभी बातें एक ही पुस्तक में भली-भांति वर्णित हैं। मूल्य ।-)

प्लेग

[तृतीय संस्करण]

इस पुस्तक में प्लेग का आयुर्वेदीय और डाक्टरी मतानुसार पूर्ण विवेचन, प्लेग चिकित्सा आदि का इस सम्बन्ध में अनुभव पूर्ण सिद्ध विवेचन है। ।-)

प्राकृतिक ज्वर

(फसली बुखार) का पूर्ण विवेचन है। आयुर्वेदीय मत से मलेरिया कैसे पैदा होता है, उसके दूर करने के आयुर्वेदीय प्रयोग किनाइन से हानियां, आदि विषयों पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है। मू ।)

दोष-विज्ञान

आयुर्वेद की मूल भित्ति त्रिदोष पर स्थित है। इस पुस्तक में दोषों का संचय प्रकोप, प्रसार,स्था... दोष क्षय सब सरल भाषा में लिखे हैं। म...

नारू रोग—नारू बड़ा भयङ्कर रोग... नारू का सम्पूर्ण वर्णन, भेद, निदान... अन्य वैद्यराजों की भी ऐसी अनुभूत... हैं। जिससे बिना कष्ट के नारू निकल आता है। मूल्य ।)

ओज क्या है ? उनकी क्षय वृद्धि का लक्षण और कार्य विवेचना पूर्ण लिखे गये हैं। मू० ।)

वैद्यराज की जीवनी— स्व० श्री० लाला राधावल्लभ जी की जीवनी बड़ी ओजस्विनी भाषा में लिखी है। इसके पढ़ने से आलसी पुरुष भी उद्योगी और परिश्रमी बनने की इच्छा करता है। मू० =)

आयुर्वेद में दार्शनिक तत्व-विषय नाम से ही स्पष्ट है। मू० ।)

अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें।

रसतंत्रसार व सिद्ध प्रयोग संग्रह

(पंचम संस्करण) श्री नाथुसिंह जी वर्मा द्वारा लिखित, अत्युत्तम पुस्तक। इसमें आयुर्वेद के प्रायः सभी प्रचलित औषधियों की सविस्तार निर्माण विधि तथा सभी विवेचन पूर्ण गुण वाली है। पुस्तक नवीन ढग पर लिखी गई है तथा आयुर्वेदिक चिकित्सकों के लिये पढनीय एवं संग्रहणी है। मूल्य ७) सजिल्द ८)

शंकर निघण्टु—

इस पुस्तक में ८१३ वनस्पतियों का वर्णन है। अन्त में लगभग १५० पृष्ठों में रस-रसायन, व... गुटिका, तैल ... विधि भी ...

तिल...

स्त्री रोग—चिकित्सा—इसमें सम्पूर्ण स्त्री रोग आर्तव (यूरेलेजिआ), जरायु प्रदाह, गर्भाशय में होने वाले रोग आदि का पूर्ण वर्णन एवं अनुभव-पूर्ण चिकित्सा दी है। मूल्य ॥) मात्र।

मनुष्य का आहार—इस पुस्तक के लेखक को पुस्तक की उत्तमता के लिये नागरी प्रचारणी सभा काशी ने पदक से सम्मानित किया है। इसमें खान-पान सम्बन्धी प्रायः सभी विषयों का विस्तृत सुबोध और स्पष्ट वर्णन है। मू० १) एक रुपया

हरिधारित ग्रन्थ-रत्न—समस्त रोगों के सुलभ प्रयोग। भाषा-टीका सहित। मू० ।=)

व्रणोपचार पद्धति—इसमें विद्रधि, जहरबाद, नहरुवा, अग्नि से जलना, चोट लगना, कण्ठमाला, भगन्दर आदि रोगों की अनुभूत चिकित्सा वर्णित है। मूल्य ।=)

सिद्धौषधि प्रकाश—(द्वितीय संस्करण) इसमें सैकड़ों शतशोनुभूत अव्यर्थ प्रयोग भरे पड़े हैं, जो अनुभूत-योगमाला में समय २ पर प्रकाशित हुये हैं। पृष्ठ ११२, कीमत १)

राजयक्ष्मा—विद्वानों का कहना है कि जितने मनुष्य समस्त रोगों के कारण मरते हैं, उससे कुछ अधिक मनुष्य इस दुष्ट रोग क्षय (तपेदिक) से मरते हैं। इस पुस्तक पर नि० भा० वैद्य सम्मेलन से स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ है। विषय पर अच्छा विवेचन है। पृष्ठ संख्या ... ।) आना।

लंद, ... मू...

पतन, ... **श्वास रोग चिकित्सा**—इस पुस्तक में श्वास भली ... (दमा) के सम्पूर्ण लक्षण तथा उनके रूप आदि सविस्तार वर्णित हैं। प्रयोग चिर-परीक्षित एवं आसान हैं। कीमत ।)

अण्ड तथा अन्त्र वृद्धि चिकित्सा—पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। रोग का पूर्ण निदान लक्षण चिकित्सा आदि सविस्तार दी है। लेखक प० कृष्णाप्रसाद जी त्रिवेदी बी० ए० आयुर्वेदाचार्य हैं। मूल्य ।)

भारतीय रसायन शास्त्र—हिन्दी वाले यदि इसका ध्यान पूर्वक अवलोकन करेंगे तो उन्हें ऐसे विषय की खोज का महत्व मालूम होगा। विद्वानों को इस विषय में मन लगाना चाहिये जिससे उन्हें मालूम हो कि हमारे रसायन-विद्या कहां-कहां बिखरी पड़ी है और उसमें कितनी महत्व का विषय है। पुस्तक अपने ढङ्ग की निराली ही है। मू० ॥) मात्र।

संतति-रहस्य—इस महत्व-पूर्ण पुस्तक में रज, वीर्य, ब्रह्मचर्य, गर्भस्थिति, सहगमन, गर्भ पर तात्कालिक परिस्थिति का प्रभाव, गर्भ के समय स्त्री-पुरुष का व्यवहार, बांझपन, नपुंसकता आदि विषयों पर डाक्टरी वैद्यक तथा यूनानी मतों द्वारा तुलनात्मक प्रकाश डाला है। पुस्तक सचित्र और बहुत ही उपयोगी है। मू० ॥) मात्र।

पेटेन्ट औषधि और भारतवर्ष—इसमें भारतवर्ष की सभी पेटेन्ट औषधियों का भण्डाफोड़ किया गया है। अमृतांजन, बालामृत आदि ४५३ प्रसिद्ध २ पेटेन्ट औषधियों के प्रयोग विधि, गुण आदि दिये हैं। निर्माता एक आने की दवा का १) से भी अधिक ले लेते हैं। अतः स्वयं बनाकर लाभ उठाना चाहें तो शीघ्र मंगा लें। कीमत—प्रथम भाग ॥) द्वितीय भाग १)

अर्श-रोग चिकित्सा—अपने ढङ्ग की यह एक ही पुस्तक है। इसमें बवासीर रोग की उत्पत्ति कारण एवं निदान भली-भांति सरल भाषा में लिखी गई है। मू० ॥)

औषधि ज्ञान संग्रह—(मेटिरिया मेडिका) यह एलोपैथी डाक्टरी पुस्तक है, इसमें डाक्टरी औषधियों के गुण दोष तथा उनके व्यवहार करने की विधि डाक्टर गधावल्लभ जी पाठक ने बड़ी खूबी से लिखी है। वैद्यों को डाक्टरी ज्ञान प्राप्त करने के लिये पुस्तक उपयोगी है। मूल्य० ४) रुपये।

सिद्ध प्रयोग—इस पुस्तक में वही प्रयोग लिखे गये हैं जो वैद्यों द्वारा परीक्षा कर लिये गये